सूत्र ३. अङ्क ३.

बाल ब्रह्मचारी पंडित मु[illegible]लोलक ऋषिजी महाराज कृत

हिन्दी [illegible]नुवाद सहित.

ठाणाङ्ग सूत्र

प्रसिद्ध कर्ता-दक्षिण हैदराबाद निवासी.

राजा बहादुर लाला सुखदेव [illegible]सायजी ज्वालाप्रसादजी जौंहरी

अमूल्य. प्रत १०००

जैन शास्त्र [illegible] मुद्रालय सीकंदराबाद (दक्षिण.)

जैन स्थम्भ दानवीर

जैन प्रभावक धर्म धरधर



जैन शास्त्रोद्धार मुद्रालय, सिकंदराबाद, (दक्षिण)



स्व राजा बहादुर लाला सुखदेव सहायजी, सौंहरी.

जन्म [illegible] स्वर्गस्थ सं०

लाला ज्वालाप्रसादजी, सौंहरी.

जन्म सं० १९५०

श्री स्थानांग सूत्र की प्रस्तावना.

श्रीवीर जिनं नाथं, नत्वा स्थानांगकतिपयपदानां॥प्रायोऽन्यस्मिन् शास्त्रे, दृष्टंकरोम्यहं विवरणं ।१।

श्री महावीर भगवान को नमस्कार कर के श्री स्थानांग नाम का तृतीय अंग का सूत्रानुसार मैं हिंदी विवरण करता हुं. ॥ १ ॥ सूयगडांग सूत्र में द्रव्यानुयोग का कथन किया. इस स्थानांग सूत्र में चारों प्रकार के अनुयोग का पृथक २ कथन किया गया है. मतमतान्तरों के निराकरण से जिन की बुद्धि स्थिर हुई है उन को चतुभंगी आदि गहन ज्ञान समझाने को तीसरा स्थानांग सूत्र है.

स्थनांगाय दशस्थान, स्थापिताखिलवस्तुने ॥ नामामिकामित फलप्रदानसुरशाखिने ॥ १ ॥

अर्थात् इस स्थानांग सूत्र का एक ही श्रुतस्कन्ध है जिस में दश स्थान (१० अध्ययन) हैं. प्रथम अध्ययन में लोक में रही हुई एकेक वस्तु का कथन किया है, दूसरे में दो दो वस्तु का यावत् दशवे स्थान में दश २ वस्तु का कथन है. यह यों ही पढने में सरल मालुम होता है परंतु इस के चौथे स्थान मे कही हुई चौभंगीयों यथार्थ जमाना उस का भावार्थ बराबर ऊतारना उस के अनुसार एक की अनेक चतुर्भगीयों बनाना. तैसे ही अन्य भी इस में कहे हुवे संक्षिप्त पदार्थों का स्वरूप विस्तारित रूप से समझाना बहुत कठीन है. इस के यथार्थ स्वरूप के समझनें समझाने वाले को स्थविर व पंडित कहे हैं. इस स्थानांग शास्त्र की धनपतसिंह बाबू वाले की प्रत, कच्छ देश पावन कर्ता आठ कोठी मोटी पक्ष के महंत मुनि राज श्री नागचन्द्रजी महाराज के पास से मिली थी मुख्यातामें उस के अनुसार ये और गौण्यतामे धेराजी [illegible]

वालों का उपकार मानने में आता है.

ठाणांग सूत्र की विषयानुक्रमणिका.

१ पहिला स्थाना	...१	१२ चौथा स्थाना का तीसरा उद्देशा	...४०८
२ दूसरा स्थाना का प्रथमोद्देशा	...२८	१३ चौथा स्थाना का चौथा उद्देशा	...४६०
३ दूसरा स्थाना का दूसरा उद्देशा	...६०	१४ पांचवा स्थाना का पहिला उद्देशा	...५१९
४ दूसरा स्थाना का तीसरा उद्देशा	...७१	१५ पांचवा स्थाना का दूसरा उद्देशा	...५५२
५ दूसरा स्थाना का चौथा उद्देशा	...११५	१६ पांचवा स्थाना का तीसरा उद्देशा	...५८४
६ तृतीय स्थाना का पहिला उद्देशा	...१३८	१७ छठा स्थाना का पहिला उद्देशा	...६१०
७ तृतीय स्थाना का दूसरा उद्देशा	...१८०	१८ सातवा स्थाना ...	...६५०
८ तृतीय स्थाना का तीसरा उद्देशा	...१९८	१९ आठवा स्थाना ...	...७१८
९ तृतीय स्थाना का चौथा उद्देशा	...२३३	२० नववा स्थाना ...	...७७३
१० चौथा स्थाना का पहिला उद्देशा	...२७२	२१ दशवा स्थाना ...	...८२३
११ चौथा स्थाना का दूसरा उद्देशा	...३२३		

☞ बाल ब्रह्मचारी पं० मुनि श्री अमोलक ऋषिजीने मात्र तीन वर्ष में ३२ शास्त्रों का हिंदी भाषानुवाद और उन को मात्र पांच वर्ष में छपवाकर लाला सुखदेवसहायजी ज्वालाप्रसादजी की तरफ से अमूल्य दिये गये.

॥ तृतीयाङ्ग ठाणांग सूत्र ॥

शब्दार्थ — सु० सुना मे० मैंने आ० आयुष्मन् भ० भगवानने ए० ऐसा अ० कहा ॥ ए० एक आ० आत्मा ॥ १ ॥

सूत्र — सुयं मे आउसं तेणं भगवया एव मक्खायं ॥ एगे आया ॥ १ ॥ एगे दंडे ॥ २ ॥

भावार्थ — श्री सुधर्मास्वामी जम्बू स्वामी से कहते हैं कि अहो आयुष्मन् जम्बू ! श्री श्रमण भगवंत महावीर देवने ठाणांग सूत्र का जो अर्थ कहा है उसे तुम सुनो. " उवओगलक्खणो जीवो " अर्थात् जीवात्मा का लक्षण उपयोग मात्र ही है. जगत् में सब आत्मा उपयोग लक्षणवाले हैं. द्रव्य की अपेक्षा से अनेक होने पर भी एक ही कहा जाता है इसलिये सब जगत् में आत्मा एक ही है ॥ १ ॥ यह आत्मा स्वतंत्र होने पर भी दंड करके पीडित होता है. अर्थ अनर्थ ऐसे दंड होने पर भी खराब मन वचन व काया की

शब्दार्थ

ए० एक दं० दंड ॥ २ ॥ ए०एक कि०क्रिया ॥ ३ ॥ ए० एक लो० लोक ॥ ४ ॥ ए० एक अ० अलोक ॥ ५ ॥ ए० एक ध० धर्म ॥ ६ ॥ ए० एक अ० अधर्म ॥ ७ ॥ ए० एक बं० बन्ध ॥ ८ ॥ ए० एक

सूत्र

एगा किरिया ॥ ३ ॥ एगे लोए ॥ ४ ॥ एगे अलोए ॥ ५ ॥ एगे धम्मे ॥ ६ ॥

भावार्थ

प्रवृत्तिसे एकही दंड गीना गयाहै.॥२॥ वह दंड क्रियासे उत्पन्न होता है. यद्यपि क्रियाके भेद अनेकहैं तोहिंपि उन सब का उत्पादक स्वभाव एक दंड ही है. इसलिये एकक्रिया कहीजातिहै षट्काया प्रमुखसे जोपाप लगता है उसे क्रिया कहतेहैं ॥३॥ चउदह रज्जात्मक एक लोक है वह षड्द्रव्य को एकसा धारक होने से एक कहा जाता है ॥ ४ ॥ लोक अलोक में रहाहुवा है. यद्यपि अलोक अनंत है तथापि एक आकाश द्रव्य से प्रणमित होने से एक कहा जाता है ॥ ५ ॥ लोकालोक का भेद करनेवाली धर्मास्तिकाया है. यह असंख्यात प्रदेशी होने पर चलण सहायक एक ही गुण से एक ही कही जाती है ॥ ६ ॥ धर्मास्तिकाया का प्रतिपक्ष अधर्मास्तिकाया है, वह भी असंख्यात प्रदेशी होने पर स्थिर स्वभाव का गुण होने से एक ही कहीजाती है ॥ ७ ॥ धर्मास्तिकाया व अधर्मास्तिकाया में प्रवर्तता हुवा जीव क्रिया द्वारा कर्मबंध करता है. उस बंध के प्रकृत्यादि चार भेद हैं तथापि आत्मा को संसार में परिभ्रमण कराने का ही स्वभाव होने से एक ही कहा जासकता है ॥ ८ ॥ बंध से मुक्त होना उसे मोक्ष कहते हैं उस का भी मात्र मुक्त

शब्दार्थ मो० मोक्ष ॥ ९ ॥ ए० एक पु० पुन्य ॥ १० ॥ ए० एक पा० पाप ॥ ११ ॥ ए० एक आ० आश्रव ॥ १२ ॥ ए० एक सं० संवर ॥ १३ ॥ ए० एक वे० वेदना ॥ १४ ॥ ए० एक णि० निर्जरा ॥ १५ ॥

सूत्र एगे अहम्मे. ॥ ७ ॥ एगे बंधे, ॥ ८ ॥ एगे मोक्खे. ॥ ९ ॥ एगे पुण्णे, ॥ १० ॥ एगे पावे, ॥ ११ ॥ एगे आसवे, ॥ १२ ॥ एगे संवरे, ॥ १३ ॥ एगा वेयणा,

भावार्थ करने का ही स्वभाव है इस लिये एक कहा गया है ॥ ९ ॥ पुण्य पाप का क्षय से मोक्ष होता है इसलिये पुण्य पाप का स्वरूप बताते हैं. पुण्य शुभकर्म की ४२ प्रकृतिरूप है परंतु सुखप्रदफल का देनेवाला होने से एक ही कहाजाता है ॥ १० ॥ पुण्य का प्रतिपक्षी पाप अशुभ कर्म की ८२ प्रकृतिरूप है, परंतु दुःखरूप फल देने का ही स्वभाव होने से एक कहाजाता है ॥ ११ ॥ शुभाशुभ कर्म का आना उसे आश्रव कहते हैं इस के ४२ भेद होते हुवे कर्म आगम का ही स्वभाव होने से एक कहा जाता है ॥ १२ ॥ आश्रव का प्रतिपक्षी संवर है. इस के ५७ भेद हैं परंतु कर्मों का निरोध करने का स्वभाव होने से एक कहाजाता है ॥ १३ ॥ संवर नहीं करनेवाले जीवों आश्रवसे संचित किये हुवे शुभाशुभ कर्मों के फल वेदते हैं. वह वेदना साता असाता रूप दो प्रकारकी है तो भी कर्मफल भोगने रूप ही स्वभाव होने से एक ही कही जाती है. ॥ १४ ॥ कर्मों का क्षय होना सो निर्जरा वह सकाम अकाम ऐसे दो तथा बारह प्रकार की होने पर कर्मक्षय करने का ही स्वभाव होने से एक कहीजाती है ॥ १५ ॥ प्रत्येक शरीर में अलग २

शब्दार्थ

ए० एक जी० जीव पा० प्रत्येक स० शरीर से ॥ १६ ॥ ए० एक जी० जीवके अ० विनाग्रहण किये वि० वैक्रेय ॥ १७ ॥ ए० एक म० मन ॥ १८ ॥ ए० एक व० वचन ॥ १९ ॥ ए० एक का० काया का वा० व्यापार ॥ २० ॥ ए० एक उ० उत्पात ॥ २१ ॥ ए० एक वि० विगति ॥ २२ ॥ ए० एक वि० शरीर

मूत्र

॥ १४ ॥ एगा णिज्जरा, ॥ १५ ॥ एगे जीवे पाडिक्कएणं सरीरएणं, ॥ १६ ॥ एगा जीवाणं अपरिआइत्ता विगुव्वणा, ॥ १७ ॥ एगे मणे, ॥ १८ ॥ एगा वयी, ॥ १९ ॥ एगे कायवायामे, ॥ २० ॥ एगा उप्पा, ॥ २१ ॥ एगा वियती, ॥२२॥

भावार्थ

एक ही जीव है. उस का स्वभाव प्राण को धारण करने का है ॥ १६ ॥ देवता को भी एक ही शरीर है. और जो वैक्रेय रूप बनाते हैं सो बाहिर के पुद्गलों ग्रहण कर बनाते हैं इसलिये भवधारणीय मूल शरीर एक ही है ॥ १७ ॥ सत्यासत्यादि भेद से मन के चार प्रकार है और सन्नीकी अपेक्षा से असंख्य भेद होते हैं परंतु मनन लक्षण से एक ही मन कहा गया है ॥ १८ ॥ उदारिक वैक्रेय व आहारिक शरीर से भाषा के पुद्गलों को ग्रहण कर निकालना उसे वचन कहते हैं उस के अनेक भेद होने पर भी सब वचन की सामान्यता से एक ही कहाजाता है ॥ १९ ॥ उदारिक शरीर युक्त आत्मा में वीर्य की परिणति उसे काया कहते हैं. उस क सात भेद व अनंत जीव होने से अनंत भेद हैं परंतु काया की प्रवृत्ति सामान्य होने से एक ही भेद कहागया है ॥ २० ॥ एक गति में एक समय में एक ही जीव उत्पन्न होता है ॥ २१ ॥ एक

शब्दार्थ ॥ २३ ॥ ए० एक ग० गति ॥ ए० एक आ० आगति ॥ २५ ॥ ए० एक च० चवन ॥ २६ ॥ ए० एक उ० उपपात ॥ २७ ॥ ए० एक त० तर्क ॥ २८ ॥ ए० एक स० संज्ञा ॥ २९ ॥ ए० एक म० मति ॥ ३० ॥ ए० एक वि० विज्ञान ॥ ३१ ॥ ए० एक वे० वेदना ॥ ३२ ॥ ए० एक छे० छेदन ॥ ३३ ॥

सूत्र एगा वियच्चा ॥ २३ ॥ एगा गती ॥ २४ ॥ एगा आगती ॥ २५ ॥ एगे चयणे ॥ २६ ॥ एगे उववाए ॥ २७ ॥ एगा तक्का ॥ २८ ॥ एगा सन्ना ॥ २९ ॥ एगा मन्ना ॥ ३० ॥ एगा विन्नू ॥ ३१ ॥ एगा वेयणा ॥ ३२ ॥ एगे छेयणे

भावार्थ ही मरता है ॥ २२ ॥ अकेला ही शरीर धारन करता है ॥२३॥ अकेला की गति, आगति है ॥ २४-२५ ॥ एककाही चवण और उत्पत्ति है. यद्यपि एक समय में समुच्चय जीवों की अपेक्षा से संख्यात असंख्यात व अनंत चवते हैं और उत्पन्न होते हैं परंतु प्रत्येक जीवों के कर्म भिन्न हैं इसलिये उन की उत्पत्ति व चवण में कुछ भी भिन्नता रहती है इसलिये एक ही मानाजाता है ॥ २६-२७ ॥ तर्क-विमर्श एक है यद्यपि तर्क वितर्क नाना प्रकारके उत्पन्न होते हैं तद्यपि तर्क एक ही नाम से कहाजाता है ॥ २८ ॥ आहारादि संज्ञा चार प्रकार की है ताहंपि इच्छा रूप से एक कहीजाती है ॥ २९ ॥ उत्पातादि मति चार प्रकारकी या अनेक भेदवाली है ताहंपि बुद्धिरूप से एक ही कहीजाती है ॥ ३० ॥ यद्यपि पंडितों का विज्ञानवाद अनेक प्रकारका है ताहंपि वाद का स्वरूप पंडितपना एक ही कहाजाता है ॥ ३१ ॥ शूलादिक वेदना अनेक

शब्दार्थ

ए० एक भे० भेदन ॥ ३४ ॥ ए० एक म० मरण अं० चरम शरीरवाले का ॥ ३५ ॥ ए० एक सं० शुद्ध अ० यथातथ्य प० पात्र ॥ ३६ ॥ ए० एक दु० दुःख जी० जीवको ॥ ३७ ॥ ए० एक भू० भूत ॥ ३८ ॥ ए० एक अ० अधर्म प० प्रतिमा जं० जिससे आ० आत्मा प० क्लेष पाता है ॥ ३९ ॥ ए०

सूत्र

॥ ३३ ॥ एगे भेयणे ॥ ३४ ॥ एगे मरणे अंतिमसारीरियाणं ॥ ३५ ॥ एगे संसुद्धे अहाभूते पत्ते ॥ ३६ ॥ एगे दुक्खे जीवाणं ॥ ३७ ॥ एगे भूते ॥ ३८ ॥ एगा अहम्मपडिमा जं से आया पडिकिलेसति ॥ ३९ ॥ एगा धम्मपडिमा जं से

भावार्थ

प्रकारकी है परंतु वेदना एक ही नाम से कहीजाती है ॥ ३२ ॥ खड्गादि से छेदने के व भालादि से भेदने के अनेक प्रकार है ताहंपि छेदन भेदन एक २ ही कहाजाता है ॥ ३३-३४ ॥ चरम शरीरी मनुष्यों को मरना एक ही वार है फीर वे मुक्त होजाते हैं ॥ ३५ ॥ इस जगत में अत्युत्तम यथाभूत पात्र एक अत्यंत शुद्ध श्री तीर्थंकर केवली भगवान ही है ॥ ३६ ॥ चरम शरीरी जीवों उसी भव में मोक्ष में जावें इसलिये एक ही दुःख कहागया है और सब दुःख का क्षय होने से अन्य दुःखों का अभाव होता है॥३७॥ सब जीवों का आत्म रूप स्वभाव एक ही है ॥ ३८ ॥ जिस अधर्म से आत्मा क्लेश पावे ऐसा पापरूप अधर्म का करनेवाला शरीर एक ही है ॥ ३९ ॥ जिस धर्म से आत्मा ज्ञानादि गुणकी प्राप्ति करे वैसा धर्म का करने-

शब्दार्थ एक ध० धर्म प० प्रतिमा जं० जिससे आ० आत्मा प० प्राप्ति पावे ॥ ४० ॥ ए० एक म० मन दे० देव अ० असुर म० मनुष्यों का तं० उस २ स० समय में ए० एक व० वचन दे० देव अ० असुर म०मनुष्यों का तं० उस २ स० समय में ए० एक का० काया का व्यापार दे० देव अ० असुर म० मनुष्यों का तं० उस २ स० समय में ए० एक उ० उत्थान क० कर्म ब० बल वी० वीर्य पु० पुरुषात्कार प० पराक्रम दे० देव अ० असुर म० मनुष्यों का तं० उस २ स० समय में ॥ ४१ ॥ ए० एक ना० ज्ञान ॥ ४२ ॥

सूत्र आया पजवज्जाए ॥ ४० ॥ एगे मणे देवासुरमणुआणं तंसितंसि समयंसि, एगा वयी देवासुरमणुआणं तंसितंसि समयांसि, एगे कायवायामे देवासुरमणुयाणं तंसि तंसि समयंसि, एगे उट्ठाणकम्मबलवीरियपुरिसक्कारपरक्कमे देवासुरमणुयाणं तंसि तंसि समयंसि

भावार्थ वाचा शरीर एक है ॥ ४० ॥ विमानवासी, भुवनपत्यादि देवता व मनुष्य को मन योग, वचन योग, काया योग, तथा उत्थान[1] कर्म[2], बल[3], वीर्य[4], पुरुषात्कार[5], और पराक्रम[6], एक समय में एक २ ही होते हैं. क्यों कि समय अती सूक्ष्म होने से एक समय में दो क्रिया नहीं हो सकती हैं ॥ ४१ ॥ ज्ञानावरणीय का क्षय से उत्पन्न होवे सो ज्ञान. वह मतिज्ञानादिक पांच प्रकार का है तथापि जानने का स्वभावसे एक ही

१ कार्य के लिये उठना, २ कार्य को ग्रहण करना, ३ शरीर का सामर्थ्य, ४ कार्य में प्रवृत्ति करना ५ कार्य निपजाना, ६ कार्य पार पहोंचाना.

शब्दार्थ

सूत्र

भावार्थ

ए० एक दं० दर्शन ॥ ४३ ॥ ए० एक च० चारित्र ॥ ४४ ॥ ए० एक स० समय ॥ ४५ ॥ ए० एक प० प्रदेश ॥ ४६ ॥ ए० एक प० परमाणु ॥ ४७ ॥ ए० एक सि० सिद्धि ॥ ४८ ॥ ए० एक सि० सिद्ध ॥ ४९ ॥ ए० एक प० निर्वाण ॥ ५० ॥ ए० एक प० मोक्ष ॥ ५१ ॥ ए० एक स० शब्द ॥ ५२ ॥

॥ ४१ ॥ एगे नाणे ॥ ४२ ॥ एगे दंसणे ॥ ४३ ॥ एगे चरित्ते ॥ ४४ ॥ एगे समए ॥ ४५ ॥ एगे पएसे ॥ ४६ ॥ एगे परमाणु ॥ ४७ ॥ एगा सिद्धी ॥ ४८ ॥ एगे सिद्धे ॥ ४९ ॥ एगे परिनिव्वाणे ॥ ५० ॥ एगे परिनिव्वुए ॥५१॥

कहाजाता है ॥ ४२ ॥ दर्शनावरणीय का क्षय से उत्पन्न होवे सो दर्शन. उस के चक्षुदर्शनादि चार भेद हैं. परंतु वस्तु को बताने का ही स्वभाव होने से एक कहाजाता है ॥ ४३ ॥ चारित्र पांच प्रकारके हैं परंतु अविरति रोकनेका स्वभाव मात्र होने से एक कहाजाता है ॥ ४४ ॥ कालका अती सूक्ष्मभेद सो समय है. वह एक कहाजाता है क्यों कि उस से कोई सूक्ष्म काल नहीं है ॥ ४५ ॥ धर्मास्तिकायादिक का अवयव सो प्रदेश. वह एक ही है क्यों कि उन का दो विभाग नहीं होता है ॥ ४६ ॥ द्रव्य का अत्यंत सूक्ष्म भेद सो परमाणु इस को दो खण्ड नहीं होसकने से एक ही गीनाजाता है ॥ ४७ ॥ सिद्धशिला ॥ ४८ ॥ लाख योजन की एक ही है ॥ ४८ ॥ सब कर्मों से मुक्त होवे सो सिद्ध. वे अनंत है परंतु सब का सुख-रूप एक ही स्वभाव होने से एक कहाजाता है ॥ ४९ ॥ सब दुःखों से मुक्त होना सो निर्वाण वह भी एक है ॥ ५० ॥ सर्वथा प्रकार से शारीरिक मानसिक दुःख से रहित होना सो मोक्ष एक ही है ॥ ५१ ॥ श्रोते-

शब्दार्थ

ए० एक रू० रूप ॥ ५३ ॥ ए० एक गं० गंध ॥ ५४ ॥ ए० एक र० रस ॥ ५५ ॥ ए० एक फा० स्पर्श ॥ ५६ ॥ ए० एक सु० अच्छा स० शब्द ए० एक दु० खराब स० शब्द ॥ ५७ ॥ ए० एक सु० अच्छा रूप ए० एक दु० खराबरूप ॥ ५८ ॥ ए० एक दी० बडा ए० एक र० छोटा ॥ ५९ ॥ ए० एक वं० गोल ए० एक तं० त्रिकोण ए० एक च० चौरस ए० एक पि० लंबगोल ए० एक प० परिमंडल ॥ ६० ॥ ए० एक कि० कृष्ण ए० एक नी० नील ए० एक लो० रक्त ए० एक ह० पीला ए० एक सु० शुक्ल॥६१

सूत्र

एगे सद्दे ॥ ५२ ॥ एगे रूवे ॥ ५३ ॥ एगे गंधे, ॥ ५४ ॥ एगे रसे ॥ ५५ ॥ एगे फासे ॥५६॥ एगे सुब्भिसद्दे, एगे दुब्भि सद्दे ॥ ५७ ॥ एगे सुरूवे एगे दुरूवे, ॥ ५८ ॥ एगे दीहे, एगे रहस्से ॥५९॥ एगे वट्टे, एगे तंसे, एगे चउरंसे, एगे पिहुले, एगे परिमंडले ॥६०॥ एगे किण्हे, एगे नीले, एगे लोहिए, एगे हालिद्दे, एगे सुक्किल्ले,

भावार्थ

न्द्रिय को ग्राह्य रूप होनेवाला एक ही प्रकार का शब्द है ॥ ५२ ॥ नेत्र का विषय रूप शरीर का आकार एक है ॥ ५३ ॥ नासिका के विषय रूप गंध एक है ॥ ५४ ॥ जिह्वा विषय रूप रस एक है ॥ ५५ ॥ काया का विषय रूप स्पर्श एक है ॥ ५६ ॥ एक अच्छा शब्द एक कठिन शब्द ॥ ५७ ॥ एक अच्छा रूप और एक खराब रूप ॥ ५८ ॥ एक लंबी कायावाला और एक ठींगना ॥ ५९ ॥ वर्तुलाकार, त्रिकोन, चतुष्कोन, लंबगोल और परिमंडल ऐसे भिन्न २ संस्थान एक एक है ॥ ६० ॥ एक कृष्ण, नील, रक्त,

शब्दार्थ

ए० एक सु० अच्छीगंध ए० एक दु० दुरभिगंध ॥ १२ ॥ ए० एक ति० तीखा ए० एक क० कडवा ए० एक क० कसायला ए० एक अं० खट्टा ए० एक म० मधुर ॥ ६३ ॥ ए० एक क० कर्कश जा० यावत् लु० रूक्ष ॥ ६४ ॥ ए० एक पा० प्राणातिपात जा० यावत् ए० एक प० परिग्रह ए० एक को० क्रोध जा० यावत् लो० लोभ ए० एक पे० राग ए० एक दो० द्वेष जा० यावत् ए० एक प० परपरिवाद ए०

सूत्र

॥ ६१ ॥ एगे सुब्भिगंधे एगे दुब्भिगंधे, ॥ ६२॥ एगे तित्ते, एगे कडुए, एगे कसाए, एगे अंबिले, एगे महुरे ॥ ६३ ॥ एगे कक्खडे जाव लुक्खे ॥ ६४ ॥ एगे पाणातिवाए जाव एगे परिग्गहे, एगे कोहे जाव लोभे एगे पेज्जे, एगे दोसे, जाव एगे परपरि-

भावार्थ

पीत और शुक्ल वर्ण है ॥ ६१ ॥ एक सुरभिगंध और एक दुरभिगंध ॥ ६२ ॥ एक तिक्त कटुक, कषायला, अम्बट, मधुर रस है ॥ ६३ ॥ एक कर्कश, कोमल लघु, गुरु, शीत, ऊष्ण, रूक्ष और स्निग्ध स्पर्श है॥६४॥ दश प्रकार के प्राणों से जीव को पृथक् करना उसे हिंसा कहते हैं. वह द्रव्य भाव के भेद से दो प्रकार की है अथवा विनाश परिताप व संक्लेश के भेद से तीन प्रकार की है परंतु हनन स्वभाव मात्र होने से एक ही कहीजाती है. वैसे ही एक मृषा, अदत्त, मैथुन, परिग्रह, क्रोध, मान, माया, लोभ, राग, द्वेष, कलह अभ्याख्यान, पैशुन्य, परपरिवाद, रति, अरति, माया मृषा, और मिथ्या दर्शन शल्य ऐसे अठारह पापस्थान

शब्दार्थ

एक अ० अरति र० रति ए० एक मा० मायामृषा ए० एक मि० मिथ्यादर्शन शल्य ॥ ६५ ॥ ए० एक पा० प्राणातिपात से वे० विरमण जा० यावत् प०परिग्रह से वे० विरमण ए०एक को०क्रोध से वि० विवेक जा० यावत् मि० मिथ्यादर्शन शल्य वि० विवेक ॥ ६६ ॥ ए० एक ओ० अवसर्पिणी ए० एक सु० सुसम सुसमा जा० यावत् ए० एक दु० दुसम दुसमा ए० एक उ० उत्सर्पिणी ए० एक दु० दुसम दुसमा

सूत्र

वाए एगा. अरतिरति एगे मायामोसे एगे मिच्छादंसणसल्ले ॥ ६५ ॥ एगे पाणाइ-
वायवेरमणे जाव परिग्गहवेरमणे, एगे कोहविवेगे जाव मिच्छादंसणसल्लविवेगे
॥ ६६ ॥ एगा ओसप्पिणी एगा सुसमसुसमा जाव एगा दुसमदुसमा एगा उसप्पि-

भावार्थ

एक २ है ॥ ६५ ॥ वैसे ही किसी भी जीव की घात से निवर्तना उसे एक अहिंसा नाम से बोलायीजाती है. वैसे ही मृषावाद, अदत्तादान यावत् मिथ्या दर्शन शल्य यों अठारह पाप स्थान से निवर्तना ॥ ६६ ॥ एक अवसर्पिणी काल है जिस में आयुष्य शरीर प्रमुख प्रतिसमय घटते रहते हैं उस के छ आरे में से पहिला एक आरा सुसम सुसमा (मात्र सुख ही) दूसरा सुसम, तीसरा सुसम दुसम, चौथा दुसम सुसम, पांचवा दुसम और छट्ठा दुसम दुसमा है. और जहां आयुष्य शरीर प्रमुख वृद्धि पाते रहते हैं उसे उत्सर्पिणी कहते हैं. उस में दुसम दुसमा से यावत् सुसम सुसमा ऐसे छ विभाग हैं. इन उत्सर्पिणी व अवस-

शब्दार्थ

ए० एक सु० सुसम सुसमा ॥ ६७ ॥ ए० एक णे० नारकी की व० वर्गणा ए० एक अ० असूर कुमारकी व० वर्गणा च० चौवीस दं० दंडक जा० यावत् ए० एक वे० वैमानीक की व० वर्गणा ॥ ६८ ॥ ए० एक भ० भवसिद्धिया की व० वर्गणा ए० एक अ० अभवसिद्धिया की व० वर्गणा ए० एक भ० भवसिद्धिया णे० नारकी की व० वर्गणा ए० एक अ० अभवसिद्धिया ने० नारकी की व० वर्गणा ए० ऐसे जा० यावत् ए० एक भ० भवसिद्धिया वे० वैमानिक की व० वर्गणा ए० एक अ० अभव सिद्धिया वे० वैमानिक

सूत्र

णी एगा दुसमदुसमा जाव एगा सुसमसुसमा ॥ ६७॥ एगा णेरइयाणं वग्गणा, एगा असुरकुमाराणं वग्गणा, चउविसदंडओ जाव एगा वेमाणियाणं वग्गणा ॥ ६८ ॥ एगा भवसिद्धियाणं वग्गणा, एगा अभवसिद्धियाणं वग्गणा, एगा भवसिद्धियाणं णेरइयाणं वग्गणा, एगा अभवसिद्धियाणं णेरइआणं वग्गणा, एवं जाव एगा भवसिद्धियाणं

भावार्थ

र्पिणी के बारह विभागों का स्वभाव भिन्न २ होने से प्रत्येक एक एक कहेजाते हैं ॥ ६७ ॥ नारकी के जीवों की एक वर्गणा (१) असुरकुमारादि दश भूवनपति की एक वर्गणा, पांच स्थावर जीवों की अलग २ एक एक वर्गणा, वैसे ही विगलेन्द्रिय तिर्यंच पंचेन्द्रिय मनुष्य और वैमानिक यों चौवीस दंडक के जीवों की अलग २ एक एक वर्गणा हुइ ॥ ६८ ॥ (२) भव सिद्धिये जीवों की एक वर्गणा है और (३) अभव

(१) एक ही नाम का बहुत समुदाय को वर्गणा कहते हैं (२) जो अनंत भव में भी मोक्ष जावेंगे (३) अनंत भव में भी मोक्ष नहीं जानेवालें.

शब्दार्थ

की व० वर्गणा ॥ ६९ ॥ ए० एक स० समदृष्टि की वर्गणा ए० एक मि० मिथ्यादृष्टि की व० वर्गणा ए० एक स० सममिथ्यादृष्टि की व० वर्गणा ए० एक स० समदृष्टि णे० नारकी की व० वर्गणा ए० एक मि० मिथ्या दृष्टि णे० नारकी नारकी की व० वर्गणा ए० एक स० सममिथ्या दृष्टि णे० नारकी की व० वर्गणा ए० ऐसे जा० यावत् थ० स्थनित कुमारकी ए० एक मि० मिथ्यादृष्टि पु० पृथ्वी काया की व०वर्गणा ए० ऐसे जा० यावत् व० वनस्पति काया की ए० एक स०समदृष्टि बे० बेइन्द्रिय की ए० एक मि० मिथ्यादृष्टि

सूत्र

वेमाणियाणं वग्गणा, एगा अभवसिद्धियाणं वेमाणियाणं वग्गणा ॥ ६९ ॥ एगा सम्म दिट्ठियाणं वग्गणा, एगा मिच्छदिट्ठियाणं वग्गणा, एगा सम्ममिच्छदिट्ठियाणं वग्गणा । एगा सम्मदिट्ठियाणं णेरइयाणं वग्गणा, एगा मिच्छदिट्ठियाणं णेरइयाणं व-ग्गणा, एगा सम्ममिच्छदिट्ठियाणं णेरइयाणं वग्गणा, एवं जाव थणियकुमाराणं । एगा मिच्छदिट्ठियाणं पुढविक्काइयाणं वग्गणा एवं जाव वणस्सइ काइयाणं, एगा सम्म

भावार्थ

सिद्धिया की एक वर्गणा है:—ऐसे ही नरक के भव्य जीवों की व अभव्य जीवों की एक २ वर्गणा है यों वैमानिक तक चौवीस दंडक के भव्य और अभव्य जीवों की वर्गणा है ॥ ६९ ॥ समदृष्टि की एक वर्ग-णा, एक मिथ्यादृष्टि की वर्गणा और सममिथ्यादृष्टि की एक वर्गणा. समदृष्टि, मिथ्यादृष्टि और सममिथ्यादृष्टि नारकी की एक २ वर्गणा. वैसे ही असुरकुमारादि दशभुवनपति की वर्गणा जानना.

वे० वेइन्द्रिय की व० वर्गणा ए० ऐसे ते० तेइन्द्रिय की च० चउरेन्द्रिय की से० शेष ज० जैसे ने० नारकी जा० यावत् स० सममिथ्या दृष्टि वे० वैमानीक की व० वर्गणा ॥ ७० ॥ ए० एक क० कृष्ण पक्षिक की व० वर्गणा ए० एक सु० शुक्ल पक्षिक की वर्गणा ए० एक कि० कृष्ण पक्षिक णे० नारकी की व० वर्गणा ए० एक सु० शुक्ल पक्षिक णे० नारकी की व० वर्गणा ए० ऐसे च० चौवीसं द० दंडक में भा० कहना ॥ ७१ ॥

दिट्ठियाणं बेइंदियाणं वग्गणा, एगा मिच्छदिट्ठियाणं बेइंदियाणं वग्गणा, एवं तेइंदियाणं वि चउरिंदियाणवि सेसा जहा नेरइया, जाव एगा सम्ममिच्छदिट्ठियाणं वेमाणियाणं वग्गणा ॥ ७० ॥ एगा कण्हपक्खियाणं वग्गणा, एगा सुक्कपक्खियाणं वग्गणा, एगा कण्हपक्खियाणं णेरइयाणं वग्गणा, एगा सुक्कपक्खियाणं णेरइयाणं वग्गणा, एवं च-

मिथ्यादृष्टि पृथ्वीकाया, अप्काया, तेउकाया, वाउकाया और वनस्पतिकाया की एक २ वर्गणा. एक सम-दृष्टि, व मिथ्या दृष्टि बेइन्द्रिय तेइन्द्रिय और चौरेन्द्रियकी एक २ वर्गणा शेष तिर्यंच पंचेन्द्रियसे लेकर वैमानिक तक की वर्गणा का अधिकार नारकी जैसे कहना ॥ ७० ॥ अर्धपुद्गल परावर्तन से अधिक संसार में रहने वाले कृष्णपक्षी कहे जाते हैं और जिसको अर्धपुद्गल परावर्तन करने का है वे शुक्लपक्षी कहे जाते हैं नरकादि चौवीस दंडकों में एक २ वर्गणा कृष्णपक्षी जीवों की है और एक २ वर्गणा शुक्लपक्षी जीवों की है ॥ ७१ ॥ इस जगत में कृष्ण लेश्यावाले जीवोंकी एक वर्गणा ऐसे ही नील, कापुत, तेजु, पद्म, और

शब्दार्थ

ए० एक क० कृष्णलेश्या की व० वर्गणा ए० एक णी० नीललेश्या की वर्गणा ए० ऐसे जा० यावत् सु०शुक्ल ले० लेश्याकी व० वर्गणा ए० एक क० कृष्ण लेशी ने० नारकी की व० वर्गणा जा०यावत् का० कापुत ले० लेशी ने० नारकी की व० वर्गणा ए० ऐसे ज० जिनको ज० जितनी ले० लेश्या भ० भुवन पति वा० व्यंतर पु० पृथ्वी आ० अप् व० वनस्पति का० काया की च० चार ले० लेश्या ते० अग्नि वा० वायु बें० बेइन्द्रिय ते० तेइन्द्रिय च० चउरिन्द्रिय की ति० तीन ले० लेश्या प० पंचेन्द्रिय ति० तिर्यंच यो-

सूत्र

उवीस दंडओवि भाणियव्वो ॥ ७१ ॥ एगा कण्ह लेस्साणं वग्गणा, एगा णील लेस्साणं वग्गणा, एवं जाव सुक्कलेस्साणं वग्गणा, एगा कण्हलेस्साणं नेरइयाणं वग्गणा जाव काउलेस्साणं नेरइयाणं वग्गणा एवं जस्स जति लेस्साओ भवणवइ वाणमंतर पुढविआउवणस्सइकाइयाणं चत्तारि लेस्साओ, तेऊवाउबेंदियतेइंदियचउरिंदियाणं तिन्नि लेस्साओ पंचिंदिय तिरिक्ख जोणियाणं मणुस्साणं छलेस्साओ, जोइ-

भावार्थ

शुक्ल लेश्यावाले जीवों की एक २ वर्गणा. उस में से कृष्ण लेश्या वाले नरक के जीवों का समुदाय, नील लेश्या वाले नरक के जीवों का समुदाय और कापुत लेश्यावाले नरक के जीवोंका समुदाय एक २ है. ऐसे नरकी में तीन लेश्याओं हैं और इसी तरह जिस दंडक में जितनी वर्गणा होवे उन सब को एक २ के नाम से कहना. भवनपति, व्यंतर, पृथ्वी, पानी और वनस्पति में चार लेश्या हैं. अग्नि, वायु, द्वि इन्द्रिय, त्रिइन्द्रिय और चौरेन्द्रिय में तीन २ लेश्याओं हैं तिर्यंच पंचेन्द्रिय और मनुष्य में छ लेश्याओं,

शब्दार्थ

नि की म० मनुष्य की छ० छह ले० लेश्या जो० ज्योतिषी की ए० एक ते० तेजस् ले० लेश्या वे० वैमानिक की ति० तीन उ० उपर की ले० लेश्या ए० एक क० कृष्णलेशी भ० भवसिद्धिया की व० वर्गणा ए० एक क० कृष्ण ले० लेशी अ० अभव सिद्धिया की व० वर्गणा ए० ऐसे छ० छह ले० लेश्या में दो० दो २ प० पद भा० कहना ए० एक क० कृष्णलेशी भ० भवसिद्धिया ने० नारकी की व० वर्गणा ए० एक क० कृष्णलेशी अ० अभव सिद्धिया ने० नारकी की व० वर्गणा ए० ऐसे ज० जीन की ज० जितनी

सूत्र

सियाणं एगा तेउलेस्सा, वेमाणियाणं तिन्नि उवरिमलेस्साओ । एगा कण्हलेस्साणं भवसिद्धियाणं वग्गणा, एगा कण्हलेस्साणं अभवसिद्धियाणं वग्गणा, एवं छसुविलेस्सासु दोदो पयाणि भाणियव्वाणि. एगा कण्हलेस्साणं भवसिद्धियाणं नेरइयाणं वग्गणा, एगा कण्हलेस्साणं अभवसिद्धियाणं नेरइयाणं वग्गणा, एवं जस्स जति लेसाओ त-

भावार्थ

ज्योतिषी में एक तेजु लेश्या और वैमानिक में ऊपर की तीन लेश्याओं. कृष्ण लेश्या वाले भव्य जीवो की एक वर्गणा और अभव्य जीवोंकी एक वर्गणा ऐसे ही शेष लेश्याओं में भव्य और अभव्य जीवों की वर्गणा का दो दो पद कहना. कृष्ण लेश्या वाले भवसिद्धिया नारकी के जीवों की एक वर्गणा, और कृष्ण लेश्या वाले अभवसिद्धिया नारकी के जीवों की एक वर्गणा ऐसे जिस दंडक में जितनी लेश्या होवे उतनी ही चौवीस दंडक में भव्य अभव्य जीवों की वर्गणा कहना. कृष्ण लेश्या वाले समदृष्टि की

शब्दार्थ

ले० लेश्या त० उनकी त० उतनी भा० कहना जा० यावत् वे० वैमानिक की ए० एक क० कृष्णलेशी स० समदृष्टि व० वर्गणा ए० एक क० कृष्णलेशी मि० मिथ्यादृष्टि की व० वर्गणा ए० एक क० कृष्णलेशी स० सममिथ्यादृष्टि की व० वर्गणा ए० ऐसे छ० छह ले० लेश्या में जा० यावत् वे० वैमानिक जे० जिसमें ज० जितनी दि० दृष्टि ए० एक क० कृष्णलेशी क० कृष्णपाक्षिक की व० वर्गणा ए० एक कृष्णलेशी सु० शुक्ल पक्षिक की व० वर्गणा जा० यावत् वे० वैमानिक की ज० जिनकी ज० जितनी ले० लेश्या ए० ये

सूत्र

स्स तत्तिया भाणियव्वाओ, जाव वेमाणियाणं । एगा कण्हलेस्साणं सम्मदिट्ठियाणं वग्गणा, एगा कण्हलेस्साणं मिच्छदिट्ठियाणं वग्गणा, एगा कण्हलेस्साणं सम्ममिच्छदिट्ठियाणं वग्गणा एवं छसुवि लेस्सासु जाव वेमाणियाणं जेसिं जहिं दिट्ठीओ । एगा कण्हलेस्साणं कण्हपक्खियाणं वग्गणा, एगा कण्हलेस्साणं सुक्कपक्खियाणं वग्गणा

भावार्थ

एक वर्गणा, कृष्ण लेश्या वाले मिथ्यादृष्टि की एक वर्गणा और कृष्ण लेश्या वाले सममिथ्यादृष्टि की एक वर्गणा. ऐसे ही शेष लेश्याओं में तीनों पद कहना. और चौविस दंडक में भी जहां जितनी लेश्या की प्राप्ति होवे वहां उनकी लेश्या वाले समदृष्टि, मिथ्यादृष्टि व सम मिथ्यादृष्टि वाले की वर्गणा कहना. कृष्ण लेश्या वाले कृष्णपक्षी जीवों की एक और शुक्लपक्षी जीवों की एक २ वर्गणा है. वैसे ही सब लेश्या वालों का अलग २ समुदाय दोनों पक्ष वालों का है. और वैसे ही चौविस दंडक में जहां जितनी लेश्या की

शब्दार्थ

सूत्र

भावार्थ

अ० आठ च० चौवीस दंडक में ॥ ७२ ॥ ए० एक ति० तीर्थसिद्ध की व० वर्गणा ए० एक अ० अतीर्थसिद्धकी व० वर्गणा ए० ऐसे जा० यावत् ए० एक ए० एकसिद्धकी व० वर्गणा ए० एक अ० अनेक सि-

जाव वेमाणियाणं, जस्स जति लेसाओ एए अट्ठ चउवीस दंडया ॥ ७२ ॥ एगा तित्थसिद्धाणं वग्गणा, एगा अतित्थ सिद्धाणं वग्गणा एवं जाव एगा एगसिद्धाणं व-

प्राप्ति होवे वहां उतनी ही लेश्या की वर्गणा दोनों पक्ष आश्रित कहना पूर्वोक्त आठों बोल चौविस दंडक पर अलग २ कहना. ॥ ७२ ॥ (१) चतुर्विध संघकी स्थापना हुवे बाद मुक्ति में गये सो तीर्थसिद्ध पुंडरीकादि गणधर उनकी एक वर्गणा. (२) संघकी स्थापना हुवे पहिले जाति स्मरणादि ज्ञान से मुक्ति जाने वाले अतीर्थसिद्ध मरुदेवी आदि उन अतीर्थसिद्धों की एक वर्गणा. (३) तीर्थंकर सिद्ध की एक वर्गणा. (४) अतीर्थंकर सिद्ध-गौतम गणधरादिक सामान्य केवलज्ञानकी मर्यादा पालकर मुक्ति गये उनों की एक वर्गणा, (५) स्वयंबुद्धसिद्ध गुरु का उपदेश विना स्वयं प्रतिबोध पाकर मुक्त होनेवाले अनाथी मुनिका एक समुदाय (६) प्रत्येकबुद्धसिद्ध वस्तु को देख कर मुक्ति में जानेवाले नमिराजादिक का एक समुदाय (७) बुद्ध बोधित सिद्ध गुरुके पाससे ज्ञान श्रवण कर मुक्तिमें जानेवाले गजसुकुमारादिक का समुदाय (८) स्त्रीलिंग सिद्ध स्त्रियों के लिंग से सिद्ध होनेवाले राजेमति आदि (९) पुरुष लिंग सिद्ध, थावरचापुत्र पुरुष लिंग से मुक्त हुवे (१०) नपुंसक लिंग सिद्ध-गांगेय आदि नपुंसक लिंग से सिद्ध हुवे

शब्दार्थ

द्धकी वर्गणा ए० एक प० प्रथम समय के सिद्धकी व० वर्गणा ए० ऐसे जा० यावत् अ० अनंत समय के सिद्धकी व० वर्गणा ॥ ७३ ॥ ए० एक प० परमाणु पो० पुद्गल की व० वर्गणा ए० ऐसी जा० यावत् ए० एक अ० अनंत प० प्रदेशी खं० स्कन्ध पो० पुद्गल की व० वर्गणा ए० एक ए० एकप्रदेश ओ० अवगाह ना करने वाले पो० पुद्गल की व० वर्गणा जा० यावत् ए० एक अ० असंख्यात प० प्रदेश ओ० अवगा-

सूत्र

गणा, एगा अणेग सिद्धाणं वग्गणा, एगापढमसमयसिद्धाणं वग्गणा, एवं जाव अणंतसमयसिद्धाणं वग्गणा ॥ ७३ ॥ एगा परमाणुपोग्गलाणं वग्गणा एवं जाव एगा अणंतपएसियाणं खंधाणं पोग्गलाणं वग्गणा एगा एगपएसो गाढाणं पोग्गलाणं वग्गणा जाव एगा असंखेज्जपएसोगाढाणं पोग्गलाणं वग्गणा, एगा एगसमय

भावार्थ

(११) स्वलिंग सिद्ध-अर्जुनमाली आदि साधु का लिंग से मुक्ति में गये (१२) अन्य लिंग सिद्ध असोचा केवली आदि अन्य लिंग से मुक्ति में गये. (१३) गृहलिंगसिद्ध मरुदेवी माता गृहस्थ में ही सिद्ध हुवे (१४) एकसिद्ध-महावीर स्वामी की जैसे एक ही समय में सिद्ध होनेवाले और (१५) अनेक सिद्ध ऋषभदेव जैसे एक समयमें अनेक सिद्ध होनेवाले जीवोंकी एक२ वर्गणा. विरह पडे बाद प्रथम समयमें सिद्ध दूसरे, तीसरे यावत् अनंत समय में सिद्ध बने हुवे जीवोंकी एक२ वर्गणा है ॥७३॥ चर्मचक्षु से जो नहीं दीख ता है अथवा जिस पुद्गल का दो विभाग नहीं हो सकता है उसे परमाणु कहते हैं. ऐसे सूक्ष्म परमाणुओं

शब्दार्थ

हना करने वाले पो० पुद्गल की वर्गणा ए० एक ए० एकसमय की ठि० स्थितिवाले पो०पुद्गल की व०वर्गणा जा० यावत् अ०असंख्यात स०समयकी ठि०स्थितिवाले पो०पुद्गलकी व०वर्गणा ए०एक ए०एक गुण काला पो० पुद्गल की व० वर्गणा जा०यावत् ए०एक अ०असंख्यात गु०गुणकाला पो०पुद्गलकी व० वर्गणा ए०ऐसा

सूत्र

ठितियाणं पोग्गलाणं वग्गणा, जाव असंखेज्जसमयठितिआणं पोग्गलाणं वग्गणा, एगा एगगुणकालयाणं पोग्गलाणं वग्गणा जाव एगा असंखेज्ज एगा अणंत गुणकालयाणं पोग्गलाणं वग्गणा, एवं वण्ण गंध रस फासा भाणियव्वा, जाव एगा अणंतगुण लु-

भावार्थ

की एक वर्गणा है और इसी तरह दो परमाणु मिले उसे द्विप्रदेशी स्कंध, तीन मिले वह तीन प्रदेशी स्कंध चार, पांच, छ, सात; आठ, नव, दश यावत् संख्यात, असंख्यात, और अनंत प्रदेशी स्कंध की एक २ वर्गणा है. यह द्रव्य का कथन हुवा अब क्षेत्र का कथन करते हैं. क्षेत्र का एक ही प्रदेश की अवगाहना करके रहनेवालें पुद्गलों की वर्गणा, यों दो प्रदेश, तीन प्रदेश यावत् संख्यात असंख्यात ÷ प्रदेश की अवगाहना करके रहनेवाले पुद्गलों की एक २ वर्गणा है. अब काल का कथन करते हैं. एक समय की स्थितिवाले

÷ चउदह रज्ज्वात्मक लोक के असंख्यात ही आकाश प्रदेश हैं और काल के भी असंख्यात समय हैं इसलिये इन दोनों स्थानपें अनंत का बोल नहीं ग्रहण कीया है.

शब्दार्थ वर्गणा ए० ऐसा व० वर्ण गं० गंध र० रस फा० स्पर्श भा० कहना जा० यावत् ए० एक अ० अनंतगुण लु० रुक्ष पो० पुद्गल की व० वर्गणा ए० एक ज० जघन्य प० प्रदेशी सं० स्कन्ध की ब० वर्गणा ए० एक उ० उत्कृष्ट प० प्रदेशी खं० स्कन्ध की व० वर्गणा ए० एक अ० मध्यम प्रदेशी खं० स्कन्ध की व० वर्गणा ए० ऐसे ज० जघन्य ओ० अवगाहना वाले उ० उत्कृष्ट ओ० अवगाहना वाले अ० मध्यम ओ० अवगाहनावाले ज० जगन्य ठि० स्थितिवाले उ० उत्कृष्ट ठि० स्थितिवाले अ० मध्यम ठि० स्थितिवाले ज०

सूत्र खंधाणं पोग्गलाणं वग्गणा, एगा जहन्नपएसियाणं खंधाणं वग्गणा, एगा उक्कोस पएसियाणं खंधाणं वग्गणा, एगा अजहन्नुक्कोस पएसियाणं खंधाणं वग्गणा, एवं ज-हन्नोगाहणगाणं, उक्कोसोगाहणगाणं, अजहन्नुक्कोसोगाहणगाणं, जहन्न ठितियाणं

भावार्थ एक ही आकाश प्रदेश में अवगाह कर रहेहुवे परमाणु पुद्गल की एक वर्गणा. ऐसे ही दो, तीन, चार यावत संख्यात असंख्यात समय की स्थितिवाले पुद्गलों की भी अलग २ एक एक वर्गणा है. अब भाव का कथन करते हैं एक गुण काले पुद्गलों की वर्गणा यों दो, तीन, चार यावत् संख्यात, असंख्यात व अनंत गुण काले पुद्गलों की अलग २ एक २ वर्गणा. ऐसे ही पांच वर्ण, दो गंध, पांच रस और आठ स्पर्श इन बीसों ही बोल के पुद्गलोंकी एक गुण से लेकर अनंत गुणतक की अलग २ वर्गणा कह देना. दो परमाणु आदि के स्कंध रूप जघन्य प्रदेशी स्कंध की एक वर्गणा. अनंत परमाणु प्रदेशवाला उत्कृष्ट प्रदेशी

शब्दार्थ

जघन्य गुणकाला उ० उत्कृष्ट गुणकाला अ० मध्यम गुण काला की ए० ऐसे व० वर्ण गं० गंध र० रस फा० स्पर्श की व० वर्गणा भा० कहना जा० यावत् ए० एक अ० मध्यम गुण लु० रूक्ष पो० पुद्गल की व० वर्गणा ॥ ७४ ॥ ए० एक जं० जंबूद्वीप स० सर्व दी० द्वीप स० समुद्र में जा० यावत् अ० अर्ध अं०

सूत्र

उक्कोस ठितियाणं, अजहन्नुक्कोस ठितियाणं, जहन्नगुण कालगाणं, उक्कोसगुण काल गाणं, अजहन्नुक्कोस गुण कालगाणं, एवं वण्ण गंध रस फासाणं वग्गणा भाणियव्वा जाव एगा अजहन्नुक्कोस गुण लुक्खाणं पोग्गलाणं वग्गणा ॥ ७४ ॥ एगे जंबूदीवे

भावार्थ

का स्कंध की एक वर्गणा. एक जघन्य उत्कृष्ट प्रदेश के स्कंध की वर्गणा. ऐसे ही जघन्य अवगाहना का स्कंध उत्कृष्ट अवगाहना का स्कंध और मध्यम अवगाहना का स्कंध की वर्गणा. जघन्य (एक दो समयकी) स्थितिवाले उत्कृष्टी स्थिति (असंख्यात समय की स्थिति) वाले और मध्यम स्थितिवाले पुद्गलों का स्कंध की वर्गणा. जघन्य से एक दो गुण काला वर्णवाले उत्कृष्ट अनंत गुण काला वर्णवाले और मध्यम गुण काले पुद्गलों का स्कंध की वर्गणा. ऐसे ही पांच वर्ण, दो गंध, पांच रस और आठ स्पर्श का जघन्य, उत्कृष्ट और मध्यम गुण आश्रित पृथक् २ वर्गणाका कथन करना ॥ ७४ ॥ एक जम्बू-द्वीप नामक द्वीप सब द्वीप समुद्रके मध्य भाग में हैं. जम्बू नामक शाश्वत वृक्ष इस में रहाहुवा है और सब से छोटा व गोल है. यह द्वीप एक लक्ष योजन का है इस की परिधि ३१६२२७ योजन ३ कोश १२८

शब्दार्थ

अंगुल च० और किं० किंचित् वि० विशेष प० परिधिसे ॥ ७५ ॥ ए० एक स० श्रमण भ० भगवान् म० महावीर इ० इस ओ० अवसरर्पिणी में च० चौवीस ति० तीर्थंकर में च० छेले ति० तीर्थंकर सि० सिद्ध बु० बुद्ध मु० मुक्त जा० यावत् स० सर्व दु० दुःख से प० दूर ॥७६॥ अ० अनुत्तर उ० उपपातिकादिक दे० देवों का ए० एक हाथ उ० ऊंचे उ० ऊचपने प० कहा ॥ ७७ ॥ अ० आर्द्रा न० क्षत्रका ए० एकतारा प०

सूत्र

सव्वदीवसमुद्दाणं जाव अद्धंगुलगं च किंचि विसेसेहिं परिक्खेवेणं ॥ ७५ ॥ एगे समणे भगवं महावीरे इमीसे ओसप्पिणीए चउवीसाए तित्थगराणं चरिमतित्थयेर सिद्धे बुद्धे मुत्ते जाव सव्वदुक्खप्पहीणे ॥ ७६ ॥ अणुत्तरोववाइयाणं देवाणं एगारयणी उड्ढं उच्चत्तेणं पन्नत्ता॥७७॥ अद्दा नक्खत्ते एगतारे पन्नत्ते, चित्ता नक्खत्ते

भावार्थ

धमुष्य और ॥१३॥ आंगुलकी है ॥७५॥ इस अवसर्पिणी कालके आदिनाथ आदि चौविस तीर्थंकरों में से चरम तीर्थंकर श्री महावीर देव अकेले ही सिद्ध हुवे, कृतार्थ हुवे, केवल ज्ञान से संसार मे सब पदार्थ को जाने कर्म रहित हुवे यावत् सब दुःखों से मुक्त हुवे ॥ ७६ ॥ विजय, विजयंत, जयंत अपराजित और सर्वार्थ सिद्ध इन पांच अनुत्तर विमान के देवता के शरीर एक हाथ के ऊंचे कहे हैं ॥ ७७ ॥ आर्द्र, चित्रा, और स्वाति नक्षत्र का एक २ तारा है ॥ ७८ ॥ एक प्रदेश को अवगाह कर रहनेवाले परमाणुरूप पुद्गल

शब्दार्थ

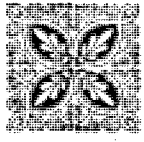
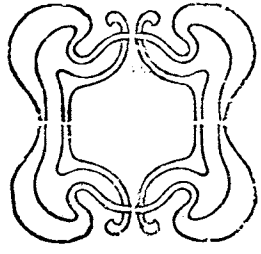
कहा, चि० चित्रान क्षत्रका ए०एकतारा प० कहा, सा० स्वाजिन क्षत्रका ए० एकतत्रा प०कहा. ॥७८॥ए०एक प० प्रदेश ओ० अवगाहना करने वाले पो० पुद्गलें अ० अनंता प० कहा० ए० ऐसे ए० एक समय की ठि० स्थितिवालें ए० एक गुण काला पो० पुद्गल अ० अनंत प०कहा जा० यावत् ए० एक गुण लु० रुक्ष पु० पुद्गल अ० अनंत प० कहे. ॥ ७९ ॥ *

सूत्र

एगतारे पन्नत्ते, साति नक्खत्ते एगतारे पन्नत्ते ॥७८॥ एगपएसोगाढा पोग्गला अणंतापन्नंता एवमेगसमयठितिया, एग गुण कालगा पोग्गला अणंता पन्नत्ता जाव, एग गुण लुक्खा पुग्गला अणंता पन्नत्ता ॥ ७९ ॥ इति पढमं ठाणं सम्मत्तं ॥ १ ॥

भावार्थ

तथा स्कंध रूप पुद्गल अनंते कहे हैं. एक समय की स्थितिवाले एक गुण काले पुद्गल यावत् एक गुण रुक्ष पुद्गल अनंते कहे है ॥ ७९ ॥ यह प्रथम स्थानक रूप ठाणांग सूत्र का प्रथम स्थानक समाप्त हुवा. इस में एक एक बोल का कथन कहा. अब दूसरे स्थान में दो दो बोल का कथन कहते हैं. ॥ १ ॥ ×


* द्वितीय स्थानकम् *

शब्दार्थ

ज० जो इ० यहां लो० लोक तं० उसका स० सर्व का दु० दोप्रकार तं० वह ज० जैसे जी० जीव अ० अजीव त० त्रस था० स्थावर स० सयोनिक अ० अयोनिक सा० आयुष्य सहित अ० आयुष्य रहित स० सइन्द्रिय अ० अनिन्द्रिय स० सवेदी अ० अवेदी स० रूपी अ० अरूपी स० सपुद्गली अ० अपुद्गली सं०

सूत्र

जदित्थणं लोगे तं सव्वं दुपडीआरं तंजहा जीवा चेव अजीवाचेव, तसेचेव थावरेचेव, सजोणियाचेव अजोणियचेव, साउयाचेव अणाउयचेव, सइंदियचेव अणिंदियचेव, सवेयगाचेव अवेयगाचेव, सरूविचेव अरूविचेव, सपोग्गलाचेव अपोग्गलाचेव, संसार

भावार्थ

अब श्री सुधर्मा स्वामी फरमाते हैं कि अहो जम्बू ! इस जगत में सब पदार्थ दो प्रकारके हैं सो बताते हैं. १ चेतना लक्षणवाला जीव २ और चेतना रहित सो अजीव। जीव के दो भेद, १ त्रस द्वीन्द्रियादिक २ स्थावर पृथिव्यादिक और भी जीव के दो भेद. १ चौरासी लक्षयोनि में उत्पन्न होव सो सयोनिक और २ विना योनि उत्पन्न होवे सो अयोनिक सिद्ध भगवंत। आयुष्य साहित जीव संसारी और आयुष्य रहित जीव सिद्ध। १ इन्द्रिय साहित जीव सइन्द्रिय और २ इन्द्रिय रहित जीव सो अणिन्द्रिय। १ वेद साहित जीव सवेदी और २ वेद रहित जीव अवेदी। १ सरीर साहित रूपी २ शरीर रहित अरूपी

शब्दार्थ संसारी अ०असंसारी सा०शाश्वत अ०अशाश्वत आ० आकाश नो०नहीं आ०आकाश ध०धर्म अ०अधर्म बं० बंध मो० मोक्ष पु० पुन्य पा० पाप आ० आश्रव सं० संवर वे० वेदना णि० निर्जरा ॥१॥ दो० दो कि०

सूत्र समावन्नगाचेव असंसारसमावन्नगाचेव, सासयचेव असासयचेव आगासेचेव नोआगासे-चेव, धम्मेचेव अधम्मेचेव, बंधेचेव मोक्खेचेव, पुण्णेचेव पावेचेव, आसवेचेव संवरेचे-व, वेयणाचेव णिज्जराचेव ॥ १ ॥ दो किरियाओ पन्नत्ता तंजहा—जीव किरियाचेव

भावार्थ सिद्ध। कर्म पुद्गल सहित और कर्म पुद्गल रहित। संसार में परिभ्रमण करनेवाले और संसार से मुक्त होनेवाले। जन्म मरण से मुक्त होने से शाश्वत जीव हैं और जन्म मरण करने से अशाश्वत जीव हैं. इस तरह जीव के दो २ भेद बतलायें अब अजीव के भेद बतलाते हैं. १ आकाश—अवगाह कर रहनेवाला २ नो आकाश—धर्मास्तिकाय प्रमुख। और भी अजीव के दो दो भेद बतलाते हैं १ धर्म—विरतिरूप धर्म २ पाप सो अधर्म। १ आश्रव रूप द्वार से जीव की साथ कर्मों बंधावे सो बंध २ सब कर्मो से मुक्त होना सो मोक्ष। १ दानादि करना सो पुण्य २ जीव हिंसादि करना सो पाप। १ कर्म आनेका मार्ग सो आश्रव २ आते कर्म का रुंधन करना सो संवर। सुख दुःख को भोगना सो वेदना २ उसे तपश्चर्यादि से दूर करना सो निर्जरा ॥ १ ॥ जिस प्रकार के कार्यों करने से कर्मरूप पुद्गलों का आत्मा से संबंध

शब्दार्थ — क्रिया प० कही तं० वह ज० जैसे जी० जीव क्रिया अ० अजीव क्रिया जी० जीव क्रिया दु० दोप्रकार से प० प्ररूपी तं० वह ज० जैसे सं० सम्यक्त्वक्रिया मि० मिथ्यात्वक्रिया अ० अजीव क्रिया दु० दोप्रकार से प० प्ररूपी तं० वह ज० जैसे इ० ईर्यापथिक स० संपरायिक ॥ २ ॥ दो० दो कि० क्रिया प०

सूत्र — अजीव किरियाचेवा, जीवकिरिया दुविहा पन्नत्ता तंजहा—सम्मत्त किरिआचेव, मिच्छत्त किरियाचेव, अजीवकिरिया दुविहा पन्नत्ता तंजहा ईरियावाहियाचेव, संपराइयाचेव ॥ २ ॥ दो किरियाओ पन्नत्ता तंजहा—काइयाचेव, अहिगराणियाचेव, काइया

भावार्थ — होता है उसी प्रकार के कार्यों को क्रिया कहते हैं. ऐसी क्रिया के दो भेद हैं. १ जीव का व्यापार से उत्पन्न होवे सो जीव क्रिया और २ अजीव का व्यापार से उत्पन्न होवे सो अजीव क्रिया । जीव क्रिया भगवानने दो प्रकारकी कही है. १ सम्यक्त्व क्रिया—सत्यतत्त्व की श्रद्धा करने रूप व्यापार २ मिथ्यात्व क्रिया—असत्य तत्त्व की श्रद्धा रूप जीव का व्यापार। अजीव क्रिया के दो भेद भगवानने कहे हैं. १ अकषायी जीवोंको योग की प्रवृत्ति से कर्मबंध होवे और तूर्तही झड जाय सो ईर्यापथिक क्रिया और २ सकषायी जीवों को योगों की प्रवृत्तिसे कर्म पुद्गलों आकर बंधावे सो सांपरायिक क्रिया. ॥ २ ॥ अब आगे सांपरायिक क्रिया के दो दो भेद बताते हैं. १ कायिकी क्रिया—कायाव। व्यापार से लगे सो, २ उपकरणों के व्यापार से जो कर्म पुद्गल आते हैं उसे अधिकरणिया क्रिया कहते

शब्दार्थ

प्ररूपी तं० वह ज० जैसे का० काइया अ० अधिकरणीया का० काइया क्रिया दु० दोप्रकार से प० प्ररूपी तं० वह ज० जैसे अ० अनुपरतकाइयाक्रिया दु० दुप्रयुक्त काइयाक्रिया अ० अधिकरणीया क्रिया दु० दोप्रकार से प० प्ररूपी तं० वह ज० जैसे सं० संयोजन अधिकरणीया णि० निवर्तन अधिकरणीया ॥ ३ ॥ दो० दो कि० क्रिया प० प्ररूपी तं० वह ज० जैसे पा० द्वेषकी प० परितापकी पा० द्वेषकी क्रिया दु० दोप्रकार से प० प्ररूपी तं० वह ज० जैसे जी० जीवद्वेषीया अ० अजीव

सूत्र

किरिया दुविहा पन्नता तंजहा अणुवरय कायकिरियाचेव, दुपउत्तकाय किरियाचेव अहिगरणिया किरिया दुविहा पन्नत्ता तंजहा संजोयणाहिगरणियाचेव, णिव्वत्तणाहिगरणिया चेव ॥ ३ ॥ दो किरियाओ पन्नत्ता तंजहा पाउसियाचेव पारियावणियाचेव पाउसिया किरिया दुविहा पन्नत्ता तंजहा जीव पाउसियाचेव; अजीव पाउसियाचेव

भावार्थ

हैं। इसमें से कायिकी क्रिया के दो भेद १ अविरति सम्यग्दृष्टि व मिथ्यादृष्टि काया की जो हलन चलन क्रिया करते हैं उसे अनुपरत कायिकी क्रिया कहते हैं. सुख दुःख उत्पन्न होने से या मन के खराब संकल्पों से प्रमत्त साधु को जो क्रिया लगती है उसे दुप्रयुक्त कायिकी क्रिया कहते हैं. अब अधिकरणिया क्रिया के दो भेद १ संयोजनाधिकरणिया—खड्गादि शस्त्रों को मुष्टि हाथा लगाना. २ निवर्तनाधिकरणियाशस्त्र, घट्टी मूसलादिक बनाकर रखना ॥ ३ ॥ और भी क्रिया दो प्रकार की १ किसी पर द्वेष बुद्धि

शब्दार्थ

द्वेषीया प० परितापनीया कि० क्रिया दु० दो प्रकार से प० प्ररूपी तं० वह ज० जैसे स० स्वहस्त से प० दूसरे के हस्त से ॥ ४ ॥ दो० दोक्रिया प० प्ररूपी तं० वह ज० जैसे पा० प्राणातिपात क्रिया अ० अप्रत्याख्यान क्रिया पा० प्राणातिपात क्रिया दु० दोप्रकार से प० प्ररूपी तं० वह ज० जैसे स० स्वहस्त से पा० प्राणातिपात क्रिया प० दूसरे के हस्तसें पा० प्राणातिपात क्रिया

सूत्र

परियावणिया किरिया दुविहा पन्नत्ता तंजहा सहत्थपरियावणियाचेव; परहत्थपरियावणियाचेव ॥ ४ ॥ दो किरियाओ पन्नत्ता तंजहा पाणाइवाय किरियाचेव, अप्पच्चक्खाणकिरियाचेव । पाणाइवायकिरिया दुविहा पन्नत्ता तंजहा सहत्थपाणाइवाय किरि-

भावार्थ

करना सो पाउसिया (प्रद्वेषिकी) २ और किसी को ताडनादि करना या दुःख उपजाना सो परितापणिया (परितापनिकी)। इस में से पाउसिया क्रिया के दो भेद. १ किसी जीव से द्वेष करना सो जीव पाउसिया २ अजीव–स्तंभादि से अथडाने से उसपर द्वेष करना सो अजीव पाउसिया । दूसरी परियावणिया क्रिया के दो भेद १ अपने हाथ से अपने शरीर को व अन्य के शरीर को दुःख देना सो स्वहस्त परियावणिया. दूसरे के हाथ से अपने को या दूसरे को परिताप देना सो परहस्त परियावणिया क्रिया ॥ ४ ॥ और भी क्रिया दो प्रकार की प्राणातिपात जीव हिंसा से जो पाप कर्म बंधावे सो पाणाइ-

अ० अप्रत्याख्यान क्रिया दु० दोप्रकार स प० प्ररूपी तं० वह ज० जैसे जी० जीव अप्रत्याख्यान क्रिया अ० अजीव अप्रत्याख्यान क्रिया ॥ ५ ॥ दो० दो कि० क्रिया प० प्ररूपी तं० वह ज० जैसे आ० आरंभीया प० परिग्रहीया आ० आरंभीया क्रिया दु० दोप्रकार से प० प्ररूपी जी० जीव आरंभीया

याचेव, परहत्थपाणाइवाय किरियाचेव । अपच्चक्खाण किरिया दुविहा पन्नत्ता तंजहा जीव अपच्चक्खाण किरियाचेव, अजीव अपच्चक्खाण किरियाचेव ॥ ५ ॥ दोकिरिया-ओ पन्नत्ता तंजहा आरंभियाचेव, परिग्गाहियाचेव । आरंभिया किरिया दुविहा पन्नत्ता

वाइया (प्राणातिपातिकी) २ और विना प्रत्याख्यान से जो पाप बंध होवे सो अपच्चखाणिया क्रिया । इस में से प्रथम प्राणातिपातिकी क्रिया के दो भेद कहते हैं. १ क्रोधवशसे स्वहस्त करके अपने प्राण को या अन्य के प्राण को हणे सो स्वहस्त प्राणातिपात की क्रिया २ वैसे ही दूसरे के हस्त से अपने प्राणको या अन्य के प्राणों को हणें से परहस्त प्राणातिपात की क्रिया । दूसरी अप्रत्याख्यानी क्रिया के दो भेद १ वनस्पत्यादि जीव सहित वस्तु में प्रत्याख्यान विना कर्म बंधावे सो जीवअप्रत्याख्यानी क्रिया २ और मदिरादि अजीव में प्रत्याख्यान नहीं होने से अजीव अप्रत्याख्यान क्रिया होती है ॥ ५ ॥ और भी क्रिया दो प्रकारकी है. आरंभ से लगे सो आरंभिया और अन्य पुद्गलों में ममत्व से उत्पन्न होवे सो परिग्रहिया. उस में से आरंभिया क्रिया के दो भेद १ सचित्त मिट्टी आदि के आरंभ से कर्म बंधावे सो जीव आरंभिया

शब्दार्थ

अ० अजीव आरंभीया ए० ऐसे प० परिग्रहीया ॥ ६ ॥ दो० दोकिरिया प० प्ररूपी तं० वह ज० जैसे मा० मायावत्तिया मि० मिथ्यादर्शन वत्तिया मा० मायावत्तिया क्रिया दु० दोप्रकार से प० परूपी तं० वह

सूत्र

तंजहा जीव आरंभिआचेव अजीव आरंभिआचेव । एवं परिग्गाहियावि ॥ ६ ॥ दो किरियाओ पन्नत्ता तंजहा मायावत्तिआचेव, मिच्छादंसणवत्तिआचेव । मायावत्तिआकिरिया दुविहा पन्नत्ता तंजहा आयभाव वंकणयाचेव, परभाव वंकणयाचेव । मिच्छादंसणवत्तिआकिरिया दुविहा पन्नत्ता तंजहा ऊणाइरित्तमिच्छादंसणवत्तियाचेव, तव्वइरित्त

भावार्थ

२ जीव रहित कलेवर को अग्नि संस्कार तथा वस्त्रादि बनाने का आरंभ से कर्म बंधावे सो अजीव आरंभिया । ऐसे ही परिग्रही क्रिया के दो भेद. द्विपद चतुष्पदादिक की ममता करे सो जीव परिग्राहिया और सुवर्णादि की ममता करे सो अजीव परिग्राहिया ॥ ६ ॥ और भी क्रिया के दो भेद बतलाते हैं. १ कपट करने से लगे सो मायावत्तिया (माया प्रत्ययिकी) क्रिया २ मिथ्याकरणी करने से कर्म बंधावे सो. मिथ्यादर्शनवत्तिया ॥ इन में से माया प्रत्ययिक के दो भेद १ आभ्यंतर टेढा और बाहिर अच्छा बतलावे सो आत्मभाव वंकनता है २ खोटे लेख लिखकर अन्य को ठगना सो परभाव वंकनता क्रिया । दूसरी मिथ्यादर्शन क्रिया के दो भेद १ सर्वज्ञ के कथन से हीनाधिक माने सो ऊनातिरिक्त क्रिया जैसे कोई मिथ्यात्वी जीव को तिल बराबर दीपक बराबर अंगुष्ट बराबर है ऐसे कहे. २ तद्व्यातिरिक्त मिथ्यादर्शन

शब्दार्थ

ज० जैसे आ० आत्मभाव वंकनता प० परभाव वंकनता मि० मिथ्यादर्शन वत्तिया क्रिया दु० दो प्रकारकी प० परूपी तं० वह ज० जहां उ० उनातिरिक्त मिथ्यादर्शन वत्तिया त० तदव्यतिरिक्त मिथ्यादर्शन वत्तिया ॥ ७ ॥ दो० दोक्रिया प० परूपी तं० वह ज० जैसे दि० दिट्ठिया पु० पुट्ठिया दि० दिट्ठिया क्रिया दु० दो प्रकारसे प० प्ररूपी तं० वह ज० जैसे जी० जीवदिट्ठिया अ० अजीव दिट्ठिया ए० ऐसे पु० पुट्ठिया ॥ ८ ॥ दो० दोक्रिया प० प्ररूपी तं० वह पा० प्रातीतिकी सा० सामंतोपनिपातिकी दु० दोप्रकार से प० प्ररूपी तं०

सूत्र

मिच्छादंसणवत्तिआचेव ॥ ७ ॥ दो किरियाओ पन्नत्ता तंजहा दिट्ठियाचेव पुट्ठियाचेव दिट्ठिया किरिया दुविहा प० तं० जीवदिट्ठियाचेव, अजीवदिट्ठियाचेव । एवं पुट्ठियावि ॥ ८ ॥ दो किरियाओ प० तं० पाडुच्चियाचेव सामंतोवणिवाइयाचेव । पाडुच्चिया किरिया दुविहा प० तं० जीव पाडुच्चियाचेव अजीव पाडुच्चियाचेव । एवं सा-

भावार्थ

क्रिया जैसे कोई मिथ्यात्वी आत्मा का अस्तित्वको ही माने नहीं परंतु पंचभूत से आत्मा बना हुवा है ऐसा माने ॥ ७ ॥ और भी दो प्रकार की क्रिया कही है १ किसी वस्तु देखने से लगे सो दिट्ठिया (दृष्टिकी) २ और स्पर्शने से लगे सो पुट्ठिया ॥ दृष्टिकी क्रिया के दो भेद १ अश्व, गज, मनुष्यादि जीव वस्तु देखने से लगे सो जीव दृष्टिकी २ और चित्र, महल भूषणादि देखने से क्रिया लगे सो अजीव दृष्टिकी । ऐसे ही रागद्वेष से जीव अजीव को स्पर्शे सो जीव अजीव स्पर्शिया क्रिया ॥ ८ ॥ और भी क्रिया दो प्रकार की १ अपनी वस्तु की अन्य कोई निन्दा करता होवे जिस से उस पर रागद्वेष होवे सो प्रातीति की २

शब्दार्थ — वह जी० जीव प्रातीतिका अ० अजीव प्रातीतिका ए० ऐसे सा० सामंतोपनिपातिका ॥ ९ ॥ दो० दोक्रिया प० प्ररूपी तं० वह सा० स्वहस्तिकी णे० नेसत्थिया सा० स्वहस्तिकी क्रिया दु०दोप्रकार से प० प्ररूपी तं० वह ज० जैसे जी० जीवस्वहस्तिकी अ० अजीव स्वहस्तिकी ए० ऐसे णे० नेसत्थिया ॥ १० ॥ दो०

सूत्र — मंतोवणिवाइयावि ॥ ९ ॥ दो किरियाओ प० तं० साहत्थियाचेव, णेसत्थियाचेव; साहत्थिया किरिया दुविहा पन्नत्ता तंजहा—जीव साहत्थियाचेव, अजीव साहत्थिया चेव । एवं णेसत्थियावि ॥ १० ॥ दो किरियाओ प० तं० आणवणियाचेव वेयार-

भावार्थ — अपनी अच्छी वस्तु देख कर कोई प्रशंसा करे जिस से उस पर प्रेम भाव उत्पन्न होवे सो सामंतोपनिपातिकी. उस में से प्रातीतिकी के दो भेद जीव आश्री कर्म बंधे सो जीव प्रातीतिकी और अजीव आश्री कर्म बंधे सो अजीव प्रातीतिकी ऐसे ही जीव अजीव की अन्य से प्रशंसा सुन उन पर प्रेम उत्पन्न होवे सो जीव अजीव सामंतोपनिपातिकी ॥ ९ ॥ और भी क्रिया दो प्रकारकी १ अपने हस्त से बनाइ हुइ वस्तु से आरंभ उत्पन्न होवे सो स्वहस्तिकी क्रिया २ अयत्ना से वस्तु फेंकने से जो घात होवे सो नेसत्थिया (नैशस्त्रिकी) उस में से प्रथम क्रिया के दो भेद १ अपने हाथ में जीव को पकडकर जीव को मारना २ अथवा अजीव को पकड कर जीव को मारना सो जीव अजीव स्वहस्तिकी क्रिया हुई ऐसे ही नेसत्थिया क्रिया के दो भेद—सजीव, अजीव वस्तु उपर से डाले ॥ १० ॥ और भी क्रिया के दो भेद कहते हैं.

शब्दार्थ

दोक्रिया प० प्ररूपी तं० वह आ०आज्ञापिनी वे० वैदारिणी ज० जैसे ने० नेसात्थिया की ॥११॥ दो० दो-क्रिया प० प्ररूपी तं० वह ज० जैसे अ० अनाभोगवत्तिया अ० अनवकंखवत्तिया अ० अनाभोगवत्ति-या कि० क्रिया दु० दोप्रकार मे प० प्ररूपी अ० उपयोग रहित आ० ग्रहण करना अ० उपयोग रहित प० साफ करना अ० अनवकंख वत्तिया का दोभेद आ० आत्म शरीर अनवकंखवत्तिया प० परशरीर अनव-कंख वत्तिया ॥ १२ ॥ पे० राग वत्तिया दो० द्वेषवत्तिया पे० रागवत्तिया क्रिया दु० दोप्रकार से प्ररूपी

सूत्र

णियाचेव जहेवनेसत्थिया ॥ ११ ॥ दो किरियाओ प० तं० अणाभोगवत्तियाचेव, अणवकंखवत्तियाचेव । अणाभोगवत्तिया किरिया दुविहा प० तं० अणाउत्तआयणा चेव, अणाउत्तं पमज्जणाचेव । अणवकंखवत्तिया किरिया दुविहा प० तं० आय-सरीर अणवकंखवत्तियाचेव, परसरीरअणवकंखवत्तियाचेव ॥ १२ ॥ दो किरियाओ

भावार्थ

१ स्वामी की आज्ञा से कर्म बंधावे सो आज्ञापिनी (आणवणिया) और २ किसी वस्तु के छेदन भेदन से क्रिया लगे सो विदारिकी (विदारणिया) इन दोनों के दो दो भेद नेसात्थिया जैसे कहना ॥ ११ ॥ और भी क्रिया के दो भेद. १ विना उपयोग से कर्म बंध होवे सो अणाभोगवत्तिया १ और अपेक्षा विना कर्म लगे सो अनवकांक्षा । उस में से अणाभोगवत्तिया के दो भेद १ उपयोग विना वस्त्रादिक ग्रहण करने से २ उपयोग विना पूंजने से । अनवकांक्षा के दो भेद १ अपने शरीर से पाप लगे वैसी क्रिया करे २ पर शरीर से पाप लगे वैसी क्रिया करे ॥ १२ ॥ और

शब्दार्थे मा० मायावत्तिया लो० लोभवत्तिया दो० द्वेषवत्तिया क्रिया दु० दोप्रकार से प० प्ररूपी को० क्रोध मा० मान ॥ १३ ॥ दु० दोप्रकार की ग० गर्हा म० मन से ग० गर्हता है व० वचन से ग० गर्हता है अ० अथवा दी० दीर्घ काल ग० गर्हता है र० थोडे काल ग० गर्हता है ॥ १४ ॥ दु० दोप्रकार के प० प्रत्या

सूत्र पन्नत्ता तं० पेजवत्तिआचेव, दोसवत्तियाचेव, पेजवत्तिया किरिया दुविहा प०तं० मायावत्तियाचेव, लोभवत्तियाचेव, दोसवत्तिया किरिया दुविहा पं०तं० कोहेचेव माणो चेव ॥ १३ ॥ दुविहा गरिहा प० तं० मणसावेगे गरिहइ वयसावेगेगरिहइ । अहवा गरिहा दुविहा पन्नत्ता तंजहा दीहं एगे अद्धं गरिहइ; रहस्सं एगे अद्धं गरिहइ ॥ १४ ॥ दुविहे

भावार्थ भी दो प्रकार की क्रिया प्रेम वत्तिया व द्वेष वत्तिया. प्रेम से उत्पन्न होवे सो प्रेम वत्तिया उस के दो भेद माया और लोभ तथा द्वेष से उत्पन्न होवे सो द्वेष वत्तिया उस के दो भेद क्रोध और मान यह पचीस क्रिया के भेद हुवें ॥ १३ ॥ पूर्वोक्त क्रिया के भेदों गर्हनीय हैं इसलिये गर्हा का स्वरूप कहते हैं. पापकी निन्दा सो गर्हा इस के दो भेद हैं कितनेक मन से ही पापकी निन्दा करते हैं और कितनेक वचन से पापकी निन्दा करते हैं. और दूसरी तरह से भी इस के दो भेद हैं. कितनेक बहुत काल के पापों की गर्हणा करे और कितनेक अल्प काल के पापों की गर्हा करे ॥ १४ ॥ प्रत्याख्यान के दो भेद कहे हैं १

शब्दार्थ

ख्यान म०मन से प०प्रत्याख्यान करता है व०वचन से प०प्रत्याख्यान करता है अ०अथवा प०प्रत्याख्यान दु०दोप्रकारके प०प्ररूपे दी०दीर्घकाल प०प्रत्याख्यान करता है र०थोडेकाल प०प्रत्याख्यान करता है ॥१५॥ दो०दो ठा०स्थान से अ०अनगार सं०युक्त अ०अनादि अ०अनंत दी०दीर्घकाल चा० चार गति सं०संसार कं० जंगल को वि० अंतकरे तं० वह ज० जैसे वि० विद्यासे च० चारित्र से ॥ १६ ॥ दो० दोस्थान अ० जानेविना आ० आत्मा णो० नहीं के० केवली प० परूपा ध० धर्म को ल० प्राप्तकरे स० सूनने को तं०

सूत्र

पच्चक्खाणे प० तं० मणसावेगे पच्चक्खाति, वयसावेगे पच्चक्खाति अहवा पच्चक्खाणे दुविहे पन्नत्ते तंजहा दीहं एगे अद्धं पच्चक्खाति, रहस्सं एगे अद्धं पच्चक्खाति ॥१५॥ दोहिं ठाणेहिं अनगारे संपन्ने अणाइयं अणवदग्गं दीहमद्धंचाउरंतसंसारकंतारं विइवएज्जा तंजहा विज्जाएचेव चरणेणचेव ॥ १६ ॥ दो ठाणाइ अपरियाणित्ता आया

भावार्थ

मन से भावशुद्ध रखकर प्रत्याख्यान करे सो समदृष्टि और दूसरे मात्र वचन से प्रत्याख्यान करे सो मिथ्या दृष्टि अथवा दोप्रकार के प्रत्याख्यान कहे हैं कोई प्राणी जीवन पर्यंत प्रत्याख्यान करते हैं और कोइ प्राणी अल्प काल का प्रत्याख्यान करते हैं ॥१५॥ विद्या (ज्ञान) और चारित्र ऐसे दोस्थानक से संपन्न अणगार अनादि अनंत चतुर्गतिक संसारका अन्तकर मुक्ति प्राप्त करते हैं॥१६॥ आरंभ और परिग्रहरूप दो स्थानाक अपरिज्ञा से जाने विना और प्रत्याख्यान परिज्ञान से त्यागे विना जीव केवली प्ररूपित धर्म

शब्दार्थ

वह ज० जैसे आ० आरंभ प० परिग्रह दो० दोस्थान अ० विनाजाने आ० आत्मा णो० नहीं के० केवल मु० मुंड म० होके आ० आगार से अ० अनगार को प० अंगीकार करे तं० वह ज० जैसे आ० आरंभ परिग्रह ए० ऐसे णो० नहीं के० केवल बं० ब्रह्मचर्य वास को स० रहे णो० नहीं के० केवल सं० संयम से सं० संयम करे णो० नहीं के० केवल सं० संवर से सं० संवरे णो० नहीं के० केवल अ० मतिज्ञान उ० उत्पन्न होवे ए० ऐसा प० पद सु० श्रुतज्ञान ओ० अवधिज्ञान म० मन पर्यवज्ञान के० केवलज्ञान ॥ १७ ॥

सूत्र

णो केवलिपन्नत्तं धम्मं लभेजा सवणयाए तंजहा आरंभेचेव, परिग्गहेचेव । दो ठाणाइं अपरिआणित्ता आया णो केवलं मुंडे भवित्ता आगाराओ अणगारियं पव्वेजा तंजहा आरंभेचेव परिग्गहेचेव एवं णो केवलं बंभचेरं वा समावसेजा णो केवलेणं संजमेणं संजमेजा, णो केवलेणं संवरेणं संवरेजा, णो केवल आभिणिबोहियणाणं उप्पाडेजा एवं पदं सुअणाणं, ओहिणाणं, मणपज्जवणाणं, केवलणाणं ॥ १७ ॥ दो ठाणाइं परि-

भावार्थ

नहीं प्राप्त कर सकता है वैसे ही बोधिबीज सम्यक्त्व भी नहीं प्राप्त कर सकता है. इन पूर्वोक्त आरंभ परिग्रह दोनों स्थानकों को जाने विना जीव द्रव्य भाव से मुंडित बनकर व गृहस्थावास छोडकर साधु पना नहीं पाल सकता है. वह जीव शुद्ध शील, षट्काया की रक्षारूप संयम, व संवर नहीं पाल सकता है वैसे ही मति, श्रुति, अवधि, मनःपर्यव व केवलज्ञान नहीं प्राप्त कर सकता है ॥ १७ ॥ आरंभ व परि-

शब्दार्थ

दो० दोस्थान प०जानकर आ० आत्मा के० केवली प० प्ररूपा ध० धर्म को ल० प्राप्तकरे स० सुनने को आ० आरंभ प० परिग्रह ए० ऐसे जा० यावत् के० केवल ज्ञान उ० प्राप्त करे ॥ १८ ॥ दो० दो ठा० स्थान से आ० आत्मा के० केवली प० प्ररूपा ध० धर्म को ल० प्राप्त करे स० सूनने को तं० वह ज० जैसे सो० सूनकर अ० श्रद्धकर जा० यावत् के० केवल ज्ञान उ० प्राप्त करे ॥ १९ ॥ दो० दो स० समय प० प्ररूपा उ० उत्सर्पिणी ओ० अवसर्पिणी स० समय ॥ २० ॥ दु० दोप्रकार से उ० उन्माद प०

सूत्र

याइत्ता आया केवलिं पन्नत्तं धम्मं लभेज्ज सवणयाए तंजहा आरंभेचेव परिग्गहेचेव एवं जाव केवलिनाण मुप्पाडेज्जा ॥ १८ ॥ दोहिं ठाणेहिं आया केवलिपन्नत्तं धम्मं लभेज्ज सवणयाए तंजहा सोच्चाचेव अभिसमेच्चाचेव जाव केवलनाणं उप्पाडेज्जा॥ १९॥ दो समाओ पन्नत्ताओ तंजहा उसप्पिणिसमाचेव ओसप्पिणिसमाचेव ॥ २० ॥ दुविहे

भावार्थ

ग्रह इन दोनों स्थानकों को जानकर त्याग करनेवाला जीव केवली भाषित धर्म व सम्यक्त्व जान सकता है व साधुपना, संजम, संवर, शील पाल सकता है वैसे ही मति ज्ञान यावत् केवल ज्ञान की प्राप्ति कर सकता है ॥१८॥ शास्त्र का श्रवण व उस में श्रद्धा ऐसे दोनों कारणों से जीव केवली भाषित धर्म सुनने की यावत् केवल ज्ञान की प्राप्ति कर सकता है ॥ १९ ॥ भरत ऐरवत क्षेत्र में दो प्रकारका काल कहा उत्सर्पिणी और अवसर्पिणी ॥ २० ॥ जीव को दो प्रकारका उन्माद कहा १ व्यंतरादि किसी देव के प्रयोग से २ मोहनीय

शब्दार्थ

प्ररूपा ज० यक्ष के योग से मो० मोहनीक० कर्म के उ० उदय से त० तहां जे० जो ज० यक्ष के योग से सु० सुख से वेदे सु० सुख से छूटे तं० तहां जे० जो मो० मोहनी कर्म का उ० उदय से दु० दुःख से वेदे दु० दुःख से छुटे ॥ २१ ॥ दो० दो दं०दंड प० प्ररूपा अ० अर्थदंड अ० अनर्थदंड ने० नारकी को दो०

सूत्र

उम्माए पन्नत्ते तंजहा जक्खावेसेचेव मोहाणिजस्सचेव कम्मस्स उदएणं, तत्थ णं जेसे जक्खावेससेणं सुहवेयतराएचेव सुहविमोयतराएचेव तत्थणं जेसे मोहाणिजस्स कम्मस्स उदएणं, सेणं दुहवेयतराएचेव दुहविमोयतराएचेव ॥ २१ ॥ दो दंडा पन्नत्ता तंजहा अट्ठादंडेचेव अणट्ठादंडेचेव । नेरइयाणं दो दंडा प० तंजहा अट्ठादंडेचेव अणट्ठादंडे

भावार्थ

कर्म का उदय से. उस में से यक्षादिक से बना हुवा उन्माद सरलता से वेद सकते हैं और उस से मुक्त होना भी सहज होता है अर्थात् मंत्रादिक के प्रयोग से मुक्त हो सकते हैं, परंतु मोहनीय कर्म का उदय से जो उन्माद होता है उस को वेदना बडा कठिन होता है वैसे ही उस से मुक्त होना भी बहुत कठिन है क्यों कि वह अनंत संसार में परिभ्रमण कराता है. उस की उत्कृष्ट स्थिति ७० कोडाकोडी सागर पर्यंत की है ॥ २१ ॥ दो प्रकार के दंड कहे हैं. पंचइन्द्रियों के लिये पाप करना सो अर्थ दंड और विना स्वार्थ पाप करना सो अनर्थ दंड है. वे दोनों प्रकारके दंड नरक में यावत् वैमानिक देव तक चौविस ही दंडक म

शब्दार्थ

दोदंड अ० अर्थदंड अ० अनर्थ दंड ए० ऐसे च० चौवीस दं० दंडक जा० यावत् वे० वैमानिक ॥ २२ ॥ दु० दोप्रकार से दं० दर्शन स० सम्यक् दर्शन मि० मिथ्यादर्शन स० सम्यक् दर्शन दु० दोप्रकार से णि० निसर्ग सम्यक् दर्शन अ० अभिगम सम्यक् दर्शन णि० निसर्गसम्यक् दर्शन दु० दोप्रकार से प० प्रतिपाति अ० अप्रतिपाति अ० अभिगम सम्यक् दर्शन दु० दोप्रकार से प० प्रतिपाति अ०अप्रतिपाति मि० मिथ्यादर्शन दु० दोप्रकार से अ० अभिग्रहिक मिथ्यादर्शन अ० अनभिग्रहिक मिथ्यादर्शन अ० अभिग्रहिक

सूत्र

चेव; एवं चउवीस दंडओ जाव वेमाणियाणं ॥ २२ ॥ दुविहे दंसणे प० तं० सम्म दंसणेचेव, मिच्छादंसणेचेव । सम्मदंसणे दुविहे प० तं० णिसग्ग सम्मदंसणेचेव, अभिगम सम्मदंसणेचेव । णिसग्ग सम्मदंसणे दुविहे प० तं० पडिवाईचेव, अपडिवाईचेव आभिगम सम्मदंसणे दुविहे प० तं० पडिवाईचेव, अपाडिवाईचेव । मिच्छादंसणे दुविहे प० तं अभिग्गाहिय मिच्छादंसणेचेव, अणाभिग्गाहिय मिच्छादंसणेचेव । आभिग-

भावार्थ

पाते हैं ॥ २२ ॥ भगवन्त ने दो प्रकारके दर्शन फरमाये हैं. १ समकित दर्शन—यथार्थ वस्तु का ज्ञान २ मिथ्या दर्शन—वस्तु को अयथार्थपने जानना सो. उस में से समकित दर्शन के दो भेद १ स्वभाव से ही जिनोक्त तत्त्व में रुचि उत्पन्न होवे सो निसर्ग समकित मरुदेवी मातावत् २ गुरु के उपदेश से तत्त्व की रुचि उत्पन्न होवे सो अभिगम समकित भरतादिकवत्. निसर्ग समकित के दो भेद १ प्रतिपाति आकर पीछी

शब्दार्थ

मिथ्यादर्शन दु० दोप्रकार से स० अन्त सहित अ० अन्त रहित ए० ऐसे अ० अनभिग्रहिक मिथ्यादर्शन ॥ २३ ॥ दु० दोप्रकार का ना० ज्ञान प० प्ररूपा प० प्रत्यक्ष प० परोक्ष प० प्रत्यक्ष ज्ञान दु० दोप्रकार से

सूत्र

ग्गहिय मिच्छादंसणे दुविहे प० तं० सपज्जवसिएचेव, अपज्जवसिएचेव । एव मणाभि-
ग्गहिय मिच्छादंसणेवि ॥ २३ ॥ दुविहे नाणे पन्नत्ते तंजहा पच्चक्खेचेव, परोक्खेचेव

भावार्थ

चली जावे सो उसमें उपशम समकित अंतरमुहूर्त तक रहे और क्षयोपशम उत्कृष्ट साधिक६६ सागरोपम तक रहे. इस लिये उसे प्रतिपातीनिसर्गसमकित कहा है. अप्रतिपाती आये पीछे जावे नहीं, क्षायक भाव से रहे, क्षायक समकित जहां लग जीव मोक्ष में जावे वहां लग रहे, इसलिये अप्रतिपाती निसर्ग समकित कहा है. ऐसे ही अभिगम समकित के भी प्रतिपाती और अप्रतिपाती ऐसे दो भेद जानना. अब मिथ्यादर्शन के दो भेद. पकडी हुइ हठ को छोडे नहीं सो अभिग्रहिक मिथ्यात्व और भोले भाव से मिथ्या श्रद्धा को धारण करे सो अनभिग्रहिक मिथ्यात्व. अभिग्रहिक मिथ्यात्व के दो भेद, १ जिस मिथ्यात्व का अंत है सो सपर्यवसितअभिग्रहिक मिथ्यात्व भव्य जीवों को, और जिस का अंत नहीं है सो अपर्यवसित अभिग्रहिक वह अभव्य जीवों को होता है. वैसे ही अनभिग्रहिक मिथ्यात्व के सपर्यवसित और अपर्यवसित ऐसे दो भेद होते हैं ॥ २३ ॥ श्री भगवन्तने ज्ञान के दो भेद कहे हैं. १ पांच इन्द्रियों की सहायता विना

शब्दार्थ

प० प्ररूपा के० केवल ज्ञान णो० नो केवल के० केवल ज्ञान दु० दोप्रकार से भ० भवग्राहिक केवल ज्ञान सि० सिद्धत्थ केवल ज्ञान भ० भवग्राहिक केवल ज्ञान दु० दोप्रकार से स० सयोगी भवग्राहिक केवल ज्ञान अ० अयोगी भवग्राहिक केवल ज्ञान स० सयोगि भवत्थ केवल ज्ञान दु० दोप्रकार का प० प्रथम समय सयोगी भवग्राहिक केवल ज्ञान अ० अप्रथम समय सयोगी भवग्राहिक केवल ज्ञान अ० अथवा च० चरमसमय समय सयोगी भवग्राहिक केवल ज्ञान अ० अचरम

सूत्र

पञ्चक्खनाणे दुविहे प० तं केवलनाणेचेव, णो केवलनाणेचेव । केवलनाणे दुविहे प० तं भवत्थ केवलनाणेचेव, सिद्धकेवलनाणेचेव । भवत्थ केवलनाणे दुविहे प० तं० सजोगिभवत्थकेवलनाणेचेव अजोगिभवत्थकेवलनाणेचेव । सजोगिभवत्थ

भावार्थ

ज्ञान उत्पन्न होवे सो प्रत्यक्ष और इन्द्रिय मन की सहायता से जो ज्ञान होवे सो परोक्ष. प्रत्यक्ष ज्ञान के दो भेद १सब द्रव्य. क्षेत्र, काल, भाव को जाने सो केवल ज्ञानऔर २अवधि मनःपर्यव ज्ञान सो नो केवल प्रत्यक्ष ज्ञान. केवल ज्ञान के दो भेद संसार में रहनेवाले जीवों को भवत्थ केवल ज्ञान २ सिद्धत्थ केवल ज्ञान मोक्ष के जीवों को. भवत्थ केवल ज्ञान के दो भेद सजोगी भवत्थ केवल ज्ञान मन, वचन व काया के योगों सहित तेरवे गुणस्थान में रहनेवाले, २ अजोगी भवत्थ केवल ज्ञान चौद में गुणस्थान में रहनेवाले जीवों को. सजोगी भवत्थ केवल ज्ञान के दो भेद १ प्रथम समय सजोगी भवत्थ केवल ज्ञान–ज्ञान उत्पन्न होवे जब तेरवे गुणस्थान में रहनेवाले जीवों को जो ज्ञान होवे सो २ दूसरे अपढम समय सजोगी भवत्थ केवल ज्ञान.

शब्दार्थ

समय सयोगी भवग्राहिक केवल ज्ञान ऐ० ऐसे अ० अयोगी भवग्राहिक केवल ज्ञान सि० सिद्ध केवल ज्ञान दु० दोप्रकार का अ० अनंतर सिद्ध केवल ज्ञान प० परंपरा सिद्ध केवल ज्ञान अ० अनंतर सिद्ध केवल ज्ञान दु०दोप्रकार का ए०एक अनंतर सिद्ध केवल ज्ञान अ०अनेक अनंतर सिद्ध केवल ज्ञान प० परंपरासिद्ध केवल ज्ञान दु० दो प्रकार का ए० एक परंपरासिद्ध केवल ज्ञान अ० अनेक परंपरासिद्ध केवल ज्ञान णो०

सूत्र

केवलनाणेदुविहे प० तं० पढमसमयसजोगिभवत्थकेवलनाणेचेव अपढमसमय सजोगिभवत्थकेवलनाणेचेव अहवा चरिमसमयसजोगिभवत्थकेवलनाणेचेव अचरिमसमयसजोगिभवत्थकेवलनाणेचेव । एवं अजोगिभवत्थकेवलनाणेवि ॥ सिद्धकेवलनाणे दुविहे प० तं० अणंतरसिद्धकेवलनाणेचेव, परंपरसिद्धकेवल

भावार्थ

दूसरा समय का भवस्थ सयोगी जीवकों जो ज्ञान होवे सो. और भी दो भेद बतलाते हैं १ चरम समय सयोगी भवत्थ केवल ज्ञान चौदहमें गुणस्थान जाते सयोगी भवस्थ जीव को छेले समय में जो ज्ञान होवे सो २ अचरम समय सयोगी भवत्थ केवल ज्ञान–अन्तिम समय प्राप्त न हुवा होवे ऐसे जीवों का केवल ज्ञान. ऐसे ही अजोगी भवत्थ केवल ज्ञान के भेद जानना. सिद्ध केवल ज्ञान के दो भेद १ पाहिले समय में सिद्ध होवे सो अनंतर सिद्ध केवलज्ञान और सिद्ध होने में दो, तीन, चार समय हुवे हो ऐसे सिद्ध को परंपरा सिद्ध केवलज्ञान. अनंतर सिद्ध केवल ज्ञान दो प्रकारका एक समय में एक ही सिद्ध होवे उस को एक

शब्दार्थ

नोकेवल ज्ञान दु० दोप्रकार का ओ० अवधि ज्ञान म० मनः पर्यव ज्ञान ओ० अवधिज्ञान दु० दोप्रकार का भ० भवप्रत्यय ख० क्षायोपशमिक दो० दोप्रकार का भ० भवप्रत्यय दे० देवता को णे० नारकी को दो० दोप्रकार का क्षयोपशमिक म० मनुष्य को पं० पंचेन्द्रिय ति० तिर्यंच जो० योनिवाले म० मनः पर्यव

सूत्र

नाणेचेव । अणंतरसिद्धकेवलनाणे दुविहे प० तं० एक्काणंतर सिद्ध केवलणाणेचेव अणेक्काणंतरसिद्ध केवलनाणेचेव । परंपरसिद्धकेवलनाणे दुविहे प० तं० एक्का परंपरसिद्ध केवलणाणेचेव अणेक्कापरंपरसिद्धकेवलणाणेचेव ॥ णो केवलणाणे दुविहे प० तं० ओहिनाणेचेव, मणपज्जवनाणेचेव । ओहिनाणे दुविहे प० तं० भव

भावार्थ

अनंतर सिद्ध केवल ज्ञान होता है और एक समय में अनेक सिद्ध होवे उन को अनेक अनंतर सिद्ध केवल ज्ञान. परंपरा सिद्ध केवल ज्ञानके दो भेद एक समय में एक ही सिद्ध हुवे होवे वैसे का केवल ज्ञान, दूसरा अनेक परंपरा सिद्ध का केवल ज्ञान । नो केवल ज्ञान के दो भेद मर्याद--सहित रूपी द्रव्य, क्षेत्र, कालभाव को जाने सो अवधि ज्ञान और अढाइ द्वीप के अन्दर के संज्ञी पंचेन्द्रिय के मनोभाव को जाने सो मनःपर्यव ज्ञान. अवधि ज्ञान के दो भेद १ भव प्रत्ययी--भव में होवे सो २ क्षायोपशमिक ज्ञानावरणीय का क्षयोपशम से होवे सो. भव प्रत्ययी देवता और नारकी को होवे वैसे ही क्षायोपशमिक मनुष्य को तथा तिर्यंच पंचेन्द्रिय को होता है.मनःपर्यव ज्ञान के दो भेद ऋजुमति कुच्छ क्षेत्र कमी

शब्दार्थ ज्ञान दु० दोप्रकार का उ० ऋजुमति वि० विपुलमति प० परोक्ष ज्ञान दु० दोप्रकार का आ० मतिज्ञान सु० श्रुतज्ञान आ० मतिज्ञान दु० दोप्रकार का सु० श्रुतनिश्रित अ० अश्रुतनिश्रित सु० श्रुतनिश्रित दु० दोप्रका का अ० अर्थावग्राहि वं० व्यंजनावग्राहि अ० अश्रुतनिश्रित भी ए० ऐसे सु० श्रुतज्ञान दु० दोप्रकार का अं०

सूत्र पच्चइएचेव, खओवसमिएचेव । दोण्हं भवपच्चइए प० तं० देवाणंचेव, णेरइयाणंचेव दोण्हं खओवसमिए प० तं० मणुस्साणंचेव, पंचिंदिय तिरिक्ख जोणियाणंचेव । मण पज्जवणाणे दुविहे प० तं० उज्जुमईचेव विउलमईचेव ॥ परोक्खणाणे दुविहे प० तं० आभिणिबोहियणाणेचेव, सुअणाणेचेव । आभिणिबोहियणाणे दुविहे पन्नत्ते तंजहा सु-

भावार्थ जाने खुल्ला नहीं जाने, और आया हुवा पीछा चलाजावे सो २ संपूर्ण अढाइ द्वीप जाने भेदानुभेदयुक्त जाने वैसे ही आयाहुवा पीछा चला नहीं जावे सो विपुलमति मनःपर्यव ज्ञान. यह सब प्रत्यक्ष ज्ञान के भेदानुभेद हुवे अब परोक्ष ज्ञान के भेद कहते हैं. परोक्ष ज्ञान के दो भेद मति ज्ञान–बुद्धि से उत्पन्न होवे सो और सूत्रादिक का श्रवण करने से उत्पन्न होवे सो श्रुतज्ञान. मति ज्ञान के दो भेद १ श्रुतका पठन किये बाद बुद्धि उत्पन्न होवे सो श्रुत निश्रित और श्रुत का पठन किये पहिले बुद्धि उत्पन्न होवे सो. अश्रुत निश्रित श्रुत निश्रित के दो भेद १ वस्तु के सामान्यपना से ग्रहण करना अर्थात् दूर से वस्तु देख कर कहना कि यह अमुक वस्तु है सो अर्थावग्रह २ फीर उस को पहिचाने कि यह पुरुष है या स्त्री है सो

शब्दार्थ

अंगप्रविष्ठ अं० अंगबाहिर अं० अंगबाहिर दु० दोप्रकार का आ० आवश्यक आ० आवश्यक व्यतिरिक्त आ० आवश्यक व्यतिरिक्त दु० दोप्रकार का का० कालिक उ० उत्कालिक ॥ २४ ॥ दु० दोप्रकार का ध० धर्म प० प्ररूपा सु० श्रुतधर्म च० चारित्र धर्म सु० श्रुतधर्म दु० दोप्रकार का सु० सूत्रश्रुतधर्म अ०

सूत्र

यनिस्सिएचेव असुयानिस्सिएचेव । सुयानिस्सिए दुविहे पन्नत्ते तंजहा अत्थोग्गहेचेव वंजणोग्गहेचेव असुयनिस्सिएवि एवमेव ॥ सुयणाणे दुविहे प० तं० अंगपविट्ठेचेव अंगबाहिरेचेव । अंगबाहिरे दुविहे प० तं० आवस्सएचेव, आवस्सवइरित्तेचेव आवस्सवइरित्ते दुविहे प० तं० कालिएचेव उक्कालिएचेव ॥ २४ ॥ दुविहे धम्मे

भावार्थ

व्यंजनावग्रह अर्थात् इन्द्रिय और शब्दादिक का संबंध सो व्यंजनावग्रह ऐसे ही अश्रुत निश्रित के दो भेद जानना. अब श्रुत ज्ञान के दो भेद. आचारांगादि सूत्रों से ज्ञान उत्पन्न होवे सो अंगप्रविष्ठ और उत्तराध्ययनादि से उत्पन्न होवे सो अंग बाहिर. अंग बाहिर के दो भेद सामायिकादि आवश्यक सूत्र और इस से अन्य छेद मूलादि सो आवश्यक व्यतिरिक्त आवश्यक व्यतिरिक्त के दो भेद दिन रात्रि के प्रथम और अन्तिम प्रहर में पठनादि क्रिया हो सके उसे कालिक सूत्र कहते हैं और संध्या, प्रभात मध्यान्ह व मध्यरात्रिको भी जिन सूत्रों का पठन हो सके सो उत्कालिक ॥ २४ ॥ दुर्गति में गिरते हुवे जीवों को रखे सो धर्म उस के दो भेद भगवंतने कहे हैं १ द्वादशांगी रूप सिद्धांत सो श्रुत धर्म २ और पंच महाव्रत रूप धर्म सो

शब्दार्थ

अर्थ श्रुतधर्म च० चारित्र धर्म दु० दोप्रकार का आ० आगार चारित्र धर्म अ० अनगार चारित्र धर्म अ० अनगार चारित्र धर्म दु० दोप्रकार का स० सराग संयम वी० वीतराग संयम स० सराग संयम दु० दोप्रकार का सु० सूक्ष्म संपराय सराग संयम बा० बादर संपराय सराग संयम अ० सूक्ष्म संपराय सराग संयम दु० दोप्रकार प० प्रथम समय सूक्ष्म संपराय सराग संयम अ० अप्रथम समय सूक्ष्म संपराय सराग संयम अ० अथवा च० चरम समय सूक्ष्म संपराय सराग संयम अ० अचरम समय सूक्ष्म संपराय सराग संयम अ० अथवा

सूत्र

पन्नत्ते तंजहा सुअधम्मेचेव, चरित्तधम्मेचेव सुअधम्मे दुविहे प० तं० सुत्तसुअधम्मेचेव अत्थसुअधम्मेचेव ॥ चरित्तधम्मे दुविहे प० तं० आगारचरित्तधम्मेचेव, अणगार चरित्त धम्मेचेव । अणगारचरित्तधम्मे दुविहे प० तं० सराग संजमेचेव वीय राग संजमेचेव सरागसंजमे दुविहे प० तं० सुहुमसंपरायसरागसंजमे, बादरसंप-

भावार्थ

चारित्र धर्म । श्रुत धर्म दो प्रकार का है १ जिस में गणधरोंने अर्थ गुंथे सो सूत्र श्रुत धर्म और भगवंतने जो अर्थ प्ररूपा सो अर्थ श्रुत धर्म । चारित्र धर्म के दो भेद गृहस्थावास में रहकर सम्यक्त्व सहित बारह व्रत का आचरण करे सो आगार चारित्र धर्म और गृहस्थावास का त्याग कर पंच महाव्रत, समिति, व गुप्ति पालना सो अनगार चारित्र धर्म । अनगार धर्म के दो भेद शरीरादि पे राग रखता संयम पालना सो सराग संयम और माया कपट रहित चारित्र पालना सो वीतराग संयम ।

शब्दार्थी

सु० सूक्ष्म संपराय सराग संयम दु० दोप्रकार का सं० संक्लिष्टमान वि० विशुद्धमान बा० बादर संपराय सराग संयम दु० दोप्रकार का प्र० प्रथम समय बादर संपराय सराग संयम अ० अप्रथम बादर संपराय सराग संयम अ० चरम समय बादर संपराय सराग संयम अ० अचरम समय बादर संपराय सराग संयम अ० अथवा बा० बादर संपराय सराग संयम दु० दोप्रकार का प० पडवइ अ० अपडवइ वी० वीतराग संयम दु० दोप्रकार का उ० उपशान्त कषाय वीतराग संयम खी० क्षीण कषाय वीतराग संयम उ० उपशांत

सूत्र

रायसरागसंजमेचेव । सुहुमसंपरायसरागसंजमे दुविहे प० तं० पढमसमयसुहुम संपराय सराग संजमेचेव अपढमसमयसुहुम संपराय सराग संजमेचेव । अहवा चरिमसमयसुहुम संपराय सराग संजमेचेव, अचरिम समय सुहुम संपराय सराग संजमेचेव । अहवा सुहुम संपराय सराग संजमे दुविहे पन्नत्ते तंजहा संकिलेसमाणएचेव विसुज्झमाणएचेव ॥

भावार्थ

सराग संयम के दो भेद दशवें गुणस्थान रहनेवाला साधु को सूक्ष्म संज्वलन कषाय का उपशम या क्षय हुवा सो सूक्ष्म संपराय सराग संयम और जहां बादर कषाय हैं उसे बादर संपराय सराग संयम कहते हैं। सूक्ष्म संपराय सराग संयमके दो भेद चारित्रके प्रथम सयममें सूक्ष्म संपरायी बने सो प्रथम समय सूक्ष्म संपराय सराग संयम और सूक्ष्म संपराय को अन्तिम समय तक नहीं प्राप्त हुवा हो सो अप्रथम सूक्ष्म समय संपराय सराग संजम और भी उस के दो भेद बतलाते हैं आन्तिम समय अर्थात् जिस की पीछे वीतराग संयम की

शब्दार्थ — कषाय वीतराग संयम दु० दोमकार का प० प्रथम समय उपशांत कषाय वीतराग संयम अ० अप्रथम समय उपशांत कषाय वीतराग संयम अ० अथवा च० चरम समय उपशांत कषाय वीतराग संयम अ० अचरम

सूत्र — बादर संपराय सराग संजमेदुविहे पन्नत्ते तंजहा पढमसमयबादर संपराय सराग संजमे अपढम समय बादर संपराय सराग संयमे। अहवा चरिम समय बादर संपराय सराग संजमे अचरिम समय बादर संपराय सराग संजमे। अहवा बादर संपराय सराग संजमे दुविहे प० तं० पडिवातिएचेव, अपडिवातिएचेव ॥ वीयराग संजमे दुविहे

भावार्थ — प्राप्ति होवे उसे चरम संमय सूक्ष्म संपराय सराग सयम कहते हैं. और अंतिम से प्रथम समय तक का संयम अचरम समय सूक्ष्म संपराय सराग संजम। और भी उस के दो भेद उपशम श्रेणि से पडते जो सूक्ष्म संपराय सराग संयम है वह संक्लिष्टमान है और २ क्षपक श्रेणि पे चढता जो संयम है सो शुद्धिमान कहाजाता है। बादर संपरायिक सराग संजम के दो भेद प्रथम समय का बादर संपराय सराग संयम और अप्रथम (द्वितीय, तृतीय) समय का बादर संपराय सराग संयम अथवा दो भेद अन्तिम समय का बादर सराग संयम अर्थात् उस की पीछे सूक्ष्म संपराय सराग संजम आवे अथवा तो असंजम आवे सो. और अचरम समय का बादर सराग संयम और भी उस के दो भेद बतलाते हैं. उपशम श्रेणि से पडतेहुवे जीवों को जो संयम होता है सो प्रतिपाती और क्षपक श्रेणि में चढते हुवे जो संयम रहे सो अप्रतिपाती।

शब्दार्थ

समय उपशांत कषाय वीतराग संयम खी० क्षीण कषाय वीतराग संयम दु० दोपकार छ० छद्मस्थ क्षीण कषाय वीतराग संयम के० केवली क्षीण कषाय वीतराग संयम छ० छद्मस्थ कषाय वीतराग दु० दोपकार का स० स्वयं बुद्ध छद्मस्थ क्षीण कषाय वीतराग संयम बु० बुधबोधि छद्मस्थ क्षीण कषाय वीतराग संयम स० स्वयं बुद्ध क्षीण कषाय वीतराग संयम दु० दोपकार का प० प्रथम समय स्वयं बुद्ध छद्मस्थ क्षीण

सूत्र

प० तं० उवसंत कसाय वीयराग संजमेचेव खीण कसाय वीयराग संजमेचेव उवसंत कसाय वीयराग संजमे दुविहे प० तं० पढम समय उवसंत कषाय वीयराग संजमेचेव अपढम समय उवसंत कषाय वीयराग संजमेचेव । अहवा चरिम समय उवसंत कसाय वीयराग संजमेचेव अचरिम समय उवसंत कसाय वीयराग संजमेचेव ॥ खीण कसाय वीयराग संजमे दुविहे प० तं० छउमत्थ खीण कसाय वीयराग संजमेचेव, केवलि खीण कसाय वीयराग संजमेचेव. छउमत्थ खीण कसाय वीयराग संजमे दुविहे प० तं० सयंबुद्ध छउमत्थ खीण कसाय वीयराग संजमे बुद्धबोहि छउमत्थ खी-

भावार्थ

वीतराग संयम के दो भेद कषायोंका उपशम सो उपशांत कषाय वीतराग संयम यह इग्यारवा गुणस्थानवाले साधु को होवे. और कषायों काक्षय सो क्षीण कषाय वीतराग संयम यह बारवा गुणस्थानवाले जीव को होवे. उपशांत कषाय वीतराग संयम के दो भेद प्रथम समय का उपशांत कषाय वीतराग संयम और

शाब्दर्थ कषाय वीतराग संयम अ० अप्रथम समय स्वयं बुद्ध छद्मस्थ क्षीण कषाय वीतरागसंयम अ० अथवा चरम समय स्वयं बुद्ध छद्मस्थ क्षीण कषाय वीतराग संयम अ० अचरम समय स्वयं बुद्ध छद्मस्थ क्षीण कषाय वीतराग संयम बु० बुद्ध बोधि छद्मस्थ क्षीण कषाय वीतराग संयम दु० दोप्रकार का प० प्रथम समय बुद्धबोधि छद्मस्थ

सूत्र ण कसाय वीयराग संजमे । सयंबुद्ध खीण कसाय वीयराय संजमे दुविहे प० तं० पढम समय सयंबुद्ध छउमत्थ खीण कसाय वीयराग संजमे अपढम समय सयंबुद्ध छउमत्थ खीण कसाय वीयराग संजमे । अहवा चरिम समय सयंबुद्ध छउमत्थ खीण कसाय वीयराग संजमे, अचरिम समय सयंबुद्ध छउमत्थ खीण कसाय वीयराग संजमे ॥ बुद्धबोहि य छउमत्थ खीण कसाय वीयराग संजमे दुविहे प० तं० पढम समय बुद्धबोहि य छउमत्थ खीण कसाय वीयराय संजमे अपढम समय बुद्धबोहि य छउमत्थ खीण कसाय वीयराय संजमे । अहवा चरिम समय बुद्धबोहि छउमत्थ खीण कसा-

भावार्थ अप्रथम समय का उपशांत कषाय वीतराग संयमअथवा चरम समय का और अचरम समय का उपशांत कषाय वीतराग संयम । क्षीण कषाय वीतराग संयम के दो भेद. ज्ञानावरणीयादि चार घन घाति कर्मों सहित जो संयम है वह छद्मस्थ क्षीण कषाय वीतराग संयम और केवली का संयम सो केवली क्षीण कषाय वीतरागसंयम । छद्मस्थ क्षीण कषाय वीतराग संयम के दो भेद गुरु के उपदेश विना जाति

शब्दार्थ

क्षीण कषाय वीतराग संयम अ० अप्रथम समय बुद्धबोधि छद्मस्थ क्षीण कषाय वीतराग संयम अ० अथवा च० चरम समय बुद्धबोधि छद्मस्थ क्षीण कषाय वीतराग संयम अ० अचरम समय बुद्धबोधि छद्मस्थ क्षीण कषाय वीतराग संयम के० केवलि क्षीण कषाय वीतराग संयम दु० दोप्रकार का स० सयोगी केवलि क्षीण

सूत्र

य वीयराय संजमे अचरिम समय बुद्धबोहि य छउमत्थ खीण कसाय वीयराय संजमे ॥

केवलि खीण कसाय वीयराय संजमे दुविहे प० तं० सजोगि केवलि खीण कसाय वीयराय संजमे, अजोगि केवलि खीण कसाय वीयराय संजमे । सजोगि केवलि खीण कसाय वीयराय संजमे दुविहे प० तं० पढम समय सजोगि केवलि खीण कसाय वीयराय संजमे; अपढम समय सजोगि केवलि खीण कसाय वीयराय संजमे । अहवा चरम समय सजोगि केवलि खीण कसाय वीयराय संजमे अचरम समय सजोगि

भावार्थ

स्मरण ज्ञानादि से स्वयं प्रतिबोध पाकर कषायों को क्षीण करे सो स्वयंबुद्ध छद्मस्थ क्षीण कषाय वीतराग संयम. और आचार्यादिक के उपदेश से प्रतिबोध पाकर कषाय को क्षीण करना सो बुद्धबोधित क्षीण कषाय वीतराग संजम. उस में से स्वयं बुद्धछद्मस्थ क्षीण कषाय वीतराग संजम के दो भेद प्रथम समय का और अप्रथम समय का. अथवा चरम समय का या अचरम समय का. ऐसे ही बुद्धबोधित छद्मस्थ क्षीण कषाय वीतराग संयम के भी प्रथम, अप्रथम अथवा चरम, अचरम ऐसे दो दो भेद जानना, केवली

शब्दार्थ

कषाय वीतराग संयम अ० अयोगी केवलि क्षीण कषाय वीतराग संयम स० सयोगी केवलि क्षीण कषाय वीतराग संयम दु० दोप्रकार का० पूर्ववत् ॥ २५ ॥ दु० दोप्रकार की पु० पृथ्वी काया सु० सूक्ष्म बा० बादर ए० ऐसे जा० यावत् व० वनस्पति काया सु० सूक्ष्म बा० बादर दु० दोप्रकार की पु० पृथ्वी

सूत्र

केवलि खीण कसाय वीयराय संजमे ॥ अजोगि केवलि खीण कसाय वीयराय संजमे दुविहे प० तं० पढम समय अजोगि केवलि खीण कसाय वीयराय संजमे, अपढम समय अजोगि केवलि खीण कसाय वीयराय संजमे । अहवा चरम समय अयोगि केवलि खीण कसाय वीयराय संजमे, अचरम समय अयोगि केवलि खीण कसाय वीयराय संजमे ॥ २५ ॥ दुविहा पुढविकाइया प० तं० सुहुमाचेव, बायराचेव एवं जाव दुविहा वणस्सइकाइया प० तं० सुहुमाचेव. बायराचेव दुविहा पुढवि काइया

भावार्थ

क्षीण कषाय वीतराग संयम के दो भेद सयोगी तेरमें गुणस्थान में रहनेवाले जीवों का संयम सो सयोगी केवली क्षीण कषाय वीतराग संयम और अयोगी चौदमें गुणस्थान रहनेवाले जीवों का संयम सो अयोगी केवली क्षीण कषाय वीतराग संयम. उस में सयोगी केवली क्षीण कषाय वीतराग संयम के प्रथम समय, अप्रथम समय अथवा चरम समय अचरम समय ऐसे दो दो भेद, वैसे ही अजोगी केवली क्षीण कषाय वीतराग संयम के भी भेद जानना ॥ २५ ॥ श्री भगवानने पृथ्वी, पानी, अग्नि, वायु और वनस्पति इन

शब्दार्थ

काया प० पर्याप्ता अ० अपर्याप्ता ए० ऐसे व० वनस्पति काया दु० दोप्रकार की पु० पृथ्वीकाया प० परिणत अ० अपरिणत जा० यावत् व० वनस्पति काया दु० दोप्रकार का द० द्रव्य प० परिणत अ० अपरिणत दु० दोप्रकारकी पु० पृथ्वी काया ग० गतिसमापन्न अ० अगतिसमापन्न ए० ऐसे जा०

सूत्र

प० तं० पज्जत्तगाचेव अपज्जत्तगाचेव एवं वणस्सइ काइया । दुविहा पुढविकाइया प० तं० परिणयाचेव, अपरिणयाचेव जाव वणस्सइकाइया दुविहा दव्वा प० तं० परिणयाचेव अपरिणयाचेव । दुविहा पुढविकाइया प० तं० गइसमावन्नगाचेव अ-

भावार्थ

पांचो स्थावरों के दो दो भेद कहे हैं १. सब लोक व्यापि चर्म चक्षु से दृष्टि गोचर में नहीं आ सके वैसे सूक्ष्म २ और लोक के देश विभाग में रहे सब के दृष्टि गोचर में आसके वैसे बादर जीव। और भी दो प्रकार बताते हैं छही पर्याप्ति पूर्ण करके काल करे सो पर्याप्त और इन छमें से एकेन्द्रिय को चार, बेइन्द्रिय, तेइन्द्रिय चौरेन्द्रिय को पांच और संज्ञी को छ उस में से आहार पर्याप्ति एक समय में होवे और दूसरी पांच पर्याप्ति असंख्यात समय में होवे सब अंतर्मुहूर्त में होवे. जीव श्वासोश्वास छोड कर और तीन पहिली पर्याय पूर्ण करे और परभव का आयुष्य बांधकर कालकर जावे सो अपर्याप्त ॥ और भी दो प्रकार शस्त्रादि परिणम कर अचित्त बने हुवे सो परिणत और जीव सहित सचित्त सो अपरिणत ॥. दो प्रकारके द्रव्य कहे हैं. जिन की पर्याय का पलटा होवे सो परिणत और पलटा न होवे सो अपरिणत ॥

शब्दार्थ

यावत् व०वनस्पति काया दु०दोप्रकारका द०द्रव्य ग०गतिसमापन्न अ०अगतिसमापन्न दु०दोप्रकार की पु०पृथ्वी काया अ०अनंतर अवगाहा प०परंपरा अवगाहा जा०यावत् द०द्रव्य ॥२६॥ दु० दोप्रकारका का०काल ओ०

सूत्र

गइसमावन्नगाचेव एवं जाव वणस्सइकाइया दुविहा दव्वा प० तं० गइसमावन्नगाचेव अगइसमावन्नगाचेव । दुविहा पुढवि काइया प० तं० अणंतरो गाढगाचेव परंपरो गाढगाचेव जाव दव्वा ॥ २६ ॥ दुविहे काले प० तं० ओसप्पिणीकाले चेव अवसप्पिणीकालेचेव ॥ २७ ॥ दुविहे आगासे प० तं० लोगागासेचेव अलोगागासेचेव

भावार्थ

और भी पृथ्वी काय के दो भेद विग्रह गति से उत्पन्न होनेके स्थानमें गमन करे सो गतिसमापन्न और एक ही स्थानक में रहना सो नोगति समापन्न. वैसे ही वनस्पति काया के सब स्थावर के भेदों को जानना. और भी द्रव्य गमन करे सो गति समापन्न और स्थिर रहे सो अगति समापन्न ॥ और भी पांचो स्थावर के दो दो भेद बतलाये हैं जो जीव तुर्त ही उत्पन्न हो कर आकाश प्रदेश को अवगाह रहे हैं वे अनंतरो वगाढ कहाते हैं और जिस को उत्पन्न हुवे दो, तीन, चार समय हो गये होवे सो परंपरोवगाढ कहलाते हैं. वैसे ही द्रव्य के भेद जानना ॥ २६ ॥ श्री भगवन्तने दो प्रकार का काल कहा. जिस में पुद्गल परिणम जीव अजीव का आयुष्य व शरीर की लम्बाइ समय २ में वृद्धि को प्राप्त होवे सो उत्सर्पिणी काल तथा घटती जावे सो अवसर्पिणी काल ॥ २७ ॥ दो प्रकार का आकाश कहा है जीव व अजीव को अवकाश

शब्दार्थ उत्सर्पिणी अ० अवसर्पिणी॥२७॥ दु० दोप्रकारका आ० आकाश लो० लोकाकाश अ० अलोकाकाश ॥२८॥ णे० नारकी के दो० दोशरीर अ० आभ्यन्तर बा० बाह्य अ० आभ्यन्तर क० कार्माण बा० बाह्य वे० वैक्रेय ए० ऐसे दे० देवता का भा० कहना पु० पृथ्वीकाया को दो० दोशरीर अ० आभ्यन्तर बा० बाह्य अ० आभ्यन्तर क० कार्माण बा० बाह्य उ० उदारिक जा० यावत् व० वनस्पति काया का बे० बेइन्द्रियके दो० दोशरीर अ० आभ्यन्तर बा० बाह्य अ० आभ्यन्तर अ० अस्थि मं० मांस सो० रुधिर से ब० बन्धाहुवा

सूत्र ॥२८॥ णेरइयाणं दो सरीरगा प० तं० अब्भंतरगेचेव बाहिरगेचेव, अब्भंतरए कम्मए, बाहिरए वेउव्विए। एवं देवाणं भाणियव्वं ॥ पुढविकाइयाणं दोसरीरगा प० तं० अब्भंतरगेचेव बाहिरगेचेव, अब्भंतरए कम्मए, बाहिरगे उरालिए जाव वणस्सइ काइयाणं। बेइंदियाणं दो सरीरगा प० तं० अब्भंतरएचेव बाहिरएचेव, अब्भंतरए

भावार्थ देवे सो आकाश जिस में धर्मास्ति काय, अधर्मास्ति काय, आकाशास्ति काय, पुद्गलास्ति काय, व जीव रहे हुवे हैं सो लोकाकाश है, वह सातवी नरक से सिद्ध शिलातक चौदह राजु प्रमाण ऊंचा है और अलोक में मात्र आकाश ही रहाहुवा है ॥ २८ ॥ नारकी के व देवता के शरीर के दो २ भेद १ आभ्यंतर कि जो जीव के प्रदेश से क्षीर नीर जैसे मिला हुवा रहता है सो तेजस और कार्माण शरीर २ और दूसरा बाह्य सो जीव प्रदेश से कथंचित् भिन्न और कथंचित मिला हुवा वह वैक्रेय शरीर । पृथि-

शब्दार्थ

बा० बाह्य उ० उदारिक जा० यावत् च० चौरेन्द्रियको पं०पंचेन्द्रिय ति०तिर्यंच यो० योनिवाले को दो० दोशरीर अ० आभ्यन्तर बा० बाह्य अ० आभ्यन्तर कार्माण अ० अस्थि मं० मांस सो० रुधिर ण्हा० नख रु० नाडी से ब० बन्धा हुवा बा० बाह्य उ० उदारिक म० मनुष्यकाभी ए० ऐसे वि० विग्रहगति स० युक्त ने० नारकी को दो० दोशरीर ते० तैजस क० कार्माण नि० निरंतर जा० यावत् वे० वैमानिक के ने०

सूत्र

कम्मए अट्ठिमंससोणितबद्धे बाहिरए उरालिए । जाव चउरिंदियाणं । पंचेन्दिय तिरिक्खजोणियाणं दो सरीरगा प० तं० अब्भंतरगे चेव बाहिरगे चेव, अब्भंतरगे कम्मए, अट्ठिमंससोणियण्हारुच्छिराबद्धे बाहिरए उरालिए । मणुस्साणवि एवं चेव । विग्गहगति समावन्नगाणं नेरइयाणं दो सरीरगा प० तं० तेइएचेव कम्मएचेव निरंतरं जाव वेमाणियाणं । नेरइयाणं दोहिं ठाणेहिं सरीर रुप्पति सिया तं० रागेणंचेव

भावार्थ

व्यादि पांच स्थावरों को दो दो शरीर १ आभ्यंतर सो तेजस कार्माण २ और बाह्य हाड मांस सहित सो उदारिक ॥ बेइन्द्रिय तेइन्द्रिय और चौरेन्द्रिय के दो दो शरीर आभ्यंतर-तेजस और कार्माण. और बाह्य हड्डी मांस लोही से बंधा हुवा सो उदारिक. यहांतक नाडी शिरा नहीं होते हैं ॥ तिर्यंच पंचेन्द्रिय और मनुष्य के दो दो शरीर आभ्यंतर सो तेजस कार्माण और बाह्य हड्डी मांस, रुधिर नाडी, शिरा से बंधाहुवा

शब्दार्थ

नारकी की दो० दोस्थान से स० शरीर उत्पत्ति सि० होवे रा० रागसे दो० द्वेषसे जा० यावत् वे० वैमानिक ने० नारकी की दु०दोस्थान से नि०निर्वर्तना स० शरीर की रा० रागनिर्वर्तना दो० द्वेष निर्वर्तना जा० यावत् वे० वैमानिक ॥ २९ ॥ दो० दोकाया त० त्रसकाया था० स्थावर त० त्रसकाया दु० दोप्रकार की भ० भवसिद्धिया अ० अभवसिद्धिया ए० ऐसे था० स्थावर काया ॥ ३० ॥ दो० दोदिशा में अ० ग्रहण

सूत्र

दोसेणंचेव जाव वेमाणियाणं । नेरइयाणं दुट्ठाणनिव्वत्तिए सरीरगे प० तं० रागनिव्वत्तिएचेव दोसनिव्वत्तिएचेव,। जाव वेमाणियाणं ॥ २९ ॥ दो काया प० तं० तसकाएचेव थावरकाएचेव तसकाए दुविहे प० तं० भवासिद्धिएचेव अभवसिद्धिएचेव, एवं थावरकाएवि ॥ ३० ॥ दो दिसाओ अभिगिज्झ कप्पइ णिग्गंथाणं वा, णिग्गंथीणं वा

भावार्थ

सो उदारिक. विग्रह गतिवाले नारकी के जीवों के दो शरीर तेजस और कार्माण, वैसे ही चौविस दंडकको कह देना चौविस दंडकों के जीवों के शरीर की उत्पत्ति राग और द्वेष ऐसे दो कारणों से होती है नारकी को शरीर की निर्वर्तना[1] दो स्थानक से होती है राग और द्वेष से वैसे ही चौविस दंडक की निर्वर्तना जानना ॥ २९ ॥ श्री भगवन्तने दो प्रकारकी काया फरमाइ है त्रस काया और स्थावर काया त्रस काया के दो भेद मोक्ष में जानेवाले भवसिद्धियें और मोक्ष में नहीं जानेवाले अभव सिद्धियें. वैसे ही स्थावरकाया के भेद जानना ॥ ३० ॥ साधु साध्वी को उत्तर और पूर्व इन दो दिशाओं में दीक्षा देना कल्पता है वैसे

१ प्रथम आरंभ मात्र सो उत्पत्ति और शरीर के अवयवों का पूर्ण होना सो निर्वर्तना.

शब्दार्थ करना क० कल्पता है णि० साधु को णि० साध्वी को प० प्रव्रजालेना पा० पूर्व में उ० उत्तर में ए० ऐसे मुं० लोचकरना सि० शिक्षालेना उ० सावधान होना सं० भोजन करना सं० वैठना स०सूत्र उ० उपदेशना स० सूत्र स० समुदेशना स० सूत्र अ० ज्ञान करना आ० आलोवना प० प्रतिक्रमण करना निं० निन्दना ग० गर्हना वि० तोडना वि० विशुद्ध होना अ० फिर न करना अ० सावधान होना अ० कहा

सूत्र पव्वावित्तए, पाईणंचेव उदीणंचेव एवं मुंडावित्तए सिक्खावित्तए, उवट्ठावित्तए, संभुंजित्तए, संवासित्तए सज्झायं उद्दिसित्तए सज्झायं समुद्दिसित्तए, सज्झाय मणुजाणित्तए आलोइत्तए पडिक्कमित्तए निंदित्तए, गरिहित्तए विउट्टित्तए विसोहित्तए अकरणयाए अब्भुट्ठित्तए अहारिहं पायच्छित्तं तवो कम्मं पडिवाजित्तए। दो दिसाओ अभिगिज्झ

भावार्थ ही २ लोच करना, ३ सूत्र का पठन करना, ४ धर्म में सावध वनना, ५ पंच महाव्रत को स्थापना, ६ मांडले में आहार का जीमना ७ सदैव आसनपर वैठना ८ सूत्राभ्यास करना ९ सूत्रार्थ चिन्तवना १० सूत्रार्थ पढने की आज्ञा देना, ११ गुरु अदिसन्मुख अपने पाप की आलोचना करनी. १२ प्रतिक्रमण करना १३ पाप की निंदा करना १४ गुरु की साक्षी से अपने दुर्गुणों की निन्दा करना १५ पाप छेदने का प्रयत्न करना १६ पुनःपाप नहीं करने का प्रत्याख्यान करना १७ आचार्य जो प्रायश्चित्त देवे उसे वरावर आचरना और अंतिम समय में संलेषणा युक्त प्रत्याख्यान कर भक्त (आहार का प्रत्याख्यान)

शब्दार्थ

हुवा पा० प्रायश्चित त० तप कर्म प० आदरना दो० दोदिशाओ अ० ग्रहण करना क० कल्पता है णि० साधु को णि० साध्वी को अ० अपच्छिम मरणांतिक संलेखना झू० झूसणा झू० झूसे भ० भक्तपानी प० छोडे पा० पापरहित का० कालको अ० नहि इच्छता हुवा वि० विचरना पा० पूर्व उ० उत्तर ॥३१॥

सूत्र

जे० जो दे० देव उ० ऊर्ध्व उ० उत्पन्न ते० वे दु० दोप्रकार का प० प्ररूपा तं० वह ज० जैसे क०

कप्पइ णिग्गंथाणं वा णिग्गंथीणं वा अपच्छिममरणांतिए संलेहणा झूसणा झूसित्ताणं भत्तपाणं पडियाइक्खेत्ताणं पाओवगयाणं कालं अणवकंखमाणाणं विहरित्तए तंजहा पाईणंचेव उदीणंचेव ॥ ३१ ॥ इति बीय ट्ठाणस्स पढमोद्देसो सम्मत्तो ॥

जे देवा उड्ढोक्ववन्नगा ते दुविहा पन्नत्ता तंजहा कप्पोववन्नगा, विमाणोववन्नगा, चारोव-

भावार्थ

और पादोपगमन (आहार व शरीर दोनों का प्रत्याख्यान रूप) संथारा करना, पूर्वोक्त सब कामों उत्तर और पूर्व दिशा में साधु को करना कल्पता है ॥ ३१ ॥ यह ठाणांग सूत्र का दूसरा ठाणा का प्रथम उद्देशा पूर्ण हुवा और आगे दूसरा उद्देशा कहते हैं. * *

देव लोक में उत्पन्न होनेवाले देवता के दो भेद हैं १. बारह देव लोक में उत्पन्न होनेवाले कल्पोपन्न देव हैं और नव ग्रीवेक तथा पांच अनुत्तर विमान के देवताओंको विमानोपपन्न देव कहे हैं. चलनेवाले ज्योतिषी अढी द्वीप में फीरते हैं और स्थिर रहनेवाले सो अढी द्वीप के बाहिर के ज्योतिषी. गति में रक्त देव

शब्दार्थ

कल्पोत्पन्न वि० विमानोत्पन्न चा० चलने वाले चा० चलने में स्थिर ग० चलने में प्रेम ग० गतिरहित ते० वे दे० देवता स० सदैव जे० जो पा० पापकर्म क० करते हैं त० तहां ग० रहेहुवे ए० कितनेक वे० वेदना वे० वेदते हैं अ० अन्यतर ग० रहेहुवे ए० कितनेक वे० वेदना वे० वेदते है जा० यावत् पं० पंचेन्द्रिय ति० तिर्यंच जो० योनिवाले म० मनुष्य स० सदैव जे० जो पा० पापकर्म क० करता है इ० यहां रहे हुवे ए० कितनेक वे० वेदना वे० वेदते हैं अ० अन्यत्र रहे हुवे भी ए० कितनेक वे० वेदना वे० वेदते

सूत्र

वन्नगा, चारट्ठिइया, गइरइया. गइसमावन्नगा, तेसिं देवाणं सयासमियं जे पावे कम्मे कज्जइ तत्थगयावि एगइया वेयणं वेयंति अन्नत्थगयावि एगइया वेयणं वेयंति नेरइयाणं सयासमियं जेपावेकम्मे कज्जइ तत्थ गयावि एगइया वेयणं वेयंति अन्नत्थ गयावि एगइया वेयणं वेयंति जाव पांचिंदिय तिरिक्ख जोणियाणं, मणुस्साणं सयासमियं जे पावे कम्मे कज्जइ इहगयावि एगइया वेयणा वेयंति अन्नत्थगयावि एगइया वेयणं वेयंति मणुस्सवज्जं

भावार्थ

और दूसरे गति रहित। उन देवताओं को जोपाप कर्म बंधाता है उसे कितनेक देवताओं उसी भव में भोगते हैं और कितनेक अन्य भव में भोगते हैं. ऐसे ही नरक के जीवों भी जो पाप कर्म बांधते हैं उस के फल कितनेक उसी भव में भोगते हैं अथवा कितनेक अन्य भव में भी भोगते हैं. और ऐसे ही पांच स्थावर, तीन विकलेन्द्रिय और तिर्यंच पंचेन्द्रिय भी कृतकर्म का फल भोगते हैं. कितनेक मनुष्य अपना कृत कर्म का फल यहां पर भी भोगते हैं और अन्यत्र भी भोगते हैं. और यहां पर भी सब कर्म का क्षय

शब्दार्थ

हैं म० मनुष्य व० वर्ज्य से०शेष ए० एकसाही ॥१॥ ने०नारकी दु०दोगति दु०दो आगति ने०नारकी ने० नकर में उ०उत्पन्न होते म० मनुष्य में से पं० पंचेन्द्रिय ति० तिर्यंच जो० योनिमें से उ० उत्पन्न होवे से० वे चे० निश्चय ने० नकर को वि० छोडता हुवा म० मनुष्यपने पं० पंचेन्द्रिय ति० तिर्यंच यो० योनिपने ग० जावे ए० ऐसे अ० असुर कुमार का ण० विशेष अ० असुर कुमार को वि० छोडताहुवा म० मनुष्यपने ति० तिर्यंच योनिपने ग० जावे ए० ऐसे स० सर्व दे० देव पु० पृथ्वीकाया दु० दोगति की दु० दोआगति

सूत्र

सेसाएक्कगमा ॥१॥ नेरइया दुगइया दुयागइया प०तं० नेरइए नेरइएसु उववज्जमाणे मणुस्सेहिंतो वा पंचिंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो वा उववज्जेज्जा. सेचेवणं से नेरइयत्तं विप्पजहमाणे मणुस्सत्ताए वा पंचिंदिय तिरिक्ख जोणियत्ताए वा गच्छेज्जा । एवं असुर कुमाराणावि णवरं सेचेवणं से असुरकुमारत्तं विप्पजहमाणे मणुस्सत्ताए वा तिरिक्खजो णियत्ताए वा गच्छेज्जा एवं सव्वदेवा. पुढवि काइया दुगइया दुयागइया प० तं० पु-

भावार्थ

करके मोक्ष चलेजाते हैं इसलिये अन्यत्र भोगवना नहीं भी होता है. ऐसे ही व्यंतर ज्योतिषी आदि का एक सरिखा जानना ॥ १ ॥ जिस गति का जिस जीवने आयुष्य का बन्ध किया होवे उसे गति कहते हैं. इस तरह नरक के जीव मनुष्य और तिर्यंच पंचेन्द्रिय में से चवकर नारकी में उत्पन्न होते हैं. और वहां से चवकर मनुष्य और तिर्यंच पंचेन्द्रिय में उत्पन्न होते हैं. भुवनपति वाणव्यंतर, ज्योतिषी और विमानिक देवताओं की पहिले जैसे कहना. विशेष इतना ही दूसरे देवलोक तकके देवताओं पृथ्वी, पानी और वन-

शब्दार्थ

पु० पृथ्वीकाया पु० पृथ्वीकाया में उ० उत्पन्न होते पु० पृथ्वीकायामें से णो० नोपृथ्वीकाया में से उ० उत्पन्न होवे से० वे पु० पृथ्वीकायाको वि० छोडताहुवा पृथ्वीकायापने णो० नोपृथ्वीकायापने ग० जावे ए० ऐसे म० मनुष्य ॥२॥ दु० दोप्रकारके णे० नारकी भ०भवसिद्धिया अ०अभवसिद्धिया जा० यावत् वे वैमानिक दु० दोप्रकारका णे० नारकी अ० अन्तररहित उ० उत्पन्न होवे प० परंपरासे उ० उत्पन्न होवे जा०

सूत्र

पुढविकाइए पुढविकाइएसु उववज्जमाणे पुढविकाइएहिंतो वा णो पुढविकाइएहिंतो उववज्जेज्जा सेचेवणं से पुढविकाइयत्तं विप्पजहमाणे पुढविकाइयत्ताए वा णो पुढविकाइयत्ताए वा गच्छेज्जा एवं जाव मणुस्सा ॥ २ ॥ दुविहा णेरइया प० तं० भवासिद्धियाचेव अभवसिद्धियाचेव, जाव वेमाणिया । दुविहा णेरइया प० तं० अणंतरोववन्न-

भावार्थ

स्पति में भी जाते हैं. पृथ्वी काया के जीव दो गति से आते हैं और दो गति में जाते हैं. पृथ्वी काया का आयुष्य बांधकर पुथ्वी काया में से ही जीव उत्पन्न होता है अथवा नो पृथ्वी काया (नारकी छोड कर अन्य २३ दंडक) में से जीव उत्पन्न होता है. और पृथ्वी कायां से चवकर जीव पृथ्वी काया में अथवा नो पृथ्वी काया (देव और नारकी छोड कर अन्य २२ दंडक) में जाता है. ऐसे ही मनुष्यतक कहना ॥ २ ॥ अब चौविस दंडक के दो २ भेद कहते हैं सो बतलाते हैं. १ भव्य २ अभव्य। एक समय में बहुत उत्पन्न होवे सो अनंतरोपपन्न और एक समय में एक दूसरा समय में दूसरा ऐसे उत्पन्न

यावत् वे० वैमानिक दु० दोप्रकारका णे० नारकी ग० गतिको प्राप्त अ० अगतिको प्राप्त जा० यावत् वे० वैमानिक दु० दोप्रकारका नारकी प० प्रथमसमय प्राप्त अ० अप्रथमसमय प्राप्त जा० यावत् वे० वैमानिक दु० दोप्रकार का णे० नारकी आ० आहारी अ० अनाहारी जा० यावत् वे० वैमानिक दु० दोप्रकार का णे० नारकी उ० श्वासोश्वास लेने वाले णो० श्वासोश्वास नहीं लेने वाले जा० यावत् वे० वै-

सूत्र

गाचेव, परंपरोववन्नगाचेव जाव वेमाणिया । दुविहा णेरइया प० तं० गइसमावन्नगा चेव अगइसमावन्नगाचेव, जाव वेमाणिया । दुविहा णेरया प० तं० पढमसमय उववन्नगाचेव, अपढमसमयउववन्नगाचेव जाव वेमाणिया । दुविहा णेरइया प० तं० आहारगाचेव अणाहारगाचेव एवं जाव वेमाणिया दुविहा णेरइया प० तं० उस्सासगाचेव नोउस्सासगाचेव जाव वेमाणिया । दुविहा णेरया प० तं० सइंदियाचेव अणिंदियाचेव.

भावार्थ

होवेसो परंपरोपपन्न । एक शरीर छोडकर अन्य शरीर में जानासो गति समापन्न और वहां रहना सो अगति समापन्न । प्रथम समयके उत्पन्न हुवे सो प्रथमसमयोपपन्न और अप्रथम(दूसरा तीसरा वगैरह) समयके उत्पन्न हुवे सो अप्रथम समयोपपन्न. सदैव आहार लेवे सो आहारक और विग्रह गतिसे उत्पन्न होने पहिले एक दोसमय तक अनाहारी रहे सो आनाहारक । पर्याप्तसो श्वासोश्वास लेनेवाले और अपर्याप्तसो श्वासोश्वास नहीं लेनेवाले । इन्द्रिय सहित और इन्द्रिय रहित अर्थात् अपर्याप्त अवस्था होने से पूर्ण इन्द्रियों नहीं बंधाइ सो। पर्याप्ता और

शब्दार्थ

मानिक दु० दोप्रकार का णे० नारकी स० सइन्द्रिय अ० अनिन्द्रिय जा० यावत् वे० वैमानिक दु० दोप्रकार का णे० नारकी प० पर्याप्ता अ० अपर्याप्ता जा० यावत् वे० वैमानिक दु० दोप्रकार का णे० नारकी स० संज्ञी अ० असंज्ञी ए० ऐसे जा० यावत् पं० पंचेन्द्रिय स० सर्व वे० विलकेन्द्रिय व० वर्ज्य जा० यावत् वा० व्यन्तर दु० दोप्रकार का णे० नारकी भा० भाषक अ० अभाषक ए० ऐसे ए० एकेन्द्रिय व० वर्ज्य स० सर्व दु० दोप्रकार का णे० नारकी स० सम्यक् दृष्टि मि० मिथ्यादृष्टि ए० एकेन्द्रिय व० वर्ज्य

सूत्र

जाव वेमाणिया दुविहा णेरइया प० तं० पजत्तगाचेव अपजत्तगाचेव जाव वेमाणिया दुविहा णेरइया प० तं सन्नीचेव असन्नीचेव एवं जाव पंचिंदिया सव्वे विगलिंदिय वजा जाव वाणमंतरा । दुविहा णेरइया प० तं० भासगाचेव अभासगाचेव एव मेगिंदिय वजा सव्वे । दुविहा णेरइया प० तं० सम्मादिट्ठियाचेव मिच्छदिट्ठियाचेव एगिंदिय-

भावार्थ

अपर्याप्त ॥ मनपर्याप्ति सहित सो संज्ञी और मनपर्याप्ति रहित सो असंज्ञी संज्ञी असंज्ञी के दो २ भेद सब पंचेन्द्रिय में जानना और एकेन्द्रिय, बेइन्द्रिय, तेइन्द्रिय और चौरेन्द्रिय में मात्र असंज्ञी है ॥ नारकी के दो भेद भाषक, अभाषक परंतु एकेन्द्रिय मात्र अभाषक ही है । एकेन्द्रिय छोड कर सब जीव समदृष्टिवाले और मिथ्या दृष्टिवाले हैं ॥ एक परत संसारी—देशउना अर्धपुद्गल परावर्तन में मोक्ष जानेवाले दूसरा अनंत संसारी अधिक पुद्गल परावर्तन करने का होवे सो । संख्याता कालकी स्थितिवाले और असंख्याता कालकी

शब्दार्थ

स० सर्व दु० दोप्रकार का णे० नारकी प० परत संसारी अ० अनंत संसारी जा० यावत् वे० वैमानिक दु० दोप्रकार का णे० नारकी सं० संख्यात काल की स्थितिवाले अ० असंख्यात काल की स्थितिवाले ए० ऐसे पं० पंचेन्द्रिय ए० एकेन्द्रिय वि० विकलेन्द्रिय व० वर्ज्य जा० यावत् वा० व्यंतर दु० दो प्रकार का णे० नारकी सु० सुलभबोधि दु० दुर्लभ बोधि जा० यावत् वे० वैमानिक दु० दोप्रकार का णे० नारकी क० कृष्ण पक्षिक सु० शुक्लपक्षिक जा० यावत् वे० वैमानिक दु० दोप्रकार का णे० नारकी च०

सूत्र

वज्जा सव्वे. दुविहा णेरइया प० तं० परित्तसंसारियाचेव अणंतसंसारियाचेव चाव वेमाणिया. दुविहा णेरइया प० तं० संखेज्जकालसमयट्ठिइयाचेव असंखेज्जकालसमय ट्ठिइयाचेव एवं पंचिंदिया एगिंदिया विगलेंदियवज्जा जाव वाणमंतरा । दुविहा णेरइ-या प० तं० सुलभबोहियाय दुल्लभबोहियाय जाव वेमाणिया दुविहा णेरइया प० तं० कण्हपाक्खियाचेव सुक्कपक्खियाचेव जाव वेमाणिया दुविहा णेरइया प० तं० चरमा

भावार्थ

।स्थितिवाले इस में एकेन्द्रिय और विकलेन्द्रिय की मात्र संख्यात कालकी स्थिति है और ज्योतिषी और व्यंतर देवों की स्थिति मात्र असंख्यात कालकी है. दूसरे दंडकों में दोनों प्रकार की स्थिति है ॥ सहज से धर्म समझ सके सो सुलभ बोधी और कठिनतासे धर्म समझनेवाले दुर्लभ बोधी ॥ बहुकर्मी जीव कृष्ण पक्षी और हलुकर्मी जीव शुक्ल पक्षी हैं ॥ उक्त सब बोल चौविस दंडक में पाते हैं ॥ जिन को फीर उसी स्थान में

शब्दार्थ

चरम अ० अचरम जा० यावत् वे० वैमानिक ॥ ३ ॥ दो० दो ठा० स्थान से आ० आत्मा अ० अधो लो० लोक जा० जानता है पा० देखता है तं० वह ज० जैसे स० समुद्घात से अ० आत्म स्वभाव से आ० आत्मा अ० अधोलोक जा० जानता है पा० देखता है अ० समुद्घात विना आ० आत्म स्वाभाव से आ० आत्मा अ० अधोलोक जा० जानता है पा० देखता है अ० नीचे स० समुद्घात सें अ० विनासमुद्घात सें अ० आत्म स्वभाव से अ० अधोलोक जा० जानता है पा० देखता है ए० ऐसे तिर्यक् लोक उ० ऊर्ध्व

सूत्र

चेव अचरमाचेव जाव वेमाणिया ॥३॥ दोहिं ठाणेहिं आया अहे लोगं जाणइ पासइ तंजहा समोहएणंचेव अप्पाणेणं आया अहेलोगं जाणइ पासइ असमोहएणंचेव अप्पाणेणं आया अहेलोगं जाणइ पासइ अधोहि समोहएअसमोहएणंचेव अप्पाणेणं आया अहे लोगं जाणइ पासइ। एवं तिरियलोगं उड्ढलोगं केवलकप्पं लोगं। दोहिं ठाणेहिं

भावार्थ

उत्पन्न होने का न होवे सो चरम शरीरी और फीर वहां ही उत्पन्न होने का होवे सो अचरम शरीरी. यह भी चौवीस दंडक में पाता है ॥ ३ ॥ ऊर्ध्व अधो और तिर्यक् इन तीनों लोककी बात को आत्मा दो कारण से जान सकता है और देख सकता है १ वैक्रेय समुद्घात करके अवधिज्ञानी आत्म स्वभाव से जान सकते हैं और २ वैक्रेय समुद्घात किये विना ही जीव आत्म स्वभाव से जान सकते हैं अथवा जिन को परम अवधिज्ञान उत्पन्न हुवा होवे वैसे जीव वैक्रेय समुद्घात करके या विना किये अवधिज्ञान से तीनों

शब्दार्थ

लोक के केवल कल्प लोक दो० दोस्थान से आ० आत्मा अ० अधोलोक जा० जानता है पा० देखता है तं० वह ज० जैसे वि० वैक्रेय से अ० आत्मस्वभाव से आ० आत्मा अ० अधोलोक जा० जानता है पा० देखता है अ० वैक्रेयविना अ०आत्मस्वभाव से आ०आत्मा अ० अधोलोक जा० जानता है पा० देखता है अ० वैक्रेय करके या विना किये अ० आत्मस्वभाव से आ० आत्मा अ० अधोलोक जा० जानता है पा० देखता है ए० ऐसे तिं० तिर्यक् लोक उ० ऊर्ध्व लोक के० केवल कल्प लोक ॥ ४ ॥ दो० दोस्थान से

सूत्र

आया अहे लोगं जाणइ पासइ तं जहा विउव्विएणंचेव अप्पाणेणं आया अहोलोगं जाणइ पासइ अविउव्विएणंचेव अप्पाणेणं आया अहो लोगं जाणइ पासइ अहोहि विउव्विया विउव्विएणंचेव अप्पाणेणं आया अहोलोगं जाणइ पासइ। एवं तिरियलोगं, उड्ढंलोगं केवलकप्पं लोगं ॥ ४ ॥ दोहिं ठाणेहिं आया सद्दाइ सुणेइ तंजहा देसेणवि आया स-

भावार्थ

लोक के भाव जान व देख सकते हैं ॥ और दूसरा कारण इस से मिलता हुवा शरीराश्रित यह है कि वैक्रेय शरीर को भेज कर या विना भेजे भी अवधि ज्ञान से आत्मा तीनों लोक को जान सकते हैं और देख सकते भी हैं वैसे ही परम अवधि ज्ञान से वैक्रेय शरीर युक्त या शरीर रहित जान सकते हैं और देख सकते हैं ॥ ४ ॥ जीव देश थकी १ व सर्व थकी २ ऐसे दो स्थानक से शब्द श्रवण करें.

१ एक कान से सुने और एक कान से बाधिर होवे. २ दोनों कान से श्रवण करें अथवा संभिन्न श्रोतोपलब्धि का धनी सब सुनता है.

शब्दार्थ

आ० आत्मा स० शब्द सु० सुनता है तं० वह ज० जैसे दे० देशसे स० सर्व से ए० ऐसे रू० रूप पा० देखता है गं० गंध आ० सूंघता है र० रस आ० स्वादलेता है फा० स्पर्श प० स्पर्शता है दो० दोस्थान से आ० आत्मा ओ० दीप्त होता है दे० देशसे स० सर्व से ए० ऐसे प० प्रकाशता है वि० वैक्रेय करता है प० परिचारणा करता है भा० भाषा भा० बोलता है आ० आहार करता है परिण

सूत्र

दाइं सुणेइ सव्वेणवि आया सद्दाइं सुणेइ । एवं रूवाइं पासइ । गंधाइं आघायइ । रसाइं आसाएइ । फासाइं पडिसंवेएइ ॥ दोहिं ठाणेहिं आया ओभासइ तंजहा देसेणवि आया ओभासइ; सव्वेणवि आया ओभासइ एवं पभासइ, विउव्वइ, परियावेइ, भा-

भावार्थ

ऐसे ही दो भेदों से रूप देखे, गंध सूंघे, रस का स्वाद ले और स्पर्श को अनुभवे. जीव दो स्थानक से प्रकाशित होता है १ देश से अर्थात् काजवे (आगिया) की तरह प्रकाशे २ सर्व से दीपक की तरह प्रकाशे ऐसे ही वैक्रेय भी दो प्रकार से होवे १ हस्तादि अंग बनावे सो देश वैक्रेय और संपूर्ण शरीर बनाना सो सर्व वैक्रेय. ऐसे ही मैथुन सेवन का भी दो प्रकार अनंग क्रीडा करना सो देश मैथुन और सर्वांग क्रीडा करना सो सर्व मैथुन. यों शब्दोच्चार भी दो तरह से होते हैं मात्र जिव्हा से बोले सो देश और तालु, ओष्ठ, जिव्हा आदि से बोले सो सर्व. ऐसे ही आहार मुख मात्र से लेना सो देश और पूर्ण आहार करना सो सर्व. ऐसे ही परगमाना—रोगादि कारण से दस्त आदि से विशेष नीकले और थोडा रहे सो देश और

शब्दार्थ

मता है वे० वेदता है णि० निर्जरता है दो० दोस्थान से दे० देव स० शब्द सु० सुनता है तं० वह ज० जैसे दे० देशसे स० सर्व से जा० यावत् णिं० निर्जरता है शेषपूर्ववत् ॥ ५ ॥ म० मरुतदेव दु० दो-प्रकार का० ए० एक शरीरी वि० विशेष शरीरी ए० ऐसे कि० किन्नर किं० किंपुरुष गं० गंधर्व णा०

सूत्र

सं भासइ, आहारेइ, परिणामेइ, वेएइ, निज्जरेइ । दोहिं ठाणेहिं देवे सद्दाइं सुणेइ तंजहा देसेणंवि देवे सद्दाइं सुणेइ सव्वेणवि सद्दाइं सुणेइ जाव णिज्जरेइ ॥ ५ ॥ मरुया देवा दुविहा प० तं० एगसरीरीचेव विसरीरीचेव एवं किन्नरा किंपुरिसा गंधव्वा णा-

भावार्थ

जठराग्नि की प्रबलता से सब पाचन होजावे सो सर्व. वेदने के दो भेद—कार्य प्रयोजन से थोडी वेदना होवे सो देश और व्याधि से आकुल व्याकुल बनना सो सर्व. निर्जराके दो भेद शरीर के अमुक एक अंग से निकलना सो देश और सब अंग से निकलना सो सर्व. ऐसे ही देवता भी दो प्रकारसे शब्द सुनते हैं यावत् निर्जरते हैं ॥ ५ ॥ आठवां देवलोक में रहनेवाले तथा लोकान्तिक देवताओं को मरुत देवता कहते हैं. उन के दो भेद एक शरीरी अर्थात् भव धारणीय शरीर जब होता है तब एक शरीरी कहलाते हैं और वैक्रेय शरीर करते हैं तब विशेष शरीरी कहलाते हैं. ऐसे ही किन्नर, किंपुरुष, गंधर्व, नाग कुमार. अग्नि कुमार. और वायु कुमार तक जानना. देव दो प्रकारके भव धारणीय शरीर

शब्दार्थ नागकुमार सु० सुवर्णकुमार अ० अग्निकुमार वा० वायुकुमार दे० देव दु० दोप्रकार का ए० एक शरीरी वि० विशेष शरीरी ॥ ६ ॥

दु० दोप्रकार का स० शब्द प० प्ररूपा तं० वह भा० भाषा शब्द णो० नोभाषा शब्द भा० भाषा शब्द दु० दोप्रकार का अ० अक्षर संबंध नो० नोअक्षर संबंध णो० नोभाषा शब्द दु० दोप्रकार का आ० ताडन से स० शब्द णो० विनाताडन से स० शब्द आ० ताडन शब्द दु० दोप्रकार का० त० ताल का

सूत्र तृतीय ठाणाङ्ग सूत्र

गकुमारा, सुवन्नकुमारा अग्गिकुमारा, वायुकुमारा. देवा दुविहा प० तं एगसरीरी चेव विसरीरीचेव ॥ ६ ॥ इति बीयठाणस्स बीओदेसो सम्मत्तो ॥ *

दुविहे सद्दे प० तं भासासद्दे चेव नोभासासद्देचेव । भासासद्दे दुविहे प० तं० अक्खरसंबद्धे चेव नोअक्खरसंबद्धे चेव । णोभासासद्दे दुविहे प०तं० आउज्जसद्देचेव

भावार्थ वाले एक शरीरी और उत्तर वैक्रेय करनेवाले विशेष शरीरी. यह दूसरा स्थानक का दूसरा उद्देशा पूर्ण हुवा. आगे तीसरा उद्देशा कहते हैं. * *

श्री भगवन्तने भाषा के दो भेद कहे हैं एक मनुष्य पशु आदि शब्द करे सो भाषा और अजीव का जो शब्द होवे सो नोभाषा. भाषा के दो भेद अक्षर सहित और अक्षर रहित. नो भाषा के दो प्रकार ताडनादि से अक्षरों होवे सो और विना ताडनासे वांस प्रमुख तोडते जो होवे सो. ताडना से जो शब्द

शब्द वि० ताल विनाका शब्द त० तालका शब्द दु० दोप्रकार का घ० घनशब्द झु० पहोला शब्द ए० ऐसे वि० तालविनाका शब्द णो० विना ताडन शब्द का दु० दोप्रकार भू० भूषण के शब्द णो० नो भषण शब्द णो० नोभूषण शब्द के दोभेद ता० ताल शब्द ल० लात का शब्द दो० दोस्थान से स० उ०शब्द उत्पन्न होवे तं० वह ज० जैसे सा० संबध मिलने से पु० पुद्गल का स० शब्द उत्पन्न होवे भि०

णो आउज्जसद्देचेव । आउज्जसद्दे दुविहे प० तं० तते चेव विततते चेव, तते दुविहे प० तं० घणे चेव झुसिरेचेव एवं विततेवि ॥ णोआउज्जसद्दे दुविहे प० तं० भूसणसद्दे चेव, णो भूसणसद्देचेव । णोभूसणसद्दे दुविहे प० तं० तालसद्दे चेव लत्तिया सद्देचेव ॥ दोहिं ठाणेहिं सद्दुप्पाए सिया तंजहा साहन्नंताणं चेव पुग्गलाणं सद्दुप्पाए सिया

होवे उस के दो भेद तत और वितत तत वार्दित्र के दो भेद घन—जिस का अवाज बहुत घनघोर निकले सो पडह मृदंगादि और झुसर करताल कंसालादि. ऐसे ही वितत के दो भेद कहना विना ताडना से जो शब्द होवे उस के दो भेद १ भूषण शब्द—नेऊर झांझर प्रमुख भूषण के शब्द और भूषण विना के शब्द. नो भूषण के दो भेद हाथ से ताली बजाने का और किसी को लात मारना इत्यादि. और भी शब्द दो प्रकारसे उत्पन्न होते हैं बदल प्रमुख मिलने से जो अवाज होता है सो और वांश प्रमुख टुटनेसे

शब्दार्थ भेदहोने से पो० पुद्गल का स० शब्द उत्पन्न होवे ॥ १ ॥ दो० दोस्थान से पो० पुद्गल सा० बंधाते हैं तं० वह ज० जैसे स० स्वभाव से प० दूसरे से दो० दोस्थान से पो० पुद्गल भि० भेदाते हैं स० स्वभाव से प० दूसरे से दो० दोस्थान पो०पुद्गल प०सडते हैं स०स्वभाव से प० दूसरे से ए० ऐसे प० पडते हैं वि० नाशपातेहैं शेषपूर्ववत् ॥ २॥ दु०दोप्रकार का पो०पुद्गल प०प्ररूपा तं०वह भि०भिन्न अ०अभिन्न दु०दोप्रकार का पो० पुद्गल प० प्ररूपा भि० भिदुर धर्म नो०नोभिदुरधर्म दु०दोप्रकार का पुद्गल प०परमाणु पुद्गल ना०

सूत्र भिज्जंताणंचेव पोग्गलाणं सदुप्पाएसिया ॥ १ ॥ दोहिं ठाणेहिं पोग्गला साहन्नंति तंजहा सयं वा पोग्गला साहन्नंति परेण वा पोग्गला साहन्नंति । दोहिं ठाणेहिं पोग्गला भिज्जंति तंजहा सयं वा पोग्गला भिज्जंति परेण वा पोग्गला भिज्जंति । दोहिं ठाणेहिं पोग्गला परिसडंति तंजहा सयं वा पोग्गला परिसडंति परेणवा पोग्गला परिसडंति । एवं परिपडंति विद्धंसंति ॥ २ ॥ दुविहा पोग्गला प० तं० भिन्नाचेव अभिन्नाचेव । दुविहा पोग्गला प० तं० भिउरधम्माचेव नोभिउरधम्माचेव । दुविहा

भावार्थ जो शब्द होवे सो ॥ १ ॥ श्री भगवन्तने पुद्गल मिलने के, विखरने के, सडने के और विध्वंस होने के दो दो भेद बतलाये हैं १ स्वभावसे और २ अन्य के संयोग से ॥ २ ॥ श्री भगवन्तने पुद्गल दो प्रकारके फरमाये हैं १ अलग विखरे हुवे धुल, मिट्टी प्रमुख सो भिन्न और २ एक साथ मिले हुवे लक्कडादि प्रमुख सो

शब्दार्थ

नोपरमाणु पुद्गल दु० दोप्रकार का पो० पुद्गल प० प्ररूपा सु० सूक्ष्म बा० बादर दु० दोप्रकार का० पो० पुद्गल प० प्ररूपा व० बंधाया हुवा पु० स्पशाया नो० नहीं ब० बंधाया स्पर्शाया हुवा दु० दोप्रकार का पो० पुद्गल प० पर्यायातीत अ० अपर्यायातीत दो० प्रकार का पो० पुद्गल अ० आत्मग्राही अ० नोआत्मग्राही दु० दोप्रकार का पो० पुद्गल इ० इष्ट अ० अनिष्ट ए० ऐसे कं०कान्त

सूत्र

पोग्गला प० तं० परमाणुपोग्गलाचेव नोपरमाणुपोग्गलाचेव । दुविहा पोग्गला प० तं० सुहुमाचेव बायराचेव । दुविहा पोग्गला प० तं० वद्धपासपुट्ठाचेव नोवद्धपासपुट्ठाचेव दुविहा पोग्गला प० तं० परियादितचेव, अपरियादितचेव । दुविहा पोग्गला प० तं०

भावार्थ

अभिन्न और भी पुद्गल के दो प्रकार बताते हैं स्वभाव से ही भेदावे सो भिदुर स्वभाववाले और जो न भेदावे सो नोभिदुर स्वभाव वाले वज्रादिक प्रमुख. अत्यन्त सूक्ष्म पुद्गल कि जिसका दो विभाग न होवे सो परमाणु पुद्गल और बहुतों का समुह सो नोपरमाणु. दो प्रकारके पुद्गल सूक्ष्म सो भाषा के और बादर चर्मचक्षु से देखसके सो, और भी पुद्गल के दो भेद कहते हैं पुद्गल बहुत बंधावे परंतु शरीर के एक पास स्पर्शे सो नाक प्रमुख इन्द्रिय से ग्रहण करने योग्य, और जो बंधाये हुवे नहीं है सो कान से सुनाजावे वगैरह. यह भेद इन्द्रिय के संबंध में जानना. और भी दो भेद-सब पुद्गलों की पर्याय को स्पर्श

शब्दार्थ

पि० प्रिय म० मनोज्ञ म० मनोहर दु० दोप्रकारका स० शब्द अ० आत्मग्राही अ० नोआत्मग्राही ए० ऐसे इ० इष्ट म० मनोहर दु० दोप्रकार का रू० रूप अ० आत्मग्राही अ० नोआत्मग्राही जा० यावत म० मनोहर ए० ऐसे गं० गंध र० रस फा० स्पर्श ए० ऐसे इ० एकेक के (छ० छह) आ० आलापक भा० कहना ॥ ३ ॥ दु० दोप्रकार का आ० आचार णा० ज्ञानाचार णो० नोज्ञानाचार णो० नो

सूत्र

अत्ताचेव अणत्ताचेव । दुविहा पोग्गला प० तं० इट्ठाचेव अणिट्ठाचेव । एवं कंता, पिया, मणुन्ना, मणामा ॥ दुविहा सद्दा प० तं० अत्ताचेव अणत्ताचेव एव मिट्ठा जाव मणामा ॥ दुविहा रूवा प० तं अत्ताचेव अणत्ताचेव जाव मणामा । एवं गंधा रसा फासा एव मिक्किके छ आलावगा भाणियव्वा ॥३॥ दुविहे आयारे प० तं० णाणा-

भावार्थ

ली सो पर्यायातीत और नहीं स्पर्शी सो अपर्यायातीत और भी दो भेद जीवने ग्रहण कीये सो शरीरादि आत्मग्राही और ग्रहण नहीं किये सो अनात्मग्राही और भी दो भेद इष्ट और अनिष्ट ऐसे ही कान्तकारी, अकान्तकारी, प्रियकारी, अप्रियकारी, मनोहर, अमनोहर, और मनोज्ञ, अमनोज्ञ ऐसे भेद जानना. ऐसे ही शब्द, रूप, वर्ण, गंध, रस और स्पर्श के ग्रहे हुवे नहीं ग्रहे हुवे, कान्तकारी, प्रियकारी, मनोज्ञ और मनोहरादि भेद कहना. ऐसा पुद्गलों का स्वभाव सदैव रहता है ॥ ३ ॥ आचार के दो भेद १ ज्ञाना-

ज्ञानाचार दु० दोप्रकार का दं० दर्शनाचार णो० नोदर्शनाचार णो० नोदर्शनाचार दु० दोप्रकार का च० चारित्राचार नो० नोचारित्राचार णो० नोचारित्राचार दु० दोप्रकार का त० तपाचार वी० वीर्याचार ॥ ४ ॥ दो० दोप्रतिमा स० समाधि प्रतिमा उ० उपधान प्रतिमा दो० दोप्रतिमा वि० विवेक प्रतिमा वि० व्युत्सर्ग प्रतिमा दो० दोप्रतिमा भ० भद्र सु० सुभद्र दो० दोप्रतिमा म० महाभद्र स० सर्वतोभद्र दो० दो-

यारेचेव णोणाणायारेचेव । णोणाणायारे दुविहे प० तं० दंसणायारेचेव, णोदंसणायारे चेव । णोदंसणायारे दुविहे प० तं० चरित्तायारेचेव णोचरित्तायारेचेव । नोचरित्तायारे दुविहे प० तं० तवायारेचेव वीरियायारेचेव ॥ ४ ॥ दो पडिमाओ प० तं० समाहि-पडिमाचेव उवहाणपडिमाचेव । दो पडिमाओ प० तं० विवेगपडिमाचेव विउसग्गपडि-

चार-सूत्रादिकका अभ्यास करना समझना. और २ नोज्ञानाचार सो ज्ञान विना दूसरा आचार. नोज्ञानाचार के दो भेद दर्शनाचार-निसंकिय निकंखियादि आठ बोल सहित. और नो दर्शनाचार सो दूसरा. नो दर्शनाचार के दो भेद दर्शन से श्रद्धे हुवे पदार्थों से आदरने योग्य आदरना और छोडने योग्य छोडना सो चारित्र आचार और चारित्र से भिन्न सो नो चारित्र आचार. नो चारित्र आचार के दो भेद तपाचार और वीर्याचार ॥ ४ ॥ भगवन्तने दो प्रकारकी प्रतिज्ञा कही है मन के परिणाम पवित्र होना सो समाधि प्रतिज्ञा और साधु की बारह प्रतिमा तथा श्रावक की अग्यारह प्रतिमा का आचरण करना सो उपधान

प्रतिमा खु० छोटीमोकप्रतिमा म० बडीमोकप्रतिमा दो० दोप्रतिमा ज० यवमध्यचंद्र प्रतिमा व० वज्रमध्य-

माचेव । दो पडिमाओ प० तं० भद्देचेव सुभद्देचेव । दो पडिमाओ प० तं० महाभद्दे

चेव सव्वतोभद्देचेव । दो पडिमाओ प० तं० खुड्डियाचेव मोयपडिमा, महल्लियाचेव

प्रतिज्ञा. और पडिमा दो प्रकारकी. कषाय प्रमुख का त्याग करना सो विवेक प्रतिमा और कायोत्सर्ग करना सो व्युत्सर्ग प्रतिमा. और भी प्रतिज्ञा दो प्रकारकी पूर्व दिशा में चार प्रहरतक काउसग्ग करना, उपसर्ग परिषह सहन करना, और साधु श्रावकको योग्य उपधान तपका करना सो भद्रा प्रतिमा. यह प्रतिमा दो दिन में पूर्ण होती है. ऐसे ही दशोदिशी में काउसग्ग करना, उत्सर्गादि सहन करना सो सुभद्रा प्रतिमा. और भी दो प्रकार की प्रतिज्ञा एक २ दिशी में अहोरात्रि कायोत्सर्ग करे यों चार अहो रात्रि तक कायोत्सर्ग करे. यह महाभद्रा पडिमा. और दश दिशाओं में एक २ अहोरात्रि कायोत्सर्ग करके दश दिनों में पूर्ण करे सो सर्वतोभद्र प्रतिज्ञा और भी दो पडिमा एक छोटी मोक पडिमा = चौदह अथवा

= द्रव्य से प्रश्रवण परठना नहीं क्षेत्र से गांव की बाहिर रहना काल से आहार सहित करें तो चौदह भक्त में पूर्ण होवे और आहार छोड कर करे तो अठारह भक्त में पूर्ण होवे और भाव से देवादिक के उपसर्ग सहन करे. बडी मोक पडिमा भी वैसेही कहना परंतु काल से आहार सहित करेतो सोलह भक्त और आहार रहित करेतो अठारह भक्त में पूर्ण होवे.

शब्दार्थ

सूत्र

भावार्थ

चंद्र प्रतिमा ॥५॥ दु० दोप्रकार की सा० सामायिक अ० आगारिक सामायिक अ० अनागारिक सामायिक ॥ ६ ॥ दो० दो का का उ० उपपात दे० देवता का ने० नारकी का दो० दो का उ० नीकलना ने०

मोयपडिमा । दो पडिमाओ प० तं० जवमज्झेचेव चंदपडिमा वइरमज्झेचेव चंदपडिमा ॥५॥ दुविहे सामाइए प० तं० अगारसामाइए, चेव अणगारसामाइए चेव ॥ ६॥

सोलह भक्त में पूर्ण होवे और दूसरी वडी मोक पडिमा सोलह अथवा अठारह भक्त में पूर्ण होवे और भी दो पडिमा यवमध्य चंद्र पडिमा. यव जैसा मध्य भागवाली और चंद्र की समान बढती घटती होवे सो. प्रतिपदा के दिन एक कवल का आहार लेवे और प्रति दिन एक २ कवल बढाते जावे यावत् पूर्णिमा के दिन १५ कवल लेवे और कृष्णपक्ष की प्रतिपदा के दिन १५ कवल और प्रति दिन एक २ कवल आहार घटाते जावे यावत् अमावास्या को एक कवल का आहार करे सो यवमध्य चंद्रपडिमा तप. और वज्रमध्य चंद्र पडिमा अर्थात् वज्र सरिखा मध्य भागवाली पडिमा. कृष्ण पक्ष की प्रतिपदा को पंदरह कवल का आहार लेवे और प्रति दिन एक घटाते २ अमावास्या को एक कवल का आहार लेवे और शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा को एक कवल यावत् पूर्णिमा को १५ कवल का आहार करे यह वज्रमध्य चंद्र पडिमा ॥ ५ ॥ दो प्रकारकी सामायिक कही है. गृहस्थ-श्रावक को मुहूर्तादिक की मर्यादा से सामायिक सो होवे आगारिक सामायिक और जाव जीव तक सामायिक करना सो साधु की अनागारिक सामायिक ॥ ६ ॥ उपपात

शब्दार्थ नारकी का भ० भवनवासी का दो० दो का च० चवण जो० ज्योतिषी का वे० वैमानिक का दो० दो की गर्भ में उत्पत्ति म० मनुष्य की पं० पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिवाले की दो० दो का ग० गर्भस्थान में आ० आहार म० मनुष्य को पं० पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिवाले को दो०दोको ग० गर्भस्थान में वु० वृद्धि म०मनुष्य को पं०पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिवाले को ए० ऐसे नि०हानि वि०विकुर्वणा ग० गतिपर्याय स० समुघद्दात का०

सूत्र दोण्हं उववाए प० तं० देवाणंचेव नेरइयाणंचेव । दोण्हं उवट्टणा प० तं० नेरइयाणं चेव भवणवासीणंचेव । दोण्हं चयणे प० तं० जोइसियाणंचेव वेमाणियाणंचेव । दोण्हं गब्भवक्कं प० तं मणुस्साणंचेव, पंचेंदियतिरिक्खजोणियाणंचेव । दोण्हं गब्भत्थाणं आहारे प० तं० मणुस्साणंचेव, पंचेंदियतिरिक्खजोणियाणंचेव । दोण्हं गब्भ-

भावार्थ दो प्रकार का है १ चार जाति के देवता का उपपात और २ सात नारकी का उपपात. वहां पर गर्भ स्थिति नहीं है । दो प्रकार की उद्वर्तना. चवकर उपर आना उसे उद्वर्तना कहते हैं. नारकी को और भवनपति देवताओं को मरण रूप उद्वर्तना होती है. दो प्रकारके जीवों चवते हैं (नीचे लोक में जाते हैं) चंद्र सूर्यादि ज्योतिष देवता का चवन और वैमानिक देवताओं का चवन. दो प्रकारके जीव गर्भ में उत्पन्न होते हैं मनुष्य और तिर्यंच पंचेन्द्रिय. वैसे ही मनुष्य और तिर्यंच गर्भ में रहे हुवे आहार करते हैं, गर्भ में वृद्धि पाते हैं गर्भ में ही क्षीण होजाते हैं, वैक्रेय शरीर करते हैं, गतिपर्याय अर्थात् गर्भ में से

शब्दार्थ

काल संयोग आ० मृत्युहोवे दो० दोको छ० चमडी से आच्छादित शरीर म० मनुष्य का पं० पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिवाले के दो० दो सु० वीर्य सो० रुधिर में सं० उत्पत्ति म० मनुष्य की पं० पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिवाले का दु० दोप्रकार की ठि० स्थिति का० कायस्थिति भ० भवस्थिति दो० दो की का० काय स्थिति म० मनुष्य की प० पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिवाले की दो० दोकी भ० भवस्थिति दे० देवकी

सूत्र

त्थाणं वुड्ढी प० तं० मणुस्साणंचेव पंचेंदियतिरिक्खजोणियाणंचेव । एवं निवुड्ढीवि गुव्वणा गइपरियाए समुग्घाइकालसंजोगे आयाइमरणे । दोण्हं छविपव्वा प० तं० मणुस्साणंचेव पंचेंदियतिरिक्खजोणियाणंचेव । दोसुक्कसोणिअसंभवा प० तं० मणुस्साणंचेव पंचेंदिय तिरिक्खजोणियाणंचेव दुविहा ठिई प० तं० कायठिईचेव भवठिईचेव दोण्हं कायठिई प० तं० मणुस्साणंचेव पंचेंदिय तिरिक्ख जोणियाणंचेव । दो-

भावार्थ

प्रदेश बाहिर नीकालकर संग्राम करे (भगवती सूत्र का कथन) गर्भ में ही मरणान्तिक समुद्घात करते हैं. गर्भ से बाहिर निकलते हैं और मरण भी इन दोनों का होता है. और भी मनुष्य और तिर्यंच इन दोनों को चमडी का बंधन होता है. वे पिता का वीर्य और माता का रुधिर से उत्पन्न होते हैं. जीव की दो प्रकार की स्थिति कही है मरकर पुनः उसी काया में उत्पन्न होना सो कायस्थिति और मात्र एक ही भव उस शरीर में करे सो भवस्थिति इस में से मनुष्य और तिर्यंच १ पंचेन्द्रिय कायस्थिति के धारक हैं

१ यहां पर सात आठ भव का ग्रहण करने से ही मात्र तिर्यंच पंचेन्द्रिय ग्रहण किये गये हैं.

शब्दार्थ

ने० नारकी का दु० दोप्रकार का आ० आयुष्य अ० काल प्रधान भ० भव प्रधान दो० दोका अ० काल प्रधान आयुष्य म० मनुष्य का पं० पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिवाले का दो० दो का भ० भवप्रधान आयुष्य दे० देवता का ने० नारकी का दु० दोप्रकार का कर्म प० प्रदेश कर्म अ० अनुभावकर्म दो० दो अ०

सूत्र

ण्हं भवाठिई प० तं० देवाणंचेव णेरइयाणंचेव । दुविहे आयुए प० तं० अद्धाउएचेव भवाउएचेव । दोण्हं अद्धाउए प० तं मणुस्साणंचेव पंचेंदियतिरिक्खजोणियाणंचेव दोण्हं भवाउए प० तं० देवाणंचेव नेरइयाणंचेव । दुविहे कम्मे प० तं० पदेसकम्मे चेव अणुभाव कम्मेचेव । दो अहाउयं पालेइ तं० देवच्चेव नेरइयच्चेव दोण्हं आउय

भावार्थ

क्यों कि लगोलग उस के आठ भव कर सकते हैं. नरक व देवता के जीव भवस्थिति के धारक होते हैं अर्थात् वहां से मरकर फिर वहां नहीं उत्पन्न होते है, परंतु मनुष्य और तिर्यंच में उत्पन्न होते हैं. भगवन्तने आयुष्य दो प्रकार का कहा है. काल प्रधान आयुष्य और भव प्रधान आयुष्य. मनुष्य और तिर्यंच पंचेन्द्रिय का काल प्रधान आयुष्य है क्यों कि उनका आयुष्य निश्चित नहीं है कि कब काल आवेगा. देव और नारकी को भव प्रधान आयुष्य होता हैं क्यों कि वहां उत्पन्न होनेवाले जीवों को जो निश्चित आयुष्य होता है उतनाही पूर्ण किये विना वे मरते नहीं हैं. दो प्रकार के कर्म हैं प्रदेश कर्म आत्मप्रदेश में ही सुख दुःख का अनुभवना और अनुभाव कर्म रस वेदना सो. नारकी और देवता पूर्ण आयुष्य पालकर काल करे और

पूरा आयुष्य पा० भोगते है दे० देव ने० नारकी दो० दोका आ० आयुष्य सं० संवर्तक म० मनुष्य का पं० पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिवाले का ॥ ७ ॥ जं० जंबूद्वीप के मं० मेरु प०पर्वत की उ० उत्तर दा०दक्षिण में दो० दो वा० क्षेत्र ब० बहुत तुल्य अ० अविशेष अ० अन्योन्य अ० सरीखा है आ० लम्बाइ अ० चौडाइ सं० संठान प० परिधिसे तं० वह ज० जैसे भ० भरत ए० ऐरवत ए० ऐसे ए० इस अ० अभिलाप से ने० जानना हे० हेमवय ए० ऐरण्णवय ह० हरिवास र० रम्यकवास ॥ ८ ॥ जं० जंबूद्वीप के मं० मेरु

संवट्टए प० तं० मणुस्साणंचेव पंचेंदिय तिरिक्ख जोणियाणंचेव ॥ ७ ॥ जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स उत्तरदाहिणेणं दोवासा प० तं० बहुसमउल्ला अविसेसमणाणत्ता अन्नमन्नंणाइवट्टंति, आयामविक्खंभसंठाणपरिणाहेणं तंजहा भरहेचेव एरवएचेव एवमेएणं अहिलावेणं नेयव्वं हेमवएचेव एरण्णवएचेव, हरिवरिसेचेव रम्मय वरिसेचेव ॥ ८ ॥ जंबुद्दीवेदीवे मंदरस्स पव्वयस्स पुरच्छिमपच्चत्थिमेणं दो खित्ता प०

मनुष्य और तिर्यंच व्यवहार से कमी ज्यादा आयुष्य पाल करके काल करते हैं ॥ ७ ॥ परिपूर्ण चंद्र मंडलाकार जम्बू द्वीप में एक लक्ष योजन का मेरु पर्वत है उस की उत्तर और दक्षिण दोनों बाजु में भरत और ऐरावत नामक क्षेत्र हैं, उन दोनों की लंबाइ, चौडाइ, परिधि, आकार और स्वभाव एकसा मिलता हुवा है. किंचिन्मात्र भी भिन्नता नहीं है. ऐसे ही उन क्षेत्रों की पास हेमवय और ऐरण्णवय परस्पर क्षेत्र मिलते हुवे हैं. और उन की पास हरिवर्ष और रम्यक् वर्ष दोनों क्षेत्र परस्पर मिलते हुवे हैं ॥८॥ जम्बू द्वीप में रहा-

शब्दार्थ

पवत का पु० पूर्व प० पश्चिम में दो० दोक्षेत्र ब० बहुत तुल्य अ० अविशेष जा० यावत् पु० पूर्व विदेह अ० अपर विदेह ॥ ९ ॥ जं० जंबूद्वीप के मेरु पर्वत की उ० उत्तर दा० दक्षिण दिशामें दो० दोकुरु ब० बहु तुल्य अ० अविशेष जा० यावत् दे० देवकुरु उ० उत्तरकुरु त० तहां म० बडे म० बडे ऊंचे दु० वृक्ष ब० बहुत तुल्य अ० अविशेष अ० अन्योन्य णा० सरीखे हैं आ० लंबा अ० चौडा उ० ऊंचे उ० ऊंडे सं० संस्थान प० परिधि से कू० कुडसामली जं० जंबूसुदर्शन त० तहां दो० दोदेव म० महर्धिक जा०

सूत्र

तं० बहुसमउल्ला अविसेसा जाव पुव्वविदेहेचेव, अवरविदेहेचेव ॥ ९ ॥ जंबूमंदरस्स पव्वयस्स उत्तरदाहिणेणं दो कुराओ प० तं० बहुसमउल्ला अविसेसा जाव देवकुराचेव, उत्तरकुराचेव । तत्थणं दो महइ महालया महादुमा प० तं० बहुसमउल्ला अविसेसमणाणत्ता अन्नमन्नं णाइवट्टंति आयामविक्खंभुच्चत्तोव्वेहसंठाण परिणाहेणं तंजहा कूडसामलीचेव जंबूचेव सुदंसणा । तत्थणं दो देवा महड्ढिया जाव

भावार्थ

हुवा मेरु पर्वत की पूर्व और पश्चिम दिशामें पूर्व विदेह और पश्चिम विदेह ऐसे दो क्षेत्र बराबर मिलते हुवे रहे हैं ॥९॥जम्बूद्वीप में मेरु पर्वत की पास दक्षिण में देवकुरु और उत्तर में उत्तर कुरु ऐसे ही दोनों क्षेत्र बराबर हैं. देव कुरु में शिखराकार सामली वृक्ष है और उत्तर कुरु में जम्बू वृक्ष हैं ये दोनों वृक्ष मनोहर, बडे, और तेजवंत है. उस की लंबाइ, चौडाइ, उंडाइ, परिधि सब सरिखे हैं. सामली वृक्ष पर गरुड देव और जम्बू वृक्ष पर

शब्दार्थ

वावत् म० महाद्युती प० पल्योपमकी ठि० स्थिति वाले प० वसते हैं ग० गरुडदेव वे० वेणुदेव (अ० अणाढिय देव) जं० जंबूद्वीप के अ० धणी ॥ १० ॥ जं० जंबूद्वीप का मं० मेरुपर्वत उ० उत्तर दा० दक्षिण दिशामें दो० दों वर्षधर पर्वत ब० बहुत तुल्य चु० चूलहेमवंत सि० शिखरी ए० ऐसे म० महाहि-वंत रु० रूपी ए० ऐसे णि० निषढ णी० नीलवंत ॥ ११ ॥ जं० जंबूद्वीप के मं० मेरुपर्वत की उ० उत्तर

सूत्र

महासोक्खा पलिओवम ठिइया परिवसंति तं० गरुलेचेव, वेणुदेवेचेव (अणाढिएचेव) जंबुद्दीवाहिवई ॥ १० ॥ जंबूमंदरस्स पव्वयस्स उत्तरदाहिणेणं दोवासहरपव्वया प० तं० बहुसमउल्ला अविसेसमणाणत्ता, अन्नमन्नंणाइवट्टंति आयामविक्खंभुच्चत्तो व्वेहसंठाणपरिणाहेणं तंजहा चूल्लहिमवंते चेव सिहरीचेव । एव महाहिमवंतेचेव रुप्पीचेव एवं णिसढेचेव णीलवंतेचेव ॥ ११ ॥ जंबूमंदरस्स पव्वयस्स उत्तरदाहि-

भावार्थ

वेणुदेव अपरनाम अणाढिय देवता का रहने का स्थान है. वे दोनों देवताओं जम्बूद्वीप के मालिक हैं और महा ऋद्धिवन्त, तेजवाले और सुख के भोक्ता हैं. इन दोनों का एक पल्य का आयुष्य है ॥ १० ॥ जम्बूद्वीप में मेरु पर्वत की पास उत्तर और दक्षिण दिशा में क्षेत्र की मर्यादा करनेवाले दो वर्षधर चूल हेमवन्त और शिखरी पर्वत हैं. दोनों की लम्बाइ, चौडाइ, ऊंचाइ, व परिधि बराबर है. ऐसे ही हेमवय क्षेत्र की मर्यादा करनेवाला महाहिमवन्त और एरणवय क्षेत्र की मर्यादा करनेवाला रूपी पर्वत ये दोनों बराबर हैं. ऐसे ही निषढ और निलवन्त पर्वत हैं ॥ ११ ॥ जम्बूद्वीप के मेरु पर्वत से दक्षिण में हेमवन्त के मध्य में

शब्दार्थ

दा० दक्षिण में हे० हेमवय ए० ऐरणवय में दों० दो गोल वैताढ प० पर्वत ब० बहु तुल्य अ० अविशेष जा० यावत् स० शब्दापाति वि० विकटापाति त० तहां दो० दो देव म० महर्द्धिक जा० यावत् प० पल्योपम की स्थिति वाले प० रहते हैं सा० स्वाति प० प्रभास ॥ १२ ॥ जं० जंबूद्वीप के मं० मेरुकी उ० उत्तर दा०दक्षिणमें ह०हरिवास र०रम्यकवास में दो०दो व०गोल वे०वैताढ प० पर्वत ब० बहुत तुल्य जा०यावत्

सूत्र

णेणं हेमवएरन्नवएसु वासेसु दोवट्टवेयड्ढपव्वया प० तं० बहुसमउल्ला अविसेस मणाणत्ता जाव सद्दावईचेव वियडावईचेव तत्थणं दो देवा महड्ढिया जाव पलिओवम ट्ठिइया परिवसंति तंजहा साइचेव पभासेचेव ॥ १२ ॥ जंबूमंदरस्स उत्तरदाहिणेणं हरिवरिसरम्मएसु वासेसु दोवट्टवेयड्ढ पव्वया प० तं० बहु समतुल्ला जाव गंधावई

भावार्थ

शब्दापाति नामक और उत्तर के एरणवय क्षेत्र के मध्य में विकटापाति नामक दो अत्यन्त वर्तुलाकार वैताढ पर्वत हैं. वे दोनों बराबर हैं. शब्दापाति वैताढ पर स्वाति नामक देवताका भवन और विकटापातिवैताढ पर प्रभास नामक देवता का भवन है. वे दोनों देवताओं महाऋद्धि के धणि सुखके भोक्ता और पल्योपम की स्थितिवाले हैं ॥ १२ ॥ जम्बूद्वीप के मेरु पर्वत से दक्षिण हरिवर्ष क्षेत्र के मध्य में गंधापाती और रम्यक वर्ष क्षेत्र में मालवंत वैताढ हैं वे दोनों परस्पर मिलते हुवे हैं. गंध-

शब्दार्थ

गं० गंधापाति मा० मालवंत प० पर्याय त० तहां दो० दोदेव म० महर्द्धिक जा० यावत् प० पल्योपम स्थिति वाले प० वसते हैं अ० अरुण प० पद्म ॥ १३ ॥ जं० जंबूद्वीप के दा० दक्षिण में दे० देवकुरु की पु० पूर्व अ० पश्चिम दिशामें ए० यहां आ० अश्वस्कन्ध सरिखें अ० अर्धचन्द्राकार दो० दोवखारा पर्वत ब० बहु तुल्य जा० यावत् सो० सोमनस वि० विद्युत्प्रभ जं० जंबूद्वीप के मं० मेरूपर्वत की उ० उत्तर में

सूत्र

चेव मालवंतपरियाएचेव, तत्थणं दो देवा महड्ढिया जाव पलिओवमट्ठिइया परिवसंति तंजहा अरुणेचेव पउमेचेव ॥ १३ ॥ जंबूमंदरस्स दाहिणेणं देवकुराए पुव्वावरे पासे एत्थणं आसखंधसरिसा अद्धचंदसंठाणसंठिया दोवक्खारपव्वया प० तं० बहु समतुल्ला जाव सोमणसेचेव, विज्जुप्पभेचेव । जंबूमंदरस्स उत्तरेणं उत्तरकुराए पुव्वावरे पासे एत्थणं आसखंधसरिसा अद्धचंदसंठाणसंठिया दोवक्खारपव्वया प०

भावार्थ

पाति पर अरुण देव और मालवंत पर पद्मदेव बडी ऋद्धि के मालिक हैं और एक २ पल्योपम की स्थितिवाले हैं ॥ १३ ॥ जम्बूद्वीप के मेरु पर्वत से दक्षिण दिशा में जो देवकुरु है उस की पूर्व में विद्युप्रभ और पश्चिम में सोमनस नामक पर्वत है. वैसे ही मेरु से उत्तर में आया हुवा उत्तरकुरु की पूर्व पश्चिम में गंधमादन और माल्य पर्वत हैं. उस को वक्षस्कार पर्वत कहे हैं. वे चारों घोडे के स्कंध की आकार में

शब्दार्थ

उ० उत्तरकुरु की पु० पूर्वपश्चिम दिशामें जा० यावत् गं० गंधमादन मा० मालवंत ॥ १४ ॥ जं० जंबूद्वीप कं मं० मेरुपर्वत के उ० उत्तर द० दक्षिणमें दो० दीर्घवैताढ प० पर्वत ब० बहुतुल्य जा० यावत् मा० भरत में दी० दीर्घवैताढ ऐरवत में दी० दीर्घवैताढ भा० भरत के वे० वैताढ में दो० दोगुफा

सूत्र

तं० बहुसमतुल्ला जाव गंधमायणेचेव मालवंतेचेव ॥ १४ ॥ जम्बूमंदरस्स पव्वयस्स उत्तरदाहिणेणं दो दीहवेयड्ढपव्वया प० तं० बहुसमतुल्ला जाव भारहेचेव दीहवेयड्ढे ऐरावएचेव दीहवेयड्ढे । भारहेणं दीहवेयड्ढे दोगुहाओ प० तं० बहु समउल्लाओ अविसेस मणाणत्ताओ अन्नमन्नंणाइवट्टंति आयमाविक्खंभुच्चत्तसंठाण परिणाणं तंजहा तिमिसगुहाचेव खंडगपवायगुहाचेव तत्थणं दो देवा महड्ढिया जाव

भावार्थ

हैं आगे नीचे और छेले ऊंचे ऊंचे हैं. मेरु की पास पांचसो योजन के अर्ध चंद्राकार संस्थानवाले हैं चारों ही बरोबर हैं ॥ १४ ॥ जम्बूद्वीप के मेरु पर्वत से दक्षिण में भरत क्षेत्र है और उत्तर में ऐरवत क्षेत्र है इन दोनों क्षेत्र के मध्यभाग में पूर्व पश्चिमतक लम्बे दो वैताढ हैं वे पचीस योजन के ऊंचे हैं और परस्पर सरिखे हैं. इन दोनों वैताठों में दो २ गुफाए हैं. तिमिस्रा और खंडप्रपात. उन दोनों की लंबाइ चौडाइ ऊंचाइ सब सरीखी हैं. कुछ भी अधिकता नहीं है. उन की ऊंचाइ अष्ट योजन की है और लम्बाइ पचास योजनकी है, और दो योजनका आंतराहै, उसमें उमग्गा और निमग्गा ऐसी दो नदियांहैं उस में तिमिस्र

शब्दार्थ

ति० तिमिस्रगुफा खं० खंडप्रपातगुफा त० तहां दो० दोदेव क० कृतमाल न० नृत्यमाल पूर्ववत् ॥ १५ ॥ जं० जंबूद्वीप के मं० मेरुपर्वत के दा० दक्षिण में चु० चूलहेमवंत व० वर्षधर पर्वत में दो० दो-कूट चू० चुल्लेहमवन्त कूट वे० वैस्रमण कूट म० महा हिमवन्त वर्षधर पर्वत के दो कूट म० महाहिमवन्त कूट वे० वेरुली कूट ए० ऐसे नि० निषढ पर्वत के दो कूट नि० निषढ कूट रु० रुचक कूट जं० जंबूद्वीप के उ०

सूत्र

पलिओवमट्ठिइया परिवसंति तंजहा कयमालएचेव णट्टमालएचेव ॥ ऐरावएणं दीह वेयड्ढे दोगुहा प० तं० जाव कयमालएचेव नट्टमालएचेव ॥ १५ ॥ जंबूमंदरस्स पव्वयस्स दाहिणेणं चुल्लहिमवंते वासहरपव्वए दोकूडा प० तं० बहु समउल्ला जाव विक्खंभुच्चत्तसंठाणपरिणाहेणं तंजहा चुल्लहिमवंत कूडेचेव वेसमणकूडेचेव। जंबू मंदरस्स दाहिणेणं महाहिमवंते वासहरपव्वए दोकूडा प० तं० बहुसमतुल्ला जाव

भावार्थ

गुफाका मालिक कृतमाल और खंडप्रपात गुफा का मालिक नृत्यमाल ऐसे दो देवताओं बडी ऋद्धिवाले और पल्योपम के आयुष्यवाले हैं ॥ १५ ॥ जम्बूद्वीप के मेरु पर्वत से दक्षिण दिशामें जो चूलहिमवंत पर्वत है उस पर दो कूट हैं. चूल हेमवंत कूट और वैश्रमण कूट उन की लम्बाइ, चौडाइ, ऊंचपना, सं-ठाण और परिधि बराबर है. ऐसे ही मेरु से दक्षिण दिशा में महा हिमवन्त पर्वत पर भी दो कूट हैं

शब्दार्थ

उत्तर मे नी० नीलवन्त वर्षधर पर्वत में दो० दोकूट नी० नीलवन्त कूट उ० उपदर्शन कूट ए० ऐसे रु० रुपीवर्षधर पर्वतपे दोकूट रु० रूपीकूट म० मणिकंचन कूट सि० शिखरी वर्षधर पवर्तपे दो० दोकूट सि० शिखरी कूट ति० तिगिच्छकूट ॥ १६ ॥ जं० जंबूद्वीप के मं० मेरु पर्वत की उ० उत्तर दा० दक्षिण में

सूत्र

महाहिमवंतकूडेचेव वेरुलियकूडेचेव । एवं निसढे वासहरपव्वए दोकूडा प० तं० बहु समतुल्ला जाव निसढकूडेचेव रुयगकूडेचेव । जंबूमंदरस्स उत्तरेणं नीलवंते वासहरपव्वए दोकूडा प० तं० बहुसमतुल्ला जाव नीलवंतकूडेचेव उवदंसण कूडेचेव एवं रुप्पिम्मि वासहरपव्वए दोकूडा प० तं० बहु समतुल्ला जाव तंजहा रुप्पिकूडेचेव मणिकंचण कूडेचेव । एवं सिहरिम्मिवि वासहरपव्वए दो कूडा प० बहु समतुल्ला तंजहा सिहरिकूडेचेव तिगिच्छिकूडेचेव ॥ १६ ॥ जंबूमंदरस्स उ-

भावार्थ

महाहिमवन्त कूट और वेरुली कूट ये दोनों बराबर है. ऐसे ही मेरु से दक्षिण दिशा में निषध पर्वत पर दो कूट हैं निषढ कूट और रुचकप्रभ कूट. जम्बूद्वीप के मेरु से उत्तर दिशा में नीलवंत नामक पर्वत पर नीलवंत कूट, उपदर्शन कूट ऐसे ही रूपी पर्वत पर दो कूट रूपी कूट और मणिकंचन कूट वैसे ही शिखरी पर्वत पर दो कूट शिखरी कूट और तिगिच्छ कूट ये दो दो कूटों परस्पर लम्बाइ, चौडाइ में बराबर हैं ॥ १६ ॥ जम्बूद्वीप के मेरु पर्वत की दक्षिण दिशा में चूलहेमवंत पर्वत पर पद्मद्रह और शिखरी पर्वत पर

शब्दार्थ

चु० चूलहेमवन्त सि० शिखरी वर्षधर पर्वतपे दो० दो म० बडेद्रह प० पद्मद्रह पुं० पुंडरीकद्रह त० तहां दो० दो देवी प० रहती हैं सि० श्रीदेवी ल० लक्ष्मीदेवी ए० ऐसे म० महाहिमवन्त रू० रुपी वर्षधर पर्वतपे दो० दो बडेद्रह म० महापद्मद्रह म० महापुंडरीकद्रह दे० देवी हि० ह्रीदेवी बु० बुद्धिदेवी ए० ऐसे

सूत्र

त्तरदाहिणेणं चुल्लाहिमवंत सिहरीसु वासहरपव्वएसु दो महद्दहा प० बहु समतुल्ला अविसेसमणाणत्ता अण्णमण्णं नाइवट्टंति आयामविक्खंभउव्वेहसंठाण परिणाहेणं तं० पउमद्दहेचेव, पुंडरीयद्दहेचेव । तत्थणं दो देवीयाओ महिड्ढियाओ जाव पलिओ-यमट्ठियाओ परिवसंति तं० सिरीचेव लच्छीचेव ॥ एवं महाहिमवंत रुप्पीसु वासह-रपव्वएसु दोमहद्दहा प० बहुसमतुल्ला जाव महापउमद्दहेचेव महापोंडरीयद्दहेचेव ।

भावार्थ

पुंडरीक द्रह है ये दोनों लम्बाइ, चौडाइ, उंचाइ आकार व परिधि में बरावर हैं. उस में पद्मद्रह के कम-लपर श्रीदेवी और पुंडरीक द्रह के कमल पर लक्ष्मी देवी रहती है. वे दोनों देवियों महाऋद्धि, परिवार व सुखवाली है उन की स्थिति एक पल्योपम की है. ऐसे ही महा हिमवन्त पर्वत पर महा पद्मद्रह और रूपी पर्वत पर महा पुंडरीक द्रह है. ये दोनों द्रह लम्बाइ, चौडाइ वगैरह सब बावतों में सरिखे हैं. महा पद्मद्रह पर ही और महापुंडरीक द्रह पर बुद्धि ऐसी दो देवियों हैं वे महा ऋद्धिवाली यावत् एक पल्योपम की स्थितिवाली हैं. ऐसे ही निषध और नीलवंत पर्वत पर तिगिच्छ और केसरी द्रह हैं. और उस की

शब्दार्थ

नि० निषद्द नी० नीलवंतपे ति० तिगिच्छद्रह के० केशरीद्रह धि० धृतिदेवी कि० कीर्तिदेवी ॥ १७ ॥ जं० जंबूद्वीपके मं० मेरु पर्वत की दा० दक्षिण पें म० महाहिमवन्त वर्षधर पर्वत का म० महापद्मद्रह में से दो० दो म०बडीनदी प० वहती हैं रो०रोहिता ह०हरिकान्ता नि०निषद्द पर्वतका ति०तिगिच्छद्रह में से ह०हरिसलीला सी० सीतोदा जं० जंबूद्वीप के मं० मेरु की उत्तर में नी० नीलवंत पर्वत के के० केशरि द्रह में से सी०सीता

सूत्र

देवताओ हिरिच्चेव बुद्धिच्चेव ॥ एवं निसहनीलवंतेसु तिगिच्छिदहेचेव केसरिद्दहेचेव देवताओ धिईचेव कित्तीचेव ॥ १७ ॥ जंबूमंदरदाहिणेणं महाहिमवंताओ वासहरपव्वयाओ महापउमद्दहाओ दो महाणईओ पवहंति तंजहा रोहियच्चेव हरिकंतएचेव एवं निसहाओ वासहरपव्वयाओ तिगिच्छिद्दहाओ दोमहानईओ पवहंति तं० हरिच्चेव सीतोअच्चेव । जंबूमंदर उत्तरेणं नीलवंताओ वासहर पव्वयाओ केसरिद्दहाओ दो महाणईओ पवहंति तंजहा सीताचेव नारिकंताचेव एवं रुप्पी वासहरपव्वयाओ महा

भावार्थ

मालिक दो देवियों धृति और कीर्ति हैं वे महाऋद्धि की धारक यावत् एक पल्योपम की स्थितिवाली हैं. ॥ १७ ॥ जम्बूद्वीप के मेरु की दक्षिण दिशा में महाहिमवंत पर्वत का महापद्मद्रह से रोहिता और हरिकान्ता नामक दो बडी नदियों निकलती हैं. निषध नामक वर्षधर के तिगिच्छ द्रह से हरिसलीला नदी तथा सीतोदा नदी नीकलती हैं. जम्बूद्वीप के मेरु पर्वत की उत्तर दिशा में नीलवंत पर्वत के केशरी

शब्दार्थ — ना० नारीकान्ता रु० रुपीपर्वत के म० महापुंडरीक द्रह में से न० नरकान्ता रु० रूपकूला जं० जंबूके मं० मेरु पर्वत की दा० दक्षिण दिशामें भ० भरत क्षेत्र में दो० दोप्रपातद्रह जा० यावत् गं० गंगाप्रपात द्रह सिं० सिन्धु प्रपातद्रह ए० ऐसे हे० हेमवयक्षेत्र में दो० दोप्रपातद्रह रो० रोहित प्रपातद्रह रो० रोहितांसा प्रपातद्रह ह० हरिवास

सूत्र — पोंडरीयद्दहाओ दो महाणईओ पवहंति तंजहा णरकंताचेव रुप्पकूलाचेव । जंबूमंदर दाहिणेणं भरहेवासे दोपवायद्दहा प० तं० बहु समतुल्ला जाव गंगप्पवायद्दहेचेव । सिंधुप्पवायद्दहेचेव । एवं हेमवएवासे दोपवायद्दहा प० बहु समतुल्ला तं० रोहियप्पवायद्दहेचेव रोहियंसप्पवायद्दहेचेव. जंबूमंदरदाहिणेणं हरिवासे दोपवायद्दहा प० बहु समतुल्ला तं० हरिप्पवायद्दहेचेव हरिकंतप्पवायद्दहेचेव । जंबूमंदर उत्तरदाहिणेणं महाविदेहे वासे दोप्पवायद्दहा प० तं० बहु समतुल्ला जाव सीयप्पवाय द्दहेचेव सी-

भावार्थ — द्रह से सीता और नारीकान्ता ऐसी दो बडी नदियों नीकलती हैं. ऐसे ही रूपी पर्वत के महापुंडरीक द्रह से नरकंता और रूप्यंकुला, ये दो बडी नदियों नीकलती हैं जम्बूद्वीप के मेरु पर्वत से दक्षिण दिशा के भरत में दो प्रपात हैं. गंगा प्रपात कुंड और सिन्धु प्रपात कुंड. जिस में पर्वत पर से नदी का प्रवाह पडता है उसे प्रपात द्रह कहते हैं. ऐसे ही हेमवंत क्षेत्र में रोहिता और रोहितांसा प्रपात द्रह और हरिवर्ष

शब्दार्थ में ह० हरिसलीला प्रपात ह० हरिकान्ता प्रपात म० महाविदेहक्षेत्र में दो० दोप्रपात सी० सीताप्रपात सी० सीतोदा प्रपात र० रम्यकवास में दो० दोप्रपात न० नरकान्ता प्रपात ना० नारीकान्ता प्रपात ए० ऐरण-वयक्षेत्र में दो० दोप्रपात सु० सुवर्ण कुला प्रपात रू० रूप कुला प्रपात ए० ऐरवतक्षेत्र में र० रक्ताप्रपात र० रक्तवती प्रपात भ० भरत क्षेत्र में दो० दोमहानदी गं० गंगा सिं० सिंधु ए० ऐसे ज० जैसे प० प्रपात

सूत्र ओयप्पवायद्दहेचेव । जंबूमंदरउत्तरेणं रम्मएवासे दोपवायद्दहा प० बहु समतुल्ला जाव नरकंतप्पवायद्दहेचेव णारिकंतप्पवायद्दहेचेव । एवं एरन्नवएवासे दोपवायद्दहा प० बहु समतुल्ला जाव सुवन्न कूलप्पवायद्दहेचेव रुप्पकूलप्पवायद्दहेचेव । जंबूमंदर उत्त रेणं एरवएवासे दोपवायद्दहा प० बहुसमतुल्ला जाव रत्तप्पवायद्दहेचेव रत्तवइप्पवायद्द-हेचेव॥ जंबूमंदर दाहिणेणं भरहेवासे दो महानईओ प० बहु समतुल्ला जाव गंगा चेव सिंधूचेव । एवं जहा पवायद्दहा एवं णइओ भाणियव्वाओ॥ एवं जहा एरवएवासे

भावार्थ क्षेत्र में हरिप्रपात और हरिकान्ता प्रपात नामक दो द्रह हैं. जम्बूद्वीप के मेरु से उत्तर दक्षिण दिशा में महा विदेह क्षेत्र में सीता प्रपात और सीतोदा प्रपात कुंड हैं. मेरु पर्वत से उत्तर दिशा में रम्यक् वर्ष क्षेत्र में नरकान्ता और नारीकान्ता प्रपात द्रह हैं. एरणवय क्षेत्र में सुवर्ण कूला और रुप्यकूला नामक दो प्रपात द्रह हैं. ऐरवत क्षेत्र में रक्ता और रक्तवती नामक प्रपात कुंड हैं. पूर्वोक्त सब प्रपात द्रह में से उसी नामकी

शब्दार्थ

सूत्र

भावार्थ

दृह ए० ऐसे ण०नदी भा०कहना ए० ऐसे ज० जैसे ए० ऐरवत क्षेत्र में दो० दोवडीनदी र०रक्ता र० रक्तवती ॥ १८ ॥ जं० जंबूद्वीप के भ० भरत ऐरवत में ती० अतीत उ० उत्सर्पिणी में सु० सुषम दुषमा स० काल में दो० दो सागरोपम को० क्रोडा क्रोडी का० काल हो० था ए० ऐसे इ० इस उ० अवसर्पिणी में जा० यावत् आ० आगामिक उ० उत्सर्पिणी में जा० यावत् भ० होगा जं० जंबूद्वीप के भ० भरत ऐरवत में ती० अतीत उ० उत्सर्पिणी में सु० सुषम काल में म०मनुष्य दो दोगाउ उ०ऊंचे उ०उंचाइ में हो०थे दो० दोपल्योपम प० उत्कृष्ट आ० आयुष्य पा० पाला ए० ऐसे इ० इस उ० अवसर्पिणी में जा० यावत् पा०

दो महानईओ प० बहु समतुल्लाओ जाव रत्ताचेव रत्तावईचेव ॥ १८ ॥

जंबूद्दीवे दीवे भरहेरवएसु वासेसु तीताए उसप्पिणीए सुसमदुसमाए समाए दो सगरोवम कोडाकोडीओ काले होत्था । एवमिमीसे उसप्पिणीए जाव प० एवं आगमिस्साए उसप्पिणीए जाव भविस्सइ । जंबूद्दीवेदीवे भरहेरवएसुवासेसु तीयाएउसप्पिणीए सुसमाए समाए मणुया दोगाउयाइं उड्ढं उच्चतेणं होत्था; दोन्नियपलिओवमाइं

नदियों अनुक्रमसे नीकलती हैं. अर्थात् भरत क्षेत्र में गंगा प्रपात में से गंगा और सिन्धुप्रपात में से सिन्धु वैसे ही अनुक्रम से सब नदियों का अधिकार जानना ॥ १८ ॥ भरत ऐरवत क्षेत्र में अतीत, अनागत और वर्तमान कालकी अवसर्पिणी में सुषम दुषम आरा दो क्रोडाक्रोडी सागरोपम का कहा है. उस में दोगाउ का

शब्दार्थ

पाला ए० ऐसे आ० आगामिक उ० उत्सर्पिणी में जा० यावत् पा० पालेंगे ॥ १९ ॥ जं० जंबूद्वीप के भ० भरत ऐरवत क्षेत्र में ए० एक समय में ए० एकयुग में दो० दो अरिहंतवंश उ० उत्पन्न हुवे उ० उत्पन्न होते हैं उ० उत्पन्न होंगे ए० ऐसे च० चक्रवर्तिवंश द० दशारवंश दो० दो अरिहंत उ० उत्पन्न हुवे उ० उत्पन्न होते हैं उ० उत्पन्न होवेंगे ए० ऐसे च० चक्रवर्ति ब० बलदेव वा० वासुदेव जा० यावत् उ० उत्पन्न होवेंगे ॥ २० ॥ जं० जंबूद्वीप के दो० दो कुरुक्षेत्र में म० मनुष्य स० सदा स० सुषमसुषमा उ०

सूत्र

परमाउं पालयित्ता; एवमिमीसे उसप्पिणीए जाव पालयित्ता । एवमागमिस्साए उसप्पिणीए जाव पालइस्संति ॥ १९ ॥ जंबूद्दीवेदीवे भरहेरएसुवासेसु एगसमए एगजुगे दो अरहंतवंसा उप्पज्जिंसु वा उप्पजंति वा उप्पाजिसंति वा । एवं चक्कवट्टिवंसा, दसारवंसा, ॥ जंबूभरहेरवए एगसमए दो अरिहंता उप्पज्जिंसु वा उप्पजंति वा उप्पज्जिस्संतिवा । एवं चक्कवट्टी एवं बलदेवा एवं वासुदेवा जाव उपज्जिस्संतिवा ॥ २० ॥

भावार्थ

ऊंचा और आयुष्य भी दो पल्योपम का होता है ॥ १९ ॥ इस जम्बूद्वीप में भरत और ऐरवत क्षेत्र में एक जुग में और एक ही समय में साथ ही अरिहंत, चक्रवर्ति, दसार राजाओं के वंश की उत्पत्ति गत काल में हुइ थी, वर्तमान काल में होरही है, और अनागत काल में होवेगी. वैसे ही एक समय में दो अरिहंत, चक्रवर्ती, बलदेव और वासुदेव उत्पन्न होते हैं. हुवे हैं और होवेंगे ॥ २० ॥ जम्बूद्वीप के देवकुरु और

शब्दार्थ

सूत्र

भावार्थ

उत्तम इ० ऋद्धिप्राप्त प० अनुभवते वि० विचरते हैं तं० वह ज० जैसे दे० देवकुरु उ० उत्तरकुरु में जं० जंबूद्वीप के दो० दोक्षेत्र में म० मनुष्य स० सदा सु० सुषम इ० ऋद्धिवाले प० अनुभवते वि० विचरते हैं ह० हरिवास र० रम्यकवास में हे० हेमवय ए० ऐरणवय ज० जंबूद्वीप के दो० दोक्षेत्र में म० मनुष्य स० सदा दु० दुषम सुषमा उ० उत्तम इ० ऋद्धिवाले प० अनुभवते वि० विचरते हैं तं० वह ज०

जंबू दोसु कुरासु मणुया सया सुसमसुस मुत्तम मिड्ढिपत्ता पच्चणुभवमाणा विहरंति तंजहा देवकुराएचेव उत्तरकुराएचेव । जंबूद्दीवे दीवे दोसुवासेसु मणुया सया सुसमुत्त ममिड्ढिपत्ता पच्चणुभवमाणा विहरंति तंजहा हरिवासेचेव रम्मगवासेचेव जंबू दोसुवासेसु मणुया सया सुसमदुसमुत्तम मिड्ढिपत्ता पच्चणुभवमाणा विहरंति तंजहा हेमवएचेव एरन्नवएचेव जंबूद्दीवे दीवे दोसु खित्तेसु मणुया सया दुसमसुसमुत्तम मिड्ढि पत्ता पच्चणुभवमाणा विहरंति तंजहा पुव्वविदेहेचेव अवरविदेहचेव जंबूदीवे दीवे दो-

उत्तर कुरु इन दोनों क्षेत्र में सदैव सुखमासुखम नामक पहिलाआरा जैसा भाव है, हरिवर्ष और रम्यक वर्ष क्षेत्र में सदैव सुखम नामक दूसरे आरे के भाव प्रवर्तते हैं. हेमवय और एरणवय क्षेत्र में सदैव सुषम दुषम नामक तीसरे आरेके भाव प्रवर्तते हैं पूर्व और पश्चिम विदेह क्षेत्र में सदैव दुषम सुषम नामक चौथा आरा

शब्दार्थ

जैसे पु० पूर्व विदेह अ० पश्चिम विदेह ज० जम्बूद्वीप के दो० दोक्षेत्र में म० मनुष्य छ० छहि का० काल को प० अनुभवते वि० विचरते हैं तं० वह ज० जैसे भ० भरत ए० ऐरवत ॥ २१ ॥ जं० जंबूद्वीप में दो० दो चंद्र प० प्रकाशे प० प्रकाशते हैं प० प्रकाशेंगे दो० दोसूर्य त० तपें त० तपते हैं त० तपेंगे दो० कृत्तिका रो० रोहिणी मि० मृगसर अ० आर्द्रा ए० ऐसे भा० कहना क० कृत्तिका रो० रोहिणी मि० मृगसर अ० आर्द्रा पु० पूनर्वसू पु० पुष्य त० तथा अ० अश्लेषा म० मघा दो० दो फाल्गुणी [१] ह०

सूत्र

सु वासेसु मणुया छव्विहंपि कालं पच्चणुब्भवमाणा विहरंति तंजहा भरहेचेव एरवएचेव ॥ २१ ॥ जंबूद्दीवे दोचंदा पभासिंसुवा पभासंतिवा पभासिस्संतिवा दोसूरिया तवइंसु वा, तवंतिवा, तविस्संति वा। दोकत्तियाओ, दोरोहिणीओ, दोमियसिराओ दो अद्दाओ एवं भाणियव्वं ॥ कत्तिय रोहिणि मियसिर। अद्दाय पुणव्वसूय पुस्सोय॥तत्तोवि अस्सलेसा। महाय दोफग्गुणीओय ॥१॥हत्थो चित्ता साईय। विसाहा होंति अणुराहा॥ जेट्ठा मूलो

भावार्थ

का भाव प्रवर्तता है. और भरत व ऐरवत क्षेत्र में छ आरेके भिन्न २ भाव प्रवर्तते हैं ॥ २१ ॥ जम्बूद्वीप में दो चंद्र प्रकाशते हैं, प्रकाशें और प्रकाशेंगे, वैसे ही दो सूर्य तपें, तपते हैं और तपेंगे. जम्बूद्वीप में दो कृत्तिका नक्षत्र, दो रोहिणी, दो मृगशर, दो आर्द्रा ऐसे ही पुनर्वसु, पुष्य, अश्लेषा, मघा, फाल्गुनी, हस्त, चित्रा, स्वाति, विशाखा, अनुराधा, ज्येष्ठा, मूल, पूर्वाषाढा, उत्तराषाढा, अभिजित श्रवण, धने-

शब्दार्थ

हस्त वि० चित्रा सा० स्वान्ति वि० विशाखा अ० अनुराधा जे० ज्येष्ठा मू० मूल पु० पूर्वाषाढा उ० उत्तराषाढा (२) अ० अभीजित स० श्रवण ध०धनेष्टा स० शतभिष दो० दो हैं भ० भाद्रपद रे० रेवती अ० अश्विनी स० भरणी णे० जानना अ० अनुक्रम से (३) ए० ऐसे गा० गाथानुसार से णा० जानना जा० यावत् दो० भरणी दो० अग्नि दो० दोप्रजापति सो० सोम रु० रुद्र आ० आदिति बृ० बृहस्पति स० सर्पि पि० पितर भा० भग अ० अर्यमा स० सविता त० त्वष्टा वा० वायु इ० इन्द्राग्नि मि० मित्र इ० इन्द्र नि० निर्ऋति आ० आप वि० विश्व ब्र० ब्रह्मा वि० विष्णु व० वसु व० वरुण अ० अज वि० विवृद्धि पु०

सूत्र

पुव्वाय। आसाढा उत्तराचेव ॥२॥ अभिइ सवण धणिट्ठा। सयभिसया दोय होंति भद्दवया॥ रेवइ अस्सिणि भरणी। णेयव्वा अणुपुव्वीए ॥३॥ एवं गाहानुसारेण णायव्वं जाव दो भरणीओ. दो अग्गी दोपयावई दोसोमा दोरुद्दा दोअइई दोबहस्सई दोसप्पी दोपिई दोभगा दोअज्जमा दोसविया दोतट्ठा दोवाऊ दो इंदग्गी दोमित्ता दोइंदा दोनिरई, दोआऊ; दोविस्सा, दोबम्हा, दोविण्हू, दोवसू, दोवरुणा, दोआया, दोविविद्धी,

भावार्थ

ष्टा, शतभिष, पूर्वाभाद्रपद, उत्तराभाद्रपद, रेवती, अश्विनी, और भरणी, यों सब के दो दो भेद जानना. अब ताराओं के स्वामी के नाम चलते हैं. अग्नि, प्रजापति, सोम, रुद्र, अदिती, बृहस्पति, सर्पि, पितर, भग, अर्यमा, सविता, त्वष्टा, वायु, इंद्राग्नि, मित्र, इंद्र, निर्ऋति, आप, विश्व, ब्रह्मा, विष्णु, वसु,

शब्दार्थ पुष्य अ० अश्वि य० यम इ० अंगारक वि० व्याल लो० लोहिताक्ष स० शनैश्चर आ० आहुनिक पा० प्राहुनिक क० कण क० कनक क० कनकनक क० कनकवितान क० कनकसंतानक सो० सोम स० सहित अ० अश्वासन क० कज्जोवग क०कर्बट अ० अयस्ककर दु० दुंदुभक सं० शंख सं० शंखवर्ण सं० शंख वर्णभा कं० कंस कं० कंसवर्ण कं० कंसवर्णभा रू० रूपी रू० रूपाभास नी० नील नी० नीलाभास भा० भस्म भ० भस्मरासी ति० तिल ति० तिलपुष्पवर्ण द० दक द० दक पंचवर्ण का० काक का० काकवंध्या

सूत्र दोपुरस्सा दोअस्सा, दोयमा, दोइंगालगा, दोवियालगा दोलोहियक्खा दोसणिंचरा दो आहुणिया दोपाहुणिया दोकणा दोकणगा दोकणकणगा दो कणगवियाणगा दोकणगसंताणगा, दोसोमा दोसहिया, दोआसासणा दोकज्जोवगा, दोकव्वडगा, दोअयकरगा, दोदुंदुभगा, दोसंखा दोसंखवन्ना, दोसंखवन्नाभा, दोकंसा दोकंसवन्ना दोकंसवन्नाभा दोरुप्पी, दोरुप्पाभासा, दोनीला दोनीलाभासा, दोभासा दोभासरासी, दोतिला, दोतिलपुप्फवन्ना दोदगा, दोदगपंचवण्णा, दोकाका दोकायवंज्झा, दोइंदग्गी दोधूमकेऊ दोहरी

भावार्थ वरुण, अज, विवृद्धि, पूषण, अश्वि. यम. इन सब के दो दो भेद. आगे ८८ ग्रह के नाम चलते हैं अंगारक, व्याल, लोहिताक्ष, शनैश्चर, आहुणिक, प्राहुणिक, कण, कनक, कनकनक, कनक वितान, कनकसंतानक, सोम, सहित, अश्वासन, कज्जोवग, कर्बट, अयस्कर, दुंदुभक, शंख, शंखवर्ण,

शब्दार्थ

इं० इन्द्राग्नि धू० धूमकेतु ह० हरि पिं० पिंगल बु० बुध शु० शुक्र व० बृहस्पति रा० राहु अ० अगस्ति मा० मानवक का० काश फा० स्पर्श धु०धुर प०प्रमुख वि०विकट वि० विसंधि नि० नियल प० पयिल ज० जटिलक अ० अरुण अ० अगिल का० काल म० महाकाल सो० स्वस्तिक सो० सौवस्तिक व० वर्द्धमान पु० पुष्यमानक अं० अंकुश प० प्रलम्ब नि० नित्यलोक नि० निसोदयित स० स्वयंप्रभ ओ० उसभ से० श्रेयंकर खे० क्षेमंकर आ० आभंकर प० प्रभंकर अ० अपराजित अ० अरज अ० अशोक वि०

सूत्र

दो पिंगला दोबुहा दोसुक्का दोबहस्सई दोराहू दोअगत्थी दोमाणवगा दोकासा दो फासा दोधुरा दो पमुहा दोवियडा दोविसंधी दोनियल्ला दोपइल्ला दोजडियाइल-गा, दोअरुणा, दोअग्गिला, दोकाला दोमहाकालगा दोसोत्थिया दोसोवत्थिया; दोघढ माणगा, दोपुसमाणगा, दोअंकुसा दोपलंबा, दोनिच्चालोगा दोनिच्चुज्जोया, दोसयंपभा दोओभासा, दोसेयंकरा, दोखेमंकरा दोआभंकरा दोपभंकरा, दो अपराजिया, दोअरया

भावार्थ

शंखवर्णाभ, कंस, कंसवर्ण, कंसवर्णाभ, रूपी, रुप्पाभास, नील, नीलाभास, भस्म, भस्मराशि, तिल तिल-पुष्पवर्ण, दक, दकपंचवर्ण, काक, काकवंज्झ, इंद्राग्नि, धूमकेतू, हरि, पिंगल, बुध, शुक्र, बृहस्पति, राहु, अगस्ति, माणवक, कास, स्पर्श, धुर, प्रमुख, विकट, विसंधि, नियल, पइल, जरितालक, अरुण, अ-गिल, काल, महाकाल, स्वस्तिक, सौवस्तिक, वर्धमान (पुष्यमानक और अंकुश) प्रलंब नित्यलोक, नित्योदयित,

शब्दार्थ

विगतशोक वि० विमल वि० विमुख वि० विंतत वि० विप्रस्त वि० विशाल सा० शाल मु० मुक्तक अ० अनिवर्तक ए० एकजटी दु० द्विजटी क० करकरीक रा० राजगल पु० पुष्यकेतु भा० भावकेतु ॥ २२ ॥ जं० जंबूपीप की वे० वेदिका दो० दोगाउ उ० ऊंची उ० ऊंचपने ल० लवण समुद्र दो० दोलक्ष योजन च० चक्रवाल वि० पहोला ला० लवण समुद्र की वेदिका दो० दोगाउ उ० ऊंची उ० ऊंचपने ॥ २३ ॥

सूत्र

दोअसोगा दोविगयसोगा दोविमला दोविमुहा दोवितत्ता दोवितत्था दोविसाला दोसाला दोसुव्वया दोअणियट्टीदोएगजडी दादुजडी दोकरकरिगा दोरायलग्गा दोपुप्फकेऊदोभावकेऊ ॥१२॥जंबूद्दीवस्सणं दीवस्स वेइया दोगाउआइं उड्ढं उच्चत्तेणं प० लवणेणं समुद्दे दो जोयणसयसहस्साइं चक्कवालविक्खंभेण प० लवणस्सणंसमुद्दस्स वेइया दोगाउआइं उड्ढं उच्चत्तेणं प० ॥२३॥ धायईखंडे णं दीवे पुरत्थिमद्धेणं मंदरस्स पव्वयस्स उत्तरदा-

भावार्थ

स्वयंप्रभ, उभस, श्रेयस्कर, खेमंकर, आभंकर, प्रभंकर, अपराजित, अरज, अशोक, विगत शोक, विमल, विमल वितत, विप्रस्त, विशाल, शाल, मुक्तक, अनीवर्त, एकजटी, द्वीजटी, करकरिक, राजगल, पुष्यकेतु, और भाव केतु इन अठासी गृहों के दो २ भेद जानना ॥ २२ ॥ जम्बूद्वीप की जुगति (कोट) आठ योजन का ऊंचा है उस पर दो कोश की वेदिका है. जम्बूद्वीप की चारों तरफ लवण समुद्र नामक समुद्र दो लाख योजन का चौडा है और उस के कोटकी वेदिका भी दो कोश की ऊंची है ॥ २३ ॥ धातकीखंड द्वीप

शब्दार्थ

धा० धात की खंडके पु० पूर्वअर्धभाग में मं० मेरुपर्वत की उ० उत्तर दक्षिण में दो० दो क्षेत्र ब० बहु तुल्य जा० यावत् भ०भरत ऐ० ऐरवत ऐ० ऐसे ज०जैसे जं०जम्बूद्वीप में त०तैसे ए०यहां भा०कहना जा० यावत् दो० दो क्षेत्र में म० मनुष्य छ० छ का० काल को प० अनुभवते वि० विचरते हैं तं० वह ज० जैसे म० भरत में ऐ० ऐरवत में ण० विशेष कू० कूटशामली वृक्ष धा० धातकीवृक्ष दे० देव ग०गरुडदेव वे० वेणुदेव सु०दर्शनदेव धा०धातकी खंडमें प०पश्चिम अर्धभागमें मं०मेरुपर्वतकी उ०उत्तर दक्षिणमें दो०दो क्षेत्र

सूत्र

हिणेणं दो वासा प० बहुसमतुल्ला जाव भरहेचेव, ऐरवएचेव एवं जहा जंबूदीवे तहा एत्थ भाणियव्वं जाव दोसु वासेसु मणुया छविहंपि कालं पच्चणुभवमाणा विहरंति तंजहा भरहेचेव ऐरवएचेव णवरं कूडसामलीचेव धायईरुक्खेचेवदेवा गरुलेचेव वेणुदेवे सुदंसणेचेव धायईखंड दीवपच्छिमद्धे मंदरस्स पव्वयस्स उत्तरदाहिणेणं दो वासा

भावार्थ

की पूर्व दिशा में मेरु पर्वत से उत्तर और दक्षिण दिशा में परस्पर सरिखे भरत और ऐरवत नामक दो क्षेत्र हैं. जैसा जम्बूद्वीप का अधिकार कहा वैसा ही यहां सब अधिकार कहना. इन दोनों क्षेत्रों में छ आरा का भाव वर्तता है. इतना विशेष है कि यहां पर देवकुरु क्षेत्र में कुटसामलि वृक्ष है जिस पर गरुड नामक देवता का निवास स्थान है और उत्तर कुरु में धातकी वृक्ष है जिस पर वेणुदेव अपर नाम सुदर्शन देव का निवास स्थान है. धातकी खंड की पश्चिम में मेरु पर्वत से उत्तर और दक्षिण दिशा में

शब्दार्थ

व० बहु तुल्य जा० यावत् भ० भरत ए० ऐरवत जा० यावत् छ० छ का० काल को प० अनुभवते वि० विचरतेहैं ण० विशेष कू० कूट शामली वृक्ष म० महा धातकी वृक्ष दे० देव ग० गरुड वे० वेणुदेव पि० प्रियदर्शन धा० धात की खंडके प० पश्चिम अर्धभाग में मं० मेरुपर्वत के धा० धातकी खंडद्वीप में दो० दो भ० भरत ए० ऐरवत हि० हिमवन्त ऐ० ऐरण्णवय ह० हरिवास र० रम्यकवास पु० पूर्वविदेह अ० पश्चिम विदेह दे० देवकुरु के दे० देवकुरु महावृक्ष दे० देवकुरु महावृक्ष के देव उ० उत्तर कुरु के उ० उत्तर कुरुवृक्ष के म०

सूत्र

प० बहुसमतुल्ला जाव भरहेचेव एरवएचेव । जाव छव्विहंपि कालं पच्चणुभवमाणा विहरंति। णवरं कूडसामलीचेव महाधायईरुक्खेचेव देवा गरुलेचेव वेणुदेवे पियदंसणेचेव धायईखंडपच्छिमद्धे मंदरस्स पव्वयस्स धायईखंडेणं दीवे दोभरहाइं दोएरवयाइं दोहि मवंताइं दोएरण्णवयाइं दोहरिवासाइं दोरम्मगवासाइं दो पुव्वविदेहाइं दोअवरविदेहाइं

भावार्थ

परस्पर सरिखे भरत और ऐरवत नामक दो क्षेत्र हैं वहां पर छ आरों के भाव वर्तते हैं. मात्र इतना विशेष हैं कि इस के देवकुरुक्षेत्र में कूट सामली वृक्ष जिस पर गरुड नामक देव रहते हैं और उत्तर कुरु में महा धातकी वृक्ष है वहां पर वेणुदेव अपर नाम प्रीति दर्शन देव हैं. धातकी खंड द्विप में दो भरत दो ऐरवत, दो हेमवय, दो ऐरणवय, दो हरिवर्ष, दो रम्यक् वर्ष, दो पूर्व महा विदेह, दो पश्चिम महा विदेह, दो देव कुरु, और दो उत्तर कुरु है, दो देव कुरु नाम वृक्षों रत्नमय व शाश्वते हैं और उस में

शब्दार्थ

सूत्र

भावार्थ

वडेवृक्ष उ० उत्तरकुरु महा वृक्ष के दे० देवता चु० चूलहेमवन्त म० महाहेमवन्त नि० निषढ नी० नीलवन्त रु० रूपी सि०शिखरी स०शब्दापाति स०शब्दापाति देव वि०विकटापाति वि०विकटापाति के प०प्रभास देव गं०गंधापाति गं० गंधापाति के अ०अरुण देव मा०मालवंत पर्याय मा० मालवंत के प० पद्मदेव मा०मालवंत चि० चित्रकूट प० पद्मवरकूट न० नलिन कूट ए० एकशैल ति० त्रिकूट वे० वेसमण कूट अं० अंजना

दोदेवकुराओ दोदेवकुरुमहदुमा दोदेवकुरुमहदुमावासा देवा दोउत्तरकुराओ दोउत्तरकुरु महदुमाओ दोउत्तरकुरुमहदुमावासा देवा, दोचुल्लहिमवंता दोमहाहिमवंता दोनिसहा, दोनीलवंता दोरुप्पी दोसिहरी दोसद्दावई दोसद्दावईवासीसाइ देवा दोवियडावई दोवियडावई वासी पभासीदेवा दोगंधावई दोगंधावईवासी अरुणादेवा दोमालवंतपरियागा दोमाल वंत परियागावासी पउमादेवा दोमालवंता दोचित्तकूडा दो पाउमकुडा दोनलिनकूडा

देवता रहते है. और भी वहां दो उत्तर कुरु हैं दो उत्तर कुरु नामक वृक्ष हैं और वहां रहनेवालेदो देवों हैं. दो चूलहिमवन्त, दो महाहिमवन्त, दो निषध, दो नीलवंत, दो रूपी, दो शिखरी, दो शब्दापाति नामक वैताढ और उस के वासी दो स्वाति नामक देवता, दो विकटापाति वैताढ और उस के वासी दो पद्म नामक देव, दो मालवन्त और दो गजदंत, दो चित्रकूट, दो पद्मकूट, दो नलिनकूट, दो एकशैल, दो त्रिकूट दो वैश्रमणकूट, दो अंजनकूट, और दो मातंजन पर्वत हैं. दो सोमनस, दो विद्युत्प्रभ, दो अंकावती नगरी,

शब्दार्थ मा० मातंजन सो० सोमनस वि०विद्युत्प्रभ अं० अंकावती प० पद्मावती आ० आसीविषा सु०सुखवाहक चं० चंद्र पर्वत सू० सूर्य पर्वत णा० नाग के पर्वत दे० देवताके पर्वत गं० गंधमादन उ० इषुकार चु० चुलहेमवन्त कूट वे० वैश्रमण कूट म० महाहेमवन्त कूट वे० वेरुलीय कूट नि०निषढ कूट रु० रुचक कूट नी० नीलवंत कूट उ० उपदर्शन कुट रु० रूपी कूट मं० मणिकंचन कूट सि० शिखरी कूट ति० तिगिच्छ

सूत्र दो एगसेला दोतिकुडा दोवेसमणकूडा दोअंजणा दोमातंजणा दोसोमणसा देविज्जुप्पभा दो अंकावई दोपम्हावई दोआसीविसा दोसुहावहा दोचंदपव्वया दोसूरपव्वया दोणागप व्वया दोदेवपव्वया दोगंधमायणा दोउसुगारपव्वया दोचुल्लहिमवंतकूडा दोवेसमणकूडा दोमहाहिमवंतकूडा दोवेरुलियकूडा दोनिसहकूडा दोरुयगकूडा दोनीलवंतकूडा; दोउवदंसणकूडा, दोरुप्पिकूडा, दोमणिकंचणकूडा, दोसिहरिकूडा, दोतिगिच्छिकूडा,

भावार्थ दो पद्मावती नगरी, दो आशीविषा, दो सुखावहा, दो चंद्र पर्वत, दो सूर्य पर्वत, दो नाग पर्वत, दो देव पर्वत, दो गंधमादन, गजदंता. ये सब उत्तरकुरु के पश्चिम भाग में धातकी खंड की पूर्वार्ध और पश्चिमार्ध रहे हुवे हैं. इसलिये दो दो कहलाये गये हैं. धातकी खंड के उत्तर और दक्षिण ऐसे दो भाग करने वाले दो इषुकार नामक पर्वत हैं, दो चुलहेमवन्त पर्वत के कूट, दो वैश्रमण पर्वत के कूट, दो महाहिमवंत पर्वत के कूट, दो वैडूर्यकूट, दो निषध पर्वत के कूट. दो रुचक के कूट, दो नीलवन्त के कूट, दो उपदर्शन

शब्दार्थ

प० पद्मद्रह प० पद्मद्रह में वा० रहने वाली देवी सि० श्री म० महापद्मद्रह म० महापद्मद्रहमें वा० रहने वाली देवी हि०ही ए०ऐसे जा० यावत् पुं० पुंडरीकद्रह पुं० पुंडरीकद्रह की देवी ल०लक्ष्मी गं०गंगाप्रपातद्रह जा० यावत् र० रक्तवती प्रपातद्रह रो० रोहिता जा० यावत् रु० रूपकूला गा०गाहावती द० द्रहवती पं०पंकावती त० तप्तजला उ०उन्मत्तजला खी०क्षीरोदासा०सिंहश्रोता अ०अन्तवाहिनी उ०उर्मिमालिनी जला फे०फेनमा-

सूत्र

दोपउमपवहा, दोपउमदहवासिणीओ सिरिओ देवीओ, दोमहापउमद्दहा, दोमहापउमद्दहवासिणीओ हिरीओ एवं जाव दोपुंडरीयद्दहा, दोपुंडरीयद्दहवासिणीओ लच्छीओ देवीओ, दोगंगप्पवायद्दहा, जाव दोरत्तवईपवायद्दहा, दोरोहियाओ, जाव दो रुप्पकूला; दोगाहावईओ दोद्दहवईओ, दोपंकवईओ, दोतत्तजलाओ दोमत्तजलाओ, दोउम्मत्तजलाओ, दोखीरोयाओ दोसीहसोयाओ, दोअंतोवाहिणीओ,

भावार्थ

कूट, दो रुप्यकूट, दो मणि कंचन कूट, दो शिखरी कूट, दो तिगिच्छ कूट, दो पद्मद्रह, दो पद्मद्रह की श्री देवियां, दो महा पद्मद्रह, दो महा पद्मद्रह में रहनेवाली ही देवियां, ऐसे ही पुंडरीकद्रह, पुंडरीकद्रह में रहनेवाली लक्ष्मी देवता तक कहना. दो गंगा प्रपात द्रह यावत् दो रक्तवतीद्रह, दो रोहिता नदी यावत् दो रूपकूला नदी, दो गाहवती नदी, दो द्रहवती नदी, दो पंकवती, दो तप्तजला, दो उन्मत्तजला, दो क्षारोदा, दो सिंहश्रोता, दो अन्तवाहिनी, दो उर्मिमालिनी, दो फेनमालिनी, और दो गंभीरमालिनी नदी. दो

शब्दार्थ

लिनी गं० गंभीर मालिनी क० कच्छ सु० सुकच्छ म० महाकच्छ क० कच्छगावती आ० आवर्त मं० मंगलावर्त पु० पुष्कल पु० पुष्कलावती प० वच्छ सु० सुवच्छ म० महावच्छ व०वच्छगावती र० रम्य र० रम्यक र०रमणिक मं० मंगलावती प० पद्म सु० सुपद्म म० महापद्म प०पद्मावती सं० संखावती न० नलिना कु० कुमुदा न० नलिनावती व० वप्रा सु०सुवप्रा म० महावप्रा व०वप्रगावती व० वल्गु सु० सुवल्गु ग० गंधिला गं०गंधिलावती खे०क्षेमा खे०क्षेमपुरा रि०रिष्ट रि०रिष्टपुरा ख०खड्गी मं० मंजूसा ओ०औषधि पुं०पुंडरीकिनी

सूत्र

दोउम्मिमालिणीओ, दोफेणमालिणीओ दोगंभीरमालिणीओ, दोकच्छा, दोसुकच्छा, दो महाकच्छा, दोकच्छगावई, दोआवत्ता दोमंगलावत्ता दोपुक्खला दोपुक्खलावई दोवच्छा दोसुवच्छा, दोमहावच्छा दोवच्छगावई दोरम्मा, दोरम्मगा, दोरमणिज्जा, दोमंगलावई, दोपम्हा, दोसुपम्हा, दोमहापम्हा, दोपम्हगावई, दोसंखा, दोनलिणा, दोकुमुदा, दोनलिणावई, दोवप्पा दोसुवप्पा दोमहावप्पा दोवप्पगावई दोवग्गु दोसुवग्गु दोगंधिला दोगंधिलावई

भावार्थ

कच्छ विजय, ऐसे ही सुकच्छ विजय, और महा कच्छ विजय. कच्छगावति, आवर्ता, मंगलावर्ता, पुष्कला, पुष्कलावती, वच्छा, सुवच्छा, महावच्छा, वच्छगावती, रम्मा, रम्मगा, रमणिज्जा, मंगलावती, पद्मा, सुपद्मा, पम्हगावती, शंखा, नलीना, कुमुदा, नलिनावती, वप्रा, सुवप्रा, महावप्रा, वप्रगावती, वल्गु, सुवल्गु, गंधिला और गंधिलावती के दो दो भेद जानना. अब राजधानी के दो दो भेद बताते हैं. खेमा, खेमपुरा, रिष्ट

शब्दार्थ

सु० सुसीमा कुं० कुंडला अ०अपराजिता प०प्रभंकरा अं०अंकावती प० पद्मावती सु० सुभा र०रत्नसंचया आ० आसपुरा सी० सिंहपुरी म० महापुरी वि०विजयपुरी अ० अपराजिता अ०अपराया अ०अशोका वि० विगत शोका वि० विजया वि०विजयन्ता ज०जयन्ता अ०अपराजिता च०चक्रपुरा ख०खड्गपुरा अ०अवंध्या आ० अयोध्या भ० भद्रशालवन णं० नंदनवन सो० सोमनसवन पं० पंडकवन पं० पांडुबलशिला र० रक्त

सूत्र

दोखेमाओ दोखेमपुराओ दोरिट्ठाओ दोरिट्ठपुराओ दोखग्गीओ दोमंजूसाओ दोओसहीओ दोपुंडरीगिणीओ दोसुसीमाओ दोकुंडलाओ दोअपराइयाओ दोपभंकराओ दोअंकावईओ दोपम्हावईओ दोसुभाओ दोरयणसंचयाओ दोआसपुराओ दोसीहपुराओ दोमहापुराओ दोविजयपुराओ दो अवराजियाओ दोअवराओ दोअसोयाओ दोविगयसोगाओ दोविजयाओ दोवेजयंतीओ दोजयंतीओ दोअपराजियाओ दोचक्कपुराओ दोखग्गपुराओ दोअवज्झाओ दोआओज्झाओ । दोभद्दसालवणा दोणंदणवणा दोसोमणसवणा दोपंडगवणा

भावार्थ

रिष्टपुर, खड्गी, मंजूसा, औषधि, पुंडरीकिणि, सुसिमा, कुंडला, अपराजिता, पभंकरा, अंकावती, पद्मावती, शुभा, रत्नसंचया, आसपुरा, सिंहपुरी, महापुरी, विजयपुरी, अपराजिता, अपराया, अशोका, विगत शोका, विजया, वैजयंती, जयंती, अपराजिता, चक्रपुरा, खड्गपुरा, अवंध्या, और अयोध्या यों सब के दो बोल कहना. धातकी खंड में दो मेरु पर्वत हैं इसलिये दो भद्रशालवन, दो नंदनवन, दो सोमनसवन, दो

शब्दार्थ

बलशिला अ० अतिपांडु कंबलशिला र० रक्तकंबलशिला अ० अतिरक्त कंबलशिला मं० मेरु मे० मेरुकी चूलिका धा० धातकी खंडकी वे० वेदिका दो० दोगाउ उ० ऊंची उ० ऊंचपने का० कालोदधि समुद्र की वे० वेदिका दो० दोगाउ उ० ऊंची उ० ऊंचपने पु० पुष्करार्ध के पु० पूर्वके अर्धभाग में मं० मेरुकी उ० उत्तर दक्षिण में दो० दोक्षेत्र ब० बहु तुल्य जा० यावत् भ० भरत ए० ऐरवत जा० यावत् दो० दोकुरु प० कहे दे० देवकुरु

सूत्र

दोपांडुकंबलसिलाओदोअतिपांडु कंबलशिलाओदोरत्तकंबलसिलाओदोअइरत्तकंबलसिला ओ,दोमंदरा दोमंदरस्स चूलियाओ।धायइखंडस्सणं दीवस्स वेइया दो गाउयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं प० कालोदस्स णं समुद्दस्सवेइया दोगाउयाइं उड्ढं उच्चत्तेण प० पुक्खरवरदीवड्ढपुरच्छिमड्ढेणं मंदरस्स पव्वयस्स उत्तरदाहिणेणं दोवासा प० बहु समतुल्ला जाव भरहेचेव एरवएचेव जाव दो कुराओ पण्णत्ताओ देवकुरचेव उत्तरकुराचेव । तत्थणं दोमहतिमहालया

भावार्थ

पंडकवन, दों पांडुकंबल शीला,दो अति पांडुकंबलशिला दो रक्तवंतबलशिला और दो अतिरक्तवन्त बलशिलाए हैं. दो मेरुपर्वत हैं. मेरु पर्वत की दो चूलिका हैं. धातकी खंडकी वेदिका दो कोशकी ऊंची है वैसे ही कालोदधि समुद्र की वेदिका दो कोश की ऊंची है. पुष्करार्ध द्वीप के पूर्व के आधे विभाग में मेरु पर्वत की उत्तर और दक्षिण दिशा में परस्पर समतुल्य भरत और ऐरवत नामक क्षेत्र हैं. वैसे सब अधिकार धातकी खंड जैसे दो देव कुरु और उत्तरकुरु तक कहना. वहां पर दो बडे वृक्ष हैं कूट सामली वृक्ष तथा पद्म वृक्ष दोनों

उ० उत्तरकुरु त० तहां दो० दो म० बडे म० मनोहर म० बडेवृक्ष कू० कूटसामली प० पद्म वृक्ष दे० देव ग० गरुड वे० वेणुदेव प० पद्म जा० यावत् छ० छह का० काल को प० अनुभवते वि० विचरते हैं पु० पुष्करार्ध की प० पश्चिमार्ध में मं० मेरुकी उ० उत्तर दक्षिण में दो० दोक्षेत्र कू० कूटसामली म० महापद्म वृक्ष दे० देव ग० गरुड वे० वेणुदेव पु० पुंडरीक पु० पुष्करार्ध में दो० दोभरत ए० ऐरवत जा० यावत् मं० मेरु मं० मेरुकी चूलिका पु० पुष्करार्ध की वे० वेदिका दो० दोगाउ उ० ऊची उ० ऊंचपने स०

महद्दुमा प० तं० कूडसामलीचेव पउमरुक्खेचेव. देवा गरुलेचेव वेणुदेवे पउमेचेव. जाव छव्विहंपिकालं पच्चणुभवमाणा विहरंति । पुक्खरवरदविद्ध पच्चत्थिमद्धेणं मंदरस्स पव्वय रस उत्तरदाहिणेणं दोवासा प० तं० तहेव णाणत्तं कूडसामलीचेव महापउमरुक्खेचेव देवा गरुलेचेव वेणुदेवे पुंडरीएचेव पुक्खरवरदीवद्धेणं दो भरहाइं दोएरवयाइं जाव दोमंदरा दोमंदरचूलियाओ पुक्खरवरस्सणं दीवस्स वेइया दोगाउयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं

वृक्ष पर गरुड देवता और वेणु देव अपर नाम पद्म देव रहते हैं. यावत् छ आरे के सुख दुःख भोगते हैं. पुष्करार्ध द्वीप के पश्चिम के आधे भाग में मेरु पर्वत की उत्तर दक्षिण में दो क्षेत्र, कूटसामली वृक्ष, दो महा पद्म वृक्ष, गरुड देव और वेणुदेव. अपरनाम पुंडरीक देव. पुष्करार्ध द्वीप में दो भरत, दो ऐरवत, यावत् दो मेरु पर्वत दो मेरु पर्वत की चूलिका तक का सब अधिकार धातकी खंड जैसे कहदेना. पुष्करवर

शब्दार्थ

सर्व दी० द्वीप समुद्र की वे० वेदिका दो० दोगाउ उ० ऊंची उ० ऊंचपने प० कही ॥ २४ ॥ दो० दो अ० असुरकुमार के इन्द्र च० चमरेन्द्र ब० बलेन्द्र दो० दोनागकुमार के इन्द्र ध० धरणेन्द्र भू० भूतानेन्द्र दो० सुवर्ण कुमारके दो इन्द्र वे० वेणु देव वे०वेणुदाल वि०विद्युतकुमार के इन्द्र ह० हरिकान्त इन्द्र ह०हरिसिंहेन्द्र अ० अग्निकुमार के इन्द्र अ०अग्निशिखा अ० अग्निमानव दी० द्वीपकुमार के इन्द्र पु० पूर्णेन्द्र व० वशिष्ठेन्द्र उ० उदधिकुमार के इन्द्र ज० जलकान्त ज० जलप्रभ दि० दिशाकुमार के इन्द्र अ० अमितगती

सूत्र

प० सव्वेसिं पिणं दीवसमुद्दाणं वेइयाओ दोगाउयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं पण्णत्ताओ ॥ २४ ॥

दो असुरकुमारिंदा प० तं० चमरेचेव बलीचेव । दोनागकुमारिंदा प० तं० धरणेचेव भूयाणंदेचेव दोसुवण्णकुमारिंदा प० तं० वेणुदेवेचेव वेणुदालीचेव दोविज्जुकुमारिंदा प० तं० हरीचेव हरिस्सहेचेव । दोअग्गिकुमारिंदा प० तं० अग्गिसिहेचेव अग्गिमाणवेचेव । दोदीवकुमारिंदा प० तं० पुण्णेचेव वसिट्ठेचेव । दो उदधिकुमारिंदा प० तं०

भावार्थ

द्वीप की वेदिका दो गाऊकी ऊंची हैं ऐसे ही सब द्वीप समुद्रकी वेदिका का अधिकार जानना ॥ २४ ॥ असुर कुमार के दो इन्द्र, चमरेन्द्र और बलेन्द्र, नाग कुमार के दो इन्द्र धरणेन्द्र भूतानेन्द्र, सुवर्ण कुमार के दो इन्द्र वेणुदेव वेणुदाल, विद्युतकुमार के दो इन्द्र हरिकान्त हरिसिंह, अग्नि कुमार के दो इन्द्र अग्नि शिखा अग्नि मानव, द्वीप कुमार के दो इन्द्र पूर्ण और वशिष्ठ, उदधिकुमार के दो इन्द्र जलकान्त, जलप्रभ, दिशि

अ० अमितवाहन वा० वायुकुमार के इन्द्र वे० वेलंबेन्द्र प० प्रभंजनेन्द्र थ० स्थनित कुमार के इन्द्र घो० घोष म० महाघोष पि० पिशाच के इन्द्र का० काल म० महाकाल भू० भूतके इन्द्र सु० सुरूप प० प्रतिरूप ज० यक्ष के इन्द्र पु० पूर्ण भद्र म० मणिभद्र र० राक्षस केइन्द्र भी० भीम म० महाभीम कि० किन्नरके इन्द्र कि० किन्नर किं० किंपुरुष किं० किंपुरुष के इन्द्र स० सत्पुरुष म० महापुरुष म० महोरग के इन्द्र अ० अ० अतिकाय म० महाकाय गं० गांधर्व के इन्द्र गी० गीतरत गी० गीतजस अ० आनपन्निके दो इन्द्र

जलकंतेचेव जलप्पभेचेव । दोदिसाकुमारिंदा प० तं० अमियगईचेव अमियवाहणेचेव । दोवाउकुमारिंदा प० तं० वेलंबेचेव पभंजणेचेव दोथणियकुमारिंदा प० तं० घोसेचेव महाघोसेचेव । दोपिसायइंदा प० तं० कालेचेव महाकालेचेव । दोभूयइंदा प०तं० सुरूवेचेव पडिरूवेचेव । दो जक्खिंदा प० तं० पुण्णभद्देचेव माणिभद्देचेव । दो रक्खासिंदा प०तं०भीमेचेव महाभीमेचेव । दोकिन्नरिंदा प० तं० किन्नरे

कुमार के दो इन्द्र अमितगती अमितवाहन, वायु कुमारके दो इन्द्र वेलंब प्रभंजन, स्थनित कुमारके दो इन्द्र घोष और महाघोष ये दशनिकाय के मिलकर २० भूवनपति के इन्द्र जानना. पिशाचके दोइन्द्र काल और महाकाल, भूतके दोइन्द्र सुरूप प्रतिरूप यक्ष के दो इन्द्र पूर्ण भद्र मणिभद्र, राक्षस के दो इन्द्र भीम और महा भीम. किन्नर के दो इन्द्र किन्नर और किंपुरुष; किंपुरुष के दो इन्द्र सुपुरुष महापुरुष, महोरग के दो इन्द्र

शब्दार्थ

स० सन्निक स० समानेन्द्र प० पाणपन्निके इन्द्र धा० धात वि० विधात इ० इसिवाइ के इन्द्र इ० इसि इ० इसिबाल भू० भूतवाइ के इन्द्र इ० ईश्वर म० महेश्वर कं० कंदियके दो इन्द्र सु० सुवच्छेन्द्र वि० विशालेन्द्र म० महाकंदय के इन्द्र हा० हासेन्द्र हा० हासरति कुं० कंभडके इन्द्र से० श्वेत म० महाश्वेत प० पयंगदेव के इन्द्र प० पतंग प० पतंगपति जो० ज्योती दे० देवताके दो० दोइन्द्र चं० चंद्र सू० सूर्य सो० सौधर्म

सूत्र

चेव किंपुरिसेचेव दोकिंपुरिसिंदा प० तं० सप्पुरिसेचेव महापुरिसेचेव । दोमहोरगिंदा प० तं० अइकोयचेव महाकायेचेव । दोगंधव्विंदा प० तं० गीयरईचेव गीयजसचेव दोअणपन्निंदा प० तं० संनिहिएचेव समाणेचेव । दोपणपन्निंदा प० तं० धाएचेव विधाएचेव । दोइसिवाइंदा प० तं० इसिचेव इसिबालेचेव । दोभूयवाइंदा प० तं० ईसरेचेव महेसरेचेव दोकंदिंदा प० तं० सुवण्णे (वत्थ) चेव विसालेचेव दोमहाकं

भावार्थ

आतिकाय महाकाय, गंधर्व के दो इन्द्र गीतरति गीतयश, आणपन्नी के दो इन्द्र सन्निक समान, पाणपन्नी के दो इन्द्र धाती विधाती इसीवाय के दो इन्द्र इसी, इसिबाल, भूतवाइ के दो इन्द्र ईश्वर, महेश्वर कंदीय के दो इन्द्र सुवच्छ विशाल, महा कंदीयके दो इन्द्र हास हासरती, कुंभड के दो इन्द्र श्वेत महाश्वेत पतंग के दो इन्द्र पतंग पतंग पति, यह सोलह व्यंतर के बत्तीस इन्द्र हुवे, ज्योतिषी देवके दो इन्द्र चन्द्रमा और सूर्य, सौधर्म और इशान देव-

शब्दार्थ

सूत्र

भावार्थ

ई० ईशान क० कल्प में दो० दोइन्द्र स० शक्रेन्द्र इ० इशानेन्द्र ए० ऐसे स० सनत् कुमार म० माहेन्द्र क० कल्प में दो० दोइन्द्र स० सनत् कुमार म० माहेन्द्र बं० ब्रह्मलोक लं० लन्तक के दो इन्द्र बं० ब्रह्मेन्द्र ल० लन्तकेन्द्र म० महाशुक्र स० सहस्रार क० कल्प में दो० दोइन्द्र म० महाशुक्र स० सहस्रार आ० आनत पा० प्राणत अ० आरण अ० अच्युत क० कल्प में दो० दोइन्द्र पा० प्राणत अ० अच्युत ॥ २५ ॥

दिंदा प० तं० हासेचेव हासरईचेव दोकुंभडिंदा प० तं० सेएचेव महासेएचेव दोपय गिंदा प० तं० पयएचेव पयगवईचेव ॥ जोइसियाणं देवाणं दोइंदा प० तं० चंदेचेव सूरेचेव ॥ सोहम्मीसाणेसुणं कप्पेसु दोइंदा प० तं० सुक्केचेव इसाणेचेव एवं सणंकुमारमाहिंदेसु कप्पेसु दोइंदा प० तं० सणंकुमारेचेव माहिंदेचेव बंभलोयलंतगे दोइंदा प० तं० बंभेचेव लंतएचेव महासुक्क सहस्सारेसुणं कप्पेसु दोइंदा प० तं० महा सुक्केचेव सहस्सारेचेव आणयपाणयारणच्चुतेसुणं कप्पेसु दोइंदा प० तं० पाणएचेव अच्चुएचेव । २५ ।

लोकमें दो इन्द्र शक्रेन्द्र और इशानेन्द्र ऐसे ही सनत्कुमार और माहिन्द्रमें दो इन्द्र सनत्कुमारेन्द्र और महेन्द्र, ब्रह्मदेवलोक और लंतक में दो इन्द्र ब्रह्मेन्द्र और लांतकेंद्र महाशुक्र और सहस्रार नामक देवलोक में दोइंद्र महा शुक्रेंद्र और सहस्रारेंद्र आनत, प्राणत आरण और अच्युत देवालोकमें दोइंद्र प्राणेंतद्र और अच्युतेंद्र यह सब मिलकर इंद्र के ६४ नाम हुवे. ॥ २५ ॥ महाशुक्र और सहस्रार नामक देवलोक के विमान पीले और

शब्दार्थ

म० महाशुक्र स० सहस्रार क० कल्प में वि० विमान दु० दोवर्ण के प० प्ररूपा हा० पीला सु० श्वेतवर्ण के गे० ग्रिवेक के दे० देवता दो० दोहांथ उ० ऊंचे उ० ऊंचपने प० प्ररूपा ॥ २६ ॥ +

स० समय आ० आवलीका जी० जीव अ० अजीव प० फरमाते हैं आ० श्वासोश्वास थो० थोव जी०

सूत्र

महासुक्क सहस्सारेसुणं कप्पेसु विमाणा दुवण्णा प० तं० हालिद्दाचेव सुक्किलाचेव गेवि जगाणं देवाणं देरयणीओ उड्ढं उच्चत्तेणं पन्नत्ता॥ २६॥इतिबियठाणस्सतइओद्देसो सम्मत्तो समयाइवा आवलियाइवा जीवाइवा अजीवाइवा पवुच्चइ । आणापाणूइवा थोवाइवा

भावार्थ

श्वेत ऐसे दो रंग के हैं. और नव ग्रैवेयक के देवता की ऊंचाइ दो हाथ की है. यह दूसरा ठाणा का तीसरा उद्देशा पूर्ण हुवा. + +

जीव और अजीव पर कालका भाव सदैव प्रवर्तता है उस कालका अत्यंत सूक्ष्म भेद को समय कहते हैं. असंख्यात समय की एक आवलिका [शिघ्रता से अंगूली पर दोरा लपेटते एक आंटा आवे उतना काल होता है] संख्यात [४४४६ झाझेरी] आवलिकाका एक श्वासो श्वास. सात श्वासोश्वास का एक थोव (क्षण) सात थोव की एक लव. ७७ लव अथवा ३७७३ श्वासोश्वास का एक मुहूर्त, तीस मुहूर्त की एक अहो रात्रि, पंदरह अहो रात्रि का एकपक्ष, दो पक्ष का एक मास, दो मास की एक ऋतु, तीन ऋतु की एक अयन, दो अयन का एक संवत्सर, पांच

शब्दार्थ

जीव अ० अजीव प० फरमाया ख० क्षण ल० लव जी० जीव अ० अजीव प० फरमाया ए० ऐसे मु० मुहूर्त अ० अहोरात्रि प० पक्ष मा० मास उ० ऋतु अ० अयन सं० संवत्सर जु० युग वा० सोवर्ष वा० सहस्रवर्ष वा० लक्ष सहस्रवर्ष वा० क्रोडवर्ष पु० पूर्वांग पु० पूरव तु० त्रूटितांग तु० त्रूटित अ० अडडांग अ०

सूत्र

जीवाइवा अजीवाइवा पवुच्चइ । खणाइवा लवाइवा जीवाइवा अजीवाइवा पवुच्चइ । एवं मुहुत्ताइवा, अहोरत्ताइवा, पक्खाइवा, मासाइवा, उऊइवा, अयणाइवा, संवच्छराइवा, जुगाइवा, वाससयाइवा, वाससहस्साइवा, वाससयसहस्साइवा, वासकोडाइवा, पुव्वंगाइवा, पुव्वाइवा, तुडियंगाइवा, तुडियाइवा, अडडंगाइवा, अड-

भावार्थ

संवत्सर का एक युग, बीस युगका के सो वर्ष, दश सो का एक हजार वर्ष, सो हजार का लाख, सो लाख का क्रोड, चौरासी लाख वर्ष का एक पूर्वांग, चौरासी लाख पूर्वांग का एक पूरव, चौरासी लाख पूरव का एक त्रूटितांग, चौरासी लाख त्रूटितांग का एक त्रूटित, चौरासी लाख त्रूटित का एक अडडांग, चौरासी लाख अडडांग का एक अडड होवे, चौरासी लाख अडड का अपपांग, चौरासी लाख अपपांग का एक अपपात, चौरासी लाख अपपातका एक हूहूतांग और चौरासी लाख हूहूतांग का एक हूहूत, चौरासी लाख हूहूतका एक उत्पलांग चौरासी लाख उत्पलांग का एक उत्पल, चौरासी लाख उत्पल का एक पद्मांग चौरासी लाख पद्मांग का एक पद्म, चौरासी लाख पद्म का एक नलिनांग, चौरासी लाख नलिनांगकों एक

शब्दार्थ

अडड अ० अववांग अ० अवव हू० हूहूअंग हू० हूहू उ० उपलांग उ० उपल प० पद्मांग प० पद्म ण० नलीनांग ण० नलीन अ० अक्षरनिकुरांग अ० अक्षरनीकुर अ० अयुतांग अ० अयुत ण० नियुतांग ण०

सूत्र

डाइवा, अववंगाइवा, अववाइवा, हूहूअंगाइवा, हूहूयाइवा, उप्पलंगाइवा, उप्पलाइवा, पउमंगाइवा, पउमाइवा, णलिणंगाइवा, णलिणाइवा, अत्थणिउरंगाइवा अत्थणिउराइवा, अउअंगाइवा, अउआइवा, णउअंगाइवा, णउआइवा पउअंगाइवा, पउयाइवा, चूलिअंगाइवा, चूलियाइवा, सीसप्पहेलिअंगाइवा, सीसप्पहेलियाइवा, पलिओवमा-

भावार्थ

नलीन, चौरासी लाख नलिन का एक अक्षर निकुरांग, चौरासी लाख अक्षर निकुरांग का एक अक्षर निकुर, चौरासी लाख अक्षर निकुर का एक अयुतांग, चौरासी लाख अयुतांग का एक अयुत, चौरासी लाख अयुत का एक नियुतांग और चौरासी लाख नियुतांग से नियुत होवे, चौरासी लाख नियुत का प्रयुतांग और चौरासी लाख प्रयुतांग का एक प्रयुत, चौरासी लाख प्रयुत का एक चूलिकांग, और चौरासी लाख चूलिकांग की एक चूलिका, चौरासी लाख चूलिका का एक शीर्षप्रहेलिकांग और चौरासी लाख शीर्षप्रहेलिकांग का एक शीर्ष प्रहेलिका ऐसे १९४ अंकतक संख्या है. यह व्यवहारिक संख्याता कालका प्रमाण शीर्ष प्रहेलिकातक रहाहुवा है. आगे असंख्याता काल रहाहुवा है परंतु व्यवहार में समझ में नहीं आने से उपमित कहागया है. चार कोश के लंबे चौडे कूवे में देव कुरु उत्तर कुरु जुगलीयें के सात

शब्दार्थ

नियुत प० प्रयुतांग प० प्रयुत चू० चूलीकांग चू० चूलीका सी० शीर्षप्रहेली अंग शीर्ष प्रहेली प० पल्यो पम सा० सामरोपम उ० उत्सर्पिणी अ० अवसर्पिणी जी० जीव अजीव प० फरमाया ॥ १ ॥ गा० गांव ण० नगर नि० निगम रा० राजधानी खे० खेड क० कर्वट मं० मंडप दो० द्रोणमुख प० पाटन आ०

सूत्र

इवा, सागरोवमाइवा, उस्सप्पिणीइवा, ओस्साप्पिणीइवा, जीवाइवा अजीवाइवा, पवुच्चइ ॥ १ ॥ गामाइवा, णगराइवा, निगमाइवा, रायहाणीइवा, खेडाइवा, कव्वडाइवा, मंडवाइवा, दोणमुहाइवा, पट्टणाइवा, आगराइवा, आसमाइवा, संवाहाइवा, सं-

भावार्थ

दिन के बच्चे के बालाग्र के अत्यंत सूक्ष्म खण्ड कर उसे भरे फीर सो सो वर्ष में एक २ बाल निकालते वह कूवा खाली होजावे उतने वर्ष की संख्या को एक पल्योपम कहते हैं. दश क्रोडाक्रोडी पल्योपम का एक सागरोपम, दश कोडाकोडी सागरोपम का एक उत्सर्पिणी काल और दश कोडकोडी सागरोपम का एक अवसर्पिणी काल यों बीस कोडाकोडी सागरोपम का एक काल चक्र. यह समय से लगाकर कालचक्रतक का काल जीव अजीव दोनों में प्रवर्तता हैं ॥ १ ॥ काल जैसे ग्रामादिक में भी जीव और अजीव यह दोनों बोल रहेहुवे हैं. राजादिक का जहां कर (हांसल) लगे सो गांव जहां कर न लगे सो नगर, जहां बहुत वैश्य रहते होवे सो निगम, जहां राजा का राज्याभिषेक होता होवे सो राजधानी, जहां धूलका कोट होवे सो खेड, कुनगर सो कर्वट, चारों दिशि में बहुत दूर २ गांव होवे सो मंडप, जहां जलस्थलका

शब्दार्थ आकर आ० आश्रम सं० संबाह सं० संनिवेश घो० घोष आ० आराम उ० उद्यान व० वन व० वनखन्ड वा० वापी पु० पुष्करणी स० सरोवर स० सरपंक्ति अ० कूवा त० तलाव द० द्रह ण० नदी पु० पृथ्वी उ० उदधि वा० वायुस्कन्ध उ० आकाशान्तर व० वलय वि० विग्रह दी० द्वीप स० समुद्र वे० वेल वे०

सूत्र निवेसाइवा, घोसाइवा, आरामाइवा, उज्जाणाइवा, वणाइवा, वणखंडाइवा, वावीइवा, पुक्खरणीइवा, सराइवा सरपंतियाइवा, अगडाइवा, तडागाइवा, दहाइवा, णदीइवा पुढवीइवा, उदहीइवा, वातखंधाइवा, उवासंतराइवा, वलयाइवा, विगाहाइवा, दीवाइवा,

भावार्थ मार्ग होवे सो द्रोह मुख, जहां अच्छी २ वस्तुओं उत्पन्न होवे सो पाटण, जहां लोहादिक की खान होवे सो आकर, जहां तीर्थस्थान होता होवे सो आश्रम जहां समभूमि होवे सो संबह, जहां गोवालों की साति होवे सो सन्नीवेश, नदी के किनारे की पास रहे सो घोष, जहां वहुत प्रकारके वृक्ष होवें और स्त्री पुरुष क्रीडा करने को आते रहते होवे सो आराम, जो पुष्पादिक से सुशोभित होवे और वहां लोको गोठ (जिमणादि करे) सो उद्यान, जहां एक जाति के वहुत वृक्ष होवे सो वन, जहां वहुत प्रकारके वृक्ष होवे सो वनखंड, चौखुना जलस्थान होवे सो वापी, जहां वहुत कमलादि होवे सो पुष्करणी, थोडा जल होवे सो सरोवर, जहां वहुत सरोवर होवे सो सरपंक्ति, कूवा सो अगड, वहुत थोडा पानी जहां होवे सो तलाव, वहुत ऊंडा पानी होवे सो द्रह, वहुत पानी वहता होवे सो नदी; रत्नप्रभादि पृथ्वी, अथाग पानी जिस में

वेदिका दा० द्वार तो० तोरण णे० नारकी णे० नारकी का स्थान जा० यावत् वे० वैमानिक का स्थान क० कल्प क० कल्प का स्थान वा० क्षेत्र वा० वर्षधर पर्वत कू० कूट कू० कूट की गुफा वि० विजय रा० राजधानी जी० जीव अ० अजीव प० फरमायें ॥ २ ॥ छा० छाया आ० आतप जो० ज्योति अं०

समुद्दाइवा, वेलाइवा, वेइयाइवा, दाराइवा, तोरणाइवा, णेरइयाइवा, णेरइयावासाइवा जाव वेमाणियावासाइवा, कप्पाइवा, कप्पविमाणवासाइवा, वासाइवा, वासहरपव्वयाइवा कूडाइवा. कूडागारइवा. विजयाइवा. रायहाणीइवा. जीवाइवा अजविाइवापवुच्चइ ॥ २ ॥

होवे सो समुद्र, वायु का स्कंध सो घनवातादि, जहां सूक्ष्म पृथ्वी के जीव भरे हुवे हैं सो आकाशान्तर, पृथ्वी के घनोदधि घनवात के बंध को वलय कहते हैं, त्रस नाल में जीव रहे सो विग्रह, जम्बूद्वीप आदि द्वीप, लवण समुद्रादि समुद्र, समुद्र जलवेल चढे सो वेल, कोट की चारों तरफहोवे सो वेदिका, विजयादि द्वार द्वारपर के तोरण, नरकके जीवों सो नारकी, नरक में नारकी को रहने का स्थान सो नरकावासा, यावत् वैमानिक देवताओं को रहने का स्थान को वैमानिक वास कहते हैं और देव लोक को कल्प कहते हैं और उस में रहने का स्थान को कल्पविमान वास कहते हैं. भरतादि क्षेत्र, क्षेत्र की मर्यादा करनेवाला वर्ष धरादि पर्वत, पर्वत के शिखर सो कूट, पर्वतोंकी गुफा सो कुटागार और वहां पर देवताओंका निवास स्थान होता है. कच्छ महाकच्छादिक विजय, जहां राजा रहे सो क्षेमादिक राजधानी, उक्त सब पदार्थों जीव और अजीव करके संयुक्त होते हैं ॥ २ ॥ शरीर वृक्षादिक की छाया, सूर्यादिक का आतप, इत्यादिक की,

शब्दार्थ

अन्धकार ओ० अवमान प० प्रमाण उ० उन्मान अ० प्रवेश उ० उद्यान अ० अवलिम्ब स० संनीप्रपात जी० जीव अ० अजीव प० फरमाया ॥ ३ ॥ दो० दोराशि प० प्ररूपी तं० वह जी० जीवराशि अ० अजीवराशि दु० दोप्रकार का बंध पे० रागबन्ध दो० द्वेषबन्ध जी० जीव दो० दोस्थान से पा० पापकर्म

सूत्र

छायाइवा आतवाइवा जोसिणाइवा अंधकाराइवा ओमाणाइवा पमाणाइवा उम्माणाइवा अतिताणगिहाइवा उज्जाणगिहाइवा अवलिंवाइवा सणिप्पवायाइवा जीवाइवा अजीवाइवा पवुच्चइ ॥ ३ ॥ दोरासी प० तं० जीवरासीचेव अजीवरासीचेव । दुविहे बंधे प० तं० पेज्जबंधेचेव दोसबंधेचेव जीवा णं दोहिं ठाणेहिं पावकम्मं बंधइ तं० रागेण

भावार्थ

कान्ति, रात्रि आदि का अंधकार, क्षेत्रादिक का अवमान, हाथ गज वेंत वगैरह प्रमाण; शेर मन वगैरह उन्मान, गृह नगर आदिका प्रवेश, बगीचे आदि के बंगले सो उद्यान गृह; अवलिम्ब सो देश विशेष और पानी आदि का प्रपात स्थान वगैरह जीव और अजीव ये दोनों से व्याप्त होते हैं ॥ ३ ॥ श्री भगवंतने जीव राशि और अजीव राशि ऐसी दो राशि कही हैं. दो प्रकार का बंध–माया और लोभ रूप राग बंधन और क्रोध मान रूप द्वेष बंधन. जीव दो स्थानक से पाप का बंध करते हैं राग से और द्वेष से पाप का बंध करते हैं. बंधे हुवे पाप की जीव दो प्रकार से उदीरणा[1] करते हैं १ स्ववशपना से तपश्चरण

१ उदय का अवसर आये विना कर्मों को उदय में लाना उसे उदीरणा कहते हैं.

शब्दार्थ

बं० बांधता है रा० रागसे दे० द्वेषसे जी० जावे दो० दो० दोस्थान से पा० पापकर्म उ० उदीरता है अ० आध्यात्मिक वे० वेदना उ० उपक्रान्तकर वे० वेदना ए० ऐसे वे० वेदता है ए० ऐसे णि० निर्जरता है अ० आध्यात्मिक वे० वेदना उ० उपक्रान्तकर वे० वेदना दो० दोस्थान से आ० आत्मा स० शरीरको फु० स्पर्शताहुवा णि० निर्जरताहै तं० वह दे० देशसे आ० आत्मा स० शरीरको फु० स्पर्शकर णि० निर्जरताहै स० सर्वसे स० शरीरको फु० स्पर्श कर णि० निर्जरता है ए० ऐसे फु० फोडकर ए० ऐसे सं० संकोचकर नि०

सूत्र

चेव दोसेणचेव । जीवाणं दोहिं ठाणेहिं पावकम्मं उदीरेइ तं० अब्भोवगमियाएचेव वेयणाए उवक्कमियाएचेव वेयणाए एवं वेदेंति एवं णिज्जरेंति अब्भोवगमियाएचेव वेयणाए उवक्कमियाएचेव वेयणाए दोहिं ठाणेहिं आया सरीरं फुसित्ताणं णिज्जाति तं० देसेणवि आया सरीरं फुसित्ताणं णिज्जाति सव्वेणवि आया सरीरं फुसित्ताणं णि-

भावार्थ

व केशलोचनादि काया क्लेश कर के पीडा भोगवे, और २ स्वभाव से उत्पन्न हुइ ज्वरादि वेदना को वेदे. इन दोनों कारणों से उदय आये हुवे कर्मों को वेदते हैं, उन का क्षय करते हैं. दो स्थानक से जीव शरीर को स्पर्श कर नीकलता है १ देश से पग प्रमुख अमुक अंगोपांग स्पर्श कर नीकले और सर्व से-सब शरीर का स्पर्श कर नीकले. ऐसे ही देश से और सर्व से ऐसे स्थानकों में फरक कर आत्मा नीकले उन को फोड कर आत्मा नीकले दो प्रकार से शरीर संकोच कर आत्मा नीकले इलीकाकी गति से धीरे२

शब्दार्थ

निवर्तकर दो० दोस्थान से आ० आत्मा के० केवली प० प्ररुपा ध० धर्म को ल० प्राप्तकरे स० सुन करके तं० वह ज० जैसे ख० क्षय से उ० उपशम से ए० ऐसे जा० यावत् म० मनः पर्यवज्ञान उ० प्राप्त करे तं० वह जै० जैसे ख० क्षय से उ० उपशम से ॥ ४ ॥ दु० दोप्रकारकी अ० काल की उ० उपमा प० पल्योपम सा० सागरोपम से० वह किं० क्यासा प० पल्योपम प० पल्योपम जं० जो जो०

सूत्र

जाति एवं फुरित्ताणं एवं फुडित्ताणं एवं संवट्टित्ताणं निव्वाट्टित्ताणं. दोहिं ठाणेहिं आया केवलिपन्नत्तं धम्मं लभेजा सवणयाए तंजहा खएणचेव उवसमेणचेव । एवं जाव मणपज्जवनाणं उप्पाडेजा तंजहा खएणचेव उवसमेणचेव ॥ ४ ॥ दुविहे अद्धोवमिये प० तं० पलिओवमेचेव सागरोवमेचेव । से किं तं पलिओवमे पलिओवमे जं जो

भावार्थ

आत्म प्रदेश नीकले सो देश से और गेंद की जैसे उछलकर आत्मा नीकले सो सर्व से. दो प्रकार से केवली भाषित धर्म को श्रवण कर प्राप्त करते हैं ज्ञानावरणीय और दर्शनावरणीय का क्षय और उपशमसे अन्यथा सुनने से भी धर्म की प्राप्ति नहीं हो सकती है ऐसे ही मति ज्ञान, श्रुतज्ञान, अवधि ज्ञान और मनःपर्यव ज्ञान दो प्रकार से प्राप्त कर सकते हैं. ज्ञानावरणीय के क्षय और उपशमसे ॥ ४ ॥ पल्योपम और सागरोपम ऐसी दो प्रकारक की कालकी उपमा श्री भगवन्तने फरमाइ है. शिष्य प्रश्न करता है कि है

शब्दार्थ

योजन वि० पहोला प० कूवा ए० एक से अधिक प० बढेहुवे हो० होवे णि० निरंतर णि० समूह भ० भरे बा० बालाग्र को० क्रोड वा० प्रत्येक सो वर्ष ए० एकेक अ० निकालते जो० जो का० काल सो० वह का० काल बो० जानना उ० उपमा ए० एक प० पल्योपम की ए० ऐसी प० पल्योपम को० क्रोडाक्रोडी ह० होवे द० दशगुणा तं० वह सा० सागरोपम ए० एक का भ० होवे प० परिमाण ॥ ५ ॥ दु० दोप्रकार के को० क्रोध

सूत्र

यणाविच्छिन्नं पल्लं एगाहियप्परूढाणं होज्ज निरंतराणिचिइं भरिइं बालाग्गकोडीणं ॥ १ ॥ वाससए वाससए एक्केके । अवहडंमि जोकालो ॥ सो कालो बोधव्वो । उवमा एगस्स पल्लस्स ॥ २ ॥ एतेसिं पल्लाणं कोडाकोडी हवेज्ज दसगुणिया । तं सागरोवमस्सउ एगस्सभवे परीमाणं ३ ॥ ५ ॥ दुविहे कोहे प० तं० आय पइट्ठिएचेव

भावार्थ

भगवन्! पल्योपम और सागरोपम की उपमा किस प्रकार है? गुरु उत्तर देते हैं कि एक योजन के औरस चौरस गोल और उंडेकूवे में एक दिन से लगाकर सात दिन के युगलिये के बच्चे के बालाग्र के अत्यंत सूक्ष्म टूकडे करके भरे और सो वर्ष में एक बालाग्र नीकालते २ जब वह कूवा खाली होजावे तो इतने वर्ष की संख्या को एक पल्योपम का परिमाण कहना. ऐसे दश क्रोडाक्रोडी पल्योपम जितना कालको एक सागरोपम का काल कहते हैं. यों प्रमाण से असंख्यात वर्ष के आयुष्य का परिमाण हैं ॥ ५ ॥ क्रोध

शब्दार्थ

आ० आत्मप्रतिष्ठ प० परप्रतिष्ठ ए० ऐसे णे० नारकी को जा० यावत् वे० वैमानिक को ए० ऐसे जा० यावत् मि० मिथ्यादर्शन शल्य ॥ ६ ॥ दो० दोप्रकार के सं० संसार को स० प्राप्त जी० जीव त० त्रस था० स्थावर दु० दोप्रकार के स० सर्वजीव सि० सिद्ध अ० असिद्ध स० सइन्द्रिय अ० अनिन्द्रिय ए० ऐसे ए० यह गा० गाथा का० कहना जा० यावत् स० शरीरी सि० सिद्ध स० सइन्द्रिय का० काया जो० योग वे० वेद क० कषाय ले० लेश्या णा० ज्ञान उ० उपयोग आ० आहार भा० भाषक च० चरम

सूत्र

परपइट्ठिएचेव एवं णेरइयाणं जाव वेमाणियाणं एवं जाव मिच्छादंसण सल्ले ॥ ६ ॥

दुविहा संसार समावन्नगा जीवा प० तं० तसाचेव थावराचेव दुविहा सव्वजीवा प० तं० सिद्धाचेव असिद्धाचेव । दुविहा सव्व जीवा प० तं० सइंदियाचेव आणिंदियाचेव । एवं एसा गाहा फासेयव्वा जाव सरीरीचेव असरीरीचेव॥ सिद्धसइंदियकाए जोगवेए क-

भावार्थ

दो प्रकार का कहा है आत्म प्रतिष्ठित सो आत्मा-स्वभाव से उत्पन्न होवे और परप्रतिष्ठित सो अन्य के वचन सुन कर उत्पन्न होवे. यह दोनों प्रकार का क्रोध नारकी आदि चौविस दंडक में जानना. ऐसे ही अठारह पाप स्थान यावत् मिथ्या दर्शन शल्य तक जानना ॥ ६ ॥ संसारी जीव दो प्रकार के कहे हैं. द्वीन्द्रियादिक त्रस और एकेन्द्रियादिक स्थावर अथवा सब जीवों के दो भेद. सब कर्मों का क्षय होना सो सिद्ध और जो मोक्ष में नहीं गये सो असिद्ध. सइन्द्रिय, आणिन्द्रिय इस तरह तेरह बोल कहना. १ सिद्ध,

शब्दार्थ

स० शरीरी ॥ ७ ॥ दो० दोमरण स० श्रमण भ० भगवान म० महावीरने स० श्रमण णि०निर्ग्रंथ के णो० नहीं णि० नित्य व० वर्णन कीये णो० नहीं नित्य की० कीर्ति की णो० नहीं णि० नित्य पू० पूजें णो० नहीं प० प्रशंसा की णो० नहीं णि० नित्य अ० आज्ञादी भ० होवे तं० वह व० वलय मरण व० वसट्ट इन्द्रिय वशसे मरण णि० निदान मरण त० तद्भव मरण गि० गिरिसे पडकरमरे त० वृक्षसें पडकर

सूत्र

साय लेसाय णाणुवओगाहारे भासग चरिमेय ससरीरी(१) ॥७॥ दो मरणाइं समणेणं भगवया महावीरेणं समणाणं णिग्गंथाणं णो णिच्चं वण्णियाइं णो णिच्चं कित्तियाइं णो णिच्चं पूइयाइं णो णिच्चं पसत्थाइं णो णिच्चं अब्भणुन्नाइं भवंति तं० वलयमरणेचेव वसट्टमरणेचेव । एवं णियाणमरणेचेव तब्भवमरणेचेव गिरिपडणेचेव तरुपडणेचेव

भावार्थ

असिद्ध, २ सइन्द्रिय अणिन्द्रिय, ३ सकायी अकायी, ४ सयोगी अयोगी, ५ सवेदी अवेदी, ६ सकषायी अकषायी, ७ सलेशी अलेशी, ८ सनाणी अनाणी, ९ ज्ञानोपयोगी दर्शनोपयोगी, १० आहारी अनाहारी; ११ भाषक अभाषक; १२ चरम अचरम और १३ शरीरी अशरीरी ॥ ७ ॥ शरीरी को दो मरण होते हैं इसलिये मरण का अधिकार कहते हैं. श्री श्रमण भगवंत महावीरने साधु निर्ग्रंथ को संयम से भ्रष्ट होकर मरना और इन्द्रियों के वश में पडकर मरना इन दोनों प्रकारके मरण को किसी प्रकार से अच्छे नहीं बतलाये हैं, आदरने को नहीं कहे हैं और उस के लिये आज्ञा भी दी नहीं है. वैसे ही ऋद्धि आदि का

शब्दार्थ

मरे ज० जल में डुबकर मरे ज०अग्निमें पडकरमरे वि० विषखाकरमरे स०शस्त्रसे घात करे दो०दोमरण जा० यावत् णो० नहीं णि० सदैव अ० आज्ञादी भ० होवे का० कारण से पु० फीर अ० मनाइ है वे० फांसीलेकर गि० गीधादिके मूखमें जाकर ॥ ८ ॥ दो० दोमरन स० श्रमण भ० भगवान म० महावीर

सूत्र

जलप्पवेसेचेव जलणप्पवेसेचेव विसभक्खणेचेव सत्थोवाडणेचेव । दो मरणाइं जाव णो णिच्चं अब्भणुन्नाइं भवंति कारणेणं पुण अप्पाडिकुट्ठाइं तं० वेहाणसेचेव गिद्धपिट्ठे चेव ॥ ८ ॥ दो मरणाइं समणेणं भगवया महावीरेणं समणाणं निग्गंथाणं णिच्चं व-

भावार्थ

नियाणा करके मरना, उसी भव के योग्य आयुष्य बांधकर मरना, पर्वत वृक्षादि से गिरकर मरना. पानी में प्रवेश कर मरना सो जलप्रवेश मरण, और अग्नि में प्रवेश कर मरना सो जलन प्रवेश मरण, विष खाकर मरना, शस्त्र कटारी प्रमुख से मरना, इत्यादि प्रकार के मरण सदैव साधु को अप्रशंसनीय है. परंतु ब्रह्मचर्य आदि पंच महाव्रतों का निर्वाह नहीं होता देखे तो फांसी लेकर मरना अथवा ऊंट आदि मरेहुवे जानवरों के कलेवर में प्रवेश कर मरना. इन मरणों की भगवानने आज्ञा दी नहीं है वैसे मनाइ भी नहीं की है इसलिये पूर्वोक्त कारण विना मरण करे नहीं क्यों कि विना कारण ये मरण भी खोटे हैं ॥ ८ ॥ दो प्रकारके

शब्दार्थ

ने स० श्रमण णि० निर्ग्रंथ के णि० नित्य व० वर्णवे जा० यावत् अ० आज्ञादी भ० है पा० पादोप-गमन भ० भक्तप्रत्याख्यान पा० पादोपगमन दु० दोप्रकार का णी० निहारण अ० अनिहारण नि०नियम अ० प्रतिक्रमण रहित भ० भक्तप्रत्याख्यान दु० दोप्रकारका णि०निहारण अ० अनिहारण णि० नियम स० प्रतिक्रमण सहित॥९॥ के० कैसा अ० यह लो० लोक जी० जीव अ०अजीव अ० अनंतलोक जी०जीव अ०

सूत्र

णियाइं जाव अब्भणुन्नाइं भवंति तंजहा पाओवगमणेचेव भत्तपच्चक्खाणेचेव । पाओवगमणे दुविहे प० तं० णीहारिमेचेव अणीहारिमेचेव णियमं अप्पडिकम्मे । भत्तपच्चक्खाणे दुविहे प० तं० णीहारिमेचेव अणीहारिमेचेव णियमं सप्पडिक्कम्मे ॥ ९ ॥

भावार्थ

मृत्यु को भगवन्तने अच्छा कहा है और उन को आचारने की आज्ञा भी दी है. वृक्ष की डाली काटने से जैसे नीचे चेष्टा रहित पडे वैसे पादपोपगमन और अशनादि चार या तीन आहार का त्याग करना सो भक्त प्रत्याख्यान पादपोपगमनके दो भेद नीहारण ग्राम में होता है उस के शरीर का नि-हारन (अग्नि संस्कारादि) होताहै और अनीहारण गिरिगुफा में जाकर करे. ऐसे ही भक्त प्रत्याख्यान के दो भेद कहना. इन दोनों मरण में से भक्त प्रत्याख्यान करनेवाले को गमनागमन क्रिया करनी पडती है इसलिये अवश्य प्रतिक्रमण करना पडता है और पादोपगमनवाले निष्क्रिय होने के कारण से उन को प्रतिक्रमण करने की कुच्छ भी जरूरत नहीं रहेती है ॥ ९ ॥ प्रश्न यह लोक कैसा है? उत्तर

शब्दार्थ

अजीव के० कैसा सा० शाश्वतलोक जी० जीव अ०अजीव ॥१०॥ दु०दोप्रकारके बो० बोधि णा०ज्ञानबोधि दं० दर्शन बोधि दु० दोप्रकार का बु० बुद्ध णा० ज्ञानबुद्ध दं० दर्शनबुद्ध ए० ऐसे मो० मोह मो० मूढ ॥ ११ ॥ णा० ज्ञानावरणीय क० कर्म दु० दोप्रकार का दे० देशसे ज्ञानावरणीय स० सर्व

सूत्र

के अयंलोए ? जीवच्चेव अजीवच्चेव अणंतालोए जीवच्चेव अजीवच्चेव के सासया लोए जीवच्चेव अजीवच्चेव ॥ १० ॥ दुविहा बोही प० तं० णाणबोहीचेव दंसणबोहीचेव। दुविहा बुद्धा प० तं० णाणबुद्धाचेव दंसणबुद्धाचेव एवं मोहे मूढा ॥ ११ ॥ णाणावरणीजे कम्मे दुविहे प० तं० देसणाणावरणीजेचेव सव्वणाणावरणीजेचेव दरिस

भावार्थ

जीव और अजीवादि षड्द्रव्यरूप लोक है। प्रश्न क्या लोक वह शाश्वत व अनंत है ? द्रव्यकी अपेक्षासे जीवाजीव षड्द्रव्यरूप लोक शाश्वत व अनंत है ॥१०॥ इन छ द्रव्योंमें से जीव द्रव्य बोधिकी प्राप्ति करे. उस के दो भेद ज्ञान की प्राप्ति और दर्शन की प्राप्ति. ज्ञान और दर्शन इन दोनों गुणों के धारक बुद्ध कहाते हैं. ऐसे ही मोह के दो भेद कहे हैं ज्ञान का आवरण सो ज्ञान मोह और दर्शन का आवरण सो दर्शन मोह. मोह में फसे हुवे लोकों मूढ कहलाते हैं उस के भी दो भेद. ज्ञान रहित और दर्शन रहित ॥ ११ ॥ ज्ञानावरणीयादिक कर्मों से मोह बंधावे इसलिये कर्मों के भेद कहते हैं. ज्ञानावरणीय के दो भेद १ मतिज्ञानादिक को ढकनेवाला देश ज्ञानावरणीय और केवलज्ञान को ढंकनेवाला सर्व ज्ञानावरणीय. दर्शनावरणीय कर्म के दो

शब्दार्थ

से ज्ञानावरणीय द० दर्शन ज्ञानावरणीय कर्म ए० ऐसे वे० वेदनीय कर्म दु० दोप्रकारका सा० सातावेदनीय अ० असाता वेदनीय मो० मोहनीय कर्म दु० दोप्रकार का दं० दर्शन मोहनीय चा० चारित्र मोहनीय आ० आयुष्यकर्म दु० दोप्रकार का अ० कायस्थिति भ० भवस्थिति णा० नाम कर्म दु० दोप्रकार का सु० शुभनाम अ० अशुभनाम गो० गोत्रकर्म दु० दोप्रकार उ० ऊंचगोत्र णी० नीचगोत्र अं० अंतराय कर्म दु० दोप्रकार

सूत्र

णावराणिजे कम्मे एवंचेव वेयणिजे कम्मे दुविहे प० तं० सायावेयणिजेचेव असाया वेयणिजेचेव मोहाणिजे कम्मे दुविहे प० तं० दंसणमोहणिजेचेव चरित्तमोहाणिजेचेव। आउकम्मे दुविहे प० तं० अद्धाउएचेव भवाउएचेव । णामकम्मे दुविहे प० तं० सुभणामेचेव असुभणामेचेव गोत्ते कम्मे दुविहे प० तं० उच्चागोएचेव णीयागोएचेव

भावार्थ

भेद १ देश से-चक्षु अचक्षु अवधि दर्शनादिक का आवरण, सर्व से केवल दर्शनावरण अथवा पांच निद्रादिक ऐसे ही वेदनी कर्म के दो भेद साता वेदनी सो सुख और असाता वेदनी सो दुःख मोहनी कर्म के दो भेद १ समकित मोहनी सम्यक्त्व का आवरण और २ चारित्र मोहनी चारित्र का आवरण. आयुष्य कर्म के दो भेद. अध्वायुष्य सो कायास्थितिरूप मनुष्य तिर्यंच को होवे और भवस्थितिरूप देवता नारकी को होवे. नाम कर्म दो प्रकारके शुभ नाम कर्म और अशुभ नाम कर्म. गोत्र कर्म के दो भेद ऊंचगोत्र सो पूजनीक और नीच गोत्र सो निंदनीक. अंतराय कर्म के दो भेद प्राप्त वस्तु का विनाश होना सो

शब्दार्थ

का प० उत्पन्न हुइ वि० नाशकरे पि० रुंधनकरे आ० आतीहुइ ॥ १२ ॥ दु० दोप्रकार की मु० मूच्छा पे० रागप्रत्ययिक दो० द्वेषप्रत्ययिक पे० रागप्रत्ययिक मूर्च्छा दु० दोप्रकार की मा० मान लो० लोभ दो० द्वेषप्रत्ययिक मूर्च्छा दु० दोप्रकार की को०क्रोध मा० मान ॥ १३ ॥ दु० दोप्रकार की आ०आराधना ध० धर्म आराधना के० केवली आराधना ध० धर्म आराधना दु० दोप्रकार की सु० सूत्रधर्म आराधना चा०

सूत्र

अंतराइए कम्मे दुविहे प० तं० पडुप्पण्णविणासिणेचेव पिहातियआगामिपहं ॥ १२ ॥

दुविहा मुच्छा प० तं० पेज्जवत्तियाचेव दोसवत्तियाचेव पेज्जवत्तिया मुच्छा दुविहा प० तं० माएचेव लोहेचेव दोसवत्तिया मुच्छा दुविहा प० तं० कोहेचेव माणेचेव ॥ १३ ॥ दुविहा आराहणा प० तं० धाम्मियाराहणाचेव केवलिआराहणाचेव । धम्मियाराहणा दुविहा प० तं० सुयधम्माराहणाचेव चरित्तधम्माराहणाचेव केवलिआ-

भावार्थ

प्रत्युत्पन्न विनाशी और आता हुवा लाभ को रुंधे सो विहित आगामि अंतराय ॥ १२ ॥ भगवंतने दो प्रकारकी मूर्च्छा कही है एक प्रेम से मूर्च्छा और दूसरी द्वेष से मूर्च्छा. प्रेमवर्तिक मूर्च्छा के दो भेद माया और लोभ, द्वेषवर्तिक मूर्च्छा के दो भेद क्रोध और मान ॥१३॥ आराधना दो प्रकारकी कही है. एक धर्म आराधना और दूसरी केवली आराधना. धर्म आराधना के दो भेद श्रुतधर्म की आराधना और चारित्र धर्म की आराधना. वैसे ही केवली आराधना के दो भेद क्षायिककेवलज्ञानी सर्व क्रिया क्षय कर मोक्ष में

चारित्रधर्म आराधना के० केवलिधर्म आराधना दु० दोप्रकार की अं० अन्तक्रिया क० कल्पविमानोत्पन्न ॥ १४॥ दो० दोतीर्थंकर नी० हरे रंग के स० प्राप्त मु० मुनिसुव्रत अ० अरिष्टनेमि दो० दोतीर्थंकर पि० पियंगुरंग के स० प्राप्त म० मल्लिनाथ पा० पार्श्वनाथ दो० दोतीर्थंकर प० पद्मगौर व० वर्णवाले प० पद्म प्रभु वा० वासुपुज्य दो० दोतीर्थंकर चं० चंद्र गौर वर्णवाले चं० चंद्रप्रभु पु० पुष्पदंत ॥ १५॥ स० सत्य

राहणा दुविहा प० तं० अंतकिरियाचेव कप्पविमाणोघवत्तियाचेव ॥ १४॥ दो तित्थयरा नीलुप्पलसमावन्नेणं प० तं० मुणिसुव्वएचेव अरिट्ठणेमीचेव । दो तित्थयरा पियंगुसमावण्णेणं प० तं० मल्लीचेव पासेचेव । दो तित्थगरा पउमगोरा वण्णेणं प० तं० पउमप्पहंचेव वासुपुज्जेचेव दो तित्थयरा चंदगोरा वण्णेणं प० तं० चंदप्पभेचेव पुप्फदंतेचेव ॥ १५ ॥ सच्चप्पवाय पुव्वस्सणं दुवे वत्थु पन्नत्ता पुव्वभद्दवया

जावे सो अंतक्रिया और क्षायोपशमिक श्रुत केवली नव ग्रैवेयक में या अनुत्तर विमान में उत्पन्न होते हैं सो कल्प विमानोववत्तिया ॥ १४ ॥ इस अवसर्पिणी कालके श्री मुनि सुव्रत और श्री अरिष्ट नेमी इन दोनों तीर्थंकरों का वर्ण नीलोत्पल कमल समान था, श्री मल्लीनाथ और श्री पार्श्वनाथ स्वामी का वर्ण पियंगु वृक्ष सम हरा था. श्री पद्म प्रभु और श्री वासुपूज्य इन दोनों का वर्ण कमल समान गौर वर्ण था श्री चंद्रप्रभ और श्री पुष्पदंत (श्री सुविधि नाथ) इन दोनों का वर्ण चंद्र समान गौर वर्ण (श्वेत) था, और अन्य सब तीर्थंकरों का वर्ण सुवर्ण समान पीला था ॥ १५ ॥ सत्य प्रवाद पूर्व के दो अध्ययन, पूर्व भाद्रपद

शब्दार्थ

मवादपूर्वके दु० दो अ० अध्याय प० प्ररूपा पु० पूर्वभाद्रपद नक्षत्र के दु० दोतारे उ० उत्तरभाद्रपद नक्षत्र के दु० दोतारे ए० ऐसे पु० पूर्वफाल्गुणी उ० उत्तर फाल्गुणी ॥ १६ ॥ अं० अंदर म० मनुष्य क्षेत्रकी दो० दोसमुद्र ल० लवणसमुद्र का० कालोदधिसमुद्र दो० दो चक्रवर्ति अ० विनात्यागे का० काम भोग को का० काल के अवसर में का० काल करके अ० नीचे स० सातमी पु० पृथ्वी में अ० अप्रतिष्ठान नरक में ने० नारकी पने उ० उत्पन्न हुवे तं० वह ज० जैसे सं० संभूम बं० ब्रह्मदत्त ॥ १७ ॥ अ० असुर

सूत्र

नक्खत्ते दुतारे प० उत्तरभद्दवया नक्खत्ते दुतारे प० एवं पुव्वफग्गुणी उत्तरफग्गुणी ॥ १६ ॥ अंतोणं मणुस्सखेत्तस्स दो समुद्दा प० तं० लवणेचेव कालोदेचेव दोचक्कवट्टी अपरिचत्तकामभोगा कालमासे कालंकिच्चा अहे सत्तमाए पुढवीए अप्पइट्ठाण नरए नेरइयत्ताए उववन्ना तं जहा संभूमेचेव बंभदत्तेचेव ॥१७॥ असुरिंद व-

भावार्थ

उत्तराभाद्रपद, पूर्वाफाल्गुनी और उत्तराफाल्गुनी इन नक्षत्रों के दो दो तारें हैं ॥ १६ ॥ अढाइ द्वीप मनुष्य क्षेत्र में दो समुद्र १ लवण समुद्र और २ कालोदधि समुद्र. इस अवसर्पिणी का आठवा संभूम और बारवा ब्रह्मदत्त चक्रवर्ती ये दोनों कामभोग का त्याग नहीं करने से आयुष्य पूर्ण करके अधोलोक में सातवी नरक के अप्रतिष्ठान नामक नरकावासा में तेतीस सागरोपम का आयुष्य बांध कर नेरिये हुवे ॥१७॥

शब्दार्थ

कुमार के इन्द्र को व० छोडकर भ० भुवनपति देव का दे०देशउणी दोपल्योपम की ठि०स्थिति सो० सौधर्म कल्पके दे०देवकी उ०उत्कृष्ट दो०दोसागरोपम ठि०स्थिति ई०इशान कल्पके दे०देवकी उ०उत्कृष्ट सा०कुच्छ अधिक दो०दोसागरोपम ठि०स्थिति स०सनत्कुमार कल्प के दे०देवकी ज०जघन्य दो०दोसागरोपमकी ठि० स्थिति मा० महेन्द्र कल्प के दे०देवकी ज० जघन्य सा० कुच्छअधिक दो०दोसागरोपम ठि० स्थिति ॥१८॥

सूत्र

जियाणं भवणवासीणं देवाणं देसूणाइं दोपलिओवमाइं ठिई प० सोहम्मे कप्पे देवाणं उक्कोसेणं दोसागरोवमाइं ठिई प० । ईसाणेकप्पे देवाणं उक्कोसेणं साइरेगाइं दोसागरोवमाइं ठिई प० सणंकुमारे कप्पे देवाणं जहन्नेणं दोसागरोवमाइं ठिई प० माहिंदे कप्पे देवाणं जहन्नेणं साइरेगाइं दोसागरोवमाइं ठिई प० ॥ १८ ॥ दोसु कप्पेसु

भावार्थ

दश जाति के भवनपति देवों में से असुर कुमार के इन्द्रों को छोड कर अन्य सब भवनपति देवों की उत्कृष्ट स्थिति देश उनी दो पल्योपम की प्रथम सुधर्म नामक देवताओं का उत्कृष्ट दो सागरोपम का आयुष्य, दूसरे इशान देवलोकके देवताकी स्थिति उत्कृष्टी साधिकदो सागरोपम, सनत्कुमार देवलोक के देवताकी जघन्य दो सागरोपम की स्थिति और महेन्द्र देवलोक के देवता की जघन्य साधिक दो सागरोपम की स्थिति है ॥ १८ ॥ सौधर्म और इशान इन दोनों देवलोक में ही देवलोक की स्त्री देवांगना की उत्पत्ति हैं.

शब्दार्थ

दो० दोकल्प में क० कल्पोत्पन्न स्त्रियों प० फरमाइ सो० सौधर्म देवलोक में ई० इशान देवलोक में दो० दोकल्पमें देव ते० तेजुलेश्या वाले सो० सौधर्म देवलोक में ई० इशान देवलोक में दो० दोकल्प में का० काया परिचारणा सो० सौधर्म इ० इशान में दो० दोकल्प में फा० स्पर्श परिचारणा स० सनत्कुमार म० महेन्द्र देवलोक में दो० दोकल्प में देव रू० रूपपरिचारणा ब० ब्रह्मदेवलोक लं० लंतकदेवलोक दो० दोकल्प में देव स० शब्द परिचारणा म० महाशुक्र स० सहस्रार में दो० दोइंद्र म० मनपरिचारणा पा०

सूत्र

कप्पत्थियाओ पण्णत्ताओ तं० सोहम्मेचेव ईसाणेचेव दोसु कप्पेसु देवा तेउलेस्सा प० तं० सोहम्मेचेव ईसाणेचेव दोसु कप्पेसु देवा कायपरियारगा प० तं० सोहम्मेचेव ईसाणेचेव दोसु कप्पेसु देवा फासपरियारगा प० तं० सणंकुमारेचेव महिंदेचेव दोसु कप्पेसु देवा रूवपरियारगा प० तं० बंभलोएचेव लंतएचेव । दोसु कप्पेसु देवा सद्दपरियारगा प० तं० महासुक्केचेव सहस्सारेचेव दो इंदा मणपरियारगा प० तं० पा

भावार्थ

और इन ही देवलोक में तेजुलेशा, है इन दोनों देवलोक के देवताओं मनुष्य की तरह काया से कामभोग का सेवन करते हैं. तीसरे सनत्कुमार और चौथे महेन्द्र देवलोक के देवताओं देवांगनाओं के शरीर को आलिंगन करके कामभोग सेवते हैं. पांचवां ब्रह्मदेवलोक और छठा लंतक इन दोनों देवलोकके देवताओं मात्र रूप देखकर भोग की तृप्ति करते हैं. महाशुक्र और सहस्रार देवलोक के देवताओं शब्द मात्र से

प्राणत अ० अच्युत ॥ १९ ॥ जी० जीवकी दु० दोस्थान से नि० निर्वर्तिक पो० पुद्गल को पा० पापकर्मपने चि० संचयकिया चि० संचय करता है चि० संचयकरेगा त० त्रसकाया का निर्वर्तिक था० स्थावर काया का निर्वर्तिक ए० ऐसे उ० उपचयकिया उ० उपचय करता है उ० उपचय करेगा बं० बांधा बं० बांधता है बं० बांधेगा उ० उदीरा उ० उदीरता है उ० उदीरेगा वे० वेदा वे० वेदता है वे० वेदेगा णि०

णएचेव अच्चुएचेव ॥ १९ ॥ जीवाणं दुट्ठाण निव्वत्तिए पोग्गले पावकम्मत्ताए चिणंसु वा चिणंति वा चिणिस्संति वा तंजहा तसकाय निव्वत्तिएचेव थावरकायानिव्वत्तिए चेव ॥ एवं उवाचिणंसु वा, उवचिणंति वा, उवाचिणिस्संति वा, बांधिंसु वा, बंधंति वा, बंधिस्संति वा; उदीरिंसुवा, उदीरंतिवा, उदीरिस्संति वा, वेदिंसुवा, वेदिंतिवा, वेदिस्संतिवा;

भोग सेवन करते हैं. नववां व दशवां देवलोक का १ प्राणतेन्द्र और इग्यारवां और बारवां देवलोक का अच्युतेन्द्र मन में ही देवांगनाका चिन्तवन करके कामभोग सेवते हैं ॥ १९ ॥ जीव त्रस और स्थावर में उत्पन्न होने जैसे कर्म इकठे करते हैं, किये और करेंगे, वैसे ही कर्मों का उपचय किया, करते हैं, करेंगे,

१. यहां पर दो दो का बोल चलने से मात्र दो इन्द्रही ग्रहण किये हैं परंतु नवमें दशवें अग्यारवें और बारवें देवलोक के सब देवताओं मात्र चिन्तवन से कामभोग का सेवन करते हैं.

शब्दार्थ

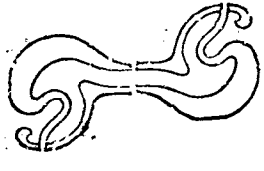
निर्जरा णि० निर्जरता है णि० निर्जरेगा ॥ २० ॥ दु० दोप्रदेशी खं० स्कन्ध अ० अनंत प० फरमाये दु० दोप्रदेश अवगाहे पुद्गल अ० अनंता प० फरमाये ए० ऐसे जा० यावत् दु० दोगुण रुक्ष पो० पुद्गल अ० अनंत प० फरमाये ॥ २१ ॥

सूत्र

णिज्जरिंसु, वा णिज्जरंति वा, णिज्जरिस्संति वा ॥ २० ॥ दुपएसिया खंधा अणंता पण्णत्ता दुपएसोगाढा पोग्गला अणंता पण्णंत्ता एवं जाव दुगुणलुक्खापोग्गला अणंता पण्णत्ता ॥ २१ ॥ इति बीयठाणस्स चउत्थोद्देसो सम्मत्तो इति बीयठाणं सम्मत्तं

भावार्थ

वैसे ही कर्मों का बंध, उदीरणा, वेदना और निर्जरा अतीत काल में की, वर्तमान में कर रहें हैं और आगामिक में करेंगे ॥ २० ॥ श्री भगवन्तने दो प्रदेशी स्कंध अनंत कहें हैं और दो प्रदेश को अवगाहकर रहनेवाले पुद्गल अनंते हैं ऐसे ही दो गुन काले यावत् दो गुन लुखे पुद्गल अनंत कहे हैं यह दूसरा स्थानक का चतुर्थ उद्देशा पूर्ण हुवा और दूसरा स्थानक भी समाप्त हुवा. आगे तीसरा स्थानक चलता है.



॥ तृतीय स्थानकम् ॥

शब्दार्थ

त० तीन इं० इन्द्र प० प्ररूपे तं० वह ज० जैसे णा० नामइन्द्र ठ० स्थापना इन्द्र द० द्रव्य इन्द्र त०तीन इं० इन्द्र णा० ज्ञानइन्द्र दं० दर्शन इन्द्र च०चारित्र इन्द्र त०तीन इन्द्र देवेन्द्र अ० असेन्द्र म० मनुष्य इन्द्र ॥ १ ॥ ति० तीनप्रकार की वि० विकुर्वणा प० फरमायी बा० बाह्य पुद्गल प० ग्रहणकर ए० एक विकुर्वणा

सूत्र

तओ इंदा पण्णत्ता तं जहा णामिंदे ठवणिंदे दव्विंदे तओ इंदा प० तं० णाणिंदे दंस णिंदे चरित्तिंदे तओ इंदा प० तं० देविंदे असुरिंदे मणुस्सिंदे ॥१॥ तिविहा विकुव्व णा प० तं० बाहिरए पोग्गले परियाइत्ता एगा विकुव्वणा बाहिरए पोग्गले अपरियाइत्ता

भावार्थ

श्री भगवन्तने तीन प्रकारके इन्द्र कहे हैं किसी मनुष्यादिक का नाम इन्द्र रखना सो नामेन्द्र, इन्द्र की प्रतिमा सो स्थापना इन्द्र, और जो जीव आगामिक काल में इन्द्र होवेंगे सो द्रव्य इन्द्र. और भी तीन प्रकारके इन्द्र, ज्ञानेन्द्र केवलज्ञान का धणि, दर्शनेन्द्र क्षायक समकित का धणि, और चारित्रेन्द्र यथाख्यात चारित्र का धणि. और भी तीन प्रकारके इन्द्र ज्योतिषी वैमानिक के इन्द्र सो देवेन्द्र, भवनपति व्यंतर के इन्द्र सो असुरेन्द्र और नरेन्द्र चक्रवर्त्यादि ॥ १ ॥ भगवंतने विकुर्वणा के तीन भेद कहे हैं. १ भवधारिणी [मूल शरीर जितना क्षेत्र अवगाह कर रहाहुवा है] उस क्षेत्र से बाहिर के पुद्गलों को वैक्रेय समुद्

शब्दार्थ

बा० बाह्य पुद्गल अ० विनाग्रहण कर ए० एकविकुर्वणा बा० बाह्य पुद्गल प० ग्रहणकर अ० विनाग्रहण कर ए० एकविकुर्वणा ति० तीनप्रकार की वि० विकुर्वणा अ० आभ्यंतर पुद्गल प० ग्रहणकर ए० एक विकुर्वणा अ० आभ्यन्तर पुद्गल अ० विनाग्रहणकर ए० एकविकुर्वणा अ० आभ्यन्तर पुद्गल प० ग्रहणकर अ० विनाग्रहणकर ए० एक विकुर्वणा ति० तीनँ प्रकार की विकुर्वणा बा० बाह्यआभ्यन्तर पुद्गल प०

सूत्र

एगाविकुव्वणा बाहिरए पोग्गले परियाइत्तावि अपरियाइत्तावि एगा विकुव्वणा तिविहा विउव्वणा प० तं० अब्भंतरए पोग्गले परियाइत्ता एगाविउव्वणा अब्भंतरए पोग्गले अपरियाइत्ता एगाविउव्वणा अब्भंतरए पोग्गले परियाइत्तावि अपरियाइत्तावि एगाविउव्वणा तिविहा विउव्वणा प० तं० बाहिरब्भंतरए पोग्गले परियाइत्ता एगा विउव्वणा बाहि-

भावार्थ

घात से ग्रहण करके नविन रूपों बनाना सो, अथवा २ बाह्य क्षेत्र के पुद्गलों को विना लिये मूल शरीर में से ही पुद्गलों ग्रहण करके विकुर्वणा करना ३ और बाह्य क्षेत्र में से कुच्छ और मूल शरीर में से कुच्छ पुद्गलों ग्रहण कर विकुर्वणा करना. और भी तीन प्रकारकी विकुर्वणा १ कितनेक भवधारिणी तथा उदारिक शरीर के अंदर के पुद्गलों को ग्रहण करके वैक्रेय करते हैं. २ कितनेक आभ्यंतर पुद्गलों विना ग्रहण किये वैक्रेय करते हैं और ३ कितनेक आभ्यंतर पुद्गलों में से कुच्छ ग्रहण कर और कुच्छ विना ग्रहण किये वैक्रेय करते हैं. और भी तीन प्रकार की विकुर्वणा कही है. १ बाह्य और आभ्यंतर पुद्गलों

शब्दार्थ

ग्रहणकर ए० एकविकुर्वणा बा० बाह्यआभ्यन्तर पुद्गल अ० विनाग्रहणकर ए० एक विकुर्वणा बा० बाह्य आभ्यन्तर पुद्गल प० ग्रहणकर अ० विनाग्रहणकर ए० एकविकुर्वणा ॥ २ ॥ वि० तीन प्रकार का ने० नारकी क० कतिसंचिता अ० अकतिसंचिता अ० अवक्तव्यगसंचिता ए० ऐसे ए० एकेन्द्रिय व० वर्ज्य जा० यावत् वे० वैमानिक ॥ ३ ॥ ति० तीन प्रकार की प० परिचारणा ए० कितनेक

सूत्र

रब्भंतरए पोग्गले अपरियाइत्ता एगाविउव्वणा बाहिरब्भंतरए पोग्गले परियाइत्तावि अपरियाइत्तावि एगाविउव्वणा ॥ २ ॥ तिविहा नेरइया प० तं० कतिसंचिया अकतिसंचिया अवत्तव्वगसंचिया एव मेगिंदियवजा जाव वेमाणिया ॥ ३ ॥ तिविहा परि-

भावार्थ

को ग्रहण करके वैक्रेय करे, २ बाह्य आभ्यंतर पुद्गलोंको विना ग्रहण किये वैक्रेय करे ३ बाह्य आभ्यंतर पुद्गलों को कुच्छ ग्रहण और कुच्छ विना ग्रहण किये वैक्रेय करे (तत्त्व केवलि गम्य) ॥ २ ॥ विकुर्वणा नारकी को भी होती है इसलिये नरकका अधिकार कहते हैं. चार स्थावरों में जीवों समय २ में असंख्यात उत्पन्न होते हैं और वनस्पति में समय २ में जीवों अनंते उत्पन्न होते हैं इसलिये एकेन्द्रिय के पांच दंडक को छोडकर १९ दंडक में जीवों संख्याते उत्पन्न होते हैं उन को कतिसंचिता कहना. समय २ में असंख्याते उत्पन्न होते हैं उन को अकतिसंचिता कहना और एक २ समय में एकेक अलग २ उत्पन्न होते हैं उन को अवक्तव्वग संचिता कहना ॥ ३ ॥ देवताओं मैथुन सेवन करनेकी परिचारना तीन प्रकार से कर-

शब्दार्थ

दे० देव अ० अन्यदेव को अ० अन्यदेव की दे० देवियों को अ० वशकर प० भोगते है अ० अपनी दे० देवियों को अ० वशकर प० भोगते हैं अ० स्वयं अ० स्वतः को वि० विकुर्वकर प० भोगते हैं ए० कितनेक देव णो० नहीं अ० अन्यदेवको णो० नहीं अ० अन्यदेव की दे०देवियोंको अ० वशकर प० भोगते हैं अ० अपनी दे० देवीको अ० वशकर प० भोगते हैं अ० स्वयं अ० स्वतः को वि० विकुर्वकर प० भोगते हैं ए० कितनेक देव णो० नहीं अ० अन्यदेव को णो० नहीं अन्यदेव की दे० देवियों को

सूत्र

यारगा प० तं० एगेदेवे अन्नेदेवे अन्नेसिं देवाणं देवीओय अभिजुंजिय २ परियारेइ अप्पणिजित्ताओ देवीओ अभिजुंजिय २ परियारेइ अप्पाणमेव अप्पाणं विउव्विय २ परियारेइ. एगेदेवे णोअन्नेदेवे णोअन्नेसिं देवाणं देवीओ अभिजुंजिय २ परियारेइ अप्पणिजित्ताओ देवीओ अभिजुंजिय २ परियारेइ अप्पाणमेव अप्पाणं विउव्विय २

भावार्थ

ते हैं १ कितनेक देवताओं अपनेसे कम ऋद्धिवाले देवताओं को अथवा उन की देवियों को अपने वश में करके भोगवते हैं. २ अपनी देवी को अपने वश में करके भोगवते हैं, ३ और अपना शरीर का ही वैक्रेय रूप बना कर भोग योग्य देवांगना का शरीर बनावे और उससे भोग भोगवते हैं. इन तीनों बोलों की एक परिचारणा, दूसरी परिचारणा. कितनेक देवता अन्यदेवता व दूसरी देवी की साथ भोग नहीं करते हैं परंतु अपनी देवी की साथ भोग करते हैं अथवा अपनें शरीर का ही वैक्रेय बना कर भोग भोगते हैं. तीसरी परिचारणा

शब्दार्थ

अ० वशकर प० भोगते है णो० नहीं अ० अपनी दे० देवीको अ० वशकर प० भोगते हैं अ० स्वतः अ० स्वतःको वि० विकुर्वकर प० भोगते हैं ॥ ४ ॥ ति० तीन प्रकार का मे० मैथुन दि० देवता म० मनुष्य ति० तिर्यंच योनिवाले का त० तीन मे० मैथुन को ग० जाते हैं दे० देव म० मनुष्य ति० तिर्यंच योनिवाले त० तीन मे० मैथुन से० सेवते हैं इ० स्त्री पु० पुरुष ण० नपुंसक ॥ ५ ॥ ति० तीन जो० योग

सूत्र

परियारेइ । एगेदेवे णोअन्नेदेवे णोअन्नोसिं देवाणं देवीओ अभिजुंजिय २ परियारेइ णो अप्पणिज्जियाओ देवीओ अभिजुंजिय २ परियारेइ अप्पाणमेव अप्पाणं विउव्विय २ परियारेइ ॥ ४ ॥ तिविहे मेहुणे प० तं० दिव्वे माणुस्सए तिरिक्खजोणिए तओ मेहुणं गच्छंति तं० देवा मणुस्सा तिरिक्खजोणिया तओ मेहुणं सेवंति तं० इत्थी पुरिसा णपुंसगा ॥ ५ ॥ तिविहे जोगे प० तं० मणोजोगे, वयजोगे, कायजोगे, ।

भावार्थ

कितनेकन तो अन्य देव व देवीकी साथ भोग भोग सकते हैं और न अपनी देवीसे भोग भोग सकते हैं परंतु अपना किया हुवा वैक्रेय शरीर की साथ भोग भोगते हैं. ये तीन परिचारणा हुइ ॥ ४ ॥ तीन प्रकारका मैथुन है देवता का, मनुष्य का और तिर्यंच का. तीन मैथुन सेवनेवाले हैं देवता, मनुष्य, और तिर्यंच अथवा स्त्री, पुरुष और नपुंसक ॥ ५ ॥ तीन प्रकार के योग कहे हैं मनोयोग—मन का व्यापार, वचनयोग-

शब्दार्थ म० मनयोग व० वचनयोग का० काययोग ए०ऐसे णे० नारकी वि० विकलेन्द्रिय व० वर्जकर जा० यावत् वे० वैमानिक ति० तीनप्रयोग म० मनप्रयोग व० वचनप्रयोग का० कायाप्रयोग ज० जैसे जो० योग वि० विकलेन्द्रिय व० वर्जकर जा० यावत् वे० वैमानिक त० तैसे प० प्रयोग ति० तीन क०करण म० मन करण व० वचन करण का० काया करण ए० ऐसे णे० नारकी के वि० विकलेन्द्रिय व० वर्जकर जा०यावत् वे० वैमानिक के ति० तीन करण आ० आरंभ करण सं० सारंभ करण स० समारंभ करण णि० निरंतर जा०

सूत्र एवं णेरयाणं विगलिंदियवज्जाणं जाव वेमाणियाणं । तिविहे पओगे प० तं० मणप-ओगे, वयपओगे कायपओगे, । जहा जोगो विगलिंदियवज्जाणं जाव वेमाणियाणं । तहा पओगोवि । तिविहे करणे प० तं० मणकरणे, वयकरणे, कायकरणे, । एवं णेर-इयाणं विगलिंदिय वज्जाणं जाव वेमाणियाणं। तिविहे करणे प० तं० आरंभकरणे संरं-

भावार्थ वचन का व्यापार और काया योग–काया का व्यापार. वैसे ही कार्यार्थ साधने में प्रवर्तना सो प्रयोग, कार्य करना सो करण, इनों के मन वचन और काया के तीन २ भेद जानना. ये तीनों योग, प्रयोग, और करण पांच स्थावर और तीन विमलेन्द्रिय छोड कर अन्यत्र सब दंडक में पाते हैं. और भी करण के तीन भेद बतलाते हैं आरंभ षट्काया को हणना, सारंभ पृथिव्यादिक को हणने का संकल्प और समारंभ

शब्दार्थ

यावत् वे० वैमानिक के ॥६॥ ति० तीनस्थान से जी० जीव अ० अल्प आयुष्य के कर्म प० बांधता है पा० प्राणातिपात करता भ० होता है मु० मृषावाद बोलता भ० होवे त० तथारूप स० श्रमण मा० ब्राह्मण को अ० अफ्रासुक अ० अशुद्ध अ० असन पा० पानी खा० खादिम स० स्त्रादिम प० देता भ० होवे ए० इन ति० तीनस्थान से जी० जीव अ० अल्प आयुष्य क० कर्म प० बांधता हैं ति० तीनस्थान से जी०

सूत्र

भकरणे, समारंभकरणे णिरंतरं जाव वेमाणियाणं ॥ ६ ॥ तिहिं ठाणेहिं जीवा अप्पाउअत्ताए कम्मं पगरेंति तं० पाणे अइवाइत्ता भवइ, मुसंवइत्ता भवइ, तहारूवं समणं वा माहणंवा अफासुएणं अणेसणिज्जेणं असणपाणखाइमसाइमेणं पडिलाभित्ता भवइ । इच्चेएहिं तिहिं ठाणेहिं जीवा अप्पाउअत्ताए कम्मं पगरेंति ॥ तिहिं ठाणेहिं जीवा दीहाउ अत्ताए कम्मं पगरेंति तंजहा णो पाणे अइवाइत्ता भवइ णो मुसं वइत्ता

भावार्थ

सो षट्काया को मन से दुःख देना. ये तीनों करण १ सब दंडक में पाते हैं ॥६॥ तीन प्रकार से जीव अल्प आयुष्य बांधता है [१] जीव की घात करने से २ मृषा बोलने से, ३ और शुद्ध चारित्रिय महात्माओं को अशुद्ध अकल्पनीय आहार देने से. तीन प्रकार से जीव दीर्घायुष्य बांधते हैं १ जीवों की रक्षा करने से, २ मृषा नहीं बोलने से और शुद्ध चारित्रिय साधुओं को शुद्ध निर्दोष आहार पानी आदि

[१] असन्नी को पीछले भव आश्रित ग्रहण किये हैं.

शब्दार्थ

जीव दी० दीर्घायुष्य कर्म प० बांधता है णो० नहीं पा० प्राणातिपात करता भ० होवे णो० नहीं मु० मृषा बोलता भ० होवे त० तथारूप स० श्रमण मा० ब्राह्मणको फा० फासुक ए० शुद्ध अ० अशन पा० पानी खा० खादिम सा० स्वादिम प० देता भ० होवे इ० इन तिं०तीन ठा० स्थान से जी० जीव दी० दीर्घायुष्य क० कर्म प० बांधता है ॥ ७ ॥ ति० तीन ठा० स्थान से जी० जीव अ० अशुभ दी० दीर्घायुष्य कर्म प० बांधता है पा० प्राणातिपात करता भ० होवे मु० मृषाबोलता भ० होवे त० तथारूप स० श्रमण मा० ब्राह्मण को ही० हीलना करता निं० निंदता खि० चिडाता ग० गर्हता अ अपमान करता

सूत्र

भवइ तहारूवं समणं वा माहणं वा फासुए एसणिज्जेणं असणपाणखाइमसाइमेणं पडिलाभेत्ता भवइ । इच्चेएहिं तिहिं ठाणेहिं जीवा दीहाउअत्ताए कम्मं पगरेंति ॥ ७ ॥ तिहिं ठाणेहिं जीवा असुभदीहाउअत्ताए कम्मं पगरेंति तं० पाणे अइवाइत्ता भवइ मुसंवइत्ता भवइ तहारूवं समणंवा माहणंवा हीलेत्ता निंदेत्ता, खिंसेत्ता, गरिहित्ता, अवमाणित्ता अन्नयरेणं अमणुन्नेणं अपीइकारएणं असणं वा पाणं वा खाइमं वा सा-

भावार्थ

देने से ॥७॥ तीन कारण से जीवों दुःख से परिपूर्ण दीर्घ आयुष्य बांधते हैं १ जीव की घात करने से २ मृषा बोलने से, और३ तथाभूत साधु ब्राह्मण की हीलना, निन्दा, खिसना करनेसे, अवगुण बोलनेसे उनका अविनय करने से, अथवा उन को दुःख व्याधि उत्पन्न होवे वैसा आहार पानी, खादिम और स्वादिम

शब्दार्थ

अ० अन्य प्रकार से अ० अमनोज्ञ अ० अप्रीयकारी अ० अन्न पा० पानी खा० खादिम सा० स्वादिम प० देता भ० होवे इ० इन ति० तीन ठा० स्थान से जी० जीव अ० अशुभ दीर्घायुष्य कर्म प० बांधता है ति० तीनस्थान से जी० जीव सु० शुभ दी० दीर्घायुष्यपने क० कर्म प० बांधता है णो० नहीं पा० प्राणातिपात करता भ० होवे णो० नहीं मु० मृषा बोलता भ० होवे त० तथारूप स० श्रमण मा० ब्राह्मण को वं० वंदता न० नमस्कार करता स० सत्कार करता स० सन्मानदेता क० कल्याण कर्त मं० मंगल कर्ता दे० देवसमान चे० ज्ञानवंत को प० पूजता पी० प्रियकारी अ० अन्न पा० पानी खा०

सूत्र

इमं वा पडिलाभेत्ता भवइ इच्चेएहिं तिहिं ठाणेहिं जीवा असुभदीहाउअत्ताए कम्मं पगरेंति ॥ तिहिं ठाणेहिं जीवा सुभदीहाउअत्ताए कम्मं पगरेंति तंजहा णो पाणे अइवाइत्ता भवइ णो मुसंवइत्ता भवइ तहारूवं समणं वा माहणंवा वांदित्ता नमंसित्ता सक्कारेत्ता सम्माणेत्ता कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं पज्जुवासेत्ता मणुन्नेणं पीइकारएणं असण पाणखाइमसाइमेणं पडिलाभेत्ता भवइ इच्चेएहिं तिहिं ठाणेहिं जीवा सुहदीहाउ

भावार्थ

देने से. और तीन कारण से जीव शुभ दीर्घायुष्य बांधता है प्राणातिपात की घात नहीं करने से, मृषा नहीं बोलने से और तथाभूत साधु ब्राह्मण की वंदना नमस्कार करने से, सत्कार सन्मान देने से, और विनय पूर्वक सेवा कर के प्रियकारी अशन, पानी, खादिम और स्वादिम वहोराने से. इन तीन कारणों

शब्दार्थ

स्वादिम सा० स्वादिम प० देता भं० होवे इ० इन ति० तीन स्थान से जी० जीव सु० शुभ दी० दीर्घायुष्य कर्म प० बांधता है ॥ ८ ॥ ति० तीन गु० गुप्ति प० प्ररूपी म० मनगुप्ति व० वचन गुप्ति का० कायागुप्ति स० संयमवाले म० मनुष्य को ति० तीन गुप्ति म० मन व० वचन का० काया ति० तीन अगुप्ती प० प्ररूपी म० मनअगुप्ति व० वचन अगुप्ति का० कायाअगुप्ति ए० ऐसे णे० नारकी जा० यावत थ० स्तनित कुमार को पं० पंचेन्द्रिय ति० तिर्यंचयोनि वाले अ० असंयमीमनुष्य को वा० वाणव्यन्तर

सूत्र

अत्ताए कम्मं पमरंति ॥ ८ ॥ तओ गुत्तीओ पण्णत्ताओ तं० मणगुत्ती वयगुत्ती कायगुत्ती । संजयमणुस्साणं तओ गुत्तीओ प० तं० मण, वय, काए, ॥ तओ अगुत्तीओ पण्णत्ताओ तं० मणअगुत्ती वयअगुत्ती कायअगुत्ती, एवं णेरइयाणं जाव थणियकुमाराणं पंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं असंजयमणुस्साणं वाणमंतराणं जोइ

भावार्थ

से जीव सुखसे व्यतीत होसके वैसा दीर्घ आयुष्य बांधता है. ॥ ८ ॥ जीवहिंसादि नहीं करना सो गुप्ति. इसके तीन भेद कहे हैं मन गुप्ति, वचन गुप्ति और काया गुप्ति. ये तीनों गुप्तिओं साधु पुरुषों को होती हैं. पाप में प्रवर्तना सो अगुप्ति इस के भी तीन भेद हैं मन अगुप्ति, वचन अगुप्ति और काया अगुप्ति. ये तीनों अगुप्ति नारकी, भवनपति, तिर्यंचपंचेन्द्रि, असंयति मनुष्य, व्यंतर, ज्योतिषी और वैमानिक को होती हैं. अगुप्तिवन्त जीव

शब्दार्थ

जो० ज्योतिषी वे० वैमानिक को त० तीन दं० दंड म० मनदंड व० वचनदंड का० कायादंड णे० नारकी के त० तीनदंड प० प्ररूपा म० मनदंड व० वचनदंड का० कायादंड वि० विकलेन्द्रिय वर्जकर वे० वैमानिक ॥ ९ ॥ ति० तीनप्रकार की ग० गर्हा म० मन से ए० कितनेक ग० गर्हते हैं व० वचन से ए० कितनेक ग० गर्हते हैं का० काया से ए० कितनेक ग० गर्हते हैं पा० पापकर्म अ० नहीं करने को अ० अथवा ग० गर्हा ति० तीनप्रकार की दी० दीर्घकाल ए० कितनेक ग० गर्हते हैं ह० थोडाकाल

सूत्र

सियाणं वेमाणियाणं ॥ तओ दंडा प० तं० मणदंडे वयदंडे कायदंडे णेरइयाणं तओ दंडा प० तं० मणदंडे वयदंडे कायदंडे । बिगलिंदियवज्जं जाव वेमाणियाणं ॥ ९ ॥ तिविहा गरिहा प० तं० मणसावेगे गरहइ वयसावेगे गरहइ कायसावेगे गरहइ । पावाणं कम्माणं अकरणयाए ॥ अहवा गरहा तिविहा प० तं० दीहंवेगे अद्धं गरहइ

भावार्थ

कुमार्ग में प्रवर्तते दंडके अधिकारी होते हैं इसलिये दंडका स्वरूप कहते हैं. मन, वचन और काया से दंडावे से मनोदंड, वचन दंड और काया दंड. ये तीनों दंड एकेंद्रिय और पंचेन्द्रिय वर्ज कर अन्य सब दंडकों में पाते हैं ॥ ९ ॥ पाप कर्म करना नहीं अथवा पापकर्म खराब है उसे मैं नहीं करूं सो गर्हणा. यह गर्हणा तीन प्रकार की है मनसे आत्मा को अथवा अन्य को निंदना, वचनसे निंदना अथवा काया से पाप कर्म में नहीं प्रवर्तना. गर्हणा के तीन भेद अन्य प्रकार से भी हैं बहुत

शब्दार्थ

ए० कितनेक ग० गर्हते हैं का० काया को ए० कितनेक प० परिसाहरते हैं पा० पापकर्म अ० नहीं करने को तिं० तीनप्रकार के प० प्रत्याख्यान म० मन से ए० कितनेक प० प्रत्याख्यान करते हैं व० वचन से ए० कितनेक प० प्रत्याख्यान करते हैं का० काया से ए० कितनेक प० प्रत्याख्यान करते हैं ए० ऐसे ज० जैसे ग० गर्हा त० तैसे प० प्रत्याख्यान में दो० दो आ० आलापक भा० कहना ॥ १० ॥ त० तीन

सूत्र

हस्संवेगे अद्धं गरहइ कायंवेगे पडिसाहरइ पावाणं कम्माणं अकरणयाए ॥ तिविहे पच्चक्खाणे प० तं० मणसावेगे पच्चक्खाइ वयसावेगे पच्चक्खाइ कायसावेगे पच्चक्खाइ । एवं जहा गरहा तहा पच्चक्खाणेवि दो आलावगा भाणियव्वा ॥ १० ॥ तओ

भावार्थ

काल के पापों की निंदा करना, अल्प काल के पापों की निन्दा करना अथवा काया, को पाप में नहीं प्रवर्ताना. प्रत्याख्यान के तीन भेद मन से प्रत्याख्यान, वचन से प्रत्याख्यान, और काया को पाप में नहीं प्रवर्ताना सो काया से प्रत्याख्यान. ऐसे ही गर्हा जैसे दो आलापक प्रत्याख्यान में जानना अर्थात् बहुत काल के प्रत्याख्यान, अल्प काल के प्रत्याख्यान और काया को पाप में नहीं प्रवर्ताना ॥ १० ॥ पाप का प्रत्याख्यान करना सो परोपकार है इसलिये वृक्ष का दृष्टांत कहते हैं. इस संसार में तीन प्रकार के वृक्ष हैं पत्रवाले, फूलवाले और फलवाले. ऐसे ही तीन प्रकार के मनुष्य होते हैं १ पत्रवाले वृक्ष

शब्दार्थ रु० वृक्ष प० पत्र पु० पुष्प फ० फल ए० ऐसे त० तीन पु० पुरुष जा० जात प० पत्र वृक्षसमान पु० पुष्पवृक्ष समान फ० फल वृक्षसमान ॥ ११ ॥ त० तीन पुरुष जा० जात णा० नामपुरुष ठ० स्थापना पुरुष द० द्रव्य पुरुष त० तीनपुरुष जा० जात णा० ज्ञान पुरुष दं० दर्शन पुरुष च० चारित्र पुरुष त०

सूत्र रुक्खा प० तं० पत्तो वा पुप्फोवा फलोवा एवमेव तओ पुरिसजाया प० तं० पत्तो वा रुक्खसमाणे पुप्फोवा रुक्खसमाणे फलो वा रुक्खसमाणे ॥ ११ ॥ तओ पुरिसजाया प० तं० णामपुरिसे ठवणपुरिसे दव्वपुरिसे तओ पुरिसजाया प० तं० णाणपुरिसे दंसणपुरिसे चरित्तपुरिसे । तओ पुरिसजाया प० तं० वेदपुरिसे

भावार्थ समान. सो सूत्रसिद्धांत सुनावे२ फूलवाले वृक्ष समानसो अर्थ देनेवाले और३ फलवाले वृक्ष समान. सो सूत्र और अर्थ दोनों देनेवाले ॥ ११ ॥ भगवन्तने तीन प्रकार के पुरुष कहे हैं. नाम से पुरुष सो नाम पुरुष, स्थापना पुरुष सो पुरुष प्रतिमा और द्रव्य पुरुष सो आगामिक काल में पुरुषपने उत्पन्न होवेंगे सो. और पुरुष की तीन जाती कही. ज्ञान सहित सो ज्ञान पुरुष, दर्शन सहित सो दर्शन पुरुष और चारित्र सहित सो चारित्र पुरुष. और भी पुरुष के तीन भेद. पुरुष वेद को अनुभवे सो वेद पुरुष, चिन्हपुरुष दाढीमुच्छ आदि वेष धरे सो और पुरुष शब्द करके बोला जाय सो जैसे घडा, आम्र वगैरह सो अभिलाप पुरुष

१ यह पुरुष स्त्री और नपुंसक तीनों में पाता है.

शब्दार्थ तीन पुरुष जा० जात वे० वेदपुरुष चि० चिन्ह पुरुष अ० अभिलाप पुरुष ॥ १२ ॥ ति० तीनप्रकार क पु० मनुष्य उ० उत्तम पुरुष म० मध्यम पुरुष ज० जघन्य पुरुष उ० उत्तम पुरुष ति० तीनप्रकार के ध० धर्म पुरुष भो० भोगपुरुष क० कर्म पुरुष ध० धर्मपुरुष–अरिहंत भो० भोगपुरुष–चक्रवर्ति क० कर्मपुरुष वासुदेव म० मध्यम पुरुष ति० तीनप्रकार के उ० उग्रकुलोत्पन्न भो० भोगकुलोत्पन्न रा० राजपुरुष ज०

सूत्र चिंधपुरिसे अभिलाव पुरिसे ॥ १२ ॥ तिविहा पुरिसा प० तं० उत्तमपुरिसा मज्झिम पुरिसा जहन्नपुरिसा उत्तमपुरिसा तिविहा प० तं० धम्मपुरिसा भोगपुरिसा कम्मपुरि सा । धम्मपुरिसा अरिहंता भोगपुरिसा चक्कवट्टी कम्मपुरिसा वासुदेवा मज्झिमपुरिसा तिविहा प० तं० उग्गा भोगा राइन्ना । जहन्नपुरिसा तिविहा प० तं० दासा भयगा

भावार्थ ॥ १२ ॥ भगवानने तीन पुरुष कहे हैं. उत्तम पुरुष, मध्यम पुरुष, और जघन्य पुरुष. उत्तम पुरुष के तीन भेद. धर्म पुरुषसो क्षायिक समकितको धारन करनेवाले अरिहंत, भोग पुरुष मनोहर भोग भोगवनेवाले चक्रवर्ती और तीसरा कर्म पुरुष सो महा आरंभ कर नरक में जानेवाले वासुदेव. मध्यम पुरुष के तीन भेद श्री ऋषभदेवजीने कोटवालपने स्थापन किया सो उग्रकुल, गुरुस्थानपने स्थापन किया सो भोगकुल, और (अपने समान) क्षत्रिय वंश में स्थापन किये. सो राजकुल. जघन्य पुरुष के तीन भेद दासी के पुत्र सो

जघन्य पुरुष ति० तीनप्रकार का दा० दास भ० भृत्य भ० भागीदार ॥ १३ ॥ ति० तीनप्रकार के म० मच्छ अं० अंडज पो० पोतज सं० समूर्च्छिम अं० अंडजमच्छ ति० तीनप्रकार के इ० स्त्री पु० पुरुष ण० नपुंसक पो० पोतजमच्छ ति० तीनप्रकार के इ० स्त्री पु० पुरुष ण० नपुंसक ॥ १४ ॥ ति० तीनप्रकार के प० पक्षी अं० अंडज पो० पोतज स० समूर्च्छिम अं० अंडजपक्षी ति० तीनप्रकार के इ० स्त्री पु०पुरुष न० नपुंसक पो० पोतजपक्षी ति० तीनप्रकार के इ०स्त्री पु०पुरुष न० नपुंसक ए० ऐसे ए० इस आ० आलापक

भाइल्लगा ॥ १३ ॥ तिविहा मच्छा प०तं० अंडया पोयया संमुच्छिमा । अंडया मच्छा तिविहा प० तं० इत्थी पुरिसा णपुंसगा पोयया मच्छा तिविहा प० तं० इत्थी पुरिसा णपुंसगा ॥ १४ ॥ तिविहा पक्खी प० तं० अंडया पोयया समुच्छिमा अंडया पक्खी तिविहा प० तं० इत्थी पुरिसा नपुंसगा पोयया पक्खी तिविहा प० तं० इत्थी पुरिसा णपुंसगा एवमेएणं अभिलावेणं उरपरिसप्पवि भाणियव्वा भुजपरिस-

दास, पैसे लेकर काम करे सो भृत्य और चतुर्थ भाग जिस को दियाजावे सो भागीदार ॥ १३ ॥ पानी में रहनेवाले जलचर मच्छ के तीन भेद अंडे से उत्पन्न होवे सो अण्डज, पोत (थेली) से उत्पन्न होवे सो पोतज और गर्भ विना उत्पन्न होवे सो समूर्च्छिम. उस में से अण्डज और पोतज मच्छ के तीन २ भेद होते हैं स्त्री, पुरुष और नपुंसक ॥ १४ ॥ जलचर मच्छ जैसे पक्षी के तीन भेद कहे हैं अंडज हंस प्रमुख पोतज बागुल प्रमुख और समूर्च्छिम खंजन प्रमुख. अंडज और पोतज के भी स्त्री पुरुष और नपुंसक ऐसे

शब्दार्थ

तु उ० उरपरसर्प भा० कहना भु० भुजपरसर्प भा० कहना ऐ० ऐसे ॥ १५ ॥ ति० तीनप्रकार की इ० स्त्रियों प० प्ररूपी ति० तिर्यंचयोनि की म० मनुष्यणी दे० देवी ति० तिर्यंचयोनिकी स्त्री ति० तीनप्रकार की ज० जलचरी थ० स्थलचरी ख० खेचरी म० मनुष्यणी ति० तीनप्रकार की प०प्ररूपी क० कर्मभूमिकी अ० अकर्मभूमिकी अंतरद्वीप की ॥ १६ ॥ ति० तीनप्रकार के पु० पुरुष ति० तिर्यंचयोनि के पुरुष म० मनुष्य पुरुष दे० देवपुरुष ति० तिर्यंचयोनि के पुरुष ति० तिनप्रकार के ज० जलचर थ० स्थलचर ख०

सूत्र

प्पावि भाणियव्वा एवं चेव ॥ १५ ॥ तिविहाओ इत्थीओ पण्णत्ताओ तंजहा तिरिक्ख जोणित्थीओ मणुस्सित्थीओ देवित्थीओ तिरिक्खजोणित्थीओ तिविहाओ पण्णत्ताओ तं० चलचरीओ थलचरीओ खहचरीओ मणुस्सित्थीओ तिविहाओ पण्णत्ताओ तं० कम्मभूमियाओ अकम्मभूमियाओ अंतरदीवियाओ ॥ १६ ॥ तिविहा पुरिसा प० तं० तिरिक्खजोणियपुरिसा मणुस्स पुरिसा देवपुरिसा तिरिक्ख जोणिय पुरि-

भावार्थ

तीन २ भेद जानना. वैसे ही उरपर और भुजपर के तीन प्रकार जानना ॥ १५ ॥ तीन प्रकारकी स्त्री, तिर्यंच की, मनुष्य की और देव की. तिर्यंच की स्त्री के तीन प्रकार जलचरी, स्थलचरी और खेचरी, मनुष्य की स्त्री तीन प्रकारकी कर्मभूमि के मनुष्यों की स्त्री, अकर्म्मभूमि के मनुष्यों की स्त्री और अंतर द्वीप के मनुष्यों की ॥ १६ ॥ तीन प्रकार के पुरुष तिर्यंच योनि के पुरुष, मनुष्य पुरुष और देव पुरुष, तिर्यंच योनिके पुरुष तीन प्रकारके जलचर, स्थलचर और खेचर पुरुष ऐसे ही मनुष्यके कर्मभूमि अकर्मभूमि

खेचर म० मनुष्य पुरुष ति० तीनप्रकार के क० कर्मभूमि अ० अकर्मभूमि अं० अंतरद्वीप के पुरुष ॥१७॥ ति० तीनप्रकार के ण० नपुंसक णे० नारकी नपुंसक ति० तिर्यंचयोनि के नपुंसक म० मनुष्य नपुंसक ति० तिर्यंचयोनि के नपुंसक ति० तीनप्रकार के ज० जलचर थ० स्थलचर खे० खेचर म० मनुष्य नपुसक ति० तीनप्रकार के क० कर्मभूमि अ० अकर्मभूमि अं० अंतरद्वीप के ॥ १८ ॥ ति० तीनप्रकार की त्रि० तिर्यंचयोनि इ० स्त्री पु० पुरुष ण० नपुंसक ॥ १९ ॥ णे० नारकी को त० तीन ले० लेश्या क० कृष्ण

सा तिविहा प० तं० जलचरा, थलचरा, खहचरा, । मणुस्सपुरिसा तिविहा प० तं० कम्मभूमिया अकम्मभूमिया अंतरदीवया ॥ १७ ॥ तिविहा णपुंसगा प० तं० णेरइयणपुंसगा तिरिक्खजोणिय णपुंसगा मणुस्स णपुंसगा तिरिक्खजेणिय णपुंसगा तिविहा प० तं० जलचरा थलचरा खहचरा मणुस्सणपुंसगा तिविहा प० तं० कम्मभूमिया अकम्मभूमिया अंतरदीवगा ॥ १८ ॥ तिविहा तिरिक्खजोणिया प० तं० इत्थी पुरिसा णपुंसगा ॥ १९ ॥ णेरइयाणं तओ लेस्साओ प० तं० कण्ह लेस्सा नी

और अंतरद्विप के मनुष्य ऐसे तीन भेद जानना ॥ १७ ॥ नपुंसक तीन प्रकार के नारकी के, तिर्यंच, योनि के, और मनुष्य के. तिर्यंच योनिवाले नपुंसक के तीन भेद जलचर, स्थलचर, और खेचर ऐसे तीन भेद. मनुष्य नपुंसक के तीन भेद कर्म भूमि के, अकर्मभूमि के और अंतरद्विप के ॥ १८ ॥ तिर्यंच तीन प्रकारके स्त्री, पुरुष और नपुंसक ॥ १९ ॥ नारकी में तीन लेश्याओं कृष्ण, नील, औ,

शब्दार्थ — ले० लेश्या नी० नील लेश्या का० कापोत लेश्या अ० असुर कुमार को त० तीन ले० लेश्या सं० संक्लिष्ट क० कृष्ण लेश्या नी० नीललेश्या का० कापुतलेश्या ए० ऐसे जा० यावत् थ० स्थानितकुमार ए० ऐसे पु० पृथ्वी काय आ० अप् व० वनस्पतिकाय ते० अग्नि वा० वायुकाय बे० बेइंद्रिय ते० तेइंद्रिय च० चौरेन्द्रिय को त० तीन लेश्या ज० जैसे णे० नारकी को पं० पंचेंद्रिय तिर्यंचयोनिवालेको त० तीन ले० लेश्या स० संक्लिष्ट क० कृष्ण लेश्या नी० नील लेश्या का० कापोत लेश्या पं० पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिवाले को त० तीन लेश्या अ० असंक्लिष्ट

सूत्र — ललेस्सा काउलेस्सा असुरकुमाराणां तओ लेस्साओ संकिलिट्ठाओ प० तं० कण्ह लेस्सा नीललेस्सा काउलेस्सा । एवं जावथणियकुमाराणं। एवं पुढविकाइयाणं आउ वणस्सइ काइयाणवि तेउकाइयाणं वाउकाइयाणं बेइंदियाणं तेइंदियाणं चउरिंदियाणंवि तओ लेस्सा जहा णेरइयाणं पंचेंदिय तिरिक्ख जोणियाणं तओ लेस्साओ संकिलिट्ठाओ प० तं० कण्ह लेस्सा नील लेस्सा काउलेस्सा पंचेंदियतिरिक्खजोणियाणं तओ लेस्साओ असंकिलिट्ठाओ प० तं० तेउलेस्सा पम्हलेस्सा सुक्कलेस्सा। एवं मणुस्साणवि वाणमंतराण

भावार्थ — कापोत लेश्या. असुर कुमारादि दश भुवनपति में तीन संक्लिष्ट लेश्याओं वैसे ही पांच स्थावर, तीन विगलेन्द्रिय और पांच स्थावर में तीन संक्लिष्ट लेश्याओं, तिर्यंच पंचेन्द्रिय में तथा मनुष्य में कृष्ण, नील और कापोत ये तीन अशुभ और तेजु, पद्म और शुक्ल ये तीन शुभ पाती हैं. वैमानिक देव में मात्र तीन शुभ

१ असुर कुमारादि में चौथी तेजु लेश्या है परंतु संक्लिष्ट नहीं होने के ग्रहण नहीं की है.

शब्दार्थ

ते० तेजु प० पद्म सु० शुक्ल ए० ऐसे म० मनुष्यको वा० व्यंतरको ज० जैसे अ० असुरकुमारको वे० वैमानिकको त० तीन लेश्या ते० तेजु प० पद्म सु० शुक्ल ॥ २० ॥ ति० तीन स्थान से ता० तारा रूप च० चले वि० विकुर्वणा करते प० परिचारणा करते ठा० स्थान से स्थान को सं० संक्रमते ता० तारारूप च० चले तिं० तीन स्थान से दे० देव वि० विद्युत् क० करे वि० विकुर्वणा करते प० परिचारणा करते त० तथारूप स० श्रमण मा० ब्राह्मण को इ० ऋद्धि जु० द्युति ज० यश ब० बल वी० वीर्य पु० पुरुषात्कार

सूत्र

वि जहा असुरकुमाराणं वेमाणियाणं तओ लेस्साओ प० तं० तेउलेस्सा पम्हलेस्सा सुक्कलेस्सा ॥ २० ॥ तिहिं ठाणेहिं तारा रूवे चलेज्जा तं० विकुव्वमाणे वा परियारेमाणे वा ठाणाओवा ठाणं संकममाणेवा तारारूवे चलेज्जा । तिहिं ठाणेहिं देवे विज्जुयारं करेज्जा तं० विउव्वमाणे वा परियारेमाणे वा तहारूवस्स समणस्स वा माहणस्सवा इड्ढिं जुइं जसं बलं वीरियं पुरिसक्कारपरक्कमं उवदंसेमाणे देवे विज्जुयारं करेज्जा ति-

भावार्थ

लेश्याओं पाती हैं तेजु, पद्म और शुक्ल ॥ २० ॥ तीन कारण से तारे चलते हैं, १ वैक्रेय रूप बनाते, २परिचारणा (मैथुन सेवन) करते. ३एक स्थानसे अन्य स्थान शिघ्रतासे जाते अथवा कोई महार्द्धिक देवता वैक्रेय रूप बनाते एक स्थान से अन्य स्थान चलते हैं. तीन कारन से देवताओं विजलि जैसा उद्योत करे वैक्रेय रूपादि की विकुर्वणा करते, देवांगनासे भोग भोगते और तथाभूत श्रमण, ब्राह्मण को अपनी

शब्दार्थ

प०पराक्रम उ०बताने को दे०देव वि०विद्युत् क०करे ति०तीनस्थान से दे० देव थ० स्थानित शब्द क० करे वि०विकुर्वणा करता ए०ऐसे ज०जैसे वि०विद्युत् त०तैसे थ०स्थानित शब्द ॥२१॥ ति० तीन स्थान से लो० लोक में अं०अंधकार सि०होवे अ०अरिहंतका वो०विच्छेदहोते अ०अरिहंत प०प्ररूपा ध०धर्म वो० विच्छेद होते

सूत्र

हिं ठाणेहिं देवे थणियसद्दं करेजा तं० विउव्वमाणे एवं जहा विज्जुयारं तहेव थणियसद्दंपि ॥ २१ ॥ तिहिं ठाणेहिं लोगंधयारे सिया तंजहा अरहंतेहिं वोच्छिज्जमाणेहिं अरहंतपण्णत्ते धम्मे वोच्छिज्जमाणे पुव्वगए वोच्छिज्जमाणे ॥ तिहिं ठाणेहिं लोगुज्जोए सिया तंजहा अरहंतेहिं जायमाणेहिं अरहंतेसु पव्वयमाणेसु अरहंताणं णाणुप्पय महिमासु ॥ तिहिं ठाणेहिं देवेंधयारेसिया तं० अरहंतेहिं वोच्छिज्जमाणेहिं अरहंतपण्ण

भावार्थ

ऋद्धि, यश, कीर्ति, बल, वीर्य आदि पराक्रम बताने को. ऐसे ही तीनों कारणों से देवताओं वैक्रेय कर बदल गर्जनादि शब्द भी करते हैं ॥ २१ ॥ तीन कारण से लोक में अंधकार होता है अरिहंत मोक्ष में जाते हैं तब, अरिहंत प्ररूपित धर्म का विच्छेद होता है तब, और पूर्वगत दृष्टिवाद सूत्र विच्छेद जाता है तब. तीन कारण से उद्योत भी होवे अरिहंत का जन्म होते, दीक्षा लेते और केवल ज्ञान उत्पन्न होते

शब्दार्थ

पु० पूर्वज्ञान वो० विच्छेद होते ति० तीनस्थान से लो० लोक में उ० उद्योत सि० होवे तं० वह ज० जैसे अ० अरिहंत का जा० जन्म होते अ० अरिहंत की प० प्रवर्ज्या होते अ० अरिहंत को णा० ज्ञान उ० उत्पन्न की म० महिमावक्त ति० तीनस्थान से दे० देवलोक में अं० अंधकार सि० होवे ति० तीनस्थान से दे० देवलोक में उ० उद्योत सि० होवे ति० तीनस्थान से दे० देवका स० सन्निपात सि० होवे ए० ऐसे दे० देव उ० विशेषमिले दे० देव क० कलकल शब्दकरे ति० तीनस्थान से दे०

सूत्र

त्ते धम्मे वोच्छिज्जमाणे पुव्वगए वोच्छिज्जमाणे ॥ तिहिं ठाणेहिं देवुज्जोओसिया तंजहा अरहंतेहिं जायमाणेहिं अरहंतेहिं पव्वयमाणेहिं अहंताणं णाणुप्पय महिमासु तिहिं ठाणेहिं देवसन्निवाए सिया तं० अरहंतेहिं जायमाणेहिं अरहंतेहिं पव्वयमाणेहिं अरहंताणं णाणुप्पय महिमासु ॥ एवं देवुक्कलिया देवकहकहए ॥ तिहिं ठाणेहिं देविंदा माणुसं

भावार्थ

उत्सव में. तीन करान से देवता के भवन में अंधकार होवे. अरिहंत मोक्ष जाते, अरिहंत धर्म विच्छेद जाते और दृष्टिवाद विच्छेद जावे. तीन कारनों से देवता के भुवन में प्रकाश होवे अरिहंत का जन्म होते, अरिहंतकी दीक्षा होते, और उन को केवल ज्ञान उत्पन्न होते. उक्त तिनों कारनों से देवों का समुदाय एकत्रित होवे, देवउत्कालिक लिकें और देवताओं का कहकहे होवे. उक्त तिनों कारनों से देवेन्द्र.

१ भरत ऐरवत आश्रित. २ समवाय विशेष. ३ हर्ष का नाद.

शब्दार्थ

देवेन्द्र मा० मनुष्य लोक में ह० शीघ्र आ० आते हैं ए० ऐसे मा० सामानिक ता० त्रायस्त्रिंश लो० लोकपाल दे० देव अ० अग्रमहिषी दे० देवेओं प० परिषद में बैठनेवाले देव अ० अनिक के अधिपतिदेव आ० आत्मरक्षकदेव मा० मनुष्य लोक में ह० शीघ्र आ० आते हैं ति० तीनस्थान से दे० देव अ० खडे होवे ए० ऐसे आ० आसन च० चले सी० सिंहनाद क० करे चे० वस्त्रवृष्टि क० करे ति० तीनस्थान से दे०

सूत्र

लोगं हव्वमागच्छंति तं० अरहंतेहिं जायमाणेहिं अरहंतेहिं पव्वयमाणेहिं अरहंताणं णाणुप्पय महिमासु ॥ एवं सामाणिया तायत्तीसा लोगपाला देवा अग्गमहिसीओ देवीओ परिसोववन्नगा देवा अणियाहिवई देवा आयरक्खा देवा माणुसं लोगं हव्वमागच्छंति तिहिं ठाणेहिं देवा अब्भुट्ठेज्जा तं० अरहंतेहिं जायमाणेहिं जाव तं चेव । एव मासणाइं चलेज्जा सीहणायं करेज्जा । चेलुक्खेवं करेज्जा ॥ तिहिं ठाणेहिं देवाणं चेइयरुक्खा चलेज्जा तं० अरहंतेहिं जायमाणेहिं जाव तं चेव तिहिं ठाणेहिं लोगंतिया देवा

भावार्थ

सामानिक, (इन्द्र जैसी रीद्धि के धारक) त्रायस्त्रिंशक (गुरु के स्थान) लोकपाल, अग्रमहिषी. तीन परिषदा के देवता, अनीक (कटक के देवता) और अंग रक्षक देवों मनुष्य लोक में आते हैं. तीन स्थानक से देवताओं सिंहासन से उठे, देवता का आसन चले, सिंहनाद करे, और वस्त्रकी वृष्टि करे. उक्त तीनों कारणों से ही सुधर्मादि सभा के द्वारपर रहे हुवे चैत्य वृक्षों चलते हैं. और उन तीन कारनों से लोकान्तिक

शब्दार्थ

देवता का चे० चैत्यवृक्ष च० चले ति० तीनस्थान से लो० लोकान्तिक दे० देव मा० मनुष्य लोक में ह० शीघ्र आ० आवे शेष पूर्ववत् ॥ २२ ॥ ति० तीनका दु० दुष्कर प्रतिकार सं० आयुष्मन् श्रमण ! तं० वह ज०जैसे अ०मातापिता का भ० शेठका ध०धर्माचार्यका सं०प्रभाव जैसा कालमें भी के०कोई पुरुष अ०माता पिता को स० शतपाक स० सहस्रपाक ति०तेलसे अ०मर्दनकरे सु०सुरभि गं०अष्टप्रकारकी गंध उ० उद्वर्तन करे ति० तीन पानी से म० स्नान करावे स० सर्वालंकार विभूषित क० करे म० मनोज्ञ था० उत्तम पाक सु० शुद्ध अ० अठार प्रकार के वं० व्यंजनयुक्त भो० भोजन भो० जिमावे जा० जाव जीव पि० पीठपे

सूत्र

माणुसं लोगं हव्वमागच्छेज्जा तं० अरहंतेहिं जायमाणेहिं अरहंतेहिं पव्वयमाणेहिं अरहंताणं णाणुप्पयमहिमासु ॥ २२ ॥ तिण्हं दुप्पडियारं समणाउसो तंजहा अम्मापिउणो भट्टिस्स धम्मायरियस्स संपाओवियणं केइ पुरिसे अम्मापियरं सयपागसहस्सपागेहिं तिल्लेहिं अब्भंगेत्ता सुरभिणा गंधट्टएणं उव्वट्टित्ता तिहिं उदगेहिं मज्जावेत्ता सव्वालंकारविभूसियं करेत्ता मणुन्नं थालीपागसुद्धं अट्ठारस वंजणाउलं भोअणं भोआ-

भावार्थ

देवताओं मनुष्य लोक में आते हैं ॥ २२ ॥ तीन पुरुषों का प्रत्युपकार करने में नहीं आता है. माता पिता का, भरण पोषण करनेवाला स्वामी का और धर्माचार्य का. कोई पुरुष सदैव प्रातःकाल में अपने माता पिता को शतपाक, सहस्रपाक तेल से मर्दन कर सुगंधित द्रव्यों का लेप कर और तीन प्रकार का

शब्दार्थ सि० कदाचित् प०लेजावे ते०ताहांपि त०उन अ०मातापिता का दु०दुष्कर प्रत्युपकार भ०होवे अ०अथवा से० वह तं० उनका अ० मातापिता को के० केवलि प० प्ररूपा ध० धर्म को आ० विस्तारयुक्त प० प्रगटकर पं० प्ररूपकर ठा० स्थापन करता भ० होवे ते० इस से त० उन अ० मातापिता का सु० सुप्रत्युपकार भ० होवे स० आयुष्मन् श्रमण के० कोई म० धनिक द० दरिद्री को स० बराबर बनावे त० तब से० वह द० दरिद्री स० बराबर होता प० फिर पु० पूर्वोपार्जित वि० विपुल भोग स० समृद्धि स०

सूत्र वेत्ता जावज्जीवं पिट्ठिवडिं सिया ते परिवहेज्जा तेणावि तस्स अम्मापिउस्स दुप्पडियारं भवइ अहेणं से तं अम्मापियरं केवलिपन्नत्ते धम्मे आघवइत्ता पन्नवइत्ता परूवइत्ता ठावइत्ता भवइ तेणामेव तस्स अम्मापिउस्स सुप्पडियारं भवइ ॥ समणाउसो केइ महच्चे दरिद्दं समुक्कसेज्जा तएणं से दरिद्दे समुक्किट्ठसमाणे पच्छा पुरंचणं विउलभोग-

भावार्थ पानी से स्नान कराकर, बहु मूल्य वस्त्राभूषणों से उन के शरीर को भूषित करे. पश्चात् उत्तम प्रकारका पकाहुवा भोजन, अठारह प्रकारके शाक आदि जैसी रुचि होवे वैसा भोजन करावे और जीवन पर्यंत अपनी पीठपर उठावे. इतना करने पर भी वह पुरुष मातापिताका ऋण मुक्त नहीं हो सकता है. परंतु जो वह पुत्र अपने मातपिता को केवलिभाषित धर्म समझावे और उस के भेद भेदान्तर कहकर उस को धर्म में स्थिर करे तो वह मातापिता का प्रत्युपकार कर सकता है. कोई धनिक किसी दरिद्री को द्रव्य देकर धनवान बनावे

शब्दार्थ

भोगता हुवा वि० विचरे त० तब से० वह म० धनिक अ० अन्यदा क० कदापि द० दरीद्री हु० होजावे त० उस द० दरिद्री की अं० पास ह० शीघ्र आ० आवे त० तब से० वह द० दरिद्री त० उस भ० स्वामी को स० सर्वस्व द०देना ते० उस से त० उनका दु० दुष्कर प्रतिकार भ० होवे अ० अथवा तं० उन भ० धनिक को के० केवलि प० प्ररूपा ध० धर्म को आ० विस्तारयुक्त प० प्रगटकर ठा० स्थापनकर्ता भ०होवे ते०इस से त०उस भ०धनिक का सु०सुप्रतिकार भ०होवे के० कोई त० तथारूप स० श्रमण मा०

सूत्र

समिइ समण्णागएयावि विहरेज्जा तएणं से महच्चे अन्नया कयाइं दरिद्दी हुएसमाणे तस्स दरिद्दस्स अंतियं हव्वमागच्छेज्जा तएणं से दरिद्दे तस्स भट्टिस्स सव्वसवि दल यमाणे तेणावि तस्स दुप्पडियारं भवइ अहेणं से तं भट्टिं केवालिपन्नत्ते धम्मे आघवइत्ता परूवइत्ता ठावइत्ता भवइ तेणामेव तस्स भट्टिस्स सुप्पडियारं भवइ ॥ केइ तहारूव-

भावार्थ

और वह दरिद्री धन प्राप्त किये बाद उत्तम प्रकारके भोग भोगता हुवा रहे. अब वह भर्त्ता कर्म्मोदय से दारिद्री निर्धन बन जावे और अपना बनायाहुवा धनवान की पास आवे. उस समय वह यदि सब द्रव्य उन को देवे और अपनी पास कुच्छ भी रखे नहीं तो भी वह ऋण मुक्त नहीं होता है परंतु केवलि भाषित धर्म समझाकर उस में द्रढ करे तो वह उस से ऋण मुक्त होता है. कोई पुरुष किसी शुद्धाचारी साधु के मुखसे आर्य धर्म का एक पदमात्र श्रवण कर, उस की रुचिकर आयुष्य पूर्ण हुवे बाद देवलोक में जाकर देवता हुवा

शब्दार्थ

ब्राह्मण की अं० समीप ए० एक भी आ० आर्य धर्म को सो० सुनकर नि० अवधारकर का० काल के अवसर में का० काल करके अ० अन्य दे० देवलोक में दे० देवपने उ० उत्पन्न होवे त० तब से० वह दे० देव तं० उस ध० धर्माचार्य को दु० दुर्भिक्षदेशसे सु० सुभिक्षदेश में सा० लेजावे कं० अटवी में से णि० वसति में सा० लेजावे दी० बहुत काल के रो०रोगसे अ० प्राप्त वि० दूरकरे ते० उस से भी त० उस ध० धर्माचार्य का दु० दुष्कर प्रतिकार भ० होवे अ० अथवा से०वह तं० उस ध०धर्माचार्य को के० केवली प० प्ररूपा ध० धर्म से भ० भ्रष्ट होते को पु० वारंवार के० केवली प० प्ररूपा ध०

सूत्र

समणस्सवा माहणस्स वा अंतिय मेगमवि आरियं धम्मं सोच्चा निसम्म कालमासे कालंकिच्चा अन्नयरेसु देवलोएसु देवत्ताए उववन्ने तएणंसे देवे तं धम्मायरियं दुब्भिक्खाओ वा देसाओ सुभिक्खदेसं साहरेज्जा कंताराओ वा णिक्कंतारं करेज्जा दीह कालिएणं वा रोआतंकेण अभिभूयं समाणं विमोइज्जा तेणावि तस्स धम्मायरियस्स दुप्पडियारं भवइ अहेणं से तं धम्मायरियं केवलिपण्णत्ताओ धम्माओ भट्ठं समाणं

भावार्थ

और अपना धर्माचार्य का प्रत्युपकार करने के लिये दुष्काल पडा होवे और आहार पानी जहां कठिनता से मिलते होवे वैसे क्षेत्र में से अच्छेक्षेत्रमें लाकर रखे, जंगल में होवे तो वसति में लाकररखें, शरीरमें भयंकर रोगों उत्पन्न हुवे होवें तो उस का निवारन करें. इतना करनेपर भी वह धर्माचार्य का ऋणसे मुक्त नहीं होताहै.

शब्दार्थ

धर्म से आ० विस्तारयुक्त जा० यावत् ठा० स्थापन करके भ० होवे ते० तब त० उस ध० धर्माचार्य का सु० सुप्रतिकार भ० होवे ॥ २३ ॥ ति० तीनस्थान से स० युक्त अ० अनगार अ० अनादि अ० अनंत दी० दीर्घ चा० चारगति सं० संसार अटवी को वि० उल्लंघनकरे तं० वह ज० जैसे अ० नियाणा रहित दि० समदृष्टियुक्त जो० योगउपधान ॥ २४ ॥ ति० तीनप्रकार की ओ० अवसर्पिणी प० प्ररूपी तं० वह उ० उत्कृष्ट म० मध्यम ज० जघन्य ए० ऐसे छ० छहकाल भा० कहना जा० यावत् दु० दुषम दुषमा ति

सूत्र

भुजोवि केवलिपण्णत्ते धम्मे आघवइत्ता जाव ठावइत्ता भवइ तेणामेव तस्स धम्मायरिस्स सुप्पडियारं भवइ ॥ २३ ॥ तिहिं ठाणेहिं संपन्ने अणगारे अणाइयं अणवदग्गं दीहमद्धं चाउरंतसंसारकंतारं वितिवएज्जा तंजहा आणियाणयाए दिट्ठि संपन्नयाए जोग वाहियाए ॥ २४ ॥ तिविहा ओसप्पिणी प० तं० उक्कोसा मज्झिमा जहन्ना एवं छप्पि य समाओ भाणियव्वाओ जाव दुसमदुसमा तिविहा ओसप्पिणी प० तं० उक्कोसा

भावार्थ

परंतु यदि धर्माचार्य धर्म से पतित होता होवे तो उन को धर्म समझा कर धर्म में स्थिर करे तो वह ऋणमुक्त होता है. ॥ २३ ॥ अनेक प्रकार की धर्म करणी करके ऋद्धि का नियाणा नहीं करनेवाले, शत्रुमित्र पर समदृष्टि रखनेवाले, और योग उपधान तप करनेवाले साधु अनादि अनंत मनुष्यादि चतुर्गतिक संसार रूप अटवि उल्लंघन करते हैं ॥२४॥ तीन प्रकारकी अवसर्पिणी कही उत्कृष्ट, मध्यम और जघन्य. पहिला सुखमा सुखमी आरा तथा दूसरा सुखम सो उत्कृष्ट अवसर्पिणी काल, तीसरा चौथा मध्यम और पांचवा

शब्दार्थ

तीनप्रकार की उ० उत्सर्पिणी प० प्ररूपी उ० उत्कृष्ट म० मध्यम ज० जघन्य ए० ऐसे छ० छहकाल भा० कहना जा० यावत् सु० सुषम सुषमा ॥ २५ ॥ ति० तीनस्थान से अ० अच्छिन्न पो० पुद्गल च० चले आ० आहार करते पो० पुद्गल च० चले वि० विकुर्वणा करते पो० पुद्गल च० चले ठा० स्थान से ठा० स्थान में सं० संक्रमते पो० पुद्गल च० चले ॥ २६ ॥ ति० तीनप्रकार की उ० उपाधि प० प्ररूपी तं० वह ज० जैसे क० कर्म उपाधि स० शरीर उपाधि बा० बाह्य भं० भंडोपकरण उपाधि ए० ऐसे अ०

सूत्र

मज्झिमा जहन्ना एवं छप्पिय समाओ भाणियव्वाओ जाव सुसमसुसमा ॥ २५ ॥
तिहिं ठाणेहिं अच्छिन्ने पोग्गले चलेज्जा तं० आहारिज्जमाणेवा पोग्गले चलेज्जा विउव्वमाणे वा पोग्गले चलेज्जा ठाणाओठाणं संकामेज्जमाणेवा पोग्गले चलेज्जा ॥ २६ ॥
तिविहा उवही पण्णत्ता तंजहा कम्मोवही सरीरोवही बाहिरभंडमत्तोवही एवं असुर

भावार्थ

छट्ठा जघन्य. ऐसे ही उत्कृष्ट, मध्यम और जघन्य से उत्सर्पिणीकाल का भेद पहिला दुखमादुखमी और दूसरा दुखमी ऐसे दो जघन्य काल. तीसरा दुखमा दुखमी और चौथा सुखमा दुखमी सो मध्यम काल और पांचवा सुखमी तथा छट्ठा सुखमा सुखमी सो उत्कृष्ट काल. ॥ २५ ॥ तीन प्रकार से खड्गादि शस्त्रों से विना छेदायें पुद्गल चलते हैं. जीव आहारपने पुद्गल को ग्रहण करे तब. देवता मनुष्य वैक्रेय करे तब और हस्तादि पुद्गलों को एक स्थान से अन्य स्थान रखे तब चलते हैं ॥ २६ ॥ भगवन्तमे तीन प्रकारकी

शब्दार्थ

असुर कुमार को भा० कहना ए० ऐसे ए० एकेन्द्रिय ने० नारकी को व० वर्जकर जा० यावत् वे० वैमानिक को अ० अथवा ति० तीनप्रकार की उ० उपाधि स० सचित्त अ० अचित्त मी० मिश्र ए० ऐसे ने० नारकी को नि०सदैव जा०यावत् वे०वैमानिक को ति०तीनप्रकार का प०परिग्रह क०कर्म परिग्रह स० शरीर परिग्रह बा० बाह्य भं० भंडोपकरण परिग्रह ए० ऐसे अ० असुर कुमार को ए० ऐसे ए० एकेन्द्रिय ने० नारकी को व० वर्जकर जा० यावत् वे० वैमानिक को अ० अथवा ति० तीनप्रकार का प० परिग्रह स०

सूत्र

कुमाराणं भाणियव्वं एवं एगिंदिय नेरइय वज्जं जाव वेमाणियाणं । अहवा तिविहा उवही प०तं० सच्चित्ते अच्चित्ते मीसए । एवं नेरइयाणं निरंतरं जाव वेमाणियाणं । तिविहे परिग्गहे प० तं० कम्मपरिग्गहे सरीरपरिग्गहे बाहिर भंडमत्तपरिग्गहे । एवं असुरकुमाराणं एवं एगिंदिय नेरइयवज्जं जाव वेमाणियाणं ॥ अहवा तिविहे परिग्गा-

भावार्थ

उपाधि और तीन प्रकारका परिग्रह फरमाया है. आठ कर्म रूप उपाधि, पांच शरीर रूप, और बाहिर के भंड उपकरणादिक. उन का संग्रह सो उपाधि और उस में ममत्व सो परिग्रह. यह नरक व एकेन्द्रिय को छोड कर अन्य सब दंडकों में पाता हैं (नरक में और एकेन्द्रिय में शरीर है परंतु उपकरण न होने से इस में नहीं गिनेगये हैं.) और भी तीन प्रकारकी उपाधि और तीन प्रकारका परिग्रह. सचित्त, अचित्त

शब्दार्थ

सचित्त अ०अचित्त मी०मिश्र ए०ऐसे णे०नारकीको नि०निरंतर जा०यावत् वे०वैमानिकको ॥२७॥ ति०तीन प्रकार का प०प्रणिधान म०मनप्रणिधान व०वचन प्रणिधान का०कायप्रणिधान जा०यावत् वे०वैमानिकको सं० साधुको ति०तीनप्रकार का सु०सुप्रणिधान म०मनसुप्रणिधान व०वचन सुप्रणिधान का०कायसुप्रणिधान ति० तीनप्रकार का दु० दुष्प्रणिधान म० मनदुष्प्रणिधान व० वचन दुष्प्रणिधान का० कायदुष्प्रणिधान ए० ऐसे

सूत्र

हे प० तं० सचित्ते अचित्ते मीसए एवं णेरइयाणं निरंतरं जाव वेमाणियाणं ॥२७॥ तिविहे पणिहाणे प० तं० मणपणिहाणे वयपणिहाणे कायपणिहाणे एवं पंचेंदियाणं जाव वेमाणियाण तिविहे सुप्पणिहाणे प० त० मणसुप्पाणीहाणे वयसुप्पणिहाणे कायसुप्पणिहाणे संजयमणुस्साणं तिविहे सुप्पणिहाणे प० तं० मणसुप्पणिहाणे वयसुप्पणिहाणे कायसुप्पाणिहाणे । तिविहे दुप्पाणिहाणे प० तं० मणदुप्पणिहाणे वय-

भावार्थ

और मिश्र. इन का संग्रह सो उपाधि और ममत्व सो परिग्रह. ये तीनों उपाधि चौविस दंडकों में पाती हैं ॥ २७ ॥ भगवन्तने तीन प्रकार के प्रणिधान फरमाये हैं. मन प्रणिधान, वचन प्रणिधान और काया का प्रणिधान. ये तीनों प्रणिधान पंचेन्द्रिय को यावत् वैमानिक को होते ह. तीन प्रकार के सुप्रणिधान होते हैं मन सुप्रणिधान, धर्म में अच्छा मन, वचन सुप्रणिधान-सत्य वचन और कायसुप्रणिधान सो काया से पाप नहीं करना. ये तीन चारित्रिय पुरुष को होते हैं. तीन दुःप्रणिधान. मन दुःप्रणिधान, खराब मन

१ मन प्रमुख की एकाग्रता करना सो प्रणिधान.

शब्दार्थ

पं० पंचेन्द्रिय जा० यावत् वे० वैमानिक ॥ २८ ॥ ति० तीनप्रकार की जो० योनि प० प्ररूपी सी० शीत ऊष्ण सी० शीतोष्ण ए० ऐसे ए० एकेन्द्रिय को वि० विकलेन्द्रिय ते० तेउकाय व० वर्जकर स० समूर्च्छिम पं० पंचेन्द्रिय ति० तिर्यंच योनिवाला सं० संमूर्च्छिम म०मनुष्यको ति० तीनप्रकार की योनि स० सचित्त अ० अचित्त मी० मिश्र ए० एकेन्द्रिय वि० विकलेन्द्रिय सं० समूच्छिम पं० पंचेन्द्रिय ति० तिर्यंचयोनि वाले को सं० समूर्च्छिम म० मनुष्य को ति०तीनप्रकारकी योनि सं० संवृत वि०विवृत सं० संवृतविवृत ति०

सूत्र

दुप्पणिहाणे कायदुप्पणिहाणे एवं पंचेंदियाणं जाव वेमाणियाणं ॥ २८ ॥ तिविहा जोणी पण्णत्ता तंजहा सीआ उसिणा सीओसिणा । एव मोगिंदियाणं विगलेंदियाणं तेउकाइयवज्जाणं संमुच्छिमपंचेंदियतिरिक्खजोणियाणं संमुच्छिममणुस्साणय तिविहा जोणी प० तं० सचित्ता अचित्ता मीसिया एव मेगिंदियाणं विगलेंदियाणं

भावार्थ

वचन दुःप्रणिधान असत्य वचन और काया दुःप्रणिधान सो काया से पाप करना. ये तीनों पंचेन्द्रिय यावत् वैमानिक में होवे ॥ २८ ॥ भगवंतने संसारी जीवों उत्पन्न होने की तीन योनि बतलाइ हैं. शीत, ऊष्ण और शीतोष्ण. यह तीनों योनियों तेउकाय छोड कर चारों स्थावरों में, तीन विकलेन्द्रिय में, समूच्छिम तिर्यंच पंचेन्द्रिय में और समूर्च्छिम मनुष्य को होती हैं. (प्रथम से तीसरी नरक में एक शीत योनि, चौथी पांचवी में शीत और ऊष्ण. छठी सातवी नरक में मात्र ऊष्ण योनि. सन्नी मनुष्य सन्नी तिर्यंच पंचेन्द्रिय में और देवता को एक मिश्र योनी. और तेउकाय को ऊष्ण.) और भी तीन प्रकारकी योनि

शब्दार्थ तीन प्रकार की योनि कु० कुमुदा सं० शंखावर्त्ता वं० वंशीपत्ता कु० कुमुदा योनि उ० उत्तम पुरुष की मा० माता को कु० कुमुदा योनि में ति० तीन प्रकारके उ० उत्तम पुरुष ग० गर्भ में व० आते हैं अ० अरिहंत च० चक्रवर्ति ब० बलदेव वासुदेव सं० शंखावर्ता योनि इ० स्त्री रत्न को सं० शंखावर्ता योनि में ब० बहुत जी०

सूत्र संमुच्छिम पंचेंदिय तिरिक्ख जोणियाणं संमुच्छिम मणुस्साणय ॥ तिविहा जोणी प० तं० संवुडा वियडा संवुडवियडा ॥ तिविहा जोणी प० तं० कुमुन्नया संखावत्ता वंसीवत्तिया. कुम्मुन्नयाणं जोणी उत्तमपुरिसमाऊणं कुम्मुन्नयाणं जोणिए तिविहा उत्तमपुरिसा गब्भं वक्कमंति तंजहा अरहंता चक्कवट्टी बलदेववासुदेवा. संखावत्ताणं जोणी इत्थि

भावार्थ सचित्त अचित्त और मिश्र, पांच स्थावर, तीन विगलेन्द्रिय समूर्च्छिम तिर्यंच पंचेन्द्रिय और समूर्च्छिम मनुष्य को तीनों योनियों. देवता और नारकीको अचित्त और संज्ञी मनुष्य व संज्ञी तिर्यंचको मिश्र योनि. और भी तीन योनि कहते हैं. संवृत-संकुचित ढकीहुइ योनि, विवृत—पसरी हुइ या उघाडी और संवृतविवृत सो कुच्छढकी हुइ कुच्छ उघाडी या कुच्छ सकडी कुच्छ पसरी. नारकी देवता और पांच स्थावर को संवृत योनि विकलेन्द्रिय, असन्नी मनुष्य और असंज्ञी तिर्यंच को विवृत और संज्ञी मनुष्य और संज्ञी तिर्यंच को संवृत-विवृत. और भी तीन प्रकार की योनि कही है. कूर्म्मोन्नता, शंखावर्त्ता और वंशीपत्रा. कूर्म्मोन्नता योनि

शब्दार्थ

जीव पो० पुद्गल व० आते हैं वि० व्युत्क्रमते हैं च० चवते हैं उ० उपजते हैं णो० नहीं णि० उत्पन्न होते हैं वं० वंशीपत्ता योनि पि० पृथक् ज० जनों को वं० वंशीपत्ता जो० योनि में ब० बहुत पि० पृथक् ज० जन ग० गर्भ में व० आते हैं ॥ २९ ॥ ति० तीन प्रकार की त० तृण वनस्पति काय सं० संख्याता जीव की अ० असंख्याता जीव की अ० अनंता जीवकी ॥ ३० ॥ जं० जम्बूद्वीप का भा० भरत क्षेत्र में त०

सूत्र

यरयणस्स संखावत्ताएणं जोणीए बहवे जीवाय पोग्गलाय वक्कमंति विउक्कमंति चयंति उववज्जंति नोचेवणं णिप्पज्जंति । वंसीपत्ताणं जोणी पिहज्जणस्स वंसीवत्तियाएणं जोणीए बहवे पिहज्जणे गब्भंव क्कमंति ॥२९॥ तिविहा तणवणस्सइ काइया प० तं० संखेज्जजीविया असंखेज्जजीविया अणंतजीविया ॥ ३० ॥ जंबूदीवे दीवे भारहेवासे

भावार्थ

उत्तम पुरुषों की माता को होती है. इस में तीन प्रकार के उत्तम पुरुष उत्पन्न होते हैं १ तीर्थंकर, चक्रवर्ती और बलदेववासुदेव. शंखावर्त्ता चक्रवर्ती के स्त्री रत्न (श्री देवी) को होती है. उस में अनेक पुद्गल व जीवों उत्पन्न होते हैं, और नष्ट होजाते हैं. परंतु निपजते नहीं हैं. वंशीपत्रा सब सामान्य मनुष्यों की माता को होती है उस में गर्भरूप बहुत जीव उत्पन्न होते हैं ॥ २९ ॥ तीन प्रकार की वनस्पति. संख्याते जीव जिस में उत्पन्न होवे सो, असंख्याते जीव उत्पन्न होवे सो और अनंत जीव उत्पन्न होवे सो ॥ ३० ॥

शब्दार्थ तीन ति० तीर्थ मा० मागध व० वरदाम प० प्रभास ए० ऐरवत क्षेत्र में जं० जम्बूद्वीप के म० महाविदेह क्षेत्र में ए० एकेक च० चक्रवर्ति आदि वि० विजय में त० तीन ति० तीर्थ मा० मागध व० वरदाम प० प्रभास ए० ऐसे धा० धातकी खंड में पु० पूर्वार्ध प० पश्चिमार्ध में पु० पुष्करार्ध द्वीप के पु० पूर्वार्ध प० पश्चिमार्ध में ॥ ३१ जं० जम्बूद्वीप के भ० भरत क्षेत्र में ती० अतीत उ० उत्सर्पिणी में सु० सुषमकाल ति० तीन क्रोडाक्रोडी सागरोपम का० काल हो० था० ए० ऐसे ओ० अवसर्पिणी में ण० विशेष आ० आगामिक

सूत्र

तओ तित्था प० तं० मागहे वरदामे पभासे एवं एरवएवि । जंबूद्दीवे दीवे महाविदेहवासे एगमेगे चक्कवट्टिविजए तओ तित्था प० तं० मागहे वरदामे पभासे । एवं धायइखंडे दीवे पुरच्छिमद्धेवि पच्चत्थिमद्धेवि. पुक्खरवरदीवद्धे पुरच्छिमद्धेवि पच्चत्थिमद्धेवि ॥ ३१ ॥ जंबूद्दीवे दीवे भरहेरवएसु वासेसु तीआए उस्सप्पिणीए सुसमाए समाए तिन्निसागरोवमकोडाकोडीओ कालो होत्था । एवं ओसप्पिणीए णवरं प० । आगमे-

भावार्थ जम्बू द्वीप के भरतक्षेत्र ऐरवत क्षेत्र में, महाविदेह क्षेत्र के प्रत्येक चक्रवर्ति विजय में ऐसे ही धातकी खंड के पूर्व पश्चिम के भरत ऐरवत क्षेत्र में, महाविदेह क्षेत्र के प्रत्येक चक्रवर्त्यादि विजय में अलग २ और ऐसे ही पुष्करार्ध द्वीप के पूर्व पश्चिम के भरत ऐरवत क्षेत्र में और महाविदेह क्षेत्र के प्रत्येक विजय में मागध, वरदाम और प्रभास ये तीन तीर्थ हैं ॥ ३१ ॥ जम्बूद्वीप के भरत ऐरवत क्षेत्र में वैसे ही धातकी

शब्दार्थ

उ० उत्सर्पिणी में भ० होगा ए० ऐसे धा०धातकी खंड में पु०पूर्वार्ध में प० पश्चिमार्ध में ए० ऐसे पु० अर्ध पुष्कर द्वीप में पु० पूर्वार्ध में प० पश्चिमार्ध में का० काल भा० कहना ॥ ३२ ॥ जं० जंबूद्वीप के भ० भरत ऐरवत क्षेत्र में ती० अतीत उ० उत्सर्पिणी में सु०सुषमसुषमा का० काल में म०मनुष्य ति० तीन गाउ उ० ऊंचे उ० ऊंचपने ति० तीन पल्योपम ष० उत्कृष्ट आयुष्य पा० पाला ए० ऐसे इ० इस ओ० अवसर्पिणी में आ० आगामिक उ० उत्सर्पिणी में जं० जंबूद्वीप के दे० देवकुरु उत्तरकुरुक्षेत्र में म० मनुष्य

सूत्र

स्साए उस्साप्पिणीए भविस्सइ ॥ एवं धाइयखंडे पुराच्छिमद्धेवि पच्चत्थिमद्धेवि । एवं पुक्खरवरदीवड्ढे पुरात्थिमद्धे पच्चत्थिमद्धेवि कालो भाणियव्वो ॥ ३२ ॥ जंबूद्दीवे द्दीवे भरहेरवएसु वासेसु तीयाए उस्साप्पिणीए सुसमसुसमाए समाए मणुया तिन्नि गाउआइं उड्ढं उच्चत्तेणं. तिन्निपलिओवमाइं परमाउं पालइत्ता. एवं इमीसे ओसाप्पिणीए आगमेस्साए उस्साप्पिणीए ॥ जंबूद्दीवे द्दीवे देवकुरुउत्तरकुरासु मणुया तिन्नि गाउआ-

भावार्थ

खंड व पुष्करार्ध के पूर्व पश्चिम भरत ऐरवत में अतीत कालकी उत्सर्पिणी, वर्तमान की अवसर्पिणी और आगामिक कालकी उत्सर्पिणी के सुषम नामक आरा तीन क्रोडाक्रोड सागरोपम का है ॥ ३२ ॥ जम्बूद्वीप के भरत व ऐरवत क्षेत्र में अतीत उत्सर्पिणी, वर्तमात अवसर्पिणी और आगामिक उत्सर्पिणी के सुखमा सुखमी आरा में सदैव तीन कोश का शरीर प्रमाण, और तीन पल्योपम का उत्कृष्ट आयुष्य होता है.

शब्दार्थ

ति० तीन गाउ उ० ऊंचे उ० ऊंचपने ति० तीन पल्योपम प० उत्कृष्ट आयुष्य पा० पालते हैं ए० एसे जा० यावत् पु० अर्ध पुष्कर द्वीप के प० पश्चिमार्ध में ॥ ३३ ॥ ज० जम्बूद्वीप के भ० भरत ऐरवत क्षेत्र में ए० एकेक ओ० अवसर्पिणी उ० उत्सर्पिणी में त० तीन वंश उ० उत्पन्न हुवे उ० उत्पन्न होते हैं उ० उत्पन्न होंगे अ० अरिहंत वंश च० चक्रवर्ति वंश द० दशार वंश ए० ऐसे जा० यावत् पु० अर्ध पुष्कर के प० पश्चिमार्ध में जं० जम्बूद्वीप के भ० भरत ऐरवत क्षेत्र में ए० एकेक ओ० अवसर्पिणी उ० उत्स-

सूत्र

इं उड्ढं उच्चत्तेणं प० तिन्निपलिओवमाइं परमाउं पालयंति । एवं जाव पुक्खरवरदीवड्ढे पच्चत्थिमड्ढे ॥ ३३ ॥ जंबूद्दीवे दीवे भरहेरवएसु वासेसु एगमेगाए ओसप्पिणी उस्सप्पिणीए तओ वंसा उप्पज्जिंसु वा उप्पज्जंति वा उप्पज्जिस्संतिवा तं० अरहंतवंसे चक्कवट्टिवंसे दसारवंसे । एवं जाव पुक्खरवरदीवड्ढे पच्चत्थिमड्ढे ॥ जंबूद्दीवे दीवे भरहेरवएसु वासेसु एगमेगाए ओसप्पिणीउस्सप्पिणीए तओ उत्तमपुरिसा उप्पज्जिंसु वा

भावार्थ

ऐसे ही देवकुरु उत्तरकुरु में मनुष्य का तीन कोश का शरीर और उत्कृष्ट तीन पल्योपम का आयुष्य. ऐसे ही धातकी खंड और पुष्करार्धद्वीप के पूर्व पश्चिम भाग के देवकुरु उत्तरकुरु क्षेत्रों के संबंध में जानना॥३३॥ जम्बूद्वीप के भरत ऐरवत क्षेत्र में, धातकी खंड और पुष्कारार्ध द्वीप के पूर्व पश्चिम भरत ऐरवत क्षेत्र में अतीत, अनागत कालकी उत्सर्पिणी व वर्तमान कालकी अवसर्पिणी तीन वंशोंकी उत्पत्ति होती है. अरि-

शब्दार्थ

पिणी में त० तीन उ० उत्तम पुरुष उ० उत्पन्न हुवे उ० उत्पन्न होते हैं उ० उत्पन्न होंगे अ० अरिहंत च० चक्रवर्ति ब० बलदेव वासुदेव ए० ऐसे जा० यावत् पु० पुष्करार्ध द्वीप के प० पश्चिमार्ध में त० तीन अ० यथा आयुष्य पा० पालते हैं अ०अरिहंत च० चक्रवर्ति ब०बलदेव वासुदेव त०तीन म०मध्यम आयुष्य पा० पालते हैं अ० अरिहंत च० चक्रवर्ति ब० बलदेव वासुदेव ॥ ३४ ॥ बा० बादर तेऊकाया की उ० उत्कृष्ट ति० तीन रा० अहोरात्रि की ठि० स्थिति बा० बादर वायुकाया की उ० उत्कृष्ट ति० तीन हजार

सूत्र

उप्पज्जंतिवा उप्पज्जिस्संतिवा तं० अरहंता चक्कवट्टी बलदेववासुदेवा । एवं जाव पुक्खरवरदीवड्ढपच्चत्थिमद्धे ॥ तओ अहाउयं पालेंति तं० अरहंता चक्कवट्टी बलदेववासुदेवा तओ मज्झिममाउयं पालयंति तंजहा अरहंता चक्कवट्टी बलदेववासुदेवा ॥३४॥ बायरतेउकाइयाणं उक्कोसेणं तिन्निराइंदियाइं ठिई प० । बायरवाउकाइयाणं उक्कोसेणं तिन्निवाससहस्साइं ठिई पण्णत्ता ॥ ३५ ॥ अहभंते सालीणं वीहीणं गोधू-

भावार्थ

हंत का वंश, चक्रवर्ती का वंश और दशारका वंश (बलदेव और वासुदेव का वंश). तीन उत्तम पुरुष उत्पन्न होते हैं अरिहंत, चक्रवर्ती और बलदेव वासुदेव. उक्त तीनों पूर्ण और मध्यम (वृद्धावस्था विना का) आयुष्य पालते हैं ॥ ३४ ॥ बादर तेऊकाय की उत्कृष्टी तीन अहोरात्रि की और बादर वायुकाया की उत्कृष्टी तीन हजार वर्ष की स्थिति कही है ॥ ३५ ॥ प्रश्न-अहो भगवन्त ! शाल व्रीहि, गेहुं, यव,

शब्दार्थ

वर्ष की ठि० स्थिति प० प्ररूपी ॥ ३५ ॥ अ० अहो भगवन् ! सा० शाल वी० व्रीहि गो० गेहूं ज० यव ज० जवजव ए० इन ध० धान्य को को० कोठे में रखे प० पाला में रखे मं० मांचेपर रखे मा० मालापर रखे ओ० बंधकर लि० लीपकर लं० लंछनांकित मु० मुद्रा कर पि० ढककर के० कितना काल जो० योनि सं० रहती है ज० जघन्य अं० अन्तर्मुहूर्त उ० उत्कृष्ट ति० तीन संवत्सर ते० इस उपरांत जो० योनि प० विलयमान होती है ते० इस उपरांत जो० योनि म०परिध्वंस पाती है ते० उपरांत वि०

सूत्र

माणं जवाणं जवजवाणं एएसिणं धन्नाणं कोट्ठाउत्ताणं पल्लाउत्ताणं मंचाउत्ताणं मालाउत्ताणं ओलित्ताणं लित्ताणं लंछियाणं मुद्दियाणं पिहियाणं केवइयं कालं जोणी संचिट्ठइ ? जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं तिन्निसंवच्छराइं तेणपरं जोणी पमिलायइ तेणपरं जोणी पविद्धंसइ तेणपरं जोणी विद्धंसइ तेणपरं बीए अबीए भवइ तेणपरं जोणी वोच्छेदे प० ॥३६॥ दोच्चाएणं सक्करप्पभाए पुढवीए नेरइयाणं उक्कोसेणं तिन्निसागरोवमाइं ठिई प० । त-

भावार्थ

जवजव इन अनाजों को कोठे में, कोठी में, पाले में, घरघर में, मेंडी में इत्यादि स्थानों में रखकर चारों तरफ लीप, उस को अच्छी तरह मजबूत बना कर यत्नापूर्वक रखे तो कितने दिन तक वे योनि सहित रह सकते हैं ? जघन्य अंतरमुहूर्त्त उत्कृष्ट तीन वर्ष. तीन वर्ष पीछे योनि म्लान हो जाती है, बीज

विनाश पाती है ते०इस उपरांत बी०बीज अ०अबीज भ०होता ते०इस उपरांत जा०योनि वो० विच्छेद होवे ॥ ३६ ॥ दो० दूसरी स० शर्कर्प्रभा पु० नरक में ने० नारकी को उ० उत्कृष्ट ति० तीन सागरोपम ठि० स्थिति त० तीसरा वा० वालुप्रभानरक में ज० जघन्य णे० नारकी को ति० तीन सागरोपम ठि० स्थिति पं० पांचवी धू० धूम्रप्रभा नरक में ति० तीन लाख नरकावास ति० तीन नारकी में णे० नारकी को उ० ऊष्ण वेदना प० प्ररूपी प० पहिली दो० दूसरी त० तीसरी ति० तीन नरक में णे० नारकी उ० ऊष्णवेदना प० अनुभवते वि० विचरते हैं तं० वह प० पहली दो० दूसरी त० तीसरी ॥ ३७ ॥ त० तीन लो० लोक स० समपक्षि प० देखाते अ० अप्रतिष्ठान नरक जं० जम्बूद्वीप स० सर्वार्थ

सूत्र

च्चाएणं वालुयप्पभाए पुढवीए जहन्नेणं णेरइयाणं तिन्निसागरोवमाइं ठिई प० पंचमाएणं धूमप्पभाए पुढवीए तिन्निनिरयावास सयसहस्सा प० तिसुणं पुढवीसु णेरइयाणं उसिणवेयणा प० तं० पढमाए दोच्चाए तच्चाए । तिसुणं पुढवीसु णेरइया उसिणं वेयणं पच्चणुभवमाणा विहरंति तं० पढमाए दोच्चाए तच्चाए ॥ ३७ ॥ तओ लोगे

भावार्थ

अबीज होजाते हैं और उत्पन्न होने की शक्ति रहित होते हैं ॥ ३६ ॥ दूसरी शर्कर प्रभा पृथ्वी में नरक के नेरीयों की स्थिति उत्कृष्ट तीन सागरोपम की है और वालुक प्रभा के नेरियों की जघन्य स्थिति तीन सागरोपम की है. पांचवी धूम्रप्रभा पृथ्वी में तीन लाख नरकवास रहे हुवे हैं. पहिली, दूसरी और तीसरी नरक में ऊष्ण वेदना है और वहां के नेरीयों भी ऊष्ण वेदना वेदते हुवे विचरते हैं ॥ ३७ ॥ एकके ऊपर

शब्दार्थ

सिद्धविमानत० तीन लोक में स० सरिखे स० रूपक्ष स० स प्रतिदिक्० सीमंत नरक वास स० समयक्षेत्रई० ईषत् प्रागभार पृथ्वी ॥ ३८ ॥ त० तीन समुद्र प० स्वभाव से उ० उदक रस का० कालोदधि पु० पुष्करोदधि स० स्वयंभूरमण समुद्र त० तीन समुद्र ब० बहुत म० मच्छ क० कच्छ से मा० भरे हुवे ल० लवण समुद्र का० कालोदधि स० स्वयंभूरमण समुद्र ॥ ३९ ॥ त० तीन लो० लोक में णि० निःशील णि० व्रत

सूत्र

समासपक्खि सपाडीदिसिं प० तं० अप्पइट्ठाणे णरए जंबूदीवे दीवे सव्वट्ठसिद्धे महाविमाणे ॥ तओ लोगे समासपक्खि सपाडिदिसिं प० तं० सीमंतए णरए समयखेत्ते ईसिं पब्भारापुढवी ॥ ३८ ॥ तओ समुद्दा पगईए उदगरसेणं प० तं० कालोदे पुक्खरोदे सयंभुरमणे तओ समुद्दा बहुमच्छकच्छमाइन्ना प० तं लवणे कालोदे सयंभुरमणे ॥ ३९ ॥ तओ लोगे णिस्सीला णिव्वया णिग्गुणा णिम्मेरा णिपच्चक्खाणपो-

भावार्थ

एक और परस्पर समतुल्य एक लक्ष योजन की लम्बाइ चौडाइवाले तीन स्थान भगवंतने फरमाये हैं. १ सातवी नरक का अप्रतिष्ठान नरकावासा, २ जम्बू द्वीप और ३ सर्वार्थ सिद्ध विमान. ऐसे ही और भी तीन स्थान बरोबर पेंतालीस लक्ष योजन के कहे हैं. १ पहिली नरक का सीमंत नामक नरकावासा २ समय क्षेत्र सो अढाइ द्वीप ३ इषत् प्रागभार पृथ्वी नामक सिद्ध सिला ॥ ३८ ॥ तीन समुद्र के पानी का स्वाद स्वभाव से ही पानी जैसा कहा १ कालोदधि, पुष्कर और ३ स्वयंभूरमण. ऐसे ही तीन समुद्र में

रहित णि०गुण रहित णि०दया रहित णि०नहीं पु०पृथ्वी प०प्रत्याख्यान पो० पोषध उ० उपवासका० काल के अवसरमें का०कालं करके अ०नीचे स०सातवी अ०अप्रतिष्ठान ण०नरकमें ने०नारकीपने उ०उत्पन्न होतेहैं स०राजा मं० मंडलीक म० महारंभी कुटुम्बी त० तीन लो०लोक में स०सुशील सु० सुव्रति स० सुगुणी स० दयावान स० सहित प०प्रत्याख्यान पो० पोषध उपवास का० कालके अवसर में का० कालकरके स० सर्वार्थसिद्ध विमान में दे० देवपने उ० उत्पन्न भ० होते हैं रा० राजा प० दूर करने वाला का० काम

सूत्र

सहोववासा कालमासे कालंकिच्चा अहे सत्तमाए पुढवीए अप्पइट्ठाणे णरए णेरइयत्ताए उववज्जंति तं० रायाणो मंडलियाजेय महारंभा कोडुंबी ॥ तओ लोए ससीला सव्वया सगुणा सम्मेरा सपच्चक्खाणपोसहोववासा कालमासे कालं किच्चा सव्वट्ठसिद्धे महाविमाणे देवत्ताए उववंतारो भवंति तंजहा रायाणो परिचत्तकामभोगा सेणावई प-

भाषार्थ

मच्छ कच्छ आदि जलचर बहुत रहते हैं. लवण समुद्र, कालोदधि और स्वयंभूरमण समुद्र ॥ ३९ ॥ दान रहित, शील रहित, मुलगुण उत्तरगुणादि व्रत रहित दया रहित और नवकारसी आदि प्रत्याख्यान रहित तीन पुरुषों कालके अवसर में काल करके सातवी नरक में अप्रतिष्ठान नरकावासा में नारकीपने उत्पन्न होते हैं. १ राजा चक्रवर्ती वासुदेव आदि २ मंडलिक राजा, ३ बहुत कुटुम्ब व धन के मालिक अथवा महाआरंभ करनेवाले. शील व्रतादि पालनेवाले, प्रत्याख्यान करनेवाले और पोषध उपवास करने

शब्दार्थ

भोग को से० सेनापति प० प्रशस्तार ॥ ४० ॥ बं० ब्रह्म देवलोक लं० लंतक क० कल्प में वि० विमान ति० तीन वर्ष के प० प्ररूपा कि० कृष्ण नी० नील लो० लाल आ० आणत पा० प्राणत आ० आरण अ० अच्युत क० कल्प में दे० देव का भ० भव धारणी स० शरीर उ० उत्कृष्ट ति० तीन र० हाथ उ० ऊंचे उ० ऊंचपने ॥४१॥ ब० तीन प० प्रज्ञप्ति को का० काल में अ० अध्ययन करते हैं चं० चंद्र प्रज्ञप्ति सू० सूर्य प्रज्ञप्ति दी० द्वीपसागर प्रज्ञप्ति ॥ ४२ ॥

÷ +

सूत्र

सत्थारो ॥ ४० ॥ बंभलोगलंतएसुणं कप्पेसु विमाणा तिवन्ना पन्नत्ता तं० किण्हा नीला लोहिया । आणयपाणयारणच्चुएसुणं कप्पेसु देवाणं भवधारणिज्जसरीरगा उक्कोसेणं तिन्नि रयणीओ उड्ढं उच्चत्तेणं प० ॥ ४१ ॥ तओ पन्नत्तीओ कालेणं अहिज्जंति चंदपन्नत्ती सूरपन्नत्ती दीवसागरपन्नत्ती ॥ ४२ ॥ तीयट्ठाणस्स पढमोद्देसो सम्मत्तो

* *

भावार्थ

वाले तीन मनुष्य कालकर सर्वार्थ सिद्ध विमान में देवतापने उत्पन्न होते हैं. कामभोग को छांडनेवाले चक्रवर्त्यादि २ सेनापति और ३ प्रशस्तार (धर्म शास्त्र जाननेवाले) ॥ ४० ॥ ब्रह्मदेव लोक व लंतकदेव लोक में तीन वर्ण कहे. काला, हरा, और लाल. आनत, प्राणत, आरण और अच्युत देवलोक में भवधारणीय शरीरकी तीन हाथकी उत्कृष्ट अवगाहना ॥४१॥ चंद्रप्रज्ञप्ति, सूर्यप्रज्ञप्ति और द्वीप सागर प्रज्ञप्तिका दिन

शब्दार्थ

ति० तीन प्रकार का लो० लोक प० प्ररूपा णा० नामेंद्र ठ० स्थापना इन्द्र द० द्रव्येंद्र ति० तीन प्रकारका लोक णा० ज्ञान लोक दं० दर्शन लोक च० चारित्र लोक ति० तीन प्रकारका लोक उ० उर्ध्वलोक अ० अधोलोक ति० तिर्यग् लोक ॥ १ ॥ च० चमरेंद्र की अ० असुरेन्द्र की अ० असुरकुमार राजाकी

सूत्र

तिविहे लोगे पन्नत्ते तंजहा णामलोगे ठवणलोगे दव्वलोगे तिविहे लोगे प० तं० णाणलोगे दंसणलोगे चरित्तलोगे । तिविहे लोगे प० तं० उड्ढलोगे अहोलोगे तिरियलोगे ॥ १ ॥ चमरस्सणं असुरिंदस्स असुरकुमाररन्नो तओ परिसाओ पण्णत्ताओ तं०

भावार्थ

और रात्रि के प्रथम और अन्तिम प्रहर में पठन कियाजाता है ॥ ४२ ॥ यह तीसरा ठाणा का पाहला उद्देशा पूर्ण हुवा.

* *

भगवंतने तीन प्रकारके लोक कहे हैं चउदह रज्ज्वात्मक सो नाम लोक, उस की स्थापना करना सो स्थापना लोक, और पंचास्तिकाय के पिण्डरूप सो द्रव्य लोक. और भी तीन प्रकार के लोक कहे हैं केवल ज्ञान आदि ज्ञान लोक, सम्यक्त्वादि दर्शन लोक, सामायिकादि चारित्र लोक. और भी तीन लोक देश उना सातराजु प्रमाण ऊर्ध्व लोक, देशउणा सात राजु प्रमाण अधोलोग, और अठारहसो योजन प्रमाण का तिर्च्छा लोक ॥ १ ॥ भगवंतने सब इन्द्रों की तीन २ परिषदायें कही हैं. आभ्यंतर परिषदा

शब्दार्थ

त० तीन प० परिषदा स० समिता चं० चंडा जा० जाया अ० आभ्यंतर की स० समिता म० मध्यकी चं० चंडा बा० बाह्य जा० जाया च० चमरेंद्रकी अ० असुरकुमारेन्द्रके अ० असुरकुमार राजाके सा० सामानिक दे० देवताको त० तीन प० परिषदा प० प्ररूपी स० समिता ज० जैसे च० चमरेन्द्र की ए० ऐसे ता० त्रायस्त्रिंशक लो० लोकपालकी तुं० तुंबा तु० तुडिया प० पत्या ए० ऐपे अ० अग्रमहिषी ब० बलेंद्र की जा० यावत् अ० अग्रमाहिषी की ध० धरणेन्द्र की सा० सामानिक ता० त्रायस्त्रिंशक की स० समिता चं० चंडा जा०

सूत्र

समिया चंडा जाया अब्भंतरिया समिया मज्झामिया चंडा बाहिरया जाया। चमरस्सणं असुरिंदस्स असुरकुमाररन्नो सामाणियाणं देवाणं तओ परिसाओ पण्णत्ताओ तं० समिया जहेव चमरस्स। एवं तायत्तीसगाणवि लोगपालाणं तुंबा तुडिया पच्चा। एवं अग्गमहिसीणवि ॥ बलस्सवि एवं चेव जाव अग्गमहिसीणं। धरणस्सय सामाणिय

भावार्थ

इस परिषदावाले कार्य प्रयोजन से बुलाने से आवे. मध्यम परिषदा.—इस परिषदावाले बोलाये आवे और विना बोलाये भी आवे. बाह्य परिषदावाले विना बोलाये आवे. इस में से असुरकुमार के चमरेन्द्र की उक्त तीन परिषदा. आभ्यंतरका नाम समिता, मध्यमका नाम चंडा, और बाह्यका नाम जाया और चमरेन्द्र के सामानिक देवताओं को भी तीन परिषदा कही समिता, चंडा, और जाया और त्रायस्त्रिंश देवताओं को भी उक्त तीन परिषदायें हैं, चमरेंद्र के लोकपाल को तीन परिषदा कही. आभ्यंतर तुम्बा, मध्यम

शब्दार्थ

जाया लो० लोकपालकी अ० अग्रमहिषी की ई० ईशा तु० तुडिया द० दृढरथा ज० जैसे ध० धरणेन्द्रका त० तैसे से० शेष भ० भवनपतिकी का० काल की पि० पिशाचेन्द्र के पि० पिशाच र० राजाकी त० तीन प० परिषदा प० प्ररूपी ई० ईशा तु० तुडिया द० दृढरथा ए० ऐसे सा० सामानिक अ० अग्रमहिषीकी ए० ऐसे जा यावत गी० गीतरति गी० गीतयशकी चं० चंद्र की जो० ज्योतिष के इन्द्र की जो० ज्योतिषी

सूत्र

तायत्तीसगाणंच समिया चंडा जाया । लोगपालाणं अग्गमहिसीणं ईसा तुडिया दढरहा जहा धरणस्स तहा सेसाणं भवणवासीणं ॥ कालस्सणं पिसाइंदस्स पिसायरन्नो तओ परिसाओ पन्नत्ताओ तं० ईसा तुडिया दढरहा । एवं सामाणिय अग्गमहिसीणंवि एवं जाव गीयरइ गीयजसाणं चंदस्सणं जोइसिंदरस जोइसरन्नो तओ परिसाओ पन्नत्ताओ तं० तुंबा तुडिया पत्ता । एवं सामाणिय अग्गमहिसीणं एवं सूरस्स

भावार्थ

तुडिया और बाह्य पत्या ऐसे ही अग्रमहिषी को भी उक्त तीनों परिषदाओं जानना. बलेन्द्र व उन के सामानिक, और त्रायस्त्रिंशक को समिया, चंडा, और जाया ये तीन परिषदा हैं. और उन के लोकपाल तथा अग्र महिषी को भी तुम्बा, तुडिया और प्रत्या ये तीन परिषदाओं जानना. धरणेन्द्र, सामानिक और त्रायस्त्रिंश को सामियादि तीन परिषदा, उन के लोकपाल और अग्रमहिषी को ईसा, तुडिया और दृढरथा ये तीन परिषदाओं हैं. ऐसे ही शेष सब भवनपति का अधिकार जानना. व्यंतर के पिशाच जाति के राजा

शब्दार्थ

र० राजाकी त० तीन प० परिषदा प० प्ररुपी तुं० तुंबा तु० तुडिया प० पत्या ए० ऐसे सा० सामानिक अ० अग्रमहिषी की ए० ऐसे सू० सूर्यकी स० शक्रेन्द्र की दे० देवेन्द्रकी त० तीन प० परिषदा प० प्ररुपी स० समिता चं० चंडा जा० जाया ज० जैसे च० चमरेन्द्र की ए० ऐसे जा० यावत् अ० अग्र महिषी की ए० ऐसे जा० यावत् अ० अच्युत के लो० लोकपाल की ॥ २ ॥ त० तीन जा० प्रहर प० प्रथम प्रहर म० मध्यम प्रहर प० पिछला प्रहर ति० तीन जा० प्रहर में आ० आत्मा के० केवलि प० प्ररूपा ध० धर्म को

सूत्र

वि सक्कस्सणं देविंदस्सरन्नो तओ परिसाओ पन्नत्ताओ तं० समिया चंडा जाया । जहा चमरस्स एवं जाव अग्गमहिसीणं एवं जाव अच्चुयस्स लोगपालाणं ॥ २ ॥ तओ जामा प० तं० पढमे जामे मज्झिमे जामे पच्छिमे जामे. तिहिं जामेहिं आया केवलि

भावार्थ

कालेन्द्र आदि सोलह जाति के बत्तीस इन्द्र उन के सामानिक यावत् अग्रमहिषीओं को ईशा, तुडिया और दृढरथा नाम की तीन परिषदाओं हैं. ज्योतिष के चंद्र और सूर्य, उन के सामानिक यावत् अग्रमहिषी को तीन परिषदाओं. तुम्बा, तुडिया और पत्या. शक्रेन्द्र, ईशानेन्द्र यावत् अच्युतेन्द्र, उन के सामानिक यावत् लोकपाल को तीन परिषदा समिता, चंडा और जाया ॥ २ ॥ भगवंतने दिन रात्रि के तीन यांम

---

१ दिन या रात्रि का चार प्रहर होता है परंतु प्रातः, मध्यान्ह और संध्या ऐसी तीन की विवक्षा करने की होने से तीन ही गीने गये है.

शब्दार्थ

ल० पाप्तकरे स० सुनने को तं० वह ज० जैसे प० प्रथम प्रहर में म० मध्यम प्रहर में प० पिछला प्रहर में ए० ऐसे जा० यावत् के० केवल ज्ञान उ० प्राप्त करे प० प्रथम प्रहर में म० मध्यम प्रहर में प० पिछला प्रहर में त० तीन वय प० प्रथम वय म० मध्यम वय प० पिछली वय ति० तीन वय में आ० आत्मा के० केवलि प० प्ररूपा ध० धर्म को ल० प्राप्त करे स० सुनने को प० प्रथम वय में म० मध्यम वय में प० पिछली वय में ए० यह ग० अधिकार णे० जानना जा० यावत् के० केवल ज्ञान ॥ ३ ॥ ति० तीन प्रकार

सूत्र

पन्नत्तं धम्मं लभेज्ज सवणयाए तंजहा पढमे जामे मज्झिमे जामे पच्छिमे जामे एवं जाव केवलनाणं उप्पाडेज्जा पढमे जामे मज्झिमे जामे पच्छिमे जामे ॥ तओ वया प० तं० पढमे वए मज्झिमे वए पच्छिमे वए. तिहिं वएहिं आया केवलिपण्णत्तं धम्मं लभेज्ज सव णयाए तं० पढमे वए मज्झिमे वए पच्छिमे वए। एसोचेव गमो णेयव्वो जाव केवलनाणं ॥ ३ ॥ तिविहा बोही प० तं० णाण बोही दंसण वोही चरित्त बोही । तिविहा बुद्धा

भावार्थ

(प्रहर) कहे हैं प्रथम प्रहर, दूसरा प्रहर और छेल्ला प्रहर. इन तीन प्रहर में जीव केवली भाषित धर्म श्रवण कर प्राप्त कर सकता है यावत् केवल ज्ञान प्राप्त कर सकता है. ऐसे बाल्यावस्था, युवावस्था और वृद्धावस्था में केवली भाषित धर्म श्रवण कर प्राप्त कर सकता है यावत् केवलज्ञान उत्पन्न हो सकता है. ॥ ३ ॥ तीन प्रकारकी बोधि भगवंतने कही. ज्ञान बोधि, दर्शन बोधि और चारित्र बोधि. बोधि सहित

शब्दार्थ की बो० बोधि णा० ज्ञान बोधि दं० दर्शन बोधि च० चारित्र बोधि ति० तीन प्रकार बु० बुद्ध ना० ज्ञान बुद्ध दं० दर्शन बुद्ध च० चारित्र बुद्ध ए० ऐसे मो० मोह मू० मूढ ॥४॥ ति० तीन प्रकार की प० प्रवर्ज्या इ० यह लोक प्रतिबन्ध प० पर लोक प्रतिबन्ध दु० उभय लोक प्रतिबन्ध ति० तीन प्रकार की प० प्रवर्ज्या पु० प्रथम प्रतिबन्ध प० पीछे प्रतिबन्ध दु० उभय प्रतिबन्ध ति० तीन प्रकार की प० प्रवर्ज्या तु० दुःख

सूत्र

प० तं० णाणबुद्धा दंसणबुद्धा चरित्तबुद्धा । एवं मोहे मूढा ॥ ४ ॥ तिविहा पव्वज्जा प० तं० इहलोगपडिबद्धा, परलोगपडिबद्धा, दुहओपडिबद्धा । तिविहापव्वज्जा पण्णत्ता तंजहा पुरओपडिबद्धा, मग्गओपडिबद्धा, दुहओपडिबद्धा, । तिविहापव्वज्जा प० तं०

भावार्थ पुरुष सो बुद्ध उस के तीन भेद. ज्ञान बुद्ध, दर्शन बुद्ध और चारित्र बुद्ध. बोधि रहित पुरुष सो मूढ उस के भी तीन भेद जानना ॥४॥ जीवों तीन कारनसे दीक्षा लेकर साधु बनते हैं १ इस लोक के सुखकी वांच्छा से, अर्थात् कुटुम्ब वगैरह की चिन्ता से दूर रहे, इच्छित वस्त्र भोगवकर सुख पावूंगा इत्यादि विचार से दीक्षा लेवे सो इस लोक प्रतिबद्ध दीक्षा, २ परलोक में देवता होवूंगा ऐसे विचारों से दीक्षा लेवे सो परलोक प्रतिबद्ध, ३ इस लोक में और परलोक में सुखी होवूंगा इस विचार से दीक्षा लेना सो दोनों लोक प्रतिबद्ध. और भी दीक्षा तीन प्रकार की. दीक्षा लेकर शिष्यादि के मोह में बंधा रहे सो पूर्व प्रतिबंध, दीक्षा लेकर स्वजनादि में स्नेह अथवा छेद करे सो पश्चात्प्रतिबन्ध, और दोनों में बन्धे सो

शब्दार्थ

से ग्रहण करे पु० सत्कारके लिये ग्रहण करे बु०बोध से ग्रहण करे ति०तीन प्रकार की प० प्रवर्ज्या उ०उपपात होने से अ०उपदेश होनेसे स०संकेत होनेसे ॥५॥ त०तीन नियंठा णो०संज्ञा रहित उ०वर्णवे पु०पुलाक णि० निर्ग्रंथ सि० स्नातक त० तीन णि० नियंठा स० संज्ञा णो० नो संज्ञा प० प्ररूपा प० बकुस प० प्रति

सूत्र

तुयावइत्ता, पुयावइत्ता, बुयावइत्ता। तिविहा पव्वज्जा पण्णत्ता तं०उवायपव्वज्जा, अक्खायपव्वज्जा, संगारपव्वज्जा ॥ ५ ॥ तओ णियंठा णोसण्णोवउत्ता प० तं० पुलाए, णियंठे, सिणाए तओ नियंठा सण्णणोसण्णोवउत्ता प० तं बउसे, पडिसेवणा कुसीले,

भावार्थ

उभय प्रतिबन्ध. और भी तीन प्रकार की दीक्षा. शारीरिक मानसिक दुःख देकर दीक्षा देवे, जैसे मेतार्य को देवने पीडा उत्पन्न करके दीक्षा ग्रहण कराई, पूजा महत्व बतलाकर दीक्षा देवे, और धर्म का स्वरूप समझाकर दीक्षा देवे जैसे गौतम स्वामीने हाली को समझाकर दीक्षा दिलाइ, और भी तीन प्रकारकी दीक्षा कही. १ गुरु की सेवा प्रवर्ज्या अर्थात् जब मैं दीक्षा अंगीकार करूंगा तब गुरु की सेवा आदि करूंगा २ धर्म देशना देकर प्रवर्ज्या लेना जैसे फल्गुरक्षितने कुटुम्ब को धर्म देशना देकर दीक्षा ली, और ३ संकेत प्रवर्ज्या–जब तुम दीक्षा लेवोगे तब मैं भी दीक्षा लेऊंगा ॥ ५ ॥ मोहनीय कर्म की ग्रन्थि को छेदनेवाले निर्ग्रंथ कहेजाते हैं. तीन निर्ग्रंथ संज्ञा रहित कहे गये हैं. पुलाक लब्धिवन्त सो जगत को भस्म करने की शक्ति होने पर भी लब्धि न फोरवे मोह का उपशम या क्षय किया होवे सो निर्ग्रंथ

शब्दार्थ

सेवना क० कषाय कुशील ॥ ६ ॥ त०तीन से०महाव्रत आरोपन भूमि उ०उत्कृष्ट म०मध्यम ज०जघन्य उ० उत्कृष्ट छ० छमास म० मध्यम च० चार मास ज० जघन्य स० सात रा० अहो रात्रि ॥ ७ ॥ त० तीन थे०स्थविर भूमि प०प्ररूपी जा०जाति स्थविर सु०सूत्र स्थविर प०पर्याय स्थविर स०साठ वर्ष जा०जन्म स० श्रमण नि० निर्ग्रन्थ जा० जाति स्थविर ठा० ठाणांग स० समवायांग ध० धारन करने वाला स० श्रमण नि० निर्ग्रन्थ सु० सूत्र स्थविर वी० वीस वर्ष प० प्रवर्जा वाला स० श्रमण नि० निर्ग्रन्थ प० प्रवर्जा स्थविर

सूत्र

कसायकुसीले ॥ ६ ॥ तओसेहभूमीओ प० तं० उक्कोसा, मज्झिमा, जहण्णा उक्कोसा छम्मासा, मज्झिमा चउमासा, जहन्नासत्तराइंदिया ॥७॥ तओथेरभूमीओ पण्णत्ताओ तं० जाइथेरे सुयथेरे परियायथेरे । सट्ठिवासजाए समणे निग्गंथे जाइथेरे ठाणसमवा

भावार्थ

और घाति कर्म के क्षय से शुद्ध ज्ञान प्राप्त करे सो स्नातक. तीन निर्ग्रंथ संज्ञा सहित होते हैं बकुश-शरीर व उपकरण की शोभा करने से चारित्र मलिन करे, मूलगुण में दोष लगावे सो प्रति सेवना, और कुत्सित आचार पाले सो कषाय कुशील ॥ ६ ॥ भगवंत फरमाते हैं कि दीक्षा दीये बाद महाव्रत आरोपन की तीन भूमिका फरमाई-उत्कृष्ट छमास, मध्यम चार मास, और जघन्य सात रात्रि में महाव्रत की आरोपना करना ॥ ७ ॥ स्थविरभूमि (अवस्था) तीन प्रकारकी कही. जाति स्थविर, श्रुत स्थविर, और पर्याय स्थविर, साठवरस की वयवाले श्रमण जाति स्थविर, ठाणांग, समवायांग सूत्र को यथार्थ धारण करनेवाले

शब्दार्थ

॥ ८ ॥ त० तीन पुरुषजात प० प्ररूपी सु० सुमन दु० दुर्मन णो० नो सुमनदुर्मन त० तीन पुरुष जात गं० जाकर ए० कितनेक सु० सुमन भ० होते है गं० जाकर ए० कितनेक दु० दुर्मन भ० होवे गं० जाकर ए० कितनेक णो० नो सुमनदुर्मन भ० होवे त० तीन पुरुष जात जा० जाते ए० कितनेक सु० सुमन भ० होवे जा० जाते ए० कितनेक दु० दुर्मन भ० होवे जा० जाते ए० कितनेक णो० नोसुमनदुर्मन भ०

सूत्र

यधरेणं समणे निग्गंथे सुयथेरे । वीसवास परियाएणं समणे निग्गंथेपरियायथेरे ॥८॥ तओ पुरिसजाया पण्णत्ता तं० सुमणे दुम्मणे णो सुमणे नो दुम्मणे । तओ पुरिसजाया प० तं० गंताणामेगे सुमणे भवइ गंताणामेगे दुम्मणे भवइ गंताणामेगे णोसुमणे णो दुम्मणे भवइ ॥ तओ पुरिसजाया प० तं० जामिएगे सुमणे भवइ जामिएगे दुम्मणे भवइ जामिएगे णो सुमणे णो दुम्मणे भवइ । एवं जाइस्सामि एगे सुमणे

भावार्थ

सूत्र स्थविर और बीस वरस दीक्षा पालनेवाले पर्याय स्थविर ॥ ८ ॥ तीन प्रकारके मनुष्य कहे. अच्छे मन व बुरे मनवाले और अच्छा या बुरा मन जिन को नहीं हैं ऐसे मध्यस्थ भाववाले. कितनेक मनुष्य किसी स्थान में जाकर हर्षवंत होते हैं, कितनेक दुर्मनवाले होते हैं और कितनेक हर्षवन्त भी होवे नहीं और दुर्मनवाले भी होवे नहीं. कितनेक मनुष्यों किसी स्थान जाते सुमन होवे, दुर्मन होवे. और सुमन

शब्दार्थ होवे ए० ऐसे जा० जाऊंगा ए० कितनेक सु० सुमन भ० होवे त० तीन पुरुष जात प० प्ररूपी ण० नहीं जा० जाऊंगा ए० कितनेक सु० सुमन होवे ए० ऐसे आ० आकर ए० कितनेक सु० सुमन भ० होवे ए० आता हुं ए० कितनेक सु० सुमन भ० होवे ए० आऊंगा ए० कितनेक सु० सुमन भ० होवे ए० ऐसे ए० इस अ० अभिलापसे गं० जानेको अ० नहीं जानेको आ० आयाहुवा ख० निश्चय अ० नहीं आया हुवा चि० खडा रहा हुवा अ० नहीं खडारहुवा णि० बैठूं णो० नहीं हं० मारकर अ० नहीं मारकर छि० छेदकर अ० विनाछेद

सूत्र भवइ(३)तओ पुरिस जाया पण्णत्ता तंजहा अणागंताणामेगे सुमणे भवइ (३) तओ पुरिस जाया प० तं० ण जामि एगे सुमणे भवइ (३) तओ पुरिस जाया प० तं० ण जाइस्सामि एगे सुमणे भवइ (३) एवं आगंताणामेगे सुमणे भवइ एमि एगे सुमणे भवइ एस्सामि एगे सुमणे भवइ(३)एवं एएणं अभिलावेणं गंताय अगंताय। आगंता खलु तहा अणागंता ॥ चिट्ठित्तम चिट्ठित्ता। णिसिइत्ताचेव नोचेव ॥१॥ हंताय अ

भावार्थ दुर्मन नहीं होवे. ३ कितनेक किसी स्थान जानें को चिन्तातूर बन करके सुमन होवे, दुर्मन होवे और सुमन दुर्मन नहीं होवे. कितनेक किसी स्थान नहीं जातें सुमन होवे दुर्मन होवे या सुमन दुर्मन नहीं होवे. और उस स्थानक में मैं नहीं जाऊंगा ऐसी चिन्तवना करते हुवे सुमन होते हैं ३ कितनेक उस स्थान में नहीं जाना ऐसी चिन्तवना करते सुमन ३ होते हैं. यह छ आलापक जाने पर कहे ऐसे ही आगे छ आला-

शब्दार्थ

बु० कहकर अ० विना कहकर भा० बोलकर णो० नहीं द० देकर अ० विना दिये भुं० खाकर अ० विना खाये लं० मिलने से अ० विना मिले पि० पिने से णो० नहीं सु० सोने से अ० विना सोये जु० लडकर अ० विना लडे ज० जीतकर अ० विना जीतकर प० पराजय कर णो० नहीं स० शब्द रू० रूप गं० गंध र० रस फा० स्पर्श त० तैसे ठा० स्थान नि० कुशील नि० निन्दनीक प० प्रशस्त सी० शीलवंतको ए०ऐ

सूत्र

हंताय । छिंदित्ता खलुतहा अछिंदित्ता वुत्तित्ता अवुत्तित्ता । भासित्ता चेव णा चेव ॥ २ ॥ दच्चाय अदच्चाय । भुंजित्ता खलुतहा अभुंजित्ता ॥ लंभित्ताय अलंभित्ता । पिवइत्ता चेव नोचेव॥३॥सुइत्ता असुइत्ता जुज्झित्ता खलु तहा अजुज्झित्ता जयित्ताय अ जयित्ताय । पराजिणित्ताचेव नोचेव ॥ ४ ॥ सद्दा रूवा गंधा । रसाय फासा तहेव ठाणाय । निस्सीलस्स गरहिया । पसत्था पुण सीलवंतस्स ॥ ५ ॥ एवमेक्केक्के तिन्नि

भावार्थ

पक कहते हैं. जैसे २ आने के तीन और नहीं आने के तीन, ३ खडे रहने के तीन और नहीं खडे रहने के तीन, ४ बैठने के तीन और नहीं बैठने के तीन, ५ मारने के तीन और नहीं मारने के तीन, ६ छेदन करने के तीन और नहा छेदन करने के तीन, ७ कहने पर और नहीं कहने पर, ८ बोलने पर और नहीं बोलने पर, ९देने पर नहीं दन पर, १०खाने पर नहीं खाने पर, ११ मिलने पर नहीं मिलने पर, १२ पीने

शब्दार्थ

से ए० एकेक ति० तीनतीन आ० आलापक भा० कहना स० शब्द सु० सुनकर ए० कितनेक सु० सुमन भ० होवे ए० ऐसे सु० सुनता हूं सु० सुनूंगा ए० ऐसे अ० विना सुनकर ए० कितनेक सु० सुमन भ० होवे न० नहीं सुनता हूं ए० कितनेक न० नहीं सुनूंगा ए० ऐसे रू० रूप गं० गंध र० रस फा० स्पर्श इ० एकेक में छ०छ आ० आलापक भा०कहना ॥९॥ त० तीन स्थान णि०शील रहित के णि० व्रत रहित के नि० निर्गुणी के णि० दयारहित के णि० प्रत्याख्यान पोषध उपवास राहितके ग० निंदनीक भ० होते हैं

सूत्र

तिन्निओ आलावगा भाणियव्वा ॥ सद्दं सुणेत्ताणामेगे सुमणे भवइ (३) एवं सुणेमिति (३) सुणेस्सामिति एवं असुणेत्ताणामेगे सुमणे भवइ (३) नसुणेमि एगे नसुणेस्सामिति (३) एवं रूवाइं गंधाइं रसाइं फासाइं इक्केके छछ आलावगा भाणियव्वा ॥ ९ ॥ तओ ठाणा णिस्सीलस्स णिव्वयस्स निग्गुणस्स णिम्मेरस्स णिपच्चक्खाणपोसहोववासस्स गरहिया भवंति तं० अस्सिं लोगे गरहिए भवइ उववाए ग-

भावार्थ

पर १३ सोने पर, नहीं सोने पर १४ लडने पर, नहीं लडने पर १५ जीतने पर, नहीं जीतने पर १६ पराजय करने पर, नहीं पराजय करने पर १७ शब्दपर १८ रूपपर १९ गंध पर २० रस पर २१ स्पर्श पर २२ मकान घर वगैरह स्थानकों पर छ छ आलापक कहना. शब्द, वर्ण, गंध, रस और स्पर्श के अतीत, अनागत और वर्तमान काल आश्रित सुमन, दुर्मन और मध्यस्थ मन होवे. ॥ ९ ॥ शील रहित, प्राणातिपातविरमणादि मूलगुण उत्तर गुण रहित, कुलकी मर्यादा राहित, तथा पोरसी, उपवास प्रमुख प्रत्याख्यान

शब्दार्थ

स०इस लोक में ग० निन्दनीक भ० होता है उ० उपपात स्थानमें ग० निन्दनीक भ० होवे आ० आत्मा का ग० निन्दनीक भ० होवे त० तीन स्थान स० शीलवंत के स० व्रति के स० गुणीके स० दयावन्त स० प्रत्याख्यान पोषध उपवास युक्त के प० प्रशंसा भ० होता है अ० इसलोक मे प० प्रशंसा भ० होती है उ० उपपात स्थान में प० प्रशंसा भ० होती है आ० आत्माकी प० प्रशंसा भ० होती है ॥ ९० ॥ ति० तीन प्रकारके सं० संसार को स० प्राप्त जी० जीव इ० स्त्री पु० पुरुष ण० नपुंसक ति० तीन प्रकारके स० सर्व

सूत्र

रहिए भवइ आयाइ गरहिया भवइ ॥ तओ ठाणा ससीलस्स सव्वयस्स सगुणस्स समेरस्स सपच्चक्खाणपोसहोववासस्स पसत्था भवंति तं० अस्सिं लोगे पसत्थे भवइ उववाए पसत्थे भवइ आयाए पसत्थे भवइ ॥ १० ॥ तिविहा संसारसमावन्नगा जीवा प० तं० इत्थी, पुरिसा, णपुंसगा ॥ तिविहा सव्वजीवा प० तं० सम्मदिट्ठी,

भावार्थ

रहित पुरुष तीन स्थान में निन्दनीक होते हैं. १ इस जन्म में पाप कर्म करने से निन्दनीक होवे २ परलोक में नरक तिर्यंच किल्विषी देवता प्रमुख में उत्पन्न होवे. ३ और वहां से चवकर अल्पायुष्य वाला तिर्यंच या मनुष्य होवे. शील दयादि व्रतों सहित और पोरसी पोषध व्रतादि प्रत्याख्यान करनेवाले तीन स्थान में प्रशंसा पाते हैं. १ इस जन्म में पाप कर्म नहीं करने से २ परलोक में अहमेन्द्र, इन्द्र बनकर पूजावे और ३ वहां से चवकर दीर्घायुष्य प्राप्त करे ॥ १० ॥ भगवन्तने संसारी जीवों के तीन भेद फरमाये हैं. स्त्री,

शब्दार्थ

जीव स० समदृष्टि मि० मिथ्यादृष्टि स० सम मिथ्यादृष्टि अ० अथवा ति० तीन प्रकारके स० सर्व जीव प० पर्याप्ता अ० अपर्याप्ता णो० नो पर्याप्ता अपर्याप्ता ए० ऐसे स० समदृष्टि प० परत प० पर्याप्ता सु० सूक्ष्म स० संज्ञी भ० भव्य ॥ ११ ॥ ति० तीन प्रकार से लो० लोकप्रतिष्ठित आ० आकाशप्रतिष्ठित वायु वा० वायु प्रतिष्ठित उ० पानी उ० पानी प्रतिष्ठित पु० पृथ्वी त० तीन दिशाओ उ० ऊर्ध्व अ० अधो ति० तिर्यक् ति० तीन दिशा में जी० जीवकी ग० गति प० प्रवर्तती है उ० ऊर्ध्व अ० अधो ति० तिर्यग् दिशामें ए० ऐसे आ०

सूत्र

मिच्छदिट्ठी, सम्ममिच्छदिट्ठी ॥ अहवा तिविहा सव्वजीवा प० तं० पज्जत्तगा, अपज्जत्तगा, नोपज्जत्तगा ॥ एवं सम्मदिट्ठि, परित्ता, पज्जत्तग, सुहुम, सन्नि, भवि, काय ॥ ११ ॥ तिविहा लोगट्ठिई प० तं० आगासइंट्ठिए वाए, वायपइट्ठियाइउदही, उदहिपइट्ठिया पुढवी ॥ तओ दिसाओ प० तं० उड्ढा, अहो, तिरिया । तिहिं दिसाहिं जीवाणं गई-

भावार्थ

पुरुष और नपुंसक. और भी सम्यग्दृष्टि, मिथ्यादृष्टि और मिश्रदृष्टि; और भी पर्याप्ता, अपर्याप्ता, और नो पर्याप्ता नो अपर्याप्ता; परत, अपरत, नो परत नो अपरत; सूक्ष्म, बादर, नो सूक्ष्म नो बादर; संज्ञी, असंज्ञी, नो संज्ञी नो असंज्ञी; और भव्य, अभव्य, और नो भव्य नो अभव्य ॥ ११ ॥ लोक की स्थिति तीन प्रकारसे कही है. आकाश के आधार पर वायु, वायु के आधार पर उदधि और उदधि के आधार पर पृथ्वी. (सात तमतमादि) ऊर्ध्व अधो और तिर्यक् दिशा में जीवों मरकर जाते हैं, इन तीनों

शब्दार्थ

आगति व० उपजना आ०आहारलेना वु० वृद्धिपाना णि० हीन होना ग० गतिपर्याय स० समुद्घात का० कालसंयोग दं० दर्शनाभिगम णा० ज्ञानाभिगम जी० जीवाभिगम ति० तीन दिशासे जी० जीवको अ० अजीवाभिगम उ० ऊर्ध्व अ० अधो ति० तिर्यक् दिशामें पं० पंचेन्द्रिय तिर्यंचयोनि वाले को ए० ऐसे म० मनुष्य को ॥१२॥ ति० तीनप्रकार का त०त्रस प्राणी ते० तेउकाय वा० वायुकाय उ० औदारिक असप्राणी

सूत्र

पवत्तई तं० उड्ढाए, अहोए, तिरियाए । एवं आगई वक्कंती, आहारे, वुड्ढी, णिवुड्ढी, गइपरियाए समुग्घाए कालसंजोगे दंसणाभिगमे णाणाभिगमे जीवाभिगमे ॥ तिहिं दिसाहिं जीवाणं अजीवाभिगमे प० तं० उड्ढाए अहोए तिरियाए एवं पंचेंदियतिरिक्खजोणियाणं ॥ एवं मणुस्साणवि ॥१२॥ तिविहा तसापाणा प० तं० तेउकाइया वाउकाइया उराला तसापाणा तिविहा थावरा प० तं० पुढविकाइया आउकाइया वण-

भावार्थ

दिशाओं से जीव आते हैं, तीनों दिशाओं में उत्पन्न होते हैं, आहार लेते हैं, शरीर बढता है, क्षीण होता है, हलन चलन होता है, समुद्घात करते हैं, मरणादि काल आता है, सम्यक्त्व की प्राप्ति करते हैं, ज्ञान की प्राप्ति होती है, जीवों का आभिगम होता है, और इन तीनों दिशाओं में रहे हुवे मनुष्य व तिर्यंचपंचेंद्रिय को जीवादि पदार्थ का अभिगम होता है ॥ १२ ॥ तीन प्रकारके त्रस प्राणी कहे (सञ्चलन धर्मवाले सो त्रस.) अग्निकाय, वायुकाय और औदारिक द्वीन्द्रियादिक. ऐसे ही स्थिरता की अपेक्षा से तीन स्थावर

शब्दार्थ

ति० तीनप्रकार का था० स्थावर पु० पृथ्वीकाय आ० अप्काय व० वनस्पतिकाय ॥ १३ ॥ त० तीन अ० अछेद्य स० समय प० प्रदेश प० परमाणु ए० ऐसे अ० भेदावे नहीं अ० जलेनहीं अ० अग्राह्य अ० अर्धरहित अ०अमध्य अ० अप्रदेशी त० तीन अ० अविभागी स० समय प० प्रदेश प० परमाणु ॥ १४ ॥ अ० आर्य स० श्रमण भ० भगवान म० महावीर गो० गौतमादि स० श्रमण नि० निर्गन्थ को आ० आमंत्रणाकर ए० ऐसा व० बोले कि० कौनसा भ० भय प० प्राणि को स० श्रमण आ० आयुष्यमन् गो०

सूत्र

स्सइकाइया ॥ १३ ॥ तओ अच्छेज्जा प० तं० समए पएसे परमाणु ॥ एव मभेज्जा अडज्जा अगिज्झा अणद्धा अमज्झा अपएसा । तओ अविभाइया प० तं० समए पएसे परमाणु ॥ १४ ॥ अज्जोत्ति समणे भगवं महावीरे गोयमाई समणे निग्गंथे आमंतित्ता एवं वयासी किंभयापाणा समणाउसो? गोयमाई समणा णिग्गंथा समणं भगवं

भावार्थ

काया कही पृथ्वी काया, अपूकाया, और वनस्पति काया ॥ १३ ॥ समय, प्रदेश और परमाणु ये तीनों बुद्धि या शस्त्रादि से नहीं छेदाते हैं, नहीं भेदाते हैं, नहीं जलसे हैं, हस्तादिकों से नहीं ग्रहण कीये जाते हैं दो, तीन विभाग नहीं हो सकते हैं, और अवयव रहित होने से अप्रदेशी कहे गहे हैं. वैसे समय, प्रदेश और परमाणु ये तीनों विभाग रहित हैं ॥ १४ ॥ श्रमण भगवन्त श्री महावीर देवने गौतम स्वामी आदि सब साधु निर्ग्रंथों को बोलाकर पूछा कि अहो आर्यों! जीव को किस का भय है? भगवन्त का ऐसा

शब्दार्थ

गौतमादि स० श्रमण नि० निर्ग्रंथ भ० भगवान म० महावीर की उ० पासआये उ० आकर वं० वंदते हैं न० नमस्कार करते हैं वं० वंदकर न० नमस्कार कर ए० ऐसे व० बोले णो० नहीं ख० निश्चय व० हम दे० देवानुप्रिय ए० इसका अर्थ जा० जानते हैं पा० देखते हैं तं० वह जैसे ज० यद्यपि दे० देवानुप्रिय ए० इसअर्थ नो० नहीं गि० खेदित होवे प० कहनेका तं० उसको इ० इच्छते हैं दे० देवानुप्रिय की अं० पास ए० इसअर्थ को जा० जानने को अ० आर्य स० श्रमण भ० भगवान् म० महावीर गो० गौतमादि

सूत्र

महावीरं उवसंकमंति उवसंकमित्ता वंदंति नमंसंति वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी णो खलु वयं देवाणुप्पिया एयमट्ठं जाणामोवा पासामोवा तंजहा जइणं देवाणुप्पिया एयमट्ठं नो गिलायंति परिकहेत्तए तंमिच्छामोणं देवाणुप्पियाणं अंतिए एयमट्ठं जाणित्तए. अज्जोत्ति समणे भगवं महावीरे गोयमाई समणे निग्गंथे आमंतित्ता एवं वयासी दुक्ख-

भावार्थ

वचन सुनकर गौतम स्वामी आदि सब साधुओं भगवंत की पास सविनय वंदना नमस्कारकर कहने लगे कि अहो भगवन्! हम इस के यथातथ्य अर्थ को नहीं जानते हैं और नहीं देखते हैं. इसलिये अहो पूज्य भगवन्त! आपको इस का अर्थ प्रकाशने में किसी प्रकारका खेद न होता होवे तो हम इस का अर्थ सुनना चाहते हैं, तब भगवंत फरमाने लगे कि अहो आर्यो! जीवों को मरणादि दुःख से भय है. अहो पूज्य! ऐसा दुःख कैसे उत्पन्न होता है? भगवन्तने उत्तर दिया कि ऐसा दुःख जीवसे प्रमादके वश से किया है.

शब्दार्थ स० श्रमण नि० निर्ग्रन्थ को आ० आमंत्रणकर ए० ऐसा व० बोले दु० दुःखभय पा० प्राणी को स० आयुष्यमान् से० वह भ० भगवान् दु० दुःख के० किसने क० कीया जी० जीवने क० कीया प० प्रमाद से से० वह दुःख क० कैसे वे० वेदते हैं अ० अप्रमाद से ॥ १५ ॥ अ० अन्य तीर्थीक भ० भगवन् ए० ऐसा आ० कहते हैं ए० ऐसा भा० बोलते हैं ए० ऐसा प० प्ररूपते हैं क० कौनसी स० श्रमण नि० निर्ग्रन्थ कि० क्रिया क० करते हैं त० तहां जा० जो क० की क० करते हैं णो० नहीं

सूत्र

भयापाणा समणाउसो. सेणं भंते दुक्खे केण कडे? जीवेण कडे पमाएणं. सेणं भंते दुक्खे कहं वेइज्जंति? अप्पमाएणं ॥१५॥ अण्णउत्थियाणं भंते एव माइक्खइ एवं भासेइ एवं परूवेइ कहण्णं समणाणं निग्गंथाणं किरिया कज्जंति तत्थ जासा कडा कज्जइ णो तं पुच्छंति, तत्थ जासा कडा नो कज्जइ णो तं पुच्छंति, तत्थ जासा अकडा नो कज्जइ

भावार्थ तब श्रमण भगवंत को पूंछा कि अहो पूज्य ! वह दुःख कैसे दूर हो सके ? हे गौतम ! प्रमादका त्याग कर कर्म क्षय करने से ॥ १५ ॥ श्री गौतम स्वामी पूछते हैं कि अहो भगवन् ! अन्य मतावलम्बियों ऐसा कहते हैं, प्रकट करते हैं, प्ररूपते हैं कि श्रमण निर्ग्रंथ को किये हुवे कर्म कैसे दुःख रूप होते हैं ? इसपर चार भंग कहते हैं जो कर्म पहिले किये उस का प्रत्यक्ष प्रमाण नहीं इसलिये न लगे, २ जो कर्म पहिले किया वर्तमान में नहीं करे वह भी नहीं लगे ३ जो किया भी नहीं और करते भी नहीं वह न लगे,

शब्दार्थ

तं० उस पु० स्पर्शते हैं त० तहां जा० जो क० की णो० नहीं क० करते हैं णो० नहीं तं० उसे पु० स्पर्शते हैं जा० जो अ० की नहीं णो० नहीं क० करते हैं णो० नहीं तं० उसे पु० पूछते हैं त० तहां जा० जो अ० कीनहीं क० करते हैं तं० उसे पु० स्पर्शते हैं से० उनको ए० ऐसा व० कहना सि० होवे अ० नहीं कीया दुःख अ० नहीं स्पर्शादुःख अ० अक्रियमान कृतदुःख अ० नहीं किया अ० नहीं कीया पा० प्राणी भू० भूत जी० जीव स० सत्व वे० वेदना वे० वेदते हैं त्ति० ऐसा व० कहना जे० जो ते० उसको ए० ऐसा आ० कहे ते० वह मि० मिथ्या अ० मैं पु० फीर आ० कहता हूं ए०

सूत्र

णो तं पुच्छंति, तत्थ जासा अकडा कज्जइ तं पुच्छंति. से एवं वत्तव्वं सिया अकिच्चं दुक्खं अफुसं दुक्खं अकज्जमाणकडं दुक्खं अकट्टु अकट्टु पाणाभूया जीवा सत्ता वेयणं वेयंति त्तिवत्तव्वं जे ते एव माहिंसु ते मिच्छा अहं पुण एव माइक्खामि, एवं भासामि, एवं पन्नवेमि, एवं परूवेमि किच्चं दुक्खं फुसंदुक्खं किज्जमाणं कडं दुक्खं कट्टु

भावार्थ

४ जो किया नहीं है और करते हैं. सो कर्म लगता है. वे ऐसा कहते हैं कि जो न किया न स्पर्शा, अक्रिय न किया और दुःख नहीं करके प्राणभूत जीव सत्वों वेदना का दुःख अनुभवते हैं. तब भगवंत फरमाते हैं कि जो अकृत कर्म भोगते हैं ऐसा जो अन्य मतियों का कथन है सो मिथ्या है. इस बात को मैं इस प्रकार कहता हूं प्रगट करता हूं, प्ररूपता हूं, कि जो अनागत काल में किये थे उस कर्म से

शब्दार्थ

ऐसा भा० बोलताहुं ए० ऐसा प० प्रगट करता हूं प० प्ररूपता हूं कि० कीयाहुवा दुःख फु० स्पर्शा दुःख कि० किया हुवा कृतदुःख क० किया हुवा क० कियाहुवा पा० प्राणी भू० भूत जी० जीव स० सत्व वे० वेदना वे० वेदते हैं त्ति० ऐसा व० कहना सि० होवे ॥ १६ ॥ ×

ती० तीनस्थान से मा० मायावी मा० माया क० करके णो० नहीं आ० आलोवे णो० नहीं प०

सूत्र

कट्टु पाणा भूया जीवा सत्ता वेयणं वेयंतित्ति वत्तव्वंसिया ॥१६॥ इति तइअठाणस्स बीओद्देसो सम्मत्तो ॥ * *

तिहिं ठाणेहिं मायी मायं कट्टु णो आलोएज्जा णो पडिक्कमेज्जा णो णिंदेज्जा णोगरहेज्जा णोविउट्टेज्जा णोविसोहेज्जा णो अकरणयाए अब्भुट्ठेज्जा णो अहारिहं पायच्छित्तं तओ

भावार्थ

स्पर्शा, बन्धा, वर्तमान में करता है. जो कर्म गतकाल में किये हुवे हैं वैसे दुःख रूप कर्म करके प्राणभूत जीव सत्व शुभाशुभ कर्म के फलरूप वेदना का अनुभव करते हैं. ऐसा कहना ॥ १६ ॥ यह तीसरे ठाणांग सूत्र के तीसरे ठाणे का दूसरा उद्देशा समाप्त हुवा. +

तीन कारण से जीव माया करके गुरु की साक्षी से प्रायश्चित्त करे नहीं, आत्मा की साक्षी से निन्दे नहीं, गर्हा करे नहीं, अब आगे पाप करूं नहीं इसतरह अतिचार विशुद्ध करे नहीं, और यथायोग्य

शब्दार्थ

प्रतिक्रमे णो० नहीं णिं० निन्दे णो० नहीं ग० गर्हाकरे णो०नहीं वि०निवृत होवे णो०नहीं वि०विशुद्ध होवे णो० नहीं अ० नहीं करने को अ० सावधान होवे णो० नहीं अ० यथातथ्य पा० प्रायश्चित त० तपकर्म प० अंगीकार करे तं० वह अं० कीया अ० मैंने क० करताहूं क० करूंगा ति० तीनस्थान से मा० माया वी मा० माया क० करके णो० नहीं आ० आलोवे णो० नहीं प० प्रतिक्रमणकरे जा० यावत् णो० नहीं प० दूरकरे अ० अपकीर्ति मे० मेरी सि० होवे अ० अवर्णवाद मे० मेरा सि० होवे अ० अविनय मे० मेरा

सूत्र

कम्मं पडिवज्जिजा तं० अकरिंसुवाहं करेमिवाहं करिस्सामिवाहं । तिहिं ठाणेहिं मा-
यी मायं कट्टु णो आलोएज्जा णो पडिक्कमेज्जा जाव णो पडिवज्जेज्जा तं०अकित्ती वा मे
सिया अवन्नेवा मे सिया अविणयेवा मे सिया तिहिं ठाणेहिं मायी मायं कट्टु णो आलोएज्जा

भावार्थ

प्रायश्चित्त की विशुद्धि के लिये तपकर्म अंगीकार करे नहीं–१ मैंने यह कार्य किया अब मैं इस की कैसे निन्दा करूं, मेरी जगत में अपकीर्ति होवे. २ यह कार्य मैं कर रहा हूं, इस को मैं कैसे खराब बतलावूं, और ऐसा कार्य मुझे करने का है इसलिये कैसे मैं उस की निन्दा करूं या प्रायश्चित्त अंगीकार करूं. और भी माया कपट के तीन कारण बतलाते हैं–१ यदि मैं पाप को प्रकाश में लाऊंगा तो मेरी अपकीर्ति होगी, २ लोकों मेरे अवर्णवाद बोलेंगे. निन्दा करेंगे और ३ यहां मेरा अविनय होगा. और भी तीन

शब्दार्थ

सि० होवे ति० तीनस्थान से मा० मायावी मा० माया क० करके णो० नहीं आ० आलोवे जा० यावत् प० दूरकरे कि० कीर्ति मे० मेरी प० हीनहोगी ज० जश मे० मेरा प० हीनहोगा पू० पूजासत्कार प० हीनहोगा ति० तीनस्थान से मा० मायावी मा० माया क० करके आ० आलोवे प० प्रतिक्रमे नि० निन्दे जा० यावत् प० दूरकरे मा० मायावी की अ० इसलोक में ग० गर्हा भ० होती है उ० उपपात स्थान में ग० गर्हा भ० होती है आ० आत्मा की ग० गर्हा भ० होती है ति० तीनस्थान से मा० मायावी

सूत्र

जाव णो पडिवज्जेज्जा तं० कित्ती वा मे परिहाइस्सइ जसो वा मे परिहाइस्सइ पूयासक्कारे वा मे परिहाइस्सइ तिहिं ठाणेहिं मायी मायं कट्टु आलोएज्जा पडिक्कमेज्जा निंदेज्जा जाव पडिवज्जेज्जा तंजहा मायिस्सणं अस्सिं लोगे गरहिए भवइ उववाए गरहिए भवइ आ-

भावार्थ

कारण जो मेरी कीर्ति का विस्तार हो रहा है उस में हानि होगी, २ यश में और पूजा सत्कार में हानि होगी. उत्तम जीवों माया कपट की तीन कारण से गुरु की साक्षी से आलोचना करते हैं, निन्दते हैं यावत् उस का त्याग करते हैं. १ यदि मैं पाप कर गुप्त रखूंगा परंतु वैसा पाप गुप्त नहीं रहेगा, और प्रगट हुवे बाद लोगों में बडी निन्दा होगी इसलिये नहीं छुपाते हैं, २ पापशल्य से मेरा मृत्यु होगप तो मैं यहांसे मरकर नरकादिकमें उत्पन्न होवूंगा और३ आगामिक कालमें भी पापकरनेवाले की निन्दा

शब्दार्थ — मा० माया क० करके आ० आलोवे जा० यावत् प० दूरकरे अ० मायारहितकी अ० इसलोकमें प० प्रशंसा भे० होती है उ० उपपात स्थान में प० प्रशंसा भ० होती है आ० आत्माकी प० प्रशंसा भ० होती है ति० तीनस्थान से मा० मायावी मा० माया क० करके आ० आलोवे जा० यावत् प० दूरकरे णा० ज्ञानार्थ दं० दर्शनार्थ च० चारित्रार्थ ॥ १ ॥ त० तीन पु० पुरुष जात प० प्ररूपी सु० सूधजानने वाले अ०

सूत्र — याई गराहिया भवइ । तिहिं ठाणेहिं मायी मायं कट्टु आलोएज्जा जाव पडिवज्जेज्जा तं० अमायिस्सणं अस्सिं लोगे पसत्थे भवइ उववाए पसत्थे भवइ आयाई पसत्थे भवइ तिहिं ठाणेहिं मायी मायं कट्टु आलोएज्जा जाव पडिवज्जेज्जा तं० णाणट्ठयाए दंसणट्ठयाए चरित्तट्ठयाए ॥ १ ॥ तओ पुरिसजाया प० तं० सुत्तधरे अत्थधरे तदुभयधरे

भावार्थ — होती है. और भी माया कपट की आलोचना करने का तीन कारण बताते हैं. १ इस लोक में प्रशंसा होती है धन्य है कि जन्म सुधार लिया. २ जिनाज्ञा का आराधक बननेसे इन्द्र सामानिक आदि देवताओं की पद्वी पाकर उत्पन्न होते हैं, और ३ वहां से चवकर भी शुभजाति में उत्पन्न होते हैं. और भी तीन प्रकार बताते हैं १ ज्ञान के लिये आलोचना करे तो ज्ञान प्राप्ति होवे, २ दर्शन के लिये आलोचना करनेसे दर्शन प्राप्ति होवे और चारित्र के लिये आलोचना करे तो चारित्र की प्राप्ति होवे ॥ १ ॥ इस जगत में

शब्दार्थ

अर्थ धारन करनेवाले उ०दोनोंधरने वाले ॥२॥ क०कल्पता है नि०साधु को नि०साध्वी को त० तीनजात के व० वस्त्र धा० धारण करने को प० पहिनने को जं० ऊनके भं० रेशम के खो० कपास के क० कल्पता है नि० साधु को नि० साध्वी को त० तीनप्रकार के पा०पात्र धा०रखनेको प०भोगवनेको ला०तुम्बी के पात्र दा० लकड के पात्र म० मिट्टिके पात्र ति० तीनकारण से व० वस्त्र ध० धारणकरे हि० लज्जासे दु० दुर्गछा से प० परिषह सहने केलिये ॥ ३ ॥ ती० तीन आ० आत्मरक्षा ध० धर्मोपदेश भे प० प्रेरणा से

सूत्र

॥ २ ॥ कप्पइ निग्गंथाणं वा निग्गंथीणं वा तओ वत्थाइं धारित्तएवा परिहारित्तए वा तं०जंगिए भंगिए खोमिए. कप्पइ निग्गंथाणं वा निग्गंथीणं वा तओ पायाइं धारित्तए वा परिहरित्तए वा तं० लाउयपाएवा दारुपाएवा मट्टियापाएवा. तिहिं ठाणेहिं वत्थं धरेज्जा तं० हिरिवत्तियं दुगंछावत्तियं परीसहवत्तियं ॥ ३ ॥ तओ आयरक्खा प०

भाषार्थ

तीन ज्ञानी पुरुष कहे सूत्र को धारण करनेवाले, अर्थ को धारन करनेवाले और सूत्र अर्थ दोनों को धारन करनेवाले ॥ २ ॥ साधु साध्वी को तीन प्रकार के वस्त्र धारन करना, रखना, तथा उपभोग में लेना कल्पता है, १ ऊन के कम्बलादि, रेशम के शणादि, और कपास के. साधु साध्वी को तीन जात का पात्र रखना कल्पता है, तुम्बीपात्र, काष्टपात्र और मिट्टी का पात्र. साधु तीन कारण से वस्त्रों रखते हैं नग्न रहने से लज्जा उत्पन्न होवे इसलिये, जिन प्रवचनकी निन्दा होवे इसलिये, और दंश मच्छरादि का परिसह निवारने को ॥ ३ ॥ तीन आत्मरक्षक बोल कहे. १ कोई अकार्य में प्रवर्तता होवे तो उसे धर्मोपदेश देकर कहे

शब्दार्थ

प० प्रेरणाकरे तु० चूप सिं०होवे उ०उठकरआ० आत्मा ए० एकान्त में अ० जावे ॥४॥ नि० निर्ग्रंथ को गि० ग्लानी वाला क० कल्पता है त० तीन वि० अचित्त द० दाति प० लेने को उ० उत्कृष्ट म० मध्यम ज० जघन्य ॥ ५ ॥ ति० तीनस्थान से स०श्रमण नि० निर्ग्रंथ को सा० स्वधर्मी को सं० संभोगीक वि० विसंभोगी क० करता हुवा ण० नहीं अ० उलंघन करता है स० एकदा द० देखकर स० श्रावक

सूत्र

तं० धम्मियाए पडिचोयणाए पडिचोएत्ता भवइ तुसिणीए वा सिया उट्ठित्तु वा आया एगंतमवक्कमेज्जा ॥ ४ ॥ निग्गंथस्सणं गिलायमाणस्स कप्पंति तओ वियडदत्तीओ पडिगाहित्तए तं० उक्कोसा मज्झिमा जहन्ना ॥ ५ ॥ तिहिं ठाणेहिं समणे निग्गंथे साहम्मियं संभोइयं निसंभोइयं करेमाणे णाइक्कमइ तं० सइं वा दट्ठं साडिय

भावार्थ

कि तुमारे जैसे को ऐसा अकार्य करना योग्य नहीं है इस तरह समझाकर उस को अकार्य से दूर करे. २ धर्मोपदेश से जो समझे नहीं तो उस की उपेक्षा कर मौन रहे और ३ उस को अटकाने को समर्थ न होवे तो आप वहां से अन्यत्र चलाजावे ॥ ४ ॥ जो साधु तृषा परिषह को सहन करने में असमर्थ होवे तो उसको अचित्त पानी की तीन प्रकारकी दाति कही है. १ द्राक्षादिक का धोवनसो उत्कृष्ट दाति, तक्र कांजी आदि सो मध्यम दाति और ऊष्ण पानी सो जघन्य दाति अथवा बहुत पानी सो उत्कृष्ट, कमपानी सो मध्यम और एकही वार पीकर तृष्णा समावे सो जघन्य दाति ॥ ५ ॥ अपने स्वधर्मी साधुओं

शब्दार्थ नि० सूंनकर त० तीसरीवार मो० मृषा आ० प्रायश्चितदेता है च० चौथीवार नो० नहीं आ० प्रायश्चितदेता है ॥ ६ ॥ ति० तीनप्रकार की अ० आज्ञा आ० आचार्य की उ० उपाध्याय की ग० गणिकी ति० तीन

सूत्र स्स वा निसम्मतच्चमोसं आउट्टइ चउत्थं नो आउट्टइ ॥ ६ ॥ तिविहा अणुन्ना प० तं० आयरियत्ताए उवज्झायत्ताए गणित्ताए तिविहा समणुन्ना प० तं० आयरियत्ताए

भावार्थ में से किसीने पाप कर्म सेवन किया होवे और पूछने पर ना कहे या असत्य बोले तो उस का निर्णय कर योग्य प्रायश्चित देकर शुद्ध करे, फिर ऐसा कार्य करे तो भी उस को प्रायश्चित देकर शुद्ध करे और तीसरी वक्त भी ऐसा करे तो उसे सभा में प्रायश्चित देकर साथ आहार पानी करे. परंतु जो चौथी वक्त फीर पापस्थान का सेवन करे तो उस को प्रायश्चित देना नहीं परंतु संघ बाहिर करना ऐसा करनेवाले तीर्थंकरों की आज्ञा के उल्लंघन करनेवाले नहीं हैं ॥ ६ ॥ तीन प्रकार की अनुज्ञा—अधिकार देना कहा. जो जाति कुल, बलादि गुण संपन्न अष्ट सम्पदा सहित होवे इस को पट्टी देना. १ आचार सहित को आचार्य पट्टी देना, सूत्रार्थ के ज्ञाता होवे और जिस की पास शिष्य वर्ग पठनादि क्रिया करते होवे उन को उपाध्याय, और साधु समुदाय के स्वामी को गणी. इसी प्रकारसे जो सर्वोत्कृष्ट गुण के धारक होवे उन को तीनों पट्टियों देना. और आचार्य की आज्ञा से अन्य अधिक

शब्दार्थ

प्रकार की स० विशेष अनुज्ञा आ० आचार्य की उ० उपाध्याय की ग० गणिकी ए० ऐसे उ० उपसंपदा ए० ऐसे वि० छोडना ॥ ७ ॥ ति० तीनप्रकार का व० वचन त० तद्वचन त० तदन्यवचन णो० नोअवचन ति० तीनप्रकार का अ० अवचन प० प्ररूपा णो० नोतद्वचन णो० नोतदन्यवचन अ० अवचन ति० तीनमन त० तन्मन त० तदन्यमन णो० नोअमन ति० तीनअमन णो० नोतन्मन णो० नोतदन्यमन अ० अमन ॥ ८ ॥ ति० तीनकारण से अ० अल्पवृष्टि सि० होवे ते०

सूत्र

उवज्झायत्ताए गणित्ताए । एवं उवसंपयत्ता एवं विजहणणा ॥ ७ ॥ तिविहे वयणे प० तं० तव्वयणे तदन्नवयणे णोअवयणे । तिविहे अवयणे प० तं० णो तव्वयणे णो तदन्नवयणे अवयणे ॥ तिविहे मणे प० तं० तंमणे तयन्नमणे णोअमणे तिविहे अमणे प० तं० णोतंमणे णो तयन्नमणे अमणे ॥ ८ ॥ तिहिं ठाणेहिं अप्पवुट्ठीकाए सिया

भावार्थ

ज्ञानी आचार्य को ज्ञानादिक के लिये पदवी देना सो उपसंपन्ना पदवी. वैसे ही उपाध्याय गणि को भी जानना. यदि आचार्य अपने आचार अनुसार न चले तो उस को छोड कर अन्य आचार्य बनाना ॥ ७ ॥ भगवन्तने तीन प्रकार के वचन कहे. १ घट को घट कहना सो तद्वचन. २ घट से अन्य पट कहना सो तदन्यवचन और ३ निरर्थक वचन सो नोअवचन. तीन प्रकार के अवचन, घट को घट नहीं कहना सो नोतद्वचन, घट को पट कहे या पट को घट कहे परंतु यथास्थित कहे नहीं सो नोतदन्यवचन और निरर्थक वचन सो अवचन. ऐसे ही मन और अमन के तीन २ भेद जानना ॥ ८ ॥ किसी प्रदेश में कम

शब्दार्थ

उसमें दे० देशमें प० प्रदेशमें णो० नही ब० बहुत उ० उदक जो० योनिवाले जी० जीव पो० पुद्गल उ० उदकपने ब० आते हैं वि० व्युत्क्रमते हैं च० चवते हैं उ० उपजते हैं दे० देव ना० नाग ज० यक्ष णो० नहीं स० सम्यक् आ० आराधिक भ० होवे त० तहां स० उपस्थित उ० उदक पो० पुद्गल का

सूत्र

तं० तेसिं च णं देसंसिवा पएसंसि वा णो बहवे उदगजोणिया जीवाय पोग्गलाय उदगत्ताए वक्कमंति विउक्कमंति चयंति उववज्जंति देवा नागा जक्खा णो सम्ममाराहिया भवंति तत्थ समुट्ठियं उदगपोग्गलं परिणयं वासिउकामं अन्नदेसं साहरंति अब्भबद्दलगं च णं समुट्ठियं परिणयं वासिउकामं वाउकाए विहुणेइ इच्चेएहिं तिहिं ठाणेहिं अप्पवुट्ठिकाये सिया ॥ तिहिं ठाणेहिं महावुट्ठिकाए सिया तंजहा तेसिं च णं देसंसि वा पएसंसिवा बहवे उदगजोणिया जीवाय पोग्गलाय उदगत्ताए वक्कमंति विउक्कमंति चयंति उववज्जंति देवा नागा भूया जक्खा सम्ममाराहिया

भावार्थ

वृष्टि या अवृष्टि होवे उस के तीन भेद १ वहां पर बहुत पानी के जीव अप्कायपने उत्पन्न नहीं हुवे होवे. या चवते न होवे २ देव, नाग, यक्षादि देवताओं को सम्यक् प्रकारसे आराधे न होवे. जिस से वे रुष्ट होकर उस देश में बरसने योग्य पानी के जीवों को अन्य स्थान लेजावे या ३ बहुत पानी पडने जैसे बदलों हुवे होवे परंतु वायुकी प्रबलयता होनेसे वृष्टि होवे नहीं. तीन कारन से बहुत वृष्टि होवे. १ पानी के जीव अप्काय

शब्दार्थ

प० परिणत वा० वृष्टि के वक्त अ० अन्यदेश में सा० संहरते हैं आ० आम ब० बदल स० उत्पन्न हुवे प० परिणमे वा० वर्षाके वक्त वा० वायु वि० चलता है इ० इन ति० तीन ठा० कारण से अ० अल्पवृष्टि सि० होवे ति० तीनकारण से म० महावृष्टि सि० होवे पूर्ववत् ॥ ९ ॥ ति० तीनस्थान से अ० तुरत के उ० उत्पन्न दे० देव दे० देवलोक से इ० इच्छे मा० मनुष्य लोक में ह० शीघ्र आ० आने

सूत्र

भवंति अन्नत्थ समुट्ठियउदगपोग्गलं परिणयं वासिउकामं तं देसं साहरंति अब्भबद्दलगं च णं समुट्ठियपरिणयं वासिउकामं णो वाउआओ विहुणंति इच्चेएहिं तिहिं ठाणेहिं महावुट्ठिकाए सिया ॥ ९ ॥ तिहिं ठाणेहिं अहुणोववन्ने देवे देवलोगेसु इच्छेज्जा माणुसं लोगं हव्वमागाच्छित्तए णोचेवणं संचाएइ हव्वमागाच्छित्तए तं० अहुणोव

भावार्थ

योनि में बहुत उत्पन्न हुवे होवे, चवते होवे २ देव, नाग, यक्षादि की सम्यक् प्रकारसे आराधना की होवे. जिस से अन्य स्थान भी वर्षा योग्य पुद्गलों होवे तो भी उस को उसी क्षेत्र में ले आवे. ३ वर्षा के बदल हुवे, बरसने लगे उस को वायु नाश न करे तो ॥ ९ ॥ तत्काल के उत्पन्न हुवे देवताओं अपने पूर्व परिचित मनुष्यों को मिलने के लिये मनुष्य लोक में आने की इच्छा करे परंतु आसके नहीं. उस के तीन कारण हैं, १ उस तत्काल उत्पन्न हुवा देवता को दिव्य काम भोगों की प्राप्ति होने से उस में मूर्च्छित,

शब्दार्थ को णो० नहीं सं० समर्थ है ह० शीघ्र आ० आने को अ० तुरत का उ० उत्पन्न दे० देव दे० देवलोक में दि० दिव्य का० काम भोग में मु० मुर्च्छित गि० गृद्ध ग० बन्धा अ० प्राप्त म० मनुष्य के का० काम भोग को णो० नहीं आ० आदर करे णो० नहीं प० अच्छाजाने णो० नहीं अ० अर्थ बं० बंधे णो० नहीं नि० नियाणा प०करे णो० नहीं ठि० स्थिति प०कल्पकरे अ० तुरत के उ०उत्पन्न देव दे०देवलोक में दि० दिव्य का० काम भोग में मु० मुर्च्छित गि० गृद्ध ग० बन्धा अ० प्राप्त त० उसका म० मनुष्य से पे०

सूत्र वन्नेदेवे देवलोगेसु दिव्वेसु कामभोगेसु मुच्छिए गिद्धे गाढिए अज्झोववन्ने से णं माणुस्सए कामभोगे णो आढाइ णो परियाणाइ णो अट्ठं बंधइ णो णियाणं गरेइ णो ठिइप्पकप्पेपकरेइ अहुणोववन्नेदेवे देवलोगेसु दिव्वेसु कामभोगेसु मुच्छिए गिद्धे गाढिए अज्झोववन्ने तस्सणं माणुस्सए पेमे वोच्छिन्ने विच्छिन्ने दिव्वे संकंते भवइ अ-

भावार्थ गृद्ध, अतृप्त और विषय स्नेह के बंधन से बंधाया हुवा उस में आसक्त बनकरके मनुष्य के कामभोगों का आदर करे नहीं, वस्तु रूप भी उन को जाने नहीं उस का नियाणा करे नहीं, और वे यह कामभोग मुझे बहुत कालतक रहे ऐसा विचार भी करे नहीं, २ तत्काल का उत्पन्न हुवा देवता दिव्य कामभोगों में मूर्च्छित, गृद्ध, अतृप्त और स्नेह बंधन से बंधाया हुवा होने से मनुष्य का प्रेम तूटता है और देवता का प्रेम बढता है. ३ तत्काल का उत्पन्न हुवा देवता दिव्य कामभोग में मूर्च्छावे यावत् स्नेह बंधन से बंधावे.

शब्दार्थ

प्रेमका वा० विच्छेद होवे वि० तुर दि० देवता का सं० संबंध भ० होवे अ० तुरत का उ० उत्पन्नदेव देव दे० देवलोक में दिं० दिव्य का० काम भोग में मु० मुर्च्छित जा० यावत् अ० प्राप्त त० उसको ए० ऐसा भ० होवे इ० अभी ग० जाऊं मु० मुहूर्त में ग० जाऊं ते० इतना वक्त में अ० अल्पायुषी म० मनुष्य का० काल धर्म को सं० प्राप्त भ० होते हैं इ० इन ति० तीनस्थान से अ० तुरत का उ० उत्पन्नदेव दे० देवलोक में इ० इच्छे मा० मनुष्यलोक में ह० शीघ्र आ० आनेको नो० नहीं सं० समर्थ होवे ह० शीघ्र आ० आने को

सूत्र

हुणोववन्ने देवे देवलोएसु दिव्वेसु कामभोगेसु मुच्छिए जाव अज्झोववन्ने तस्सण मेव भवइ इयण्हि गच्छं मुहुत्तं गच्छं तेणं कालेण मप्पाउया माणुस्सा कालधम्मुणा संजुत्ता भवइ इच्चेएहिं तिहिं ठाणेहिं अहुणोववन्ने देवे देवलोगेसु इच्छेजा माणुस्सं लोगं हव्वमागच्छित्तए नोचेवणं संचाएइ हव्वमागच्छित्तए ॥ तिहिं ठाणेहिं अहुणोववन्ने

भावार्थ

उस को ऐसा विचार होवे कि मैं दो घडी पीछे जाऊं इस तरह विचार करते और नाटक देखते दो हजार वर्ष व्यतीत होजावे. और इतना अल्प काल में मनुष्य भी यहां से मरकर अन्य स्थान उत्पन्न होजावे इसलिये आसके नहीं. तीन कारण से तत्काल के उत्पन्न हुवे देवताओं मनुष्य लोक में आने को समर्थ होते हैं. १ तत्काल का उत्पन्न हुवा देवता दिव्य कामभोगों में मूर्च्छित न होवे, अनित्य जानकर अगृद्ध, अनासक्त होवे और ऐसा जाने कि मनुष्य भव में मुझे उपदेश के देनेवाले आचार्य, उपाध्याय, धर्म के प्रवर्तक,

शब्दार्थ

ति० तीर्थस्थान से अ० तुरत का उ० उत्पन्नदेव दे०देवलोक में इ० इच्छे मा० मनुष्य लोक में ह० शीघ्र आ०आनेको अ० तुरत का उ० उत्पन्नदेव दे० देवलोक के दि० दिव्य का० काम भोग में अ०अमूर्च्छित अ० अगृद्ध अ० अबन्धा अ० अप्राप्त त० उसको ए० ऐसा भ० होवे अ० है म० मेरा म० मनुष्य भव का आ० आचार्य उ० उपाध्याय प० प्रवर्तक थे० स्थविर ग० गणि ग० गणधर ग० गणावच्छेदक जे० जिसका प० प्रभाव से म० मुझे इ० यह रूप दि० दिव्य दे० देवऋद्धि दि० दिव्य दे० देवद्युति दि०

सूत्र

देवे देवलोएसु इच्छेज्जा माणुस्सलोगं हव्वमागच्छित्ता तं० अहुणोववन्ने देवे देवलोगेसु दिव्वेसु कामभोगेसु अमुच्छिए अगिद्धे अगढिए अणज्झोववन्ने तस्सणं एवं भवइ अत्थिणं मम माणुस्सए भवे आयरिएइवा उवज्झाएइवा पवत्तेइवा थेरेइवा गणीइवा गणहरेइवा गणावच्छेएइ वा जेसिं पभावेणं मएइमा एया रूवा दिव्वा देवड्ढी दिव्वादेवजुई दिव्वे देवाणुभावे लद्धे पत्ते अभिसमण्णागए तं गच्छामि णं तं भगवं वंदामि णमंसा

भावार्थ

स्थविर, गणी, गणधर, गणावच्छेदक वगैरह अपने शिष्यादि सह विचर रहे हैं. उन के प्रभाव से ही इस प्रकारकी प्रत्यक्ष देवता की ऋद्धि, दीव्य कान्ति, और देव प्रभाव मैंने प्राप्त कीया. इसलिये मनुष्य लोक में जाऊं और वंदना नमस्कार करूं, सत्कार देऊं, सन्मान देऊं, कल्याण मंगल के करनेवाले ज्ञानवंत भगवन्त की मैं पूजा करूं. इस विचार से देवता यहां मनुष्य लोक में आवे. २ नविन उत्पन्न देवता दीव्य

शब्दार्थ

दिव्य दे० देवानुभाव ल० मीले प० प्राप्त हुवे अ० सन्मुख हुवे तं० उनको ग० जाताहूं तं० उन भ० भगवान् को वं० वांदताहूं ण० नमस्कार करताहूं स० सत्कार करताहूं स० सन्मान देताहूं क० कल्याणकारी म० मंगलीक दे० धर्मवन्त चे० ज्ञानवन्त प० पूजताहूं अ० तुरत का उ० उत्पन्नदेव दे० देवलोक में दि० दिव्य का० काम भोग से अ० अमूर्च्छित जा० यावत् अ० अप्राप्त त० उसको ए० ऐसा भ० होवे मा० मनुष्य भव में णा० ज्ञानी त० तपस्वी अ० अतिदुष्करदुष्कर क्रियावन्त तं० उनको ग० जाऊं

सूत्र

मि सक्कारेमि सम्माणेमि कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं पज्जुवासेमि अहुणोववन्नेदेवे देवलोगेसु दिव्वेसु कामभोगेसु अमुच्छिए जाव अणज्झोववन्ने तस्सणं एवं भवइ एसणं माणुस्सए भवे णाणीइवा तवस्सीइवा अइदुक्करदुक्कर कारगे तं गच्छामि णं भगवंते वंदामि णमंसामि जाव पज्जुवासामि अहुणोववन्ने देवे देवलोगेसु जाव अणज्झोववन्ने तस्सण मेवं भवइ अत्थिणं मम माणुस्सए

भावार्थ

कामभोगादिक में अमूर्च्छित यावत् अनासक्त बनकर ऐसा विचार करे कि इस मनुष्य भव में महा ज्ञानी, महा तपस्वी, अति दुष्कर करणी को करनेवाले हैं इसलिये मैं उन को वंदने को, नमस्कार करने को यावत् पूजने को मनुष्य लोक में जाऊं. ३ नविन उत्पन्न हुवा देवता दीव्य कामभोगों में अमूर्च्छित यावत् अनासक्त बनकर के ऐसा विचार करे कि मनुष्य भव में मेरे माता, पिता, स्त्री, पुत्र, पुत्रवधू, भगिनी

शब्दार्थ

भ० भगवान् को वं० वंदताहूं ण० नमस्कार करताहूं जा० यावत् प० पूजताहूं अ० तुरत का उ० उत्पन्नदेव दे० देवलोक में जा० यावत् अ० अप्राप्त त० उसको भ० होवे अ० है म० मेरा मनुष्य भव के मा० माता जा० यावत् सु० पुत्रवधू तं० उनको ग० जाऊं ते० उनकी अं० समीप पा० प्रगटहोऊं पा० बतलावुं ता० उनको ए० यहरूप दि० दिव्य दे० पूर्ववत् ॥१०॥ त० तीनस्थान से दे० देव पी० प्रार्थे मा० मनुष्यभव आ० आर्यक्षेत्र में ज० जन्म सु० उत्तम कुलमें प० उत्पत्ति ॥ ११ ॥ तिं० तीनस्थान से दे० देव प० संतप्त होवे अ० अहो म० मेरा सं० है ब० बल वी०

सूत्र

भवे मायाइवा जाव सुण्हाइवा तं गच्छामि णं तेसिं मंतियं पाउब्भवामि पासंतु तामे इमं एयारूवं दिव्वं देविड्ढिं दिव्वं देवजुइं दिव्वं देवाणुभावं लद्धं पत्तं अभिसमण्णागयं इच्चेएहिं तिहिं ठाणेहिं अहुणोववन्ने देवे देवलोगेसु इच्छेज्ज माणुसं लोगं हव्वमागच्छित्तए संचारित्तए हव्वमागच्छित्तए ॥ १० ॥ तओ ठाणाहिं देवे पीहेजा तं० माणुस्सगं भवं आरिएखेत्ते जम्मं सुकुलपच्चायाइं ॥ ११ ॥ तिहिं ठाणेहिं देवे परितप्पेजा तं० अ-

भावार्थ

वगैरह हैं उन की पास मैं जाऊं और वहां प्रगट होकर बतलाउं कि ऐसा स्वरूप की दीव्य ऋद्धि, दीव्य शरीर, कान्ति और दीव्य देवानुभाव प्राप्त हुवे हैं. इन तीन कारनों से देवता मनुष्य लोक में आने को समर्थ होवे ॥ १० ॥ देवता भी तीन वस्तु प्राप्त करने की इच्छा करते हैं १ मनुष्य जन्म, आर्य क्षेत्र, और उत्तम कुल में जन्म ॥ ११ ॥ देवलोक के देवता तीन कारण से पश्चाताप करते हैं. १ अहो मैं बल,

शब्दार्थ

वीर्य पु० पुरुषात्कारपराक्रम खे०क्षेमवन्त सु० सुभिक्षमें आ०आचार्य उ०उपाध्याय से वि०विद्यमान क०शरीर युक्त णो०नहीं ब० बहुश्रुत अ०पढा अ०अहो म०मेरा इ०यह लोक प०प्रतिबन्ध प०परलोक प०परांगमुख वि० विषयतृष्णा से णो० नहीं दी० दीर्घकाल सा० साधुपना अ० पाला अ० अहो म० मेरी इ० ऋद्धि र० रस सा० साता गु० बहुत भो० भोगसंग में णो० नहीं वि० विशुद्ध च० चारित्र फा०स्पर्श किया ॥ १२ ॥ इ० इन ति० तीनस्थान से दे० देव च० चऊंगा इ० ऐसा जा० जाने वि० विमान आ०

सूत्र

होणं मए संते बले संते वीरिए संते पुरिसक्कारपरक्कमे खेमंसि सुभिक्खंसि आयरिय-उवज्झाएहिं विज्जमाणेहिं कल्लसरीरेणं णोबहुएसुए अहीए अहोणं मए इहलोग पडिबद्धेणं परलोगपरंमुहेणं विसयतिसिएणं णो दीहे सामन्नपरियाए अणुपालिए । अहोणं मए इड्ढिरससायं गुरुएणं भोगासंसगिद्धेणं णोविसुद्धे चरित्ते फासिए ॥ १२ ॥ इच्चे-

भावार्थ

वीर्य, पुरुषाकार पराक्रम व दृढ शरीर को धारन करनेवाला होकर वैसे ही सर्वथा क्षेम कुशलवन्त बनकर, सुख से आहारादिक प्राप्त कर और आचार्य उपाध्याय का संसर्ग होने पर भी मैंने बहुत शास्त्राभ्यास किया नहीं २ अहो इस लोक संबंधि विषयादिक के प्रतिबंध से अतृप्तपने परलोक से पराङ्मुख रह कर विषय तृष्णा से बहुत कालतक संयम नहीं पाल सका. ३ अहो ऋद्धि, रस और साता गर्व में भोग की आशा में रह कर शुद्ध चारित्र पाला नहीं ॥ १२ ॥ तीन कारण से देवता जाने कि मैं यहां से चवूंगा.

शब्दार्थ

आभरण नि० प्रभारहित पा० देखकर क०कल्पवृक्ष को मि० म्लान पा० देखकर अ० अपना ते०तेज ष० क्षीण जा० जानकर इ० इन तिं० तीनस्थान से दे० देव को उ० उद्वेग आ० आवे अ० अहो म० मेरा ए० यहरूप दि० दिव्य दे० देवऋद्धि दि० दिव्य दे० देवद्युति दि० दिव्य दे० देवानुभाव प० प्राप्त ल० मीलीहुई अ० आइहुई से च० चवन भ० होगा अ० अहो म० मुझे मा० माता का रुधिर पि० पिताका

सूत्र

एहिं तिहिं ठाणेहिं देवे चइस्सामीति जाणइ विमाणाभरणाइं णिप्पभाइं पसित्ता कप्परुक्खगं मिलायमाणं पासित्ता, अप्पणो तेयलेस्सं परिहायमाणं जाणित्ता, इच्चेएहिं तिहिंठाणेहिं देवे उव्वेगमागच्छेजा तं•अहोणं मए इमाओ एयारूवाओ दिव्वाओ देवड्ढीओ, दिव्वाओ देवजुईओ, दिव्वाओ देवाणुभावाओ पत्ताओ लद्धाओ अभिसमण्णागयाओ चवियव्वं भविस्सइ। अहोणं मए माउओयं पिउसुक्कं तं तदुभयसिट्ठं तप्पढमयाएआहारो

भावार्थ

१ अपने विमान आभरणको कान्ति रहित देख कर,२ कल्पवृक्ष को म्लान देख कर ३ और अपनी तेजोलेश्या (शरीर दीप्ति) हीन देख कर. इन तीन कारणों से देवता अपना चवन जानते हैं और चवन नजीक आया जानकर वे देवताओं तीन कारण से पश्चाताप करते हैं. १ अहो यह दीव्य देवता की ऋद्धि द्युति, और प्रभाव मैं पाया हुवा हूं. इन सब को छोड कर यहां से चवना पडेगा. २ वहां उत्पन्न होते

शब्दार्थ

वीर्य उ० दोनो प० पहिला आ० आहार भ० होगा अ० अहो म० मुझे क० मलमूत्र नं० कर्दम अ० अशुचि उ० उत्पत्ति भी० भयानक ग० गर्भवास में व० रहना भ० होगा इ० इन तीनस्थान से ॥ १३ ॥ ति० तीन सं० संठाणके विमान व० वर्तुलाकार तं० त्रिकोण च० चौरस तं० तहां जे० जो० ते० वे व० वर्तुलाकार वि० विमान ते० वे पु० पुष्करकर्णिका सं० संठान से सं० रहेहुवे स० सर्व से सं० विटेहुवे पा० कोट के प० परिक्षिप्त ए० एक दु० द्वार त० तहां जे० जो तं० त्रिकोण विमान ते० वे सिं० सींघोडे के आ० आकार से ए० एक दु० द्वार त० तहां जे० जो च० चौरस ते० वे अ० अखाडे के आ० आकार से च० चार दु० द्वार त० तहां जे० जो ते० वे वि० विमान ति० तीन व० वस्तु के आ० आधार से सं० संठिये हुवे प० पहिले दू० दूसरे दे०

सूत्र

आहारेयव्वो भविस्सइ। अहोणं मए कलमलजंबालाए असुईए उव्वेयणित्ताए भीमाए गब्भवसहीए वसियव्वं भविस्सइ । इच्चेएहिं तिहिं ठाणेहिं ॥ १३ ॥ तिसंट्ठिया विमाणा प० तं० वट्टा, तंसा, चउरंसा । तत्थणं जे ते वट्टविमाणा तेणं पुक्खरकण्णिया

भावार्थ

माता का रुधिर और पिता का शुक्र का आहार मुझे करना पडेगा. ३ और मलमूत्रमय अशुचि के कीचड में नवमासाधिक काल रहना पडेगा ॥ १३ ॥ भगवंतने विमान तीन संठानवाले बतलाये हैं. गोल, तीखूने और चौखूने. उस में जो वर्तुलाकार विमानों हैं वे पुष्कर कर्णिका के आकारवाले हैं. चारों तरफ कोट है, और एक द्वार है. जो बिमान तीखूने है वे सींघोडे के आकारवाले हैं उस को दो तरफ कोट है और एक तरफ वेदिका है और तीन द्वार है. और चौखूने बिमान हैं वे अखाडे जैसे आकारवाले हैं चारों तरफ वेदिका है और चार द्वार हैं. तीन वस्तु के आधार से विमानों रहे हुवे हैं, पहिले दूसरे देव

शब्दार्थ

घोडे के सं० संठान से सं० रहेहुवे दु० दोबाजु प० रहाहुवा ए० एक तरफ वे० वेदिका प० रहीहुई ति० तीनद्वार तं० तहां जे० जो च० चौरस वि० विमान ते० वे अ० अखाडाके सं० संठान से सं० रहे हुवे सं० सब दिशा में वे० वेदिका प० रहीहुई च० चारद्वार प० प्ररूपा ति० तीन प्रतिष्ठित वि० विमान घ० घनोदधि प्रतिष्ठित घ० घनवात प्रतिष्ठित उ० आकाश प्रतिष्ठित ति० तीनप्रकार के वि० विमान

सूत्र

संठाण संठिया सव्वओ समंता पागारपारिक्खित्ता एगदुवारा प० । तत्थणं जे ते तसविमाणा ते सिंघाडगसंठाणसंठिया दुहओ पागारपरिक्खित्ता एगओ वेइया परिक्खित्ता तिदुवारा प० । तत्थणं जे ते चउरंसविमाणा तेणं अक्खाडगसंठाणसंठिया सव्वओ समंता वेइया परिक्खित्ता, चउदुवारा पन्नत्ता ॥ तिपइट्ठिया विमाणा प० तं० घणोदहिपइट्ठिया, घणवायपइट्ठिया, उवासंतरपइट्ठिया । तिविहा विमाणा प० तं०

भावार्थ

लोक के विमानों घनोदधि के आधार से रहे हुवे हैं, तीसरा चौथा देवलोक के विमानों घनवात के आधार से रहे हैं, पांचवा, छट्ठा, सातवा और आठवा देवलोक के विमानों घनोदधि घनवात के आधार से और नववा, दशवा, अग्यारवा और बारवा देवलोक के यावत् सर्वार्थसिद्ध के विमानों आकाश के आधार से रहे हैं. और भी तीन प्रकार के विमान कहे हैं. देवताओं को सदैव रहने केलिये शाश्वते विमानों जो हैं सो अवस्थित, २ परिचारणा करने के लिये जो विमानों बनावे सो वैक्रेय और प्रयोजन

शब्दार्थ

अ० अवस्थित वे० वैक्रिय प० जाने आनेके ॥ १४ ॥ ति० तीनप्रकार के णे० नारकी स० सम्यदृष्टि मि०मिथ्यादृष्टि स०सममिथ्यादृष्टि ए० ऐसे वि० विकलेन्द्रिय व०वर्जकर जा०यावत् वे० वैमानिक त०तीन दुर्गति प० प्ररूपी णे० नरक की दुर्गति ति० तिर्यंच योनिकी दुर्गति म० मनुष्य की दुर्गति त० तीन सु० सुगति सि० सिद्धि सुगति दे० देवता की सुगति म० मनुष्य की सुगति त० तीनदुर्गतिवाले णे० नारकी दु० दुर्गतिवाले ति०तिर्यंच दु० दुर्गतिवाले म० मनुष्य दु० दुर्गतिवाले त० तीन सु० अच्छीगतिवाले

सूत्र

अवट्ठिया, वेउव्विया, परिजाणिया ॥ १४ ॥ तिविहा णेरइया प० तं० सम्मादिट्ठी, मिच्छादिट्ठी सम्मामिच्छादिट्ठी। एवं विगलिंदियवज्जं जाव वेमाणियाणं ॥ तओ दुग्गईओ पण्णत्ताओ तं० णेरइयदुग्गई, तिरिक्खजोणियदुग्गई, मणुस्सदुग्गई । तओ सुग्गईओ प० तं० सिद्धि सोग्गई, देवसोग्गई, मणुस्ससोग्गई ॥ तओ दुग्गया प० तं० णेरइयदुग्गया तिरिक्खजोणियदुग्गया, मणुस्सदुग्गया । तओ सुग्गया प० तं० सिद्धसुग्गया, देवसुग्गया

भावार्थ

से जाने आने को जो विमान बनावे सो परियान ॥ १४ ॥ पांच स्थावर में मिथ्या दृष्टि और तीन विगलेन्द्रिय में समदृष्टि मिथ्या दृष्टि है इन दो को छोड कर अन्य सब दंडकों में तीन दृष्टि समदृष्टि, मिथ्या दृष्टि और मिश्र दृष्टि. यह तीन दृष्टिवाले जीवों हैं. भगवंतने नरक, तिर्यंच और चांडालादि मनुष्य की दुर्गति कही है. सिद्धगति, देवगति, और उत्तम मनुष्यगति ये तीन सुगति कही.

शब्दार्थ

सि० सिद्ध सु० अच्छीगति वाले दे० देव सु० अच्छीगति वाले म० मनुष्य सु० अच्छीगति वाले ॥ १५ ॥ च० चौथभक्त वाले भि० साधु को क० कल्पता है तीन पा० पानी प० लेने को उ० ओसामन सं० संस्वेदिम चा० भात का धोवन छ० छठभक्त वाले भि० साधु को क० कल्पता है त० तीन पानी प० लेने को ति० तिलकाधोवण तु० तुसकाधोवण ज० जवकाधोवण अ० अष्टभक्त वाले भि० साधु को क०

सूत्र

मणुस्ससुग्गया ॥ १५ ॥ चउत्थभत्तियस्सणं भिक्खुस्स कप्पंति तओ पाणगाइं पडिगाहित्तए तं० उस्सेइमे, संसइमे चाउलधोवणे । छट्ठभत्तियस्सणं भिक्खुस्स कप्पंति तओ पाणगाइं पडिगाहित्तए, तंजहा—तिलोदए, तुसोदए, जवोदए, ॥ अट्ठमभत्तियस्सणं भिक्खुस्स कप्पंति तओ पाणगाइं पडिगाहित्तए तं जहा आयामए, सोवी

भावार्थ

वैसे ही तीन दुर्गतिवाले और तीन सुगतिवाले जीवों जानना. ॥ १५ ॥ चौथ भक्त करनेवाले साधु को तीन प्रकार के पानी कल्पते हैं. १ व्रीहि प्रमुख का धोवन, २ शाकभाजी बाफकर जो पानी निकाले सो संस्वेदिम और ३ चांवल का धोवन. षष्ठ भक्त आहार करनेवाले साधु को तीन प्रकार का पानी कल्पता है. १ तील का धोवन, २ तुस का धोवन और ३ यव का धोवन. अष्ट भक्त आहार करनेवाले साधु को

---

१ धारने में एक भक्त, पारने में एक भक्त और उपवास के दो भक्त ऐसे चार भक्तका त्याग करनेवाले को चौथ भक्त कहते हैं.

शब्दार्थ

कल्पता है त० तीन पानी प० लेने को आ० आछ सो० आटाकाधोवन सु० शुद्ध गरम पानी ॥ १६ ॥ ति० तीनप्रकार का उ० अभिग्रह फ० फलित आहारदेवे सु० शुद्ध आहार देवे सं० भरे हाथसेदेवे ति० तीनप्रकार के ओ० अभिग्रह जं० स्वतःकादे जं० दूसरेकादे अ० मुखमें डालता दे ॥ १७ ॥ ति० तीन-

सूत्र

रए, सुद्धवियडे ॥ १६ ॥ तिविहे उवहडे प० तं० फलिहउवहडे, सुद्धोवहडे, संसट्ठो वहडे।तिविहे ओगहिए प०तं०जं च ओगिण्हइ जंचसाहरइ जंचआसगंसि पक्खिवइ।१७। तिविहाओ मोयरियाओ प०तं० उवकरणोमोयरिया, भत्तपाणो मोयरिया, भावोमोयरिया।

भावार्थ

तीन तरह का पानी कल्पता है छाछ की आछ, कांनी का पानी और ऊष्ण जल ॥ १६ ॥ भगवंत फरमाते हैं कि साधु आहार ग्रहण करने को तीन प्रकार के आभिग्रह धारन करते हैं. अपने खाने को तैयार हुवा भोजन थाली आदि में ग्रहण किया इतने में साधु आये वह आहार वहोरा देवे तो लेवूं, २ विना भरे हाथ से देवे तो लेवूं, ३ भोगवने के द्रव्य से हाथ भरे होवे तो लेवूं. और भी तीन प्रकारका अभिग्रह. गृहस्थने भोगवने को आहार लिया उस में से लेवूं, गृहस्थने अन्य को देने के लिये निकाला उस में का कुच्छ भी हिस्सा मुझे देवे तो ग्रहण करूं, और गृहस्थ भोजन करने बैठा उस में से एक ग्रास ग्रहण किया होवे वैसा आहार देवे तो ग्रहण करूं ॥ १७ ॥ भगवन्तने ऊनोदरी तप तीन प्रकार के कहे. १ वस्त्र पात्र रखना सो उपकरण ऊनोदरी,२ बत्तीस कवल में से कुच्छ कम आहार लेना सो आहार ऊनो-

शब्दार्थ

प्रकार की मो० ऊनोदरी उ० उपकरण ऊनोदरी भ० भक्तपान ऊनोदरी भा० भावऊनोदरी उ० उपकरण ऊनोदरी ति० तीनप्रकार की ए० एक वस्त्र ए० एकपात्र चि०संयमी को उ० उपाधि सा०रखे ॥१८॥ त० तीन ठा० स्थान णि०साधु णि०साध्वी को अ०अहित कर्ता अ०असुख कर्ता अ०अक्षेमकर्ता अ०अकल्याणकर्ता अ० अननुगामी भ० होवे कू० आर्तरुदन क० कर कर शब्द अ० खराब ध्यान करना त० तीन ठा० स्थान णि० साधु को नि० साध्वी को हि० हित सु० सुख क० क्षमा णि० अकल्याणकर्ता अ० अनुगामी

सूत्र

उवगरणोमोयरिया तिविहा प० तं० एगेवत्थे, एगेपाये, चियत्तोवहिसाइज्जणया ॥ १८ ॥ तओ ठाणा णिग्गंथाणं वा णिग्गंथीणं वा अहियाए असुहाए अक्खमाए अणिस्सेयसाए, अणाणुगामियत्ताए भवइ तं० कूअणया, कक्करणया, अवज्झाणया। तओ ठाणा निग्गंथाणं वा णिग्गंथीणंवा हियाए सुहाए खमाए णिस्सेयसाए अणु-

भावार्थ

दरी ३ क्रोधादि कषाय घटाना सो भाव ऊणोदरी. उस में से उपकरण उणोदरी के तीन भेद. एक ही वस्त्र रक्खे, एक पात्र रक्खे; और चाहिये जितना उपकरण रक्खे. ॥ १८ ॥ आर्तस्वर से रुदन करना, कुरकुराट करना—यह खराब—अमुक खराब ऐसा बोलना और खराब ध्यान करना ये तीन स्थान साधु को अहित के कर्ता है, और सुख, क्षमा, और मोक्ष को नहीं करनेवाले, तथा संसारको पार नहीं करनेवाले हैं. वैसे ही आर्तस्वर से रुदन नहीं करना, कुरकुराट नहीं करना और खराब ध्यान नहीं रखना ये तीनों

शब्दार्थ

भ० होवे अ० रुदन नकरे अ० कर कर शब्दनकरे अ० अच्छा ध्यान धरना ॥ १९ ॥ त० तीनशल्य प० प्ररूपा मा० माया शल्य णि० निदान शल्य मि० मिथ्यादर्शन शल्य ॥ २० ॥ ति० तीनस्थान से स० श्रमण नि० निर्ग्रंथ सं० संक्षिप्त वि० विपुल ते० तेजुलेश्यावाला भ० होवे आ० आतापना लेनेसे खं० क्षमा करने से अ० आत्मा को त० तपकर्म से ॥ २१ ॥ ते० तीनमास की भि० साधु प्रतिज्ञा प० अंगीकार

सूत्र

गामियत्ताए भवइ तं० अकूयणया, अकक्करणया, अणवज्झाणया ॥ १९ ॥ तओ सल्ला प० तं० मायासल्ले, णियाणसल्ले, मिच्छादंसणसल्ले ॥ २० ॥ तिहिं ठाणेहिं समणे णिग्गंथे संखित्त विउल तेउलेस्से भवइ तं० आयावणयाए, खंतिखमाए, अप्पाणगेणं तवोकम्मेणं ॥ २१ ॥ तेमासियण्णं भिक्खुपडिमं पडिवन्नस्स अणगारस्स क-

भावार्थ

स्थान साधु को दोनों भव में हित और सुख के कर्त्ता, क्षमा और मोक्ष को करनेवाले और संसार को पार करनेवाले हैं ॥ १९ ॥ भगवन्तने तीन प्रकार के शल्य कहे हैं माया शल्य, निदान शल्य, और मिथ्यादर्शन शल्य ॥ २० ॥ साधु निर्ग्रंथ शीत ताप आदि आतापना शरीर को देते हैं, अतीव कष्ट प्राप्त होने पर तथा उस को निवारने को समर्थ होने पर भी सहन करते हैं, और छठअठमादि तप करके पारने में भी रुक्ष शुष्क आहार लेते हैं उन साधुओं को उक्त तीन गुणों से तेज्यु लेश्या की प्राप्ति होती है. उस शक्ति से अनेक देशों जलकर भस्म होजाते हैं ॥ २१ ॥ साधुओं की द्वादश प्रतिज्ञाओं

शब्दार्थ करते अ० साधु को क० कल्पता है त० तीनदाति भो० भोजन की प० लेनेको त० तीन पा० पानी की ए० एकरात्रिकी भि० भिक्षुप्रतिज्ञा को स० पालन नहीं करता अ० साधु को इ० यह त० तीनस्थान अ० अहित कर्ता अ० अशुभ कर्ता अ० अक्षेम कर्ता अ० अकल्याण कर्ता अ० अननुगामी भ० होवे उ० उन्माद ल० प्राप्त करे दी० दीर्घकाल रो० रोगातंक पा० उत्पन्न होवे के० केवलि प० प्ररूपा ध० धर्म से भं० भ्रष्टहोवे ए० एकरात्रि की भि० भिक्षुप्रतिमा स० अच्छी तरह पालता अ० अनगार को त० तीनस्थान

सूत्र

तइय ठाणाङ्ग सूत्र

प्पंति तओ दत्तीओ भोयणस्स पडिगाहित्ताए तओ पाणगस्स । एकराइयं भिक्खुपडिमं सम्ममणुपालेमाणस्स अणगारस्स इमे तओ ठाणा अहियाए, असुभाए, अखमाए, अणिस्सेयसाए, अणाणुगामियत्ताए भवंति तं० उम्मायं वा लभेज्जा, दीहकालियं वा रोयातंकं पाउणेज्जा, केवलिपण्णत्ताओ धम्माओ भंसेज्जा । एगराइयण्णं भिक्खुपडिमं सम्मं अणुपालेमाणस्स अणगारस्स तओ ठाणा हियाए सुभाए खमाए णिस्सेयसाए, अणुगा-

भावार्थ में तीसरी प्रतिज्ञा तीन मास तक आचरने की है. उस में तीन दात आहार की और तीन दात पानी की लेना कल्पता है. एक रात्रि की भिक्षु प्रतिमा सम्यक् प्रकारसे नहीं पालनेवाले को तीन स्थान हित, सुख, क्षमा, श्रेय और मोक्षको नहीं करनेवाले होवे. जैसे किः- चित्त विभ्रम होवे, बहुत काल के कुष्ठादि रोगों की उत्पत्ति होवे, और केवलि भाषित धर्म से भ्रष्ट होवे. उसी प्रतिज्ञा को सम्यक् प्रकार से पालते और देवादिक के

शब्दार्थ

हि० हितकर्ता सु० शुभकर्ता क० क्षेमकर्ता णि० कल्याण कर्ता अ० अनुगामी भ० होवे ओ० अवधिज्ञान स० उत्पन्न होवे म० मनःपर्यव ज्ञान स० उत्पन्न होवे के० केवल ज्ञान स० उत्पन्न होवे ॥ २२ ॥ जं० जंबूद्वीप में त० तीन क० कर्म भूमि भं० भरत ए० ऐरवत म० महाविदेह ए० ऐसे धा० धातकी खंडद्वीप के पु० पूर्वार्ध में जा० यावत् पु० पुष्करार्धद्वीप के प० पाश्चिमार्ध में ॥ २३ ॥ ति० तीन दं० दर्शन स० सम्यक् दर्शन मि० मिथ्यादर्शन स० समामिथ्या दर्शन ति० तीनप्रकार की रु० रुचि स० सम्यक्

सूत्र

मियत्ताए भवंति तं० ओहिणाणेवासे समुपज्जेज्जा, मणपज्जवणाणे वासे समुपज्जेज्जा केवलणाणेवासे समुपज्जेज्जा ॥ २२ ॥ जंबुद्दीवे दीवे तओ कम्मभूमीओ प० तं० भरहे एरवए, महाविदेहे । एवं धायइखंडे दीवे पुरच्छिमद्धे जाव पुक्खरवरदीवड्ढपच्छिमद्धे ॥ २३ ॥ तिविहे दंसणे प० सम्मदंसणे मिच्छदंसणे सम्मामिच्छदंसणे। तिविहा रुई प० तं० सम्मरुई, मिच्छइरुई, सम्मामिच्छरुई । तिविहेपओगे प० तं० सम्मपओगे

भावार्थ

उपसर्ग सहन करते तीन स्थानक हित के लिये, सुख, क्षमा, श्रेय और मोक्ष के लिये होवे. जैसे किः- अवधिज्ञान उत्पन्न होवे, मनःपर्यव ज्ञान उत्पन्न होवे, और केवल ज्ञान उत्पन्न होवे. ॥ २२ ॥ जम्बूद्वीप में, धातकी खण्ड के पूर्व पश्चिम में और पुष्करार्ध की पूर्व पश्चिम में कर्मभूमि मनुष्यों के तीन २ क्षेत्र हैं भरत, ऐरवत और महाविदेह ॥ २३ ॥ तीन प्रकारके दर्शन कहे हैं—सम्यग् दर्शन जो सत्य तत्त्व को जानना, असत्य

शब्दार्थ

रुचि मि० मिथ्यारुचि स० समामिथ्यारुचि ति० तीनप्रकारका प० प्रयोग स० सम्यक् प्रयोग मि० मिथ्या प्रयोग स० सम मिथ्याप्रयोग ॥२४॥ ति० तीनप्रकार का व० व्यवसाय ध० धर्मव्यवसाय अ० अधर्मव्यवसाय ध० धर्माधर्म व्यवसाय अ० अथवा ति० तीनप्रकार का व० व्यवसाय प० प्रत्यक्ष प० प्रत्यय अ० अनुगामिक अ० अथवा ति० तीन प्रकारका व० व्यवसाय इ० इसलोक संबंधि प० परलोक संबंधि इ० इस लोक परलोकसंबंधि इ० यहलोक व० व्यवसाय

सूत्र

मिच्छपओगे, सम्मामिच्छपओगे ॥ २४ ॥ तिविहे ववसाये प० तं० धम्मिएववसाये अहम्मिएववसाये, धम्मियाधम्मिएववसाये । अहवा तिविहे ववसाये प० तं० पच्चक्खे, पच्चइए, अणुगामिए । अहवातिविहेववसाये प० तं० इहलोइए, परलोइए, इहलोयपरलोइए । इहलोइए ववसायेतिविहे प० तं० लोइए, वेइए, सामइए । लोइ-

भाव र्थ

की श्रद्धा करना सो मिथ्या दर्शन और सममिथ्या दर्शन शल्य शुद्धाशुद्ध दोनों. तीन प्रकार की रुचि सम्यग् रुचि, मिथ्यात्व रुचि और मिश्र रुचि. मन का व्यापार सो प्रयोग. सम्यक् प्रयोग, मिथ्यात्व प्रयोग और मिश्र प्रयोग ॥ २४ ॥ कार्य सिद्धि के लिये क्रिया करना सो व्यापार धर्म व्यापार साधु का आचार. अधर्म व्यापार असंयति का और धर्माधर्म व्यापार सो देशविरति श्रावक का. और भी तीन प्रकार का व्यापार प्रत्यक्ष सो अवधि मनःपर्यव केवल रूप, प्रत्यय सो इन्द्रिय ज्ञान रूप और अनुगामिक व्यापार सो अनुमान से जानना जैसे धूम्रानुसार अग्नि जानना. और भी व्यापार तीन प्रकार के इस

शब्दार्थ

ति० तीनप्रकार का लो० लौकिक वे० वैदिक स० सामायिक लो० लौकिक व्यवसाय ति० तीनप्रकार का अ० अर्थ ध० धर्म का० काम वे० वैदिक व्यवसाय ति० तीनप्रकार का रि० ऋजुवेद ज० यजुर्वेद सा० सामवेद सा० सामायिक व० व्यवसाय ति० तीनप्रकार का णा० ज्ञान दं०दर्शन च० चारित्र ॥२५॥ ति० तीनप्रकार की अ० अर्थ योनि सा० साम दा० दाम भे० भेद ॥ २६ ॥ ति० तीनप्रकार के पो०

सूत्र

एववसाये तिविहे प० तं० अत्थे धम्मे कामे । वेइएववसाये तिविहे प० तं० रिउव्वेए, जजुव्वेए, सामवेए, ॥ सामइए ववसाये तिवेहे प० तं० णाणे, दंसणे चरित्ते ॥ २५ ॥ तिविहा अत्थजोणी प० तं० सामे दामे भेए ॥ २६ ॥ तिविहा पोग्गला

भावार्थ

लोक संबंधि, परलोक संबंधि और इस लोक परलोक दोनों लोक संबंधि. इस लोक संबंधि व्यापार तीन प्रकारके १ लौकिक व्यवहार रखना. २ वेदाश्रित सो वैदिक और३ सामायिकसो सिद्धांताश्रित धर्म क्रिया. लौकिक व्यवसाय के तीन भेद अर्थ व्यवसाय, द्रव्य की उपार्जना करना धर्म व्यवसाय धर्म करना और काम व्यवसाय सो विषय वैदिक व्यवसाय तीन प्रकार के ऋजुवेद, यजुर्वेद और सामवेद. सामायिक व्यापार तीन प्रकार का ज्ञान, दर्शन और चारित्र ॥ २५ ॥ तीन प्रकार की अर्थ योनि कही है. प्रिय वचन बोलना सो साम हणना सो दंड और भेद पाडना सो भेद ॥ २६ ॥ तीन प्रकार के पुद्गल

शब्दार्थ

पुद्गल प० प्रयोग परिणत मी० मिश्रपरिणत वी० विस्रसा परिणत ॥ २७ ॥ ति० तीन प० प्रतिष्ठित ण० नरक पु० पृथ्वी प्रतिष्ठित ण० नरक आ० आकाश प्रतिष्ठित आ० आत्म प्रतिष्ठित णे० नैगम सं० संग्रह व० व्यवहार को पु० पृथ्वी प्रतिष्ठित उ० ऋजुसूत्र से आ० आकाश प्रतिष्ठित ति० तीन स० शब्दनय से आ० आत्म प्रतिष्ठित ॥ २८ ॥ ति० तीनप्रकार का मि० मिथ्यात्व अ० अक्रिया अ० अविनय अ० अ-

सूत्र

प० तं० पओगपरिणया, मीसापरिणया, वीससापरिणया ॥ २७ ॥ तिपइट्ठिया णरगा प० तं० पुढविपइट्ठिया णरगा आगासपइट्ठिया, आयपइट्ठिया ॥ णेगम-संगह ववहाराणं पुढविपइट्ठिया, उज्जुसुयस्स आगासपइट्ठिया, तिण्हं सद्दणयाणं आयपइट्ठिया ॥ २८ ॥ तिविहे मिच्छत्ते प० तं० अकिरिया, अविणए, अण्णाणे ।

भावार्थ

प्रयोग परिणत सो जीव के व्यापार से बने वस्तुआदि. मिश्र परिणत कुच्छ प्रयोग से कुच्छ स्वभाव से और विस्रसा परिणत जो स्वभाव से बने जैसे इन्द्र धनुष्य ॥२७॥ तीन वस्तु के आधार से नरक बतलाइ है. नैगम और संग्रह, व्यवहार नयवाले पृथ्वी के आधार से नरक है ऐसा मानते हैं. ऋजु सूत्र नय-वाले आकाश के आधार से नरक है ऐसा मानते हैं और शब्द तथा समभिरूढ नयवाले आत्मा के आ-धार से ही नरक है ऐसा मानते हैं. ॥ २८ ॥ तीन प्रकार के मिथ्यात्व कहे. मिथ्यात्वी की क्रिया सो

शब्दार्थ

ज्ञान अ० अक्रिया ति० तीनप्रकार की प० प्रयोगक्रिया स० समुदानीक्रिया अ० अज्ञानक्रिया प०प्रयोग क्रिया ति० तीनप्रकार की म० मनप्रयोगक्रिया व० वचन प्रयोगक्रिया का० काय प्रयोगक्रिया स० समुदानीक्रिया ति० तीनप्रकार की अ० अनंतर समुदानीक्रिया प० परंपरा समुदानीक्रिया उ० उभय स०समु-

सूत्र

अकिरिया, तिविहा प० तं० पओगाकिरिया, समुदाणकिरिया, अन्नाणकिरिया । पओगकिरिया तिविहा प० तं० मणपओगकिरिया, वयपओगकिरिया, कायपओगकिरिया, समुदाणकिरिया तिविहा प० तं० अणंतरसमुदाणकिरिया, परंपरसमुदाणकिरिया, तदुभयसमुदाणकिरिया । अण्णाणकिरिया तिविहा प० तं० मइअन्नाणकिरिया,

भावार्थ

अक्रिया, मिथ्यात्वी का विनय सो अविनय और मिथ्यात्वी का ज्ञान सो अज्ञान. इस में से अक्रिया तीन प्रकार की मन वचन और कायाके योगों से कर्म बंध करना सो प्रयोग क्रिया. और किये हुवे कर्मों को अच्छी तरह अंगीकार करना सो समुदानी क्रिया. और अज्ञान से कर्मबंधे सो अज्ञान क्रिया. प्रयोग क्रिया तीन प्रकार की—मन प्रयोग, वचन प्रयोग और काया प्रयोग समुदानी क्रिया तीन प्रकार की प्रथम समय की क्रिया सो अनंतर सामुदानिक क्रिया. क्रिया किये दो तीन समय होगये होवे सो परंपरा सामुदानिक क्रिया और अनंतर तथा परंपरा से क्रिया होवे सो अनंतरपरंपरा सामुदानिक क्रिया. तीसरी अज्ञान क्रिया के तीन भेद मति अज्ञान, श्रुत अज्ञान और विभंग अज्ञानकी क्रिया. अविनय

शब्दार्थ

दानीक्रिया अ० अज्ञान क्रिया ति० तीनप्रकार की म० मतिअज्ञानक्रिया सु० श्रुतअज्ञानक्रिया वि० विभंग अज्ञानक्रिया अ० अविनय ति० तीनप्रकार का दे० देशत्यागी णि० निरावलंबी णा० ज्ञान रागद्वेष अ० अज्ञान ति० तीनप्रकार का दे० देशअज्ञान स० सर्वअज्ञान भा० भाव अज्ञान ॥ २९ ॥ ति० तीनप्रकार का ध० धर्म सु० सूत्रधर्म च० चारित्र धर्म अ० अस्तिकाय धर्म ति० तीनप्रकार का उ० उपक्रम ध०

सूत्र

सुयअन्नाणकिरिया, विभंगअन्नाणकिरिया । अविणये तिविहे प० तं० देसच्चाइ, णिरालंबणया, णाणपेज्जदोसे । अन्नाणे तिविहे प० तं० देसअण्णाणे, सव्वअण्णाणे, भावअण्णाणे ॥ २९ ॥ तिविहे धम्मे प० तं० सुयधम्मे, चरित्तधम्मे, अत्थिकायधम्मे । तिविहे उवक्कमे प० तं० धम्मिए उवक्कमे, अहम्मिए उवक्कमे, धम्मिया

भावार्थ

मिथ्यात्व के तीन भेद देश का त्याग कर वन में या विदेश में परिभ्रमण करे, सब कुटुम्ब का त्याग कर निरावलम्बी बने और राग द्वेषादि अनेक दोषों से अपनी आत्मा को मलिन करे. अज्ञान मिथ्यात्व तीन प्रकार के—देश से न जाने सो देश अज्ञान, सर्वथा न जाने सो सर्व अज्ञान और द्रव्य से जाने परंतु पर्याय से न जाने सो भाव अज्ञान ॥ २९ ॥ भगवंतने धर्म के तीन प्रकार फरमाये हैं. सिद्धांत का श्रवण करना सो श्रुत धर्म, पंचमहाव्रत और दश प्रकार का यति धर्म सो चारित्र धर्म और धर्मास्ति कायादिक द्रव्य का स्वभाव सो अस्तिकाय धर्म. तीन प्रकार के उपक्रम (उद्यम) कहते हैं. धर्म करना, चारित्र पालना सो

धर्मका उपक्रम अ० अधर्मका उपक्रम ध० धर्माधर्मका उपक्रम अ० अथवा ति० तीनप्रकार का उ० उपक्रम आ० आत्मोपक्रम प० परोपक्रम उ० उभयोपक्रम ए० ऐसे बे० वैयावृत्य अ० अनुग्रह अ० धर्मशिक्षण उ० उपालंभ ए० ऐसे इ० एक के में ति० तीन तीन आ० आलापक ज० जैसे उ० उपक्रम ॥ ३० ॥ ति०

धम्मिए उवक्कमे ॥ अहवा तिविहे उवक्कमे प० तं० आयोवक्कमे, परोवक्कमे, तदुभयोवक्कमे । एवं वेयावच्चे, अणुग्गहे, अणुसिट्ठि, उवालंभे, एवमिक्किक्के-तिन्नि २ आलावगा जहेव उवक्कमे॥ ३०॥ तिविहा कहा प० तं० अत्थकहा, धम्मकहा,

धर्म का उपक्रम, पापरंभ करना सो अधर्म का उपक्रम और देशव्रती श्रावक का उपक्रम सो धर्माधर्म उपक्रम. और भी तीन प्रकार के उपक्रम—आत्मा को अनुकूल उपसर्ग होने पर शील रक्षा के लिये वेहानसादि मरण करना सो आत्मोपक्रम, परके लिये मरना सो परोपक्रम, और उभय के लिये उपक्रम सो उभयोपक्रम. ऐसे ही तीनो उपक्रम वैयावृत्य में जानना. स्वतः के लिये आहार लेने को जाना, अन्य को आहारादि लाकर देना, अपनेको और अन्य को आहारादि लाकर देना. ज्ञानादि उपकार में भी तीन भेद आप ज्ञानादिक के लिये अभ्यास करे, व अन्य को करावे, स्वतः करे अन्य की पास करावें. धर्म की शिक्षा में उक्त तीनों भेद. अपनी आत्मा को शिक्षा देवे, अन्य की आत्मा को शिक्षा देवे और अपनी तथा अन्य की आत्मा को शिक्षा देवे. उपालंभ में भी तीन भेद. अपनी आत्मा को उपालंभ देना, अन्य की आत्मा को उपालंभ देना तथा अपनी व अन्य को आत्मा को उपालंभ देना ॥ ३० ॥

शब्दार्थ

तीनकथा अ० अर्थकथा ध० धर्मकथा का० कामकथा ति० तीन अ० विनिश्चय अ० धनका ध० धर्म का का० काम का ॥ ३१ ॥ त० तथारूप भं० भगवन् स० श्रमण को मा० माहण को पु० पूजते को कि० क्या फ० फल पु० पूजने से स० श्रवण फल से० उसको भ० भगवन् स० श्रवण से कि० क्या फ० फल णा० ज्ञानफल से० उसको भं० भगवन् णा० ज्ञान से कि० क्या फ० फल वि० विज्ञानफल ए० ऐसे

२११

सूत्र

कामकहा । तिविहा विणिच्छिए प० तं० अत्थविणिच्छिए, धम्मविणिच्छिए, कामविणिच्छिए ॥ ३१ ॥ तहारूवाणं भंते समणं, वा माहणं वा, पज्जुवासेमाणस्स किं फले ? पज्जुवासणया सवणफले । सेणं भंते सवणे किंफले ? णाणफले, । सेणं भंते णाणे किंफले ? विण्णाणफले। एवमेव अभिलावेण इमा गाहा अणुगंतव्वा—सवणे

भावार्थ

तीन प्रकार की कथा धन की कथा सो अर्थ कथा, दान शीलादिक की कथा सो धर्म कथा और कामशास्त्र की कथा सो काम कथा. ऐसे ही अर्थ विनिश्चय, धर्म विनिश्चय और काम विनिश्चय के तीन २ भेद जानना ॥ ३१ ॥ श्री गौतम स्वामी प्रश्न करते हैं कि अहो पूज्य ! तथाभूत साधु पुरुषों की पर्युपासना करने से क्या फल होता है ? भगवन्त फरमाते हैं कि हे गौतम ! श्रवण फल होवे. श्रवण से क्या होवे ! ज्ञान प्राप्ति. ज्ञान प्राप्ति से क्या होवे ? विज्ञान प्राप्ति. विज्ञान से ? समस्त त्याग रूप प्रत्याख्यान. प्रत्याख्यान से आत्म निवृत्ति सो संयम. संयम से भगवान की आज्ञा का आराधकपना. आज्ञा आराधकपना से

शब्दार्थ

अ० अभिलाप से इ० यह गा० गाथा से अ० जानना स० श्रवण णा० ज्ञान वि० विज्ञान प० प्रत्याख्यान सं० संयम अ० अनाश्रव त० तप बो० बोध अ० अक्रिया णि० निर्वाण जा० यावत् से० उसको भं० भगवन् अ० अक्रिया से कि० क्याफल णि० निर्वाण फल से० उसको भं० भगवान् णि० निर्वाण से किं० क्या फ० फल सि० सिद्धिगमन प० पर्युपासनाका फ०फल प०प्ररूपा स०आयुष्पन् श्रमण ॥ ३२ ॥

सूत्र

प० प्रतिमा प० संपन्न अ० साधु को क० कल्पता है त० तीन उ० उपाश्रय प० प्रतिलेखना तं० वह

णाणेय विण्णाणे, पच्चक्खाणे य संजमे ॥ अणण्हवे तवे चेव। वोदाणे अकिरिया णिव्वाणे (१) जाव सेणं भंते अकिरिया किंफला ? णिव्वाणफला; सेणं भंते णिव्वाणे किंफले ? सिद्धिगइगमणपज्जवसाणफले पण्णत्ते समाणाउसो ! ॥ ३२ ॥ *

पडिमा पडिवन्नस्सणं अणगारस्स कप्पंति तओ उवस्सग्गपडिलोहित्तए, तं० अहे आगमण

भावार्थ

तपश्चरण. तपश्चरण से बोध बीज सम्यक्त्व की प्राप्ति. बोध बीज से क्रिया रहित होना. क्रिया रहित होने से निर्वाण प्राप्ति. निर्वाण प्राप्ति से क्या लाभ ? अहो गौतम ! सर्व कार्य की सिद्धि हो मुक्ति के अनंत अव्याबाध सुख की प्राप्ति होती है. यह तीसरा ठाणा का तीसरा उद्देशा पूर्ण हुवा.

जो साधु बारह पडिमा में से किसी भी पाडिमा के धारक होते हैं उन साधुको अपने लिये रहने को तीन प्रकार के उपाश्रय को देख कर याचना करनी कल्पती है. किसी गृहस्थ के लिये मकान, घर आदि

शब्दार्थ

अ० अथ आ० आने जाने वाले का गि० गृह में विवृतगृह में रु० वृक्षकेतलगृह में ए० ऐसे अ० आज्ञा से उ० ग्रहणकरे प० प्रतिमा प० संपन्न अ० साधु को क० कल्पता है त० तीन सं० संथारा प० प्रातिलेखना पु० पृथ्वीशिला क०काष्टशिला सं० घासका ए० ऐसे अ० आज्ञासे उ० ग्रहणकरे ॥ १ ॥ ति० तीन का० काल ती० अतीत प० वर्तमान अ० अनागत ति० तीनप्रकार का स० समय ती० अतीत प० वर्तमान

सूत्र

गिहंसिवा, अहेवियडगिहंसिवा, अहेरुक्खमूलगिहंसिवा । एव मणुन्नवेत्तए, उवाइणित्तए ॥ पडिमापडिवन्नस्सणं अणगारस्स कप्पंति तओ संथारगापडिलेहित्तए तं० पुढविसिला, कट्ठसिला, अहासंथडमेव । एवमणुन्नावित्तए उवाइणित्तए ॥ १ ॥ तिविहे काले प० तं० तीते, पडुप्पन्ने, अणागए । तिविहे समए प० तं० तीते,

भावार्थ

बनाया होवे तो उस के एक कोने की याचना करे, अथवा खुल्ला मकान में एक कोना ढकाहुवा होवे तो उस की अथवा वृक्ष मूल में गृह बना हुवा होवे तो या वृक्ष की नीचे गृहस्थ की आज्ञा लेकर वहां रहना कल्पे. प्रतिमा अंगीकार करनेवाले साधु को तीन प्रकार के संथारे देखना कल्पे. पृथ्वी की शीला, काष्ट की शीला और तृणादिक का संथारा इन तीनों की प्राप्ति होवे तो आज्ञा मांग कर ग्रहण करे ॥ १ ॥ तीन प्रकारका काल कहा अतीत, वर्तमान और अनागत. समय तीन प्रकारके अतीत, वर्तमान और

शब्दार्थ

अ० अनागत ए० ऐसे आ० आवलीका आ०श्वासोश्वास पा०वाणु थो०थोभ ल०लव मु०मुहूर्त अ०अहोरात्रि जा० यावत् वा० लक्षवर्ष पु० पूर्वांग पु० पूर्व जा० यावत् ओ० अवसर्पिणी ति० तीनप्रकार का पु० पुद्गल परावर्तन ती० अतीत प० वर्तमान अ० अनागत ॥ २ ॥ ति० तीनप्रकार का व० वचन ए० एक वचन दु० द्विवचन ब० बहुवचन अ० अथवा ति० तीनप्रकार का व० वचन इ० स्त्रीवचन पु० पुरुष वचन ण०

सूत्र

पडुप्पन्ने, अणागए । एवं आवलिया, आणापाणू, थोवे, लवे, मुहुत्ते, अहोरत्ते, जाव वाससयसहस्से; पुव्वंगे, पुव्वे, जाव ओसप्पिणी ॥ तिविहे पोग्गलपरियट्टे पं० तं० तीते पडुप्पन्ने, अणागए ॥ १ ॥ तिविहे वयणे प० तं० एगवयणे, दुवयणे, बहुवयणे अहवा तिविहे वयणे प० त० इत्थिवयणे, पुम्मवयणे, णपुंसगवयणे । अहवा तिवि-

भावार्थ

अनागत. ऐसे ही आवालिका, आणा (श्वासोश्वास) वाणु, थोभ, लव, मुहूर्त, अहोरात्रि, सो वर्ष, पूर्वांग, पूर्व यावत् अवसर्पिणी के अतीत, अनागत और वर्तमान ऐसे तीन २ भेद जानना. वैसे ही तीन प्रकार के पुद्गल परावर्तन जानना ॥ २ ॥ तीन प्रकार के वचन एक वचन-एक की विवक्षा की जावे जैसे घट, पट वगैरह. द्विवचन दो की विवक्षा की जावे जैसे दो घट, पट. बहुवचन बहुत की विवक्षा की जावे जैसे बहुत घट, पट वगैरह. और भी वचन के तीन भेद, स्त्री वचन नदी, नारी वगैरह, पुरुष वचन आम्र, घट, पट वगैरह, और नपुंसक[1] वचन कुलम् पत्रम् धान्य वगैरह और भी तीन प्रकार का

१. हिन्दि भाषा में नपुंसक वचन का अभाव है परंतु प्राकृत भाषा में तीनों वचन रहे हुवे हैं.

शब्दार्थ

नपुंसक वचन अ० अथवा ति० तीनवचन ती० अतीत वचन प० वर्तमान वचन अ० अनागत वचन ॥३॥ ति० तीनप्रकार की प० प्ररूपणा णा० ज्ञान प्ररूपणा दं० दर्शन प्ररूपणा च० चारित्र प्ररूपणा ति० तीनप्रकार का स० सम्यक् णा० ज्ञानसम्यक् दं० दर्शन सम्यक् च० चारित्र सम्यक् ॥ ४ ॥ ति० तीनप्रकार का उ० उपघात उ० उद्गमनोपघात उ० उत्पादनोपघात ए० ऐषणोपघात ए० ऐसे वि० विशुद्धि ॥ ५ ॥ ति० तीनप्रकार की आ० आराधना णा० ज्ञानाराधना दं० दर्शनाराधना च० चा

सूत्र

हे वयणे प० तं० तीतवयणे, पडुप्पन्नवयणे अणागयवयणे, ॥ ३ ॥ तिविहा पन्नवणा प० तं० णाणपन्नवणा, दंसणपन्नवणा, चरित्तपन्नवणा । तिविहे सम्मे प० तं० णाणसम्मे दंसणसम्मे चरित्तसम्मे॥४॥ तिविह उवघाए प० तं० उग्गमोवघाए उप्पायणोवघाए, एसणोवघाए । एवं विसोही ॥५॥ तिविहा आराहणा प० तं०

भावार्थ

वचन अतीत कालका वचन जैसे किया, वर्तमान काल का वचन जैसे करता हूं और भविष्य काल का वचन जैसे करूंगा ॥ ३ ॥ तीन प्रकार की प्ररूपना कही है. ज्ञान प्ररूपना, दर्शन प्ररूपना और चारित्र प्ररूपना. तीन प्रकारका सम्यक् ज्ञान सम्यक्, दर्शन सम्यक्, और चारित्र सम्यक् ॥ ४ ॥ भगवंतने तीन प्रकार के आहारादि भोगवने से संयम का उपघात फरमाया. आधा कर्मादि सोलह दोष गृहस्थ की तर्फ से लगे सो उद्गमनोपघात, धात्रि कर्मादि सोलह दोष साधु की तरफ से लगे सो उत्पादनोपघात और

शब्दार्थ

रित्राराधना णा० ज्ञानाराधना ति० तीनप्रकार की उ० उत्कृष्ट म० मध्यम ज० जघन्य ए० ऐसे दं० दर्शनाराधना च० चारित्राराधना ति० तीनप्रकार की सं० संक्लेष्ट की णा० ज्ञान संक्लेष्ट दं० दर्शन संक्लेन च० चारित्र संक्लेष्ट ए० ऐसे अ० असंक्लेष्ट ए० ऐसे अ० अतिक्रम व० व्यतिक्रम अ० अ-

सूत्र

णाणाराहणा, दंसणाराहणा, चरित्ताराहणा, । णाणाराहणा तिविहा प० त० उक्कोसा, मज्झिमाजहन्ना।एवं दंसणाराहणावि।चरित्ताराहणावितिविहे संकिलेसे प० तं० णाणसंकिलेसे दंसणसंकिलेसे चरित्तसंकिलेसे।एवं असंकिलेसेवि।एव मइक्कमेवि।वइक्कमेविअइयारेवि अणा

भावार्थ

शंकादि दश दोष गृहस्थ और साधु दोनों की तरफ से लगे सो ऐषणोपघात दोष; इन तीनों प्रकारके दोषों को टालकर आहारादि ग्रहण करे सो तीन विशुद्धि फरमाइ ॥ ५ ॥ अतिचार रहित पालना सो आराधना. उस के तीन भेद, ज्ञान आराधना काल अविनय के आठ अतिचार को दूर कर ज्ञान पढना सो, दर्शन आराधना निस्संकिय निकांखियादि आठ अतिचार रहित सम्यक्त्व पालना सो और चारित्र आराधना पांच समिति तीन गुप्ति पालना सो. उस में ज्ञान आराधना के तीन भेद उत्कृष्ट मध्यम और जघन्य ऐसे ही दर्शन और चारित्र आराधना के भी उत्कृष्ट, मध्यम और जघन्य ऐसे तीन २ भेद जानना संक्लेश तीन प्रकार के ज्ञान संक्लेश ज्ञान प्राप्त करते क्लेश पावे, दर्शन संक्लेश श्रद्धा प्राप्त करे नहीं और चारित्र संक्लेश सो चारित्र पालते दुःखित होवे. ऐसे ही असंक्लेश क भी तीन भेद जानना. और ऐसे ही

शब्दार्थ

तिचार अ० अनाचार त० तीन अ० अतिक्रम आ० आलोचे प० प्रतिक्रमे णिं० निन्दे गं० गर्हे जा० यावत् प० दूरकरे तं० वह णा० ज्ञान अतिक्रम को दं० दर्शन अतिक्रम को च० चारित्र अतिक्रम को ए० ऐसे व० व्यतिक्रम अ० अतिचार अ० अनाचार को ॥ ६ ॥ ति० तीनप्रकार का पा० प्रायश्चित आ० आलोचना प० प्रतिक्रमना उ० उभय ॥ ७ ॥ जं० जंबूद्वीप के मं० मेरुपर्वत की

सूत्र

यारेवि॥ तिण्हमइक्कमाणं आलोएज्जा, पडिक्कमेज्जा, णिंदेज्जा, गरहिज्जा, जाव पडिवज्जेज्जा तं० णाणाइक्कमस्स, दंसणाइक्कमस्स चरित्ताइक्कमस्स । एवं वइक्कमाणं, अइयाराणं, अणायाराणं ॥ ६ ॥ तिविहे पायच्छित्ते प० तं० आलोयणारिहे, पडिक्कमणारिहे, तदुभयारिहे ॥ ७ ॥ जंबूद्दीवेदीवे मंदरस्स पव्वयस्स दाहिणेणं तओ अकम्मभूमीओ प० तं०

भावार्थ

ज्ञान दर्शन चारित्र में दोष लगाना इच्छे सो अतिक्रम, दोष लगाने को जावे सो व्यतिक्रम, दोष स्वीकारे सो अतिचार और दोष लगाना सो अनाचार. उक्त रीतियों से ज्ञान, दर्शन और चारित्र में अतिक्रम, व्यतिक्रम, अतिचार और अनाचार लगा होवे जिस की आलोचना करे, अब ऐसे कार्यों को नहीं करूंगा, यों प्रतिक्रमे, पूर्व कृतकर्मों की आत्मा की साक्षि से निंदा करे गुरु की साक्षी से गर्हा करे यावत् उस का योग्य प्रायश्चित अंगीकार करके शुद्ध होवे ॥ ६ ॥ प्रायश्चित के तीन भेद आलोचना, प्रतिक्रमना और दोनों करना ॥ ७ ॥ जम्बू द्वीप के मेरु पर्वत से दक्षिण दिशा में तीन अकर्मभूमि कही हेमवय, हरिवर्षा

शब्दार्थ

दा० दक्षिण दिशामें त० तीन अ० अकर्मभूमि प० प्ररूपी हे हेमवय ह० हरीवास दे० देवकुरु जं० जंबूद्वीप के मं० मेरुपर्वत की उ० उत्तरदिशा में त० तीन अ० अकर्मभूमि उ० उत्तरकुरु र० रम्यकवास ए० ऐरनवय जं० जंबूद्वीप के मं० मेरुपर्वत की दा० दक्षिणदिशामें त० तीनक्षेत्र भ० भरत हे० हेमवय ह० हरिवास जं० जंबूद्वीप के मं० मेरुपर्वत की उ०उत्तरदिशामें त०तीनक्षेत्र र०रम्यकवास ह०ऐरनवय ए० ऐरवत जं०जंबूद्वीप के मं०मेरुपर्वत की दा०दक्षिणदिशा में त०तीन वा० वर्षधर पर्वत चु० चूलहिमवन्त पर्वत म० महाहिमवन्त णि० निषढ जं० जंबूद्वीप के मं० मेरुपर्वत की उ० उत्तर दिशामें त० ती० तीन वा०

सूत्र

हेमवए हरिवासे देवकुरा । जंबूद्दीवेदीवे मंदरस्स पव्वयस्स उत्तरेणं तओ अकम्मभूमीओ प० तं० उत्तरकुरा, रम्मगवासे, एरन्नवए । जंबूद्दीवेदीवे मंदरस्स पव्वयस्स दाहिणेणं तओ वासा प० तं० भरहे, हेमवए, हरिवासे जंबूमंदरस्स उत्तरेणं तओ वासा प० तं० रम्मगवासे, एरन्नवए, एरवए ॥ जंबूमंदरस्स दाहिणेणं तओ वासहरपव्वया प० तं० चुल्लहिमवंते, महाहिमवंते, णिसढे । जंबूमंदरस्स उत्तरेणं तओ

भावार्थ

और देवकुरु जम्बूद्वीप के मेरु पर्वत से उत्तर दिशा में भी तीन अकर्म भूमि के क्षेत्रों हैं; उत्तरकुरु, रम्यक वर्ष और ऐरणवय जम्बूद्वीप के मेरु से दक्षिण में तीन क्षेत्र भरत, हेमवंत और हरिवर्ष और उत्तर दिशा में रम्यकवर्ष, ऐरणवय और ऐरवत. जम्बू द्वीप के मेरु की दक्षिण में तीन वर्षधर पर्वत चूलहिमवंत,

शब्दार्थ

वर्षधर पर्वत णी० नीलवन्त रू० रूपि सि० शिखरी जं० जंबूद्वीप के मं० मेरुपर्वत की दा० दक्षिण दिशा में त० तीन म० महाद्रह प० पद्मद्रह म० महापद्मद्रह ति० तिगिच्छद्रह त० तहां त० तीन दे० देवता म० महाऋद्धि वाले जा० यावत् प० पल्योपम ठि० स्थितिवाले प० रहते हैं सि० श्रीदेवी हि० ह्रीदेवी धी० धृतिदेवी ए० ऐसे उ० उत्तर में ण० विशेष के० केशरीद्रह म० महापुंडरीकद्रह पों० पुंडरीकद्रह दे० देवता कि० कीर्ति बु० बुद्धि ल० लक्ष्मी जं० जंबूद्वीप के मं० मेरुपर्वत की दा० दक्षिणदिशा में चु० चूल्लहिमवंत वा०

सूत्र

वासहरपव्वया प० तं० णीलवंते, रुप्पी, सिहरी । जंबूमंदरस्स दाहिणेणं तओ महादहा प० तं० पउमद्दहे, महापउमद्दहे, तिगिच्छिद्दहे । तत्थणं तओ देवयाओ महिड्ढियाओ जाव पलीओवमट्ठिईयाओ परिवसंति त० सिरी, हिरी, धीई । एवं उत्तरेणवि णवरं—केसरिद्दहे, महापोंडरीयद्दहे, पोंडरीयद्दहे। देवयाओ कित्ती, बुद्धी, लच्छी, जंबूमंदरस्स दाहिणेणं चुल्लहिमवंताओ वासहरपव्वयाओ पउमद्दहाओ महादहाओ

भावार्थ

महाहिमवंत और निषढ, और उत्तर में तीन वर्षधर पर्वत नीलवंत रूपि और शिखरी. जम्बू द्वीप के मेरु की दक्षिण में तीन महाद्रह पद्म द्रह, महापद्मद्रह और तिगिच्छद्रह. और वहां पर पल्योपम की स्थितिवाले और बडी ऋद्धिवाले तीन देवताओं रहते हैं श्री ह्री और धृति ऐसे ही उत्तर दिशामें केसरीद्रह, महा पुंडरीकद्रह और पुंडरीकद्रह और उनके देवता कीर्ति, बुद्धि और लक्ष्मी. जम्बूद्वीप के मेरुपर्वतकी दक्षिण दिशामें

शब्दार्थ

वषधर पर्वत म०महाद्रह में से त०तीनम० बडीनादियें प०बहती हैं गं०गंगा सिं०सिंधु रो०रोहितंसा जं०जंबूद्वीप के मं०मेरुपर्वत की उ०उत्तरदिशा में सि०शिखरी वा०वर्षधर पर्वतमें पों०पुंडरीकद्रह म०महाद्रह में से त०तीन म० बडीनदियें प० बहती हैं सु० सुवर्णकुला र० रक्ता र० रक्तवती जं० जंबूद्वीप के मं० मेरुपर्वत की पु० पूर्वदिशा में सी० सीता म० महानदी से उ० उत्तर में त० तीन अं० छोटी ण० नदीओ प० कही गा० गृहवती द० द्रहवती प० पंकवती जं० जंबूद्वीप के मं० मेरुकी पु० पूर्वदिशा में सी० सीता म० महा

सूत्र

तओ महाणदीओ पवहंति तं० गंगा सिंधु रोहियंसा । जंबूमंदरस्स उत्तरेणं सिहरीओ वासहरपव्वयाओ पोंडरीयद्दहाओ महादहाओ तओ महाणदीओ पवहंति तं० सुवन्न-कूला, रत्ता, रत्तावती ॥ जंबूमंदरस्स पुरच्छिमेणं सीयाए महाणईए उत्तरेणं तओ अंतरणईओ पण्णत्ता तं० गाहावई, दहवई, पंकवई । जंबूमंदरस्स पुरत्थिमेणं सी-याए महाणईए दाहिणेणं तओ अंतरणईओ पण्णत्ता तं० तत्तजला, मत्तजला, उम्म-

भावार्थ

चूलहिमवंत वर्षधर के पद्मद्रहमें से गंगा, सिंधु और रोहितंसा नामक तीन बडी नदियों बहती हैं. और उत्तर के शिखरी पर्वत के पुंडरीकद्रहमें से सुवर्णकुला रक्ता और रक्तवती नामक तीन बडीनदियों बहती है. जम्बू द्वीपके मेरु की पूर्व में सीता नदीकी उत्तरमें तीन अंतर नदियों बहती हैं, गृहवती द्रहवती और पंकवती, और सीता नदी की दक्षिण से भी तीन अंतर नदियों नीकलती हैं. तप्तजला, मत्तजला और उन्मत्तजला.

शब्दार्थ

नदी से दा० दक्षिणदिशा में त० तीन अं० छोटीनदीओं प० प्ररूपी त० तप्तजला म० मत्तजला उ० उन्मत्तजला जं० जंबूद्वीप के मं० मेरुपर्वत की प० पश्चिम में सी० सीतोदा म० महानदी से दा० दक्षिण में त० तीन अं० छोटीनदीओं खी० क्षीरोदा सी० सिंहश्रोता अं० अंतोवाहिनी जं० जंबूद्वीप के मं० मेरुकी प० पश्चिमदिशा में सी० सीतोदा म० महानदी से उ० उत्तर में त० तीन अं० छोटीनदीओं उ० उर्मिमालिनी फे० फेनमालिनी गं० गंभीरमालिनी ए० ऐसे धा० धातकी खंडद्वीप के पु० पूर्वार्ध में अ० अकर्मभूमि आ० कहना जा० यावत् अं० छोटीनदीओं णि० विशेष रहित भा० कहना जा० यावत् पु०

सूत्र

त्तजला । जंबूमंदरस्स पच्चत्थिमेणं सीओदाए महाणईए दाहिणेणं तओ अंतरणईओ प० तं० खीरोदा, सीहसोया, अंतोवाहिणी । जंबूमंदरस्स पच्चत्थिमेणं सीओदाए महाणईए उत्तरेणं तओ अंतरणईओ प० तं० उम्मिमालिणी, फेणमालिणी, गंभीरमालिणी ॥ एवं धायइखंडदीवपुरच्छिमद्धेवि, अकम्ममूमीओ आढवेत्ता जाव अंतरणदीओत्ति, णिरवसेसं भाणियव्वं. । जाव पुक्खरवरदीवड्ढ पच्चत्थिमद्धे तहेव णिरव

भावार्थ

जम्बू द्वीप के मेरु की पश्चिम में सीतोदा नदी के दक्षिण से क्षीरोदा, सिंहश्रोता और अंतोवाहिनी ये तीन अंतरनदियों नीकलती हैं वैसे ही सीतोदा नदी के उत्तर से ऊर्मिमालिनी. फेनमालिनी, और गंभीरमालिनी नदियोंहै ऐसे ही धातकी खंड के पूर्वार्धसेलेकर पुष्करवरद्वीप के पश्चिमार्ध में अकर्मभूमि से लेकर

शब्दार्थ पुष्करार्धद्वीप के प० पश्चिमार्ध में त० तैसा णि० विशेष रहित भा० कहना ॥ ८ ॥ ति० तीनस्थान से दे० देशसे पु०पृथ्वी च०चले तं०वह ज० जैसे अ०नीचे इ०इस र०रत्नप्रभा पु०पृथ्वी के उ०उदारिक पुद्गल णि० चले त० तब ते० वे उ० उदारिक पो० पुद्गल णि० चलते दे० देश से पु० पृथ्वी च० चले म० महोरग म० महर्द्धिक जा० यावत् म० महेश इ० इस र० रत्नप्रभा पु० पृथ्वी में अ० नीचे उ० आना णि० जाना क० करते दे० देश पु० पृथ्वीका च० चले णा० नागकुमार सु० सुवर्णकुमार का० सं० संग्राम व० होते दे० देश से पु० पृथ्वी च० चले इ०इन ति० तीनस्थान से के०संपूर्ण पु० पृथ्वी च० चले अ०नीचे

सूत्र सेसं भाणियव्वं॥८॥ तिहिं ठोणहिं देसेहिं पुढवी चलेज्जातंजहा—अहेणमिमीसे, रयणप्प भाए पुढवीए उराला पोग्गला णिचलेज्जा, तएणंते उराला पोग्गला णिवत्तमाणा देसं पु ढवीए चलेज्जा । महोरए वा महिड्ढिए जाव महेसक्खे इमीसे रयणप्पभाए पुढवी- ए अहे उमज्जणिमज्जियं करेमाणे देसं पुढवीए चलेज्जा । णागसुवन्नाणवा संगामं-

भावार्थ यावत् अंतर नदियों तक सब कहना ॥ ८ ॥ भगवंतने से देश पृथ्वी चलने का तीन कारण फरमाया है. १ नीचे रत्नप्रभा पृथ्वी में उदारिक पुद्गलों स्वभाव से चलते हैं. इस तरह पुद्गलों चलते पृथ्वी देश से चलती है. २कोई महर्द्धिक या बहुत सुख का धणि महोरग व्यंतर वर्गरह अभिमानसें रत्नप्रभा पृथ्वी में जाते, आते, नीकलते पृथ्वी चले. ३ और नाग कुमार, सुवर्ण कुमार आदि देवताओं का परस्पर युद्ध होने से

शब्दार्थ

इ० इस र० रत्नप्रभा पु० पृथ्वीके घ० घनवात गु० गुंजायमान होवे त० तब से० वह घ० घनवात गु० गुंजायमान होने से घ० घनोदधिको ए० उन्मत्त करे त० तब से० वह घ० घनोदधि ए० उन्मत्त होते के० संपूर्ण पु० पृथ्वीको चा० चलावे दे० देव म०महर्द्धिक जा० यावत् म० महेश त०तथारूप स० श्रमण मा० माहण को इ० ऋद्धिं जु० द्युति ज० यश ब० बल वी० वीर्य पु० पुरुषात्कारपराक्रम उ० देखाते के० संपूर्ण पु० पृथ्वीको चा० चलावे दे० देव अ० असुर का सं०संग्राम व०होते के० संपूर्ण पु०पृथ्वी च० चले

सूत्र

सि वदृमाणंसि देसं पुढवीए चलेजा ॥ इच्चेएहिं तिहिंठाणेहिं केवलकप्पा पुढवी चलेजा

तं० अहेणं इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए घणवाए गुप्पेजा, तएणं से घणवाए गुविए-समाणे घणोदहि मेएजा, तएणं से घणोदहीए एइएसमाणे केवलकप्पं पुढविं चालेजा। देवे वा महिड्ढिए जाव महेसक्खे तहारूवस्स समणस्स माहणस्स वा इड्ढिं जुतिं जसं बलं वीरियं पुरिसक्कारपरक्कमं उवदंसेमाणे केवलकप्पं पुढविं चालेजा। देवासुर

भावार्थ

देश से पृथ्वी चले. तीन प्रकार से सर्वथा पृथ्वी चलती है. १ रत्नप्रभा पृथ्वी घनवात और घनोदधि के आधार से रही है. जब घनवात गुंजायमान होता है तब उस से घनोदधि कंपता है और उस से सर्व पृथ्वी कम्पित होती है. कोई महाऋद्धिवाले देव तथाभूत श्रमण माहण को अपनी ऋद्धि, बल, वीर्य, यश, पुरुषाकार पराक्रम बताने को पृथ्वी चलावे तो सम्पूर्ण पृथ्वी चलती है तथा वैमानिक देव और असुर

शब्दार्थ

इ० इनतीन से ॥ ९ ॥ ति० तीनप्रकार का दे० देव कि० किल्विषि ति० तीन पल्योपम ठि० स्थितिवाले ति० तीनसागरोपम ठि० स्थितिवाले ते० तेरह सागरोपम ठि० स्थितिवाले क० कहां भं० भगवन् ति० तीन पल्योपम ठि० स्थितिवाले दे० किल्विषि देव प० रहते हैं उ० उपर जो० ज्योतिषी की हिं० नीचे सो० सौधर्म इ० इशान कल्पके ए० तहां ति० तीनपल्योपम ठि० स्थितिवाले दे० किल्विषिदेव प० रहते हैं क० कहां भं० भगवन् ति० तीनसागरोपम ठि० स्थितिवाले दे० किल्विषिदेव प० रहते हैं उ० उपर

सूत्र

संगामंसि वा वट्टमाणंसि केवलकप्पा पुढवी चलेज्जा, इच्चेएहिं तिहिं ॥ ९ ॥ तिविहा देवा किव्विसिया प० तं० तिपलिओवमट्ठिईया, तिसागरोवमट्ठिईया, तेरससागरोवमट्ठिईया ॥ कहिण्णं भंते तिपलिओवमट्ठिईया देवा किव्विसिया परिवसंति ? उप्पिं जोइसियाणं हिट्ठिं सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु एत्थणं तिपलिओवमट्ठिईया देवा किव्विसिया परिवसंति । कहिण्णं भंते तिसागरोवमट्ठिईया देवा किव्विसिया परिवसंति ?

भावार्थ

कुमार को परस्पर युद्ध होवे तब भी सम्पूर्ण पृथ्वी चलती है ॥ ९ ॥ तीन प्रकार से किल्विषी देव कहे. तीन पल्योपम की स्थितिवाले, तीन सागरोपम की स्थितिवाले और तेरह सागरोपम की स्थितिवाले. अहो पूज्य ! तीन पल्योपम की स्थितिवाले किल्विषी कहां रहते हैं? भो शिष्य! वे ज्योतिषी से ऊंचे और सौधर्म ईशान देवलोककी नीचे रहतेहैं. तीन सागरोपम की स्थितिवाले किल्विषि सौधर्म ईशान देवलोककी उपर और

शब्दार्थ

सो० सौधर्म ई० इशान कल्पकी हे० नीचे स० सनत्कुमार मा० माहेन्द्र कल्प के ए० तहां ति० तीनसागरोपम ठि० स्थितिवाले दे० किल्विषि देव प० रहते हैं क० कहां भं० भगवन् ते० तेरह सा० सागरोपम की ठि० स्थितिवाले दे० किल्विषिदेव प० रहते हैं उ० उपर बं० ब्रह्मदेवलोक की हि० नीचे लं० लंतकदेवलोक की ए० तहां ते० तेरह सागरोपम की ठि० स्थितिवाले दे० किल्विषिदेव प० रहते हैं ॥ १० ॥ स० शक्रेन्द्र दे० देवेन्द्र दे० देवराजाकी बा० बाह्यपरिषदा के दे० देवकी ति० तीनपल्योपम की ठि० स्थिति

सूत्र

उप्पिं सोहम्मीसाणाणं कप्पाणं, हेट्ठिं सणंकुमारमाहिंदकप्पेसु एत्थणं तिसायरोवम ट्ठिईया देवा किव्विसिया परिवसंति । कहिण्णं भंते तेरससागरोवमट्ठिईया देवा किव्विसिया परिवसंति ? उप्पिं बंभलोयस्स कप्पस्स हिट्ठिं लंतगे कप्पे एत्थणं तेरससागरोवमट्ठिईया देवा किव्विसिया परिवसंति ॥ १० ॥ सक्कस्सणं देविंदस्स देवरण्णो बाहिरपरिसाए देवाणं तिन्निपलिओवमाइं ठिई प० । सक्कस्सणं देविंदस्स देवरण्णो अ-

भावार्थ

मनत्कुमार व महेन्द्र देवलोक की नीचे रहते हैं, तेरह सागरोपम की स्थितिवाले किल्विषी ब्रह्मदेवलोक से उपर और लंतकदेवलोक की नीचे रहते हैं ॥ १० ॥ शक्रेन्द्र की बाहिर की परिषदा के देवताओं की स्थिति तीन पल्योपम की कही. और उस की आभ्यंतर परिषदा की देवियों की तथा ईशानेन्द्र की बा-

शब्दार्थ

स० शक्रेन्द्र दे० देवेन्द्र दे० देवराजा की अ० आभ्यन्तर प० परिषदाके दे०देवीकी ति० तीनपल्योपम की ठि० स्थिति ई० ईशानेन्द्र दे० देवेन्द्र दे० देवराजा की बा० बाह्य प० परिषदा की दे० देवीकी ति० तीन प० पल्योपम की ठि० स्थिति ॥ ११ ॥ ति० तीनप्रायश्चित्त णा० ज्ञान प्रायश्चित्त दं० दर्शन प्रायश्चित्त च० चारित्र प्रायश्चित्त त० तीन अ० अनुघातिम ह० हस्तकर्म क० करता मे० मैथुन से० सेवता रा० रात्रि भोजन भुं० भोगता त० तीन पा० पारंचिक दु० दुष्टपारंचिक प० प्रमाद पारंचिक अ० अन्योन्य क०

सूत्र

ब्भिंतरपरिसाए देवीणं तिण्णिपलिओवमाइं ठिई प० ईसाणस्सणं देविंदस्स देवरण्णो बाहिरए परिसाए देवीणं तिण्णिपलिओवमाइं ठिई प० ॥ ११ ॥ तिविहे पायच्छित्ते प० तं० णाणपायच्छित्ते, दंसणपायच्छित्ते, चरित्तपायच्छित्ते । तओ अणुग्घाइमा प० तं० हत्थं कम्मं करेमाणे; मेहुणं सेवमाणे, राईभोयणं भुंजमाणे । तओ पारंचिया

भावार्थ

हिर की परिषदा की देवियों की तीन पल्योपम की स्थिति कही है ॥ ११ ॥ भगवंतने प्रायश्चित के तीन भेद कहे हैं. ज्ञान प्रायश्चित-ज्ञान में दोष लगे उस का, दर्शनप्रायश्चित–दर्शन में दोष लगे उस का, और चारित्र प्रायश्चित चारित्र में दोष लगे उस का. तीन अनुघातिम साधु कहे. १ हस्तकर्म करनेवाले, २ मैथुन सेवनेवाले और ३ रात्रि भोजन करनेवाले. तीन पारंचिक. १ अत्यंत क्रोधी अपने गुरु के

१ प्रायश्चित तप जिस को नहीं होसके सो. २ तप से पापका निवारन होवे ऐसा दशवा प्रायश्चित

शब्दार्थ

करता पारांचिक त० तीन अ० अनवस्थित सा० स्वधर्मी की ते० चौरी क० करते अ० अन्यधर्मी का ते० चौरी क० करते ह० थपड द० मारते त० तीनको णो० नहीं क० कल्पता है प० प्रवर्जादेने को पं० पंडग वा० रोगिष्ट की० नपुंसक ए० ऐसे मुं० मुंडना सि० शिक्षादेना उ०सावधान करना सं० संभोग करना

सूत्र

प० तं० दुट्ठे पारंचिए, पमत्ते पारंचिए, अण्णमण्णं करेमाणे पारंचिए । तओ अणवट्ठया प० तं० साहम्मियाणं तेणं करेमाणे, अण्णधम्मियाणं तेणं करेमाणे, हत्थतालं दलयमाणे । तओ णो कप्पंति पव्वावेत्तए तं० पंडए, वाइए, कीवे । एवं मुंडावेत्तए,

भावार्थ

आत्मा का घातक, अथवा साध्वी की साथ मैथुन की वांच्छा करनेवाले को, २ बहुत प्रमादी, स्त्यानगृद्धि निद्रावाले या प्रमाद से पंचेन्द्रिय की घात करनेवाले को ३ परस्पर मैथुन क्रिया व चुम्बनादि करनेवाले को. तीन को अनवस्थाप्य नववां प्रायश्चित आता है. परस्पर साधु की उपधि, भंडोपकरण और शिष्यादिक की चौरी करनेवाले को, अन्यदर्शनी के भंडोपकरण की चोरी करनेवाले को, चपेटादि से ताडना करनेवाले को. तीन को दीक्षा देना नहीं कल्पता है. वैसे ही लोच करना, आचारादिक शिखाना, उपधि आहारका संभोग करना, साथ रहना, बैठना उठना नहीं कल्पता है. १ जन्म नपुंसक को, व्याधिग्रस्त मनुष्य को अर्थात् वायु से जिस का शरीर बहुत स्थूल बना होवे, उठ बैठ नहीं

शब्दार्थ

सं० साथरखना ॥ १२ ॥ त० तीन अ० वांचनीदेने अयोग्य अ० अविनया वि० विगयगृद्धि अ० अव्यवस्थित पा०प्राभृत त० तीनको क० कल्पता है वा० वांचनीदेना वि० विनयी अ० विगय में अनासक्त वि० व्यवस्थि पा०प्राभृत ॥१३॥ त० तीन दु०दुर्लभ बोधि दु० दुष्ट मू० मूढ व्यु० व्युद्ग्राहीत त०तीन सु०

सूत्र

सिक्खावेत्तए, उवट्ठावेत्तए, संभुंजित्तए, संवासित्तए, ॥ १२ ॥ तओ अवायणिज्जा प० तं० अविणीए, विगइपडिबद्धे, अविओसिय पाहुडे । तओ कप्पंति वाइत्तए तं० विणीए, अविगइपडिबद्धे, विओसिय पाहुडे ॥ १३ ॥ तओ दुसण्णप्पा प० तं०

भावार्थ

करसकता होवे वैसे को तथा क्लीव[1] को. इत्यादि को दीक्षा देना वगैरह करना नहीं कल्पता है ॥१२॥ भगवंत फरमाते हैं कि तीन पुरुष वाचना को अयोग्य हैं १ गुरु की आज्ञा नहीं माननेवाला अविनीत, २ रसगृद्धि पुरुष और ३ अत्यंत क्रोधी. उक्त तीनों को दिया हुवा श्रुत निष्फल होता है. तीन पुरुषों को शास्त्र की वांचना देनी. गुरु का विनय करनेवालेको रसगृद्धि नहीं बननेवालेको, और सब को प्रियकारी

१ क्लीब (नपुंसक) के चार भेद१ दृष्टि नपुंसक-वस्त्र रहित स्त्री को देखकर वीर्यपात जिस का होवे सो; २ शब्द नपुंसक सुरतशब्द सुनकर वीर्यपात जिस को होवे सो, आदिग्ध क्लीव और निमंत्रणा क्लीब स्त्री से एकान्त में बोलाया हुवा वीर्य स्खलन होवे सो.

शब्दार्थ

सुलभ बोधि अ० अदुष्ट अ० अमूढ अ० शुद्धग्राही ॥ १४ ॥ तीन मं० वर्तुलाकार प० पर्वत मा० मानुषोत्तर कुं० कुंडलवर रु० रुचक त० तीन म० बडे से बडे जं० जंबूद्वीप का मं० मेरु पर्वत मं० पर्वत में स० स्वयं भूरमण समुद्र स० समुद्र में बं० ब्रह्मदेवलोक क० देवलोक में ॥ १५ ॥ ति० तीनकल्पस्थिति सा० सामा-

सूत्र

दुट्ठे, मूढे, वुग्गाहिए । तओ सुसन्नप्पा प० तं० अदुट्ठे, अमूढे, अवुग्गाहिए ॥ १४ ॥ तओ मंडलियपव्वया प० तं० माणुसुत्तरे, कुंडलवरे, रुयगवरे । तओ महइ महालया प० तं० जंबुद्दीवदीवे मंदरे, मंदरेसु, सयंभुरमणसमुद्दे समुद्देसु, बंभलोए कप्पे कप्पेसु ॥ १५ ॥ तिविहा कप्पट्ठिई प० तं० सामाइय कप्पट्ठिई, छेदोवट्ठावणिय कप्पट्ठिई,

भाषार्थ

बचन बोलनेवाले, और क्षमावन्त इन तीन कों सूत्र की वाचना देना कल्पता है ॥ १३ ॥ तीन पुरुषों को समझाना बहुत मुश्किल होता है २ दुष्ट तत्त्व प्ररूपक के द्वेषी, २ मूढ गुणदोष के अजान, ३ और व्युद्ग्राहित सो कुगुरुओं का भरमाया हुवा. तीन मनुष्यों को समझाना सुलभ है अदुष्ट सो द्वेष रहित, अमूढ तत्त्व जाननेवाले और अन्य धर्मावलम्बियों से नहीं भ्रमित कीया हुवा ॥ १४ ॥ तीन पर्वत गोल मंडलाकार है मानुषोत्तर पर्वत पुष्करार्ध द्वीप की चारो तरफ रहा हुवा है, कुंडल पर्वत सातवा कुंडलद्वीप में रहाहुवा है और तेरवा रुचक द्वीप में रहाहुवा रुचक पर्वत है. तीन बडे आलय कहे हैं जम्बूद्वीप का मेरू पर्वत सब पर्वतों में बडा कहा, असंख्याते समुद्र में छेल्ला स्वयंभूरमण समुद्र सब से बडा और सब

शब्दार्थ

यिक कल्पस्थिति छे० छेदोपस्थापनिक कल्पस्थिते णि० निर्विश्राम कल्पस्थिति अ० अथवा ति० तीन प्रकार की क० कल्पस्थिति णि० निर्विष्ट कल्पस्थिति जि० जिनकल्पस्थिति थे० स्थविर कल्प स्थिति ॥ १६ ॥ णे० नारकी को त० तीन शरीर वे० वैक्रेय ते० तेजस क० कार्माण अ० असुरकुमार को त० तीन शरीर ए० ऐसे स० सर्व देवताको त० तीन शरीर ओ० उदारिक ते० तेजस क० कार्माण

सूत्र

णिव्विसमाण कप्पट्ठिई । अहवा तिविहा कप्पट्ठिई प० तं० णिविट्ठ कप्पट्ठिई, जिण कप्पट्ठिई, थेर कप्पट्ठिई ॥ १६ ॥ णेरइयाणं तओ सरीरगा प० तं० वेउव्विए तेयए कम्मए । असुरकुमाराणं तओ सरीरगा एवं चेव सव्वेसिं देवाणं । पुढविकाइयाणं,

भावार्थ

देवलोक में पांचवा ब्रह्मदेवलोक बडा ॥ १५ ॥ तीन प्रकार की कल्पस्थिति कही. सामायिक चारित्र में आत्मा की स्थिरता सो सामायिक चारित्र की स्थिति, ऐसे ही छेदोपस्थापनीय चारित्र की स्थिति यह प्रथम और अन्तिम तीर्थंकर में होता है. और निर्विश्रम स्थिति सो नव साधुओं का परिहार विशुद्ध चारित्र और भी तीन प्रकार की कल्पस्थिति १ निर्विष्ट कल्पस्थिति सो परिहार विशुद्ध चारित्र, जिनकल्प-स्थिति और स्थविर कल्पस्थिति ॥ १६ ॥ नारकी में तीन शरीर कहे वैक्रेय तेजस और कार्माण ऐसे ही तीन शरीर सब देवता ओं को होता है. वायु काय में उदारिक वैक्रेय, और कार्माणहैं इसलिये वायु-

शब्दार्थ ए० ऐसे बा० वायु काय व० वर्जकर जा० यावत् च० चौरेन्द्रिय ॥ १७ ॥ गु० गुरुप्रत्यय त० तीन प्रत्यनीक आ० आचार्य प्रत्यनीक उ० उपाध्याय प्रत्यनीक थे० स्थविर प्रत्यनीक ग० गतिप्रत्यय त० तीन प्रत्यनीक इ० यहलोक प्रत्यनीक प० परलोक प्रत्यनीक दु० उभयलोक प्रत्यनीक स० समुह प्रत्यय त० त० तीन प्रत्यनीक कु० कुलप्रत्यनीक ग० गणप्रत्यनीक सं० संघप्रत्यनीक अ० अनुकंपा प्रत्यय त० तीन

सूत्र तओ सरीरगा प० तं० ओरालिए तेयए कम्मए । एवं वाउकाइयवज्जाणं जाव चउरिंदियाणं ॥ १७ ॥ गुरुं पडुच्च तओ पडिणीया प० तं० आयरियपडिणीए, उवज्झायपडिणीए, थेरपडिणीए । गइं पडुच्च तओ पडिणीया प० तं० इहलोयपडिणीए, परलोय पडिणीए, दुहओलोयपडिणीए । समूहं पडुच्च तओ पडिणीया प० तं० कुल-

भावार्थ काय को छोडकर चार स्थावर तीन विगलेन्द्रिय में उदारिक तेजस् और कार्माण (तिर्यंच पंचेन्द्रिय में चार और मनुष्य में पांच शरीर होने से यहां नहीं ग्रहण किये गये हैं) ॥ १७ ॥ प्रत्यनीक वैरी को कहते हैं. उस के तीन भेदों अपेक्षा से श्री भगवंतने फरमाये हैं गुरु आश्रय से तीन प्रत्यनीक पंचाचार के पालक, और धर्मके दाता आचार्यकी निन्दा करे, सूत्र ज्ञान के दाता उपाध्यायकी निन्दा करे और दीक्षा, सूत्र और वय ऐसे तीनों प्रकार के स्थविरों की निन्दा करे, गति के संबंध में तीन प्रत्यनीक अज्ञान तप करके शरीर को कष्ट देवे, पंचाग्नि साधे सो इहलोक प्रत्यनीक, विषय कषाय में रक्त रहे सो परलोक

शब्दार्थ

प्रत्यनीक त० तपस्वी गि० ग्लानी की स० शिष्यकी भा० भावप्रत्यय त० तीन प्रत्यनीक णा० ज्ञान प्रत्यनीक दं० दर्शन प्रत्यनीक च० चारित्र प्रत्यनीक सु० सूत्रप्रत्यय त० तीन प्रत्यनीक सु० सूत्रप्रत्यनीक अ० अर्थप्रत्यनीक त० उभय प्रत्यनीक ॥ १८ ॥ त० तीन पिता के अंग अ० हड्डी अ० हडीमिंजा के०

सूत्र

पडिणीए, गणपडिणीए, संघपडिणीए । अणुकंपं पडुच्च तओ पडिणीया प० तं० तवस्सिपडिणीए, गिलाणपडिणीए, सेहपडिणीए । भावं पडुच्च तओ पडिणीया प० तं० णाणपडिणीए, दंसणपडिणीए, चरित्तपडिणीए । सुयं पडुच्च तओ पडिणिया प० तं० सुत्तपडिणीए, अत्थपडिणीए, तदुभयपडिणीए, ॥ १८ ॥ तओपितियंगा प० तं०

भावार्थ

प्रत्यनीक और उभय लोक का खराब करे सो दोनों लोक प्रत्यनीक. बहुत जनों का एकत्रित होना सो समुह उस के तीन प्रत्यनीक एक आचार्य के अनेक शिष्यों में से किसी छोटे शिष्य की निन्दा करे, सो कुल प्रत्यनीक, अपनी संप्रदाय के अनेक साधुओं उन की निन्दा करे सो गण प्रत्यनीक और साधु साध्वी श्रावक, श्राविका की इन चारों तीर्थ की निन्दा करे सो संघ प्रत्यनीक. अनुकम्पा के संबंधमें तीन; तपस्वीकी निन्दा करे, रोगी की निन्दा करे, और नव दीक्षितकी निन्दा करे. भाव प्रत्यनीक के तीन भेद. १ उत्सूत्र की प्ररूपणा सो ज्ञान प्रत्यनीक. २ दर्शन प्रत्यनीक सो धर्म करते हुवे शंकालावे और ३ संयम में दोष लगावे सो चारित्र प्रत्यनीक. श्रुत के संबंध में तीन प्रत्यनीक. सूत्रप्रत्यनीक, अर्थ प्रत्यनीक और

शब्दार्थ

कश मं० मूंछ रो० रोम न० नख त० तीन मा० माता के अंग मं० मांस सो० रुधिर म० मस्तककीभेजी ॥ १९ ॥ ति० तीनस्थान से स० श्रमण नि० निर्ग्रंथ को म० महानिर्जरा म० महापर्यवसान भ० होवे क० कब अ० मैं अ० अल्प ब० बहुत सु० सूत्र अ० पढूंगा क० कब अ० मैं ए० एकल विहारी प्रतिमा उ० अंगीकार कर वि० विचरूंगा क० कब अ० मैं अ० अपच्छिम म० मरणांतिक सं० संलेखणा झू० झूसणा झू० झूसकर भ० भत्तपानी का प० प्रत्याख्यान करं पा० पादोपगमन का० काल को अ० नहीं वांछता वि०

सूत्र

अट्ठी, अट्ठिमिंजा, केसमंसरोमनहे । तओ माउयंगा प० तं० मंसे सोणिए, मत्थुलिंगे ॥ १९ ॥ तिहिं ठाणेहिं समणे णिग्गंथे महानिज्जरे महापज्जवसाणे भवइ तं० कयाणं अहं अप्पंवा, बहुंवा सुयं अहिज्जिस्सामि । कयाणं महं मेकल्लविहारपडिमं उवसंपज्जित्ताणं विहरिस्सामि । कयाणं महं मपच्छिममारणंतियसंलेहणाझूसणा झूसिए भत्तपाणपडियाइक्खिए पाओवगए कालमणवकंखमाणे विहरिस्सामि॥ एवं

भावार्थ

सूत्र अर्थ दोनों प्रत्यनीक ॥ १८ ॥ पिता के तीन अंग भगवंतने फरमाये हैं. अस्थि सो हड्डी; हडी की मिंजी, और बाल, दाढी, मूछ, रोम व नख. वैसे ही माता के तीन अंग कहेहैं. मांस, लोही और मस्तक की नीचे की भेजी ॥ १९ ॥ तीन प्रकार से साधु महा निर्जरा या पर्यवसान करता है. कब मैं अल्प या बहुत शास्त्रों का अभ्यास करूं, कब मैं एकलविहारी की प्रतिमा अंगीकार करूं, और कब मैं मरणान्तिक संले-

शब्दार्थ

विचरूंगा ए०ऐसे स०मनसे स०वचनसे स०कायासे पा०प्रगटकरताहुवा नि०निर्ग्रंथ को म०महानिर्जरा म०महा पर्यवसान भ० होवे ॥२०॥ ति० तीनस्थान से स० श्रावक को म० महानिर्जरा म० महापर्यवसान भ० होवे क० कब अ० मैं अ० थोडा व० बहुत प० परिग्रह प० त्यजूंगा क० कब अ० मैं मुं० मुंडित भ० होकर अ० गृह से अ० अनगारपना की प० प्रवर्जा लऊंगा क० कब अ० अपाच्छिम म० मरणांतिक सं० सैलेख-

सूत्र

समणसा सवयसा सकायसा पागडेमाणे निग्गंथे महाणिज्जरे महापज्जवसाणे भवइ ॥ २० ॥ तिहिं ठाणेहिं समणोवासए महानिज्जरे महापज्जवसाणे भवइ तं० कयाण महमप्पंवा, बहुअंवा परिग्गहं परिचइस्सामि. कयाणं अहं मुंडे भवित्ता अगाराओ

भावार्थ

खना करके, कषायोंको पतली बना करके, भक्त पान का प्रत्याख्यान करके, और पादोपगमन अनशन करके कालको नहीं वांच्छता हुवा विचरूं. इस तरह मन, वचन और काया से चिन्तवना करता हुवा महा निर्जरा करे ॥ २० ॥ श्रावक तीन मनोरथ चिन्तवते हुवे महा निर्जरा करे. पहिले मनोरथ में श्रावक ऐसा विचार करे कि १ कब मैं थोडा या बहुत परिग्रह का सर्वथा त्याग करूंगा. वह दिन मेरा कल्याण का होगा. २ कब मैं द्रव्य से मस्तक और भाव से मन मुंडकर साधुपना अंगीकार करूंगा. और जिस दिन साधुपना अंगीकार करूंगा वह दिन मेरा कल्याण का होगा और ३ कब मैं मरण के अन्त में कषायों को पतली

शब्दार्थ णा झू० झूसणा झू० झूसकर भ० भक्तपान प० प्रत्याख्यान कर पा० पादोपगमन का० कालको अ० नहीं वांछता वि० विचरूंगा ए० ऐसे स० मनसे स० वचन से स० काया से जा० जागता स० श्रावक को म० महानिर्जरा म० महापर्यवसान भ० होवे ॥२१॥ ति० तीनप्रकार का पो० पुद्गल प० प्रतिघाति प० परमाणु पुद्गल प० परमाणु पुद्गलको प० प्राप्तकर प० प्रतिघातपावे लु० रुक्षपनासे प० प्रतिघात पावे लो० लोकान्त से प० प्रतिघात पावे ॥ २२ ॥ ति० तीन प्रकार का च० चक्षु ए० एकचक्षु वि० दोचक्षु ति०

सूत्र

अणगारियं पव्वयिस्सामि कयाणं अपच्छिममारणांतिय संलेहणाझूसणा झूसिए भत्तपाणपडियाइक्खिए पाओवगए कालमणवकंखमाणे विहरिस्सामि. एवं समणसा सवयसा सकायसा जागरमाणे समणोवासए महाणिज्जरे महापज्जवसाणे भवइ॥२१॥ तिविहे पोग्गलपडिघाए प० तं० परमाणुपोग्गले परमाणुपोग्गलंपप्पपाडिहंमेज्जा. लुक्खत्ताएवा पडिहंमेज्जा, लोगंतेवा पडिहंमेज्जा ॥ २२ ॥ तिविहे चक्खू प० तं०

भावार्थ करके भक्त प्रत्याख्यान को अंगीकार करूं. और मरण को नहीं वांछता हुवा विचरूं. जिस दिन ऐसा करूंगा उस दिन मेरा कल्याण होगा ॥ २१ ॥ चलते हुवे पुद्गल की तीन प्रकार से स्खलना होती है. एक परमाणु दूसरे परमाणु से प्रतिघात पाकर स्खलना पावे २ रुक्षपना से परमाणु पुद्गल आगे चलसके नहीं, और ३ लोक के अन्त में गये हुवे पुद्गलों धर्मास्तिकाया का अभाव से आगे नहीं जासकने से

शब्दार्थ

तीन चक्षु छ० छद्मस्थ म० मनुष्य को ए० एकचक्षु दे० देवता को वि०दोचक्षु त० तथारूप स० श्रमण को मा० माहण को उ० उत्पन्न णा० ज्ञान दं० दर्शनवाले को ति० तीनचक्षु व० कहना सि० होवे ॥ २३ ॥ ति० तीनप्रकार का अ० अभिसमागम उ० ऊर्ध्व अ० अधो ति०तिर्यक् ज० जब त० तथारूप स० श्रमण मा० माहण को अ० उत्कृष्ट णा० ज्ञान दं० दर्शन स० उत्पन्न होता है से० तब प० प्रथम समय में उ० ऊर्ध्व अ० देखे त० पीछे ति० तिर्यक् त० उसके पीछे अ० अधो अ० अधो लोक में दु०दुरभिगम स०आ-

सूत्र

एगचक्खू, विचक्खू तिचक्खू । छउमत्थेणं मणुस्से एगचक्खू, देवे विचक्खू, तहारूवे समणेवा माहणेवा उप्पन्ननाणदंसणधरे सेणं तिचक्खुत्ति वत्तव्वंसिया ॥ २३ ॥ तिविहे अभिसमागमे प० तं० उड्ढं, अहं, तिरियं। जयाणं तहारूवस्स समणस्सवा माहणस्सवा, अइसेसे णाणदंसणे समुप्पज्जइ सेणं तप्पढमयाए उड्ढमभिसमेइ, तओ तिरि

भावार्थ

स्खलना पावे ॥ २२ ॥ तीन प्रकार की चक्षु श्री भगवंतने फरमाइ. एक आंख, दो आंख और तीन आंख. श्रुत ज्ञान रहित छद्मस्थ मनुष्य को द्रव्य नेत्र होने से एक चक्षु. देवता को दो चक्षु. एक द्रव्य चक्षु और दूसरा श्रुत अवधि, तथाभूत श्रमण माहण कि जो ज्ञान दर्शन के धरनेवाले हैं उन को तीन चक्षु. द्रव्य चक्षु, परमश्रुत ज्ञान, और परम अवधि ज्ञान ॥ २३ ॥ अभिसमागम-(वस्तु को सत्यपन

शब्दार्थ

युष्मन् श्रमण ॥ २४ ॥ ति० तीनप्रकार की इ० ऋद्धि दे० देवकीऋद्धि रा० राजकी ऋद्धि ग० गणिकी ऋद्धि दे० देवकी ऋद्धि ति० तीनप्रकार की वि० विमानकी ऋद्धि वि० विकुर्वणा की ऋद्धि प० परिचारणाकी ऋद्धि अ० अथवा दे० देवकी ऋद्धि ति० तीनप्रकार की स० सचित्त अ० अचित्त मी० मिश्र रा० राजाकी ऋद्धि ति० तीनप्रकार की र० राजाके प्रवेश की ऋद्धि र० राजा के निकलने की ऋद्धि

सूत्र

यं तओ पच्छा अहे अहोलोगेणं दुरभिगमे प० समणाउसो ॥ २४ ॥ तिविहा इड्ढी प० तं० देविड्ढी, राइड्ढी, गणिड्ढी । देविड्ढी तिविहा प० तं० विमाणिड्ढी विगुव्विणिड्ढी, परियारणिड्ढी । अहवा देविड्ढी तिविहा प० तं० सचित्ता, अचित्ता, मीसिया ॥

भावार्थ

जानना) के तीन भेद तथाभूत श्रमण व माहणको जब उत्कृष्ट ज्ञान[1] दर्शन की प्राप्ति होती है तब प्रारंभ में वे ऊर्ध्व लोक देखते हैं फीर तिर्च्छा लोक और बाद में अधो लोक देखते हैं परंतु अधो लोक देखना बहुत कठिन है क्यों कि वह लोक महा अंधकारमय है ॥ २४ ॥ तीन प्रकारकी ऋद्धि कही. देवता की ऋद्धि, राजा की ऋद्धि और आचार्य की ऋद्धि. देवता की ऋद्धि तीन प्रकार की विमान की ऋद्धि, वैक्रेय बनाने की ऋद्धि और देवांगनासे भोग भोगवने की ऋद्धि, अथवा देवता की ऋद्धि तीन प्रकार की

१. यहां पर उत्कृष्ट ज्ञान परम अवधि ज्ञान को लेना परंतु केवल ज्ञान लेना नहीं क्यों कि केवली तो एक समय में तीनों लोक को जानते हैं और देखते हैं.

र० राजाकी ब० सेना वा० वाहन को० कोश को० भंडारऋद्धि अ० अथवा रा० राजऋद्धि ति० तीनप्रकार की स० सचित्त अ० अचित्त मी० मिश्र ग० गणिकी ऋद्धि ति० तीनप्रकार की णा० ज्ञानकी ऋद्धि दं० दर्शन की ऋद्धि च० चारित्र की ऋद्धि अथवा ग० गणिकी ऋद्धि ति० तीनप्रकार की

राइड्ढी तिविहा प० तं० रण्णो अइयाणिड्ढी, रण्णो णिज्जाणिड्ढी, रण्णोबलवाहण कोसकोट्ठागारिड्ढी । अहवा राइड्ढी तिविहा प० तं० सचित्ता, अचित्ता, मीसिया ॥ गणिड्ढी तिविहा प० तं० णाणिड्ढी, दंसणिड्ढी, चरित्तिड्ढी । अहवा गणिड्ढी तिविहा

सचित्त ऋद्धि सो अपना शरीर अथवा सामानिक, आत्मरक्षक और परिषदा आदि के देवताओं. अचित्त ऋद्धि सो वस्त्राभरण और मिश्र ऋद्धि सो सचित्त अचित्त दोनों मिश्र. राजा की ऋद्धि तीन प्रकार की राजा नगर में प्रवेश करे तब नगर में शणगार उत्सव होवे सो अतियान ऋद्धि; राजा नगर बाहिर नीकले तब हाथी घोडा आदि जो ऋद्धि होवे सो निर्याण ऋद्धि और राजा को हाथी घोडा, रथ, पेदल, पालखी कोश भंडारकी ऋद्धि सो कोष्टागार ऋद्धि, और भी तीन प्रकार की ऋद्धि सामंत, राणियों प्रमुख सचित्त ऋद्धि, रत्न सुवर्णादि अचित्त ऋद्धि और सचित्त अचित्त दोनों मिली हुइ सो मिश्र ऋद्धि. आचार्य की ऋद्धि तीन प्रकारकी द्वादशांग के पारगामी सो ज्ञान ऋद्धि, सम्यक्त्व की निर्मलता सो दर्शन ऋद्धि और चारित्र की विशुद्धता सो चारित्र ऋद्धि. और भी आचार्य की ऋद्धि तीन प्रकारकी शिष्या-

शब्दार्थ

स० सचित्त अ० अचित्त मी० मिश्र ॥ २५ ॥ ति० तीन गा० गर्व इ० ऋद्धिगर्व र० रसगर्व सा० साता गर्व ति० तीनकरण ध० धर्म का करण अ० अधर्म करण ध० धर्माधर्म करण ॥ २६ ॥ ति० तीनप्रकार का भ० भगवानने ध० धर्म प० प्ररूपा सु० सूत्रपढना सु० अच्छा ध्यान धरना सु० तपश्चर्या करना ज० यदि सु० अच्छापढा भ० होवे त० तो सु० अच्छा ध्यान भ० होवे जं० जो सु० अच्छा ध्यान भ० होवे

सूत्र

प० तं० सचित्ता, अचित्ता, मीसिया ॥ २५ ॥ तओ गारवा प० तं० इड्ढीगारवे, रसगारवे, सातागारवे । तिविहे करणे प० तं० धम्मिए करणे, अधम्मिए करणे, धम्मियाधम्मिए करणे ॥ २६ ॥ तिविहे भगवया धम्मे प० तं० सुअहिज्जिए, सुज्झाइए, सुतवस्सिए । जया सुअहिज्जियं भवइ, तदा सुज्झाइयं भवइ, जया सुज्झाइयं

भावार्थ

दिक की ऋद्धि सो सचित्त ऋद्धि, वस्त्रपात्रादिक की ऋद्धि सो अचित्त ऋद्धि, और दोनों मिली हुइ सो मिश्र ऋद्धि ॥ २५ ॥ तीन प्रकार का गर्व. ऋद्धि का गर्व, रस का गर्व और साता का गर्व. तीन प्रकार के करण. साधुओं कि क्रिया सो धर्म करण, मिथ्यात्वी की क्रिया सो अधर्म करण और श्रावक की क्रिया सो धर्माधर्म करण ॥ २६ ॥ भगवंतने तीन प्रकार का धर्म फरमाया. गुरु आदि सूत्रिओं का विनय करके शास्त्रार्थ धारण करे सो सूत्राधीत, शंकादि दोष रहित शास्त्राभ्यास करे सो सुध्यानी और इस लोक व परलोक की वांछा रहित धर्म करे सो सुतप धर्म. जो सुशास्त्रों का यथातथ्यपने अभ्यास करेगा वह शुभ-

शब्दार्थ

त० तो सु० अच्छा तपस्वी भ० होवे से० वह सु० अच्छापदे सु० अच्छाध्यान ध्यावे सु० अच्छी तपस्याकरे सु० अच्छा होने से भ० भगवानने ध० धर्म प० प्ररूपा ॥ २७ ॥ ति० तीनप्रकार की वा० निवृत्ति जा० जानकर अ० अजानकर वि० शंकाकर ए० ऐसे अ० कषाय की व० वर्जना पं० विषय व० वर्जना ॥२८॥ ति० तीन प्रकारका अं० अन्त प०प्ररूपा लो०लोकका अन्त वे०वेदका अन्त स० शास्त्र का अंत ॥ २९ ॥

सूत्र

भवइ तया सुतवस्सियं भवइ । से सुआहिजिए, सुज्झाइए, सुतवस्सिए, सुयक्खाएणं भगवया धम्मे पण्णत्ते ॥ २७ ॥ तिविहा वावत्ती प० तं० जाणू अजाणू वितिगिच्छा । एवमज्झोववज्जणा परियावज्जणा ॥२८॥ तिविहे अंते पण्णत्ते तंजहा लोगंते, वेयंते, समयंते ॥२९॥ तओ जिणा प० तं० ओहिनाणजिणे, मणपज्जवनाणजिणे, केवलनाणजिणे तओ केवली प० तं० ओहिनाण केवली मणपज्जवनाण केवली केवलनाण केवली तओ अरहा पण्णत्ता तं० ओहिनाणअरहा, मणपज्जवनाणअरहा केवलनाणअरहा

भावार्थ

ध्यान धर सकेगा और शुभ ध्यान में रमण करनेवाला शुद्ध तपश्चरण कर सकेगा. यों अनुक्रम से धर्म साधन करना अच्छा है परंतु सम्यग् ज्ञान विना ध्यान तप मिथ्या है ॥ २७ ॥ तीन प्रकारकी व्यावृत्ति (हिंसादिक से निवृत्ति) कही. हिंसा के फल को जानकर हिंसा से निवर्ते, विना जाने अज्ञानपने से छोडे, या हिंसादिक में पाप है या नहीं ऐसी शंका जानकर छोडे. इसी तरह तीन प्रकार से कषाय और इंद्रियों से निवर्ते ॥ २८ ॥ तीन वस्तु का अन्त कहा है. चउदह राजु का जो लोक है उस का अंत, चारों वेदों के तत्त्वों जानने से उस का अंत, और शास्त्रों का रहस्य जानने से शास्त्रों का अंत ॥ २९ ॥

शब्दार्थ

त० तीन जि० जिन ओ० अवधिज्ञानी जिन म० मनःपर्यव ज्ञानी जिन के० केवल ज्ञानी जिन त० तीन केवली ओ० अवधिज्ञानी केवली म० मनःपर्यव ज्ञानी केवली के० केवल ज्ञानी केवली त० तीन अ० अरिहंत ओ० अवधिज्ञानी अरिहंत म० मनःपर्यव ज्ञानी अरिहंत के० केवल ज्ञानी अरिहंत ॥ ३० ॥ त० तीन ले० लेश्या दु० दुरभिगंधी क० कृष्ण लेश्या नी० नील लेश्या का० कापुत लेश्या त० तीन ले० लेश्या सु० सुरभिगंधी ते० तेजु प० पद्म सु० शुक्कलेश्या ए० ऐसे ति० तीन दु० दुर्गतिलेजाने वाली ति० तीन

सूत्र

॥ ३० ॥ तओ लेस्साओ दुब्भिगंधाओ प० तं० कण्हलेस्सा, नीललेस्सा, काउलेस्सा तओ लेस्साओ सुब्भिगंधाओ प० तं० तेउ पम्हा सुक्कलेस्सा । एवं तिदुग्गइगामिणीओ, तिसुगइगामिणीओ । तओ संकिलिट्ठाओ, असंकिलिट्ठाओ, अमणुन्नाओ;

भावार्थ

तीन प्रकारके जिन कहे हैं. अवधि ज्ञानी जिन, मनःपर्यव ज्ञानी जिन, और केवल ज्ञानी जिन. तीन प्रकार के केवली, अवधि ज्ञानी केवली, मनःपर्यव ज्ञानी केवली और केवल ज्ञानी केवली. तीन अरिहंत अवधि ज्ञानी अरिहंत, मनःपर्यव ज्ञानी अरिहंत और केवल ज्ञानी अरिहंत ॥ ३० ॥ कृष्ण, नील और कापुत ये तीन लेश्याओं की गंध खराब है और तेजु, पद्म और शुक्ल लेश्याओं की गंध अच्छी है. ऐसे ही तीन दुर्गतिमें लेजानेवाली और तीनसुगतिमें लेजानेवाली, तीनसंक्लिष्ट और तीन असंक्लिष्ट, तीन अमनोज्ञ, तीन

शब्दार्थ

सु० अच्छीगति में लेजाने वाली त० तीन सं० खराब अ० अच्छी अ० अमनोज्ञ सु० मनोज्ञ अ० अविशुद्ध वि० विशुद्ध अ० अप्रशस्त प० प्रशस्त सी० शीत लु० रुक्ष सि० स्निग्ध उ० ऊष्ण ॥ ३१ ॥ ति० तीनप्रकारका म० मरण बा० बालमरण पं० पंडित मरण वा० बाल पंडित मरण बा० बालमरण ति० तीनप्रकार का ठि० स्थित लेशी सं० संक्लिष्टलेशी प० पर्यवजात लेशी पं० पंडित मरण ति० तीनप्रकार का ठि० स्थित लेशी अ० असंक्लिष्ट लेशी प० पर्यवजात लेशी बा० बालपंडित मरण ति० तीनप्रकार का ठि० स्थितलेशी

सूत्र

सुमणुन्नाओ अविसुद्धाओ, विसुद्धाओ । अप्पसत्थाओ, पसत्थाओ; सीअलुक्खाओ सिणिद्धुण्हाओ॥ ३१॥ तिविहे मरणे प० तं० बालमरणे, पंडियमरणे, बालपंडियमरणे। बालमरणे तिविहे प० तं० ठिअलेस्से, संकिलिट्ठलेस्से, पजवजातलेस्से। पंडियमरणे तिविहे प० तं० ठिअलेस्सेअसंकिलिट्ठलेस्से, पजवजातलेस्से। बालपंडियमरणे तिविहे प० तं० ठिअलेस्से असं-

भावार्थ

मनोज्ञ, तीन अशुभ और तीन शुभ तीन, अप्रशस्त और तीन प्रशस्त वैसे ही तीन शीत और रुक्ष, स्निग्ध और ऊष्ण है ॥ ३१ ॥ तीन प्रकारके मरण. अज्ञानी का मरण सो बाल मरण, ज्ञानी का मरण सो पंडित मरण और श्रावकों का मरण सो बालपंडित मरण. बाल मरण के तीन भेद जिस लेश्या में मरण होवे उसी लेश्या में उत्पन्न होवे सो स्थित लेश्यावाले, खराब लेश्या में मरकर अन्य विशेष खराब लेश्या में जावे सो संक्लिष्ट लेश्यावाले और शुभ में से अशुभ में और अशुभ में से शुभ में चवे बाद जावे

शब्दार्थ

अ० असंक्लिष्टलेशी अ० अपर्यवजातलेशी ॥ ३२ ॥ त० तीन ठा० स्थान अ० अव्यवस्थित को अ० अहितकर्ता अ० अशुभकर्ता अ० अक्षेमकर्ता अ० अनिस्तारकर्ता अ० अननुगामिभ० होवे से० वह मु० मुंड भ० होकर अ० अगार से अ० अनगार को प० प्रवर्जित होवे णि० निर्ग्रंथ के पा० प्रवचन में सं० शंकित कं० कांक्षित वि० वितिगिच्छावाले भे० भेद स० प्राप्त क० कालुष्य स० प्राप्त णि० निर्ग्रंथ का० पा० प्रवचन

सूत्र

किलिट्ठलेस्से, अपज्जवजातलेस्से. । ॥ ३२ ॥ तओठाणा अव्ववसिअस्स आहियाए, असुभाए, अखमाए, आणिस्सेसाए अणाणुगामियत्ताए भवंति तं० सेणं मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइए, णिग्गंथे पावयणे संकिए कंखिए, वितिगिच्छिए, भेद समावन्ने, कलुससमावन्ने; णिग्गंथं पावयणं णो सद्दहइ णो पत्तियइ णो रोएइ, तंपरीसहाआभिजुंजिय अभिजुंजिय आभिभवंति.नो से परीसहे अभिजुंजिय अभिजुंजिय अभिभवइ

भावार्थ

सो पर्यवजात लेश्यावाले कहेजाते हैं. जैसे बाल मरण का कहा वैसे ही पंडित मरण, व बाल पंडित मरण का कहना विशेष इतना कि ये दोनों लेश्यावाले अच्छी लेश्या में उत्पन्न होते हैं ॥ ३२ ॥ साधु निर्ग्रंथ तीन स्थानकों यथोचित नहीं रखने से आत्मा का अहित करते हैं, सुख का नाश करते हैं, क्षमाका नाश करते हैं, उन का निस्तार नहीं होता है और मोक्ष प्राप्त नहीं कर सकते हैं. उन तीनों स्थानक के नाम. १ साधु बनकर निर्ग्रंथ के प्रवचन में शंका लावे, अन्य मत की वांच्छा करे, शास्त्र पठन के फल में संदेह लावे. आत्मा में भेद भाव रखे, कालुष्यता रक्खे, शास्त्र के बचनों श्रद्धे नहीं, प्रतीते नहीं, रुचे नहीं

शब्दार्थ

को णो० नहीं स० श्रद्धाकरे णो० नहीं प० प्रतीतकरे णो० नहीं रो० रुचे तं० उस प० परिषह अ० उत्पन्न हुवे अ० पराभवकरे णो० नहीं से० उस प० परिषह अ० उत्पन्न हुवे अ० पराभवकरे से० वह मुं० मुंड भ० होकर अ० अगार से अ० अनगार को प० प्रवर्जित होकर पं० पंच म० महाव्रत में सं० शंकित जा० यावत् क० कालुष्य स० प्राप्त पं० पंच म० महाव्रत णो० नहीं स० श्रद्धाकरे जा०

सूत्र

सेणं मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइए, पंचहिं महव्वएहिं संकिए जाव-कलुससमावण्णे, पंचमहव्वयाइं णो सद्दहइ जाव नो से परीसहे अभिजुंजिय२ अभिभवइ । सेणं मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइए छहिं जीवनिकाएहिं जाव अभिभवइ ॥ तओ ठाणा ववसिअस्स हियाए जावाणुगामियत्ताए भवंति तं० सेणं मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइए, णिग्गंथे पावयणे णिस्संकिए णिक्कंखिए

भावार्थ

परिषह सन्मुख हो सके नहीं, और परिषह से शिथिल बने तो आत्मा का नुकशान करे २ साधु बन करके पंचमहाव्रत रूप साधु धर्म में शंका लावे, अन्य के व्रतों आचरने की इच्छा करे, महाव्रतों पालते फल में संदेह उत्पन्न होवे यावत् परिषह से शिथिल बने तो आत्मा का नुकशान करे. ३ साधु बनकर के षट्काया के जीवों के विषय में शंका लावे, यावत् परिषह से शिथिल बने तो आत्मा का नुकशान करे. और तीनों स्थानों अच्छी तरह रखने से साधु अपनी आत्मा को हित, सुख, और क्षमा की प्राप्ति यावत्

शब्दार्थ

वावत् नो० नहीं प० परिषहको अ० सहन करके अ० पराभव करे से० वह मुं मुंड भ० होकर अ० अगार से अ० अनगार को प० प्रवर्जित होकर छ० छजीवनिकाय को जा० यावत् अ० पराभव करे त० तीन ठा० स्थान वं० व्यवस्थित को हि० हितकर्ता जा० यावत् अ० अनुगामिक भ० होवे से० वह मुं० मुंड भ०

सूत्र

जाव णो कलुस समावण्णे णिग्गथं पावयणं सद्दहइ पत्तियइ रोएइ से परीसहे अभिजुंजिय २ अभिभवइ । णो तं परीसहा आभिजुंजिय २ अभिभवंति । सेणं मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइए समाणे पंचहिं महव्वएहिं णिस्संकिए जाव परिस्सहे आभिजुंजिय २ अभिभवइ णो तं परिस्सहा आभिजुंजिय २ अभिभवंति । सेणं मुंडे

भावार्थ

अनुक्रम से मोक्ष की प्राप्ति कर सकते हैं. उन तीन स्थानों के नाम. साधु बनकर निर्ग्रंथ के प्रवचन में किसी प्रकार की शंका न रखे, अन्यमत की आकांक्षा न करे और शास्त्र पठन के फल में किसी प्रकार का संदेह न रखे, भेद भाव बीलकुल रखे नहीं, कालुष्यपना मिटावे; जिन वचन की प्रतीति, रुचि करे, परिषह प्राप्त हुवे उन के सन्मुख रहकर सहन करे. २ पंचमहाव्रत जो साधु का धर्म है उन में शंका न लावे, अन्य मतावलम्बीयों के व्रतों को आचरने की अभिलाषा भी करे नहीं, महाव्रत के फल में संदेह न लावे, उत्साह पूर्वक उस को पाले, और परिषह आने पर समभाव से सहन करे परंतु किंचिन्मात्र दोष लगावे नहीं ३ षट्काया के जीवों के अस्तित्व में शंका लावे नहीं, अन्य की श्रद्धा करे नहीं और

शब्दार्थ

होकर अ० आगार से० अ० अनगार को प०प्रवर्जित होकर णि० निर्ग्रंथ के पा० प्रवचन में णि० निःशंकित नि० निःकांक्षीत जा० यावत् णो० नहीं क० कालुष्य पूर्ववत् ॥ ३३ ॥ ए० एकेक पु० पृथ्वी ति० तीन व० वलयसे स० चारोंबाजु स० परिक्षिप्त तं० वह ध० घनोदधिवलयसे घ० घनवात वलयसे त० तनवात वलयसे ॥ ३४ ॥ णे० नारकी उ० उत्कृष्ट ति० तीन समय में वि० विग्रहगति से उ० उपजते हैं ए० एकेन्द्रिय व० वर्जकर जा० यावत् वे० वैमानिक ॥ ३५ ॥ खी० क्षीण मोहिनी के अ० अरिहंत त०

सूत्र

भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइए छहिं जीवनिकाएहिं णिस्संकिए जाव परिस्सहे अभिजुंजिय २ अभिभवइ णो तं परिस्सहा अभिजुंजिय २ अभिभवंति ॥३३॥ एगमेगाणं पुढवी तिहिं वलएहिं सव्वओ समंता संपरिक्खित्ता तंजहा—घणोदहिवलएणं, घणवायवलएणं, तणवायवलएणं ॥ ३४ ॥ णेरइयाणं उक्कोसेणं तिसमइएणं विग्गहेणं उववज्जंति—एगिंदियवज्जं जाव वेमाणियाणं ॥३५॥ खीणमोहस्सणं अरहओ

भावार्थ

उनकी रक्षा करनेके फलमें संदेह लावे नहीं. परिषह उत्पन्न होनेपर दया धर्मसे कदापि चलित होवे नहीं यों तीन प्रकार से व्यवस्थित रहने से आत्मा को सुख की प्राप्ति होती है॥ ३३ ॥एक २ पृथ्वी की चारों तरफ तीन २ वलय कहेहैं. घनादेधि, घनवात और तनवात का वलय॥३४॥एकेन्द्रिय छोडकर अन्य सब स्थानक से जीवों मरकर उत्कृष्ट तीन समय में दूसरी गति में जाकर उत्पन्न होते हैं, यदि वे जीवों में से कोई

शब्दार्थ

तीन क० कर्म जु० साथ खि० क्षयकरते हैं णा० ज्ञानावर्णिय दं० दर्शनावर्णिय अ० अंतराय ॥ ३६ ॥ अ० अभिजित् ण० नक्षत्र के ति० तीनतारे ए० ऐसे स० श्रवण के अ० आश्वनी भ० भरणीके म० मृगसर के पू० पुष्य के जे० जेष्टाके ॥ ३७ ॥ ध० धर्मनाथ अ० अरिहंत से सं० शान्तिनाथ अ० अरिहंत ति० तीन सा० सागरोपमका ति० तीन च० चारभागके प० पल्योपमके उ० ऊनावी० व्यतीत हुवे स० उत्पन्न हुवे स० श्रमण भ० भगवान् म० महावीरके जा० यावत् त० तीन पु० पुरुषयुग से जु० युगांतकर भूमि म० मल्लीनाथ अ० अरिहंत ति०

सूत्र

तओ कम्मंसा जुगवं खिज्जंति तं णाणावरणिज्जं, दंसणावरणिज्जं, अंतरायं ॥३६॥ अभिई णक्खत्ते तितारे, पन्नत्ते, एवं सवणे, अस्सिणी, भरणी, मगसिरे, पूसे जेट्ठा ॥ ३७ ॥ धम्माओणं अरहाओ संती अरहा तिहिं सागरोवमेहिं तिचउब्भागं पलिओवमऊणएहिं वीइक्कंतेहिं समुप्पन्ने । समणस्सणं भगवओ महावीरस्स जाव त-

भावार्थ

रस्ता छोड देवे और विग्रह गति करके फीर उत स्थान में उत्पन्न होवे तो तीन समय लगते हैं. ॥ ३५ ॥ क्षणि मोहनीयवाले अरिहंत एक साथ ही तीन कर्मों की प्रकृति क्षय करते हैं. ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय और अंतराय. ॥ ३६ ॥ अभिजित्, श्रवण, अश्विनी, भरणी, मृगशर, पूष्य और जेष्टा नक्षत्र के तीन २ तारे कहे हैं ॥ ३७ ॥ पन्नरहवे धर्म नाथ तीर्थंकर मोक्ष में गये बाद तीन सागरोपम में से एक पल्योपम का चतुर्थ भाग चौथा भाग कभी इतना काल गये बाद सोलवे तीर्थंकर श्री शान्तिनाथ हुवे.

शब्दार्थ

तीन स० शत पु० पुरुषसाथ मुं० मुंडहुवे जा०यावत् प० प्रवर्जित हुवे ए० ऐसे पा० पार्श्वनाथ स० श्रमण भ० भगवान् म० महावीर के ति० तीनसो चो०चौदपूर्वके धारक अ० जिन नहीं जि० जिनसरिखे स० सर्व अक्षरके स० सन्निपात के जान जि० जिनसमान अ० यथातथ्य पा० प्ररूपक उ० उत्कृष्ट चो० चौदपूर्व-धारक हो० थे त० तीन ति० तीर्थंकर च० चक्रवर्ति हो० थे सं० शान्तिनाथ कुं० कुंथूनाथ अ० अरनाथ

सूत्र

चाओ पुरिसजुगाओ जुगंतकडभूमी, मल्लीणं अरहा तिहिं पुरिससएहिं सद्धिं मुंडे भवेत्ता जाव पव्वइए, एवं पासेवि। समणस्सणं भगवओ महावीरस्स तिन्निसया चोद्दसपुव्वीणं अजिणाणं जिणसंकासाणं सव्वक्खरसन्निवाईणं जिणोइव अवितहं वागरमाणाणं उक्कोसिया चोद्दसपुव्विसंपया होत्था. । तओ तित्थयरा चक्कवट्टी होत्था, तं०

भावार्थ

श्री महावीर स्वामी पीछे श्री गौतम स्वामी, श्री सुधर्मा स्वामी, और श्री जम्बू स्वामी ये तीन पुरुषों जुगन्त कर्ता हुवे अर्थात् मोक्ष में पधारे बाद में मोक्ष जाने का बंध हुवा. उन्नीसवे तीर्थंकर श्री मल्लीनाथजी और तेवीसवे तीर्थंकर श्री पार्श्वनाथजीने तीन सो २ पुरुष सहित दीक्षा अंगीकार की. श्री महावीर स्वामी को तीर्थंकर नहीं परंतु तीर्थंकर सारिखे, सर्व अक्षरों के सन्निपात उत्पत्ति के जाननेवाले, तीर्थंकर समान उत्तर देनेवाले तीन सो चौदहपूर्वधारी साधु थे. श्री शान्तिनाथ स्वामी, श्री कुंथूनाथ स्वामी और

शब्दार्थ

॥ ३८ ॥ त० तीन गे० ग्रैवेयक विमान के प० पाथडे हि० नीचे के गे० ग्रिवेक वि० विमान के प० पाथडे म० मध्यके गे० ग्रिवेक वि० विमान के प० पाथडे उ० ऊपर के गे० ग्रिवेक वि० विमान के प० पाथडे हि० नीचे के गे० ग्रिवेक वि० विमानके प०पाथडे ति०तीन प्रकार के हि०नीचले के नीचले गे०ग्रिवेक वि० विमान के प० पाथडे हे० नीचे के म० मध्य गे० ग्रिवेक वि० विमानके प० पाथडे हे० नीचले के उ०ऊपर के गे० ग्रिवेक वि० विमान के प० पाथडे म० मध्य गे० ग्रिवेक वि० विमान के प० पाथडे ति० तीन प्रकार के म० मध्यके हे० नीचले गे० ग्रिवेक वि०विमान के प०पाथडे म०मध्यम के मध्यम गे० ग्रिवेक वि०

सूत्र

संती, कुंथू, अरो ॥ ३८ ॥ तओ गेविज्जविमाणपत्थडा प० तं० हिट्ठिमगेविज्ज-विमाणपत्थडे, मज्झिम गेविज्जविमाणपत्थडे, उवरिमगेविज्जविमाणपत्थडे, हि-ट्ठिमगेविज्जविमाणपत्थडे तिविहे प० तं० हिट्ठिम हिट्ठिम गेविज्जाविमाणपत्थडे हिट्ठिम मज्झिम गेविज्ज विमाण पत्थडे, हिट्ठिम उवरिम गेविज्ज विमाण पत्थडे । म-ज्झिम गेविज्ज विमाण पत्थडे तिविहे प० तं० मज्झिम हिट्ठिम गेविज्ज विमाण पत्थडे

भावार्थ

अरनाथ स्वामी ये तीनों तीर्थंकर चक्रवर्ती की पद्वी पाये ॥ ३८ ॥ सुप्रतिष्ठित पुरुषाकार लोक में जो नव विमानों हैं उस को नव ग्रैवेयक कहते हैं. उस में तीन २ विमानों की तीन त्रिक है. नीचे की त्रिक के तीन विमान १ नीचे का भद्र, २ बीचका सुभद्र और उपर का सुजात; बीच की त्रिक में तीन विमान

शब्दार्थ

विमानके प० पाथडे म०मध्य के उ०ऊपले गे०ग्रिवेक वि० विमान के प० पाथडे उ० उपर के गे० ग्रिवेक वि० विमान के प० पाथडे ति० तीनप्रकार उ० ऊपलेके हे० नीचले गे० ग्रिवेक वि० विमान के प० पाथडे उ० उपर के म० मध्यम गे० ग्रिवेक वि०विमान के प०पाथडे उ० उपले के उ०उपले गे०ग्रिवेक वि०विमान के प० पाथडे ॥ ३९ ॥ जी० जीव के ति० तीनस्थान णि० निवर्तिक पो० पुद्गल पा० पापकर्मपने चि० चूने चि० चूनते हैं चि० चूनेंगे इ० स्त्रीपने पु० पुरुषपने ण० नंपुसकपने ए० ऐसे चि० चय किया उ०

सूत्र

मज्झिम मज्झिम गेविज्ज विमाण पत्थडे मज्झिम उवरिम गेविज्ज विमाण पत्थडे, उवरिम गेविज्जविमाणपत्थडे तिविहे प० तं० उवरिमहिट्ठिम गेविज्जविमाणपत्थडे, उवरिम मज्झिम गेविज्जविमाणपत्थडे, उवरिमउवरिमगेविज्जविमाणपत्थडे ॥ ३९ ॥ जीवाणं तिट्ठाणणिव्वत्तिए पोग्गले पावकम्मत्ताए चिणिंसुवा चिणिंतिवा चिणिस्संतिवा

भावार्थ

१ नीचे का सुमनस, २ बीच का सुदर्शन और उपर का प्रियदर्शन उपर की त्रिक में तीन विमान उपर का आमोहनीयक, प्रतिभद्र और यशोधर ॥ ३९ ॥ जीवने स्त्री वेद, पुरुष वेद और नपुंसक वेद यों तीन वेद के पुद्गल अतीत काल में ग्रहण किये, वर्तमान में कर रहे हैं. और अनागत में करेंगे वैसे ही चय, उपचय, बंध, उदीरणा और निर्जरा अतीत काल में की वर्तमानमें कर रहे हैं और भविष्य काल में करेंगे·

शब्दार्थ

उपचय बं० बंध उ०उदीरना वे०वेदना त० तथा णि० निर्जरा ॥ ४० ॥ ति० तीनप्रदेशी खं० स्कन्ध अ० अनंत प० प्ररूपे ए० ऐसे जा० यावत् ति० तीन गुण लु० रुक्ष पो० पुद्गल अ० अनंत प० प्ररूपे ॥४१॥

सूत्र

तं० जहा । इत्थीणिव्वत्तिए पुरिसाणिव्वत्तिए णपुंसगणिव्वत्तिए एवं चिणउवचिण-बंधउदीरवेय तहणिजराचेव ॥ ४० ॥ तिपएसियाखंधा । अणंता पण्णत्ता एवं जाव तिगुणलुक्खपोग्गला अणंता पण्णत्ता ॥४१॥ तिट्ठाणं सम्मत्तं *

भावार्थ

॥ ४० ॥ तीन प्रदेशी स्कन्ध अनंते कहे हैं वैसे ही तीन गुणरुक्ष पुद्गल अनंते प्ररूपे हैं ॥४१॥ तीसरा ठाणा का चौथा उद्देशा और तीसरा ठाणा समाप्त हुवा. + ×







शब्दार्थ

च० चार अं० अंतक्रिया प० प्ररूपी तं० वह त० तहां ख० निश्चय इ० यह प० प्रथम अं० अंतक्रिया अ० अल्पकर्म प० आयाहुवा भ० होवे से० वह मुं० मुंडित भ० होकर अ० अगार से अ०अनगार को प० प्रवर्जित होवे सं० बहुत संयमी सं०वहुत संवरी स० बहुतसमाधिवाला लू०रूक्ष ती० पारगामी उ० तपसे दु० दुःख क०क्षयकरनेवाला त०तपस्वी त०उसको णो०नहीं त०तथाप्रकार का त०तप भ०होवे णो०नहीं त०तथाप्रकार वें०वेदना भ०होवे त०तथाप्रकारका पु०पुरु जात दी०दीर्घ प० पर्यायसे सि० सिद्धहोवे बु०बुझे मु०मुक्त होवे

सूत्र

चत्तारिअंतकिरियाओ प० तं० तत्थखलु इमा पढमा अंतकिरिया अप्पकम्मपच्चायाए यावि भवइ,सेणं मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइए संजमबहुले, संवरबहुले समाहि बहुलेलूहे तीरट्ठी उवहाणवं दुक्खक्खवे तवस्सी तस्सणं णोतहप्पगारेतवे भवइणो तहप्पगारा वेयणाभवइ,तहप्पगारे पुरिसजाए दीहेणं परियाएणं सिज्झइ,बुज्झइ,मुच्चइपरिणिव्वाइ,सव्व

भावार्थ

श्री भगवंतने चार अन्तक्रिया (मोक्ष जाने की क्रिया) कही. १ अल्प कर्मवाला जीव मनुष्य भव में आकर मोक्ष में जाता है, वह अल्प कर्मी जीव गृहस्थपने का त्याग करके साधुपना अंगीकार करता हुवा संयम, संवर, और समाधि सहित विचरे और स्नेह का त्याग कर संसार के पार की वांच्छा सहित योग उपधानादिककी तपश्चर्या करताहुवा और दुःखदाई कर्मोंका क्षय करता हुवा विचरे वैसे तपस्वीको कर्म कम होने से बहुत तप नहीं करना पडता है वैसे ही वेदना भी बहुत नहीं होती है. वैसे पुरुषों दीर्घ कालतक

शब्दार्थ प० निर्वाण होवे स० सर्वदुःख का० अं० अंतकरे ज० जैसे से० वह भ० भरतराजा चा० चार गति को च० चक्रवर्ति प० प्रथम अं० अन्तक्रिया अ० अब दो० दुसरी अं० अंतक्रिया म०महाकर्म प० आथाहुवा भ० होवे से० वह मुं० मुंडित भ० होकर अ० अगार से अ० अनगार को प० प्रवर्जित होवे सं० बहुसंयमी सं० बहुसंवरी जा० यावत् उ० तप से दु०दुःख क० क्षयकरे त० तवस्वी त० उसको त० तथा प्रकार का त० तप भ० होवे त० तथा प्रकार की वे० वेदना भ० होवे तं० तथा प्रकार का पु० पुरुष जात नि०

सूत्र दुक्खाण मंतंकरेइ जहा से भरहे राया चाउरंत चक्कवट्टी पढमा अंतकिरिया ॥ अहावरे दोच्चा अंतकिरिया महाकम्मपच्चाएयावि भवइ सेणं मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइए संजमबहुले, संवरबहुले, जाव उवहाणवं दुक्खक्खवे तवस्सी तस्सणं तहप्पगारे तवे भवइ, तहप्पगारा वेयणा भवइ तहप्पगारे पुरिसजाए निरुद्धेणं पारिया-

भावार्थ दीक्षा पालकर सिद्ध होते हैं, सब भाव को जानते हैं, सब कर्मों का क्षय करते हैं और सब शरीर संबंधि दुःख का क्षय करते हैं. यथादृष्टांत जैसे भरत चक्रवर्ति ने पूर्व के भव में ५०० साधु की वैयावृत्य से हलु कर्मी बन करके विमान में उत्पन्न हुवे और वहां से चवकर चक्रवर्ती हुवे, चक्रवर्ती पद भोगवकर अरिसा भवन में केवली बनकर लक्ष पूर्व की दीक्षा पालकर मोक्ष में गये यह प्रथम अंतक्रिया. दूसरी अंतक्रिया बहुत कर्मी जीव की कही. कोई जीव गृहस्थपना छोड कर दीक्षा लेकर संयम संवर की वृद्धि

शब्दार्थ

निरुद्ध प०पर्याय से सि०सिद्ध होवे जा०यावत् अं०अंतकरे ज०जैसे स०वह ग०गजसुकुमार अ०अनगार दो० दूसरी अं०अंतक्रिया अ०अब त०तीसरी अं०अंतक्रिया म०महाकर्म प०आयाहुवा भ०होवे से०वह मुं०मुंडित भ० होकर अ०अगार से अ०अनगार को प०प्रवर्जित होवे ज०जैसे दो० दूसरी ण० विशेष दी०दीर्घ प० पर्याय से सि० सिद्ध होवे जा० यावत् स० सर्व दु० दुःख को अं० अंतकरे ज० जैसे स० सनत्कुमार चा०

सूत्र

एणं सिज्झइ जाव अंतंकरेइ जहा से गजसूमाले अणगारे, दोच्चा अंतकिरिया। अहावरे तच्चा अंतकिरिया महाकम्मपच्चाएयावि भवइ; सेणं मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइए जहा दोच्चा, णवरं दीहेणं परियाएणं सिज्झइ जाव सव्वदुक्खाण मंतं करेइ, जहासे सणंकुमारे राया चाउरंत चक्कवट्टी तच्चा अंतकिरिया। अहावरा

भावार्थ

करे उपधान युक्त तप करे तो उस को बहुत वेदना भी होवे और इस तरह करनेवाला पुरुष थोडा काल ही साधुपना पालकर तुरत ही सिद्ध होवे यावत् सब दुःख का अंत करे यथादृष्टांत जैसे कृष्ण वासुदेव के लघु भ्राता गजसुकुमाल अनगारने श्री नेमीश्वरकी पास दीक्षा धारन कर तुरत स्मशानमें कायोत्सर्ग किया. सोमल श्वशुरने शिर पे अंगार भरे बहुत वेदना सहन करनी पडी और शीघ्र ही मोक्ष में गये ३ तीसरी, बहुत ज्यादे कर्मवाले होवे इस का सब अधिकार दूसरी अंत क्रिया जैसे कहना. विशेष इतना

शब्दार्थ चारगति को च० चक्रवर्ति त० तीसरी अं० अन्तक्रिया अ० अब च० चौथी अं० अंतक्रिया अ० अल्प कर्म प०आयाहुवा भ० होवे से० वह मुं० मुंडित भ० होकर जा० यावत् प० प्रव्रजित होवे सं०बहुसंयमी ना० यावत् त० उसको णो० नहीं त० तथा प्रकार का त० तप भ० होवे नो० नहीं त० तथा प्रकार की वे० वेदना भ० होवे त० तथा प्रकार का पु० पुरुष जात नि० निरुद्ध प० पर्याय से सि० सिद्ध होवे जा० यावत् स० सर्व दु० दुःख का अं० अंतकरे ज० जैसे सा० वह म० मरुदेवा भ० भगवती च० चौथी अं०

सूत्र चउत्था अंतकिरिया अप्पकम्मपच्चाएयावि भवइ, सेणं मुंडे भवित्ता जाव पव्वइए संजमबहुले जाव तस्सणं णो तहप्पगारे तवे भवइ नो तहप्पगारा वेयणा भवइ, तहप्पगारे पुरिसजाए निरुद्धेणं परियाएणं सिज्झइ जाव सव्वदुक्खाण मंतं करेइ जहा सा

भावार्थ ही बहुत कालतक संजम पालकर सिद्ध होवे यावत् सब दुःखों का अंत करे सनत्कुमार चक्रवर्तीवत् सात सो वर्ष पर्यंत शरीर में कुष्ट रोग रहा और एक लक्ष वर्ष पर्यंत दीक्षा पालकर मोक्ष पधारे अब चौथी अंत क्रिया कहते हैं यह क्रिया अल्प कर्मवाले को होती है. वह दीक्षा लेकर संयमपना पाले परंतु उनको उक्त प्रकार का तप नहीं करना पडता है. और थोडे समय में ही सिद्ध होजाते हैं. मरुदेवा मातावत्. प्रथम तीर्थंकर श्री ऋषभदेव की माता को विना तप किये हाथी के होदे पर केवल ज्ञान प्राप्त हुवा और

शब्दार्थ अंतक्रिया ॥१॥ च० चार रु० वृक्ष उ० ऊंचे ए० कितनेक उ० ऊंचे उ० ऊंजे ए० कितनेक प० नीचे प० नीचे ए०कितनेक उ० ऊंचे प०नीचे ए०कितनेक प० नीचे ए० ऐसे च० चार पु० पुरुषजात उ०ऊंचे ए० कितनेक उ०ऊंचे त०तैसे जा०यावत् प०नीचे ए०कितनेक प० नीचे च०चार रु०वृक्ष उ०ऊंचे ए० कितनेक उ० ऊंचे प० परिणत उ० ऊंचे ए०कितनेक प०नीचे प०परिनत प० नीचे ए०कितनेक उ०ऊंचे प०परिनत प०नीचे ए०कितनेक प०नीचे प० परिणत ए० ऐसे च० चार पु० पुरुष जात उ० ऊंचे ए० कितनेक उ०

सूत्र मरुदेवा भगवई । चउत्था अंतकिरिया ॥ १ ॥ चत्तारि रुक्खा प० तं० उन्नएणाम-मेगेउन्नए, उन्नए णाममेगेपणए, पणएणाममेगेउन्नए, पणएणाममेगेपणए । एवमेव चत्तारि पुरिसजाया प० तं० उन्नएणाममेगेउन्नए, तहेव जाव पणएणाममेगेपणए । चत्तारि रुक्खा प० तं० उन्नएणामंएगेउन्नएपरिणए, उन्नए नाम मेगेपणए परिणए, पणए नामंएगे उन्नए परिणए, पणएणामंएगे पणएपरिणए ।

भावार्थ आयुः पूर्ण करके मोक्ष पधारे यह चौथी अंत क्रिया ॥ १ ॥ भगवंतने चार प्रकार के वृक्ष कहे हैं एक वृक्ष द्रव्य से उत्तम और भाव से भी उत्तम चंदनादि एक द्रव्य से उत्तम और जाति से नीच सो नि-म्बादि और एक द्रव्य से नीचा और भाव से उत्तम सो एलायची आदि, एक द्रव्य से भी नीचा और भाव से भी नीचा वेल प्रमुख. वृक्ष की तरह पुरुष की भी चार जाति कही एक पुरुष द्रव्य से उत्तम और भाव से भी उत्तम सो साधु श्रावक, एक पुरुष द्रव्य से ऊंच और भाव से नीच म्लेच्छ राजादिक, एक

शब्दार्थ ऊंचे प० परिनत च० चारभंग च० चार रु० वृक्ष उ० ऊंचे ए० कितनेक उ० ऊंचे रू० रूप त० तैसे च० चारभांगा ए० ऐसे च० चार पु० पुरुष जात उ० ऊंचे च० चार पु० पुरुष जात उ० ऊंचे ए० कित-

सूत्र एवमेव चत्तारिपुरिसजाया प० तं० उन्नए णाममेगेउन्नए परिणए चउभंगो। चत्तारिरुक्खा प० तं० उन्नए णाममेगेउन्नए रूवे, तहेव चउभंगो। एवमेव चत्तारिपुरिसजाया प० तं० उन्नएणामं ४ । चत्तारिपुरिसजाया प० तं० उन्नए णाममेगे उ-

भावार्थ पुरुष द्रव्य से नीच और भाव से नीच चांडालादि और एक पुरुष द्रव्य से नीच और भाव से ऊंच सो नीच जाति का धर्म में प्रवर्ता हुवा पुरुष. और चार प्रकारके वृक्ष रस आश्रित कहते हैं. एक वृक्ष द्रव्य से उत्तम और रस से भी उत्तम आम्रादि एक द्रव्य से ऊंचा और रस से नीचा निम्बादि एक द्रव्य से नीचा और रस से नीचा अर्कादि और द्रव्य से नीचा और रस से ऊंचा द्राक्षादि. इसी दृष्टांत से चार पुरुष की जाति कही. एक पुरुष द्रव्य से ऊंचा भाव से भी ऊंचा राजादि दीक्षा लेकर ज्ञानी बने सो, एक पुरुष द्रव्य से उत्तम और भाव से नीच कुकर्म करनेवाले राजादि, एक पुरुष द्रव्य से नीच और भाव से भी नीच म्लेच्छादि एक पुरुष द्रव्य से नीच और भाव से ऊंच सो कनिष्ट जातिवाला ज्ञानादि गुण संपन्न बने सो. और भी चार प्रकारके वृक्ष रूप आश्रित कहे, एक वृक्ष द्रव्य से और रूप से ऊंच आम्रादि, एक वृक्ष द्रव्य से ऊंच रूप से हीन ताडादि एक द्रव्य से हीन और रूप से हीन केरादि

नेक उ० ऊंचे म० मनवाले उ० ऊंचे ए० ऐसे सं संकल्प प० प्रज्ञा दि० दृष्टि सी० शीलाचार व० व्यवहार प० पराक्रम में ए० कितनेक पु० पुरुष जात प० प्रतिपक्ष ण० नहीं हैं ॥ २ ॥ च० चार रु० वृक्ष

ऽएमणे, उन्न० । एवं संकप्पे, पन्ने, दिट्ठी, सीलाचारे ववहारे, परक्कमे, एगे पुरिसजाए पडिवक्खो णत्थि ॥ २ ॥ चत्तारिरुक्खा प० तं० उज्जुणाममेगेउज्जु, उज्जुणाममेगे

और एक द्रव्य से नीचा और रूप से ऊंचा गुलाबादि. ऐसे ही चार प्रकारके पुरुष कहे हैं एक द्रव्य से ऊंच कुल का और रूप से सुंदराकार एक पुरुष द्रव्य से ऊंच कुल का रूप से कुरूप एक पुरुष द्रव्य से भी नीच और रूप में भी कुरूप और एक पुरुष द्रव्य से हीन और रूप से अच्छा. यह गृहस्थ आश्रि कहा. अब साधु के संबंध में ही यह दृष्टांत कहते हैं. एक साधु का भेष भी अच्छा और आचार भी अच्छा गौतम स्वामीवत् एक साधु का भेष अच्छा परंतु आचार खराब निन्हवादि. एक साधु का भेष भी खराब और आचार भी खराब पाखंडी और एक साधु का भेष खराब और आचार अच्छा अम्बड तापसादि. चार भांगे विचार पर उतारना एक का विचार अच्छा और कर्तव्य भी अच्छा वगैरह. चार भांगे प्रज्ञा के सुबुद्धि और अच्छे कर्तव्य करनेवाले, दृष्टि पर चार भांगे सम्यग् दृष्टि सम्यगाचारी सीलाचारके चार भांगे आचार और विचार दोनों अच्छे, व्यवहार पर के चार भांगे व्यवहार शुद्ध और निश्चय शुद्ध, पराक्रम पर चार भांगाओं अच्छे कार्य में पराक्रम फोडनेवाले और खराब कार्य में पराक्रम फोडनेवाले

शब्दार्थ

उ० ऋजु ए० कितनेक उ० ऋजु ए० कितनेक वं० वांके च० चारभांगा ए० ऐसे च० चार पु० पुरुष जात उ० ऋजु ए० कितनेक उ० ऋजु ए० ऐसे ज० जैसे उ० ऊंचे प० नीचे ग० जानना त० तैसे उ० ऋजु वं० वांके में भा० कहना जा० यावत् प० पराक्रम ॥ ३ ॥ प० प्रतिमा प० युक्त अ० साधु को क० कल्पता है च० चार भा० भाषा भा० बोलने को जा० याचनी पू० पूछनी

सूत्र

बंके, चउभंगो । एवमेव चत्तारिपुरिसजाया प० तं० । उज्जुणामं एगेउज्जु ४ एवं जहा उभयपणएहिं गमो तहा उज्जुवंकेहिं वि भाणियव्वो, जाव परक्कमे, ॥ ३ ॥ पडिमापडिवन्नस्सणं अणगारस्स कप्पंति चत्तारिभासाओ भासित्तए तं० जायणी,

भावार्थ

ये सब भांगाओं भिन्न २ पुरुष के संबंध में कहना ॥ २ ॥ श्री भगवंतने चार प्रकार के वृक्ष फरमाये १ एक वृक्ष द्रव्य से सरल और भाव से भी सरल अर्थात् उचित फल देनेवाले. २ एक वृक्ष द्रव्य से सरल और भाव से वक्र विपरीत फल देनेवाले ३ एक द्रव्य से वक्र और भावसे भी वक्र और एक द्रव्य से वक्र और भाव से सरल. ऐसे ही १ एक पुरुष जाति का ऊंचा और स्वभाव का सरल २ एक पुरुष जाति का ऊंचा और स्वभाव का खराब ३ एक जाति का हीन और स्वभाव का भी हीन और ४ एक पुरुष जाति का हीन और स्वभाव का सरल. ऐसे ही सब ऋजु और वक्र के चारों भांगे पराक्रम तक कह देना. ॥ ३ ॥ पडिमा धारी साधु को चार प्रकार की भाषा बोलना कल्पता है १. याचनी आहा-

शब्दार्थ

अ० आज्ञा केलिये पु० पूछने वाले को वा० उत्तरदेने केलिये च० चार भा० भाषा जात स० स० सत्य ए० एक भा० भाषा जात बी० दूसरी मो० मृषा त० तीसरी स० सत्य मृषा चं० चौथी अ० व्यवहार ॥ ४ ॥ च० चार व० वस्त्र सु० शुद्ध ए० कितनेक सु० शुद्ध सु० शुद्ध ए० कितनेक अ० अशुद्ध अ०

सूत्र

पुच्छणी, अणुन्नवणी, पुट्ठस्स वागरणी। चत्तारिभासजाया प० तं० सच्चमेगं भासजायं बीइयं मोसं तइयं सच्चामोसं, चउत्थं असच्चमोसं ॥४॥ चत्तारिवत्था प० तं० सुद्धेणामं एगेसुद्धे, सुद्धेणामं एगेअसुद्धे, असुद्धेनामं एगेसुद्धे असुद्धे णाममेगे असुद्धे । एवमेव चत्तारि

भावार्थ

रादि ग्रहण करने को गृस्थके वहा जाना होवे तब बोले कि इसमें से मुझे कुच्छ देवोगे. २ पुच्छनी सो किसी से मार्ग का पूछना या गुरु से सूत्रार्थ का पूछना. ३ अणुन्नवणी सो अवग्रह की आज्ञा देना. ४ कोई अर्थादि पूछे जिस का उत्तर देना सो पृष्ट व्याकरण. भाषा के मुख्य चार भेद कहे हैं. १ सत्य भाषा, २ मृषा भाषा, ३ सत्य मृषा और ४ व्यवहार भाषा ॥ ४ ॥ चार प्रकारके वस्त्र १ शुद्ध तंतु से बना हुवा और मल रहित, २ एक शुद्ध तंतु से बना हुवा परंतु मलिन ३ एक अशुद्ध तंतु से बना हुवा और मलिन ४एक अशुद्ध तंतु से बना हुवा परंतु धुपकर स्वच्छ बना हुवा ऐसे ही चारों भांगाओं पुरुष पर उतारना १ शुद्ध जाति में उत्पन्न हुवे और शीलाचार पालनेवाले, शुद्ध जाति में उत्पन्न हुवे और कुशील सेवने

शब्दार्थ

अशुद्ध ए०कितनेक सु० शुद्ध अ०अशुद्ध ए० कितनेक अ०अशुद्ध ए०ऐसे च०चार पु०पुरुष जात सु०शुद्ध ए० कितनेक सु०शुद्ध च०चारभांगा ए०ऐसे प०परिनतरूपमें व०वस्त्र स०सप्रतिपक्ष॥५॥ च०चार पु०पुरुषजात सु० शुद्ध ए० कितनेक सु० शुद्धमनवाले च० चारभांगा ए० ऐसे सं० संकल्प में जा० यावत् प० पराक्रम में ॥ ६ ॥ च० चार सु० पुत्र अ० अतिजात अ० अनुजात अ० अपजात कु० कुलांगार ॥ ७ ॥ च० चार

सूत्र

पुरिसजाया प० तं० सुद्धेणामं एगेसुद्धे चउभंगो । एवं परिणयरूवे वत्था सपडिवक्खा ॥ ५ ॥ चत्तारि पुरिसजाया प० तं० सुद्धेणामं एगे सुद्धमणे चउभंगो । एवं संकप्पे जाव परक्कमे ॥ ६ ॥ चत्तारिसुया प० तं० अइजाए, अणुजाए, अवजाए, कुलिंगाले ॥ ७ ॥ चत्तारि पुरिस जाया प० तं० सच्चेणामं एगेसच्चे सच्चे णाममेगे

भावार्थ

वाले, ३ अशुद्ध जाति में उत्पन्न हुवे और कुशील सेवनेवाले तथा ४ अशुद्ध जाति में उत्पन्न हुवे शीलाचार पालनेवाले. इस तरह रस रूप के दृष्टांत वृक्ष के आश्रि कहना ॥ ५ ॥ चार प्रकार के पुरुष फरमाये शुद्ध जाति और शुद्धमन, शुद्धजाति अशुद्ध मन अशुद्ध जाति शुद्ध मन, अशुद्ध जाति अशुद्ध मन. ऐसेही संकल्पसे लगाकर पराक्रमतक सब भांगाओं अलग२ कहना ॥६॥ भगवंतने चार प्रकारके सूत (पुत्र) कहे. १ अतिजात सो पिता की अपेक्षा से संपदा में अधिक होवे भरत की जैसे, २ अनुजात पिता जैसी ऋद्धि समृद्धिवाला, कौणिकवत् ३ अपजात सो पिता की सम्पदा से हीन उदमन का पुत्र अभीचकुमार और ४ कुलांगार सो दुर्योधन जैसा ॥ ७ ॥ चार प्रकार की पुरुष जाति कही. १ एक पुरुष सत्य प्रतिज्ञा का पालने

शब्दार्थ

पु०पुरुष जात स०सच्चे ए०कितनेक स० सच्चे स०सच्चे ए०कितनेक अ० जुठे ए० ऐसे प०परिनत जा०यावत् प० परक्रम में ॥ ८ ॥ च० चार व० वस्त्र सु०शुद्ध कितनेक सु० शुद्ध सु० शुद्ध ए० कितनेक अ०अशुद्ध च० चारभांगा ए० ऐसे च० चार पु० पुरुष जात सु० पवित्र ए० कितनेक सु० पवित्र च० चारभांगा ए० ऐसे ज० जैसे सु० शुद्ध वस्त्र में भ० कहा त० तैसे सु० पवित्र का जा० यावत् प०पराक्रम में ॥९॥

सूत्र

असच्चे. (४) एवं परिणए जाव परक्कमे ॥ ८ ॥ चत्तारि वत्था प० तं० सुईणामंएगेसुई, सुईणामं एगे असुई चउभंगो । एवमेव चत्तारि पुरिसजाया प० तं० सुईणामं एगेसुई,चउभंगो । एवं जहेव सुद्धेणं वत्थेणं भणियं तहेव सुइणावि जाव परक्कमे ॥९॥चत्तारि कोरवा,प० तं० अंबपलंबकोरवे तालपलंब कोरवे वल्लिपलंब कोरवे,मिंढविसाण

भावार्थ

वाला अर्थात् द्रव्य से सच्चा और भाव से भी सच्चा सत्य संयम का पालनेवाला. २ द्रव्य से सत्य और भाव से असत्य. ३ द्रव्य से असत्य और भाव से सत्य ४ द्रव्य से असत्य और भाव से भी असत्य. ये चार भांगाओं प्रज्ञा, दृष्टि, शील, व्यवहार, और पराक्रमतक सब कहदेना ॥ ८ ॥ चार प्रकार के वस्त्र कहे हैं. एक वस्त्र द्रव्य से शुद्ध और भाव से भी शुद्ध एक द्रव्य से पवित्र और भाव से मलिन यों चार भांगा वस्त्र पर कहना. वैसे ही चारों भांगाओं पुरुष पर उतारना. एक पुरुष शरीर से पवित्र और भाव से पवित्र ऐसे सब भांगाओं वस्त्र जैसे कहना यावत् पराक्रमतक सब भांगाओं जानना. ॥ ९ ॥ चार

शब्दार्थ

च० चार को० कुंपल अं० आंबे के प० फलकी को० कुंपल ता० तालके प० फलकी को० कुंपल व० वेल के प० फलकी को० कुंपल मिं० मेंढे के वि० शृंग के को० कुंपल पूववत् ॥ १० ॥ च० चार घु० कीडे त० त्वचाखाने वाले छ० छालखाने वाले क० काष्ठखाने वाले सा० सारखाने वाले ए० ऐसे च० चार भि० भिक्षाचर त० त्वचाखाने वाले समान जा० यावत् सा० सारखाने वाले समान त० त्वचाखाने

मूल सूत्र

कोरवे एव मेव चत्तारि पुरिसजाया प० तं० अंबपलंबकोरवसमाणे, तालपलंबकोरवसमाणे वल्लिपलंब कोरव समाणे मिंढविसाण कोरव समाणे ॥ १० ॥ चत्तारि घुणा प० तं० तयक्खाए छल्लिखाए, कट्ठखाए, सारखाए । एवमेव चत्तारि भिक्खाया प० तं० तयक्खाय समाणे, जाव सारखाय समाणे तयक्खाय समाणस्स-

भावार्थ

प्रकारकी कूंपल फरमाई. १ आम्बा की कूंपल, २ ताल वृक्ष की कूंपल, ३ वेल के फल की कूंपल, ४ और बकरे के शृंग समान वनस्पति की कुंपल ऐसे ही चार प्रकारके पुरुष फरमाये. आम्र फल समान अर्थात् जिस की सेवा करने से उचित काल में फल मिले, २ ताड के कूंपल समान जिस की सेवा करने से सेवक को कष्ट मिले, ३ जो पुरुष कष्ट विना सेवक को बहुत धनादि देवे सो वेल प्रलम्ब कुम्पल समान ४ जिस पुरुष की सेवा करने से मिष्ट वचन बोले परंतु कुच्छ भी देवे नहीं सो मिंढ विषाण कुम्मल समान ॥ १० ॥ चार प्रकारके घुण (काष्ट के कीडे) कहे हैं. एक बाहिर की त्वचा खानेवाला,

शब्दार्थ

वोल स० समान भि० भिक्षाचर को सा० सारखाने वाले समान त० तप प० प्ररूपा सा० सारखान वोल स० समान भि० भिक्षाचर को त० त्वाखाने वाले स० समान त० तप प० प्ररूपा छ० छालखाने वाले स० समान भि० भिक्षाचर को क० काष्टखाने वाले समान त० तप प० प्ररूपा क०काष्टखाने वाले समान भि० भिक्षाचर को छ० छालखाने वाले स० समान त० तप प० प्ररूपा ॥ ११ ॥ च० चार प्रकार की

सूत्र

णं भिक्खागस्स सारखायसमाणे तवे पन्नत्ते सारखायसमाणस्सणं भिक्खागस्स तयक्खायसमाणे तवे पन्नत्ते छल्लिखाय समाणस्सणं भिक्खागस्स कट्ठखायसमाणे तवे पन्नत्ते कट्ठखाय समाणस्सणं भिक्खागस्स छल्लिखाय समाणे तवे पण्णत्ते ॥ ११ ॥

भावार्थ

एक छाल खानेवाला, एक काष्ट खानेवाला, और एक सार खानेवाला. इसी तरह चार भिक्षाचर कहे हैं, एक भिक्षु आयंबिल प्रमुख तप करनेवाला और जो आहार मिले उस से संतोष माननेवाला साधु त्वचा खानेवाला घुण सरिखा जानना, अल्पाहारी भिक्षुक छाल खानेवाला घुण समान है, नीवि प्रमुख आहार करनेवाला साधु काष्ट खानेवाला घुण समान है, सब विगय का त्याग करनेवाला साधु सार खानेवाला घुण समान है, प्रथम भेदवाले साधु का प्रधान तप दूसरा भेदवाले का अप्रधान तप, तीसरे का प्रधान और चौथे का भी प्रधान ॥ ११ ॥ भगवंतने चार प्रकार की तृण वनस्पति कही. गेहूं जुवार आदि

शब्दार्थ

त० तृण वनस्पति का० काया प० प्ररूपी अ० अग्रबीज मू० मूलबीज पो० पर्वबीज खं० स्कन्धबीज १२॥ च० चार ठा० स्थान से अ० तुरत का उ० उत्पन्न णे० नारकी णि० नरक में से इ० इच्छे मा०मनुष्य लोक में ह० शीघ्र आ० आने को णो० नहीं सं० समर्थ होवे ह० शीघ्र आ० आने को अ० तुरत का उ० उत्पन्न णे० नारकी णि० नरक में से स० उत्पन्न हुई वे० वेदना वे० वेदते इ० इच्छे मा० मनुष्यलोकमें ह० शीघ्र आ०आनेको णो०नहीं सं०समर्थ होवे ह०शीघ्र आ०आनेको अ०तुरतका उ०उत्पन्न णे०नारकी णि०नरकमें णि० नरक पाल से भु० वारंवार अ० प्रहार पडने से इ० इच्छे मा० मनुष्य लोक में ह० शीघ्र आ० आने को नो० नहीं सं० समर्थ होवे ह० शीघ्र आ० आने को अ० तुरत उ० उत्पन्न णे० नारकी णि०नरकका

सूत्र

चउव्विहा तणवणस्सइ काइया पण्णत्ता त० अग्गबीया, मूलबीया, पोरबीया, खंधबीया ॥ १२ ॥ चउहिं ठाणेहिं अहुणोववण्णे णेरइए णिरयलोगंसि इच्छेजा माणुसंलोगं हव्वमागच्छित्तए णो चेवणं संचाएइ हव्वमागच्छित्तए । अहुणोववन्नेणेरइए णिरयलोगंसि समुब्भुयं वेयणं वेयमाणे इच्छेजा माणुसंलोगं हव्वमागच्छित्तए णोचेवणंसंचाएइ हव्वमागच्छित्तए । अहुणोववन्ने णेरइए णिरय लोगंसिणिरयपालेहिं भुजो २ अहिट्ठि-

भावार्थ

अग्रबीज, कंदादि मूल सो मूलबीज, इक्षु आदि गांठ सो पर्व बीज और वृक्ष की डाली में जो उत्पन्न होवे सो स्कन्ध बीज ॥ १२ ॥ नरक के जीव मनुष्य लोक में आने की इच्छा करे परंतु चार कारनसे

शब्दार्थ

वेदनीय क० कर्म अ० विनाक्षय हुवे अ०विनावेदे अ०विनानिर्जरे इ० इच्छे णो० नहीं सं० समर्थ होवे ए० ऐसे नि० नरक का आ० आयुष्य कर्म अ० विनाक्षय हुवे जा०यावत् णो० नहीं सं० समर्थ होवे ह० शीघ्र आ० आने को इ० इन चे०चार ठा० स्थान से अ० तुरत का उ० उत्पन्न णे० नारकी जा० यावत् णो० नहीं सं० समर्थ होवे ह० शीघ्र आ० आने को ॥ १३ ॥ क० कल्पता है णि० साध्वी को च० चार

सूत्र

जमाणे इच्छेजा माणुसंलोगं हव्वमागच्छित्तए नो चेवणं संचाएइ हव्वमागच्छित्तए ॥ अहुणोववन्ने णेरइए णिरयवेयणिज्जंसि कम्मंसि अक्खीणंसि अवेइयंसि अणिज्जिण्णंसि इच्छेजा नो चेवणं संचाएइ। एवं निरइयाओअंसि कम्मंसि अक्खीणंसि जाव नो चेवणं संचाएइ हव्वमागच्छित्तए । इच्चेएहिं चउहिं ठाणेहिं अहुणोववन्ने णेरइए जाव णो-चेवणं संचाइए हव्वमागच्छित्तए ॥ १३ ॥ कप्पंति णिग्गंथीणं चत्तारि संघाडी

भावार्थ

आसके नहीं.१ नरककी अती वेदना भोगवते,२ परमाधामी के मार से,३ नरककी वेदना भोगवने के कर्म पूरे नहीं हुवे होवे जिस से ४ नरक का जो आयुष्य बन्धा है उस का क्षय नहीं होने से ॥ १३ ॥ साध्वी को चार प्रकारकी साडी पहिनना कल्पता है. दो हाथ के विस्तारवाली, एक तीन हाथ के विस्तार-वाली, दो और चार हाथ के विस्तारवाली एक उस में से दो हाथ वाली उपाश्रय में ओढे, तीन हाथ की

शब्दार्थ

सं० सारी था०पहिनने को प० छोडने को ए० एक दु० दोहाथकी वि० विस्तार की दो० दो ति० तीन हाथ वि० विस्तार वाली ए० एक च० चारहाथ वि० विस्तार की ॥ १४ ॥ च० चार ज्झा० ध्यान अ० आर्तध्यान रो० रौद्रध्यान ध० धर्मध्यान सु० शुक्लध्यान अ० आर्तध्यान च० चार प्रकार का अ० अमनोज्ञ सं० संयोग सं० प्राप्त हुवे त० उसका वि० वियोग स० होवे स० मनोगत भ० होवे म० मनोज्ञ सं० संयोग सं० प्राप्त हुवे त० उसका अ० अवियोग स० होते स० मनोगत

सूत्र

ओ धारित्तए वा परिहरित्तए वा तं० एगं दुहत्थवित्थारं, दो तिहत्थ वित्थाराओ एगं चउहत्थवित्थारं ॥ १४ ॥ चत्तारिज्झाणा प० तं० अट्टे झाणे, रोद्दे झाणे, धम्मे-झाणे, सुक्के झाणे । अट्टे झाणे चउव्विहे प० तं० अमणुन्नसंपओग संपउत्ते त-स्स विप्पओगसतिसमण्णागए यावि भवइ, मणुन्नसंपओग संपउत्ते तस्सअविप्पओग

भावार्थ

दो जिस में से एक गोचरी जाते और दूसरी स्थंडिल जाते और एक चार हाथवाली समोसरण में जाते पहिने ॥ १४ ॥ भगवंतने चार प्रकार के ध्यान कहे हैं. १ चिन्ता से मुहूर्तमात्र मन स्थिर करे सो आर्त ध्यान, २ हिंसादि क्रिया सहित ध्यान सो रौद्र ध्यान ३ श्रुत चारित्र सहित सो धर्म ध्यान और ४ अष्ट कर्म को शोधना सो शुक्ल ध्यान. इस में से आर्त ध्यान के चार भेद १ अमनोज्ञ [अप्रिय] वस्तु की प्राप्ति हुइ और उस के लिये चिन्ता करे कि इस का शीघ्र मेव नाश होवो. २ मनोज्ञ [प्रिय] शब्दादि

शब्दार्थ

भ०होवे आ०रोगका संयोग सं०प्राप्त होते त०उसका वि०वियोग स०होते स०मनोगत भ०होवे प०भोगवा हुवा का०काम भोग सं० संयोग सं० प्राप्त होते त०उसको अ० अवियोग स० होते स० मनोगतभ०होवे अ०आ-आर्तध्यान के च० चार ल० लक्षण कं० आक्रंद करना सो० शोक करना ति० रोना प० परितापनिया रो० रौद्रध्यान च० चार प्रकार का० हिं० हिंसानुबंधी मो० मृषानुबंधी ते० स्तेनानुबंधी सं० संरक्षणानुबंधी रो० रौद्रध्यान के च० चारलक्षण ओ० ऊष्णदोष ब० बहुल दोष अ० अज्ञान दोष अ० आमरणांत दोष

सूत्र

सति समण्णागए यावि भवइ आतंकसंपओग संपउत्ते तस्स विप्पओ-गसति समण्णागए यावि भवइ,परिझुसियकामभोगसंपओगसंपउत्ते तस्स अविप्पओगसति समण्णागए यावि भवइ । अट्टस्सणं झाणस्स चत्तारि लक्खणा प० तं० कंद णया, सोयणया, तिप्पणया, परिदेवणया रोद्दे झाणे चउव्विहे प० तं० हिंसाणुबंधि,

भावार्थ

वस्तु की प्राप्ति हुई अरै उस के लिये विचार करे इस का वियोग मुझे कदापि होवो नहीं. ३ आतंकरोग का संप्रयोग होते उस का नाश की चिन्तवना करे अर्थात् यह रोग कब मीटेगा. भोगवे हुवे काम भोगोंका अविनाश चिन्तवे. इस ध्यान के चार लक्षण १ आक्रन्द शब्द करके रोने से, दीनता से शोच करने से, अश्रु गिराने से, वारंवार दुःख का कथन करने से. दूसरा रौद्र ध्यान उस के चार भेद १ जीव वधकी चिन्तवना करनी सो हिंसानुबन्धी, २ मृषा बोलना सो मृषानुबन्धी, अन्य का द्रव्य हरण करने की इच्छा

शब्दार्थ

ध० धर्मध्यान च० चार प्रकार का च० चार प०प्रतिहार प० प्ररूपे आ० आज्ञा विजय अ० अपाय विजय वि० विपाक विजय सं० संठाण विजय ध० धर्मध्यान के च० चार ल० लक्षण आ० आज्ञारुचि णि० निसर्गरुचि सु० सूत्ररुचि अ० अवगाढरुचि ध० धर्मध्यान के च० चार आ० आलंबन वा० वांचना प०

सूत्र

मोसाणुबंधि, तेणाणुबंधि, संरक्खणाणुबंधि । रोद्दस्सणं झाणस्स चत्तारि लक्खणा प० तं० ओसन्नदोसे, बहुलदोसे अन्नाणदोसे, आमरणांतदोसे (२) धम्मेज्झाणे चउव्विहे चउपडोयारे प० तं० आणाविजए,अवायविजए, विवागविजए, संठाणविजए.

भावार्थ

रखनी सो स्तेनानुबन्धी और धनादिक रखने को बुरा चिन्तवना सो सारक्षणानुबन्धी. इस के चार लक्षण हिंसादिक में आसक्तपना, हिंसादिक में बहुत आसक्तपना अज्ञानपना में धर्मबुद्धि से हिंसा करे, और मरणांत लग पश्चाताप करने की हिंसा में प्रवर्ते. धर्मध्यान के चार भेद जिन भगवान् की आज्ञा का सत्य भावसे चिन्तवन करना सो आज्ञा विजय, रागद्वेषसे जीव को कष्ट होने की चिन्तवना सो अपाय विजय, शुभाशुभकर्मसे शुभाशुभ फलकी प्राप्ति होने कीचिन्तवनासो विपाक विजय और लोकके संठाणकी चिन्तवना करनी सो संठाण विजय. इस के चार लक्षण. जिन प्रवचन में रुचि होना सो आज्ञा रुचि, स्वभाव से धर्म की रुचि होवे सो निसर्ग रुचि, सूत्र सुनने की रुचि होना सो सूत्र रुचि और द्वादशांग का पठन करना जानना सो अवगाढ रुचि. धर्म ध्यान करनेवाले को चार अवलम्बन. सूत्र अर्थ को वाचना, सुन-

शब्दार्थ

सूत्र

भावार्थ

पूछना प०फेरना अ०विचारना ध०धर्मध्यान के च०चार अ०अनुप्रेक्षा ए० एकत्वानुप्रेक्षा अ० अनित्यानुप्रेक्षा अ०असरणानुप्रेक्षा सं० संसारानुप्रेक्षा सु० शुक्लध्यान च०चार प्रकार का च०चार प्रतिहार पु०पृथक् वितर्कस विचारी ए० एकत्ववितर्क अविचारी सु० सूक्ष्म क्रिया अनिवृत्ति सु० सूक्ष्मक्रिया अप्रतिपाति सु०सुक्लध्यान

धम्मस्सणं ज्झाणस्स चत्तारिलक्खणा प० तं० आणारुई, णिसग्गरुई, सुत्तरुई, ओगाढरुई । धम्मस्सणं ज्झाणस्स चत्तारि आलंबणा प० तं० वायणा, पडिपुच्छणा, परियट्टणा, अणुप्पेहा । धम्मस्सणं ज्झाणस्स चत्तारि अणुप्पेहाओ प० तं० एगाणुप्पेहा, अणिच्चाणुप्पेहा असरणाणुप्पेहा, संसाराणुप्पेहा, सुक्केज्झाणे चउव्विहे चउप्पडो

ना सुनाना सो वांचन; उस में संदेह होने पर आचार्यादिक से पृच्छा करना सो पुछना, निर्णय वाला ज्ञान की वारंवार चिन्तवना करनी सो पर्यटणा और चिन्तवना करते सूत्रार्थ को याद करना सो अनुप्रेक्षा. धर्म ध्यान की चार अनुप्रेक्षा. मैं अकेलाहूं मेरा कोई नहीं है ऐसी एकाकी भावना भावे सो एकानुप्रेक्षा, यह संपदादि सब अनित्य है ऐसा चिन्तवना सो अनित्याणुप्रेक्षा, संसार में जन्म, मरण, व्याधि वेदनादि समय में जीव को जिन प्रवचन विना अन्य का शरण नहीं है सो अशरणाणुप्रेक्षा, संसार में जीव परिभ्रमण करते माताकी भार्या भार्या की माता या बहिन वगैरह परस्पर उत्पन्न, होते हैं सो संसाराणुप्रेक्षा शुक्ल ध्यान के चार भेद. एक ही द्रव्य की पृथग् भाव से चिन्तवना करनी सो पृथक् वितर्क सविचारी, एक ही पुद्गल को अभेद भाव से चिन्तवें सो एकत्व वितर्क अविचारी, सूक्ष्मक्रिया अर्थात् मात्र ईर्यापथिक,

शब्दार्थ के च० चार ल० लक्षण अ० व्यथारहित अ० निर्मोही वि० विवेक वि० व्युत्सर्ग सु० शुक्ल ध्यान के च० चार आ० आलंबन खं० क्षमा मो० मुक्ति मा० मृदुता अ० सरलपना सु० शुक्लध्यान के च० चार अ० अनुप्रेक्षा प० प्ररूपी अ० अनंतवत्तियानुप्रेक्षा वि० विपरीणामानुप्रेक्षा अशुभानुप्रेक्षा अ० अपायानु

सूत्र योरे प० तं० पुहत्तवियक्केसवियारी, एगत्तवियक्केअवियारी, सुहुमकिरिएअणियट्टी, समुच्छिण्ण किरिए अपडिवाई। सुक्कस्सणं ज्झाणस्स चत्तारि लक्खणा प० तं० अव्वहे, असम्मोहे, विवेगे, विउस्सग्गे। सुक्कस्सणं ज्झाणस्स चत्तारि आलंबणा प० तं० खंती मोत्ती मद्दवे अज्जवे सुक्कस्सणं

भावार्थ क्रियासे अनिवृत्ति सो सुहुम किरिया अनियट्टी और सब क्रिया रहित सलेशीपने चौदह वे गुणस्थान मे पीछा पडे नहीं सो अप्रतिपाति. यह चार भेद शुक्ल ध्यान के कहे अब इस के लक्षण कहते हैं. सब प्रकार की व्यथा पीडा रहित सो अव्वह, सब मोह रहित बनना सो असम्मोह, शरीर से आत्मा भिन्न है ऐसा विचार करना सो विवेक, और निःसंगपने शरीर का त्याग करना सो व्युत्सर्ग. चार अवलम्बन. शान्तपना सो क्षमा, निर्ममत्व पना सो मुक्ति, मृदुता रखना सो मार्दव और सरलपना सो आर्जव शुक्ल ध्यान की चार अनुप्रेक्षा इस संसार में जीवने अनंत वार परिभ्रमण किया सो अनंतवत्तियानुप्रेक्षा, इस जगत् में सब वस्तु अशाश्वती है शुभ की अशुभ होती है और अशुभ की शुभ होती है सो विपरिणामाणुप्रेक्षा. इस संसार को धिक् है क्यों कि जिस रूप का अभिमान जो कोई करता है वहीं वहां पर कीडा होता है

शब्दार्थ

प्रेक्षा ॥ १५ ॥ च० चार प्रकार की दे० देवता की ठि० स्थिति दे० देवता ए० कितनेक दे० देव-स्नातक ए० कितनेक दे० देव पु० पुरोहित ए० कितनेक दे० देवप्रज्वलन ए० कितनेक ॥ १६ ॥ च० चार प्रकार का सं० निवास दे० देव ए० कितनेक दे० देवीकी स० साथ सं० सहवास को ग० जावे दे० देव ए० कितनेक छ० त्वचावाली स्त्री की स० साथ सं० सहवास को ग० जावे छ० मनुष्य ए० कितनेक दे० देवी की स० साथ सं० सहवास को जा० जावे छ० चमडीवाले ए० कितनेक छ० मनुष्यणी की स० साथ सं०

सूत्र

झाणस्सचत्तारिअणुप्पेहाओ प० तं० अणंतवत्तियाणुप्पेहा, विपरिणामाणुप्पेहा, असुभाणुप्पेहा अवायाणुप्पेहा॥ १५॥ चउव्विहा देवाणं ठिई प० तं० देवेणामेगे, देवसिणाएणामेगे, देवपुरोहिए णामेगे, देवपज्जलणेणामेगे॥ १६॥ चउव्विहे संवासे प० तं० देवेणामेगे देवीएसद्धिं संवासं ग-च्छेज्जा, देवेणामेगे छवीए साद्धिं संवासं गच्छेज्जा, छवीणामेगे देवीए साद्धिं संवासं गच्छे-

भावार्थ

ऐसी चिन्तवना सो अशुभानुप्रेक्षा, दुःख का मूल कारण काषायों हैं ऐसी चिन्तवना करना सो अपायानु-प्रेक्षा ॥ १५ ॥ चार प्रकारसे मनुष्यवत् देवस्थिति कही है. कितनेक देवताओं राजा तुल्य विमानों के मालिक होते हैं कितनेक देवताओं स्नातक प्रधान तुल्य होते हैं, कितनेक पुरोहित के कार्य करनेवाले होते हैं और कितनेक भाट चारण की तरह देवताओं के गुणग्राम करनेवाले होते हैं ॥ १६ ॥ चार प्रकार मैथुन सेवन के कहे हैं कितनेक देवता देवी की साथ संभोग करते हैं, कितनेक त्वचावाली मनुष्यणी

शब्दार्थ सहवास को ग० जावे ॥ १७ ॥ च०चार कषाय प० प्ररूपी को० क्रोधकषाय मा० मान कषाय मा० माया कषाय लो० लोभ कषाय ए० ऐसे ने० नारकी को जा० यावत् वे० वैमानिक को च० चार प० प्रतिष्ठित को० क्रोध आ० आत्म प्रतिष्ठित प० परप्रतिष्ठित, उ० उभयप्रतिष्ठित अ० अप्रतिष्ठित ए० ऐसे णे० नारकी को जा० यावत् वे० वैमानिक को ए० ऐसे जा० यावत् लो० लोभ वे० वैमानिक को च० चार स्थान

सूत्र

जा, छवीणामेगे छवीएसद्धिं संवासं गच्छेज्जा॥ १७॥ चत्तारिकसाया प० तं०कोहकसाए माणकसाए मायाकसाए लोभकसाए। एवं नेरइयाणं जाव वेमाणियाणं। चउपइट्ठिएकोहे प० तं०आयपइट्ठिए परपइट्ठिए तदुभयपइट्ठिए अपइट्ठिए। एवंणेरइयाणंजाववेमाणियाणं,एवं

भावार्थ या तिर्यंचणी की साथ संभोग करते हैं, कितनेक छवी (चमडी) वाले मनुष्य और तिर्यंच देवी की साथ भोग करते हैं. और कितनेक मनुष्य तिर्यंच मनुष्यणी तिर्यंचणी की साथ भोग करते हैं ॥ १७ ॥ चार कषाय कही. क्रोध कषाय, मान कषाय, माया कषाय, और लोभ कषाय. यह चारों कषाय चौविसही दंडक में पाती हैं. चार स्थानक क्रोध कषाय को रहने के हैं आत्म प्रतिष्ठित क्रोध सो अपने गुन्हे से इस लोक और परलोक में कष्ट पावे, पर प्रतिष्ठित सो काठिन वचन सुनकर क्रोध उत्पन्न होवे, कुच्छ अन्य का आक्रोश और कुच्छ अपना गुन्हा से क्रोध उत्पन्न होवे सो उभय प्रतिष्ठित, किसी का विना गुन्हा क्रोध

से को० क्रोध की उ०उत्पत्ति सि० होवे खे० क्षेत्र प्रत्यय व० वस्तु प्रत्यय स० शरीर प्रत्यय उ० उपधि प्रत्यय ए० ऐसे ने० नारकी को जा० यावत् वे० वैमानिक को ए० ऐसे जा० यावत् लो० लोभ वे० वैमानिक को च०चार प्रकार का को० क्रोध अ० अनंतानुबन्धी क्रोध अ०अप्रत्याख्यानी क्रोध प०प्रत्याख्याना वरण क्रोध सं०संज्वलन क्रोध ए० ऐसे ने०नारकी को जा०यावत् वे० वैमानिक को ए०ऐसे जा० यावत् लो० लोभ वे० वैमानिक को च० चार प्रकार का को० क्रोध आ० आभोगनिवृत्तिक अ० अना-

जाव लोभे वेमाणियाणं। चउहिं ठाणेहिं कोधुप्पत्तिसिया तं० खेत्तं पडुच्च, वत्थुं पडुच्च सरीरं पडुच्च, उवहिं पडुच्च, । एवं नेरइयाणं जाव वेमाणियाणं । एवं जाव लोहे, वेमाणियाणं चउव्विहे कोहे प० तं० अणंताणुबंधिकोहे,अपच्चक्खाणकोहे, पच्चक्खाणावरणे कोहे, संजलणेकोहे, एवं नेरइयाणं जाव वेमाणियाणं । एवं जाव लोभे वेमाणियाणं

उत्पन्न होवे सो अप्रतिष्ठित. इसी तरह मान, माया, और लोभ का सब दंडकों में जानना. अब चार कारणसे चारों कषायों की उत्पत्ति होती है. क्षेत्र आश्रि, वस्तु आश्रि, शरीर आश्रि और उपाधि आश्रि. उक्त चारों कषायों के चार २ भेद कहे हैं. चार प्रकार का क्रोध अनंतानुबन्धी क्रोध जावजीवतक रहे तूटाहुवा पत्थर समान, अप्रत्याख्यानी क्रोध एक वर्ष तक रहे तालाव की तड जैसे, प्रत्याख्यानी क्रोध चार मास रहे और संज्वलन क्रोध पंदरह दिन रहे. वैसे ही मान माया और लोभ के चार २ भेद चौवीस ही

शब्दार्थ

भोग निवृत्तिक उ० उपशांत अ० अनुपशांत ए० ऐसे ने० नारकी को जा० यावत् वे० वैमानिक को ए० ऐसे जा० यावत् लो० लोभ जा० यावत् वे० वैमानिक ॥ १८ ॥ जी० जीवने च० चार स्थान से अ० आठकर्म प० प्रकृति चि० एकट्ठेकिये को० क्रोध से मा० मान से मा० माया से लो० लोभ से ए० ऐसे जा० यावत् वे० वैमानिक को ए० ऐसे चि० एकट्ठेकरते हैं ए० इन दंडकों में ए० ऐसे चि० एकचित्त करेंगे ए० ऐसे ए० इससे ति० तीन दं० दंडक ए० ऐसे उ० उपचयकिये उ० उपचय करते हैं उ० उपचय

सूत्र

चउविहे कोहे प० तं० आभोगनिव्वत्तिए, अणाभोगनिव्वत्तिए, उवसंते, अणुवसंते एवं नेरइयाणं जाव वेमाणियाणं । एवं जाव लोभे, जाव वेमाणियाणं ॥ १८ ॥ जीवाणं चउहिं ठाणेहिं अट्ठकम्मपगडीओ चिणिंसु तं० कोहेणं, माणेणं, मायाए, लोभेणं । एवं जाव वेमाणियाणं । एवं चिणंति एसदंडओ, । एवं चिणिस्संति एसदंडओ । एव मेएणं तिन्नि दंडगा ॥ एवं उवचिणींसु, उवचिणंति, च उवचिणिस्संति । बांधिंसु ३ ।

भावार्थ

दंडक में जानना. और क्रोधादिक के चार २ भेद. क्रोधादिक के फल विपाक को जानता हुवा क्रोधादि करे सो आभोगनिवार्तिक क्रोधादिक फल को नहीं जानता हुवा क्रोधादि करे सो अनाभोगनिवार्तिक, क्रोधादि उदय नहीं आये सो उपशांत और उदय आये सो अनुपशान्त. यह चौविस ही दंडक में जानना ॥ १८ ॥

शब्दार्थ

करेंगे बं० बंधे उ० उदीरे वे० वेदे णि० निर्जरे णि० निर्जरते हैं णि० निर्जरेंगे जा० यावत् वै० वैमानिक को ए० ऐसे ए० एकेक प० पद में ति० तीन २ दं० दंडक भा० कहना जा०यावत् नि० निर्जरेंगे ॥१९॥ च० चार प० प्रतिमा स० समाधि प्रतिमा उ० उपधान प्रतिमा वि० विवेक प्रतिमा वि० व्युत्सर्ग प्रतिमा

सूत्र

उदीरिंसु ३ । वेदेंसु ३ । णिज्जरेंसु णिज्जरिंति णिज्जरिस्संति । जाव वेमाणियाणमेव मेक्किक्के पदे तिन्नि २ दंडगा भाणियव्वा, जाव निज्जरिस्संति ॥ १९ ॥ चत्तारि पडिमाओ प० तं० समाधिपडिमा, उवहाणपडिमा, विवेगपडिमा, विउस्सग्गपडिमा । चत्तारिपडिमाओ प०तं० भद्दा, सुभद्दा, महाभद्दा, सव्वओभद्दा । चत्तारि पडि-

भावार्थ

चौविस ही दंडक के जीवोंने क्रोध, मान, माया और लोभ इन चारों कषायों से आठही कर्मों की प्रकृतिका संचय, विशेष संचय, बंध, वेदना, और निर्जरा की, करते हैं और करेंगे ॥ १९ ॥ भगवंतने साधुओं के लिये चार प्रकारकी प्रतिमा फरमाइ है. श्रुत चारित्र की समाधि अथवा चित्तस्वास्थ्य सो समाधि प्रतिमा, शास्त्रादि श्रवण के आदि अंत में अथवा किसी प्रकार का मांगलिक कार्य में जो तपविधि की जावे सो उपधान प्रतिज्ञा, अशुद्ध भक्त पान, वस्त्र, पात्रादि ग्रहण किया जावे सो विवेक पडिमा और सब वस्तु से ममत्व का त्याग करके कायोत्सर्ग करना सो व्युत्सर्ग प्रतिमा, और भी चार प्रकार की प्रतिज्ञा कही. एक २ दिशा में चार २ प्रहर कायोत्सर्ग करके रहे वैसे ही चारों दिशा में सोलह प्रहरतक कायोत्सर्ग

शब्दार्थ

च० चार प० प्रतिमा भ० भद्रा सु० सुभद्रा म० महाभद्र स० सर्वतोभद्र च० चार प्रतिमा खु० छोटिमोक प्रतिमा म० बडीमोक प्रतिमा ज० यवमध्य प्रतिमा व०वज्रमध्य प्रतिमा ॥२०॥ च०चार अ०आस्तिकाय अ० अजीवकाय प०प्ररूपी ध०धर्मास्तिकाय अ०अधर्मास्तिकाय आ०आकाशास्तिकाय पो०पुद्गलास्तिकाय च०चार अ०अस्तिकाय अ० अरूपिकाय ध० धर्मास्तिकाय अ० अधर्मास्तिकाय आ० आकाशास्तिकाय जी० जीवा

सूत्र

माओ प० तं० खुड्डियामोयपडिमा, महल्लियामोयपडिमा, जवमज्झा, वइरमज्झा, ॥ २० ॥ चत्तारि अत्थिकाया अजीवकाया प० तं० धम्मत्थिकाए, अधम्मत्थिकाए, आगासत्थिकाए, पोग्गलत्थिकाए, चत्तारि अत्थिकाया अरूविकाया प० तं० धम्मत्थि

भावार्थ

करके पूर्ण करे सो भद्रा प्रतिज्ञा, यह दो दिन में पूर्ण होती है. सुभद्रा प्रतिज्ञा भद्रा जैसे कहना विशेष में कठिन आसन करना. महाभद्रा पडिमावाला चारों दिशा में आठ २ प्रहर तक कायोत्सर्ग करे. यह प्रतिमा चार दिन में पूर्ण होती है. इसी तरह सर्वतो भद्र प्रतिमा जानना, और भी चार प्रकार की प्रतिज्ञा छोटी मोक पडिमा सोलह भक्त में पूर्ण होवे, बडी मोक पडिमा अठारह भक्त में पूर्ण होवे, तीसरी जव मध्य चंद्र पडिमा और वज्र मध्य चंद्र पडिमा ॥ २० ॥ चार अजीव अस्तिकाय कही. धर्मास्तिकाय चलन स्वभाव, अधर्मास्ति काय स्थिर स्वभाव, आकाशास्तिकाय अवकाशरूप और पुद्गलास्तिकाय रूपवर्णादि सहित. चार अरूपी अस्तिकाय कही. धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय, आकाशास्तिकाय, और जीवास्ति

शब्दार्थ

स्तिकाय ॥ २१ ॥ च० चार फ० फल आ० कच्चे ए० कितनेक आ० कच्चेमीठे आ० कच्चे ए० कितनेक प० पक्वमीठे प० पक्व ए० कितनेक आ० कच्चेमीठे प० पक्व ए० कितनेक प० पक्वमधुर ए० ऐसे च० चार पु० पुरुष जात आ० कच्चे ए० कितनेक आ० कच्चे मधुरफल समान ॥२२॥ च० चार प्रकार का स० सत्य का० काया का सरल भा० भाषा का सरल भा० भाव का सरल अ० अ० अविषंवादयोगी च०

सूत्र

काए, अधम्मत्थिकाए, आगासत्थिकाए जीवत्थिकाए ॥ २१ ॥ चत्तारिफला प० तं० आमेणाममेगेआममहुरे, आमेणामेगे पक्कमहुरे, पक्केणामेगे आममहुरे, पक्कणामेगे पक्कमहुरे । एवमेव चत्तारि पुरिसजाया प०तं०आमेणामेगे आममहुरफलसमाणे(४) ॥ २२ ॥ चउव्विहे सच्चे प० तं० काउज्जुययया, भासुज्जुययया, भावुज्जुययया, अवि-

भावार्थ

काय ॥ २१ ॥ चार प्रकार के फल कहे हैं. एक फल कच्चा है परंतु कुच्छ मिष्ट, एक फल कच्चा परंतु पका जैसा मिष्ट है. एक फल पका हुवा परंतु कुच्छ मधुर और एक फल पका हुवा और पक्व फल सारिखा मिष्ट. ऐसे ही चार पुरुष की जाति कही. एक की वय छोटी और अज्ञानी, एक वय में वृद्ध और अज्ञानी एक की वय छोटी और ज्ञानादि गुण युक्त और एक वय में वृद्ध और ज्ञान में भी वृद्ध ॥ २२ ॥ चार प्रकारका सत्य सो काया की सरलता, वचन की सरलता, भाव की सरलता और अविषंवाद जोग ऐसे

शब्दार्थ

चार प्रकार की मो० मृषा का० काया का झूठा भा० भाषा का झूठा भा० भाव का झूठा वि० विसंवाद योगी ॥ २३ ॥ च० चार प्रकार का प० प्रणिधान म० मनप्रणिधान व० वचन प्रणिधान का कायप्रणिधान उ० उपकरण प्रणिधान ए० ऐसे ने० नारकी को पं० पंचेन्द्रिय को जा० यावत् वे० वैमानिक को च० चार प्रकार का सु० सुप्रणिधान म० मनसुप्रणिधान जा० यावत उ० उपकरण सुप्रणिधान ए० ऐसे

सूत्र

संवायणाजोगे चउव्विहे मोसे प० तं० कायअणुज्जुययया, भासअणुज्जुययया, भावअणुज्जुययया, विसंवादणजोगे ॥ २३ ॥ चउव्विहे पणिहाणे प० तं० मणपणिहाणे, वयपणिहाणे, कायपणिहाणे, उवगरणप्पणिहाणे । एवं नेरइयाणं पंचेंदियाणं जाव वेमाणियाणं । चउव्विहे सुप्पणिहाणे प० तं० मणसुप्पणिहाणे, जाव उवगरणसुप्पणि-

भावार्थ

ही चार प्रकारका असत्य कहा है काया की वक्रता, भाषा की वक्रता, (भाव) मन की वक्रता, और विसंवाद जोग सो गवादिक को अश्वादि कहे ऐसे यद्वा तद्वा बोले ॥ २३ ॥ चार प्रकार के प्रणिधान (प्रयोग) मन प्रणिधान सो आर्त, रौद्र, धर्म ध्यानादि, वचन प्रणिधान सो सत्यासत्य का बोलना, काया प्रणिधान सो पुण्य पाप का करना और वस्त्र पात्रादि मिलाना सो उपकरण प्रणिधान. यह चारों प्रणिधान एकेन्द्रिय और विकलेन्द्रिय को छोड कर अन्य सब दंडकों में पाते हैं. इन को शुभ कार्य में प्रवर्तने से शुभ प्रणिधान कहा जाता है और अशुभ कार्य में प्रवर्तने से अशुभ प्रणिधान कहा जाता है शुभ प्रणिधान

शब्दार्थ

सं० संयमी म० मनुष्य को च० चार प्रकार का दु० दुःप्रणिधान म० मनदुःप्रणिधान जा० यावत् उ० उपकरण दुःप्रणिधान ए० ऐसे पं० पंचेन्द्रिय को जा० यावत् वे० वैमानिक को ॥ २४ ॥ च० चार पु० पुरुष जा० जात आ० आपात भद्रक ए० कितनेक णो० नहीं सं० संवास भद्रक सं० संवास भ० भद्रक ए० कितनेक णो० नहीं आ० आपात भद्रक ए० कितनेक आ० आपात भद्रक सं० संवास भद्रक

सूत्र

हाणे एवं संजयमणुस्साणवि चउव्विहे दुप्पणिहाणे प० तं० मणदुप्पणिहाणे, जाव उवगरण एवं पंचेंदियाणं जाव वेमाणियाणं ॥ २४ ॥ चत्तारि पुरिसजाया प० तं० आवायभद्दए णामेगे णोसंवासभद्दए, संवासभद्दएणामेगे णोआवायभद्दए, एगेआवायभद्दएवि; संवासभद्दएवि, एगे णोआवायभद्दए णोसंवासभद्दए । चत्तारि पुरिसजाया प० तं०

भावार्थ

मात्र संयमी को होता है और दुःप्रणिधान एकेन्द्रिय और विकलेन्द्रिय को छोड कर अन्य सब दंडक में होता है ॥ २४ ॥ चार प्रकार के पुरुष कहे हैं १ कितनेक पुरुष पाहिले मिले जब अच्छी तरह बोलते हैं और सुखकारी बनते हैं परंतु सहवास में रहें पीछे अच्छे नहीं नीकलते हैं २ कितनेक पुरुष सहवास में अच्छे होते हैं परंतु पाहिले मिलने में अच्छे नही नीकलते हैं. ३ कितनेक पाहिले मिलने में अच्छे नीकलते हैं वैसे ही सहवास में रहे पीछे भी अच्छे नीकलते हैं ४ कितनेक मिलने में भी अच्छे नहीं नीकलते हैं वैसे ही सहवास में भी अच्छे नहीं नीकलते हैं. फीर भी पुरुष की चार जाती कहते हैं. एक पुरुष अपना दोष

शब्दार्थ

ए० कितनेक णो०नहीं आ०आपात भद्रक णो०नहीं सं०संवास भद्रक च०चार पु० पुरुष जात अ० अपना ए० कितनेक व० वर्जने योग्य पा० देखते हैं णो० नहीं प० दूसरे का प० दसरे का ए० कितनेक व० वर्जने योग्य पा० देखते हैं च० चार पु० पुरुष जात अ० अपना ए० कितनेक व० वर्जने योग्य उ० उदीरते हैं णो० नहीं प० दूसरे का च० चार पु० पुरुष जात अ० अपना ए० कितनेक व० वर्जने योग्य

सूत्र

अप्पणो णामेगे वज्जं पासइ णोपरस्स, परस्स णामेगे वज्जं पासइ ४ । चत्तारि पुरिस जाया प० तं० अप्पणो णामेगे वज्जं उदीरेंति णो परस्स ४ । चत्तारि पुरिसजाया प० तं० अप्पणो णामेगेवज्जं उवसामेइ णो पररस ४ । चत्तारि पुरिस जाया प०तं०

भावार्थ

प्रमुख देखे परंतु अन्य का देखे नहीं २ एक अन्य का दोष देखे परंतु अपना दोष नहीं देखे, ३ एक अपना दोष देखे वैसे ही अन्य का दोष देखे ४ एक अपना दोष भी देखे नहीं और अन्य का दोष भी देखे नहीं. और भी चार प्रकार १ कितनेक पुरुष अपनी आत्मा का दोष प्रकाशते हैं परंतु अन्य की आत्मा का दोष नहीं प्रकाशते हैं २ कितनेक अपनी आत्मा के दोषों नहीं प्रकाशते हैं, परंतु अन्य की आत्मा के दोषों प्रकाशतें हैं ३ कितनेक अपनी आत्माके दोषों प्रकाशते हैं और अन्यके भी दोषों प्रकाशते हैं ४ कितनेक न तो अपने दोषों प्रकाशते हैं, और न अन्य के दोषों प्रकाशते हैं. और भी चार जात १ कितनेक पुरुष अपनी आत्मा के दोषों उपशमावे परंतु अन्य के नहीं, २ कितनेक अपनी आत्माक

शब्दार्थ — उ० उपशमाते हैं णो० नहीं प० दूसरे का च० चार पु० पुरुष जात अ० उठते हैं ए० कितनेक णो० नहीं अ० उठाते हैं ए० ऐसे वं० वांदते है ए० कितनेक णो० नहीं व० वंदवाते हैं ए० ऐसे स० सत्कारदेता है स० सन्मानदेता है पू० पूजता है वा०वांचनी देता है प० पूछता है वा०उत्तर देता है च० चार पु० पुरुष जात सु० सूत्रजानने वाले ए० कितनेक णो० नहीं अ० अर्थजानने वाले अ०

सूत्र — अब्भुट्ठेइणामेगे णोअब्भुट्ठावेइ ४ । एवं वंदइ णामेगे णो वंदावेइ ४ । एवं सक्कारेइ सम्माणेइ ४। पूएइ, वाएइ, पडिपुच्छइ, पुच्छइ वागरेइ ४। चत्तारि पुरिस जाया प० तं० सुत्तधरे णामेगे णो अत्थधरे, अत्थधरेणामेगे णो सुत्तधरे, एगेसुत्तधरेवि अत्थधरेवि एगेनो-

भावार्थ — दोषों उपशमावे नहीं परंतु अन्य के उपशामावे ३ कितनेक अपनी आत्मा के दोष उपशमावे और अन्यकी आत्मा के भी दोषों उपशमावे ४ कितनेक अपनी आत्मा के दोषों उपशमावे नहीं वैसेही अन्यकी आत्माके दोषों उपशमावे नहीं. और भी चारपुरुष १ कितनेक पुरुष ऐसे हैं की जो स्वयं खडे होते हैं परंतु अन्यको खडे नहीं करते हैं २ कितनेक स्वयं नहीं खडे होते हैं परंतु अन्य को खडे करते हैं ३ कितनेक स्वयं खडे होते हैं और अन्य को भी खडे करते हैं और कितनेक स्वयं खडे नहीं होते हैं और अन्य को भी खडे नहीं करते हैं. ऐसे ही वंदना सत्कार, सन्मान, पूजा, वाचना, प्रश्न पूछना तथा प्रश्न का उत्तर देने के चार २ भांगाओं जानना. १ कितनेक सत्रधर हैं परंतु अर्थधर नहीं हैं २ कितनेक अर्थधर हैं परंतु

अर्थजानने वाले ए० कितनेक णो० नहीं सु० सूत्रजानने वाले ए० कितनेक सु० सूत्र जानने वाले अ० अर्थ जानने वाले ए० कितनेक णो० नहीं सु० सूत्र जानने वाले णो० नहीं अ० अर्थ जानने वाले ॥२५॥ च० चमर के अ०असुरेन्द्र के अ० असुर कुमार राजा के च० चार लो० लोकपाल सो० सोम ज०यम व० वरुण वे० वैश्रमण ए० ऐसे व० बलेन्द्र के सो० सोम ज० यम वे० वैश्रमण व० वरुण ध० धरणेन्द्र के का० कालपाल को० कोलपाल से० सेलपाल सं० संखपाल भू० भूतानेन्द्र के का० कालपाल को०

सूत्र

सुत्तधरे णो अत्थधरे॥ २५॥ चमरस्सणं असुरिंदस्स असुरकुमाररन्नो चत्तारि लोगपाला प० तं० सोमे, जमे, वरुणे, वेसमणे; एवं बलिस्सवि सोमे जमे वेसमणे वरुणे। धरणस्स कालवाले, कोलवाले, सेलवाले संखवाले; । भूताणंदस्स कालवाले, कोलवाले संखवाले, सेलवाले, । वेणुदेवस्स चित्ते विचित्ते चित्तपक्खे विचित्तपक्खे। वे-

भाषार्थ

सूत्रधर नहीं हैं ३ कितनेक सूत्रधर हैं और अर्थधर भी हैं, और ४ कितनेक सूत्रधर भी नहीं हैं और अर्थधर भी नहीं हैं ॥२५॥ असुरकुमार के चमरेन्द्र को चार लोकपाल १ सोम, २ यम, ३ वरुण और ४ वैश्रमण, बलेन्द्र को चार लोकपाल सोम, यम, वैश्रमण. और वरुण, धरणेन्द्रको चार लोकपाल कालपाल, कोलपाल, सेलपाल और शंखपाल, भूतानेन्द्रको चारलोकपाल कालपाल कोलपाल शंखपाल और सेलपाल वेणुदेव के चार लोकपाल चित्र, विचित्र, चित्रपक्ष, विचित्रपक्ष वेणुपालको चार लोकपाल चित्र, विचित्र, विचित्रपक्ष और

शब्दार्थ

कोलपाल सं० संखपाल से० सेलपाल वे० वेणुदेव के चि० चित्र वि० विचित्र चि० चित्रपक्ष वि० विचित्र पक्ष वे० वेणुदाल के चि० चित्र वि० विचित्र वि० विचित्रपक्ष चि० चित्रपक्ष ह० हरिकांत के प० प्रभ सु० सुप्रभ भ० प्रभकान्त सु० सुप्रभकान्त ह० हरिसिंहके प० प्रभ सु० सुप्रभ सु० सुप्रभकान्त प० प्रभकान्त अ० अग्निशीर्षके ते० तेजु ते० तेजुशीख ते० तेजुकान्त ते० तेजुप्रभ अ० अग्निमानव के ते० तेजु ते० तेजुशीख ते० तेजुप्रभ ते० तेजुकान्त पु० पूर्ण के रु० रुच रु० रुचांस रु० रुचकान्त रु० रुचप्रभ व० वशिष्ठ के रु० रुच

सूत्र

भावार्थ

णुदालिस्स चित्ते विचित्ते, विचित्तपक्खे, चित्तपक्खे, । हरिकंतस्स पभे सुप्पभे पभकंते सुप्पभकंते । हरिसीहस्स, पभे सुप्पभे सुप्पभ कंते पभ कंते । आग्गिसिहस्स—तेऊ तेउसिहे, तेउकंते, तेउप्पभे । आग्गिमाणवस्स—तेऊ, तेउसिहे, तेउप्पभे, तेउकंते । पुन्नस्स—रुए, रुयंसे, रुयकंते, रुयप्पभे. । वसिट्ठस्स रुए, रुयंसे, रुय-

चित्रपक्ष. हरिकान्तको चार लोकपाल प्रभ, सुप्रभ, प्रभकान्त और सुप्रभकान्त हरिसिंह को चार प्रभ, सुप्रभ सुप्रभकान्त और प्रभकान्त. अग्निशीर्ष के चार लोकपाल तेऊ, तेऊशिख, तेऊकान्त और तेऊप्रभ अग्निमानवको चार लोकपाल तेऊ, तेऊशिख, तेऊप्रभ और तेऊकान्त. पूर्ण इन्द्र को चार लोकपाल रुच, रुचंस, रुचकान्त, रुचप्रभ. वशिष्ठ के चार लोकपाल रुच, रुचंस, रुचप्रभ और रुचकान्त. जलकान्त के चार लोकपाल जल, जलरत, जलकान्त और जलप्रभ. जलप्रभ के चार लोकपाल जल, जलरत, जलप्रभ और जलकान्त. अग्नित

शब्दार्थ

रु० रुचांस रु० रुचप्रभ रु० रुचकान्त ज० जलकांत के ज० जल ज० जलरत ज० जलकांत ज० जलप्रभ ज० जलप्रभ के ज० जल ज० जलरत ज० जलप्रभ ज० जलकांत अ० अमितगति के तु० त्वरितगति खि० क्षिप्रगति सिं० सिंहगति सी० सिंहविक्रमगति अ० अमितवाहन के तु० त्वरितगति खि० क्षिप्रगति सी० सिंहविक्रमगति सी० सिंहगति वे० वेलंब के का० काल म० महाकाल अ० अंजन रि० रिष्ट प० प्रभंजन के का० काल म० महाकाल रि० रिष्ट अं० अजंन घो० घोष के आ० आवर्त वि० वैयावर्त नं० नंदियावर्त म० महानंदियावर्त म० महाघोष के आ० आवर्त वि० वैयावर्त म० महानंदियावर्त नं० नंदियावर्त

सूत्र

प्पभे, रुयकंते । जलकंतस्स—जले, जलरए, जलकंते, जलप्पभे, । जलप्पभस्स जले, जलरए, जलप्पभे, जलकंते। अमियगइस्स—तुरियगई, खिप्पगई, सिंहगई सीहविक्कमगई, अमियवाहणस्स तुरियगई खिप्पगई सीहविक्कमगई सीहगई । वेलंबस्स—काले, महाकाले, अंजणे, रिट्ठे पभंजणस्स काले महाकाले रिट्ठे अंजणे । घोसस्स—आवत्ते, वियावत्ते, णंदियावत्ते, महाणंदियावत्ते । महाघोसस्स आवत्ते, वियावत्ते, महाणंदियाव-

भावार्थ

गत के चार लोकपाल त्वरितगति, क्षिप्रगति, सिंहगति, सिंहविक्रमगति, अमितवाहन के चार त्वरितगति, क्षिप्रगति, सिंहविक्रमगति और सिंहगति. वेलंब के चार लोकपाल काल, महाकाल, अंजन और अरिष्ट. प्रभजन के चार लोकपाल, काल, महाकाल, रिष्ट और अंजन. घोष के चार लोकपाल आवर्त, वैयावर्त, नंदियावर्त, महा नंदियावर्त, महा घोष के चार लोकपाल आवर्त, वैयावर्त, महानंदियावर्त और नंदियावर्त यह भूवनपति के बीस इन्द्र के लोकपाल के नाम कहे. शक्रेन्द्र के चार लोकपाल सोम, यम वरुण और

शब्दार्थ

स० शक्रेन्द्र के सो० सोम ज० यम व० वरुण वे० वैश्रमण ई० ईशानेन्द्र के सोम ज०यम वे० वैश्रमण व० वरुण ए० ऐसे ए० एकान्तर जा० यावत् अ० अच्युत के ॥ २६ ॥ च० चार प्रकार का वा० वायुकुमार का० काल म० महाकाल वे० वेलंब प० प्रभंजन च० चार प्रकार के देव भ० भवनवासी वा०

सूत्र

त्ते, णंदियावत्ते. सक्कस्स—सोमेजमे, वरुणे, वेसमाणे, ईसाणस्स सोमे जमे वेसमणे वरुणे। एवं एगंतरिया जाव अच्चुयस्स॥ २६॥चउव्विहा वायुकुमारा प०तं० काले,महाकाले वेलंबे, पंभजणे । चउव्विहा देवा प० तं० भवणवासी, वाणमंतरा, जोइसिया विमाणवासी

भावार्थ

वैश्रमण ईशानेन्द्र के चार लोकपाल सोम, यम, वैश्रमण और वरुण ऐसे ही अच्युतकुमारेन्द्र तक सब इन्द्रों के चार २ लोकपाल जानना ॥ २६ ॥ चार प्रकार के वायुकुमार कहे हैं काल, महाकाल, वेलंब और प्रभंजन. चार प्रकार के देव भवनपति, वाणव्यंतर, ज्योतिषी और वैमानिक ॥ २७ ॥ चार प्रकार के प्रमाण कहे हैं १ द्रव्य प्रमाण इस के दो भेद एक प्रदेश परमाणु से अनंत प्रदेश परमाणु तक का उन्मान सो प्रदेश निष्पन्न द्रव्य प्रमाण और दूसरा भाग निष्पन्न द्रव्य प्रमाण इस के पांच भेद १ धान्य का मान सेतिकादि रसमान कर्षादि २ उन्मान तुलादि, ३ अनुमान हस्तादि, ४ गणित एक आदिक, ५ प्रतिमान गुंजावल्लादि यह द्रव्यमान के भेद हुवे २ दूसरा क्षेत्र प्रमाण इस के दो भेद, १ प्रदेश निष्पन्न सो एक प्रदेश से लेकर असंख्यात प्रदेश तक जानना, विभाग निष्पन्न सो अंगुलादिक. ३ कालप्रमाण

शब्दार्थ

वाणव्यंतर जो० ज्योतिषी वि० विमानवासी ॥ २७ ॥ च० चार प्रकार का प० प्रमाण द० द्रव्य प्रमाण खे० क्षेत्र प्रमाण का० काल प्रमाण भा० भाव प्रमाण ॥ २८ ॥ च० चार दि० दिशा कुमारी म० महाऋद्धि वाली प० प्ररूपी रू० रूपा रू० रूपांसा सु० सुरूपा रू० रूपावती च० चार वि० विद्युत् कुमारी म० महाऋद्धिवाली चि० चित्रा चि० चित्रकनका से० श्रेयांसा सो० सौदामिनी ॥ २९ ॥ स० शक्रेन्द्र दे०

सूत्र

॥ २७ ॥ चउव्विहे पमाणे प० तं० दव्वप्पमाणे, खेत्तप्पमाणे, कालप्पमाणे भावप्पमाणे ॥ २८ ॥ चत्तारि दिसाकुमारीमहत्तरियाओ पण्णत्ताओ तं० रूवा, रूवंसा, सुरूवा रूवावई । चत्तारि विज्जुकुमारीमहत्तरियाओ पण्णत्ताओ तं० चित्ता, चित्तकणगा, सेयंसा, सोयामणी ॥ २९ ॥ सक्कस्सणं देविंदस्स देवरन्नो मज्झिमपरिसाए

भावार्थ

इस के दो भेद प्रदेश निष्पन्न सो एक आकाश प्रदेश अवगाह कर रहनेवाले पुद्गल की एक समय की स्थिति से लगाकर असंख्यात समय की स्थिति तक जानना. और विभाग समय सो समय आवलिकादि. ४ भाव प्रमाण सो गुणनय, संख्या, व भेद से भिन्न. जीव को ज्ञानादिगुण, प्रत्यक्षादि प्रमाण, नैगमादि नय, और संख्या सो एकादि ॥ २८ ॥ रुचक द्वीप पे रहनेवाली रूपा, रूपांसा, सुरूपा और रूपावति यह चारों प्रधान दिशाकुमारी हैं. जब तीर्थंकर का जन्म होता है तब वे वहां आती हैं और नाली छेद कर्म करती हैं. ऐसे ही रुचक द्वीप की विदिशाओं में रहनेवाली चित्रा, चित्रकनका, श्रेयांसा, और सौदामिनी

शब्दार्थ

देवेन्द्र दे० देवराजा की म० मध्यम प० परिषदा के दे० देवता की च० चार पं० पल्योपम की ठि०स्थिति ई० ईशानेन्द्र दे० देवेन्द्र दे० देवराजा की म० मध्यम प० परिषदा की दे० देवी की च० चार प० पल्योपम की ठि० स्थिति ॥ ३० ॥ च० चार प्रकार का सं० संसार द० द्रव्य संसार खे० क्षेत्रसंसार का० कालसंसार भा० भाव संसार ॥ ३१ ॥ च० चार प्राकर का दि० दृष्टिवाद प० परिकर्म सु० सूत्र पु०

सूत्र

देवाणं चत्तारिपलिओवमाइं ठिई प० ईसाणस्सणं देविंदस्स देवरन्नो मज्झिम परिसाए देवीणं चत्तारिपलिओवमाइं ठिई प० ॥ ३० ॥ चउव्विहे संसारे प० तं० दव्वसंसारे, खेत्तसंसारे कालसंसारे भावसंसारे ॥ ३१ ॥ चउव्विहे दिट्ठिवाए प० तं०

भावार्थ

नामक चार विद्युत्कुमार हैं. वे तीर्थंकरों के जन्म समयमें चारों दिशाओं में दीपक लेकरखडी रहतीहैं॥२९॥ शक्रेन्द्र की मध्यम परिषदाके देवताकी और ईशानेन्द्रकी मध्यम परिषदाके देवीकी चार पल्योपम की स्थिति कही है ॥ ३० ॥ चार प्रकारसे संसार कहा है. जीव पुद्गलोंका भ्रमण सो द्रव्य संसार, चउदह राजलोक प्रमाण सो क्षेत्र संसार, दिन रात्रि यावत् पल्योपम सागरोपम तक परिभ्रमण करना सो काल संसार, और भाव संसार सो औदायिकादि कर्म परिणाम ॥ ३१ ॥ इस संसार का स्वरूप दृष्टिवाद में है इसलिये दृष्टिवाद का स्वरूप कहते हैं. बारवा अंग दृष्टिवाद है उस के चार विभाग भगवंतने कहे हैं. परिकर्म दृष्टिवाद में सूत्र ग्रहण करने की योग्यता की उत्पत्ति संबंधि अधिकार है. सूत्र दृष्टिवाद में सर्व द्रव्य,

शब्दार्थ

पूर्वगत अ० अनुयोग० ॥ ३२ ॥ च० चार प्रकार का पा० प्रायश्चित णा० ज्ञान प्रायश्चित दं० दर्शन प्रायश्चित च० चारित्र प्रायश्चित वि० व्यक्तकृत्य च० चार प्रकार का पा० प्रायश्चित प० प्रतिसेवना सं०

सूत्र

परिकम्मेसुत्ताइं पुव्वगए,अणुजोगे। ३ २।चउव्विहे पायच्छित्ते,प० तं० णाणपायच्छित्ते दंसण-पायच्छित्ते चरित्तपायच्छित्ते वियत्तकिच्चे।चउव्विहे पायच्छित्ते प० तं० पडिसेवणा पायच्छित्ते

भावार्थ

पर्याय, नयादिक का अधिकार है, ३ पूर्वगत दृष्टिवाद में चउदह पूर्व का समावेश होता है और अनुयोग दृष्टिवाद में चारों अनुयोग का कथन है ॥ ३२ ॥ चार प्रकारके प्रायश्चित कहे हैं. १ ज्ञान प्रायश्चित सो ज्ञानाचार की आलोचना, दर्शन प्रायश्चित सो दर्शनाचार की आलोचना, चारित्र प्रायश्चित सो चारित्र की आलोचना, और चौथा व्यक्त कृत्य प्रायश्चित सो गीतार्थ की करनी सब पाप की शुद्धि करनेवाली है ऐसा जानना. और भी चार प्रकार के प्रायश्चित १ जिस कर्तव्य को किया विना नहीं चलता है और उस कोही वारंवार करना पडता है उस की आलोचना करके प्रायश्चित लेना सो प्रतिसेवना प्रायश्चित, शैय्यांतर पिंड और आधा कर्मादि दोनों दोषों एकत्र होजाय उस का प्रायश्चित सो संयोजना प्रायश्चित. एक प्रायश्चित लिया और उस में पाप कर्म किया फीर उस में प्रायश्चित्त लिया, जैसे पांच अहोरात्रिका प्रायश्चित का सेवन किया उस की शुद्धि करते फीर पच्चीस रात्रि के प्रायश्चित का सेवन किया, यों यावत् छ मासिक पर्यंत प्रायश्चित्त आवे सो आरोपना प्रायश्चित्त और पाप करके गुप्त रखा होवे फीर

शब्दार्थ

संयोजना पा० प्रायश्चित आ० आलोचना प्रायश्चित प० परिकुंचना प्रायश्चित ॥ ३३ ॥ च० चार प्रकार का काल प० प्रमाण काल अ० आयुष्य निवृत्तिकाल म० मरण काल अ० अद्धाकाल ॥ ३४ ॥ च० चार प्रकार का पो० पुद्गल प० परिणाम व० वर्णपरिणाम गं० गंधपरिणाम र० रसपरिणाम फा० स्पर्श परिणाम ॥ ३५ ॥ भ० भारत ए० ऐरवत वा० क्षेत्र के पु० पहिले प० छेल्ले व० वर्जकर म० बीचके बा० बावीस अ०

सूत्र

संजोयणा पायच्छित्ते आरोवणा पायच्छित्ते, पलिउंचणा पायच्छित्ते ॥ ३३ ॥ चउव्विहे काले प० तं० पमाणकाले, अहाउणिव्वत्तिकाले, मरणकाले अद्धाकाले॥ ३४॥ चउव्विहे पोग्गलपरिणामे प० तं० वन्नपरिणामे, गंधपरिणामे रसपरिणामे फासपरिणामे ।३५।

भावार्थ

प्रगट हुवे बाद प्रायश्चित्त देवे सो पलिकुंचना प्रायश्चित्त ॥ ३३ ॥ भगवंतने चार प्रकार के काल कहे हैं, १ समय, आवलिका, पूरव, सागरोपम, यावत् पुद्गल परावर्तन का काल को प्रमाण काल कहते हैं, २ चारों गति के जीवोंने जिस आयुष्य का बंध कियाहै उस का पूर्ण होना सो यथायुष्य निवृत्ति काल, आयुष्य का काल सो मरणकाल, और समयादि क्षेत्र कि जहां सूर्य के परिभ्रमण से समय, पल्य, घटिकादि होवे सो अद्धाकाल ॥ ३४ ॥ भगवंतने पुद्गल परिणमने के चार भेद कहे हैं १ वर्ण परिणम सो काला का पीला और पीला का काला २ गंध परिणम सो सुगंधी का दुर्गंधि और दुर्गंधि का सुगंधी बनै ३ वैसे ही रस परिणमे सो रस परिणम, और स्पर्श में परिणमे सो स्पर्श परिणम ॥ ३५ ॥ यह अजीव का परिणम

शब्दार्थ

अरिहंत भ० भगवान् चा० चारव्रत प० प्ररूपते हैं स० सर्व पा० प्राणातिपात से वे० निवृत्ति ए० ऐसे मु० मृषावाद अ० अदत्तादान स० सर्व ब० बोहिद्धदान से नि० निवृत्ति स० सर्व म० महाविदेह में अ० अरिहंत भ० भगवान् चा० चारव्रत ध० धर्म प० प्ररूपते हैं स० सर्व पा० माणातिपात से वे० निवृत्ति जा० यावत् स० सर्व ब० बोहिद्धदान से वे० निवृत्ति ॥३६॥ च० चार दु० दुर्गति णे० नरक दुर्गति ति०

सूत्र

भरहेरवएसुणं वासेसु पुरिमपच्छिमवज्जा मज्झिमगा बावीसं अरहंता भगवंता चाउज्जामं धम्मं पन्नविंति तं० सव्वाओ पाणाइवायाओ वेरमणं एवं मुसावायाओ, अदिन्नादाणाओ, सव्वाओ बहिद्धादाणाओ वेरमणं॥ सव्वेसुणं महाविदेहेसु अरहंता भगवंता चाउज्जामं धम्मं पन्नवयंति तं० सव्वाओ पाणाइवायाओ वेरमणं जाव सव्वाओ बहिद्धादाणाओ वेरमणं ॥ ३६ ॥ चत्तारिदुग्गईओ प० तं० णेरइयदुग्गई, तिरिक्खजोणियदुग्गई मणु-

तृतीय वर्णाङ्क सूत्र

भावार्थ

कहा अब जीव का परिणाम कहते हैं. भरत और ऐरवत क्षेत्र में पाहिले और छेले तीर्थंकर को छोडकर बीच के बाईस तीर्थंकर चार महाव्रत रूप धर्म प्ररूपते हैं १. सर्वथा प्रकार से प्राणातिपात से निवर्तना, सर्वथा प्रकारसे मृषावाद से निवर्तना, सर्वथा प्रकार से अदत्तादान से निवर्तना, और सर्वथा प्रकारसे सर्व बहिगण [मैथुन परिग्रह] से निवर्तना. ऐसे ही महाविदेह के अरिहन्त तीर्थंकर उक्त चार महाव्रतरूप धर्म प्ररूपते हैं ॥ ३६ ॥ चार दुर्गति कही नरक दुर्गति, तिर्यंच योनि की दुर्गति, मनुष्य की दुर्गति और

शब्दार्थ

ति० तिर्यंचयोनि दुर्गति० म० मनुष्यदुर्गति दे० देवदुर्गति च० चार सु० अच्छीगति सि० सिद्धिसुगति दे० देवसुगति म० मनुष्यसुगति सु० अच्छाकुल में उत्पत्ति ॥ ३७ ॥ प० प्रथम समय का जि० जिनको च० चार क० कर्म खी० क्षय भ० होवे तं० वह णा० ज्ञानावरणीय दं० दर्शनावरणीय मो० मोहनिय अं० अंतराय उ० उत्पन्न णा० ज्ञान दं० दर्शन ध० धारण करने वाले अ० अरिहंत जि० जिन के० केवली च० चार क० कर्म वे० वेदते हैं वे० वेदनीय आ० आयुष्य णा० नाम गो० गोत्र पं० प्रथम समय का

सूत्र

स्सदुग्गई, देवदुग्गई । चत्तारि सोग्गईओ प० तं० सिद्धिसोग्गई, देवसोग्गई मणुयसोग्गई, सुकुले पच्चायाई ॥ ३७ ॥ पढम समय जिणस्सणं चत्तारि कम्मंसा खीणा भवंति तं० णाणावरणिज्जं, दरिसणावरणिज्जं, मोहणिज्जं, अंतराइयं । उप्पन्ननाणदंसणधरेणं अरहा जिणे केवली चत्तारि कम्मंसे वेदेंति तं० वेयणिज्जं,

भावार्थ

देव की दुर्गति [किल्विषी देव की अपेक्षा से] ऐसे ही चार अच्छी गति कही. सिद्ध की सुगति, मनुष्य सुगति, देव सुगति, और अच्छे कुल में उत्पन्न होना सो सुगति ॥ ३७ ॥ बारवे गुणस्थान में रहनेवाले साधु व्यवहार नय की अपेक्षा से ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय, मोहनीय और अंतराय इन चारों कर्मों का क्षय करके केवल ज्ञान की प्राप्ति करते हैं. केवल ज्ञान, केवल दर्शन को धारन करनेवाले अरिहंत केवली

शब्दार्थ

सिद्धको च० चार क० कर्म जु० साथ खि० क्षय होते हैं वे०। वेदनीय आ० आयुष्य णा० नाम गो० गोत्र ॥ ३८ ॥ च० चार ठा० स्थान से हा० हास्योत्पत्ति सि० होवे पा० देख के भा० बोलके सु० सूनके सं०

सूत्र

आउयं, णामं, गोयं । पढमसमयसिद्धस्सणं चत्तारि कम्मंसा जुगवं खिज्जंति तं० वेयणिज्जं, आउयं, णामं, गोयं ॥ ३८ ॥ चउहिं ठाणेहिं हासुप्पत्तिसिया तं० पासेत्ता, भासेत्ता, सुणेत्ता, संभरेत्ता ॥३९॥ चउव्विहे अंतरे प० तं० कट्ठंतरे, पम्हंतरे,

भावार्थ

वेदनीय, आयुष्य, नाम और गोत्र यह चार कर्म वेदते हैं. और इन ही चारों कर्मों का क्षय होने से प्रथम समय के सिद्ध बनते हैं ॥ ३८ ॥ चार प्रकार से हास्य की उत्पत्ति होती है, भाण्डादिक की चेष्टा देखने से, विस्मयकारी वचन बोलने से, वैसे वचन श्रवण करने से, और वैसी बात याद करने से ॥३९॥ भगवंतने दृष्टान्तरूप चार प्रकार का अंतर कहा काष्टान्तर सो काष्ट २ में अंतर एक काष्ट चंदन और दूसरा काष्ट थोर, पक्षान्तर सो पांख २ में भिन्नता जैसे एक सुकुमाल, और एक कठीन. लोहान्तर सो एक लोहा कठिन और एक नरम. वैसे ही पत्थरान्तर पत्थर२ में भिन्नता एक चिन्तामणि रत्न और दूसरा कंकर. ऐसे ही चार प्रकार के पुरुष और स्त्रियों कही हैं. काष्टान्तर समान सो एक विशेष पढ़ी योग्य और एक अयोग्य, पक्षान्तर समान स्त्री पुरुष सो एक का वचन सुकुमाल और एक का वचन कठिन,

शब्दार्थ

याद करके ॥ ३९ ॥ च० चार प्रकार का अं० अंतर क० काष्टान्तर पं० पक्षान्तर लो० लोहान्तर प० पत्थरान्तर ए० ऐसे इ० स्त्री का पु० पुरुष का च० चार प्रकार का अं० अंतर क० काष्ट समान प० पक्ष समान ल० लोह समान प० पत्थर समान ॥ ४० ॥ च० चार भ० सेवक दि० दिवस भृत्यक ज० यात्रा भृत्यक उ० उच्चता भृत्यक क० कवाड भृत्यक ॥ ४१ ॥ च० चार पुरुषजात सं० प्रगट प० सेवने वाले ए० कितनेक णो० नहीं प० गुप्त प० सेवने वाले प० गुप्त प० सेवने वाले ए० कितनेक णो० नहीं

सूत्र

लोहंतरे, पत्थंतरे, । एवमेव इत्थीए वा, पुरिसस्सवा। चउव्विहे अंतरे प० तं० कट्ठंतरत्थीसमाणे । पम्हंतरसमाणे, लोहंतरसमाणे, पत्थंतरसमाणे ॥ ४० ॥ चत्तारि भयगा प० तं० दिवसभयए, जत्ताभयए, उच्चत्तभयए, कवाडभयए ॥ ४१ ॥ चत्तारि पुरिसजाया प० तं० संपागडपडिसेवी णामेगे णो पच्छण्णपडिसेवी, पच्छण्णपडि-

भावार्थ

लोहान्तर समान सो एक स्नेही और एक स्नेह रहित, पत्थरांतर सो एक चिन्ता रहित, मनोरथ को पूर्ण करनेवाले, गुणवंत व वंदनीय और एक गुण रहित व अवंद्य ॥ ४० ॥ चार प्रकार के सेवक कहे. दिन का सेवक सो पैसे देकर कार्य के लिये रखे, यात्रा सेवक सो देशान्तर जाते पैसे देकर रखे, उच्चताभृत्यक सो काल का अनुमान करके पैसे देकर कार्य करावे, और कवाडभृत्यक सो अमुक हाथ जमीन खोदनेसे अमुक पैसे मिलेंगे इस तरह कार्य करावे ॥ ४१ ॥ चार प्रकार के लोकोत्तर पुरुष कहे हैं. १ गीतार्थ

शब्दार्थ

प्रगट प० सेवने वाले ए० एक सं० प्रगट प० सेवने वाले प० गुप्त प० सेवने वाले ए० एक णो० नहीं सं० प्रगट प० सेवने वाले णो० नहीं प० गुप्त प० सेवने वाले ॥ ४२ ॥ च० चमरेन्द्र अ० असुरेन्द्र का अ० असुर कुमार राजा के सो० सोमके म० महाराजा की च० चार अ० अग्रमहिषी क० कनका क० कनकलता चि० चित्रगुप्ता व० वसुंधरा ए० ऐसे ज० यम की व० वरुण की वे० वैश्रमन की ब० बलेन्द्र की व० वैरोचन की सो० सोमराजा की च० चार अ० अग्रमहिषी मि० मित्रगा सु० सुभद्रा वि०

सूत्र

सेवी णामेगे णो संपागड पडिसेवी. एके संपागड पडिसेवीवि पच्छण्णपडिसेवीवि, एगे णो संपागड पडिसेवी णोपच्छण्णपडिसेवी ॥ ४२ ॥ चमरस्सणं असुरिंदस्स असुरकुमार रन्नो सोमस्समहारण्णो चत्तारि अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ तं० कणगा कणगलया, चित्तगुत्ता, वसुंधरा । एवं जमस्स वरुणस्स वेसमणस्स । बलिस्सणं वइरोयणिंदस्स वइरोयणरण्णो सोमस्स महारण्णो चत्तारि अग्गमहिसीओ प० तं० मित्तगा, सुभद्दा, वि-

भावार्थ

साधु कारण विशेष अप्रच्छन्नपने अकल्पनीय भक्तादिक का सेवनकरे परंतु गुप्तपने सेवे नहीं, एक प्रच्छन्नपने पाप कर्म सेवे परंतु प्रगट पाप न सेवे, एक प्रच्छन्नपने सेवे और अप्रच्छन्नपने भी सेवे और कोई गुणवंत साधु न तो अप्रच्छन्नपने पाप कर्म सेवे और न प्रच्छन्नपने पाप कर्म का सेवन करे ॥ ४२ ॥ असुरकुमार के राजा असुरेन्द्र के सोम नामक महाराजा को चार अग्रमहिषी कही, कनका, कनकलता, चित्रगुप्ता, और

शब्दार्थ

द्युत् अ० अशनी ए० ऐसे ज० यमकी वे० वैश्रमन की व० वरुण की ध० धरणेन्द्र णा० नागकुमारेन्द्र की णा० नागकुमार राजा की का० काल की म० महाराजा की च० चार अ० अग्रमहिषी अ० अशोका वि० विमला सु० सुप्रभा सु० सुदर्शना ए० ऐसे जा० यावत् सं० संखपाल के भू० भूतानेन्द्र णा० नागकुमारेन्द्र की णा० नागकुमार राजा की का० कालपाल की च० चार अ० अग्रमहिषी सु० सुनंदा सु० सु० सुभद्रा सु० सुजाया सु० सुमना ए० ऐसे जा० यावत् से० सेलवाल की ज० जैसे ध० धरणेन्द्र की ए०

सूत्र

ज्जुया, असणी । एवं जमस्स, वेसमणस्स, वरुणस्स । धरणस्सणं णागकुमारिंदस्स णागकुमाररण्णो कालस्समहारण्णो चत्तारि अग्गमहिसीओ प० तं० असोगा विमला सुप्पभा सुदंसणा । एवं जाव संखवालस्स । भूयाणंदस्सणं णागकुमारिंदस्स णागकुमाररण्णो कालवालस्स महारण्णो चत्तारि अग्गमहिसीओ प० तं० सुणंदा, सुभद्दा सुजाया, सुमणा । एवं जाव सेलवालस्स जहा धरणस्स । एवं सव्वेसिं दाहिणिंद-

भावार्थ

वसुंधरा. ऐसे ही यम, वरुण और वैश्रमण की उक्त नामोंवाली चार अग्र महिषियों जानना. उत्तर दिशि के बलेन्द्र देवता के सोम, यम, वरुण और वैश्रमण इन चारों लोकपालों को चार २ अग्रमहिषियों कही. मित्रगा, सुभद्रा, विद्युत और अशनी. धरणेन्द्रके कालपाल, कोलपाल, सेलपाल और शंखपाल को चार अग्रमहिषियों कही. अशोका, विमला, सुप्रभा, और सुदर्शना, और भूतानेन्द्र के कालपाल, कोलपाल

शब्दार्थ

ऐसे दा० दक्षिण के लो० लोकपाल की जा० यावत् घो० घोषकी ज० जैसे भू० भूतानेन्द्र की ए० ऐसे जा० यावत् म० महाघोष के लो० लोकपाल की का०काल के पि० पिशाचेन्द्र के पि० पिशाच राजा की च० चार अ० अग्रमहिषी क० कमला क० कमलप्रभा उ० उत्पला सु० सुदर्शना ए० ऐसे म० महाकाल की सु० सुरूप की भू० भूतेन्द्र की भू०भूतराजा की च० चार अ० अग्रमहिषी रू० रूपवती ब० बहुरूपा सु० सुरूपा सु० सुभगा ए० ऐसे प० प्रतिरूप की पु० पूर्णभद्र की ज० यक्ष की ज० यक्षराजा की च०

सूत्र

लोगपालाणं जाव घोसस्स जहा भूयाणंदस्स एवं जाव महाघोसस्स लोगपालाणं। कालस्सणं पिसाइंदस्स पिसायरण्णो चत्तारि अग्गमहिसीओ प० तं० कमला, कमलप्पभा, उप्पला, सुदंसणा। एवं महाकालस्सवि। सुरूवस्सणं भूइंदस्स भूयरण्णो चत्तारि अग्गमहिसीओ प० तं० रूववई, बहुरूवा, सुरूवा, सुभगा। एवं पडिरूवस्सवि। पुण्णभद्दस्सणं जक्खिंदस्स जक्खरण्णो चत्तारि अग्गमहिसीओ प० तं०

भावार्थ

शंखपाल, और सेलपाल को चार अग्र महिषियों कही सुनंदा, सुभद्रा, सुजाता, और सुमना. ऐसे ही दक्षिण दिशा व उत्तर दिशा के सब लोकपाल की सब अग्रमहिषियों जानना. यह भुवनपति का अधिकार हुवा अब वाणव्यंतर का अधिकार चलता है. काल व महाकाल नामक पिशाचेन्द्र को चार अग्र महिषियों. कमला, कमलप्रभा, उत्पला और सदर्शना. सुरूप व प्रतिरूप नामक भूतेन्द्र को चार अग्रमहि-

शब्दार्थ

चार अ० अग्रमहिषी पु० पूर्णा व० बहुपुत्रिका उ० उत्तमा ता० तारका ए० ऐसे म० मणिभद्र की भी० भीम के र० राक्षस के र० राक्षस राजा के च० चार अ० अग्रमहिषी प० पद्मा व० वसुमति क० कनका र० रत्नप्रभा ए० ऐसे म० महाभीम की कि० किन्नर के कि० किन्नरेन्द्र की च० चार अ० अग्रमहिषी व० वडिंसा के० केतुमति र० रतिसेना र० रतिप्रभा ए० ऐसे किं० किंपुरुषेन्द्र की च० चार अ० अग्रमहिषी रो० रोहिणी ण० नवमिका हि० ह्री पु० पुष्पवती ए० ऐसे म० महापुरुष के अ० अतिकाय म० महोरग के

सूत्र

पुण्णा, बहुपुत्तिया, उत्तमा, तारगा । एवं माणिभद्दस्सवि । भीमस्सणं रक्खसिंदस्स रक्खसरन्नो चत्तारि अग्गमहिसीओ प० तं० पउमा, वसुमई, कणगा, रयणप्पभा । एवं महाभीमस्सवि । किन्नरस्सणं किन्नरिंदस्स चत्तारि अग्गमहिसीओ प० तं० वडिंसा, केउमई, रइसेणा, रइप्पभा । एवं किंपुरिसस्सवि । सुपुरिसस्सणं किंपुरिसिंदस्स चत्तारि अग्गमहिसीओ प० तं० रोहिणी, णवमिया, हिरी, पुप्फवई । एवं महापुरि-

भावार्थ

षियों. रूपवती, बहुरूपा, सुरूपा और सुभगा. पूर्णभद्र और मणिभद्रको चार अग्रमहिषियों. पूर्णा, बहुपुत्रिका उत्तमा और तारका. भीम और महाभीम नामक राक्षसेन्द्र को चार महिषियों पद्मा, वसुमति, कनका और रत्नप्रभा. किन्नर और किंपुरुष को चार अग्र महिषियों वडिंसा, केतुमती, रतिसेना और रतिप्रभा. सुपुरुष और महापुरुष को रोहिणी, नवमिका, ह्री, और पुष्पवती, अतिकाय और महाकाय को चार,

शब्दार्थ

च० चार अ० अग्रमहिषी भु० भुजगा भु० भुजगवती म० महाकच्छा फा० स्फुटा ए० ऐसे म० महाकाय के गी० गीतरती के गं० गंधर्वेन्द्रके च० चार अ० अग्रमहिषी सु० सुघोषा वि० विमला सु० सुस्वरा स० सरस्वति ए० ऐसे गी० गीतयश चं० चंद्रके जी० ज्योतिषेन्द्र की जो० ज्योतिषी राजाकी च० चार अ० अग्रमहिषी चं० चंद्रप्रभा जो० ज्योत्स्नाभा अ० अर्चिमालिनी प० प्रभंकरा ए० ऐसे सू० सूर्यकी ण० विशेष सू० सूर्यप्रभा दो० ज्योत्स्नाभा अ० अर्चिमालिनी प० प्रभकरा इं० इंगाल म० महाग्रह की च० चार अ० अग्रमहिषी

सूत्र

सस्सवि । अइकायस्सणं महोरगिंदस्स चत्तारि अग्गमहिसीओ प० तं० भुयगा, भुयगवई, महाकच्छा, फुडा । एवं महाकायस्सवि । गीयरइस्सणं गंधव्विंदस्स चत्तारि अग्गमहिसीओ प० तं० सुघोसा, विमला सुस्सरा, सरस्सई । एवं गीयजसस्सवि चंदस्सणं जोइसिंदस्स जोइसरण्णो चत्तारि अग्गमहिसीओ प० तं० चंदप्पभा, दोसिनाभा, अच्चिमाली, पभंकरा एवं सूरस्सवि णवरंसूरप्पभा, दोसिणाभा, अच्चिमाली

भावार्थ

भुजगा, भुजगवती, महाकच्छा और स्फुटा. गीतरति और गीतयश को चार अग्र महिषियों सुघोषा, विमला सुस्वरा, और सरस्वती. ज्योतिष के इन्द्र चंद्र को चार अग्र महिषियों चंद्रप्रभा, ज्योत्स्नाभा, अर्चिमाली, और प्रभंकरा. ऐसे ही सूर्य को सूरप्रभा, ज्योत्स्नाभा, अर्चिमाली, और प्रभंकरा. इंगाल (मंगल) नामक महाग्रह को चार अग्र महिषियों. विजया, वैजयंती, जयंती, और अपराजिता. ऐसे ही सब ८८ ग्रहों को

शब्दार्थ

वि० विजया वि० विजयंति ज०जयंति अ०अपराजिता ए०ऐसे स०सर्व म०महाग्रहकी जा०यावत् भा०भावकेतु स० शक्रेन्द्र की दे० देवेन्द्र दे० देवराजा की सो० सोम म० महाराजा की च० चार अ० अग्रमहिषी रो० रोहिणी म० मदना चि० चित्रा सा० श्यामा ए० ऐसे जा० यावत् वे० वैश्रमण की ई० ईशान के दे० देवेन्द्र की दे० देवराजा की सो० सोमराजा की च० चार अ० अग्रमहिषी प० प्रभंकरा पु० पृथ्वी रा० रात्रि र० रजनी वि० विद्युत् ए० ऐसे जा० यावत् व० वरुण की ॥ ४३ ॥ च० चार गो० गोक्षीर की

सूत्र

पभंकरा । इंगालस्सणं महग्गहस्स चत्तारि अग्गमहिसीओ प० तं० विजया, वेजयंती जयंती, अपराजिया । एवं सव्वेसिं महग्गहाणं जाव भावकेउस्स । सक्कस्सणं देविंदस्स-देवरण्णो सोमस्स महारण्णो चत्तारि अग्गमहिसीओ प० तं० रोहिणी, मयणा, चित्ता सामा । एवं जाव वेसमणस्स ईसाणस्सणं देविंदस्स देवरण्णो सोमस्समहारण्णो चत्तारि अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ तंजहा-पुढवी, राई, रयणी विज्जू। एवं जाव वरुणस्स ॥ ४३ ॥

भावार्थ

चार २ अग्र महिषियों जानना. शक्रेन्द्र के सोम, यम, वरुण व वैश्रमण लोकपाल को चार २ अग्र महिषियों रोहिणी, मदना, चित्रा, और श्यामा. ईशानेन्द्र के सोम, यम, वैश्रमण और वरुण लोकपाल को चार अग्र महिषियों पृथिवी, रात्रि, रजनी, और विद्युत (आगे के विमानों में देवियों नहीं है) ॥ ४३ ॥

शब्दार्थ

वि० विगय खी० दूध द० दधि स० घृत ण० मक्खन च० चार सि० स्निग्ध वि० विगय प० प्ररूपी ते० तेल घ० घृत व० चरबी ण० मक्खन च० चार म० महाविगय प० परूपी म० मधु म० मांस म० मद्य ण० मक्खन ॥ ४४ ॥ च० चार कू० कूटागार गु० गुप्त ए० कितनेक गु० गुप्त गु० गुप्त ए० कितनेक अ० अगुप्त अ० अगुप्त ए० कितनेक गु० गुप्त अ० अगुप्त ए० कितनेक अ० अगुप्त ए० ऐसे च० चार पु० पुरुषजात गु० गुप्त ए० कितनेक गु० गुप्त च० चार कू० कूटागार सा० शाला गु० गुप्त ए० कितनेक गु०

सूत्र

चत्तारि गोरसविगईओ प० तं० खीरं, दहिं, सप्पिं, णवणीअं । चत्तारि सिणेहविगईओ पण्णत्ताओ तं० तेल्लं, घयं, वसा णवणीयं । चत्तारि महाविगईओ पण्णत्ताओ तं० महुं, मंसं, मज्जं, णवणीयं ॥ ४४ ॥ चत्तारि कूडागारा प० तं० गुत्तेणामेगे गुत्ते, गुत्तेणामेगे अगुत्ते, अगुत्ते णामेगे गुत्ते, अगुत्ते णामेगे अगुत्ते. । एवमेव चत्तारि पुरिसजाया प० तं० गुत्तेणामेगेगुत्ते ४ । चत्तारि कूडागारसालाओ

भावार्थ

चार प्रकार की गोरस (दूध से उत्पन्न होती) विगय कही दूध, दहि, घृत, और मक्खन. चार प्रकारकी स्नेह विगय. तेल, घृत, चरबी और मक्खन. चार प्रकार की महाविगय कही मधु, मांस, मदिरा, और मक्खन ॥ ४४ ॥ चार प्रकार के कुटाकारवाले गृह कहे. एक गृह भी गुप्त और द्वार भी गुप्त. एक गृह गुप्त परंतु द्वार अगुप्त, एक अगुप्त गृह और गुप्त द्वार और एक अगुप्त गृह और अगुप्त द्वार. ऐसे ही चार

शब्दार्थ

गुप्त दु० द्वार गु० गुप्त ए० कितनेक अ० अगुप्त दु० द्वार अ० अगुप्त ए० कितनेक गु० गुप्तद्वार अ० अगुप्त ए० कितनेक अ० अगुप्तद्वार ए० ऐसे च० चार इ० स्त्री गु० गुप्त ए० कितनेक गु० गुप्तेन्द्रिय गु० गुप्त ए० कितनेक अ० अगुप्तेन्द्रिय ॥ ४५ ॥ च० चार ओ० अवगाहना द० द्रव्य अवगाहना खे० क्षेत्र

सूत्र

प० तं० गुत्ताणामेगा गुत्तदुवारा, गुत्ताणामेगा अगुत्तदुवारा, अगुत्ताणामेगा गुत्तदुवारा, अगुत्ताणामेगा अगुत्तदुवारा । एवामेव चत्तारित्थीओ प० तं० गुत्ताणामेगा गुत्तिंदिया, गुताणामेगा अगुत्तिंदिया, ४ ॥ ४५ ॥ चउव्विहा—ओगाहणा प० तं०

भावार्थ

प्रकार के पुरुष कहे हैं. १ एक पुरुष वस्त्रादि से ढकाहुवा और लज्जावंत, २ एक पुरुष वस्त्रादि से ढकाहुवा परंतु लज्जा रहित, ३ एक पुरुष वस्त्रादि रहित परंतु लज्जावंत और ४ एक पुरुष वस्त्रादि रहित लज्जादि सो भी रहित. उक्त कथनानुसार चार प्रकार की कुटाकारवाली शाला कही और ऐसे ही चार प्रकार की स्त्रियों १ एक स्त्री गृह में ही रहती है और वस्त्रादि से ढकी हुइ है व सुशीला है, २ एक स्त्री वस्त्रादि से ढकी हुइ है परंतु कुशीला है यों चारों भांगाओं जानना ॥ ४५ ॥ चार प्रकार की अवगाहना. द्रव्य अवगाहना सो द्रव्य से अनंत द्रव्य शरीर है, क्षेत्रावगाहना क्षेत्र से असंख्यात प्रदेश अवगाहे हैं, काल अवगाहना असंख्यात समय कि स्थितिवाली काया और भावावगाहना सो भाव से वर्णादि अनंतगुण

अवगाहना का० कालअवगाहना भा० भावावगाहना ॥ ४६ ॥ च० चार प० प्रज्ञप्ति अं० अंग बा० बाह्य प० प्ररूपी चं० चंद्रप्रज्ञप्ति सू० सूर्यप्रज्ञप्ति जं० जंबूद्वीप प्रज्ञप्ति दी० द्वीपसागर प्रज्ञप्ति ॥ ४७ ॥

च०चार प०पडिसंलीनता को० क्रोध पडिसंलीनता मा० मान पडिसंलीनता मा० माया पडिसंलीनता लो० लोभ पडिसंलीनता च०चार अ०अपडिसंलीनता को०क्रोध अपडिसंलीनता जा० यावत् लो०लोभ अपडिसं-

दव्वोगाहणा, खेत्तोगाहणा कालोगाहणा, भावोगाहणा. ॥ ४६ ॥ चत्तारि पण्णत्ती-ओ अंगबाहिरियाओपण्णत्ताओ तं० चंदपण्णत्ती, सूरपण्णत्ती, जंबूद्दीवपण्णत्ती, द्दीवसागरपण्णत्ती ॥ ४७ ॥ इति चउट्ठाणस्स पढमोद्देसो सम्मत्तो ॥ *

चत्तारि पडिसंलीणा प०तं०कोह पडिसंलीणे,माणपडिसंलीणे मायापडिसंलीणे,लोभ पडि-

सहित ॥ ४६ ॥ चार प्रज्ञप्ति द्वादशांग अंग बाहिर हैं परंतु कालिक श्रुतरूप है. चंद्र प्रज्ञप्ति में चंद्रमाकी वक्तव्यता कही है, सूर्य प्रज्ञप्ति में सूर्य की वक्तव्यता कही है, जम्बूद्वीप प्रज्ञप्ति में जम्बूद्वीप का अधिकार कहा है और द्वीप सागर प्रज्ञप्ति में द्वीप सागरका अधिकार कहा है ॥ ४७ ॥ यह चतुर्थ स्थानक का पहेला उद्देशा समाप्त हुवा. * *

चार प्रकार की प्रतिसंलिनता (निग्रह करना) कही. १ उत्पन्न हुवा क्रोध को क्षमा से निष्फल करे सो क्रोध प्रतिसंलीनता, २ उत्पन्न हुवा मान को विनय से निष्फल करे सो मान प्रतिसंलीनता, माया न

शब्दार्थ लीन च० चार प० पडिसंलीनता म० मन पडिसंलीनता व०वचन पडिसंलीनता का० काया पडिसंलीनता इं० इन्द्रिय पडिसंलीनता च०चार अ०अपडिसंलीनता म०मन अपडिसंलीनता जा० यावत् इं० इन्द्रिय अपडिसंलीनता ॥ १ ॥ च०चार पु० पुरुषजात दी० दीन ए० कितनेक दी० दीन दी० दीन ए० कितनेक अ०

सूत्र संलीणे। चत्तारि अपडिसंलीणा प० तं० कोह अपडिसंलीणे, जाव लोभ अपडिसंलीणे॥ चत्तारि पडिसंलीणा प० तं० मणपडिसंलीणे, वइपडिसंलीणे, कायपडिसंलीणे, इंदियपडिसंलीणे चत्तारि अपडिसंलीणा प० तं० मणअपडिसंलीणे, जाव इंदियअपडिसंलीणे ॥ १ ॥ चत्तारि पुरिस जाया प० तं० दीणे णामेगे दीणे, दीणे णामेगे अदीणे

भावार्थ करे सो माया प्रतिसंलीनता और उदय आया हुवा लोभ का रुंधन करे सो लोभ प्रतिसंलीनता. चार प्रकार की अप्रति संलीनता उत्पन्न हुवा क्रोध, मान, माया और लोभका निग्रह न करे. और भी चार प्रकारकी प्रतिसंलीनता. शुद्धमन से अशुद्ध मनका रुंधन करे, सो मन प्रतिसंलीनता, सत्य वचन बोले परंतु असत्य वचन न बोले सो वचन प्रतिसंलीनता, काया को पापकारी कार्य में प्रवर्तावे नहीं सो काया प्रतिसंलीनता, और इन्द्रिय का निग्रह करे सो इन्द्रिय प्रतिसंलीनता. ऐसे ही चारों को पापकार्य में प्रवर्तना सो चार प्रकार की अप्रतिसंलीनता जानना ॥१॥ चार प्रकारके पुरुष कहे हैं. १ एक पुरुष प्रथम भी दीन

शब्दार्थ अदीन अ० अदीन ए० कितनेक दी० दीन अ० अदीन ए० कितनेक अ० अदीन च० चार पु० पुरुष जात दी० दीन ए० कितनेक दी० दीन परिणत दी० दीन ए० कितनेक अ० अदीन परिणत अ० अदीन ए० कितनेक दी० दीनपरिणत अ० अदीन ए० कितनेक अ० अदीन परिणत च०

सूत्र

अदीणेणा मेगेदीणे, अदीणेणामेगे अदीणे। चत्तारि पुरिस जाया प० तं० दीणे णामेगेदीण परिणए, दीणे णामेगे अदीणपरिणए, अदीणे णामेगे दीणपरिणए, अदीणे णामेगे अदीणपरिणए, । चत्तारि पुरिसजाया प० तं० दीणे णामेगे दीणरूवे ४ । एवं

भावार्थ और पीछे भी दीन. २ एक पुरुष प्रथम दीन और फीर अदीन, ३ एक पुरुष प्रथम तो अदीन फीर दीन और ४ एक पुरुष पहिले भी अदीन था और फीर भी अदीन. चार प्रकार के पुरुष कहे हैं. १ एक पुरुष शरीर का दीन और परिणामों का भी दीन, २ एक पुरुष शरीर का दीन परंतु परिणामों का अदीन, ३ एक पुरुष शरीर का अदीन और परिणामों का दीन और ४ एक पुरुष शरीर का अदीन और परिणामों का भी अदीन. और भी चार प्रकारके पुरुष कहेहैं. १ एक पुरुष जातिका दीन और वस्त्रादि मलिन होने से रूपमें भी दीन, २ एक पुरुष जाति का दीन परंतु रूप का अदीन ३ एक पुरुष जाति का अदीन परंतु रूप का दीन और ४ एक पुरुष जाति का अदीन और रूप का भी अदीन. पुरुष चार प्रकार के कहे हैं. १ एक पुरुष जाति का दीन और धन का भी दीन (कृपण) २ एक पुरुष जाति का दरिद्री

चार पु० पुरुषजात दी० दीन ए० कितनेक दी० दीनरूप ए० ऐसे दी० दीनमन दी० दीनसंकल्प दी०

दीणमणे, दीणसंकप्पे दीणपण्णे, दीणदिट्ठी, दीणसीलायारे, दीणववहारे । चत्तारि

और मन का उदार ३ एक पुरुष जाति का अदीन और मन का दीन और ४ एक जाति का अदीन और मन का भी अदीन और भी चार प्रकार के पुरुष १ एक पुरुष जाति का दीन और विचार का भी दीन, २ एक पुरुष जाति का दीन और विचार का अदीन ३ एक पुरुष जाति का अदीन और विचार का दीन, और ४ एक जातिका अदीन और विचार का अदीन. चार प्रकार के पुरुष १ शरीर का दीन विचार का दीन, २ एक शरीर का दीन और विचार का अदीन (उदार) ३ एक शरीर का अदीन और विचार का दीन और ४ एक शरीर का भी अदीन और विचार का भी अदीन, और भी चार प्रकार के पुरुष एक पुरुष शरीर का दीन और प्रज्ञा का दीन २ एक शरीर का हीन, और बुद्धिका प्रबल ३ एक शरीर का प्रबल और बुद्धिका हीन, और ४ एक शरीर का हीन और बुद्धिका भी हीन. और चार प्रकार के पुरुष. १ एक पुरुष शरीर का दीन और दृष्टि का भी दीन, एक पुरुष शरीर का अदीन और दृष्टि का दीन ३ एक पुरुष शरीर का दीन और दृष्टि का अदीन और ४ एक पुरुष शरीर का अदीन और दृष्टि का भी अदीन. और भी चार प्रकार के पुरुष १ एक पुरुष शरीर का दीन और शील का भी दीन, २ एक पुरुष शरीर का अदीन और शीलाचार का

शब्दार्थ दीनप्रज्ञा दी० दीनदृष्टि दी० दीनशीलाचार दी० दीनव्यवहार च० चार पुरुष जात दी० दीन ए० कितनेक दी० दीनपराक्रम दी० दीन ए० कितनेक अ० अदीन पराक्रम ए० ऐसे स० सबके च० चार भं० भांग भा०

सूत्र पुरिसजाया प० तं० दीणे णामेगे दीणपरक्कमे, दीणे णामेगे अदीणपरक्कमे ४ । एवं सव्वेसिं चउभंगो भाणियव्वो चत्तारि पुरिसजाया प० तं० दीणे णामेगे दीणवित्ती ४।

भावार्थ दीन, ३ एक पुरुष शरीर का दीन और शीलाचार का अदीन और ४ एक पुरुष शरीर का भी अदीन और शीलाचारका भी अदीन. और भी चार प्रकारके पुरुष १ एक पुरुष शरीर का दीन और व्यवहार में भी दीन, २ एक पुरुष शरीर का दीन और व्यवहार में अदीन (कुशल) ३ एक पुरुष शरीर का अदीन और व्यवहार में दीन और ४ एक पुरुष शरीर का अदीन और व्यवहार का भी अदीन. और भी चार प्रकार के पुरुष कहे हैं १ एक पुरुष शरीर का दीन और पराक्रम का दीन, २ एक पुरुष शरीर का अदीन और पराक्रम का दीन, ३ एक पुरुष शरीर का दीन और पराक्रम का अदीन और ४ एक पुरुष शरीर का अदीन और पराक्रम का भी अदीन. चार प्रकार के पुरुष १ एक पुरुष जाति का दीन और आजीविका भी दीनता से करे, २ एक पुरुष जाति का श्रीमान परंतु आजीविका दीनता से करे. ३ एक पुरुष जाति का दीन और आजीविका श्रीमान जैसे करे और ४ एक पुरुष जाति का अदीन और आजीविका भी अदीनता से करे, और भी चार प्रकारके पुरुष १ एक दरिद्री और जाति का भी

शब्दार्थ

कहना चे० चार पुरुष जात दी० दीन ए० कितनेक दी० दीनवृत्ति ए० ऐसे दी० दीनजाति दी० दीनभासा दी० दीनोपभासी च० चार पु० पुरुष जात दी० दीन ए० कितनेक दी० दीनसेवी ए० ऐसे दी० दीन ए० कितनेक दी० दीन पर्याय ए० ऐसे दी० दीन ए० कितनेक दी० दीनपरिवार स० सर्व में च० चार

सूत्र

एवं दीण जाई, दीणभासी, दीणोभासी । चत्तारि पुरिसजाया प० तं० दीणे णामेगे दीणसेवी ४ । एवं दीणे णामेगे दीणपरियाए । एवं दीणे णामेगे दीण परिवाले ४ । सव्वत्थ चउभंगो ॥ २ ॥ चत्तारि पुरिसजाया प० तं० अज्जेणामेगेअज्जे, ४ । चत्तारि पुरिसजाया प० तंअज्जेणामेगे अज्जपरिणए ४ । एवं अजरूवे ४ । अज्जमणे ४ ।

भावार्थ

दरिद्री, २ एक दरिद्री और जाति का उत्तम ३ एक धनवंत और जाति का हीन और ४ एक धनवंत और जाति का भी उत्तम. और भी चार प्रकारके पुरुष. १ एक देखने में दीन और बोलने में भी दीन, २ एक देखने में दीन और बोलने में शूरवीर ३ एक देखने में अदीन और बोलने में दीन और ४ एक देखने में अदीन और बोलमे में भी अदीन. और भी चार प्रकार के पुरुष एक पुरुष दीन और दीनता से याचना करे यों चारों भांगाओं कहना. चार प्रकारके पुरुष एक स्वयं दरिद्री और सेवक भी दरिद्री ऐसे चार भांगे कहना और भी चार प्रकार के पुरुष एक स्वयं दीन और उन की पर्याय [दीक्षा] भी दीन ऐसे चार भांगाओ कहना. और भी चार प्रकार के पुरुष एक स्वयं दीन और उस का परिवार भी दीन.

शब्दार्थ भं० भांगा ॥ २ ॥ च० चार पु० पुरुष जात अ० आर्य ए० कितनेक अ० आर्य च० चार पु० पुरुष जात अ० आर्य ए० कितनेक अ० आर्य परिणत ए० ऐसे अ० आर्यरूप अ० आर्यमन अ० आर्य संकल्प अ० आर्य प्रज्ञा अ० आर्य दृष्टि अ० आर्य शीलाचार अ० आर्यव्यवहार अ० आर्य पराक्रम अ० आर्यवृत्ति अ० आर्यजाति अ० आर्य भासी आ० आर्योपभासी अ० आर्यसेवी ए० ऐसे अ० आर्य पर्याय

सूत्र अज्जसंकप्पे ४ । अज्जपण्णे ४ । अज्जदिट्ठी ४ । अज्जसीलायारे, ४ । अज्जववहारे ४ । अज्जपरक्कमे ४ । अज्जवित्ती ४ । अज्जजाई ४ । अज्जभासी ४ । अज्जओभासी, ४ । अज्जसेवी, ४ । एवं अज्जपरियाए, ४ । अज्जपरिवाले, । एवं सत्तारस आलावगा

भावार्थ २ एक स्वयं दीन और परिवार भी दीन. इस तरह दीन शब्द पर १७ चौभंगियों से कर्मों की विचित्रता बतलाइ है ॥ २ ॥ चार प्रकार के पुरुष कहे हैं १ आर्य क्षेत्र में उत्पन्न हुवे सो आर्य और आर्य धर्म आचारनेवाले, २ आर्य क्षेत्र में उत्पन्न हुवे और अनार्य धर्म आचारनेवाले ३ अनार्य क्षेत्र में उत्पन्न हुवे और आर्य धर्म आचारनेवाले और ४ अनार्य क्षेत्र में उत्पन्न हुवे और अनार्य धर्म आचारनेवाले. (२) एक स्वयं आर्य और स्वभाव भी आर्य के चार भांगे (३) १ एक का रूप आर्य और स्वयं भी आर्य,

---

१ आर्य के नव भेद हैं १ जाति आर्य, २ क्षेत्र आर्य, ३ कुल आर्य, ४ शिल्प आर्य, ५ कर्म आर्य, ६ भाषा आर्य, ७ ज्ञान आर्य, ८ दर्शन आर्य, और ९ चारित्र आर्य.

शब्दार्थ

अ० आर्यपरिवार ए० ऐसे से० सत्तरह आ० आलापक ज० जैसे दी० दान में भ० कहा त० तैसे अ० आर्य में भी कहना च० चार पु० पुरुष जात अ० आर्य ए० कितनेक अ० आर्य भाव अ० आर्य ए० कितनेक अ० अनार्य भाव अ० अनार्य ए० कितनेक अ० आर्य भाव अ० अनार्य ए० कित-

सूत्र

जहा दीणेण भणिया तहा अज्जेणवि भाणियव्वा । चत्तारि पुरिसजाया प० तं० अज्जेणामेगे अज्जभावे, अज्जेणामेगे अणज्जभावे, अणज्जेणामेगे अज्जभावे, अणज्जेणामेगे अणज्जभावे ॥ ३ ॥ चत्तारि उसभा प० तं० जाइसंपन्ने, कुलसंपन्ने, बलसंपन्ने, रूव-

भावार्थ

एक का रूप आर्य और स्वयं अनार्य, ३ एक का रूप अनार्य और स्वयं आर्य ४ एक का रूप अनार्य और स्वयं भी अनार्य (४) एक स्वयं अनार्य और मन भी अनार्य (५) स्वयं आर्य और संकल्प भी आर्य (६) स्वयं आर्य और बुद्धि भी आर्य (७) स्वयं आर्य और दृष्टि भी आर्य इसपर चार भांगे (८) आर्य शीलाचार पर चार भांगे (९) आर्य व्यवहार पर चार भांगे (१०) आर्य पराक्रम पर चार भांगे, (११) आर्य वृत्ति पर चार भांगे (१२) आर्य जाति के चार भांगे (१३) आर्य भाषी के चार भांगे (१४) आर्य प्रभाषी के चार भांगे (१५) आर्य सेवी के चार [१६] आर्य पर्याय के चार भांगे [१७] आर्य परिवार के चार. इस तरह सत्तरह आलापक दीन जैसे कहना. अब चार प्रकार के पुरुष कहे हैं १ एक क्षेत्रादिक से आर्य और आर्य भाव सहित २ एक क्षेत्रादिक से आर्य और अनार्य भाव

शब्दार्थ

नेक अ० अनार्य भाव ॥३॥ च० चार उ० वृषभ जा० जातिसंपन्न कु० कुलसंपन्न ब० बलसंपन्न रू० रूपसंपन्न ए० ऐसे च० चार पु० पुरुष जात जा० जातिसंपन्न कु० कुलसंपन्न ब० बलसंपन्न रू० रूपसंपन्न च० चार वृषभ जा० जातिसंपन्न ए० कितनेक णो० नहीं कु० कुलसंपन्न कु० कुलसंपन्न ए० कित-

सूत्र

संपन्ने । एवामेव चत्तारि पुरिसजाया प० तं० जाइसंपन्ने, कुलसंपन्ने, बलसंपन्ने, रूवसंपन्ने । चत्तारि उसभा प० तं० जाइ संपन्नेणाममेगे णो कुलसंपन्ने, कुलसंपन्नेणाममेगे णो जाइ संपन्ने, एगे कुल संपण्णेवि जाइ संपण्णेवि, एगे णो जाइ संपन्ने नोकुलसंपन्ने । एवामेव चत्तारि पुरिसजाया प० तं० जाइ संपण्णे णाममेगे

भावार्थ

युक्त ३ एक क्षेत्रादिक से अनार्य और आर्य भाव युक्त और ४ एक क्षेत्रादिक से अनार्य और अनार्य भाव युक्त ॥ ३ ॥ चार प्रकारके वृषभ कहे हैं १ जाति संपन्न अर्थात् गुणवंत माता की कुक्षि में उत्पन्न हुवा, २ कुल संपन्न अर्थात् जिस के पिता गुणवंत है सो ३ बल संपन्न सो बोजा उठाने को समर्थ ४ और रूप संपन्न सो सुंदराकार. ऐसे ही चार पुरुष की जाति कही. जाति संपन्न सो सुशीला माता का पुत्र, कुल संपन्न सो गुणवंत पिता का पुत्र, बल संपन्न सो पराक्रमवन्त और रूप संपन्न सो सुंदराकार. चार प्रकार के वृषभ कहे हैं. १ एक वृषभ जाति का उत्तम है परंतु कुल का उत्तम नहीं हैं, २ एक कुल का उत्तम है परंतु जाति का उत्तम नहीं है, ३ एक कुल का उत्तम और जाति का भी उत्तम ४ और एक कुलका भी उत्तम नहीं और जाति का भी उत्तम नहीं. ऐसे ही चार पुरुष कहे हैं. एक जाति

शब्दार्थ

नेक णो० नहीं जा० जातिसंपन्न ए० कितनेक कु० कुलसंपन्न जा० जातिसंपन्न ए० कितनेक णो० नहीं जा० जातिसंपन्न ए० कितनेक णो० नहीं कु० कुलसंपन्न ए० ऐसे च० चार पु० पुरुषजात जा० जातिसंपन्न ए० कितनेक णो० नहीं कु० कुलसंपन्न च० चार उ० वृषभ जा० जातिसंपन्न ए० कितनेक णो० नहीं ब० बलसंपन्न ए० ऐसे च० चार पु० पुरुष जात जा० जातिसंपन्न ए० कितनेक णो० नहीं ब० बलसंपन्न च० चार उ० वृषभ जा० जातिसंपन्न ए० कितनेक णो० नहीं रू० रूपसंपन्न ए० ऐसे च० चार पु०

सूत्र

णो कुलसंपन्ने, ४ । चत्तारि उसभा प० तं० जाइसंपन्ने नाममेगे नोबलसंपन्ने ४ । एवामेव चत्तारि पुरिसजाया प० तं० जाइसंपन्ने णाममेगे णोबलसंपन्ने । चत्तारि उसभा प० तं० जाइसंपन्ने णाममेगे नोरूवसंपन्ने ४ । एवामेव चत्तारि पुरिसजाया प० तं० जाइसंपन्ने णाममेगे णोरूवसंपन्ने ४ ।

भावार्थ

का उत्तम है परंतु कुलका उत्तम नहीं है २ एक कुलका उत्तम है परंतु जाति का उत्तम नहीं है ३ एक कुलका उत्तम और जाति का भी उत्तम और ४ एक कुलका उत्तम नहीं और जाति का भी उत्तम नहीं. चार प्रकार के वृषभ कहे १ एक जाति का उत्तम परंतु बल में निर्बल २ एक बलसंपन्न परंतु जातिसंपन्न नहीं ३ एक बलसंपन्न और जातिसंपन्न और ४ एक बलसंपन्न नहीं और जातिसंपन्न भी नहीं. इस तरह पुरुष के चार भांगे कहना. चार प्रकार के वृषभ १ जातिका उत्तम परंतु रूप का हीन २ जाति

शब्दार्थ

पुरुष जात जा० जातिसंपन्न ए०कितनेक नो० नहीं रू०रूपसंपन्न च०चार उ०वृषभ कु०कुलसंपन्न ए०कितनेक णो० नहीं व० बलसंपन्न ए० ऐसे च० चार पु० पुरुष जात कु० कुलसंपन्न ए० कितनेक णो० नहीं व० बलसंपन्न च० चार उ० वृषभ कु० कुलसंपन्न ए० कितनेक णो० नहीं रू० रूपसंपन्न ए० ऐसे च० चार पु० पुरुष जात कु० कुलसंपन्न ए० कितनेक णो० नहीं रू० रूपसंपन्न च० चार उ० वृषभ व०

सूत्र

चत्तारि उसभा प० तं० कुलसंपन्ने णाममेगे णोबलसंपन्ने ४ । एवामेव चत्तारि पुरिस जाया प० तं० कुलसंपन्ने नाममेगे णोबलसंपन्ने ४ । चत्तारि उसभा प० तं० कुलसंपन्ने णाममेगे णोरूवसंपन्ने ४ । एवामेव चत्तारि पुरिस जाया प० तं०

भावार्थ

का हीन और रूप का उत्तम ३ जाति का उत्तम और रूप का भी उत्तम और ४ जातिका हीन और रूप का भी हीन ऐसे पुरुष जाति के चार भांगे कहना. चार प्रकार के वृषभ १ एक कुल का उत्तम और बलका हीन, २ एक कुल का हीन और बलका उत्तम, ३ एक कुलका उत्तम और बलका भी उत्तम और एक कुलका हीन बल का भी हीन. ऐसे ही पुरुष के चार भेद कहे हैं. चार प्रकार के वृषभ १ एक कुलका उत्तम और रूप का हीन, २ कुलका हीन और रूप का उत्तम ३ एक कुलका उत्तम और रूपका भी उत्तम और ४ एक कुलका हीन और रूप का भी हीन. ऐसे ही चार पुरुष कहे हैं चार प्रकार के

शब्दार्थ

बलसंपन्न ए० कितनेक णो० नहीं रू० रूपसंपन्न ए० ऐसे च० चार पु० पुरुष जात व० बलसंपन्न ए० कितनेक णो० नहीं रू० रूपसंपन्न ॥ ४ ॥ च० चार ह० हस्ति भ० भद्र म० मंद मि० मृग सं० संकीर्ण ए० ऐसे च० चार पु० पुरुष जात भ० भद्र मं० मंद मि० मृग सं० संकीर्ण च० चार ह० हस्ति भ० भद्र ए० कितनेक भ० भद्र मन भ० भद्र ए० कितनेक मं० मंद मन भ० भद्र ए० कितनेक मि० मृग मन भ० भद्र ए० कितनेक सं० संकीर्ण मन ए० ऐसे च० चार पु० पुरुष जात भ० भद्र ए० कितनेक भ० भद्रमन भ० भद्र

सूत्र

कुलसंपन्ने णाममेगे णोरूवसंपन्ने ४ । चत्तारि उसभा प० तं० बलसंपन्ने णाममेगे णोरूवसंपन्ने ४ । एवामेव चत्तारि पुरिस जाया प० तं० बलसंपण्णे णाममेगे णो रूवसंपण्णे ४ ॥ ४ ॥ चत्तारि हत्थी प० तं० भद्दे, मंदे, मिए, संकिण्णे । एवामेव चत्तारि पुरिस जाया प० तं० भद्दे, मंदे, मिए, संकिण्णे, । चत्तारि हत्थी प० तं०

भावार्थ

वृषभ कहे हैं १ एक बल में उत्तम और रूप में हीन, २ एक बल में हीन और रूप में उत्तम, ३ एक बल में उत्तम ओर रूप में भी उत्तम और एक बल में हीन और रूप में भी हीन ॥ ४ ॥ चार प्रकारके हाथी, भद्र, मंद, मृग, और संकीर्ण. ऐसे ही चार प्रकारके पुरुष कहे हैं भद्र, मंद, मृग, और संकीर्ण. चार प्रकार के हस्ती कहे १ एक हस्ती जाति का भद्र, और मन का भी भद्र, २ एक हस्ती जाति का भद्र, ओर मन का मंद अर्थात् धैर्य रहित ३ एक जाति का भद्र परंतु मन का मृग है और एक जातिका

शब्दार्थ

ए० कितनेक मं० मंदमन भ० भद्र ए० कितनेक मि० मृगमन भ० भद्र ए० कितनेक सं० संकीर्णमन च० चार ह० हस्ति मं० मंद ए० कितनेक भ० भद्रमन मं० मंद ए० कितनेक मं० मंदमन मं० मंद ए० कितनेक मि० मृगमन मं० मंद ए० कितनेक सं० संकीर्णमन ए० ऐसे च० चार पु० पुरुष जात मं० मंद ए० कितनेक भ० भद्र मन च० चार ह० हस्ति मि० मृग ए० कितनेक भ० भद्रमन मि० मृग ए० कितनेक मं० मंदमन मि० मृग ए० कितनेक मि० मृगमन मि० मृग ए० कितनेक सं० संकीर्णमन ए० ऐसे च०

सूत्र

भद्देणाममेगे भद्दमणे, भद्देणाममेगे मंदमणे, भद्देणाममेगे मियमणे, भद्देणाममेगे संकिण्णमणे । एवामेव चत्तारि पुरिस जाया प० तं० भद्देणाममेगे भद्दमणे, भद्दे णाममेगे मंदमणे, भद्देणाममेगे मियमणे, भद्देणाममेगे संकिण्णमणे। चत्तारि हत्थी प० तं० मंदेणाममेगे भद्दमणे, मंदेणाममेगे मंदमणे मंदेणाममेगे मियमणे मंदेणाममेगे संकिण्णमणे । एवामेव चत्तारि पुरिस जाया प० तं० मंदेणाममेगे भद्दमणे, तंचेव ।

भावार्थ

भद्र परंतु मन का संकीर्ण है. ऐसे ही चार पुरुष कहना. १ एक पुरुष जाति का भद्र और मन का भद्र, २ एक जाति का भद्र और मन का मंद, एक जाति का भद्र और मन का मृग और ४ एक जाति का भद्र और मन का संकीर्ण चार प्रकार के हस्ती कहे. १ जाति का मंद और मन का भद्र, २ जाति का मंद और मन का भी मंद, जाति का मंद और मन का मृग और ४ जाति का

शब्दार्थ चार पु० पुरुष जात मि० मृग कितनेक भ० भद्रमन च० चार ह० हास्त सं० संकीर्ण ए० कितनक भे० भद्रमन सं० संकीर्ण ए० कितनेक मं० मंदमन सं० संकीर्ण ए० कितनेक मि० मृगमन सं० संकीर्ण ए० कितनेक सं० संकीर्णमन ए० ऐसे च० चार पु० पुरुष जात सं० संकीर्ण ए० कितनेक भ० भद्रमन जा० यावत् सं० संकीर्ण ए० कितनेक सं० संकीर्णमन म० मधुगुटिका पिं० पीली अ० आंख अ० अनुक्रम से

सूत्र चत्तारि हत्थी प० तं० मिएणाममेगे भद्दभणे, मिएणाममेगे मंदमणे मियणाममेगे मियमणे मिएणाममेगे संकिण्णामणे एवामेव चत्तारि पुरिस जाया प० तं० मिएणाममेगे भद्दमणे तंचेव चत्तारि हत्थी प० तं० संकिण्णेणाममेगे भद्दमणे, संकिण्णेणाममेगे मंदमणे, संकिण्णेनाममेगे मियमणे, संकिण्णेनाममेगे संकिण्णमणे। एवामेव च-

भावार्थ भद्र ओर मन का संकीर्ण. ऐसे ही चार पुरुष कहे हैं. चार प्रकार के हस्ती कहे हैं १ एक जातिका मृग और मनका भद्र २ एक जातिका मृग और मनका मंद ३ एक जातिका मृग और मनका भी मृग और मनका भीमृग और एक जातिका मृग और मनका संकीर्ण ऐसेही चार पुरुष की जातिकही. अब चार प्रकार के हाथी कहे हैं. १ जातिका संकीर्ण और मनका भद्र २ एक जातिका संकीर्ण और मनका मंद, ३ एक जातिका संकीर्ण और मनका मृग और ४ एक जातिका संकीर्ण और मनका भी संकीर्ण. ऐसेही चार पुरुष पर चार भांगे कहना अब चार प्रकारके हस्ती के लक्षण कहते हैं.

शब्दार्थ

सु० उत्पन्न दी० दीर्घ लं० पूछ पु० आगे उ० उन्नत धी० धीर स० सर्वांग स० समाधि भ० भद्र च० स्थूल वि० विषम च०त्वचावाला थू०बडाशीर्ष थू०बडा पे० पूंछ थू०बडे ण०नख दं०दंत वा०बाल ह०सिंहजै से पि० पीले लो० लोचन मं० मंद त० सूक्ष्म से त० सूक्ष्म त० उनकीग्रीवा त० सूक्ष्म त० त्वचा त० सूक्ष्म दं० दांत ण० नख वा० वाल भी० डरपोक उ० उद्वेगवाला तो० शान्त भ० भय से मि० मृग ए०

सूत्र

त्तारि पुरिस जाया प० तं० संकिण्णेणाममेगे भद्दमणे; तंचेव जाव संकिण्णेणाममेगे संकिण्णमणे ॥ गाथा ॥ मधुगुलियपिंगलक्खो । अणुपुव्वसुजायदीहलंगूलो ॥ पुरओ उदगाधीरो । सव्वंगसमाहिओ भद्दो ॥ १ ॥ चलबहलविसमचम्मो । थूलसिरो थूलएण पेएण ॥ थूलणहदंतवालो । हरिपिंगललोयणो मंदो ॥ २ ॥ तणुओ तणुग्गीओ । तणुयतओ तणुयदंतणहवालो ॥ भीरूतत्थुवियग्गो । तोसीअ भए मिए णामं ॥३॥ एए-

भावार्थ

मधुगुटिका समान पीत वर्ण युक्त चक्षुवाला, बल रूपादि गुणों से भरपूर दीर्घ पूंछडा और उन्नत कुंभस्थल वाला अक्षोभ्य व सर्व लक्षणोपेत हस्ती भद्र कहाजाता है. बहु स्थूल व विषम चमडीवाला, स्थूल मस्तक पूंछडीवाला, स्थूल नख, दंत, व छोटेवालवाला वैसे ही सिंह समान पीले नेत्रवाला हस्ती मंद कहाजाता है. सूक्ष्म से भी सूक्ष्म ग्रीवा, नख, केश, बालवाला, भयभीत होनेवाला और भय आने से इन्द्रियों को स्तंभित करनेवाला हाथी मृग जाति का कहाजाता है. उक्त तीनों हाथी को थोडा बहुत मिलता होवे

शब्दार्थ

इन ह० हस्ति में थो० थोडा २ जो० जो अ० अनुसरता है ह० हस्ती रू० रूप से सी० शील से सो० वह सं० संकीर्ण णा० जानना भ० भद्र म० मस्त होता है स० शरद्ऋतु में मं० मंद उ० मस्त होता है व० वसंतऋतु में मि० मृग उ० मस्त होता है हे० हेमन्त में सं० संकीर्ण स० सर्व काल में ॥ ५ ॥ च० चार वि० विकथा प० प्ररूपी इ० स्त्रीकथा भ० भक्तकथा दे० देशकथा रा० राजकथा इ० स्त्रीकथा च०

सूत्र

सिं हत्थीणं। थोवं थोवंतु जो अणुहरइ हत्थी॥ रूवेण व सीलेण वा सो संकिण्णोत्ति णायव्वो ॥ ४ ॥ भद्दो मज्जइ सरए। मंदो उम्मजए वसंतम्मि ॥ मिउ मज्जइ हेमंते। संकिण्णो सव्वकालम्मि ॥ ५ ॥ चत्तारि विकहाओ पण्णत्ताओ तं० इत्थिकहा, भत्तकहा, देसकहा, रायकहा। इत्थिकहा चउव्विहा प० तं० इत्थीणं जाइकहा, इत्थीणं कुलकहा,

भात्रार्थ

सो संकीर्ण जाति का हस्ती जानना. भद्र जाति का हस्ती शरत्काल में मद में आता है, मंद जाति का हस्ती वसंत ऋतु में मद में आता है. मृग जाति का हस्ती हेमंत काल में मद में आताहै और संकीर्ण जाति का हस्ती को सब काल में मद चढता है ॥ ५ ॥ चार प्रकार की कथा कही. स्त्री कथा, भक्त [भोजन] कथा, देश कथा, और राज कथा. स्त्री की कथा चार प्रकार की स्त्री की जाति की कथा, स्त्री के कुल की कथा, स्त्री के रूप की कथा और स्त्री के वेश की कथा. भक्त कथा चार प्रकार की १ भोजन को अच्छा बुरा बोलना सो आवाप कथा, पक्वान्न के भेदों की प्रशंसा करे और दोष नी-

शब्दार्थ

च० चार प्रकार की इ० स्त्री की जा० जातिकथा इ० स्त्री की कुलकथा इ० स्त्री की रू० रूपकथा इ० स्त्री के ने० वस्त्र कथा भ० भक्तकथा च० चार प्रकार की भ० भक्त की आ० आवाप कथा भ० भक्तकी णि० निर्व्याप कथा भ० भक्तकी आ० आरंभ कथा भ० भक्तकी निष्ठानकथा दे० देशकथा च० चार प्रकार की दे० देशविधि कथा दे० देशविकल्प कथा दे० देशछंद कथा दे० देशवस्त्र कथा रा० राजकथा

सूत्र

इत्थीणं रूवकहा, इत्थीणं नेवत्थकहा । भत्तकहा चउव्विहा प० तं० भत्तस्स आवावकहा, भत्तस्स णिव्वावकहा, भत्तस्स आरंभकहा, भत्तस्स णिट्ठाणकहा । देसकहा चउव्विहा प० तं० देसविहिकहा, देसविकप्पकहा, देसच्छंदकहा, देसनेवत्थकहा रायकहा

भावार्थ

काले सो निर्वाप कथा, भोजन में लुण, मिरची कमज्यादा बोलना सो भोजन के आरंभ की कथा और अमुक द्रव्य अमुक वस्तु में डालने से ही वस्तु अच्छी बनती ऐसा कहना सो निष्ठान कथा। देश कथा चार प्रकारकी अमुक देश में खान, पान वस्त्रादि पहिनने की विधि अच्छी या बूरी है ऐसा कहना सो देश विधि कथा, अमुक देश का निधान, कोट, भुवनादिक की कथा करना सो देश विकल्प कथा, अमुक देश के लोक गाथा, श्लोक, छंद, दुहा आदिके जाननेवाले हैं सो देश छंद कथा, देश के स्त्री पुरुष के वेष की कथा सो देश नेपथ्य कथा राज कथा। चार प्रकार की राजा के आतियान की कथा

शब्दार्थ

च० चार प्रकार की र० राजा अतियान कथा र० राजनिज्जान कथा र०राजा का ब० सैन्य वा० वाहन कथा र० राजा का कोष्ठागार कथा ॥ ६ ॥ च० चार प्रकार की कथा अ० आक्षेपनी कथा वि० विक्षेपनी सं० संवेगनी णि० निर्वेगनी अ० आक्षेपनी कथा च० चार प्रकार की आ० आचाराक्षेपनी ब० व्यवहाराक्षेपनी प० प्रज्ञप्ति आक्षेपनी दि० दृष्टिवादाक्षेपनी वि० विक्षेपनी कथा च० चार प्रकार की स० स्वसमय

सूत्र

चउव्विहा प० तं० रण्णो अइयाणकहा, रण्णो निज्जाणकहा, रण्णोबलवाहणकहा, रण्णो कोसकोट्ठागारकहा॥ ६॥ चउव्विहा कहा प० तं० अक्खेवणी, विक्खेवणी, संवेगणी णिव्वेगणी। अक्खेवणी कहा चउव्विहा प० तं० आयारक्खेवणी, ववहारक्खेवणी पण्णत्तिक्खेवणी। दिट्ठिवाय अक्खेवणी। विक्खेवणीकहा चउव्विहा प० तं० ससमयं कहेइ, ससमयं कहेत्ता

भावार्थ

सो राजा के नगर प्रवेश की वार्ता, सामंतादि मिलकर गाजते बाजते नगर की बाहिर नीकलने की कथा सो राजा की निर्याण कथा, राजा का बल, वाहन की कथा, और राजा का कोश कोठार की कथा करना ॥ ६ ॥ और भी चार प्रकार की कथा. १ मोह से आत्मा को आकर्षनेवाली आक्षेपनी कथा, २ आत्मा को सन्मार्ग में से कुमार्ग में और कुमार्ग में से सन्मार्ग में लावे सो विक्षेपनी कथा, ३ जिस कथा सुनने से वैराग्य उत्पन्न होवे सो संवेगनी, ४ जिस को सुनने से आत्मा निर्वेद प्राप्त करे सो निर्वेगणी. आक्षेपनी कथा चार प्रकार की आचार का कहना सो आचार की कथा, पाप से निवर्तने योग्य

शब्दार्थ क० कहे स० स्वसमय क० कहता प० परसमय क० कहे प० परसमय क० कहता स० स्वसमय ठा० स्थानपकरे स० सम्यक् वाद क० कहे स० सम्यक् वाद क० कहता मि० मिथ्यावाद कहे मि० मिथ्यावाद क० कहता स० सम्यक् वाद ठा० स्थापनकरे सं० संवेगनी कथा च० चार प्रकार की इ० यह लो० लोकसंवेगनी प० परलोक संवेगनी आ० आत्म शरीर संवेगनी प० परशरीर संवेगनी णि० निर्वेगनी कथा

सूत्र परसमयं कहेइ परसमयंकहेत्ता ससमयं ठावित्ता भवइ; सम्मावायं कहेइ, सम्मावायं कहेत्तामिच्छावायंकहेइ; मिच्छावायं कहेत्ता सम्मावायं ठावइत्ता भवइ । संवेगणीकहा चउव्विहा प० तं० इहलोग संवेगणी, परलोगसंवेगणी, आयसरीरसंवेगणी, परसरीर

भावार्थ प्रायश्चित्त देवे सो व्यवहार शुद्ध करने की कथा, संशयवाले पुरुष को मधुर वचन से कहना अथवा जम्बूद्वीप प्रज्ञप्ति प्रमुख सो प्रज्ञप्ति आक्षेपणी, सूक्ष्म जीवादिक की अथवा दृष्टिवाद सूत्र की कथा सो दृष्टिवाद आक्षेपणी. विक्षेपणी कथा चार प्रकार की. १ स्वसमय के गुणों का कथन करके उन को प्रदिप्त करे और अपना गुण कहता हुवा परसमय के दोषों बतलावें २ परसमय के दोषों बताते अपने समय की स्थापना करे ३ सम्यग् वाद का कथन करते हुवे मिथ्यावाद के दोषों बतलावे ४ और मिथ्यावाद कहकर सम्यक् वाद की स्थापना करे. संवेगनी कथा चार प्रकार की यह सब मनुष्यादि असार है सो इहलोग संवेदनी, २ देवतादिक भी ईर्षा, विषाद, भय, वियोग और दुःख से पराभवे हुवे हैं सो परलोक संवेदनी,

शब्दार्थ

च० चार प्रकार की इ० इस लोकमें दु० खराब किये कर्म इ० इसलोक में दु० दुःख फलका वि० विपाक सं० युक्त भ० होवे इ० इसलोक में दु० खराब कियेकर्म प० परलोक में दु० दुःख फल का वि० विपाक सं० युक्त भ० होवे प० परलोक में दु० खराब कियेकर्म इ० इसलोक में दु० दुःख फल का वि० विपाक स० युक्त भ० होवे प० परलोक में दु० खराब कियेकर्म प० परलोक में दु० दुःखफल का वि० विपाक सं० युक्त भ०

सूत्र

संवेगणी । णिव्वेगणी कहा चउव्विहा प० तं० इहलोग दुच्चिण्णाकम्मा इहलोगदुहफलविवागसंजुत्ता भवंति । इहलोगदुच्चिण्णाकम्मा परलोग दुहफल विवाग संजुत्ता भवंति, परलोग दुच्चिण्णाकम्मा इहलोग दुहफल विवाग संजुत्ता भवंति,

भावार्थ

३ यह शरीर विष्टादिक से बना हुवा है सो आत्म शरीर संवेदनी, ४ वैसे ही अन्य का शरीर बना हुवा है सो पर शरीर संवेदनी. निर्वेदनी कथा चार प्रकार की १ इस लोक में किये हुवे अशुभ कर्मों का फल इस लोक में ही मिलता है जैसे चोर को चोरी का फल मिलता है, २ इस लोक में किये हुवे अशुभ कर्मों के फल पर लोक नरकादिक में दुःख रूप मिलते हैं. ३ पीछले भव में किये हुवे अशुभ कर्मों के फल इस लोक में दुःख रूप मिलते हैं और ४ पर लोक में किये हुवे पाप कर्मों के फल से यहां पर काक, गीध आदि होवे और यहां से चवकर अन्य स्थान नरकादिक में जावे. और भी चार भांगे कहते हैं

शब्दार्थ होवे इ० यहलोक में सु० अच्छे कियेकर्म इ० यहलोक में सु० अच्छाफल का० वि० विपाक सं० भोगना भ० होवे इ० यहलोक में सु० अच्छे कियेकर्म प० परलोक में सु० अच्छेफल का वि० विपाक सं० भोगना भ० होवे ॥ ७ ॥ च० चार पु० पुरुष जात कि० कृश ए० कितनेक कि० कृश कि० कृश ए० कितनेक द० दृढ द० दृढ ए० कितनेक कि० कृश द० दृढ ए० कितनेक द० दृढ च० चार पुरुषजात

सूत्र परलोग दुच्चिण्णाकम्मा परलोग दुहफल विवाग संजुत्ता भवंति ॥ इहलोग सुचिण्णाकम्मा इहलोग सुहफल विवाग संजुत्ता भवंति, इहलोग सुचिण्णाकम्मा परलोग सुहफल विवाग संजुत्ता भवंति, एवं चउभंगो तहेव ॥ ७ ॥ चत्तारि पुरिस जाया प० तं० किसेणाममेगे किसे, किसेणाममेगे दढे, दढेणाममेगेकिसे, दढे णाममेगे दढे,

भावार्थ १ इस लोक में किये हुवे अच्छे कर्मों के फल इसी लोक में सुखदायी होते हैं. २ इस लोक में अच्छे कर्मों के फल अन्य लोक में सुखदायी होते हैं. ३ पीछले भव के शुभ कर्मों के फल इस लोक में सुखदायी होते हैं और ४ पर लोक में किये हुवे शुभ कर्मों के फल से यहां सुख की प्राप्ति करके फीर पर लोक में भी सुख की प्राप्ति करते हैं ॥ ७ ॥ चार प्रकार के पुरुष कहे हैं १ एक शरीर से दुर्बल और भाव से दुर्बल (हीन सत्त्ववाला) २ एक शरीर से कृश और भाव से दृढ सत्त्व का धणी, ३ एक शरीर

शब्दार्थ

कि० कृश ए० कितनेक कि० कृश शरीर कि० कृश ए० कितनेक द० दृढ शरीर द० दृढ ए० कितनेक कि० कृश शरीर द० दृढ ए० कितनेक द० दृढ च० चार पु० पुरुष जात कि० कृश को ए० एक णा० ज्ञान दं० दर्शन स० उत्पन्न होता है णो० नहीं द० दृढ शरीरी को द० दृढ शरीरी को ए० एक णा० ज्ञान दं० दर्शन स० उत्पन्न होता है णो० नहीं कि० कृश शरीरी को ए० एक कि०

सूत्र

चत्तारि पुरिस जाया प० तं० किसे णाममेगे किससरीरे, किसेणाममेगे दढसरीरे, दढेणाममेगे किससरीरे दढे णाममेगे दढ सरीरे ॥ चत्तारि पुरिस जाया प० तं० किसस्स णाममेगस्स णाणदंसणे समुप्पज्जइ णोदढसरीरस्स, दढ सरीरस्स णाममेगस्स णाणदंसणे समुप्पज्जइ णो किससरीरस्स, एगस्स किस सरीरस्सवि णाणदंसणे

भावार्थ

से दृढ और भाव से कृश, ४ एक शरीर से दृढ और भाव से दृढ. चार प्रकार के पुरुष १ एक सत्त्व से कृश और शरीर से कृश, २ एक सत्त्व से कृश और शरीर से दृढ ३ एक सत्व से दृढ और शरीर का कृश और ४ एक सत्व से दृढ और शरीर का दृढ। और भी चार प्रकार के पुरुष कहे हैं. १ कृश शरीरवाले को ज्ञानावरणीयादिक के क्षयोपशम से ज्ञान दर्शन उत्पन्न होता है परंतु दृढ शरीरवाले को नहीं उत्पन्न होता है, २ दृढ शरीरवाले को ज्ञान दर्शन उत्पन्न होता है परंतु कृश शरीरवाले को ज्ञान दर्शन नहीं उत्पन्न होता है, ३ कृश शरीरवाले को ज्ञान दर्शन उत्पन्न होता है, वैसे ही दृढ शरीरवाले को

शब्दार्थ

कृश शरीरी को णा० ज्ञान दं० दर्शन स० उत्पन्न होता है द० दृढ शरीरी को ए० एक णो० नहीं कि० कृश शरीरी को णा० ज्ञान दं० दर्शन स० उत्पन्न होता है णो० नहीं द० दृढ शरीरी को ॥ ८ ॥ च० चार स्थान से णि० साधु णि० साध्वी अ० इस समय में अ० अतिशेष ज्ञा० ज्ञान दं० दर्शन स० उत्पन्न होता णो० नहीं स० उत्पन्न होवे अ० वारंवार इ० स्त्री कथा भ० भक्त कथा दे० देशकथा रा० राजकथा क० करता भ० होवे वि० विवेक वि० व्युत्सर्ग णो० नहीं स० सम्यक् अ० आत्मा को भा० भावता भ० होवे पु० पूर्वकाल में णो० नहीं ध० धर्म जागरण जा० जागता भ० होवे फा० फासुक ए० एषनिक उं०

सूत्र

समुप्पज्जइ दढसरीरस्सवि, एगस्स णो किससरीरस्स णाणदंसणे समुप्पज्जइ णो दढसरीरस्स ॥८॥ चउहिं ठाणेहिं णिग्गंथाणवा णिग्गंथीणवा अस्सिं समयंसि अइसेसे णाणदंसणे समुप्पज्जिउकामेवि णो समुप्पज्जेज्जा—अभिक्खणं २ इत्थिकहं, भत्तकहं, देसकहं, रायकहं कहेत्ता भवइ; विवेगेणं विउस्सग्गेणं णोसम्ममप्पाणं भावेत्ता भवइ, पुव्वरत्तावरत्त-काल समयंसि णोधम्म जागरियं जागरित्ता भवइ, फासुयस्स एसणिज्जस्स उंछस्स सामुदा-

भावार्थ

भी उत्पन्न होता है, और ४ कृश शरीरवाले को ज्ञान दर्शन की उत्पत्ति नहीं होती है और वैसे ही दृढ शरीरवाले को भी ज्ञान दर्शनकी उत्पत्ति नहीं होती है ॥८॥ चार कारण से इस समय में किसी साधु साध्वी को केवल ज्ञान केवलदर्शनकी प्राप्ति होती होवे तो भी नहीं होती है. १ वारंवार स्त्री कथा, भक्त कथा, देश

शब्दार्थ

शुद्ध सा० सामुदानिक णो० नहीं स० सम्यक् गा० गवेषता भ० होवे इ० इन च० चार स्थान से० णि० साधु णि० साध्वी को जा० यावत् णो० नहीं स० उत्पन्न होवे च० चार स्थान से णि० साधु णि० साध्वी अ० अतिशेष ना० ज्ञान दं० दर्शन स० उत्पन्न होता स० उत्पन्न होवे इ० स्त्री कथा भ० भक्तकथा दे० देशकथा रा० राजकथा णो० नहीं क० करता भ० होवे वि० विवेक वि० व्युत्सर्ग स० सम्यक् अ० आत्मा को भा० भावता भ० होवे पु० पहिली र० रात्रिकाल में ध० धर्म जागरण जा० जागता भ० होवे फा० फ्रासुक ए० ऐषनिक उं० शुद्ध स० सामुदानिक स० सम्यक् ग० गवेषता भ० होवे इ० इन

सूत्र

णियस्स णोसम्मं गवेसइत्ता भवइ इच्चेएहिं चउहिं ठाणेहिं णिग्गंथाणवा णिग्गंथीणवा जाव णोसमुप्पज्जेज्जा । चउहिं ठाणेहिं निग्गंथाणवा निग्गंथीणवा अइसेसे नाणदंसणे समुप्पज्जिउकामे समुप्पज्जेज्जा तं० इत्थिकहं, भत्तकहं, देसकहं, रायकहं णो कहेत्ता भवइ; विवेगेण विउस्सग्गेणं सम्ममप्पाणं भावेत्ता भवइ; पुव्वरत्तावरत्तकाल समयंसि धम्मजागरियं जागरित्ता भवइ, फासुयस्स एसणिज्जस्स उंछस्स सामुदाणियस्स सम्मंगवेसइत्ता

भावार्थ

कथा और राज कथा करने से, २ विवेक युक्त वियुत्सर्ग से आत्मा को नहीं भावने से, ३ पीछली रात्रि में धर्म जागरणा नहीं करने से और ४ फ्रासुक ऐषणिक आहार की गवेषणा नहीं करने से। इस समय में चार कारणसे साधु साध्वीको केवल ज्ञान केवल दर्शनकी प्राप्ति होती है। स्त्री कथादि विकथा नहीं करनेसे,

शब्दार्थ

चार स्थान से णि० साधु णि० साध्वी जा० यावत् स० उत्पन्न करे ॥ ९ ॥ णो० नहीं क० कल्पता है. नि० साधु णि० साध्वी को म० महाप्रतिपदा को स०सज्झाय क० करना आ० अषाढ प्रतिपदा इं०आश्विन प्रतिपदा क० कार्तिक प्रतिपदा सु० फाल्गुण प्रतिपदा णो० नहीं क० कल्पता है नि० साधु नि०साध्वी को च० चार सं० संध्या में स० सज्झाय क० करना प० प्रथम प० पश्चिम म० मध्यम अ० अर्धरात्रि में

सूत्र

भवइ । इच्चेएहिं चउहिं ठाणेहिं णिग्गंथाणवा णिग्गंथीणवा जाव समुप्पज्जेजा ॥ ९ ॥

णोकप्पइ निग्गंथाणवा निग्गंथीणवा चउहिं महापडिवएहिं सज्झायं करेत्ता तं० आसाढ पाडिवए, इंदपाडिवए, कत्तियपाडिवए सुगिम्हपाडिवए । णो कप्पइ निग्गंथाणवा निग्गंथीणवा चउहिं सज्झायं करेत्तए तं० पढमाए, पच्छिमाए, मज्झण्हे, अद्धरत्ते ।

भावार्थ

विवेक युक्त कायोत्सर्ग करने से, सदैव पीछली रात्रि में धर्म जागरणा करने से और निर्दोष आहार पानी ग्रहण करने से ॥ ९ ॥ साधु साध्वी को चार बडी प्रतिपदा को सूत्र की स्वाध्याय करना कल्पता नहीं है. १ आषाढ प्रतिपदा, इन्द्र (आश्विन) प्रतिपदा, कार्तिक प्रतिपदा, और ग्रीष्मकाल (फाल्गुन) की प्रतिपदा । चार संध्या में स्वाध्याय करना साधु साध्वी को नहीं कल्पता है. प्रथम संध्या सो सूर्योदय से दो घटीका, पश्चिमाह्न सो सूर्यास्त से दो घटिका, मध्याह्न सो दो प्रहरकी दो घटिका और मध्य रात्रि में भी दो घटिका। साधु साध्वी को चार प्रहर में स्वाध्याय करना कल्पता है दिन के प्रथम

१ प्रत्येक माहिने की पूर्णिमा पीछे आती हुई प्रतिपदा यहांपर ग्रहण की गई है.

शब्दार्थ

क० कल्पता है णि० साधु णि० साध्वी को च० चार काल स० सज्झाय क० करने को पु० पूर्वाह्न अ० अपराह्न प० प्रदोष में प० प्रत्युष में ॥ १० ॥ च० चार प्रकार की लो० लोकस्थिति आ० आकाश प० प्रतिष्ठित वा० वायु वा० वायु प० प्रतिष्ठित उ० उदधि उ० उदधि प० प्रतिष्ठित पु० पृथिवी पु० पृथिवी प० प्रतिष्ठित त० त्रसस्थावर प्राणी ॥ ११ ॥ च० चार पुरुष जात प० प्ररूपी त० तथ्य ए० कितनेक णो० नहीं त० तथ्य ए० कितनेक सो० सौवस्तिक ए० कितनेक प० प्रधान ए० कितनेक ॥ १२ ॥ च०

सूत्र

कप्पइ णिग्गंथाणवा णिग्गंथीणवा चउक्कालं सज्झायं करेत्तए पुव्वण्हे, अवरण्हे पओसे पच्चूसे ॥ १० ॥ चउव्विहा लोगट्ठिई प०तं० आगासपइट्ठिए वाए, वायपइट्ठिएउदही, उदहि पइट्ठिया पुढवी, पुढविपइट्ठिया तसा थावरा पाणा ॥११॥ चत्तारि पुरिस जाया पण्णत्ता तं० तहेणाममेगे, णोतहेणाममेगे, सोवत्थीणाममेगे, पहाणेणाममेगे ॥ १२ ॥

भावार्थ

प्रहर में, दिन के छेल्ले प्रहर में, रात्रि के प्रथम प्रहर में और रात्रि के छेल्ले प्रहर में ॥ १० ॥ चार प्रकारसे लोक स्थिति कही है १ आकाश प्रतिष्ठित वायु, २ वायु प्रतिष्ठित उदधि, ३ उदधिप्रतिष्ठित पृथ्वी ४ पृथ्वी प्रतिष्ठित सब त्रस स्थावर जीवों हैं ॥ ११ ॥ चार प्रकार के पुरुष कहे हैं. १ एक पुरुष सत्यवादी, २ एक पुरुष असत्यवादी ३ एक पुरुष सौवस्तिक [मंगलिक] बोलनेवाला ४ और एक प्रधान पुरुष सो पुण्यवन्त आराधने योग्य ॥ १२ ॥ चार प्रकार के पुरुष कहे हैं, १ एक

शब्दार्थ चार पु०पुरुषजात आ०आत्मा का अंतकरे ए०कितनेक णो० नहीं प०परका करे प०परका करे ए०कितनेक णो० नहीं आ० आत्मा का करे ए० कितनेक आ० आत्मा का करे प० परका करे ए० कितनेक णो० नहीं आ० आत्मा का करे णो० नहीं प० परका करे च० चार पु० पुरुष जात आ० आत्मतमा ए० कितनेक णो० नहीं प० परतमा प० परतमा ए० कितनेक णो० नहीं आ० आत्मतमा च० चार पु० पुरुष ३४९

सूत्र चत्तारि पुरिसजाया प० तं० आयंतकरेणाममेगे णोपरंतकरे, परंतकरेणाममेगे णो आयंतकरे, एगे आयंतकरेवि परंतकरेवि, एगे णो आयंतकरे णोपरंतकरे । चत्तारि पुरिस जाया प० तं० आयंतमेणाममेगे णो परंतमे, परंतमेणाममेगे णो आयंतमे, ४ ।

भावार्थ आत्मा को मोक्ष पहुंचावे परंतु अन्य के भव का अंत न करावे प्रत्येक बुद्धादि साधुवत् २ एक अन्य के भव का अंत करावे परंतु अपना आत्माके भवका अंत करे नहीं अभव्य आचार्यादि, ३ एक अपना आत्मा के भव का अंत करे और पर के भव का भी अंत करे तीर्थंकरादि ४ एक अपना आत्मा का भी अंत करे नहीं और अन्य के आत्मा का भी अंत करें नहीं कालकाचार्य या मूर्ख। चार प्रकार के पुरुष कहे हैं. १ एक अपना आत्मा पर क्रोध करे परंतु अन्य पर क्रोध न करे, २ एक अपना आत्मा पर क्रोध न करे परंतु अन्य के पर क्रोध करे. ३ एक अपना आत्मा पर क्रोध न करे और अन्य पर भी क्रोध करे

शब्दार्थ

जात आ० आत्मा को द० दमने वाला ए० कितनेक णो० नहीं प० दूसरे को द० दमने वाला प० दूसरे को द० दमने वाला ए० कितनेक णो० नहीं आ० आत्मा को द० दमने वाला ए० कितनेक आ० आत्मा को द० दमने वाला प० दूसरे को द० दमने वाला ए० कितनेक णो० नहीं आ० आत्मा को द० दमने वाला णो० नहीं प० दूसरे द० दमने वाला ॥ १३ ॥ च० चार प्रकार की ग० गर्हा सं० स्वदोष प्रकाशे वि० निन्दा करे जं० जो किं०किंचित् मि०मिथ्या दुष्कृत ए० ऐसे प०चिंतवना ए० एक ग० गर्हा

सूत्र

चत्तारि पुरिस जाया प० तं० आयंदमेणाममेगे णोपरंदमे, परंदमेणाममेगे णो आयंदमे, एगे आयंदमेवि परंदमेवि, एगे णो आयंदमे णो परंदमे ॥ १३ ॥ चउव्विहा गरहा प० तं० उवसंपज्जामि एगा गरहा, वितिगिच्छामि एगा गरहा, जं-

भावार्थ

नहीं और ४ एक अपना आत्मा पर क्रोध करे और अन्य पर भी क्रोध करे। और भी चार पुरुष कहे हैं एक अपना आत्मा को दमते हैं परंतु अन्य को नहीं दमते हैं, २ एक अपना आत्मा को नहीं दमते हैं परंतु अन्य को दमते हैं, ३ एक अपने आत्मा को भी दमता है और अन्य की आत्मा को भी दमता है ४ और एक न अपने आत्मा को दमता है और न अन्य के आत्मा को दमता है ॥ १३ ॥ भगवंतने चार प्रकार की गर्हा कही है १ गुरु आदि के सन्मुख आकर अपने पापों की निन्दा करना सो एक गर्हा, २ शंका करता हुवा किये हुवे पापों की निन्दा करना यह दूसरी गर्हा, ३ किये हुवे पापों का

॥ १४ ॥ च० चार पु० पुरुष जात अ० आत्मा को ए० कितनेक अ० रोकता है णो० नहीं प० दूसरे को प० दूसरे को ए० कितनेक अ० रोकते हैं णो० नहीं अ० आत्मा को ए० कितनेक अ० आत्मा को अ० रोकते हैं प० दूसरे को ए० कितनेक णो० नहीं अ० आत्मा को अ० रोकते हैं णो० नहीं प० दूसरे को ॥ १५ ॥ च० चार म० मार्ग उ० सरल ए० कितनेक उ० सरल उ० सरल ए० कितनेक वं०

किंचिमिच्छामि एगा गरहा एवं पि पण्णत्ति एगा गरहा ॥ १४ ॥

चत्तारि पुरिस जाया प० तं० अप्पणोणाममेगे अलमंथू भवइ णोपरस्स, परस्सणाममेगे अलमंथू भवइ णोअप्पणो, एगे अप्पणोवि अलमंथू भवइ परस्सवि, एगे णोअप्पणो अलमंथू भवइ णोपरस्स । ॥ १५ ॥ चत्तारि मग्गा प० तं० उज्जुणाममेगे उ-

मिथ्या दुष्कृत लेना सो तीसरी गर्हा और ४ और जिस दोष की जिस प्रकार शुद्धि होवे सो चौथी गर्हा. ॥ १४ ॥ चार प्रकार के पुरुष कहे हैं १ एक अपनी आत्मा को पाप से निवारने को समर्थ होवे परंतु पर की आत्मा को पाप से निवारने में समर्थ नहीं होवे २ एक पुरुष अन्य की आत्मा को निवारने में समर्थ होवे परंतु अपनी आत्मा को निवारने में समर्थ होवे नहीं, ३ एक अपनी आत्मा को निवारने में समर्थ होता है और अन्य की आत्मा को भी निवारने में समर्थ होता है ४ एक न तो अपनी आत्मा को निवारने में समर्थ होता है और न पर की आत्मा को निवारने में समर्थ होता है. ॥ १५ ॥ चार प्रकार के

शब्दार्थ

वांके वं०वांके ए० कितनेक उ० सरल वं० वांके ए० कितनेक वं०वांके ए०ऐसे च०चार पु० पुरुष जात उ० सरल ए० कितनेक स० सरल च० चार म० मार्ग खे० क्षेम ए० कितनेक खे० क्षेम खे० क्षेम ए० कितनेक अ० अक्षेम ए० ऐसे च० चार पु० पुरुष जात खे० क्षेम ए० कितनेक खे० क्षेम च० चार म० मार्ग खे०

सूत्र

उज्जु, उज्जुणाममेगे वंके, वंकेणाममेगे उज्जु, वंकेणाममेगे वंके । एवामेव चत्तारि पुरिस जाया प० तं० उज्जुणाममेगे उज्जु, ४। चत्तारि मग्गा प० तं० खेमेणाममेगे खेमे, खेमेणाममेगे अखेमे ४ । एवामेव चत्तारि पुरिस जाया प० तं०

भावार्थ

मार्ग कहे हैं १ एक मार्ग आदि में सरल और अंत में भी सरल २ एक मार्ग आदि में सरल और अंत में वक्र ३ एक आदि में वक्र और अंत में सरल और ४ एक आदि में वक्र और अंत में भी वक्र। ऐसे ही चार प्रकार के पुरुष कहे हैं. १ एक पुरुष आदि में तत्त्व का जान और अंत में भी तत्त्व का जान, २ एक आदि में सरल और पीछे वक्र ३ एक आदि में वक्र और अंत में सरल और ४ एक आदि में वक्र और अंत में भी वक्र। चार प्रकार का मार्ग कहा. १ एक मार्ग आदि में क्षेम [उपद्रव रहित] और पीछे भी क्षेम २ एक मार्ग आदि में क्षेम और पीछे अक्षेम (उपद्रव सहित) ३ एक मार्ग आदि में अक्षेम और अंत में क्षेम और ४ एक मार्ग आदि में अक्षेम और अंत में भी अक्षेम। ऐसे ही पुरुष जाति पर

शब्दार्थ

क्षेम ए० कितनेक खे० क्षेमरूप खे० क्षेम ए० कितनेक अ० अक्षेमरूप ए० ऐसे च० चार पु० पुरुष जात खे० क्षेम ए० कितनेक खे० क्षेमरूप ॥ १६ ॥ च० चार सं० संख वा० डावे ए० कितनेक वा० डावा आवर्त वा० डावे ए० कितनेक दा० जिमना आवर्त दा० जिमना ए० कितनेक वा० डावा आवर्त

सूत्र

खेमेणाममेगे खेमे ४ । चत्तारि मग्गा प० तं० खेमेणाममेगे खेमरूवे, खेमेणाममेगे अखेमरूवे, ४ । एवामेव चत्तारि पुरिस जाया प० तं० खेमेणाममेगे खेमरूवे ॥१६॥ चत्तारि संवुक्का प० तं० वामे णाममेगे वामावत्ते, वामेणाममेगे दाहिणावत्ते, दाहिणे णाममेगे वामावत्ते, दाहिणे णाममेगे दाहिणावत्ते, । एवामेव चत्तारि पुरिस

भावार्थ

चार भांगे कहना, और भी चार प्रकार का मार्ग कहा, १ एक मार्ग क्षेम और सुरूप २ एक मार्ग उपद्रव रहित परंतु स्वच्छ नहीं यों चार भांगे कहना । वैसे ही पुरुष जाति पर भी चार भांगे जानना ॥ १६ ॥ चार प्रकार के शंख कहे हैं. १ एक शंख वाम बाजु पे रहा है और अंदर का आवर्त भी वाम है. (यह दुःखदायी है) १ एक शंख वाम बाजु में रहा है परंतु उस का आवर्त दक्षिण है यह सुखदायी है. ३ एक शंख दक्षिण बाजु में है परंतु आवर्त वाम है [यह दुःखदायी है] और ४ एक शंख दक्षिण बाजु का रहा है और आवर्त भी दक्षिण है. (यह बहुत सुखदायी है)। ऐसे ही चार पुरुष कहे हैं. १ एक पुरुष स्वभाव का वाम [वक्र] और प्रवृत्तिका भी वक्र २ एक पुरुष स्वभावका वक्र परंतु प्रवृत्तिका सरल,

शब्दार्थ

दा० जिमना ए० कितनेक दा० जिमना आवर्त ए० ऐसे च० चार पु० पुरुष जात वा० डाबे ए० कितनेक वा० डाबा आवर्त च० चार धू० धूम्र शिखा प० प्ररूपी वा० डाबी ए० कितनेक वा० डाबा आवर्त ए० ऐसे च० चार इ० स्त्री वा० डाबी ए० कितनेक वा० डाबा आवर्त च० चार अ० अग्निसिखा वा० डाबी

सूत्र

जाया प० तं० वामेणाममेगे वामावत्ते ॥ चत्तारि धूमसिहाओ पण्णत्ताओ तं० वामाणाममेगा वामावत्ता, ४ । एवामेव चत्तारि त्थियाओ प० तं० वामाणाममेगा वामावत्ता, ४ । चत्तारि अग्गिसिहाओ प० तं० वामाणाममेगा वामावत्ता, ४ । एवामेव चत्तारि त्थियाओ पण्णत्ताओ, तं० वामाणाममेगा वामावत्ता, ४ । चत्तारि वायमंडलिया प० तं० वामाणाममेगा वामावत्ता, ४ । एवामेव चत्तारि त्थियाओ

भावार्थ

एक पुरुष स्वभाव का सरल परंतु प्रवृत्ति वक्र और एक का स्वभाव भी सरल है और प्रवृत्तिका भी सरल है । चार प्रकार की धूम्र शिखा कही १ एक धूम्र शिखा बायें तरफ है और उस का आवर्त भी बायें तरफ है २ एक धूम्र शिखा बायें तरफ है परंतु आवर्त दक्षिण तरफ है ३ एक धूम्र शिखा दक्षिण तरफ है परंतु आवर्त बायें तरफ है और ४ एक धूम्र शिखा दक्षिण तरफ है और आवर्त भी दक्षिण तरफ है । ऐसे ही चार प्रकार की स्त्रियों कही. एक का स्वभाव वक्र और प्रवृत्ति भी वक्र, एक का स्वभाव वक्र और प्रवृत्ति सरल ऐसे चारों भांगे कहना । चार प्रकार की अग्नि शिखा. एक शिखा वाम है और आ-

शब्दार्थ

ए० कितनेक वा० डाबी आवर्त च० चार वा० वायुमंडल वा० डाबे ए० कितनेक वा० डाबा आवर्त ए० ऐसे च० चार ए० पुरुष जात वा० डाबे ए० कितनेक वा० डाबा आवर्त ॥ १७ ॥ च० चार स्थान से णि० साधु णि० साध्वी आ० बोलते हुवे सं० विशेष भाषण करते ण० नहीं अ० अतिक्रमते हैं पं० रस्ता पूछते पं० रस्ता बतलाते अ० असन पा० पानी खा खादिम सा० स्वादिम द० देते

सूत्र

प० तं० वामाणाममेगा वामावत्ता ४ । चत्तारि वणखंडा प० तं० वामेणाममेगे वामावत्ते ४ । एवामेव पुरिस जाया प० तं० वामेणाममेगे वामावत्ते, ४ ॥ १७ ॥ चउहिंठाणेहिं णिग्गंथे णिग्गंथिं आलवमाणेवा, संलवमाणेवा, णाइक्कमइ तं० पंथंपुच्छमाणे, पंथंदेसमाणे, असणंवा पाणंवा खाइमंवा साइमंवा दलयमाणेवा,

भावार्थ

वर्त भी वाम है यों चार भांगे कहना । वैसे ही चार भांगे स्त्रियों पर कहना । वायुमंडली के चार भांगे कहे. एक वायु मंडली वाम है और आवर्त भी वाम है यों चारों भांगे जानना । और ऐसे ही स्त्री जाति पर चार भांगे जानना । चार प्रकार का वनखंड कहा. एक वनखंड वाम बाजु में है और वायु से उस का आवर्त भी वाम बाजु में है । यों चारों भांगे कहना और पुरुष जाति पर भी चार भांगे उतारना ॥ १७ ॥ चार कारण से साधु अकेली साध्वी की साथ वार्तालाप करता हुवा भगवंत की आज्ञा का उल्लंघन नहीं करे १ मार्ग का अज्ञान होने से मार्ग की पृच्छा करे, २ मार्ग बतावे, ३ अशन, पान, खादिम स्वादिम,

शब्दार्थ द० दिलाते ॥ १८ ॥ त० तमस्काया के च० चार णा० नाम त० तम त० तमस्काय अं० अंधकार म० महांधकार त० तमस्काय के च० चार णा० नाम लो० लोकांधकार लो० लोकतम दे० देवांधकार दे० देवतम त० तमस्काय के च० चार णा० नाम वा० वायुफलिका वा० वायुफलिका का क्षोभ

सूत्र दवावेमाणे वा ॥ १८ ॥ तमुक्कायस्सणं चत्तारि णामधेज्जा प० तं० तमेइवा, तमुक्काएइवा, अंधकारेइवा, महंधकारेइवा । तमुक्कायस्सणं चत्तारि णामधेज्जा प० तं० लोगंधयारेइवा, लोगतमसेइवा, देवंधयारेइवा, देवतमसेइवा । तमुक्कायस्सणं चत्तारि णामधेज्जा प० तं० वायफलिहेइवा वायफलिहखोभेइवा, देवरण्णेइवा,

भावार्थ आदि देवे या ४ अन्य से दिलावे ॥ १८ ॥ असंख्यातवा अरुणवर द्वीप की बाहिर की वेदिका के अंत से अरुणवर समुद्र में ४२ हजार योजन जावे वहां पानी से एक प्रदेश श्रेणी तमकाय नीकलकर १७२१ योजन ऊंची जाकर तिर्च्छी विस्तार पाई है. प्रथम के चार देवलोक को घेर कर उपर पांचवा देवलोक का रिष्ट विमान की प्रतरतक जाकर रही है उस के गुण निष्पन्न चार २ नाम से १२ नाम कहे हैं. २ अंधकार रूप होने से तम, अपकाय रूप होने से तमस्काय, ३ अंधकार और ४ महा अंधकार. और भी तमस्काय के चार भेद १ लोकांधकार. २ लोकतम, ३ देवांधकार कृष्णराजी है इस लिये ४ और देव तम अंधकार. और भी तमस्काय के चार भेद कहे हैं. १ वायु की भोगली सरिखा सो वातफालिका,

शब्दार्थ

दे० देवारण्य दे० देवविग्रह त० तमस्काय च० चार क० कल्प आ० घेर के चि० रही है सो० सौधर्म इ० ईशान स० सनत्कुमार मा० महेन्द्र ॥ १९ ॥ च० चार पु० पुरुष जात सं० प्रगट प० प्रतिसेवी ए० कितनेक प० गुप्त प० प्रतिसेवी ए० कितनेक प० प्रत्युत्पन्न अ० आनंदी ए० कितनेक णि० निकलने से अ० आनंदी ए० कितनेक ॥ २० ॥ च० चार से० सैन्य ज० जेता ए० एक णो० नहीं प० पराजय

सूत्र

देववुहेइवा । तमुक्काएणं चत्तारि कप्पे आवरित्ता चिट्ठइ तं० सोहम्मीसाणं सणंकुमारमाहिंदं ॥ १९ ॥ चत्तारि पुरिसजाया प० तं० संपागड पडिसेवी णाममेगे, पच्छण्णपडिसेवी णाममेगे, पडुप्पण्णणंदी णाममेगे, णिस्सरण णंदीणाममेगे ॥ २० ॥ चत्तारि सेणाओ प० तं० जइत्ताणाममेगा णोपराजिणित्ता, पराजि-

भावार्थ

२ वायु के मार्ग का रुंधन करे सो वातफल का क्षोभ ३ अटवी भयादिक से देवतादिक को भगने का स्थान होना सो देवारण्य. और ४ देवताओं का विग्रह होने का स्थान सो देव विग्रही यह तमस्काय सौधर्म, ईशान, सनत्कुमार और महेन्द्र इन चार देवलोक को घेर कररही है ॥ १९ ॥ चार प्रकार के पुरुष कहे हैं एक साधु कारण विशेष आचार्यादिक की समक्ष पाप कर्म सेवे, २ एक प्रच्छन्नपने पाप कर्म सेवे, ३ एक साधु को आचार्य या शिष्यादि मिलने से आनंद होवे और एक साधु को अकेला विचरने से ही आनंद होवे ॥ २० ॥ एक सेना रिपु बल को जीते और उस से भगे नहीं २ एक सेना रिपु बल से भगे

शब्दार्थ

कर्ता प० पराजय कर्ता ए० एक णो० नहीं ज० जेता ए० एक ज० जेता प० पराजय कर्ता ए० एक णो० नहीं ज० जेता णो० नहीं प० पराजय कर्ता ए० ऐसे च० चार पु० पुरुष जात ज० जेता ए० एक णो० नहीं प० पराजय कर्ता च० चार से० सैन्य ज० जेता ए० एक ज० जीतता है ज० जेता ए० एक

सूत्र

णित्ता णाममेगा णो जइत्ता, एगा जइत्तावि पराजिणित्तावि, एगा णो जइत्ता णो पराजिणित्ता । एवामेव चत्तारि पुरिस जाया प० तं० जइत्ताणाममेगे णो पराजिणित्ता, ४ । चत्तारि सेणाओ प० तं० जइत्ताणाममेगा जयइ, जइत्ताणाम मेगा

भावार्थ

और उस को जीते नहीं ३ एक सेना जय प्राप्त करे परंतु कारण विशेषसे भग भी जावे, ४ और एक सेना जीते भी नहीं और भगे भी नहीं । ऐसे ही चार प्रकारके पुरुष कहे हैं १ एक साधु परिषह की सेना को जीते परंतु परिषह से भगे नहीं वीरवत् २ एक साधु परिषह से भगे परंतु जीते नहीं कुंडरीकवत् ३ एक साधु परिषह को जीते परंतु कारण विशेषे उस से भग जावे शेलक राजर्षिवत् और ४ एक साधु को परिषह भी उत्पन्न हुवे हैं और उनोंने जीते भी नहीं है । और भी चार प्रकार की सेना कही १ एक सेना शत्रु को जीतकर फीर भी प्रसंग आवे तो जीते २ एक सेना पहिला शत्रु को जीते और फीर कभी भग जावे, ३ एक सेना पहिले शत्रु के डर से भग जावे फीर उस को जीते और ४ एक सेना पहिले भी भगे और पीछे से भी भगे । ऐसे ही चार प्रकार के पुरुष कहे हैं १ एक पुरुष वारं-

शब्दार्थ

प० पराजय करता है प० पराजय कर्ता ए० एक ज० जीतता है प० पराजय कर्ता ए० एक प० पराजय करता है ए० ऐसे च० चार पुरुष जात ज० जेता ए० एक ज० जीतता है ॥ २१ ॥ च० चार के० वांके बं० वांसका मूल के० वांका में० मेंढा का शृंग के० वांका गो० गौमूत्र के० वांका अ० बांसकी छोती के० वांकी ए० ऐसे च० चार प्रकार की मा० माया बं० बांसकी मूलका के० वांक समान जा० यावत् अ० बांसकी छोती का वांक समान बं० बांसकी मूलके के० वांक समान मा० माया में अ० रहाहुवा

सूत्र

पराजिणइ, पराजिणित्ता णाम मेगा जयइ, पराजिणित्ता णाममेगा पराजिणइ, । एवा मेव चत्तारि पुरिस जाया प० तं० जइत्ताणाममेगे जयइ ॥ २१ ॥ चत्तारिकेअणा प० तं० बंसीमूलकेअणए, मेंढविसाणकेअणए, गोमुत्तिकेअणए अविलेहणियाकेअणए । एवामेव चउव्विहा माया प० तं० बंसीमूलकेअणसमा-

भावार्थ

वार परिषह जीतता रहे, २ एक पुरुष प्रथम परिषह जीतलेवे फीर घबराकर उस से भग जावे, ३ एक नविन दीक्षित प्रथम तो भगे परंतु फीर दृढ बन जावे और ४ एक पुरुष परिषह आने पर भगता ही रहे ॥ २१ ॥ चार प्रकार केतन (वक्र वस्तु) कही. वंश का मूल, २ मेंढे का शृंग, ३ गाय का मूत्र, और बांस की छोती ऐसे ही चार प्रकार की माया कही. १ एक वंशी मूल केतन समान. जैसे वंश के मूल की गांठ में वक्रता होती है वैसे ही किसी को गुप्त माया होती है २ मेंढे के शृंग में जैसे वक्रता होती है

शब्दार्थ

जी० जीव का० काल क० करके णे० नरक में उ० उत्पन्न होता है में० मेंढके शृंगके के० वांक समान मा० माया में अ० रहाहुवा जी० जीव का० काल करके ति० तिर्यंचयोनि में उ० उत्पन्न होता है गो० गौमूत्र जा० यावत् का० काल करके म० मनुष्य में उ० उत्पन्न होता है अ० वांसकी छोंती समान जा० यावत् दे० देवलोक में उ० उत्पन्न होता है ॥ २२ ॥ च० चारस्थंभ से० पत्थर स्थंभ अ० अस्थिस्थंभ दा०

सूत्र

णा जाव अवलेहणियाकेअणसमाणा । बंसीमूलकेअणसमाणं मायं अणुप्पविट्ठे जीवे कालं करेइ णेरइएसु उववज्जइ, मेंढविसाणकेअणसमाणं मायमणुप्पविट्ठे जीवे कालं करेइ तिरिक्ख जोणिएसु उववज्जइ, गोमुत्तिअं जाव कालं करेइ मणुस्सेसु उववज्जइ, अवलेहणिया जावदेवेसु उववज्जइ ॥ २२ ॥ चत्तारि थंभा प० तं० सेलथंभे

भावार्थ

वैसे कितनेक मायावी होते हैं, ३ चलता हुवा बैल का मात्रा में जैसी वक्रता होती है वैसे ही कितनेक मायावी होते हैं और ४ वंश की छोती में जैसी वक्रता होती है वैसे ही कितनेक मायावी होते हैं. वंशके मूल समान मायावी माया सहित मरकर नरक में जाता है, २ मेंढे के शृंग जैसा मायावी यहां से मरकर तिर्यंच में जाता है ३ गौ मूत्र समान मायावी माया में मरकर मनुष्य में जाता है और बांस की छोती जैसा मायावी मरकर देवलोक में जाता है. ॥ २२ ॥ चार प्रकार के स्तंभ कहे हैं १ पत्थर का स्तंभ,

शब्दार्थ

काष्ट स्थंभ ति० तिनसलता का स्थंभ ए० ऐसे च०चार प्रकार का मा० मान से० पत्थर स्थंभ समान जा० यावत् ति० तिनसलता समान से० पत्थर स्थंभ समान मा० मान में अ० रहाहुवा जी० जीव का० काल करके णे० नरक में उ० उत्पन्न होता है ए० ऐसे जा० यावत् ति० तिनसलता स्थंभ समान मा० मान में अ० रहाहुवा जीव का० काल करके दे० देवलोक में उ० उत्पन्न होता है ॥ २३ ॥ च० चार व० वस्त्र

सूत्र

अट्ठिथंभे, दारुथंभे तिणिसलयाथंभे । एवामेव चउव्विहे माणे प० तं० सेलथंभसमाणे जाव तिणिसलया थंभसमाणे । सेल थंभसमाणं माणं अणुप्पविट्ठे जीवे कालं करेइ णेरइएसु उववज्जइ, एवं जाव तिणिसलया थंभसमाणं माणं अणुप्पविट्ठे जीवे कालं करेइ देवेसु उववज्जइ ॥ २३ ॥ चत्तारि वत्था प० तं० किमिरागरत्ते, कद्दमरागरत्ते,

भावार्थ

२ अस्थि का स्थंभ, ३ काष्ट का स्तंभ और ४ तिनस लता का स्तंभ. ऐसे ही चार प्रकार के मान कहे हैं १ पत्थर के स्तंभ समान मान, २ अस्थि के स्तंभ समान ३ काष्ट के स्तंभ समान और ४ तिनस लता के स्तंभ समान । पत्थर के स्तंभ समान मानवाला जीव मरकर नरक में जाता है, २ अस्थि के स्थंभ जसा मानी मरकर तिर्यंच में जाता है ३ काष्ट के स्तंभ जैसा मानी मरकर मनुष्य गति में जाता है और तिनस लता के स्तंभ जैसा मानी देव गति में जाता है ॥ २३ ॥ चार प्रकार के वस्त्र. १ कृमिराग रक्त सो

१ किसी का यह कहना है कि मनुष्य के रक्त में कीडे उत्पन्न होते हैं और उन का मर्दन करके रंग बनाते हैं उसे कृमिराग कहते हैं.

शब्दार्थ

कि० किरमजी रा० रंगसे र० रक्त क० कर्दम रा० रंगसे र० रक्त खं० काजल रा० रंगसे र० रक्त ह० हलेद्रा रा० रंगसे र० रक्त ए० ऐसे च० चार प्रकार का लो० लोभ कि० किरमजी रंगसे र० रक्त वस्त्र समान क० कर्दम रंगसे र० रक्त वस्त्र समान खं० काजल रंगसे र० रक्त वस्त्र समान हं० हलिद्रा रंगसे र० रक्त वस्त्र समान कि० किरमजी रंगसे र० रक्त वस्त्र समान लो० लोभ में अ० रहाहुवा जी० जीव का० काल

सूत्र

खंजनरागरत्ते, हलिद्दरागरत्ते एवामेव चउव्विहे लोभे प० तं० किमिरागरत्तवत्थसमाणे, कद्दमरागरत्तवत्थसमाणे, खंजणरागरत्तवत्थसमाणे, हलिद्दरागरत्तवत्थसमाणे किमिरागरत्तवत्थसमाणं लोभमणुप्पविट्ठे जीवे कालं करेइ नेरइएसु उववज्जइ, तहेव जाव हलिद्दरागरत्तवत्थसमाणं लोभमणुप्पविट्ठे जीवे कालं करेइ देवेसु उववज्जइ

भावार्थ

स्वाभाविक रक्त पुद्गलों से बनाहुवा वस्त्र, जल जावे परंतु रंग जावे नहीं. २ कर्दम के रंग से रंगा हुवा वस्त्र बहुत परिश्रम से कुच्छ शुद्ध होवे ३ खंजन के रंग से रक्त वस्त्र धोने से स्वच्छ होवे. और ४ हलदी के रंग से रंगा हुवा वस्त्र धूप में रखने से ही स्वच्छ होजावे. ऐसी तरह चार प्रकार का लोभ कहा. १ कृमिराग से रक्त वस्त्र समान मरण पर्यंत लोभ छूटे नहीं और उस में काल कर नरक में जावे २ कीचड से भराहुवा वस्त्र समान लोभ बहुत परिश्रम से कम होवे ऐसा लोभवाला मरकर तिर्यंच में जाता है.

शब्दार्थ

करके ने० नरक में उ० उत्पन्न होवे त० तैसे जा० यावत् ह० हलिद्रा रंगसे र० रक्त वस्त्र समान लो० लोभ में अ० रहाहुवा जी० जीव का० काल करके दे० देवलोक में उ० उत्पन्न होता है ॥ २४ ॥ च० चार प्रकार का सं० संसार णे० नरक संसार जा० यावत् दे० देवसंसार च० चार प्रकार का आ० आयुष्य णे० नरक आयुष्य जा० यावत् दे० देव आयुष्य च० चार प्रकार का भ० भव णे० नरक भव जा० यावत् दे० देवभव ॥ २५ ॥ च० चार प्रकार का आ० आहार अ० अशन पा० पानी खा०

सूत्र

॥ २४ ॥ चउव्विहे संसारे प० तं० णेरइयसंसारे, जाव देवसंसारे, । चउव्विहे आउए प० तं० णेरइय आउए जाव देवाउए। चउव्विहे भवे प० तं० णेरइयभवे, जाव देवभवे ॥ २५ ॥ चउव्विहे आहारे प० तं० असणे, पाणे, खाइमे, साइमे ।

भावार्थ

३ खंजन रंग समान कुछ समझाने से लोभ कम होवे. ऐसा लोभवाला मनुष्य में जावे और हलदी के रंग समान स्वभाव से ही बहुत कम लोभ करनेवाला होवे. यह मरकर देवता में उत्पन्न होता है ॥२४॥ चार प्रकार का संसार कहा नारकी, तिर्यंच, मनुष्य और देवता का संसार, चार प्रकार का आयुष्य नारकी, तिर्यंच, मनुष्य और देवता का आयुष्य. चार प्रकार का भव नारकी, तिर्यंच, मनुष्य, और देव का भव ॥ २५ ॥ चार प्रकार का आहार अशन, पान, खादिम और स्वादिम. चार प्रकार का आहार

शब्दार्थ

सादिम सा० स्वादिम च० चार प्रकार का आ० आहार उ० उपस्कर संपन्न उ० उपस्कृत संपन्न स० स्वभाव संपन्न प० पर्युषित संपन्न ॥ २६ ॥ च० चार प्रकार का बं० बंध प० प्रकृतिबंध ठि० स्थितिबंध अ० अनुभागबंध प० प्रदेशबंध च० चार प्रकार का उ० उपक्रम बं० बंधनोपक्रम उ० उदीरणोपक्रम उ० उपशमनोपक्रम वि० विपारणामनोपक्रम बं० बंधनोपक्रम च० चार प्रकार

सूत्र

चउव्विहे आहारे प० तं० उवक्खरसंपन्ने, उवक्खडसंपन्ने, सभावसंपन्ने, परिझुसियसंपन्ने। २६।

चउव्विहे बंधे प० तं० पगइबंधे, ठिइबंधे, अणुभावबंधे, पएसबंधे। चउव्विहे उवक्कमे प० तं० बंधणोवक्कमे, उदीरणोवक्कमे, उवसामणोवक्कम्मे, विप्परिणामनोवक्कमे।

भावार्थ

अग्नि में पकाहुवा, २ परालादि से पकाहुवा, ३ स्वभाव से पकाहुवा और ४ विशेष काल रखकर पकावे सो अचार वगैरह ॥ २६ ॥ चार प्रकार के बंध कहे. १ ज्ञानावरणीयादि आठ कर्म की प्रकृति का बंध, २ कर्म का कालमान सो स्थिति बंध, ३ कर्म प्रकृतिका विपाक तीव्र मंद सो अनुभाग बंध, और जीव प्रदेश की साथ कर्म प्रदेश का बंध होना सो प्रदेश बंध. इस पर लड्डुका दृष्टांत कहते हैं. सुंठ, गुड, वगैरह द्रव्य से बना हुवा कोई मोदक वात हरता है तो कोई पीत हरता है वैसे ही कोई कर्म प्रकृति ज्ञान गुण को ढके, कोई दर्शन गुण को ढके. २ जैसे कोई मोदक एक मास दो मास या अमुक मास तक अच्छा रहता है वैसे ही कोई प्रकृति कम स्थितिवाली और कोई ज्यादा स्थितिवाली होती है. ३ जैसे कोई मो-

शब्दार्थ

का प० प्रकृतिबंधनोपक्रम ठि० स्थितिबंधनोपक्रम अ० अनुभागबंधनोपक्रम प० प्रदेश बंधनोपक्रम उ० उदीरणोपक्रम च० चार प्रकार का प० प्रकृति उदीरनोपक्रम ठि० स्थिति उदीरणोपक्रम अ० अनुभागोदीरणोपक्रम प० प्रदेशोदीरणोपक्रम उ० उपशमनोपक्रम च० चार प्रकार का प० प्रकृति उपशमन उपक्रम ठि० स्थिति अ० अनुभाग प० प्रदेश उपशमनोपक्रम वि० विपरी-

सूत्र

बंधणोवक्कमे चउव्विहे प० तं० पगइ बंधणोवक्कमे, ठिइबंधणोवक्कमे, अणुभाव बंधणोवक्कमे, पएसबंधणोवक्कमे, । उदीरणोवक्कमे चउव्विहे प० तं० पगइ उदीरणोवक्कमे, ठिइउदीरणोवक्कमे, अणुभागउदीरणोवक्कमे, पएसउदीरणोवक्कमे, ।उवसामणोव-

भावार्थ

दक मिष्ट होता है और कोई कटु भी होता है वैसे ही कोई कर्म सुख के दाता और कोई कर्म दुःख के दाता होता है. ४ जैसे मोदक में घृतादिकका प्रमाण होता है वैसे ही कर्म में भी पुद्गल परमाणु का प्रमाण होता है। चार प्रकार के उपक्रम [जीव शक्ति विशेष] १ जीव के प्रदेश और कर्म के पुद्गलों का परस्पर में संबंध होना सो बंधनोपक्रम। यह प्रकृति स्थिति, प्रदेश और अनुभाग वैसे चार प्रकार का है, २ उदय में नहीं आये हुवे कर्मों को उदीरणा से उदय में लावे सो उदीरणोपक्रम इस के भी प्रकृति, स्थिति प्रदेश और अनुभाग ऐसे चार भेद होते हैं, ३ उदय, उदीरणा, निधत्त और निकाचित करने

शब्दार्थ णामनोपक्रम च० चार प्रकार का प० प्रकृति ठि० स्थिति अ० अनुभाग प० प्रदेश विपरीणामनोपक्रम च० चार प्रकार का अ० अल्प बहुत प० प्रकृति अल्प बहुत ठि० स्थिति अ० अनुभाग प० प्रदेश अल्प बहुत च० चार प्रकार का सं० संक्रम प० प्रकृति संक्रम ठि० स्थिति अ० अनुभाग

सूत्र क्कमे चउव्विहे प० तं० पगइ उवसामणोवक्कमे, ठिइअणुभावपएस उवसामणोवक्कमे। विप्परिणामणोवक्कमे चउव्विहे प० तं० पगइ—ट्ठिइ—अणुभाव—पएस विप्परिणामणोवक्कमे। चउव्विहे अप्पाबहुए प० तं० पगइ अप्पाबहुए, ठिइ, अणुभाव, पएस

भावार्थ योग्य कर्मों की स्थापना करना सो उपशमन उपक्रम इस के प्रकृति, स्थिति, प्रदेश और अनुभाग ऐसे चार भेद जानना. ४ द्रव्य, क्षेत्र, काल और भावादि कारण विशेष से अवस्थान्तर का करना सो विपरिणामनोपक्रम. इस के भी प्रकृति, स्थिति, प्रदेश और अनुभाग ऐसे चार भेद जानना. चार प्रकारकी अल्पाबहुत्व कही है. यह भी प्रकृति, स्थिति, अनुभाग और प्रदेश इन चार प्रकार की होती है. १ जघन्य स्थिति बंध संयति के एकेन्द्रिय के बादर पर्याप्ता के जघन्य संख्यात गुण सब से कमी अनुभाग रस बंध संयति साधु के कर्म बन्धा होवे उस से असंख्यात गुण अनंत गुण स्थानक है वैसे ही प्रदेश के अल्पाबहुत्व के आठों कर्मों का बन्ध करनेवाले आयुष्य के प्रदेश बन्ध सबसे अल्प, नाम गोत्र दोनों तुल्य और आयुष्य से कुछ अधिक, ज्ञान, दर्शन व अंतराय परस्पर तुल्य जिस से मोहनीय वेदनी के कुछ

शब्दार्थ

प० प्रदेश संक्रम च० चार प्रकार का नि० निधत्त प० प्रकृति निधत्त ठि० स्थिति अ० अनुभाग प० प्रदेश निधत्त च० चार प्रकार का नि० निकाचित प० प्रकृतिनिकाचित ठि० स्थिति निकाचित अ० अनुभागनिकाचित प० प्रदेशनिकाचित ॥ २७ ॥ च० चार ए० एक द० द्रव्य एक मा० मातृक एक प० पर्यव एक सं० संग्रह एक च० चार क० केई द० द्रव्यकेई मा० मातृक केई प० पर्यव

सूत्र

अप्पाबहुए । चउव्विहे संकमे प० तं० पगइसंकमे, ठिइ, अणुभाव, पएससंकमे । चउव्विहे निधत्ते प० तं० पगइ निधत्ते, ठिइ—अणुभाव—पएसानिधत्ते । चउव्विहे निगाइए, प० तं० पगइनिगाइए, ठिइनिगाइए, अणुभावनिगाइए, पएसानिगाइए,॥ २७॥

चत्तारिएक्का प० तं० दविएएक्कए, माउएक्कए, पज्जवएक्कए, संगहएक्कए । चत्तारिकई

भावार्थ

अधिक. एक कर्म की प्रकृति दूसरे कर्म में संक्रमे उसे संक्रम कहते हैं वह भी प्रकृति, स्थिति, प्रदेश और अनुभाग यों चार प्रकार का होता है. जैसे लोहे की सुई को कीट बंधन करता है वैसे ही कर्मों का आत्म प्रदेश की साथ बंधन होना उसे निधत्त कहते हैं. और उस के प्रकृति, स्थिति, प्रदेश और अनुभाग ऐसे चार भेद होते हैं और लोह की सुई कीट से मिली हुइ होवे फीर उसे अग्नि तपाकर घन से कूटकर एकत्रित करे. और उस समय जो कर्म बंधन होता है उसे निकाचित कर्मबंध कहते हैं. इसके प्रकृति, स्थिति, प्रदेश और अनुभाग ऐसे चार भेद हैं ॥ २७ ॥ मुख्यतासे चार वस्तु एक कही है. १ द्रव्य मात्र

शब्दार्थ केई सं० संग्रह केई च० चार स० सत्य णा० नाम सत्य ठ० स्थापना सत्य आ० आदेश सत्य नि० निर्विशेष सत्य ॥ २८ ॥ मा० मानुषोत्तर प० पर्वत की च० चारदिशा में च० चार कू० कूट र० रत्न र०

सूत्र प० तं० दवियकई, माउयकई, पज्जवकई संगहकई । चत्तारिसच्चा प० तं० णामसच्चए, ठवणसच्चए, आएससच्चए, निरवसेससच्चए ॥ २८ ॥ माणुसुत्तरस्सणं

भावार्थ एक ही वस्तु स्वाभाविक है. (बीजभूत) २ मातृका पद एक ही है, अथवा अकारादि मातृका पद सब शास्त्रार्थ व्यापार में व्यापक है इस लिये शास्त्रीय मातृका पद ३ वर्णादि धर्मवाली पर्याय एक ही है, और ४ समुदाय वाची संग्रह एक है क्यों कि एक शालि सो भी शालि कहलाती है और बहुत शालि भी शालि कहलाती है. गौणता से चारों द्रव्य के अनेक भेद होते हैं. सचित्त, अचित्त और मिश्रादि अनेक भेद, स्वर व्यंजनादि भेदवाला मातृका पद, वर्ण, गंध, रस पर्यायवाली पर्याय पद और धान्य, गोधूम, शालि वगैरह संग्रह पद। चार प्रकार के सत्य १ नाम सत्य सो जिस वस्तु का यथार्थ अयथार्थ नाम दिया सो, २ स्थापना सत्य सो रुपैया, महोर, पाव, शेर वगैरह, आदेश करना सो आदेश सत्य और निरवशेष सत्य सो समुच्चय, यह, वह, तथा इत्यादि सत्य. कितनीक जगह "सव्वे" का भी पाठ दीखता है १ नाम सर्व सो सब वस्तु नाम मय है, २ सब वस्तु अक्षरादि स्थापना मय है, ३ सब वस्तु प्रधान पद का आदेश दे और ४ निरवशेष सर्व सो देवता मेषोन्मेष सदा काल देखते हैं इत्यादि सर्व.

शब्दार्थ

रत्नोच्चय स० सर्वरत्न र० रत्नसंचय ॥ २९ ॥ जं० जंबूद्वीप के भ० भरत ए० ऐरवत में ती० अतीत उ० उत्सर्पिणी में सु० सुषमसुषमा काल में च० चार सा० सागरोपम को० क्रोडा क्रोडी काल हो० था जं० जंबूद्वीप में भ० भरत ए० ऐरवत में इ० इस स० अवसरपिणी में सु० सुषमा सुषम स० समय च० चार सा० सागरोपम को० क्रोडा क्रोडी का० काल हो० था. जं० जंबूद्वीप में आ० आगामिक उ० उत्सरपिणी में सु० सुषमा सुषम समय च०चार सा०सागरो-

सूत्र

पव्वयस्स चउद्दिसिं चत्तारिकूडा प०तं०रयणे, रयणुच्चए, सव्वरयणए, रयणसंचए । ॥२९॥

जबूद्दीवे भरहेएरवसु वासेसु तीयाए उसप्पिणीए सुसमसुसमाए समाए चत्तारिसागरोवमको-डाकोडीओ कालो होत्था जंबूद्दीवे भरहेरवए इमाए उसप्पिणीए सुसमसुसमाए समाए चत्तारि सागरोवम कोडाकोडीओ कालो होत्था । जंबूद्दीवे दीवे आगमिस्साए उसप्पिणीए सुसमसुसमाए समाए चत्तारि सागरोवम कोडाकोडीओ कालो भविस्सइ।

भावार्थ

॥२८॥मानुषोत्तर पर्वतकी चारों दिशामें चार कूट कहे हैं. रत्नकूट, रत्नच्चय, सब रत्नकूट, रत्न संचय कूट ॥२९॥जम्बूद्वीप के भरत ऐरवत क्षेत्रमें गत उत्सर्पिणी कालमें सुषम २ आरा चार कोडाकोडी सागरोपम का था. वैसे ही वर्तमान अवसर्पिणी काल था और आगामिक उत्सर्पिणी के सुषम सुषम काल चार कोडाकोडी सागरोपम का होगा, जम्बूद्वीप में देव कुरु और उत्तरकुरु छोडकर अकर्मभूमि के चार क्षेत्र हैं हेमवय,

शब्दार्थ

पम को० क्रोडा क्रोडी का० काल भ० होगा जं० जंबूद्वीप में दे० देवकुरु उ० उत्तरकुरु व० वर्जकर च० चार अ० अकर्मभूमी हे० हेमवय हे० ऐरन्नवय ह० हरिवास र० रम्यकवास त० उसके च० चार व० गोल वैताढ प० पर्वत स० शब्दापाति वि० विकटापाति गं० गंधापाति मा० मालवंत पर्याय त० तहां च० चार दे० देव म० महर्धिक जा० यावत् प० पल्योपम स्थितिवाले प० वसते हैं सा० स्वाति प० प्रभास अ० अरुण प० पद्म जं० जंबूद्वीप में म० महाविदेहक्षेत्र च० चार प्रकार का पु० पूर्वविदेह अ० अपरविदेह दे०

सूत्र

जंबूद्दीवे दीवे देवकुरु उत्तरकुरुवज्जाओ चत्तारि अकम्मभूमीओ प० तं० हेमवए एरण्णवए हरिवासे, रम्मगवासे । तस्सणं चत्तारि वट्टवेयड्ढपव्वया प० तं० सद्दावई, वियडावई, गंधावई, मालवंतपरियाए । तत्थणं चत्तारि देवा महिड्ढिया जाव पलिओवमट्ठिइया परिवसंति तं० साई, पभासे, अरुणे पउमे । जंबूद्दीवे दीवे महाविदेहेवासे चउव्विहे प० तं० पुव्वविदेहे अवरविदेहे देवकुरा उत्तरकुरा सव्वेविणं णिसढ

भावार्थ

ऐरणवय, हरिवर्ष और रम्यकवर्ष. उस के चार वर्तुलाकार वैताढ पर्वत रहे हुवे हैं. शब्दापाति विकटापाति, गंधापाति और मालवंत. वहां पर पल्योपम की स्थितिवाले चार देव रहते हैं. १ स्वाति, २ प्रभास, ३ अरुण और ४ पद्म. जम्बूद्वीप में चार महाविदेह कहे हैं. पूर्व विदेह, पश्चिम विदेह, देव कुरु विदेह

शब्दार्थ

देवकुरु उ० उत्तरकुरु स० सर्व में णि० निषद णी० नीलवंत वा० वर्षधर प० पर्वत च० चार जो० योजन स० सो उ० ऊंचे उ० ऊंचपने च० चार गा० गाउ स० सो उ० ऊंडे अ० नीचे जं० जंबूद्वीप में मं० मेरु पर्वत की पु० पूर्वदिशा में सी० सीता महानदी के उ० उत्तर किनारेपे च० चार व० वखारा पर्वत चि० चित्रकूट प० पद्मकूट न० नलिनकूट ए० एक शैलकूट जं० जंबूद्वीप के मं० मेरु पर्वत की पु० पूर्वदिशा में सी० सीता महानदी के दा० दक्षिण किनारेपे च० चार वखारा प० पर्वत ति० त्रिकूट वे वैश्रमणकूट अं०

सूत्र

णीलवंत वासहर पव्वया चत्तारि जोयणसयाइं उड्ढुंउच्चत्तेणं, चत्तारि गाउयसयाइं उव्वेहेणं प० तं० । जंबूदीवेदीवे मंदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिमेणं सीआए महाणईए उत्तरकूले चत्तारि वक्खार पव्वया प० तं० चित्तकूडे, पम्हकूडे, णलिणकूडे, एगसेले । जंबूमंदर पुरत्थिमेणं सीआए महाणईए दाहिणकूले चत्तारि वक्खारपव्वया प० तं० तिकूडे, वेसमणकूडे अंजणे, मायंजणे, । जंबूमंदर पच्चत्थिमेणं सीओआ-

भावार्थ

और उत्तरकुरु विदेह. सब निषद और निलवंत वर्षधर पर्वत चार सो योजन के ऊंचे हैं और चार सो गाउ के ऊंडे जमीन में है. जम्बूद्वीप के मेरु पर्वत की पूर्व दिशा में सीता महा नदी के उत्तर किनारेपे चार वखारे पर्वत रहे हुवे हैं चित्रकूट, पद्मकूट, नलिनकूट और एक शैलकूट. जम्बू मंदर की पूर्व दिशा में सीता महा नदी के दक्षिण किनारेपे चार वखारे पर्वत रहे हुवे हैं. त्रिकूट, वैश्रमणकूट, अंजन और मातंजन.

शब्दार्थ — अंजन मा० मातंजन जं० जंबूद्वीप के मं० मेरु पर्वत की प० पश्चिम में सी० सीतोदा महानदी के दा० दक्षिण किन्नारेपे च० चार व० वखारा पर्वत अं० अंकावति प० पद्मावति आ० आशीविष सु० सुखावह जं० जंबूद्वीप के मं० मेरु पर्वत की पं० पश्चिमदिशा में सी० सीतोदा म० महानदी के उ० उत्तर किन्नेरेपे च० चार व० वखारा प० पर्वत चं० चंद्र पर्वत सू० सूर्यपर्वत दे० देवपर्वत णा० नाग पर्वत जं० जंबूद्वीप के मं० मेरु पर्वत की च० चार वि० विदिशा में च० चार व० वखारा पर्वत सो० सोमनस वि० विद्युत्प्रभ

सूत्र — ए महाणईए दाहिणकूले चत्तारि वक्खार पव्वया प० तं० अंकावई, पम्हावई, आसीविसे, सुहावहे । जंबूमंदर पच्चत्थिमेणं सीओआए महाणईए उत्तरकूले चत्तारि वक्खार पव्वया प० तं० चंदपव्वए सूरपव्वए देवपव्वए णागपव्वए जंबूदीवेदीवे मंदरस्स पव्वयस्स चउसु विदिसासु चत्तारि वक्खार पव्वया प० तं० सोमणसे, विज्जुप्पभे, गंधमायणे मालवंते ॥ जंबूद्दीवेदीवे महाविदेहेवासे

भावार्थ — जम्बू मंदर की पश्चिम में सीतोदा महा नदी के दक्षिण किनारेपे चार वखारे पर्वत रहे हुवे हैं अंकावती पद्मावती, आशी विष, और सुखावह. जम्बू द्वीप के मेरु से पश्चिम दिशामें सीतोदा नदी के उत्तर किनारेपे चार वखारे पर्वत हैं. चंद्र पर्वत, सूर्य पर्वत, देव पर्वत और नाग पर्वत. जम्बू द्वीप के मेरु की चारों दिशाओं में चार वखारे पर्वत रहे हुवे हैं. सौमनस, विद्युतप्रभ, गंधमादन, और मालवंत. जम्बू द्वीप के महा

शब्दार्थ

ग० गंधमादन मा० माल्यवंत जं० जंबूद्वीप के मं० महाविदेह क्षेत्र में ज० जघन्य च० चार अ० अरिहंत च० चार च० चक्रवर्ति च० चार ब० बलदेव च० चार वा० वासुदेव उ० उत्पन्न हुवे उ० उत्पन्न होते हैं उ० उत्पन्न होवेंगे जं० जंबूद्वीप के मं० मेरु पर्वतपे च० चारवन भ० भद्रशालवन णं० नंदनवन सो० सोमनसवन पं० पंडकवन जं० जंबूद्वीप के मं० मेरु पर्वत के पं० पंडकवन में च० चार अ० अभिषेक शिला पं० पंडुकंबलशिला अ० अतिकंबलशिला र० रक्तकंबलशिला अ० अतिरक्तकंबलशिला मं० मेरुपर्वत की

सूत्र

जहण्णपए चत्तारि अरहंता, चत्तारि चक्कवट्टी, चत्तारि बलदेवा, चत्तारि वासुदेवा, उप्पज्जिंसुवा, उप्पज्जंतिवा, उप्पज्जिस्संतिवा । जंबूद्दीवेदीवे मंदरे पव्वए चत्तारि वणा प० तं० भद्दसालवणे, णंदणवणे, सोमणसवणे, पंडगवणे. । जंबूमंदरपव्वय-पंडगवणे चत्तारि अभिसेगसिलाओ प० तं० पंडुकंबलासिला, अतिपंडु कंबलासिला, रत्तकंबलसिला, अतिरत्त कंबलसिला । मंदरचूलियाणं उवरिं चत्तारि जोयणाइं विक्खंभेणं पण्णत्ता ॥ एवं धायइखंडदीवपुरिच्छिमद्धेवि, कालं आइंकरित्ता जाव

भावार्थ

विदेह क्षेत्र में जघन्य चार तीर्थंकर, चार चक्रवर्ती, चार बलदेव और चार वासुदेव अतीत काल में उत्पन्न हुवे, वर्तमान में होरहे हैं और भविष्य में उत्पन्न होवेंगे. जम्बूद्वीप के मेरु पर्वत में चार वन हैं भद्रशाल वन, नंदन वन, सोमनस वन. और पंडक वन. जम्बूद्वीप के मेरु पर्वत के पंडक वन में तीर्थंकर की

शब्दार्थ

चुलिका उ० उपर च० चार जो० योजन वि० चौडी प० प्ररूपी ए० ऐसे धातकी खंडद्वीप पु० पूर्वार्ध में का० काल से आ० लेकर जा० यावत् मं० मेरु की चुलिकातक ए० ऐसे जा० यावत् पु० पुष्करार्ध द्वीप के प० पश्चिमार्ध में जा० यावत् मं० मेरु की चुलिका जं० जंबूद्वीप आ० जैसे का० काल से चू० चूलिका धा०धात की खंड में पु० पुष्करार्ध में पु० पूर्व अ० अपर बाजु जं०जंबूद्वीप के च० चारद्वार वि० विजय वे० वैजयन्त ज० जयन्त अ० अपराजित ते० वे दा० द्वार च० चार जो० योजन वि० चौडे ता० इतना

सूत्र

मंदरचूलियत्ति ॥ एवं जाव पुक्खरवरदीवपच्चत्थिमद्धे जाव मंदरचूलियत्ति ।
जंबूदीवग आवस्सगं तु कालाओ चूलिय धायइखंडे पुक्खरवरेय पुव्वावरेपासे;
जंबूद्दीवस्सणं द्दीवस्स चत्तारि दारा प० तं० विजये वेजयंते, जयंते, अपराजिए ।
ते णं दारा चत्तारि जोयणाइं विक्खंभेणं तावइयं चेव पवेसेणं प० । तत्थणं चत्तारि

भावार्थ

चार अभिषेक शिला कही है. १ पांडुकंबला, २ अति पांडुकम्बला, ३ रक्तकंबला और ४ अति रक्तकम्बला. मेरु पर्वत की चूलिका पर चार योजन की चौडाइ कही ऐसे ही धातकी खंड के पूर्वार्ध यावत् पुष्करवर के पश्चिमार्ध तक काल से लेकर जम्बूद्वीप की चूलिकातक सब अधिकार कहना. जम्बूद्वीप के कोट को चार द्वार कहे हैं. विजय, विजयंत, जयंत और अपराजित. वे चारों द्वार चार योजन के चौडे हैं और उतने ही योजन लम्बाइ से हैं. वहांपर पल्योपम की स्थितिवाले चार देव रहते हैं

शब्दार्थ

प० प्रवेश त० तहां च० चार दे० देव म० महर्द्धिक जा० यावत् प० पल्योपम की ठि० स्थितिवाले प० रहते हैं वि० विजय वे० वैजयन्त ज० जयन्त अ० अपराजित ॥ ३० ॥ जं० जंबूद्वीप में मं० मेरु पर्वत की दा० दक्षिण दिशा में चु० चुल्लहेमवन्त वा० वर्षधर प० पर्वत के च० चार वि० विदिशा में ल० लवण समुद्र ति० तीन २ जो० योजन स० सो ओ० अवगाह कर ए० तहां च० चार अं० अन्तरद्वीप प० एकरूप आ० आभास वे० वैषाणिक णं० लांगुलिक ते० उस द्वीप में च० चार प्रकार के म०

सूत्र

देवा महड्ढिया जाव पलिओवमट्ठिइया परिवसंति तं० विजए, वेजयंते, जयंते, अपराजिए ॥ ३० ॥ जंबूदीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स दाहिणेणं चुल्लहिमवंतस्स वासहरपव्वयस्स चउसुविदिसासु लवणसमुद्दं तिण्णितिण्णि जोयणसयाइं ओगाहेत्ता एत्थणं चत्तारि अंतरदीवा प० तं० एगरुअदीवे आभासिअदीवे, वेसाणियदीवे, णंगोलियदीवे । तेसुणंदीवेसु चउव्विहा मणुस्सा परिवसंति एगूरुया, आभासिया,

भावार्थ

विजय देवता, वैजयंत देवता जयंतदेवता और अपराजित देवता,॥३०॥ जम्बूद्वीपके मेरु की दक्षिण दिशासे चूल हेमवंतवर्षधर पर्वत की चारों विदिशाके लवणसमुद्र में तीनसो२ योजन को अवगाहकर चार अंतर द्वीप रहे हैं:- एकरुप, आभास, वैषाणिक और लांगूलिक. वहांपर चार प्रकार के मनुष्य रहते हैं:- एकरूप मनुष्य, आभास मनुष्य, वैषाणिक और लांगुलिक. उन द्वीप से चारों विदिशा में लवण समुद्र में चार

शब्दार्थ

मनुष्य प० बसते हैं ए० एकरूप आ० आभास वे० वैषानिक णं० लांगूलिक ते० उस दी० द्वीपमें च० चार वि० विदिशा मे ल० लवण समुद्र में च० चार २ जो० योजन स० सो ओ० अवगाहकर च० चार अं० अंतरद्वीप ह०हयकर्णद्वीप ग० गजकर्णद्वीप गो० गौकर्णद्वीप स० शष्कूलीकर्ण ते० उस दी० द्वीप में० च० चार प्रकार के म० मनुष्य प० वसते हैं ह० हयकर्ण ग० गजकर्ण गो० गौकर्ण स० शष्कूलिकर्ण ते० उस दी० द्वीप के च० चार वि० विदिशा में ल० लवन समुद्र में पं० पांच २ जो० योजन स० सो

सूत्र

वेसाणिया, णंगोलिया ॥ तेसिंणं दीवाणं चउसुवि दिसासु लवणसमुद्दं चत्तारि चत्तारि जोयणसयाइं ओगाहेत्ता एत्थणंचत्तारि अंतरदीवा प० तं० हयकण्णदीवे, गयकण्णदीवे, गोकण्णदीवे, सक्कुलिकण्णदीवे । तेसुणं दीवेसु चउव्विहा मणुस्सा परिवसंति तं० हयकण्णा, गयकण्णा गोकण्णा, सक्कुलिकण्णा ॥ तेसिणं दीवाणं चउसुविदिसासु लवणसमुद्दं पंचपंच जोयणसयाइं ओगाहेत्ता, एत्थणं चत्तारि

भावार्थ

चार सो योजन के लम्बे चौडे चार अंतर द्वीप रहे हुवे हैं हयकर्ण द्वीप, गजकर्ण द्वीप, गोकर्ण द्वीप, शष्कूली कर्ण द्वीप. उस में उसी नामवाले चार प्रकार के मनुष्य बसते हैं. उन चार द्वीप से आगे लवण समुद्र में चार विदिशा में पांच सो २ योजनवाले चार अंतर द्वीप कहे हैं. आयंसमुख, मेंढमुख, अयोमुख, और गोमुख, और उसी नामवाले मनुष्य उन चारों द्वीप में रहते हैं. वहां से आगे लवण समुद्र में चारों

शब्दार्थ

ओ० अवगाह कर च० चार अं० अंतरद्वीप आ० आयंसमुख मे० मेंढमुख अ० अयोमुख गो० गौमुख ते० उस दी० द्वीप में च० चारप्रकार के म० मनुष्य भा० कहना ते० उस दी० द्वीप के च० चार वि० विदिशा में ल० लवण समुद्र में छ० छ जो० योजन स० सो ओ० अवगाहकर च० चार अं० अंतरद्वीप आ० अश्वमुख ह० हस्तिमुख सी० सिंहमुख व० व्याघ्रमुख ते० उस दी० द्वीपमें म० मनुष्य भा० कहना ते० उस दी० द्वीपकी च०चार वि० विदिशा में ल० लवन समुद्र में स० सात २ जो० योजन

सूत्र

अंतरदीवा प० तं० आयंसमुहदीवे, मेंढगमुहदीवे, अओमुहदीवे, गोमुहदीवे ।
तेसुणं दीवेसु चउव्विहा मणुस्सा भाणियव्वा ॥ तेसिंणं दीवाणं चउसुविदिसासु
लवणसमुद्दं छ छ जोयणसयाइं ओगाहेत्ता एत्थणं चत्तारि अंतरदीवा प० तं०
आसमुहदीवे, हत्थिमुहदीवे, सीहमुहदीवे, वग्घमुहदीवे तेसुणं दीवेसु मणुस्सा भाणियव्वा
तेसिंणं दीवाणं चउसुवि दिसासु लवणसमुद्दं सत्तसत्त जोयणसयाइं ओगाहित्ता

भावार्थ

विदिशा में छसो २ योजन के चार अंतर द्वीप रहे हैं. अश्वमुख, हस्ती मुख, सिंह मुख, और व्याघ्रमुख. उन द्विपों में उसी नामवाले चार प्रकार के मनुष्य जानना. उन से आगे चारों विदिशा में सात सो २ योजनवाले चार अंतरद्वीप रहे हैं अश्वकर्ण, हस्ति कर्ण, अकर्ण और कर्णप्रावर्ण. उस में उसी नामवाले मनुष्य जानना. उन से आगे लवण समुद्र में चारों विदिशा में आठसो २ योजन के लम्बे चोडे चार तंबर

शब्दार्थ स० सो ओ० अवगाहकर च० चार अं० अंतरद्वीप अ० अश्वकर्ण ह० हस्तिकर्ण अ० अकर्ण क० कर्ण-प्रावर्ण ते० उस दी० द्वीप में म० मनुष्य भा० कहना ते० उस दी० द्वीप में च० चार वि० विदिशा में ल० लवन समुद्र में अ० आठ २ जो० योजन स० सो ओ० अवगाहकर च० चार अं० अंतरद्वीप उ० उल्का-मुख मे० मेघमुख वि० विद्युन्मुख वि० विद्युदंतमुख ते० उस दी० द्वीप में म० मनुष्य भा० कहना ते०

सूत्र एत्थणं चत्तारि अंतरदीवा प० तं० आसकण्णदीवे, हत्थिकण्णदीवे, अकण्णदीवे, कण्णापाउरणदीवे । तेसुणं दीवेसु मणुस्सा भाणियव्वा ॥ तेसिंणं दीवाणं चउसु विदिसासु लवणसमुद्दं अट्ठअट्ठ जोयणसयाइं ओगाहित्ता एत्थणं चत्तारि अंतरदीवा प० तं० उक्कामुहदीवे, मेहमुहदीवे, विज्जुमुहदीवे, विज्जुदंतदीवे । तेसुणं दीवेसु मणुस्सा भाणियव्वा ॥ तेसिंणं दीवाणं चउसुविदिसासु लवणसमुद्दं णव णव जोयणसयाइं ओगाहित्ता एत्थणं चत्तारि अंतरदीवा प० तं० घणदंतदीवे, लट्ठदंतदीवे,

भावार्थ द्वीप हैं उल्कामुख, मेघमुख, विद्युत्मुख और विद्युदंत द्वीप. वैसे ही चार प्रकार के मनुष्य उसी नामवाले जानना. वहां से आगे लवण समुद्र में चारों विदिशा में नवसो २ योजन के चार अंतर द्वीप हैं घनदंत, लट्ठदंत, गूढदंत और शुद्धदंत. और उस में घनदंता, लट्ठदंता, गूढदंता, और शुद्धदंता नाम के चार प्रकारके मनुष्य रहते हैं, यह अठाइस हुवे, जम्बूद्वीप के मेरु पर्वत से उत्तर में शिखरी नामक पर्वत है

शब्दार्थ उस दी० द्वीप की च० चार वि० विदिशा में ल० लवण समुद्र में ण० नव २ जो० योजन स० सो ओ० अवगाहकर च० चार अंतरद्वीप घ० घनदंत ल० लट्ठदंत गू० गूढदंत सु० सुद्धदंत जं० जंबूद्वीप के मं० मेरु की उ० उत्तर में सि० शिखरी वर्षधर प० पर्वत के च० चार वि० विदिशा में ल० लवन समुद्र में ति० तीन २ जो० योजन स० सो ओ० अवगाहकर च० चार अं० अंतरद्वीप ए० एकरूप से० शेष त० तैसे नि० निर्विशेष भा० कहना जा० यावत् सु० सुद्धदंत ॥ ३१ ॥ जं० जंबूद्वीप के बा० बाहिर की वे०

सूत्र गूढदंतदीवे सुद्धदंतदीवे तेसुणंदीवेसु चउव्विहामणुस्सा परिवसंति तं० घणदंता, लट्ठदंता, गूढदंता, सुद्धदंता ॥ जंबूदीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स उत्तरेण सिहरिस्स वासहर पव्वयस्स चत्तारि चउसु विदिसासु लवणसमुद्दं तिण्णितिण्णि जोयणसयाइं ओगाहित्ता एत्थणं चत्तारि अंतरदीवा प० तं० एगरुयदीवे, सेसंतहेव निरवसेसं भाणियव्वं जाव सुद्धदंता ॥३१॥जंबूदीवस्सणंदीवस्स बाहिरिल्लाओ वेइयाओ चउद्दिसिं लवणसमुद्दं पंचाणउयं जोयण

भावार्थ उस की चारों विदिशाओं में चार शाखा निकली हुइ हैं यह सब अधिकार जैसा आगे कहा वैसा ही कहना. इस तरह से सब मिलकर ५६ अंतर द्वीप हुवे, उन पर बसनेवाले सब युगलियें अत्यंत सुंदर मनोहर हैं उस का आयुष्य पल्योपम के असंख्यातवें भाग का है ८०० धनुष्य की अवगाहना है और उन सब को ६४ पसलियां रही हुइ हैं, वे चतुर्थ भक्त आहार करते हैं ४९ दिन तक बच्चे की प्रतिपालना करते हैं और वहां से मरकर देवता होते हैं॥३१॥जम्बूद्वीप की बाहिर की वेदिका से चारों दिशा में लवण

शब्दार्थ वेदिका की च० चारदिशा में ल० लवन समुद्र में पं० पच्चानु जो० योजन स० हजार ओ० अवगाहकर म० बडे में बडे अ० अलंजर सं० संठान से सं० रहे हुवे च० चार म० महापाताल व० वडवामुख के० केतुक यू० यूपक ई० ईश्वर त० तहां च० चार दे० देव म० महार्द्धिक जा० यावत् प० पल्योपम ठि० स्थितिवाले प० रहते हैं का० काल म० महाकाल वे० वेलंब प० प्रभंजन ॥ ३२ ॥ जं० जंबूद्वीप की बा०

सूत्र सहस्साइं ओगाहेत्ता एत्थणं महइ महालया महालिंजर संठाणं संठिया चत्तारि महापाया ला प० तं० वडवामुहे, केउए, यूवए, ईसरे । तत्थणं चत्तारि देवा माहिड्ढिया जाव पलिओवमट्ठिइया परिवसंति, तं० काले, महाकाले, वेलंबे पभंजणे ॥ ३२ ॥

भावार्थ समुद्र में ९५ हजार योजन अवगाहकर जावे तो वहां बहुत बडे, अलंजर (पानी के घडे) के आकारवाले चार पाताल कलशे कहे हैं [1] पूर्व दिशा में वडवामुख, २ दक्षिण दिशा में केतु, ३ पश्चिम दिशा में यूपक और उत्तर दिशा में ईश्वर. इन चारों कलशपर महा ऋद्धिवाले व पल्योपम की स्थितिवाले चार देवताओं रहते हैं. उन के नाम काल, महाकाल, वेलंब और प्रभंजन ॥ ३२ ॥ जम्बूद्वीप की वेदिका से बाहिर

[1] ये चारों कलश लक्ष योजन में ऊंडे और मध्य भाग में चौडे हैं. मुख और पिंदा दश हजार योजन का चौडा है, इन एक २ के तीन २ कांड ३३३३३ से साधिक है. प्रथम कांड में वायु, दूसरे में वायु व पानी और तीसरे में मात्र पानी है.

शब्दार्थ

बाहिर की वे० वेदिका से ल० लवण समुद्र में ब० बयालीस जो० योजन स० हजार ओ० अवगाहकर वे० बेलंधर णा० नागराजा के च० चार आ० आवास प० पर्वत गो० गोथूभ पर्वत द० द्रव्यभास सं० संख पर्वत दा० दाम पर्वत त० तहां च० चार म० महर्द्धिक जा० यावत् प० पल्योपम ठि० स्थिति वाले दे० देव प० रहते हैं गो० गोथूभ सि० सिव सं० संख म० मनःशिला जं० जंबूद्वीप की बा० बाहिर की वे० वेदिका से च० चार विदिशा में ल० लवण समुद्र में ब० बयालीस२ जो० योजन स० हजार ओ० अवगाहकर च० चार अ० अनुवेलंधर

सूत्र

जंबूदीवस्सणं बाहिरिल्लाओ वेइयताओ चउद्दिसिं लवणसमुद्दं बायालीसं जोयणसहस्साइं ओगाहित्ता एत्थणं चउण्हं वेलंधर णागरायाणं चत्तारि आवासपव्वया प० तं० गोथूभे, दओभासे, संखे, दासीमे। तत्थणं चत्तारि महिड्ढिया जाव पलिओवमठिइया देवा परिवसंति—गोथूभे सिवए संखे, मणोसिलए ॥ जंबूदीवस्सणं दीवस्स बाहिरिल्लाओ

भावार्थ

लवण समुद्र में चारों दिशा में बियालिस हजार योजन अवगाहकर जावे तो वहां वेलंधर नागराजा के चार आवास पर्वत कहे हैं. १ गोथूम पूर्व दिशा में, २ द्रव्यभास दक्षिण दिशा में, ३ शंख पश्चिम दिशा में, और दाम उत्तर दिशामें. वहां पर गोथूमे, शिव, शंख, व मनःशिल नामवाले महर्द्धिक व पल्योपम की स्थितिवाले

---

१ पूर्वोक्त चारों महा कलश के नीचे के काण्ड में से वायु गुंजायमान होता है तब उपर के काण्ड का पानी उछलता है उस को रोकनेवाला वेलंधर देव है. और उस की पास रहनेवाला अनुवेलंधर है.

शब्दार्थ

ण० नाग देवता के च० चार आ० आवास पर्वत क० कर्कोटक वि० विद्युत्प्रभ के० कैलास अ० अरुणप्रभ त० तहां च० चार म० महर्द्धिक जा० यावत् प० पल्योपम ठि० स्थिति वाले दे० देव प० रहते हैं क० कर्कोटक क० कर्दम के० कैलास ण० अरुणप्रभ ॥ ३३ ॥ ल० लवण समुद्र में च० चार चं० चंद्र प० प्रकाशे प० प्रकाशते हैं प० प्रकाशेंगे च० चार सू० सूर्य त० तपें त० तपते हैं त० तपेंगे च० चार क० कृत्तिका जा० यावत् च० चार भ० भरणी च० चार अ० अग्नि जा० यावत् च० चार ज० यम च० चार अ०

सूत्र

वेइयताओ चउसु विदिसासु लवणसमुद्दं बायालीसं २ जोयणसहस्साइं ओगाहेत्ता एत्थणं चउण्हं अणुवेलंधरणागराईणं चत्तारि आवासपव्वया प० तं० ककोडए, विज्जुप्पब्भओ केलासे, अरुणप्पभे । तत्थणं चत्तारि महिड्ढिया जाव पलिओवमठिईयादेवा परिवसंति ककोडए कदमए केलासे अरुणप्पभे ॥ ३३ ॥ लवणेणं समुद्दे चत्तारि चंदा

भावार्थ

चारदेव कहे हैं. जम्बूद्वीप की बाहिरली वेदिका के अंत से चार विदिशा में बियालिस २ हजार योजन को अवगाहकर रहनेवाले अनुवेलंधर नाग राजा के चार आवास पर्वत कहे हैं कर्कोटक, विद्युत्प्रभ, कैलाश और अरुणप्रभ. वहां पर पल्योपम की स्थितिवाले व महर्द्धिक चार देव कहे हैं कर्कोटक, कर्दम, कैलाश और अरुण प्रभ ॥ ३३ ॥ लवण समुद्र में चार चंद्रमाने प्रकाश किया, प्रकाश करेंगे, और प्रकाश करते हैं, चार सूर्य तपे, तपते हैं और तपेंगे और चार २ अट्ठाइस ग्रह उन के देवता और अट्ठासी नक्षत्र

शब्दार्थ

अंगारक जा० यावत् च० चार भा० भावकेतु ॥ ३४ ॥ ल० लवन समुद्र के च० चार दा० द्वार वि० विजय वे० वैजयन्त ज० जयन्त अ० अपराजित ते० वे दा० द्वार च० चार जो० योजन वि० चौडे ता० इतनाही प० प्रवेश त० तहां च० चार दे० देव म० महर्द्धिक जा० यावत् प० पल्योपम ठि० स्थिति वाले प० रहते हैं वि० विजय जा० यावत् अ० अपराजित ॥ ३५ ॥ धा० धातकी खंड के च० चार जो०

पभासिंसु पभासंति वा पभासिस्संति वा । चत्तारि सूरिया तविंसु तवंति वा तविस्संति. चत्तारि कत्तियाओ जाव चत्तारि भरणीओ, चत्तारि अग्गि जाव चत्तारि जमा चत्तारि अगारया जाव चत्तारि भावकेऊ ॥ ३४ ॥ लवणस्सणं समुद्दस्स चत्तारि दारा प० तं० विजए, वेजयंते, जयंते; अपराजिए तेणंदारा चत्तारि जोयणाइं विक्खंभेणं तावइयं चेव पवेसेणपण्णत्ता । तत्थणं चत्तारि देवा महिड्ढु-याजाव पलिओवमठिइया परिवसंति. विजए जाव अपराजिए ॥ ३५ ॥

(भाव केतुतक) रहे हुवे हैं ॥३४॥ लवण समुद्र को चार योजन के पहुले और ऊंचे चार द्वार रहे हैं. विजय वैजयंत, जयंत और अपराजित. वहां पर महाऋद्धि के धारक व पल्योपम की स्थिति के चार देवताओं रहे हुवे हैं विजय, वैजयंत, जयंत और अपराजित ॥ ३५ ॥ धातकी खंड द्वीप चारों तरफ फिरता हुवा

शब्दार्थ

योजन स० लाख च० चारोंबाजु वि० चौडा ॥ ३६ ॥ जं० जंबूद्वीप की बा० बाहिर च० चार भ० भरत च० चार ए० ऐरवत ए० ऐसे ज० जैसे स० दूसरे ठाणे में त० तैसे णि० निर्विशेष भा० कहना जा० यावत् च० चार मं० मेरु च० चार मं० मेरु की चूलिका ॥ ३७ ॥ णं० नंदीश्वर द्वीप की च० चारों बाजु वि० चौडे ब० बहु म० मध्य दे० देशभागके च० चारदिशा में च० चार अं० अंजनक प० पर्वत पु० पूर्व में दा० दक्षिण में प० पश्चिम में उ० उत्तर में ते० वे अं० अंजनक पर्वत च० चौरासी

सूत्र

धायइखंडेणंदीवे चत्तारि जोयणसयसहस्साइं चक्कवाल विक्खंभेणं प० ॥ ३६ ॥ जंबूदीवस्सणं दीवस्स बाहिया चत्तारि भरहाइं चत्तारि एरवयाइं, एवं जहा सदुद्देसए तहेव णिरवसेसं भाणियव्वं. जाव चत्तारि मंदरा, चत्तारि मंदरचूलियाओणं ॥ ३७ ॥ णंदीसरवरस्सणं दीवस्स चक्कवालविक्खंभस्स बहुमज्झदेसभाए चउद्दिसिं चत्तारि अंजणग पव्वया प० तं० पुरच्छिमिल्ले अंजणगपव्वए, दाहिणिल्ले अंजणग पव्वए,

भावार्थ

चार लाख योजन का चौडा है ॥ ३६ ॥ जम्बूद्वीप की बाहिर धातकी खंड, और पुष्करार्ध द्वीप में चार भरत, चार ऐरवत, चार हरिवर्ष, चार रम्यक वर्ष, आदि सब अधिकार मेरु पर्वत की चूलिकातक का दूसरा ठाणा का दूसरा उद्देशा जैसे कहना ॥ ३७ ॥ आठवा नंदीश्वर द्वीप ६,३,८४,००,००० योजन का चौडा है. इस के मध्य में चारों दिशाओं में चार अंजनक पर्वत कहे हैं पूर्व दिशा में, दक्षिण दिशा में

शब्दार्थ

जो० योजन स० सहस्र उ० ऊंचे उ० ऊंचपने ए० एक जो० योजन स० सहस्र उ० ऊंडे मू० मूलमें द० दस जो० योजन स० सहस्र वि० चौडा त० पीछे मा० थोडा थोडा प० घटता २ उ० उपर ए० एक जो० योजन स० सहस्र वि० चौडा मू० मूल में ए० एकत्तीस जो० योजन स० सहस्र छ० ६२३ जो० योजन स० शत प० परिधि उ० उपर ति० तीन० जो० योजन स० सहस्र ए० १६२ जो० योजन

सूत्र

पच्चत्थिमिल्ले अंजणगपव्वए, उत्तरिल्ले अंजणगपव्वए । तेणं अंजणग पव्वया ~~चउरासीइ~~ जोयणसहस्साइं उड्ढंउच्चत्तेणं एगं जोयणसहस्सं उव्वेहेणं, मूलेदस ~~जोयणसहस्साइं~~ विक्खंभेणं ~~तदणंतरंचणं~~ मायाए मायाए परिहाएमाणा परिहाएमाणा उवरि मेगं जोयणसहस्सं विक्खंभेणं प० । मूले एक्कतीसे जोयण सहस्साइं छच्चतेवीसे जोयणसए परिक्खेवेणं, उवरि तिण्णि जोयणसहस्साइं एगंच बावट्ठिजोयणसयं परिक्खेवेणं मूलेविच्छिण्णा, मज्झे संक्खित्ता

भावार्थ

पश्चिम दिशा और उत्तर दिशा में. वे चारों अंजनक पर्वत चौरासी हजार योजन के ऊंचे, एक हजार योजन के ऊंडे जमीन में हैं. मूल में दश हजार योजन के चौडे हैं, और अनुक्रम से कम होते २ शिखरपर एक हजार योजन के चौडे कहे हैं. मूल में ३१,६२३ योजन की परिधि है और उपर ३१६२ योजन की परिधि है. मूल में विस्तीर्ण है, बीच में संकुडे है, और उपर पतले हैं, गायपुंछके आकारवाले हैं,

शब्दार्थ

स० शत प० परिधि मू० मूलमें वित्तीर्ण म० मध्य में सं० संक्षिप्त उ० उपर त० सूक्ष्म गो० गोपुच्छ स० संठान से सं० रहाहुवा स० सर्व अं० काले अ० अच्छे जा० यावत् प० प्रतिरूप ते० उन अं० अंजनक प० पर्वत पे ब० वहुत स० देखने योग्य भू० भूमिभाग ते० उस ब० बहुत स० देखने योग्य भू० भूमिभाग के ब० बहुत म० मध्य देशभाग में च० चार सि० सिद्धायतन ते० वे सि० सिद्धायतन ए० एक जो० योजन स० सो आ० लंबे प० पच्चास जो० योजन वि० चौडा बा० बोत्तर जो० योजन उ० ऊंचे उं० ऊंचपने ते० उन सि सिद्धायतानोंको च० चारों दिशिमें च० चार दा० द्वार दे० देवद्वार अ० असुरद्वार,

सूत्र

उप्पिंतणुया गोपुच्छसंठाणसंठिया, सव्वअंजणगमया अच्छा जाव पडिरूवा ॥
तेसिणं अंजणगपव्वयाणं बहुसमरमणिज्ज भूमिभागा प० तेसिणं बहुसमरमणिज्जाणं भूमिभागाणं बहुमज्झदेसभाए चत्तारि सिद्धायणा प० तेणं सिद्धायणा एगं जोयणसयं आयामेणं प० पण्णासं जोयणाइं विक्खंभेणं बावत्तरि जोयणाइं उड्ढुंउच्चत्तेणं । तेसिणं सिद्धायणाणं चउद्दिसिं चत्तारिदारा प० तं० देवदारे, असुरदारे

भावार्थ

सब अंजन [कालेरंग] के रत्न समान निर्मल यावत् प्रतिरूप हैं. उन अंजनक पर्वत पर बहुत रमणिक भूमि के मध्य भाग में चार सिद्धायतन कहे हुवे हैं वे सिद्धायतन सो योजन के लम्बे, पच्चास योजन के चौडे और बहोतर योजन के ऊंचे कहे हैं. उन सिद्धायतनों की चारों दिशि में चार द्वार कहे हैं पूर्व में देवद्वार, दक्षिण में असुर, पश्चिम में नाग और उत्तर में सुवर्ण. उन द्वारों में चार जाति के देव रहते हैं.

शब्दार्थ

ना० नागद्वार सु० सुवर्णचार ते० उन दा० चारमें चे० चार प्रकारके दे० देव अ० असुर. ना० नाग सु० सुवर्ण ते० उस दा० द्वारके पु० आगे च० चार मु० मुख मंडप ते० उस मु० मुखमंडप के पु० आगे च० चार पे० प्रेक्ष्य ध० गृहमंडप ते० उस पे० प्रेक्ष्य ध० गृहमंडप के ब० बहुत म० मध्यदेश भाग में च० चार व० वज्रमय अ० आखाटक ते० उन व० वज्रमय अ० आखाटक के ब० बहुत म० मध्यदेश भाग में च० चार म० मणिपीठिका ता० उस म० मणिपीठिका के उ० उपर च० चार सी० सिंहासन ते० उस सी० सिंहासन की उ० उपर च० चार वि० विजयदूष्य ते० उस वि०

सूत्र

णागदारे, सुवण्णदारे, । तेसुणं दारेसु चउव्विहा देवा परिवसंति तं० देवा, असुरा, नागा, सुवण्णा । तेसिणं दाराणं पुरओ चत्तारि मुहमंडवा प० । तेसिणं मुहमंडवाणं पुरओ चत्तारि पेच्छाघरमंडवा प० । तेसिणं पेच्छाघरमंडवाणं बहुमज्झ देसभाए चत्तारि वइरामया अक्खाडगा प० । तेसिणं वइरामयाणं अक्खाडगाणं बहुमज्झदेसं चत्तारि मणिपेढियाओ प० । तासिणं मणिपेढियाणं उवरिं चत्तारि सीहासणा प० । तेसिणं सीहासणाणं उवरिं चत्तारि विजयदूसा प० । तेसिणं

भावार्थ

देव, असुर, नाग और सुवर्ण. उन द्वारों के आगे चार मुख मंडप कहे हैं. उन की आगे चार प्रेक्षमंडप कहे हैं. उन प्रेक्ष मंडप के मध्यभाग मे चार अखाडे कहे. उनके मध्यमें चार मणिरत्न की पीठिका (चबुतरे) कही. उन पीठिका पर चार सिंहासन कहे. उन सिंहासनो की उपर चार विजयदूष्य (रत्न मयवस्त्र) कहे. उन

शब्दार्थ

विजयदूष्य की ब० बहुत म० मध्य दे० देशभाग में च० चार व० वज्रमय अं० अंकुश ते० उस व० वज्रमय अ० अंकुश में च० चार कुं० कुंभी जैसी मु० मोतीयोंकी माला ते० वे कुं० कुंभीजैसी मु० मोतीकी माला प० प्रत्येक २ अ० अन्य त० उस से अ० अर्ध प० प्रमाण से च० चार अ० अर्ध कुं० कुंभीजेसे मु० मोती की माले स० सर्व बाजू सं० रही हुई ते० उस पे० प्रेक्ष्य गृहमंडप के पु० आगे च० चार अ० मणिपीठिका ता० उस म० मणिपीठिका की उ० उपर च० चार चे० चैत्यस्तूप ते० उस चे० चैत्यस्तूप की प० प्रत्येक २ च० चारदिशा में च० चार म० मणिपीठिका ता० उस म० मणि-

सूत्र

विजय दूसगाणं बहुमज्झदेसभाए चत्तारि वइरामया अंकुसा प० । तेसिणं वइरामएसु अंकुसेसु चत्तारि कुंभिया मुत्तादामा प० । तेणं कुंभियामुत्तादामा पत्तेयं पत्तेयं अण्णेहिं तदुद्धच्चत्त पमाणमित्तेहिं चउहिं अद्धकुंभिएहिं मुत्तादामेहिं सव्वओ संमता संपरिखित्ता । तेसिणं पेच्छाघरमंडवाणं पुरओ चत्तारि मणिपीढिया प० । ताासिणं मणिपीढियाणं उवरिं चत्तारि चेइयथूभा प० तेसिणं चेइयथूभाणं पत्तेयं पत्तेयं चउद्दिसिं चत्तारि

भावार्थ

विजयदूष्यों केचार वज्रमय अंकुश कहे. उन अंकुशों में कुंभके आकार वाली चार मोतियोंकी मालाए कहीं. वे कुंभ समान मोतियों की मालाएं अन्य अर्ध कुंभाकार वाली मोतियों की मालाओंसे विटाइ हुइ हैं. अब उन प्रेक्षमंडप की आगे चारमणिपीठिका कही उन मणीपीठिका पर चार चैत्यस्तूप हैं और चैत्यस्तूप की चारों दिशामें चार मणिपीठिका हैं. उन मणिपीठिका परस्तूपकी ओर मुख करके पर्यंकासनसे

शब्दार्थ

पीठि का की उ० उपर च० चार जि० जिनप्रतिमा स० सर्व र० रत्नमय स० पर्यंकासनसे थू० स्तूप-की और मुख से चि० रही हैं रि० वृषभ व० वर्धमान चं० चंद्रानन वा० वारिसेन ते० उस चे० चैत्यस्तूप की पु० आगे च० चार म० मणिपीठिका ता० उस म० मणिपीठि का की उ० उपर च० चार चे० चैत्यवृक्ष ते० उस चे० चैत्यवृक्ष की पु० आगे च० चार म० मणिपीठि का ता० उस म० माणि-पीठिका की उ० उपर च० चार म० महेन्द्रध्वजा ते० उस म० महेन्द्रध्वज की पु० आगे च० चार

सूत्र

मणिपेढियाओ प० । तासिणं मणिपेढियाणं उवरिं चत्तारि जिणपडिमाओ सव्वरय-णामइयाओ सपलिअंकणिसण्णाओ थूभाभिमुहीओ चिट्ठंति तं० रिसभा वद्धमाणा, चंदाणणा, वारिसेणा । तेसिणं चेइयथूभाणं पुरओ चत्तारि मणिपेढियाओ प० । ता-सिणं मणिपेढियाणं उवरिं चत्तारि चेइयरुक्खा प० । तेसिणं चेइयरुक्खाणं पुरओ चत्तारि मणिपेढियाओ प० । तासिणंमाणिपेढियाणं उवरिं चत्तारि महिंदज्झया प० । तेसिणं महिंदज्झ-याणं पुरओ चत्तारि णंदाओ पुक्खरणीओ प० । तासिणं पोक्खरणीणं पत्तेयं पत्तेयं चउद्दिसिं

भावार्थ

चार जिनप्रतिमाएं कही उनके नाम ऋषभ, वर्धमान, चंद्रानन, और वारिसेन चैत्य स्तूप की आगे चार माणि-पीठिका कहीं. उन मणिपीठिकाओपर चैत्यवृक्ष कहे. उन चैत्यवृक्षकी आगे चार मणिपीठिका कही और उनपर चार महेंद्रध्वजा कहीं और महेन्द्रध्वजाकी आगे चार नंदापुष्करणी कही उन नंदापुष्करणीकी

ण० नंदापुष्करणी ता० उस पा० पुष्करणी की प० प्रत्येक २ चं० चारोदिशा में च० चार व० वनखंड पु० पूर्व में दा० दक्षिण में प० पश्चिम में उ० उत्तर में पु० पूर्व में अ० अशोकवन दा० दक्षिण में हो० है स० सप्तपर्णवन अ० पश्चिम में चं० चंपकवन चू० आम्रवन उ० उत्तर में त० उसमें जे० जो पु० पूर्व में अं० अंजनक प० पर्वत त० उसकी च० चारोंदिशा में च० चार नं० नंदापुष्करणी प० कही नं० नंदा नं० नंदुत्तरा आ० आनंदा नं० नंदिवर्धना त० उस नं० नंदापुष्करणी से ए० एक जो० योजन स० सहस्र आ० लम्बाइ में प० पचास जो० योजन स० सहस्र वि० चौडाइ में द० दश योजन स० सहस्र

चत्तारि वणखंडा प०तं० पुरच्छिमेणं, दाहिणेणं, पच्चत्थिमेणं, उत्तरेणं॥ पुव्वेण असोगवणं, दाहिणओ होंति सत्तिवण्णवणं, अवरेण चंपगवणं, चूतवणं उत्तरे पासे॥ १॥ तत्थणं जेसे पुरच्छिमिल्ले अंजणगपव्वए तस्सणं चउद्दिसिं चत्तारि णंदापोक्खरणीओ पण्णत्ताओ तं०णंदा, णंदुत्तरा, आणंदा, णंदिवद्धणा। तओणं णंदापोक्खरणीओ एगं जोयण सयसहस्स आयामेणं, पण्णासं जोयण सहस्साइं विक्खंभेणं, दस जोयणसयाइं उ-

आगे चारों दिशिमें चार वनखंड कहेः—पूर्वमें अशोक वन, दक्षिणमें सप्तच्छर (सादरी वृक्षका) वन, पश्चिममें चंपकवन और उत्तर दिशामें आम्रवन हैं. पूर्वदिशाका अंजनक पर्वतकी चारों दिशामें चार नंदा पुष्करणी वावडी ओं कही हैं नंदोत्तरा, नंदा, आनंदा और नंदीवर्धना. उन नंदा नामक पुष्करणियोंकी लंबाइ एक

शब्दार्थ

उ० गहराइ से ता० उस पो० पुष्करणी को प० प्रत्येक २ च० चारोदिशा में च० चार ति० त्रिसोपान प० प्रतिरूपक ते० उन ति० त्रिसोपान के प० प्रतिरूपक पु० आगे च० चार तो० तोरण पु० पूर्व में दा० दक्षिण में प० पश्चिम में उ० उत्तर में पू० पुर्व में अ० अशोकवन जा० यावत् चू० आम्रवन उ० उत्तरदिशा में । ता० उस पु० पुष्करणी के ब० बहु म० मध्य विभाग में च० चार द० दधिमुख प० पर्वत प० कहे. ते० वे द० दधिमुख पर्वत च० चौसठ जो० योजन सहस्र उ० ऊंचे ए० एक जो० योजन

सूत्र

व्वेहेणं, । तासिणं पोक्खरणीणं पत्तेयं पत्तेयं चउद्दिसिं चत्तारि तिसोवाण पडिरूवगा प० तेसिणं तिसोवाण पडिरूवगाणं पुरओ चत्तारि तोरणा प० तं० पुरच्छिमेणं, दाहिणेणं, पच्चत्थिमेणं, उत्तरेणं. । तासिणं पोक्खरणीणं पत्तेयं पत्तेयं चउद्दिसिं चत्तारि-वणखंडा प० तं० पुरओ, दाहिणओ, पच्चत्थिमेणं। उत्तरेणं पुव्वेण असोगवणं, जावचूयवणं उत्तरेपासे। तासिणं पुक्खरणीणं बहुमज्झदेसभाए चत्तारि दहिमुहग पव्वया प०। तेणं दहि मुहग पव्वया चउसट्ठिं जोयणसहस्साइं उड्ढं उच्चत्तेणं एगं जोयणसहस्स मुव्वेहेणं,

भावार्थ

लक्ष योजन की है और चौडाइ पचास हजार की व उंडाइ एक हजार योजन की है. उन प्रत्येक वावडियोंकी चारोंदिशामें जो द्वार रहे हैं उनको तीन २ सोपान रहे हैं. पूर्वादि चारों दिशामें चार तोरण रहेहैं. उस पुष्करणी की चारो दिशाओंमें चार वनखंड हैं पूर्वदिशामें अशोक वन यावत् उत्तर दिशामें आम्रवन तक जानना. उसके मध्यभागमें दधिसमान उज्वल चार दधिमुख पर्वत कहे हैं. वे चौसठ हजार योजन

शब्दार्थ

उ० ऊंडाइ में स० सर्वत्र स० सरिखे प० पल्यंकासन सं० संस्थान से सं० संस्थित द० दश जो० योजन सहस्र वि० चौडाइ में ए० एकतीस जो० योजन सहस्र छ० छसोतेइस योजन प० परिधि में स० सर्व र० रत्नमय अ० आश्चर्यजनक जा० यावत् प० प्रतिरूप ते० उन द० दधिमुख प० पर्वत के उ० उपर ब० बहुत स० सरिखे र० रमणिक भू० भूमिभाग प० कहा से० बाकी का ज० जैसे अं० अजनक प० पर्वत का त० वैसेही णि० निरवशेष भा० कहना जा० यावत् चू० आम्रवन उ० उत्तरदिशा में । त० उसमें दा० दक्षिण दिशा के अं० अंजनक पर्वत त० उसकी च० चारहोदिशा में च० चार नं० नंदा-

सूत्र

सव्वत्थसमा पल्लगसंठाण संठिया—दस जोयण सहस्साइं विक्खंभेणं, एक्कतीसं जोयण सहस्साइं छच्चतेवीसेजोयणसए परिक्खेवेणं, सव्वरयणामया अच्छा जाव पडिरूवा । तेसिण दहिमुहग पव्वयाणं उवरिं बहु समरमणिज्जा भूमिभागा प० से सं जहेव अंजणगपव्वयाणं तहेव णिरवसेसं भाणियव्वं जाव चूअवणं उत्तरेपासे । तत्थणं दाहिणिल्ले अंजणग पव्वए तस्सणं चउद्दिसिं चत्तारि णंदाओ पुक्खरणीओ

भावार्थ

के ऊंचे हैं एक हजार योजनके उंडे हैं. ऊंचे, नीचे और मध्यभाग में सबठिकाने सरिखे हैं पालाके आकार वाले हैं. और दस हजार योजनकी चौडाइ है. ३१६२३ योजनकी परिधि है. सबरत्नमय उज्वल यावत् प्रतिरूप है. उस दधिमुख पर्वतके उपर रमणीय, मनोहर, व समभूमि भाग है यावत् सब अधिकार अंजनक पर्वत जैसे कहना. दक्षिण दिशामें जो अंजनक पर्वत कहा उसकी चारों दिशाओंमें चार नंदा

शब्दार्थ

पुष्करणी प० कही भ० भद्रा, वि० विशाला कु० कुमुदा पु० पौंडरीकिनी ता० उन नं० नदापुष्करणी ए० एक जो० योजन सहस्र से० शेष तं० वैसा जा० यावत् द० दधिमुख पर्वत जा० यावत् व० वनखंड। त० उसमें जे० जो प० पश्चिम का अं० अजनक पर्वत त० उसकी च० चारोंदिशा में च० चार नं० न० नदापुष्करणी प० कहीं नं० नदीसेना आ० आमोघा गो० गोस्थूभा सु० सुदर्शना से० शेष तं० उस अनुसार त० वैसेही द० दधिमुख प० पर्वत त० वैसेही सि० सिद्धायतन जा० यावत् व० वनखंड

सूत्र

प० तं० भद्दा, विसाला, कुमुया, पोंडरीकिणी। ताओणं णंदाओ पोक्खरणीओ एक्कं जोयण सयसहस्सं सेसं तंचेव जाव दहिमुहगपव्वया जाव वणखंडा। तत्थणं जेसे पच्चत्थिमिल्ले अंजणगपव्वए तस्सणं चउद्दिसिं चत्तारि णंदाओ पोक्खरणीओ पण्णत्ताओ तं० णंदिसेणा, आमोहा, गोथूभा। सुदंसणा; सेसंतंचेव तहेव दाहिमुहग पव्वया, तहेव सिद्धाययणा, जाव वणखंडा। तत्थणं जेसे उत्तरिल्ले अंजणग

भावार्थ

नामक पुष्करनी कही. भद्रा, विशाला, कौमुदी और पुंडरिकिणी. वे चारों एक लक्ष योजनकी लम्बी आदि सब अधिकार दधिमुख पर्वत व वनखंड तकका उक्त कथनानुसार जानना. अब पश्चिमदिशामें जो अंजनक पर्वत हैं उसकी चारों दिशाओंमें चार पुष्करणी वावडी कही. नंदीषेणा आमोघा, गोस्थूभा और सुदर्शना. शेष सब अधिकार दधि मुख पर्वत व वनखंड आदिका उस कथनानुसार जानना. उत्तर दिशे

शब्दार्थ

त० वहां जे० जो उ० उत्तरदिशा में अं० अंजनक पर्वत त० उसकी च० चारदिशि में च० चार नं० नंदा पो० पुष्करणी प० कही वि० विजया वे० वैजयंति ज० जयन्ति अ० अपराजिता ता० वे पो० पुष्करणियों ए० एक योजन स० शत [सौ] तं० उस अनुसार प० प्रमाण त० वैसेही द० दधिमुख पर्वत त० वैसेही सि० सिद्धायतन जा० यावत् व० वनखंड णं० नंदीश्वर द्वि० द्वीप च० चौडाइ में ब० बहुत म० मध्यमें च० चार दि० विदिशा में च० चार र० रतिकर प० पर्वत प० कहे उ० इशान कोन का

सूत्र

पर्वत दा० अग्निकोन का पर्वत दा० नैऋत्य कौन का र० रतिकर पर्वत उ० वायव्य कोन का र० रतिकर

पव्वए तस्सणं चउद्दिसिं चत्तारि णंदाओ पोक्खरणीओ प० तं० विजया, वेजयंति, जयंति, अपराजिया । ताणं पोक्खरणीओ एगं जोयणसयं तंचेव पमाणं, तहेव दहिमुह पव्वया, तहेव सिद्धाययणा, जाव वणखंडा ॥ णंदीसरवरस्सणं दीवस्स चक्कवाल विक्खंभस्स बहुमज्झदेसभाए चउसु विदिसासु चत्तारि रतिकरग पव्वया प० तं० उत्तारपुरच्छिमिल्लरतिकरगपव्वए, दाहिणपुरत्थिमिल्ल रतिकरग पव्वए दाहिणपच्चत्थिमिल्लरति

भावार्थ

वाला अंजनक पर्वत की चारों दिशामें चार पुष्करणी हैं, विजया, वेजयंती, जयंती और अपराजिता. वे पुष्करणीयों एक लक्ष योजनकी लम्बी हैं आदि सब अधिकार उक्तमुजब जानना. नंदीश्वरद्वीपके मध्यभाग मे चयार विदिशाओंमे चार रतिकर पर्वत हैं. ईशान, अग्नि, नैऋत्य, और वायव्य विदिशाके रतिकर

शब्दार्थ प० पर्वत ते० वे र० रतिकर प० पर्वत द० दश जो० योजन स० शत उ० ऊंचाइ में द० दश गा० कोश स० सौ उ० ऊंडे स० सर्व स० बराबर झ० झालर के सं० संस्थान से सं० रहे हुवे हैं द० दश सहस्र योजन वि० चौडाइ में ए० एकतीस जो० योजन सहस्र छ० छ० ते० तेइस जो० योजन स० सौ प० परिधि में स० सर्व र० रत्नमय जा० यावत् प० प्रतिरूप त० उसमें जे० जो उ० ईशान कौन का र० रतिकर प० पर्वत त० उसकी च० चारों दिशा में ई० ईशानदेवता की च० चार अ० अग्र-

सूत्र करग पव्वए, उत्तरपच्चत्थिमिल्ल रतिकरग पव्वए । तेणं रतिकरग पव्वया दसजोयण सयाइं उड्ढं उच्चत्तेण दस गाउय सयाइं उव्वेहेणं, सव्वत्थसमाय झल्लरिसंठाणसंठिया, दस जोयण सहस्साइं विक्खंभेणं, एक्कतीसं जोयण सहस्साइं छच्चतेवीसे जोयणसए परिक्खेवेणं, सव्व रयणामया अच्छा जाव पडिरूवा । तत्थणं जेसे उत्तरपुरच्छिमिल्ले रतिकरग पव्वए तस्सणं चउद्दिसि मीसाणस्स देवरण्णो चउण्हमग्गमहिसीणं

भावार्थ पर्वत. वे रतिकर पर्वतों एक हजार योजनके ऊंचे हैं और एक हजार कोशके जमिनमें ऊंडे हैं. उपर, नीचे और मध्यभागमें बराबर हैं. झालरके आकार वाले हैं. दश हजार योजनके चौडे हैं. ३१६२३ योजनकी परिधि है सब रत्नमय यावत् प्रतिरूप हैं. ईशान कोनका रतिकर पर्वत की चारों दिशामें ईशानेन्द्र देवता की कृष्णा, राजि, रामा, व रामरक्षिता नामकी चार अग्रमहिषीयाँ की एक लक्षयोजनकी चार राजधानी

शब्दार्थ

महिषियों की जं० जम्बूद्वीप प्रमाण च० चार रा० राज्यधानियां प० कही नं० नंदोत्तरा, नं० नंदा उ० उत्तरकुरा, दे० देवकुरा कृ० कृष्णा, रा० राजी रा० रामा रा० रामरक्षिता । त० वहां जे० जो दा० अग्निकोन का र० रतिकर प० पर्वत त० उसकी च० चारोंदिशाओ में स० शक्र दे० देवेन्द्र की च० चार अ० अग्रमहिषियों की ज० जम्बूद्वीप प्रमाण च० चार रा० राज्यधानियों प० कही सु० सुमना सो० सोमनसा अ० अर्चिमाली म० मनोरमा प० पद्मा सि० शिवा सु० शुचि अं० अंजू । त० वहां जे० जो

सूत्र

जंबूद्दीवपमाण मेत्ताओ चत्तारि रायहाणीओ पण्णत्ताओ तं० णंदोत्तरा, णंदा, उत्तरकुरा, देवकुरा, । कण्हा, राईए, रामाए, रामरक्खियाए । तत्थणं जेसे दाहिण पुरच्छिमिल्ले रतिकरग पव्वए तस्सणं चउद्दिसिं सक्करस देविंदस्स देवरण्णो चउण्ह मग्गमहिसीणं जंबूद्दीवपमाणाओ चत्तारि रायहाणीओ प० तं० सुमणा, सोमणसा, अच्चिमाली, मणोरमा ॥ पउमाए सिवाए, सुईए, अंजूए । तत्थणं

भाषार्थ

हैं नंदा, नंदोत्तरा, उत्तरकुरा, और देवकुरा. अग्निकोनमें जो रतिकर पर्वत रहा है उसकी चारों दिशाओंमें शक्रेन्द्रकी पद्मा, शिवा, शुचि व अंजू नामक चार इन्द्राणियोंकी एक लक्ष योजनकी च्यार राजधानियां कही हैं. सुमना, सौमनसा, अर्चिमाली और मनोरमा. नैऋत्य कोनमें रहा हुवा रतिकर पर्वतकी चारों दिशाओंमें शक्रेन्द्रकी अमला, अप्सरसा, नवमिका व रोहिणी नामक चार अग्रमहिषियों की एक लक्ष योजन

शब्दार्थ

दा० नैऋत्य कोन का र० रतिकर प० पर्वत त० उसकी च० चारों दिशा में स० शक्र दे० देवेन्द्रकी च० चार अ० अग्रमहिषियों की जं० जम्बूद्वीप प्रमाण च० चार रा० राज्यधानियों प० कही भू० भूता भू० भूतावतंसा गो० गोस्तूभा सु० सुदर्शना अ० अमला अ० अप्सरसा न० नवमिका रो० रोहिणी त० वहां जे० जो उ० वायव्य कोन का र० रतिकर पर्वत त० उसकी च० चारोंदिशाओं में ई० ईशानेन्द्र की च० चार अ० अग्रमहिषियों की जं० जम्बूद्वीप प्रमाण च० चार रा० राज्यधानियां प० कही र० रत्ना र० रत्नोच्चया स० सर्वरत्ना र० रत्नसंचया व० वसु व० वसुगुप्ता व० वसुमित्रा व० वसुंधरा

सूत्र

जेसे दाहिणपच्चत्थिमिल्ले रतिकरगपव्वए तस्सणं चउद्दिसिं सक्कस्स देविंदस्स देवरण्णो चउण्ण मग्गमहिसीणं जंबूद्दीवपमाण मेत्ताओ चत्तारि रायहाणीओ प० ण्णत्ताओ तं० भूया, भूयवडिंसा, गोथूभा, सुदंसणा । अमलाए, अच्छराए, नवमियाए रोहिणीए । तत्थणं जेसे उत्तरपच्चत्थिमिल्ले रतिकरगपव्वए तस्सणं चउदिसि मीसाणस्स चउण्ह मग्गमहिसीणं जंबूद्दीवपमाणमेत्ताओ चत्तारि रायहाणीओ पण्णत्ताओ तं० रयणा, रयणोच्चया, सव्वरयणा, रयणसंचया । वसुए, वसुगुत्ताए,

भावार्थ

की चार राजधानियां हैं भूता, भूतावतंसा, गोस्तूभा व सुदर्शना. वायु कोनमें रहाहुआ रतिकर पर्वतकी चारों दिशाओंमें ईशानेन्द्रकी वसू, वसुगुप्ता, वसुमित्रा व वसुंधरा नामक चार अग्रमहिषियोंकी जम्बूद्वीप

शब्दार्थ

॥ ३८ ॥ च० चार प्रकार के स० सत्य णा० नाम सत्य ठ० स्थापना सत्य द० द्रव्य सत्य भा० भाव सत्य ॥ ३९ ॥ आ० आजीविक को च० चार प्रकार का त० तप उ० उग्रतप घो० घोरतप र० रस-निर्जहनातप जि० जिह्वेन्द्रिय प० प्रतिसंलीनता ॥ ४० ॥ च० चार प्रकार के सं० संयम म० मनसंयम

सूत्र

वसुमित्ताए, वसुंधराए ॥ ३८ ॥ चउव्विहेसच्चे प० तं० णामसच्चे, ठवणासच्चे, द-व्वसच्चे, भावसच्चे, ॥ ३९ ॥ आजीवियाणं चउव्विहे तवे प० त० उ-ग्गतवे, घोरतवे, रसनिज्जुहणया, जिब्भिंदियपडिसंलीणया ॥ ४० ॥

भाषार्थ

प्रमाण एक लक्ष योजनकी चार राजधानी कही हैं रत्ना, रत्नोच्चया, सर्वरत्ना व रत्नसंचया. ॥ ३८ ॥ भगवंतने चार प्रकारके सत्य कहे हैं. जिस वस्तुका जो नाम होवे उसी नामसे उसे बोलाना सो नामसत्य, बहुत मनुष्य मीलकर अमुक वस्तुकी स्थापना करे कि यह शेर है, पाव है, तोला है, गाम है, उसे उसी नामसे कहनासो स्थापना सत्य, अमुक में भावी गुणोंकी प्राप्ति होनेवाली है परंतु वर्तमानमें ही भावी गुणोंपेत नामसे कहना सो द्रव्यसत्य जैसे राज्य पुत्रको राजा कहना, और जिसमें यथातथ्य गुणोंकी प्राप्ति होगइ होवे और फीर उसको उसी नाम से बोलाना सो भाव सत्य ॥ ३९ ॥ आजीविकमतानुसारीके चार प्रकारके तप कहे हैं १ उपवास छठ अष्टमादिक तप सो उग्रतप, लोक सुखकी वांच्छा रहित तप करना सो घोरतप, घृतादि रसकात्याग करना सो रसनिज्जूहणा और अच्छे बूरे आहारमें रागद्वेष नहीं करना सो जिह्वेन्द्रिय प्रतिसंलीनता ॥ ४० ॥ मन वचन व काया का विरोध करना तथा भंड उपकरण बहुमूल्य नहीं

व० वचन संयम का० काय संयम उ० उपकरण संयम च० चार प्रकार का चि० त्याग म० मनःत्याग व० वचन त्याग का० काय त्याग उ० उपकरण का त्याग च० चार प्रकार की अ० अकिंचनता म० मन अकिंचनता व० वचन अकिंचनता का० काय अकिंचनता उ० उपकरण अकिंचनता ॥ ४१ ॥ ४ ॥ २ ॥

सूत्र

चउव्विहे संजमे प० तं० मणसंजमे, वयसंजमे, कायसंजमे, उवकरणसंजमे, । चउव्विहे चियाए प० तं० मणचियाए, वइचियाए, कायचियाए, उवकरण चियाए । चउव्विहा अकिंचणया प० तं० मण अकिंचणया, वइअकिंचणया, काय अकिंचणथा उवकरण आकिंचणया ॥ ४१ ॥ इति चउत्थ ठाणस्स बीओदेसो सम्मत्तो. ॥

* * * *

भावार्थ

चत्तारि राईओ प० तं० पव्वयराई, पुढविराई, वालुयराई उदगराई । एवामेव रखना ऐसे चार प्रकारके संयम. अशुभ मन, वचन. काया, व उपकरणका परिहार करना यह चार प्रकारका त्याग है उक्त चारोंपर ममत्वभाव कम करना सो चार प्रकारकी आकिंचनता ॥४१॥ यह चौथाठाणां का दूसरा उदेशा पूर्ण हुवा. जो संयमी होगा वह कषाय कम करेगा यह उपदेश बतानेवाला तीसरा उदेशा कहते हैं. श्री श्रमण भगवंतने चार प्रकारकी रेखा कही:- पृथ्वी की रेखा, धरतीकी रेखा, वालुकी रेखा और

शब्दार्थ

च० चार रा० राजी (तराड) प० पर्वतराजी पु० पृथ्वीराजी बा० बालुराजी उ० पानी की तराड ए० ऐसेही च० चार प्रकार के को० क्रोध प० पर्वत की तराड समान पु० पृथ्वी की तराड समान बा० बालु [रेती] की तराड समान उ० पानी की तराड समान। प० पर्वत की तराड समान को० क्रोध में अ० प्रवेश करने वाला जी० जीव का० काल क० कर के ने० नारकीमें उ० उत्पन्न होता है. पु० पृथ्वी की तराड सामन को० क्रोध अ० करने वाला जी० जीव का० काल क० करता हैं. ति० तिर्यंच योनि में उ० उत्पन्न होता है. बा० बालु की तराड समान को० क्रोध अ० करने वाले जी० जीव का०

सूत्र

चउव्विहे कोहे प० तं० पव्वयराइसमाणे, पुढविराइसमाणे, वालुयराइसमाणे, उदगराइसमाणे । पव्वयराइसमाणं कोहं अणुप्पविट्ठे जीवे कालंकरेइ णेरइएसु उववज्जइ, पुढविराइ समाणं कोहमणुप्पविट्ठे जीवे कालंकरेइ तिरिक्खजोणिएसु उववज्जइ, वालुयराइसमाणं कोहं अणुप्पविट्ठे जीवे कालंकरेइ मणुस्सेसु उववज्जइ,

भावार्थ

पानीकी रेखा. ऐसेही चार प्रकारका क्रोध कहा १ पर्वतकी रेखा समान, यह क्रोध जीवन पर्यंत रहता है, और ऐसा क्रोधवाला पुरुष कालकरके नरकमें उत्पन्न होता है. २ धरतीकी रेखा समान. इस क्रोधकी स्थिति एक बरसकी है और ऐसा क्रोधी काल करके तिर्यंचमें उत्पन्न होता है. ३ बालुकी रेखा समान क्रोधकी स्थिति चार मासकी है और ऐसा क्रोधी जीव कालकरके मनुष्यमें उत्पन्न होता है. और ४ पानीकी रेखा समान

शब्दार्थ

काल क० करता है म० मनुष्य में उ० उत्पन्न होता है उ० पानी की तराड समान को० क्रोध अ० करने वाला जी० जीव का० काल क० करता है दे० देवता में उ० उत्पन्न होता है. च० चार उ० पानी क० कीचडवाला पानी ख० खंजन वाला पानी बा० रेती का पानी से० पत्थर का पानी ए० ऐसेही च० चार प्रकार के भा० स्वभाव कीचड के पानी समान ख० खंजन के पानी समान बा० बालु के पानी समान से० पत्थर के पानी समान क० कीचड के पानी समान भा० भाव में अ० प्रवेश करने वाला जी० जीव का० काल क० करता है. ने० नारकी में उ० उत्पन्न होता है ए० ऐसेही जा०

सूत्र

तृतीय स्थानक सूत्र

उदगराइसमाणं कोह मणुप्पविट्ठे जीवे कालंकरेइ देवेसु उववजइ ॥ चत्तारि उदगा प० तं० कद्दमोदए खंजणोदए, वालुओदए, सेलोदए । एवामेव चउव्विहे भावे प० तं० कद्दमोदगसमाणे, खंजणोदगसमाणे, वालुउदगसमाणे, सेलोदग समाणे ॥ कद्दमोदग समाणभावमणुप्पविट्ठे जीवे कालंकरेइ णेरइसु उववजइ

भावार्थ

क्रोधकी स्थिति १५ दिनकी है इसमें काल करनेवाला जीव मरकर देवलोकमें उत्पन्न होता है. चार प्रकारके पानी कहे हैं:—१ कर्दमका पानी कि जिसमें प्रविष्ट हुवा मनुष्य बहुत कठितासे नीकलसके २ खंजनोदक सो दीपक की कालिका समान, ३ वालु सहित पानी सो सुकजाने पर वालु नीचे गिरजाय और पाषाण परका पानी सो पगको स्पर्शतें मात्र दुःख होवे. वैसेही चार प्रकार के पुरुष कहे हैं.

शब्दार्थ

यावत् से० पत्थर के पानी समान भा० स्वभाव में स० अच्छी तरह प्रवेश करने वाला जीव का० काल क० करता है दे० देवता में उ० उत्पन्न होता है ॥ १ ॥ च० चार प० पक्षी प० कहे रु० शब्द सं० प्राप्त ए० कितनेक णो० नहीं रू० रूपसंपन्न रू० रूपसंपन्न ए० कितनेक णो० नहीं स० शब्द संपन्न ए० कितनेक रु० शब्द संपन्नभी रु० रूप संपन्नभी ए० कितनेक णो०नहीं रू० रूपसंपन्न ए० ऐसेही

सूत्र

एवं जाव सेलोदगसमाणं भावं समणुप्पविट्ठे जीवे कालंकरेइ देवेसु उववज्जइ ॥१॥
चत्तारि पक्खी प० तं० रुयसंपन्नेणामेगे णो रूवसंपन्ने, रूवसंपन्ने नाममेगेणो रुयसंपन्ने, एगे रुयसंपन्नेवि रूवसंपन्नेवि, एगे णोरुयसंपन्ने नोरूवसंपन्ने । चत्तारि

भावार्थ

कितनेक कर्दम जैसे स्वभाव वाले होते हैं. वे काल करके नरकमें जाते हैं, खंजन जैसे स्वभाव वाले मरकर तिर्यंचमें उत्पन्न होते हैं, बालु जैसे स्वभाव वाले मरकर मनुष्यमें उत्पन्न होते हैं, और पाषानपररहा हुवा पानी समान जीवों मरकर देवलोकमें उत्पन्न होते हैं ॥ १ ॥ चार प्रकारके पक्षी कहे हैं १ कितनेक पक्षी मनोहर शब्द सहित हैं परंतु मनोहर रूप सहित नहीं है कोकिलवत् २ कितनेक मनोहर रूप सहित है परंतु मनोहर शब्द सहित नहीं है, अज्ञान पोपटवत ३ कितनेक रूपसंपन्न भी है और मनोहर शब्द संपन्न भी हैं मयूरादिवत ४ और कितनेक रूप संपन्न नहीं हैं और मनोहर शब्द संपन्न भी नहीं हैं काकवत- ऐसेही चार प्रकारके पुरुष कहे हैं १ एक मनुष्यकी भाषा मिष्ट व मनोहर होती है

शब्दार्थ

च० चार पु० पुरुष जाती प० कही रु० शब्द संपन्न ए० कितनेक णो० नहीं रू० रूपसंपन्न ॥ २ ॥ च० चार पु० पुरुषजात प० कहीं प० प्रीति क० करताहूं ए० कीतनेक प० प्रीति क० करते है प० प्रीति क० करताहूं ए० कितनेक अ० अप्रीति क० करते हैं अ० अपनी प० प्रीति क० करता है णो० नहीं

सूत्र

पुरिस जाया प० तं० रुयसंपन्ने नाममेगे नो रूवसंपन्ने, ४ ॥ २ ॥
चत्तारि पुरिस जाया प० तं० पत्तियं करेमि एगे पत्तियं करेइ, पत्तियं करेमि एगे अपत्तियं करेइ, अपत्तियं करेमी एगे पत्तियं करेइ, अपत्तियं करेमी एगे अपत्तियं करेइ । चत्तारि पुरिस जाया प० तं० अप्पणो णाममेगे पत्तियं करेइ णोपरस्स,

भावार्थ

परंतु रूपमें कुरूप होता है २ एक पुरुष रूपका अच्छा परंतु भाषाका खराबहोता है. ३ एक रूपका अच्छा और भाषाका भी अच्छा और ४ एकरूपका खराब और भाषाका का भी खराब ॥ २ ॥ एक पुरुष ऐसी चिन्तवना करे कि मैं अन्यकी साथ प्रीति करूं अर्थात् अन्यका अच्छा करूं और अन्यका अच्छा भी करे २ एक पुरुष अन्यकी प्रीति करने का विचार करके अप्रीति करे ३ एक पुरुष अन्यकी साथ अप्रीति करनेका विचार करके प्रीति करे व ४ एक पुरुष अन्यकी साथ अप्रीति करनेका विचार करके अप्रीति करे, १ एक अपनी आत्माकी साथ ही प्रीतिकरे परंतु अन्यकी साथ नहीं २ एक पुरुष अपनी आत्माकी साथ अप्रीति करे परंतु अन्यकी साथ प्रीतिकरे ३ एक अपनी व आन्यके अत्माकी साथ प्रीति करे और

शब्दार्थ

प० अन्यकी । च० चार पु० पुरुषजात प० कहीं प्र० प्रीतिमें प० प्रवेश करताहूं ए० कितनेक प० प्रीतिमें प० प्रवेश करते हैं. अ० स्वतःकी प० प्रीतिमें प० प्रवेश करता है णो० नही प० अन्यकी ॥३॥ च० चार रु० वृक्ष० प० पत्रवाला, पु० पुष्पवाला क० फलवाला, छा० छायावाला, ए० ऐसेही च०

सूत्र

परस्स णाममेगे पत्तियं करेइ णो अप्पणो ४ चत्तारि पुरिस जाया प० तं० पत्तियं पवेसामि एगे पत्तियं पवेसेइ, पत्तियं पवेसामि एगे अप्पत्तियं पवेसेइ, अप्पत्तियं पवेसामि एगे पत्तियं पवेसेइ, अप्पत्तियं पवेसामि एगे अप्पत्तियं पवेसेइ. चत्तारि पुरिस जाया प० तं० अप्पणो णाममेगे पत्तियं पवेसेइ णो परस्स ४ ॥ ३ ॥ चत्तारि रुक्खा प० तं० पत्तोवए, पुप्फोवए, फलोवए, छायोवए । एवामेव चत्तारि पुरिस जाया प०

भावार्थ

४ एक अपनी व अन्यकी साथ प्रीति नहीं करे. चार प्रकारके पुरुष कहे हैं एक पुरुष ऐसी चिंतवना करे कि अन्यके चित्तमें मैं प्रवेश करूंगा व विश्वास उत्पन्न करूंगा वैसी चिन्तवना करके विश्वास उत्पन्न करे २ एक पुरुष ऐसी चिन्तवना करे कि मैं अन्यके चित्तमें प्रवेश करूंगा व विश्वास उत्पन्न करूंगा और पीछेसे अविश्वास उत्पन्न करे ऐसे चार भांगे कहना औरभी चार प्रकारके पुरुष कहे अपना व अन्यका आत्माकी प्रीतिमें प्रवेश करे ऐसे चौभंगी जानना ॥ ३ ॥ चार प्रकारके वृक्ष कहे हैं १ बहुत पत्रवाले, पुष्पवाले, फलवाले और छाया वाले. ऐसे ही चार प्रकारके लोकोत्तर पुरुष कहें पत्रवाले

शब्दार्थ

चार पु० पुरुषजातिके प० पत्रवाला वृक्षसमान पु० पुष्पवाला वृक्षसमान फ० फलवाला वृक्षसमान छा० छायावाला वृक्षसमान ॥ ४ ॥ भा० बोजा व० लेजानेवालेको च० चार आ० विश्रामस्थान प० कहे ज० जहां अं० स्कंधसे अं० स्कन्ध सा० लेवे त० वहांभी ए० एक आ० विश्राम प० प्ररूपे ज० जहां उ० वडीनीत पा० लघुनीत प० करते. त० वहांपरभी ए० एक आ० विश्राम. ज० जहां णा० नागकुमारके देवालयमें सु० सुवर्ण कुमारके देवालयमें वा० वास उ० प्राप्तहोवे त० तहां ए० एक आ० विश्राम ज०

सूत्र

तं० अत्तोवारुक्खसमाणे, पुप्फोवारुक्खसमाणे, फलोवा रुक्खसमाणे, छायोवा रुक्खसमाणे ॥ ४ ॥ भारं णं वहमाणस्स चत्तारि आसासा प० तं० जत्थणं अंसाओ अंसं साहरइ तत्थवि य से एगे आसासे पण्णत्ते, जत्थवियणं उच्चारंवा पासवणं वा परिठावंति तत्थवियसे एगे आसासे प० जत्थवियणं णागकुमारा वासं-

भावार्थ

वृक्ष समान पुरुष स्वभावसे ही धर्म करने से उपकारी २ पुष्पवाले वृक्ष समान पुरुष सूत्रपठन करने से विशेष उपकारी ३ फल वाले वृक्ष समान पुरुष सूत्र व अर्थ दोनोंका पठन करने से उपकारी ४ छायावाले वृक्षसमान पुरुष कष्ट से अथवा पापमें से बचावे ॥ ४ ॥ भार वहन करने वाले पुरुषको चार विश्राम स्थान कहे हैं १ एक स्कंधसे अन्य स्कंध पर भार संहरे सो एक विश्राम स्थान, २ लघुनीत वडीनीत करे जहां दूसरा विश्राम स्थान ३ नागकुमार सुवर्णकुमारके देवालयमें भार रखकर विश्राम ले

जहां आ० जीवन पर्यंत चि० रहता है त० वहां ए० एक आ० विश्राम ए० ऐसेही स० श्रमणोपासकको च० चार आ० विश्राम ज० जहां सी० शीलव्रत गु० गुणव्रतसे वे० निवर्तना प० प्रत्याख्यान पो० पोषध उ० उपवास प० अंगीकार करता है त० वहांपर ए० एक आ० विश्राम ज० जहां सा० सामायिक दे० देशावगासिक अ० पालता है त० वहां ए० एक आ० विश्राम ज० जहां चा० चतुर्दशी. उ० अष्टमी पु०

सिवा सुवन्नकुमारावासंसिवा, वासं उवेइ तत्थवियसे एगे आसासे प० जत्थवियणं आवकहाए चिट्ठइ तत्थवियसे एगे आसासे प० एवामेव समणोवासगस्स चत्तारि आसासा प० तं० जत्थवियणं सीलवयगुणव्वय वेरमण पच्चक्खाण पोसहोव-वासाइ पडिवजइ तत्थवियसेएगे आसासे प० जत्थवियणं सामाइयं देसावगासिय मणुपालेइ तत्थवियसे एगे आसासे प० जत्थवियणं चाउद्दसिट्ठ मुद्दिट्ठ पुण्णिमासीसु पडिपुण्णंपोसहं

और जहां भार लेजानेका होवे वहां जाकर भार उतारे सो चौथा विश्राम स्थान. श्रमणोपासक श्रावक को सावद्यकर्म करते चार विश्राम स्थान कहे हैं १ जिस समय शीलव्रत प्राणातिपातादि गुणव्रत, दिशिव्रत भोगोपभोगादिव्रत, परिमाण व्रत, अनर्थादंड उविरमण व्रत, नौकारसी प्रमुख का प्रत्याख्यान, अष्टमी, चतुर्दशी आदिका उपवास वगैरह अंगीकार करे उस समय श्रावकको विश्राम स्थान होता है, २ जिस समय श्रावक सामायिक, देशावगाशिक व्रत अंगीकार करे उसे सम्यक् प्रकारसे पालन करे उस समय श्रावक को विश्राम स्थान होता है, ३ चतुर्दशी, अष्टमी, अमावास्या, पूर्णिमा, वगैरह तिथियोंमें

शब्दार्थ

पूर्णिमा प० प्रतिपूर्ण पो० पोषध स० सम्यक् अ० पालता है त० वहां ए० एक आ० विश्राम. ज० जहां अ० अपश्चिम मा० मारणान्तिक सं० संलेखना झू० झूसनासे झू० पतलाकियाहुआ भ० भक्त पा० पानसे प० प्रत्याख्यान कराये पा० पादोपगमन का० मरणको अ० नहीं वांच्छते हुए वि० विचारता है त० वहांभी ए० एक आ० विश्रामस्थान प० कहा॥५॥च० चार पुरुषजात प० कही उ० उदय पायाहुवा उ० उदय ए० कितनेक उ० उदित अ० अस्त ए० कितनेक भ० भरतराजा चा० चतुर्गतिका अंतकरनेवाले चा०

सूत्र

सम्मं अणुपालेइ तत्थवियसे एगे आसासे प० जत्थवियणं अपच्छिम मारणंतिय संलेहणा झूसणा झूसिए भत्तपाण पडियाइक्खिए पाओवगए काल मणवकंखमाणे विहरइ तत्थवियसे एगे आसासे पण्णत्ते ॥ ५ ॥

चत्तारि पुरिस जाया प० तं० उदिओदिए णाममेगे, उदियत्थमिए णाममेगे, अ-

भावार्थ

अहोरात्रि पूर्ण पोषध करते श्रावक को विश्राम स्थान होता है ४ अन्तिम मरणांतिक संलेषना तप अंगीकार कर आहार पानीका जीवन पर्यंत त्याग करके स्थिरता से मरण की वांछा नहीं करता हुवा विचरे तो श्रावको विश्राम स्थान होवे ॥ ५ ॥ चार प्रकारके पुरुष कहे हैं १ एक पुरुष उदितो दित नाम, उच्चकुल, बल, ऋद्धि आदि परम सुखका धणि २ एक पुरुष परम समृद्धि आदि भोगकर निर्धनबने ३ एक पुरुष नीचकुलमें उत्पन्न होकर पीछे बहुत सुखके भोक्ताबने ४ एक पुरुष अस्त होकर

चक्रवर्ती उ० उदितोदित व० ब्रह्मदत्तराजा च० चक्रवर्ती उ० उदितास्त ह० हरिकेबल अ० अनगार अस्तोदित का० कालीक सोकारिके अ० अस्तास्ति ॥ ५ ॥ च चार जु० युग्म (राशि) क० कृतयुग्म ते० त्रेता दा० द्वापर क० कालियुग्म. ने० नारकीको च० चार जुं० युग्म ए० ऐसेही अ० असुरकुमारको ए०

ल्थमिओदिए णाममेगे, अत्थमियत्थमिए णाममेगे । भरहेराया चाउरंत चक्कवट्टीणं उदिओदिए, बंभदत्तेणंराया चाउरंत चक्कवट्टी उदियत्थमिए, हरिएसबले णाममणगारे अत्थमिओदिए, कालेण सोयरिए अत्थत्थमिए ४ ॥ ५ ॥ चत्तारि जुंमा प० तं० कडजुम्मे, तेयोए, दावरजुम्मे, कलिओ ॥ णेरइयाणं चत्तारि जुंमा प० तं० कडजुं-

पुनः अस्त होवे अर्थात, नीचकुलादिक के दुःख पाकर वहां से नरकादिक के दुःख भोगने वाले होवें ॥ भरत महाराजा उदित होकर पुनः उदित हुवे अर्थात ऋषभ पुत्र चक्रवर्ती बनकरके फीर चतुर्गतिच संसार का अंत कर मोक्ष में गये २ ब्रह्मदत्त चक्रवर्ती का उदय होकर अस्त हुवा अर्थात सब समृद्धि से भ्रष्ट होकर दुर्गतिमें गया, ३ हरिकेशबल नामक अनगारका नीचकुलमें जन्म हुवा फीर चारित्र लेकर मोक्ष में गये ४ कालकसौकरिक प्रतिदिन ५०० भैंसा मारता और वहांसे मरकर सातवीं नरक में गया.. वह अस्त होकर अस्त हुवा. ॥ ५ ॥ चार प्रकार की (युग्म) राशि कहीं:- कृतयुग्म, त्रेता द्वापर और कलियुग्म.. नारकीको चार युग्म कहे हैं और वैसेही चौविसहीं दंडक में जानना.॥६॥

शब्दार्थ

ऐसेही पु० पुथ्वीकाय आ० अप् ते० अग्नि वा० वायु व० वनस्पति बे० बेइन्द्रिय ते० तेइन्द्रिय च० चौरेन्द्रिय पं० पंचेन्द्रिय ति० तिर्यंच्यके निवाले म० मनुष्य, वा० वाणव्यंतर जो० ज्योतिष वै० वैमानिक स० सबको ज० जैसे ने० नारकीको ॥ ६ ॥ च० चार सू० शूरवीर पु० कहे खं० क्षमामेंशूर त० तपमें शूर दा० दानमें शूर जु० युद्धमें शूर खं० क्षमामें शूर अ० अरिहंत त० तपमें शूर अ० अनगार दा० दानमें शूर वे० वैश्रमण जु० युद्धमें शूर वा० वासुदेव ॥ ७ ॥ च० चार पु० पुरुषजात प० कही उ० ऊंच ए० कितनेक उ० ऊंच

सूत्र

मे, तेओए, दावरजुंमे, कलिओए । एव मसुरकुमाराणं जाव थणियकुमाराणं एवं पुढविकाइयाणं आउ तेउ वाउ वणस्सइ बेंदियाणं तेंदियाणं चउरिंदियाणं पंचिंदिय तिरिक्ख जोणियाणं मणुस्साणं वाणमंतरजोइसियाणं वेमाणियाणं सव्वेसिं जहा नेरइयाणं ॥ ६ ॥ चत्तारि सूरा प० तं० खंतिसूरे, तवसूरे, दाणसूरे, जुद्धसूरे । खंतिसूरा अरहंता, तवसूरा अणगारा, दाणसूरे वेसमणे, जुद्धसूरे वासुदेवे ॥ ७ ॥

भावार्थ

चार प्रकार के शूर कहे हैं १ क्षमा शूर परिषहमें कदापि खेदित नहोवे २ तपशूर तपश्चर्यामें पीछानहटे ३ दानशूर बहुत दानदेवे और ४ युद्धशूर युद्धमें शूरवीर. इसमें से क्षमामें शूरवीर अरिहंत, तपमें शूरवीर अनगार, दान में शूरवीर वैश्रमण और युद्ध में शूरवीर वासुदेव ॥ ७ ॥ चार प्रकारके पुरुष कहे हैं १

शब्दार्थ — छं० अभिप्रायवाले उ० ऊंच ए० कितनेक नी० नीच छं० अभिप्रायवाले ॥ ८ ॥ अ० असुरकुमारको च० चार ले० लेश्या प० कही क० कृष्ण लेश्या णी० नीललेश्या का० कापोतलेश्या ते० तेजुलेश्या ए० ऐसे जा० यावत् थ० स्तनितकुमारको पृ० ऐसेही पु० पृथ्विकायाको आ० अप् व० वनस्पतिकायका वा० वाणव्यंतर स० सबको ज० जैसे अ० असुरकुमारको ॥ ९ ॥ च० चार ज० यान (वाहन) जु० युक्त

सूत्र — चत्तारि पुरिसजाया प० तं० उच्चेणाममेगे उच्चच्छंदे, उच्चेणाममेगे णीयच्छन्दे, णीए णाममेगे उच्चच्छंदे, णीए णाममेग णीयच्छंदे ॥ ८ ॥ असुरकुमाराणं चत्तारि लेस्सा प० तं० कण्हलेस्सा, णीललेस्सा, काउलेस्सा, तेउलेस्सा । एवं जाव थणियकुमाराणं, एवं पुढविकाइयाणं आउ वणस्सइकाइयाणं वाणमंतराणं सव्वेसिं जहा असुरकुमाराणं ॥ ९ ॥ चत्तारि जाणा प० तं० जुत्ते णाममेगे जुत्ते, जुत्तेणाममेगे

भावार्थ — एक पुरुष कुल, बल रूप आदि गुणोंसे उन्नत और छंद (अभिप्राय) से भी उन्नत, एक पुरुष कुलादिसे ऊंच परंतु अभिप्रायसे नीच, २ एक पुरुष कुलादिसे नीच परंतु अभिप्रायसे ऊंच ४ एक कुल व अभिप्राय दोनोंसे नीच ॥ ८ ॥ असुरकुमारादि दश भुवनपतिको पृथ्वीकाय, अपकाय, और वनस्पतिकायको तथा वाणव्यंतरको कृष्ण, नील, कापोत व तेज्यु यह चार लेश्याओं कही हैं ॥९॥ चार प्रकारके यान (गाडे)

शब्दार्थ ए० कितनेक जु० युक्त. जु० युक्त ए० कितनेक अ० अयुक्त ए० ऐसेही च० चार पु० पुरुषजात प० कही जु० युक्त ए० कितनेक जु० युक्त परिणत जु० युक्तरूप जु० युक्तशोभा च० चार जु० युग्म

सूत्र अजुत्ते, अजुत्तेणाममेगेजुत्ते, अजुत्तेणाममेगेअजुत्ते । एवामेव चत्तारि पुरिस जाया प० तं० जुत्ते णाममेगेजुत्ते, ४ ॥ चत्तारि जाणा प० तं० जुत्तेणाममेगे जुत्तपरिणए, जुत्तेणाममेगे अजुत्तपरिणए, ४ । एवामेव चत्तारि पुरिस जाया प० तं० जुत्तेणाममेगे जुत्तपरिणए, ४ । चत्तारि जाणा प० तं० जुत्तेणाममेगे जुत्तरूवे, जुत्तेणाममेगे

भावार्थ कहे हैं १ एक यान सब उपकरण युक्त है और बैलभी जोतेहुवे हैं २ एक यान सब उपकरण युक्त है परंतु बैल जोतेहुवे नहीं है ३ एक यानको बैल जोतेहुवे हैं परंतु उपकरण युक्त नहीं है और ४ एक यान नतो उपकरण युक्त है और न बैल जोतेहुवे है. ऐसेही चार पुरुष कहे हैं १ एक पुरुष धनादि सामग्री सहित है और उसका अनुष्ठानभी उचित है अर्थात् दानादिमें धनका व्यय करता है, २ एक पुरुष धनादि सामग्री सहित है परंतु अनुष्ठान उचित नहीं ३ एक पुरुष धनादि सामग्री रहित परंतु उचित अनुष्ठानवाला है और ४ एक धनादि सामग्री रहित और अनुष्ठानभी उचित नहीं. साधुके विषयमें चार भांगे. एक साधु द्रव्यसे वेषसहित और भावसे धर्मानुष्ठान सहित यों चारों भांगेकहना. और भी चार प्रकारके यान कहे हैं १ एक यान योग्य सामग्री सहित है और युक्त परिणत है अर्थात् बैलादि है परंतु यानमें जोतेहुवे नहीं है ऐसेही चारों भांगे जानना इसी तरहसे चार भांगे पुरुषपर

शब्दार्थ

जु० युक्त ए० कितनेक जु० युक्त ए० ऐसेही च० चार पु० पुरुषजात ए० ऐसेही ज० जैसे जा० यानका च० चार आ० आलापक त० तैसे जु० युग का प० कहना त० तैसेही पु० पुरुषजात जा० यावत् सो०

सूत्र

अजुत्तरूवे, ४ । एवामेव चत्तारि पुरिस जाया प० तं० जुत्तेणाममेगे जुत्तरूवे, ४ ॥ चत्तारि जाणा प० तं० जुत्तेणाममेगे जुत्तसोभे, ४ । एवामेव चत्तारि पुरिसजाया प० तं० जुत्तेणाममेगे जुत्तसोभे, ४ । चत्तारि जुग्गा प० तं० जुत्ते णाममेगे जुत्ते ४ । एवामेव चत्तारि पुरिस जाया प० तं० जुत्तेणाम मेगेजुत्ते ४ । एवं जहा

भावार्थ

जानना. एक पुरुष धनादि युक्त है और उचित अनुष्ठान करनेको तत्पर है परंतु नहीं करता है. यों चार भांगे जानना । चार प्रकारके यान कहे एक यान सामग्री सहित है और बैल भी मनोहर हैं ऐसे चार भांगे कहना इसीतरह चार प्रकारके पुरुष व साधु कहेः- एक पुरुष व साधु धनादि व ज्ञानादि युक्त है और रूप व वेषमेंभी अच्छे हैं यों चार भांग कहना । औरभी चार प्रकारके यान कहे हैं एक यान सामग्री युक्त है और वृषभादि जोतनेमे अच्छा लगता है (४) ऐसेही चार प्रकारके पुरुष एक पुरुष धनादि युक्त है और अनक्रिया करनेसे शोभता है (४) । चार प्रकारके युगकहें एक युग पलाण प्रमुख सहित है और वेगादि भी साहित है (४) इसी तरह पुरुष चार प्रकारके. एक पुरुष धनादि युक्त है

१ अश्वकी जोडी वगैरह को युगकहते हैं.

शब्दार्थ सुशोभित। च० चार सा० सारथी जो० जोडता है ए० कितनेक णो० नही वि० चलाता है ए० ऐसेही च० चार पु० पुरुषजात च० चार ह० अश्व च० चार ग० हस्ती. च चार जु० अश्वादिककागमन पं०

सूत्र जाणेणं चत्तारि आलावगा तहा जुग्गेणवि पडिवक्खो तहेव पुरिस जाया जाव सो-भेत्ति ॥ चत्तारि सारथी प० तं० जोआवइत्ता णाममेगे णो विजोयावइत्ता, वि-जोयावइत्ता णाममेगे णो जोयावइत्ता, एगे जोयावइत्तवि विजोयावइत्तावि एगे णो जोयावइत्ताणो विजोयावइत्ता एवामेव चत्तारि पुरिसजाया ॥ चत्तारि हया प० तं० जुत्ते णाममेगे जुत्ते, ४ । एवामेव चत्तारि पुरिस जाया प० तं० जुत्ते णाममेगे

भावार्थ और उसका अनुष्ठानभी उचित है (४) इसके सब आलापक यानके आलापककी तरह जानना। चार प्रकारके सारथी कहे १ एक सारथी रथको वृषभादि जोतता है परंतु चलाता नहीं है, २ एक रथको चलाता है परंतु वृषभादि जोतता नहीं है, ३ एक जोतताभी है और चलानाभी है व ४, एक सारथी नतो रथ जोतता है और न चलाता है ऐसेही चार प्रकारके पुरुष कहे संयमकी क्रियामें साधुको प्रवर्तावे इसलिये सारथी समान कहे १ आप संयममें जोतते हैं (दीक्षादेते हैं) परंतु ज्ञानादिमें प्रेरते नहीं हैं २ एक दीक्षादेते नही हैं परंतु ज्ञानादिमें प्रेरते हैं ३ एक दीक्षादेते हैं और ज्ञानादिमें प्रेरते हैं और ४ एक नतो दीक्षादेते हैं और न ज्ञानादिमें प्रेरते हैं ॥ चार प्रकारके हय कहे हैं १ एक घोडा पलाणादि सहित है और वेगमें अच्छा है (४) इसी तरह चार प्रकारके साधु कहे एक साधु संयम सहित है और क्रिया

शब्दार्थ पंथमें जानेवाला णो० नहीं उ० उत्पंथजानेवाला उ० उत्पंथजानेवाला णो० नहीं पं० पंथमें चलनेवाला ए० कितनेक पं० पंथमेजानेवाला उ० उत्पंथमें जानेवाला ए० कितनेक णो० नहीं पं० पंथमें जानेवाला

सूत्र जुत्ते, ४ । एवं जुत्त परिणए, जुत्तारूवे, जुत्तसोभे, सव्वेसिं पडिवक्खो पुरिस जाया ॥ चत्तारि गया प० तं० जुत्तेणाममेगे जुत्ते, ४ । एवामेव चत्तारि पुरिसजाया प० तं० जुत्तेणाममेगे जुत्ते, ४ । एवं जहा हयाणं तहा गयाणवि भाणियव्वं पडिवक्खो तहेव पुरिसजाया ॥ चत्तारि जुग्गारिया प० तं० पंथजाई णाममेगे णो

भावार्थ सहितभी है (४) इसपर यान जैसे युक्त, परिणत, रूप और शोभाके चार २ भांगे उतारना वैसेही पुरुषभी जानना । चार प्रकारके हस्ती कहेः- एक हस्ती अंबाडी प्रमुख सहित है और वेगवाला है (४) ऐसेही चार प्रकारके साधुः- एक संयम सहित व क्रिया सहित है (४) घोडेकी तरह हस्तीपर सब आलापक कहना । चार प्रकारके युग्य कहे १ एक मार्गमें चले परंतु उन्मार्गमें चले नहीं २ एक उन्मार्गमें चले परंतु मार्गमें नहीं चले, ३ एक मार्गमें चले और उन्मार्गमेंभी चले और ४ एक मार्गमें व उन्मार्गमें चले नही. इसीतरह चार प्रकारके पुरुष कहे हैं १ एक साधु जिनाज्ञा रूप मार्गमें चलते हैं परंतु उन्मार्गमें नहीं जाते हैं २ एक साधु जिनाज्ञा रूप मार्गमें नहि चलता है परंतु उन्मार्गमें जाता है ३ एक मार्गमें जाता है व उन्मार्गमें भी जाता है और

१. हस्ती, अश्व प्रमुखके गमन.

शब्दार्थ

णो० नहीं उ० उत्पंथमें जानेवाला ए० ऐसेही च० चार पुरुषजात प० कही ॥ १० ॥ च० चार पुष्प रू० रूपसंपन्न ए० कितनेक णो० नही गं० गंधसंपन्न ऐ० ऐसेही च० चार प्रकारके पु० पुरुष रू० रूपसंपन्न ए० कितनक णो० नहीं सी० सील संपन्न ॥ ११ ॥ च० चार पु० पुरुषजात प० कहीं जा० जातिसंपन्न ए०

सूत्र

उप्पहजाई, उप्पहजाई णाममेगे णोपंथजाई, एगेपंथजाईवि उप्पहजाईवि, एगे णोपंथजाई णोउप्पहजाइ ॥ एवामेव चत्तारि पुरिस जाया प० ॥ १० ॥ चत्तारि पुप्फा प० तं० रूवसंपन्ने णाममेगे णो गंधसंपन्ने गंधसंपन्ने णाममेगे णो रूवसंपन्ने, एगे रूव संपन्नेवि गंधसंपन्नेवि, एगे णो रूव संपन्ने णो गंधसंपन्ने । एवामेव चत्तारि पुरिस जाया प० तं० रूवसंपन्ने णाममेगे णो सीलसंपन्ने, ४ ॥ ११ ॥

भावार्थ

एक उन्मार्ग सन्मार्ग दोनोंमें नहीं चलता है ॥ १० ॥ चार प्रकारके पुष्प कहे हैं १ एक पुष्प सुरूप है परंतु गंध नहीं है आकडाके पुष्प २ एक पुष्प गंधवाला है परंतु रूपवाला नहीं है बकुलादिकका पुष्प ३ एक पुष्प गंध सहित है और रूपसहितभी है गुलाब चंम्पाके और ४ एक नतो रूपवाला है और न गंधवाला है बदरीफलके पुष्प. इसीतरह चार प्रकारके पुरुष हैं एक पुरुष रूपवंत है परंतु शीला चाज्ञादिगुण संपन्न नहीं है ऐसे चार भांगे कहना. ॥ ११ ॥ चार प्रकारके पुरुष १ एक जाति संपन्न

शब्दार्थ

कितनेक णो० नहीं कु० कुलसंपन्न ४ जा० जातिसंपन्न णो० नहीं व० बलसंपन्न ४ ए० ऐसे जा० जाति रू० रूपका च० चार आ० आलापक ए० ऐसे जा० जातिका सु० श्रुत ए० ऐसे जा० जाति च० चारित्र ए० ऐसे कु० कुल बल ४, कु० कुल रूप ४, कु० कुलश्रुत ४ कु० कुलशील कु० कुलचारित्र च० चार पु०

सूत्र

चत्तारि पुरिस जाया प० तं० जाइसंपन्ने णाममेगे णो कुलसंपन्ने, कुलसंपन्ने नाममेगे णो जाइसंपन्ने, ४ ॥ चत्तारि पुरिस जाया प० तं० जाइसंपन्ने णाममेगे णोबलसंपन्ने, बलसंपन्नेणाममेगे णो जाइसंपन्ने एगे जाइसंपन्ने० । एवं जाईए रूवेणय चत्तारि आलावगा, एवं जाईएसुएणय ४ । एवं जाईएचरित्तेणय ४ । एवंकुलेणय बलेणय, ४ । कुलेणय रूवेणय, ४ । कुलेणय सुएणय, ४ । कुलेणय सीलेणय ४ । कुलेणय चरित्तेणय, ४ । चत्तारि पुरिस जाया प० तं० बलसंपन्ने णाममे-

भावार्थ

है परंतु कुल संपन्न नहीं है २ एक कुलवंत हैं परंतु जातिवंत नहीं है, ३ एक कुलवंतभी है और जातिवंतभी है ४ और एक जातिवंतभी नहीं है और कुलवंतभी नहीं है. चार प्रकारके पुरुष १ एक जातिसंपन्न है बलसंपन्न नहीं है, १ एक बलसंपन्न है परंतु जाति संपन्न नहीं है ३ एक जाति संपन्नभी है और बल संपन्नभी है ४ और एक नतोजाति संपन्न है और न बलसंपन्न हैं. ३ चार प्रकारके पुरुष १ एक जाति संपन्न है परंतु रूपसंपन्न नहीं है (४) ४ चार प्रकारके पुरुष एक जातिसंपन्न है परंतु सूत्र संपन्न नहीं

शब्दार्थ पुरुष जात व० बलसंपन्न णो० नहीं रूपसंपन्न ए० ऐसे व० बल से श्रुत से व० बलसे शील से व० बलसे चारित्र से च० चार पु० पुरुष जात रू० रूपसंपन्न ए० कितनेक णो० नहीं सु० श्रुतसंपन्न ए० ऐसे सु० श्रुत चारित्र से च० चार पु० पुरुष जात प० कही सी० शीलसंपन्न ए० कितनेक ऐ० नहीं

सूत्र गे णो रूवसंपन्ने ४ । एवं बलेणय सुएणय, ४ । एवं बलेणय सीलेणय, ४ । एवं बलेणय चरित्तेणय, ४ । चत्तारि पुरिसजाया प० तं० रूवसंपन्ने णाममेगे णो सुय संपन्ने ४ । एवं रूवेणय सीलेणय, ४ । रूवेणय चारेत्तेणय ४ । चत्तारि पुरिस जाया प० तं० सुयसंपन्ननाममेगे णो चरित्तसंपन्ने, ४ । एवं सुएणय चरित्तेणय ४ । चत्तारि पुरिस जाया प० तं० सीलसंपन्ने नाममेगे णो चरित्तासंपन्ने ४ । एए एक्कवीसं

भावार्थ है (४) ५ चार प्रकारके पुरुषः- एक जाति संपन्न है परंतु शील संपन्न नहीं है (४) ६ चार प्रकारके पुरुष एक जाति संपन्न है परंतु चारित्र संपन्न नहीं है (४) ऐसेही ७ कुल और बल, ८ कुल औररूप ९ कुल और श्रुत, १० कुल और शील ११ कुल और चारित्र १२ बल और रूप, १३ बल और श्रुत १४ बल और शील १५ बल और चारित्र, १६ रूप और श्रुत, १७ रूप और शील १८ रूप और चारित्र १९ श्रुत और शील २० श्रुत और चारित्र २१ शील और चारित्र इन इक्कीस बोल पर चौभंगी

शब्दार्थ च० चारित्र संपन्न ए० ये ए० इक्कवीस भां० भांगे भा० कहना ॥ १२ ॥ च० चार फ० फल आ० आंबले जैसे म० मधुर मु० द्राक्ष जैसे मधुर खी० क्षीर जैसे मधुर खं० शक्कर जैसे मधुर ए० ऐसेही च० चार आ० आचार्य आ० आंबले के म० मधुर फ० फल समान जा० यावत् खं० शक्कर जैसे म० मधुर फ० फल समान ॥ १३ ॥ च० चार पु० पुरुष जात प० कही आ० आत्मवैयावृत्य क० करने वाला ए०

सूत्र भंगा भाणियव्वा ॥ १२ ॥ चत्तारि फला प० तं० आमलगमहुरे, मुद्दियामहुरे, खीरमहुरे, खंडमहुरे । एवामेव चत्तारि आयरिया प० तं० आमलगमहुरफलसमाणे, जाव खंडमहुरफलसमाणे ॥ १३ ॥ चत्तारि पुरिस जाया प० तं० आयवेयावच्चकरे

भावार्थ जानना. ॥ १२ ॥ चार प्रकारके फल कहे १ एक फल आमले जैसा मिष्ट, २ एक फल द्राक्ष जैसा मिष्ट ३ एक फल क्षीर जैसा मिष्ट ४ और एक फल शर्करा जैसा मिष्ट ऐसेही चार प्रकारके आचार्य. आमले जैसे खट्टेमिष्ट हैं अर्थात् दोनों प्रकारकी शिक्षा देनेवाले हैं २ एक द्राक्ष समान मधुर वचनसे हित शिक्षा देते मानेतो किंचित खटाश वापरे ३ एक आचार्य क्षीर जैसे मिष्ट हित शिक्षादेवे और ४ एक आचार्य शर्करा समान अच्छी २ हित शिक्षादेवे ॥ १३ ॥ चार प्रकारके पुरुष कहे १ एक साधु अपनी वैयावृत्य करे परंतु अन्यकी करे नहीं एकलविहारी साधु २ एक अन्यकी वैयावृत्यकरे परंतु अपनी न करे अभिग्रहधारी ३ एक

शब्दार्थ

कितनेक णो० नहीं प० अन्यकी वे० वैयावृत्य क० करने वाला ४ । च० चार पु० पुरुष जात प० कही क० करता है ए० कितनेक णो० नहीं प० इच्छता है ॥ १४ ॥ च० चार पु० पुरुष जात प० कहीं अ० अर्थ [कार्य] क० करने वाला णो० नहीं मा० मान करने वाला ४ ग० गणका अ० कार्य क० करने वाला ए० कितनेक णो० नहीं मा० मान क० करने वाला ४ । च० चार पु० पुरुष जात प० कही ग०

सूत्र

णाममेगे णो परवेयावच्चकरे ४ । चत्तारि पुरिसजाया प० तं० करेइ णाममेगे वेयावच्चं णो पडिच्छइ, पडिच्छइ णाममेगे वेयावच्चं णो करेइ ४ । १४ ॥ चत्तारि पुरिस जाया प० तं० अट्ठ करे णाममेगे णो माणकरे, माणकरे णाममेगे णो अट्ठ

भावार्थ

अपनी वैयावृत्य करे और अन्यकी भी करे स्थविर ४ और एक आत्म वैयावृत्य करे नहीं और अन्यकी भी वैयावृत्य करे नहीं अनशनके करनेवाले । औरभी चार प्रकारके पुरुष १ एक साधु वैयावृत्य करे परंतु अन्यकी पास करावे नहीं, २ एक वैयावृत्य करे नहीं परंतु अन्यकी पास करावे, ३ एक वैयावृत्य करे और अन्यकी पास करावे ४ एक वैयावृत्य करे नहीं और अन्यकी पास करावेभी नहीं ॥ १४ ॥ चार पुरुषः- १ एक सेवक अर्थ (कार्य) का करनेवाला है परंतु उसका मान नहीं करता है, २ एक अभिमान बहुत करता है परंतु कार्य नहीं करता है, ३ एक कार्य करता है और मानभी करता है, और ३ एक नतो कार्य करता है. और न मान करता है. चार प्रकारके साधु कहे एक साधु गण (गच्छ)

शब्दार्थ

गणका सं० संग्रह क० करने वाला ए० कितनेक णो० नहीं मा० मान करने वाला ४ । ग० गणकी शोभा करने वाला ए० कितनेक णो० नहीं मा० मान करने वाला च० चार पु० पुरुष जात ग० गणशुद्धि क० करने वाला ए० कितनेक णो० नहीं मा० मान करने वाला ४ ॥ १५ ॥ च० चार पु० पुरुष जात प०

सूत्र

करे, एगे अट्ठकरेवि माणकरेवि, एगे णो अट्ठकरे णो माणकरे। चत्तारि पुरिस जाया प० तं० गण-ट्ठकरे णाममेगे णो माणकरे, ४ । चत्तारि पुरिस जाया प० तं० गणसंगह करे णाममेगे णोमाण-करे, ४ । चत्तारि पुरिस जाया प० तं० गणसोभकरे णाममेगे णोमाणकरे, ४ । चत्तारि पुरिस जाया प० तं० गणसोहिकरे णाममेगे णोमाणकरे ॥ १५ ॥ चत्तारि पुरिस जाया

भावार्थ

के हितका करनेवाला है परंतु मान करे नहीं (४) औरभी चार प्रकारके साधु कहे एक साधु गच्छके लिये वस्त्र पात्रादिकका संग्रह करता है परंतु उसका अभिमान बिलकुल नहीं करता है (४) चार प्रकारके पुरुष कहे हैं एक साधु गच्छकी शोभाकरता है परंतु अभिमान नहीं करता है यों चारों भांगे कहना औरभी चार प्रकारके साधु कहे एक गच्छकी शुद्धि करे परंतु अभिमान करेनहीं यों चार भांगे जानना. ॥ १५ ॥ चार प्रकारके साधु पुरुष कहे १ एक साधु कारण विशेषसे साधुका वेष छोडदेवे परंतु धर्म छोडे नहीं १ एक साधु धर्म छोडता है परंतु वेष नहीं छोडता है २ एक साधु वेषत्यजता है और रूपकोभी त्यजता है ४ एक साधु नतो रूप त्यजता है और नवेष त्यजता है । औरभी चार

शब्दार्थ

कहा रू० रूप ए० कितनेक ज० त्यजता है णो० नहीं ध० धर्म ध० धर्म ए० कितनेक ज० त्यजता है णो० नहीं रू० रूप ४ । च० चार पु० पुरुष जात ध० धर्म ए० कितनेक ज० त्यजता है णो० नहीं ग० गणसंस्थिति ४ । च० चार पु० पुरुष जात पि० प्रियधर्मी ए० कितनेक णो० नहीं द० दृढधर्मी द० दृढधर्मी ए० कितनेक णो० नहीं पि० प्रियधर्मी ४ ॥ १६ ॥ च० चार आ० आचार्य प० प्रव्रजनाचार्य

सूत्र

प० तं० रूवं णाममेगे जहइ नो धम्मं, धम्मं णाममेगे जहइ णोरूवं, एगेरूवंपि जहइ धम्मंपि जहइ, एगे णो रूवं जहइ णो धम्मं जहइ ॥ चत्तारि पुरिस जाया प० तं० धम्मं णाममेगे जहइ णो गणसंठिइं, ४ । चत्तारि पुरिस जाया प० तं० पियधम्मे णाममेगे णो दढधम्मे, दढधम्मे णाममेगे णो पियधम्मे, एगेपियधम्मेवि, दढधम्मेवि, एगे णो पियधम्मे णो दढधम्मे ॥ १६ ॥ चत्तारि आयरिया प० तं०

भाषार्थ

प्रकारके पुरुष एक साधु धर्म त्यजता है परंतु गच्छकी मर्यादा नहीं त्यजता है १ एक साधु धर्म नहीं त्यजता है परंतु गच्छकी मर्यादा त्यजता है २ एक साधु धर्म त्यजता है और गच्छकी मर्यादाभी त्यजता है ४ एक नतो धर्म त्यजता है और न गच्छकी मर्यादा त्यजता है । और भी चार प्रकारके पुरुष १ एक प्रिय धर्मी है परंतु दृढधर्मी नहीं है २ एक दृढधर्मी है परंतु प्रियधर्मी नहीं है ३ एक दृढधर्मी है और प्रियधर्मी भी है ४ एक नतो दृढधर्मी है और न प्रियधर्मी है॥१६॥चार प्रकारके आचार्य कहे हैं १ एक आचार्य

शब्दार्थ

ए० कितनेक णो० नहीं उ० उपस्थापनाचार्य ४ । च० चार आ० आचार्य उ० उद्देशनाचार्य णो० नहीं वा० वाचनाचार्य ४ । ध० धर्माचार्य ॥ १७ ॥ च० चार अं० अंतेवासी प० प्रवर्ज्या के अं० अंतेवासी ए० कितनेक णो० नहीं उ० उपस्थापना के अं० अंतेवासी ४ ध० धर्म के अं० अंतेवासी [शिष्य] च०

सूत्र

पव्वावणायरिए णाममेगे णो उवट्ठावणायरिए, उवट्ठावणायरिए णाममेगे णो पव्वावणायरिए, एगे पव्वावणायरिएवि उवट्ठावणायरिएवि, एगेणो पव्वावणायरिए णो उवट्ठावणायरिए ॥ चत्तारि आयरिया प० तं० उद्देसणायरिए णाममेगे णो वायणायरिए ४ धम्मायरिए॥ १७॥चत्तारि अंतेवासी प० तं० पव्वावणंतेवासी णाममेगे णो उवट्ठावणंतेवासी ४ धम्मंतेवासी । चत्तारि अंतेवासी प० तं० उद्देसणंतेवासी णाममेगे णो वायणंतेवासी

भावार्थ

प्रवर्ज्या (दीक्षा) देनेवाले है परंतु उपस्थापनाचार्य (सावधान करनेवाले) नहीं है २ एक उपस्थापनाचार्य है परंतु प्रवर्ज्याचार्य नहीं है ३ एक प्रवर्ज्याचार्य है और उपस्थापनाचार्यभी है ४ एक प्रवर्ज्याचार्यभी नहीं है और उपस्थापनाचार्यभी नहीं है औरभी चार प्रकारके आचार्य कहे हैं १ एक उद्देशनाचार्य (अंगादिसूत्र पढानेवाले) हैं परंतु वाचनाचार्य (अर्थदेनेवाले) नहीं हैं २ एक वाचनाचार्य है परंतु उद्देशनाचार्य नहीं है ३ एक उद्देशनाचार्य है और वाचनाचार्यभी है ४ एक नतो उद्देशनाचार्य है और न वाचनाचार्य है इतमें चौथे भांगेकेआचार्य सम्यक्त्वके दाता जानना ॥ १७ ॥ चार प्रकारके अंतेवासी

शब्दार्थ

चार अं० शिष्य उ० उद्देशना के अं० शिष्य वा० वाचना के अं० शिष्य ॥ १८ ॥ च० चार णि० निर्ग्रन्थ रा० रत्नाधिक स० श्रमण णि० निर्ग्रन्थ म० बहुत कर्म करने वाले म० बहुत क्रिया करने वाले आ० परीषह सहन नहीं करने वाले अ० समिति रहित ध० धर्म की अ० आराधना रहित भ० होता है रा० रात्निक स० श्रमण णि० निर्ग्रन्थ अ० अल्प कर्म अ० अल्पक्रिया वाले आ० आतापी स० समिति

सूत्र

४ ॥ १८ ॥ चत्तारि णिग्गंथा प० तं० रायणिए समणे निग्गंथे महाकम्मे महाकिरिए, अणायावी अस्समिए धम्मस्स अणाराहए भवइ । रायणिए समणे निग्गंथे अप्पकम्मे, अप्पकिरिए आयावी, समिए, धम्मस्स आराहए भवइ । ओमराइणिए समणे णिग्गंथे महाकम्मे महाकिरिए, अणायावी अस्समिए धम्मस्स अणाराहए

भावार्थ

(शिष्य) कहे हैं एक प्रवर्ज्याशिष्य (स्वयंदीक्षा लेनेवाला) है परंतु उपस्थापनाशिष्य नहीं है यों चारों भांगे कहना औरभी चार प्रकारके अंतेवासी एक को सूत्र पढाया हुवा है परंतु अंग पढाया हुवा नहीं है यों चारों भांगे कहना चौथे भांगेमें श्रावक जानना ॥ १८ ॥ चार प्रकारके निर्ग्रन्थ (साधु) कहे हैं दीक्षा अर्थात् पर्यायमें जो ज्येष्ट होता है सो रत्नाधिक कहा जाता है. ऐसा महाकर्मी, बहुत स्थितिके कर्म करनेवाला, प्रमादादिक महान क्रियाकरनेवाला, आतापना व समता रहित रत्नाधिक साधु धर्मका आराधक नहीं होता है १ एक रत्नाधिक साधु कि जो अल्पकर्मी. अल्पस्थितिवाले कर्म करनेवाला, प्रमादादिक

शब्दार्थ

बाला ध० धर्म की आ० आराधना भ० होती है ओ० अल्प समय की दीक्षावाले स० श्रमण णि० साधु म० महाकर्म वाले म० महाक्रिया वाले अ० आताप रहित अ० समिति रहित ध० धर्म की अ० अनाराधना भ० होता है ओ० अल्प काल के दीक्षित अ० अल्पकर्म वाल अ० अल्पक्रिया वाले आ० आताप स० समिति युक्त ध० धर्म की आ० आराधना भ० होवे । च० चार णि० साध्वी रा० रात्निक साधु समान साध्वी ४ ए० ऐसे । च० चार स० श्रमणोपासक रा० रात्निक स० श्रमणोपासक म० बहुतकर्म करनेवाला त० तैसे च० चार स० श्राविका रा० रात्निकासमान स० श्राविका, म० बहुतकर्म बाली त० वैसे च० चार ग० गमा ॥ १९ ॥ च० चार स० श्रमणोपासक अ० मातापिता समान भा०

सूत्र

भवइ । ओमराइणिए समणे णिग्गंथे अप्पकिरिए आयावी समिए धम्मस्स आराहए भवइ ॥ चत्तारि णिग्गंथीओ प० तं० राइणिया समणी णिग्गंथी ४ एवंचेव । चत्तारि समणोवासगा प० तं० रायणिए समणोवासए महाकम्मे तहेव । चत्तारि समणोवासियाओ प० तं० रायणिया समणोवासिया महाकम्मा तहेव चत्तारि गमा ॥ १९ ॥ चत्तारि स-

भावार्थ

की क्रिया जिसको अल्प है और आतापना लेनेवाला है वह धर्माराधक होसकता है. १ एक अवम रात्निक साधु दीक्षामें लघु परंतु बहुत स्थितिवाले कर्म करनेवाला, प्रमादादिककीक्रियावाला और आतापना जो नहीं लेता है वह सत्वहीन होनेसे धर्मका आराधक नहीं होसकता है ४ एक अवमरात्निक साधु (दीक्षामें लघु) कि जो अल्पकर्म करनेवाला, आतापना लेनेवाला, समता सहित होता है वह धर्मका आराधक होता है . जैसे साधुके चार भांगे कहे वैसेही साध्वीके चार भांगे, श्रावकके चार भांगे, और श्राविकाके चार भांगे जानना ॥ १९ ॥ चार प्रकारके श्रावक कहे १ उपकार किये विनाही साधु व सतीके

शब्दार्थ

भ्रातृसमान मि० मित्रसमान स० सोकसमान । च० चार स० श्रमणोपासक अ० काचसमान प० पताका समान खा० स्थाणुसमान ख० कंटकसमान ॥ २० ॥ स० श्रमणभगवंत म० महावीरके स० श्रमणोपासकको सो० सौधर्मकल्पमें अ० अरुणाभ वि० विमानमें च० चार प० पल्योपमकी ठि० स्थिति प० कही ॥ २१ ॥

सूत्र

मणोवासगा प० तं० अम्मापिइसमाणे, भाइसमाणे, मित्तसमाणे, सवत्तिसमाणे । चत्तारि समणोवासगा प० तं० अदागसमाणे, पडागसमाणे, खाणुसमाणे, खरकंट समाणे ॥ २० ॥ समणस्सणं भगवओ महावीरस्स समणोवासगाणं सोहम्मेकप्पे अरुणाभेविमाणे चत्तारि पलिओवमाइं ठिई प० ॥ २१ ॥ चउहिं ठाणेहिं अहु-

भावार्थ

हितका कर्त्ता जो श्रावक होते हैं उनको मातापिता समान कहे हैं २ प्रमाद देखकर क्रोध करे परंतु मनमें जो श्रावक हित इच्छता है सो भाई समान गिने गये हैं, मित्रसमान श्रावक साधुके दोषोंको ढक कर गुण प्रकट करे ४ सोक समान श्रावक साधुके गुणोंको ढककर उनके छिद्रों गवेषते हैं । औरभी चार प्रकारके श्रावक १ एक आदर्श समान श्रावक सो साधु जैसे सूत्रसिद्धांतके भाव प्ररुपे वैसेही अंगीकार करे जैसे दर्पणमें मुखादिक यथातथ्य दीखता है २ पताका समान श्रावक सो विचित्र देशना सुनकर मन आस्थिर करे ३ स्थाणुसमान श्रावककिजो अपना कदाग्रह छोडे नहीं ४ खर कंटक समान श्रावककि जिसको हित शिक्षा देवे तो उत्तरमें दुर्वचनादिबोले ॥ २० ॥ श्री श्रमण भगवंत महावीरके दश श्रावककी सौधर्म देवलोक के अरुणाभाविमानमें चार पल्योपमकी स्थिति कही ॥ २१ ॥ तत्कालके उत्पन्न हुवे देवताओं देवलोकमें

च० चार ठा० स्थानसे अ० तुर्तका उ० उत्पन्न दे० देवता दे० देवलोकमें इ० इच्छे मा० मनुष्यलोकमें ह० शीघ्र आ० आनेको णो० नही सं० समर्थ होवे ह० शीघ्र आ० आनेको तं० जैसे. अ० तुर्तका उ० उत्पन्न दे० देवता दे० देवलोकमें दि० दीव्य का० कामभोगमें मु० मूर्च्छित गि० गृद्ध ग० स्नेहसेबंधाहुवा अ० तन्मय से० वह मा० मनुष्य के का० कामभोगों को णो० नहीं आ० आदरकरे णो० नहीं प० जाने णो० नहीं अ० प्रयोजन बं० बांधे णो० नहीं नि० निदान प० करे णो० नहीं ठि० स्थिति प० प्रकल्प प० करे अ० अधुनोपपन्न दे० देव दे० देवलोक में दि० दीव्य का० काम भोग में मु० मूर्च्छित ४ त०

णोचवन्ने देवे देवलोगेसु इच्छेज्जा माणुसं लोगं हव्वमागच्छित्तए णोचेव संचाएइ हव्वमागच्छित्तए तं० अहुणोचवन्ने देवे देवलोगेसु दिव्वेसु कामभोगेसु मुच्छिए गिद्धे गढिए अज्झोववण्णे सेणं माणुस्सए कामभोगे णो आढाइ णो परियाणाइ णो अट्ठं बंधइ णो नियाणं पगरेइ, णो ठिइपगप्पं पगरेइ. । अहुणोचवन्ने देवे देवलोएसु दिव्वेसु कामभोगेसु मुच्छिए ४ तस्सणं माणुस्सए पेमे वोच्छिण्णे दिव्वे पेमसंकंते भवइ, ।

से मनुष्य लोकमें आनेको इच्छते हैं परंतु चार कारणसे नहीं आसकते हैं. तत्कालके उत्पन्न हुवे देवताओं दीव्य कामभोगोमें मूर्च्छित, गृद्ध व अतृप्तपनकर मनुष्यके कामभोगोंको आदर करे नहीं और मनुष्यके सुखोंको असार व कुत्सित जाने इसलिये ऐसा नियाणाभी करे नहीं कि मैं भवांतरमें ऐसे भोगमें रहूं. २

शब्दार्थ

उत्का मा० मानुष्यिक पे० प्रेम बो० व्युच्छिन्न दि० देवताओं पे० प्रेम सं० संक्रान्त भ० होताहै अ० अधुनोपपन्न दे० देव दे० देवलोकमें दि० दीव्य का० कामभोगोंमें मु० मूर्च्छित त० उसको ए० ऐसा भ० होताहै इ० अभी ग० जाऊंगा मु० मुहूर्तमें ग० जाऊंगा ते० उस का० समयमें अ० अल्प आयुष्यवाले म० मनुष्यों का० सम्बन्धी गं० गंध नो० नहीं अ० आती सं० संयुक्त भ० होते हैं अ० अधुनोपपन्न दे० देवलोकमें दि० दीव्यकामभोगोंमें मु० मूर्च्छित त० उसको म० मनुष्यकी गं० गंध प० प्रतिकूल प० प्रतिलोम भ० होतीहै उ० ऊर्ध्व म० मनुष्यकी गं० गंध च० चार पं० पांच जो० योजन स० सो ह० शीघ्र आ० आतीहै इ० इतने च० चार ठा० स्थानकसे अ० अधुनोपपन्न दे० देव दे० देवलो-

सूत्र

अहुणोववन्ने देवे देवलोएसु दिव्वेसु कामभोगेसु मुच्छिए ४ तस्सणं एवं भवइ इयमिंह गच्छं मुहुत्तेण गच्छं तेणं कालेण मप्पाउआ मणुस्सा कालधम्मुणा संजुत्ता भवंति. । अहुणोववन्ने देवे देवलोएसु दिव्वेसु कामभोगेसु मुच्छिए ४ तस्सणं माणुस्सए गंधे पडिकूले पडिलोमे यावि भवइ उड्ढंपियणं माणुस्सए गंधे चत्तारि पंचजोयणसयाइं हव्वमा-

भावार्थ

तत्कालके उत्पन्न देवताओं दीव्य कामभोगमें मूर्छित हुवा मनुष्य भव संबंधी मातपिताका प्रेम व स्नेहका विच्छेद होता है इनसे मनुष्य भवमें नहीं आता है ३ तत्कालके उत्पन्न हुवे देवताओं दीव्य कामभोगोंमें मूर्छित बन ऐसी इच्छा करे कि मैं इस नाटक देखकर दो घटिकामें जाऊं परंतु एक नाटक देखते

शब्दार्थ

कमें इ० इच्छे मा० मनुष्यलोकमें ह० शीघ्र आ० आनेको णो० नहीं सं० समर्थहोवे ह० शीघ्र आ० आनेको ॥ २२ ॥ च० चार कारनसे अ० अधुनोपपन्न दे० देवता दे० देवलोकमें इ० इच्छे मा० मनुष्यलोकमें ह० शीघ्र मा० आनेको सं० समर्थहोवे ह० शीघ्र आ० आनेको अ० अधुनोपपन्न दे० देव दे० देवलोकमें दि० दीव्य का० कामभोगोंमें अ० अमूर्च्छित जा० यावत् अ० पृ-

सूत्र

गच्छइ ४ इच्चेएहिं चउहिं ठाणेहिं अहुणोववन्नेदेवे देवलोएसु इच्छेजा माणुसलोगं हव्वमागच्छित्तए णो चेवणं संचाएइ हव्व मागच्छित्तए ॥ २२ ॥ चउहिं ठाणेहिं अहुणोववन्ने देवे देवलोएसु इच्छेजा माणुसं लोगं हव्व मागच्छित्तए संचाएइ हव्वमागच्छित्तए तं० अहुणोववन्नेदेवे देवलोगेसु दिव्वेसु कामभोगेसु अमुच्छिए जाव अण-

भावार्थ

दो हजार वर्ष व्यतीत होते हैं इससे मनुष्यभवमें अल्प आयुष्यवाले मरणको प्राप्त होवे और फीर आनेका होवे नहीं ४ तत्काल के उत्पन्न हुवे देवताओ देवलोकमें दीव्य काम भोगोंमें आसक्त गृद्ध व मूर्च्छित होतेहुवे मनुष्यलोकके मृतक सर्प गौ जैसी गंध ५१० योजन पर्यंत ऊंचे जातिहै ऐसी विपरीत गंध इन्द्रिय व मनको प्रतिकूल होनेसे नहीं आतेहैं. ॥ २२ ॥ तत्कालके उत्पन्न हुवे देवता मनुष्यलोकमें आनेको वांच्छे और चार कारनसे शीघ्र आसकते हैं. १ तत्कालका उत्पन्न हुवा देवता देवलोकके दीव्य काम भोगोंको अनित्य जानकर उससें अनासक्त, अगृद्ध, बनता हुवा ऐसा विचार करे कि मनुष्य भवमें मुझे प्रतिबोध देने

शब्दार्थ

थक् त० उसको ए० ऐसा भ० होताहै अ० है ख० निश्चयार्थमें म० मेरे मा० मनुष्यभवमें आ० आचार्य उ० उपाध्याय प० प्रवर्तक; थे० स्थविर ग० गणी ग० गणधर ग० गणविच्छेदक जे० जिनके प० प्रभावसे म० मुझे इ० इस ए० ऐसी दि० दीव्य दे० देवऋद्धि दि० दीव्य दे० देव द्युति ल० मीली प० प्राप्तहुइ अ० भोगसन्मुखआइ तं० इसलिये ग० जाताहूं ते० उन भ० भगवन्तको वं० वांदताहूं जा० यावत् प० सेवाकरताहूं अ० अधुनोपपन्न दे० देव दे० देवलोकमें जा० यावत् अ० तन्मयनहीं त० उसको ए० एसा म० होताहै ए० यह म० मनुष्यभवमें णा० ज्ञानी त० तपस्वी

सूत्र

ज्झोववण्णे तस्सणं एवं भवइ अत्थिखलु मम माणुस्सए भवे आयरिएइवा, उवज्झाएइवा, पवित्तीवा, थेरेइवा गणीइवा, गणहरेइवा, गणावच्छेएइवा, जेसिं पभावेणं मए इमा एयारूवा दिव्वा देवड्ढी, दिव्वा देवजुई लद्धा, पत्ता, अभिसमण्णागया. तं गच्छामिणं ते भगवंते वंदामि जाव पज्जुवासामि । अहुणोववन्ने देवे देवलोएसु जाव अणज्झोववण्णे तस्सणं

भावार्थ

वाले आचार्य, उपाध्याय, प्रवर्तक, गणी, गणधर, व गणावच्छेदक रहेहुवे हैं. और उनके प्रभावसे ही ऐसी दीव्य देवर्द्धि, द्युति की प्राप्ति हुई है इसलिये मैं वहां जाऊं और उन भगवन्तको वंदना नमस्कार यावत् सेवाकरुं २ तत्कालका उत्पन्न हुवा देवता देवलोकके दीव्य कामभोगोंमें अनासक्त बन ऐसा विचार करे कि मनुष्यभवमें ज्ञानी, तपस्वी, या दुष्कर करणी करनेवाले पुरुष रहेहुवे हैं इसलिये मैं वहां जाऊं और उन भगवन्तको

शब्दार्थ

अ० अति दुष्कर का० करनेवाले त० इसलिये ग० जाताहूं ते० उन भ० भगवन्तको वं० वांदताहूं जा० यावत् प० पर्युपासना करताहूं अ० अधुनोपपन्न दे० देव दे० देवलोकमें जा० यावत् अ० तन्मय नहीं त० उनको ए० ऐसा भ० होताहै अ० है म० मेरे मा० मनुष्यकेभवमें मा० माता जा० यावत् सु० पुत्री त० इसलिये ग० जाताहूं ते० उनकी अं० समीप प० प्रकटहोऊंगा पा० देखो ता० तमो मे० मेरी इ० यह ए० ऐसी दि० दीव्य दे० देवऋद्धि दि० दीव्य दे० देवद्युति ल० लब्ध प० प्राप्त अ० सन्मुखआयीहुइ अ० अधुनोपपन्न दे० देव दे० देवलोकमें जा० यावत् अ० तन्मय नहीं त० उस-

सूत्र

एवं भवइ अत्थि मम माणुस्सए भवे मायाइ वा जाव सुण्हाइवा तंगच्छामिणं तोसि मंतियं पाउब्भवामि पासंतु तामे इममेयारूवं दिव्वं देवड्ढिं दिव्वं दिवजुइं, लद्धं पत्तं अभिसमण्णागयं. । अहुणोववन्नेदेवे देवलोएसु जाव अणज्झोववन्ने तस्सणं एवं भवइ

भावार्थ

वंदना नमस्कार यावत् सेवा करूं ३ तत्कालका उत्पन्न हुवा देवता दीव्यकामभोगोंमें अनासक्त बन ऐसा विचार करे कि मनुष्यभव संबंधी मेरे माता, पिता, यावत् स्नुषा है इसलिये मैं वहां जाऊं और उनको बतलाऊं कि मुझे देवताकी विमानादिक की संपत्ति, व शरीरकी कान्ति प्रमुख प्राप्त हुवा है ४ तत्काल का उत्पन्न हुवा देवता दीव्य कामभोगोंमें अनासक्त बन ऐसा विचार करे कि मनुष्यभव संबंधी मेरे मित्र सहचारी

शब्दार्थ

को ए० एसा भ० होताहै अ० है म० मेरे मा० मनुष्यके भ० भवमें मि० मित्र सु० सुखी, स० स्नेहवंत स० संगति करनेवाला ते० उनको अ० हमसे अ० अन्योन्यके सं० संकेत प० स्मरणकियाहुवा भ० होताहै जो० जो मे० मेरेसे पु० पहिले च० चवे से० वे सं० उपदेशदे इ० इन जा० यावत् सं० समर्थ होवे ह० शीघ्र आ० आनेको ॥२३॥ च० चार ठा० कारनसे लो० लोकमें अंधकार सि० होवे अ० अरिहंतका वो० व्यवच्छेदसे अ० अरिहंतने प० प्ररूपा ध० धर्म वो० विच्छेदजाते पु० पूर्वगत

सूत्र

तृतीय ठाणाङ्ग सूत्र

अत्थिणं मम माणुस्सए भवे मित्तेइवा, सुहीइवा, सहाएइवा संगइएवा तेसिं चणं अम्हे अण्णमण्णस्स संगारे पडिसुए भवइ, जोमे पुव्विं चयइ से संबोहियव्वे इच्चेएहिं जाव संचाएइ हव्वमागच्छित्तए ॥ २३ ॥ चउहिं ठाणेहिं लोगंधगारे सिया तं० अरिहंतेहिं बोच्छिज्जमाणेहिं, अरहंतपण्णत्ते, धम्मेवोच्छिज्जमाणे, पुव्वगए बोच्छिज्जमाणे, जायए-

भावार्थ

आदि बहुत हैं और जब मनुष्यभवमें थे उस समय ऐसा संकेताकियाथा कि देवतामेंसे पहिले जो चवकर मनुष्य भवमें जावे उसको प्रतिबोध देना. इन चार कारनों से देवता मनुष्य भवमें आवे ॥ २३ ॥ चार कारनसे लोकमें अंधकार होताहै १ अरिहंतका विरह होताहै तब भावसे अंधकार होताहै (छत्रभंगादि उत्पात होवे इसलिये) २ अरिहंत प्रणित धर्मविच्छेदहोवे तबअंधकार होता है (एकान्त दुषम छठा आरा प्रवर्तता है इसलिये) ३ चउदह पूर्वका ज्ञानविच्छेदहोवे तब अंधकार होवे (आगमकीहानि होनेसे) जात

शब्दार्थ

वो० विच्छेदजाते जा० जाततेज (अग्नि) वो० विच्छेदजाते च० चार ठा० स्थान के लो० लोकउद्योत सि० होवे अ० अरिहंतका ज० जन्महोते अ० अरिहंत प० दीक्षालेते अ० अरिहंतके ज्ञानउत्पन्नकी महिमामें अ० अरिहंतके प० निर्वाणके म० महिमामें ए० ऐसे दे० देवअंधकार दे० देवद्युति दे० देवकांति दे० देवकहकह च० चारकारनसे दे० देवेन्द्र मा० मनुष्यलोकमें ह० शीघ्र आतेहैं ए० ऐसे ज० जैसे ति० तीनस्थानकमें जा० यावत् लोकान्तिक देव मा० मनुष्यलोकमें ह० शीघ्र आ० आसकतेहै अ० अरिहंतका जन्म-

सूत्र

जो वोच्छिज्जमाणे।चउहिं ठाणेहिं लोउज्जोएसिया तं० अरिहंतेहिं जायमाणेहिं अरहंतेहिं पव्वयमाणेहिं अरहंताणं णाणुप्पायमहिमासु,अरहंताणं परिनिव्वाणमहिमासु।एवं देवंधगारे,देवुज्जोए,देवसन्निवाए,देवुक्कलिया,देवकहकहाए।चउहिं ठाणेहिं देविंदा माणुसंलोगंहव्वमागच्छंति, एवं जहा तिठाणे जाव लोगंतियादेवा माणुसंलोगं हव्वमागच्छेज्जा तं० अरहंतेहिं जयमाणे-

भावार्थ

तेज (बादर अग्नि) का विच्छेद होनेसे द्रव्यसे अंधकार होवे (दीपकका अभावसे)। चार कारणसे लोकमें उद्योत होता है १ अरिहंतका जन्महोते २ अरिहंत दीक्षालेते ३ अरिहंतको केवल ज्ञान उत्पन्न होते, और ४ अरिहंतका निर्वाणके महिमामें ऐसेही उपर्युक्त चार कारनोंसे देवतामे अंधकार होता है व उद्योत होता है, अरिहंतके जन्मादि चार कारनोंसे देवताओंका समवाय, देवोत्कालिका, देवकहकह होवे. और देवेन्द्रभी इनही चार कारनोंसे मनुष्य लोगमें आवे इसका सब अधिकार तीसरे ठाणेमें जैसे कहा वैसे कहना यावत्

शब्दार्थ

होवे अ० अरिहंतके निर्वाणकी म० महिमामें ॥ २४ ॥ च०चार दु०दुःखशैय्या त० वहां इ० यह प० प्रथम दु० दुःखशैय्या से० अब मुं० मुंड (अनगार) भ० होकर अ० गृहस्थावाससे अ० अनगारपना प० प्रव्रजित नि० निर्ग्रन्थके पा० प्रवचन में सं० शंकित कं० कांक्षित वि० फल में शंकाशील भे० भेद को स० प्राप्त क० कालुष्य (पाप) को स० प्राप्त नि० निर्गन्थ के पा० प्रवचन को णो० नहीं स० श्रद्धता है णो० नहीं प० प्रतीति करता है णो० नहीं रो० रुचता है नि० निर्ग्रन्थ के पा० प्रवचन को अ० अश्रद्धते अ० अप्रतीतिकरते अ० अरुचिकरते म० मन उ० ऊंचा नीचा नि० करे वि० धर्मभ्रष्ट अ०

सूत्र

हिं जाव अरहंताणं परिनिव्वाण महिमासु ॥ २४ ॥ चत्तारि दुहसेज्जाओ प० तं० तत्थ खलु इमा पढमा दुहसेज्जा सेणं मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइए निग्गंथे पावयणे संकिए, कंखिए, वितिगिच्छिए, भेयसमावण्णे, कलुससमावण्णे, निग्गंथं पावयणं णो सद्दहइ, णो पत्तियइ, णो रोएइ, निग्गंथं पावयणं असद्दहमाणे अपत्तियमाणे, अरोएमाणे मणं उच्चावयं नियच्छइ विणिघायमावज्जइ पढमा दुह-

भावार्थ

लोकान्तिक देवतकका सब अधिकार जानना ॥२४॥चार प्रकारकी दुःखशैय्या कही १ कोई साधु मुंड होकर गृहस्थावासमेंसे साधुपना अंगीकारकर निर्ग्रन्थके प्रवचन (जिनवचन) में शंका, अन्यमतकी कांक्षा, किये हुवे कर्मके फलमें संदेह वगैरह करे और उन वचनोंकी श्रद्धा, प्रतीती, रुचिकरे नहीं इसतरह श्रद्धा प्रतिति व रुचि नहीं करता हुवा

शब्दार्थ होवे प० प्रथम दु० दुःख शैय्या अ० अथ अ० अपर दो० दुसरी दु० दुःख शैय्या से० अब मु० मुंड भ० होकर अ० गृहस्थपना से अ० साधु पना प० प्रव्रजित स० अपने ला० लाभ से णो० नहीं तु० संतोष पावे प० अन्य के ला० लाभ का आ० आस्वादन करे पी० इच्छे प० स्पर्धाकरे अ० अभिलाषा करे प० अन्य के ला० लाभ को आ० आस्वादता जा० यावत् अ० अभिलाषा करता म० मन उ० उंचा नीचा नि० करे वि० धर्म भ्रशको आ० प्राप्त होवे दो० दुसरी दु० दुःख शैय्या अ० अथ अ० अपर त० तीसरी दु० दुःख शैय्या से० अब मुं० मुंड भ० होकर अ० गृहस्थपना से अ० साधुपना प०

सूत्र सेज्जा । अहावरा दोच्चादुहसेज्जा सेणंमुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइए सएणं लाभेणं णो तुस्सइ, परस्स लाभ मासाइ, पीहेइ, पच्छेइ, अभिलसइ परस्स लाभ मासाएमाणे जाव अभिलसमाणे मणंउच्चावयंति नियच्छइ विणिघाय मावज्जइ दोच्चा दुहसेज्जा। अहावरा तच्चा दुहसेज्जा—सेणंमुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइए दिव्वेमाणुस्सए कामभोगे आसायइ जाव अभिलसइ दिव्वे माणुस्सए कामभोए आसाएमाणे

भावार्थ मनको ऊंच नीचकरे और इससे संसार परिभ्रमण करे यह प्रथम दुःखशैय्या. २ कोई पुरुष मुंड बनकर व गृहस्थावासमेंसे अनगार बनकर अपने वस्त्र पात्रादिमें संतोष नरखे परंतु अन्य उपकरणकी वांच्छा करे और इस तरह वांच्छा करता हुवा मन उंचा नीचा करे जिससे संसार परिभ्रमण करे यह दूसरी दुःखशैय्या.

शब्दार्थ

प्रव्रजित दि० दीव्य मा० मनुष्य के का० कामभोगों को आ० आस्वादे जा० यावत् अ० अभिलाषा करे दि० दीव्य मा० मनुष्य के का० कामभोगों को आ० आस्वादता जा० यावत् अ० अभिलाषा करता म० मन उ० ऊंचा नीचा णि० होवे वि० धर्मभ्रश आ० प्राप्त होवे त० तीसरी दु० दुःख शैय्या अ० अथ अ० अपर च० चौथी दु० दुःख शैय्या से० अब मुं० मुंड भ० होकर जा० यावत् प० प्रव्रजित त० उसको ए० ऐसा भ० होवे ज० जब अ० मैं अ० गृहवास में आ० वसता त० तब अ० मैं सं० चंपीकरना प० मर्दन करना गा० तेल चोलना ग० गात्रप्रक्षालन ल० प्राप्त करता ज० जब से अ० मैं

सूत्र

जाव अभिलसमाणे मणं उच्चावयं णियच्छइ, विणिघायमावज्जइ तच्चा दुहसेज्जा।
अहावरा चउत्था दुहसेज्जा सेणं मुंडेभवित्ता जाव पव्वइए तस्सण मेवं भवइ जयाणं अहमगारवास मावसामि तयाणमहं संबाहण परिमद्दण गाउब्भंग गाउच्छोलणाइ लभामि जप्पभियंचणं अहंमुंडे भवित्ता जाव पव्वइए तप्पभियंचणं अहं संबाहण जाव गाउच्छोलणाइं आसाएइ जाव अभिलसइ सेणं संबाहण जाव गाउच्छोलणाइं

भावार्थ

३ कोई पुरुष दीक्षा लेकर मनुष्य संबंधी कामभोगोको बांच्छता हुवा मन ऊंचा नीचा करे. इससे संसारमें परिभ्रमण करे यह तीसरी दुःखशैय्या ४ कोई मुंड बनकर व दीक्षा लेकर ऐसी चिन्तवना करे की जब मैं गृहस्थावासमेंथा तब शरीरको सुखकारी तेलकी मर्दना करताथा और शरीर प्रक्षालन

शब्दार्थ

मुं० साधु भ० होकर जा० यावत् प० प्रव्रजित त० उसदिन से अं० मैं सं० संबाधन जा० यावत् गा० गात्र प्रक्षालन आ० आस्वादता हूं जा० यावत् अ० अभिलाषा करता हूं से० अब सं० संबाधन जा० यावत् गा० गात्र प्रक्षालन आ० आस्वादता जा० यावत् म० मन उ० ऊंचा नीचा होवे वि० विनिघात को आ० प्राप्त होवे च० चौथी दु० दुःख शैय्या ॥ २५ ॥ च० चार सु० सुख शैय्या प० प्ररूपी त० उस में ख० निश्चयार्थ में इ० यह प० प्रथम सु० सुख शैय्या से० अब मुं० मुंड भ० होकर अ० गृह-स्थपना से अ० साधुपना प० प्रव्रजित नि० निर्ग्रन्थ के पा० प्रवचन में नि० निःशंकित नि० निकांक्षित

सूत्र

आसाएमाणे जाव मणं उच्चावचं नियच्छइ विणिघाय मावज्जइ चउत्था दुहसेज्जा ॥ २५ ॥ चत्तारि सुहसेज्जाओ पण्णत्ताओ त० तत्थ खलु इमा पढमा सुहसेज्जा सेणं मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइए निग्गंथे पावयणे णिस्संकिए, णिक्कंखिए, णिव्वितिगिच्छिए, णोभेयसमावण्णे णो कलुससमावण्णे, निग्गंथं पावयणं सद्दहइ पत्तियइ रो

भावार्थ

आदिसब करताथा परंतु जिस दिनसे दीक्षा ली है उस दिनसे शरीरको तेलमर्दन या प्रक्षालन प्रमुख कुच्छभी नहीं मीलता है. फीर उसकी वांच्छा करता हुवा मन ऊंचानीचाकरे जिससे संसार परिभ्रमन होवे ॥ २५ ॥ चार प्रकारकी सुखशैय्या कही १ कोई हलुकर्मी जीव प्रवर्जालेकर जिनवचनमें शंका, कांक्षा, वितिगिच्छा, भेद व कालुष्यता रहित बने और जिनवचनोंकी यथातथ्य रीतिसे श्रद्धा, रुचि व प्रतीति करे

शब्दार्थ

णि० वांछा रहित णो० नहीं भे० भेद स० प्राप्त णो० नहीं क० कालुष्य स० प्राप्त णि० निर्ग्रन्थ के पा० प्रवचनको स० श्रद्धताहै प० प्रतीतिकरता है रो० रुचिकरता है णि० निर्ग्रन्थ के पा० प्रवचन स० श्रद्धते प० प्रतीति करते रो० रुचिकरते णो० नहीं म० मन उ० ऊंचा नीचा नि० करता है णो० नहीं वि० धर्मभ्रश को आ० प्राप्त होता है प० प्रथम सु० सुखशैय्या अ० अथ अ० अपर दो० दुसरी सु० सुखशैय्या से० अब मुं० मुंड भ० होकर जा० यावत् प० प्रव्रजित स० अपने ला० लाभ से तु० संतुष्ट होता है प० अन्य के ला० लाभ को णो० नहीं आ० आस्वादताहै णो० नहीं पी० इच्छताहै णो० नहीं प० प्रार्थताहै णो० नहीं अ०

सूत्र

एइ निग्गंथं पावयणं सद्दहमाणे पत्तियमाणे, रोएमाणे, णो मणं उच्चावचं नियच्छइ णो विणिघायमावज्जइ पढमा सुहसेज्जा । अहावरा दोच्चा सुहसेज्जा सेणं मुंडे भवित्ता जाव पव्वइए सएणं लाभेणं तुस्सइ, परस्सलाभं णो आसाएइ, णो पीहेइ, णो पत्थेइ, णो अभिलसइ परस्सलाभ मणासाएमाणे जाव अणभिलसमाणे णो मणं उच्चावयं णियच्छइ, णोविणिघायमावज्जइ, दोच्चासुहसेज्जा । अहावरा तच्चा सुहसेज्जा सेणं मुंडे

भावार्थ

इस तरह श्रद्धा रुचि व प्रतीति करता हुवा ऊंचा नीचा मन करे नहीं और इससे संसारमें परिभ्रमण करने काभी होवे नहीं यह प्रथम सुखशैय्या. २ कोई दीक्षा लेकर स्वतःके लाभमें संतोषरखे और अन्यके लाभकी इच्छा करे नहीं इसतरह प्रवर्तता हुवा ऊंचानीचा मन करे नहीं और धर्मसे भ्रष्ट होवे नहीं

अभिलाषा करता है प० अन्य के ला० लाभ को अ० नहीं आस्वादता जा० यावत् अ० नहीं अभिलाषा करता णो० नहीं म० मन उ० ऊंचा नीचा णि० करे णो० नहीं वि० धर्मभ्रश आ० प्राप्त होवे दो० दूसरी सु० सुखशैय्या अ० अथ अ० अपर त० तीसरी सु० सुखशैय्या से० अब मुं० मुंड जा० यावत् प० प्रव्रजित दि० दीव्य मा० मनुष्य के का० कामभोगों को णो० नहीं आ० आस्वादता जा० यावत् णो० नहीं अ० अभिलाषा करता दि० दीव्य मा० मनुष्य के का० कामभोगों को अ० नहीं आस्वादता जा० यावत् अ० नहीं अभिलाषा करता णो० नहीं म० मन उ० ऊंचा नि० करे णो० नहीं वि० धमभ्रश आ० प्राप्त होवे त० तीसरी सु० सुखशैय्या अ० अथ अ० अपर च० चौथी सु० सुखशैय्या से० अब मुं० साधु जा० यावत् प० प्रव्रजित त० उसको ए० ऐसा भ० होवे ज० जो अ०

जाव पव्वइए दिव्वमाणुस्सए कामभोगे णो आसाएइ जाव णो अभिलसइ दिव्व-माणुस्सए कामभोगे अणासाएमाणे जाव अणभिलसमाणे णो मणं उच्चावयं नियच्छइ णो विणिघाय मावज्जइ तच्चासुहसेज्जा । अहावरा चउत्था सुहसेज्जा सेणं मुंडे जाव पव्वइए तस्सणमेवं भवइ, जइ ताव अरहंता भगवंता हट्ठा, आरोग्गा, बलिया, कल्लस-रीरा, अन्नयराइं ओरालाइं, कल्लाणाइं, विउलाइं, पयत्ताइं, पग्गहियाइं, महाणुभागाइं,

जिससे संसार परिभ्रमण करे नहीं यह दूसरी सुखशैय्या. ३ कोई दीक्षा लेकर मनुष्य संबंधी कामभोगोंकी इच्छा प्रार्थना करे नहीं और इसतरह अभिलाषा नहीं करता हुवा ऊंचा नीचा मनभी करे नहीं और इससे

शब्दार्थ

अरिहंत भ० भगवंत ह० हर्षवन्त आ० आरोग्य ब० बलवाले क० कल्प शरीर (संपूर्ण इन्द्रियवाले) अ० अन्य उ० उदार क० मांगलिक वि० विपुल प० उत्कृष्ट संयम वाले प० आदर सहित म० महानुभाग क० कर्मक्षय करने वाले त० तप कर्म प० अंगीकार करते हैं कि० क्या अ० मैं अ० आइ हुइ व० पास आइ हुइ वे० वेदना णो० नहीं स० सम्यक् प्रकार से स० सहनकरूं ति० क्रोध रहित सहनकरूं अ० अदैन्यपना से सहन करूं म० मुझे अ० आइहुइ व० पास आइ हुइ स० सम्यक् प्रकार से अ० नहीं सहते अ० नहीं खमते अ० नहीं अहियासते किं० क्या अ० अन्य क० करे ए० एकांत पा० पाप

सूत्र

कम्मक्खयकरणाइं तवोकम्माइं पडिवज्जंति किमंगपुण अहं अज्झोवगमिओ वक्कमियं वेयणं णो सम्मं सहामि, खमामि, तितिक्खेमि, अहियासेमि, ममं च णं अज्झोवगमिओ वक्कमियं सम्म मसहमाणस्स अखममाणस्स अतितिक्खेमाणस्स अणहियासेमाणस्स किंमण्णे कज्जइ एगंतसो पावेकम्मे कज्जइ, ममंचण मज्झोवगमिओ जाव सम्मं सहमाणस्स

भावार्थ

संसारमें परिभ्रमणभी करे नहीं ४ कोई दीक्षा लेकर ऐसा विचार करेकी अरिहंत भगवंत कि जो हर्षवंत, आरोग्य, बलवंत, इन्द्रिय व शरीरके धणि थे वेभी मांगलिकरूप, उत्कृष्ट संयम सहित, महानुभाग, अचिंत्य शक्तिवाले, अष्टकर्मके क्षयकरनेवाला तप, अंगीकार करते थें तो मैं उत्पन्न हुई वेदना क्यों न सहन करूं.

शब्दार्थ

कर्म क० करे म० मुझे अ० आइहुइ जा० यावत् स० सम्यक् प्रकार से स० सहते जा० यावत् अ० अहियासते किं० क्या अ० अन्य क० करे ए० एकान्त मे० मुझे णि० निर्जरा क० करे च० चौथी सु० सुखशैय्या ॥ २६ ॥ च० चार अ० वाचनादेने अयोग्य अ० अविनीत वि० विगय में प० आसक्त अ० क्रोध पा० खुल्ला मा० कपटी च० चार वा० वांचनादेने योग्य वि० विनीत अ० विगय में अनासक्त वि० क्रोध रहित अ० माया रहित ॥ २७ ॥ च० चार पु० पुरुष जात प० कही आ० आत्मंभर [अ-

सूत्र

जाव अहियासेमाणस्स किंमण्णे कज्जइ, एगंतसो मे णिज्जराकज्जइ चउत्था सुहसेज्जा ॥ २६ ॥ चत्तारि अवायणिज्जा प० तं० अविणीए, विगइप्पडिवद्धे, अविउसवियपाहुडे, मायी । चत्तारि वायणिज्जा प० तं० अविणीए, अविगइपडिवद्धे, विउसवियपाडे, अमायी ॥ २७ ॥ चत्तारि पुरिस जाया प० तं० आयंभरे णाममेगे णो परं-

भावार्थ

यदि उत्पन्न हुई वेदना सहन नहीं करुंगातो नये कर्मोकी उपार्जना होगी और सम्यक् प्रकारसे सहन करुंगा तो एकान्त निर्जरा होगी यह चौथी सुखशैय्या ॥ २६ ॥ चार पुरुष वाचनादेने अयोग्य हैं १ अविनीत २ दुग्धादि विगयमें गृद्ध ३ क्रोधी और ४ मायी . चार पुरुष वाचनादेने योग्य हैं विनयवंत, विगयमें अनासक्त, क्रोधरहित और मायाकपट रहित ॥ २७ ॥ चार प्रकारके पुरुष कहे हैं:—१ एक अपनाही कार्य करते हैं परंतु अन्यका कार्य नहीं करते हैं (तीर्थंकर दीक्षालियेबाद मौनरखते हैं) २ एक पुरुष अन्यका

पना कार्य करने वाला] णो० नहीं प० परका कार्य करने वाला प० परका कार्य करने वाला ए० कितनेक णो० नहीं आत्मंभर ४ ॥ २८ ॥ च० चार पु० पुरुष जात दु० दुर्गतिक ए० कितनेक दु० दुर्गतिक दु० दुर्गतिक ए० कितनेक सु० सुगतिक ४ । च० चार पु० पुरुष जात दु० दुर्गतिक ए०

भरे, परंभरे णाममेगे णो आयंभरे, एगे आयंभरेवि परंभरेवि, एगे णो आयंभरे णो परंभरे ॥ २८ ॥ चत्तारि पुरिस जाया प० तं० दुग्गए णाममेगे दुग्गए, दुग्गए णाममेगे सुग्गए, सुग्गए णाममेगे दुग्गए, सुग्गए णाममेगे सुग्गए । चत्तारि पुरिस जाया प० तं० दुग्गए णाममेगे दुव्वए, दुग्गए णामं एगे सुव्वए, सुग्गए णाममेगे दुव्वए, सुग्गए णामं एगे सुव्वए । चत्तारि पुरिस जाया प० तं० दुग्गए णाममेगे दुप्पडि-

कार्य करता है परंतु अपना कार्य नहीं करता है ३ एक अपना कार्यभी करता है और अन्यका कार्यभी करता है, ४ एक नतो अपना कार्य करता है और न अन्यका कार्य करता है ॥ २८ ॥ चार प्रकारके पुरुष कहे हैं:—१ एक पुरुष द्रव्यसे दुर्गत (दरिद्री) और भावसे दुर्गत (उपकारादि रहित) २ एक द्रव्यसे दरिद्री और भावसे उपकारादिगुण सहित ३ एक द्रव्यसे धनवंत और भावसे उपकारादिगुण सहित ३ एक द्रव्यसे धनवंत और भावसे उपकारादिगुण रहित ४ एक द्रव्यसे धनवंत और भावसे उपकारादिगुण सहित ॥ चार प्रकारके पुरुष कहे हैं:—१ एक द्रव्यसे दरिद्री और भावसे खराबव्रत पालनेवाला, २

शब्दार्थ

सूत्र

भावार्थ

कितनेक दु० दुर्गतिक ४ । दु० दुष्प्रत्यानंद सु० सुप्रत्यानंद । दु० दुर्गतिगामी सु० सुगति गामी दु० दुर्गति में गया हुवा सु० सुगति में गया हुवा ॥ २९ ॥ च० चार पु० पुरुष जात त० अंधकार ए० कितनेक त० अंधकार वाले त० अंधकार वाले ए० कितनेक जो० ज्योतिवाले ४ । त० तमबल याणंदे, दुग्गए णाममेगे सुप्पडियाणंदे ४ । चत्तारि पुरिस जाया प० तं० दुग्गए णाममेगे दुग्गइगामी, दुग्गए णाममेगे सुगइगामी ॥ चत्तारि पुरिस जाया प० तं० दुग्गए णाममेगे दुग्गइगए, दुग्गए णाममेगे सुगइगए, ४ ॥ २९ ॥ चत्तारि पुरिस जाया प० तं० तमेणाममेगेतमे, तमेणाममेगे जोई, जोई णाममेगे तमे, जोईणाममेगे जोई । चत्तारि पुरिस जाया प० तं० तमेणाममेगेतमबले, तमेणाममेगेजोइबले,

एक द्रव्यसे दरिद्री और भावसे अच्छे व्रत पालनेवाला, ३ एक द्रव्यसे धनवंत और भावसे खराब व्रत पालनेवाला ४ एक द्रव्यसे धनवंत और भावसे अच्छेव्रत पालनेवाला ॥ चार प्रकारके पुरुष कहे हैं:–१ एक द्रव्यसे दरिद्री और भावसे किया उपकार नहीं जाननेवाला है; यों चार भांगे कहना ॥ चार प्रकारके पुरुष एक द्रव्यसे दरिद्रि और भावसे दुर्गतिगामी यों चार भांगे ॥ २९ ॥ चार प्रकारके पुरुष कहे हैं:–१ एक पहिले अज्ञानी और पीछे भी अज्ञानी २ एक पहिले अज्ञानी था, पीछे ज्ञानी ३ एक पहिले ज्ञानी था, और पीछे अज्ञानी हुवा, ४ एक पहिले ज्ञानी था और पीछे भी ज्ञानी रहा। चार प्रकारके पुरुष कहे:–१. एक पुरुष कर्मसे

शब्दार्थ

जो० ज्योतिबल । त० तमबल प० प्रज्वलन जो० ज्योतिबल प्रज्वलन ४ ॥ ३० ॥ च० चार पु० पुरुष जात प० परिज्ञात कर्म वाले ए० कितनेक णो० नहीं प० परिज्ञात संज्ञावाले ४ । च० चार पु० पुरुष

सूत्र

जोईणाममेगे तमबले, जोईणाममेगे जोईबले ॥ चत्तारि पुरिस जाया प० तं० तमेणाममेगे तमबलपज्जलणे, तमे णाममेगे जोईबलपज्जलणे, ४ ॥ ३० ॥ चत्तारि पुरिस जाया प० तं० परिण्णायकम्मे णाममेगे णो परिण्णायसण्णे, परिण्णायसण्णे णाममेगे णोपरिण्णायकम्मे, एगे परिण्णायकम्मेवि परिण्णायसण्णेवि, एगे णोपरिण्णायकम्मे णोपरिण्णायसण्णे. ॥ चत्तारि पुरिस जाया पण्णत्ता तं० परिण्णायकम्मे णाममेगे णोपरिण्णाय गिहावासे, परि-

भावार्थ

तम और बलमें भी तम अर्थात् पापकर्म करनेकाही बल २ एक ज्योति पुरुष- अच्छे कर्म करनेसे उज्वल स्वभावी तो है परंतु बल तम है अर्थात् क्वचित् चौरादिक कर्म करनेवाला है ३ एक पुरुष कर्म में उज्वल और कुकर्म भी नहीं करनेवाला ४ एक पुरुष कुकर्मी और बलमें भी दीन ॥ और भी चार प्रकारके पुरुष कहे हैं १ एक पुरुष तम (पापी) है और मिथ्यात्व अज्ञान अंधकारादिसे आनंद मानता है २ एक पुरुष पापी तो है परंतु सम्यक्त्व या सूर्यकी ज्योति वगैरह में आनंद मानता है ३ एक ज्ञानी है परंतु अज्ञानमें आनंद मानता है और ४ एक ज्ञानी है और ज्ञानमें आनंद मानता है ॥ ३० ॥ चार प्रकारके पुरुष कहे हैं १ एक पुरुष परिज्ञात कर्मी (ज्ञानपरिज्ञा से आरंभ परिग्रह को खराब जानकर प्रत्याख्यान

शब्दार्थ

जात प० परिज्ञात कर्मी ए० कितनेक णो० नहीं प० परिज्ञात गृहवास च० चार पु० पुरुष जात प० परिज्ञातसंज्ञी ए० कितनेक णो० नहीं प० परिज्ञात गृहवास ४ । ॥ ३१ ॥ च० चार पु० पुरुष जात

सूत्र

ण्णाय गिहावासे णाममेगे णोपरिण्णायकम्मे ४ । चत्तारि पुरिस जाया प० तं० परि-ण्णायसण्णे णाममेगे णो परिण्णाय गिहावासे, परिण्णाय गिहावासे णाममेगे णोपरिण्णाय सण्णे, ॥ ३१ ॥ चत्तारि पुरिस जाया प० तं० इहत्थे णाममेगे णो परत्थे, परत्थे

भावार्थ

परिज्ञासे त्याग करनेवाला) है परंतु अच्छे भाववाला नहीं है नया साधु २ एक अच्छे भाववाला है परंतु परिज्ञात कर्मी नहीं है (श्रावक) ३ एक परिज्ञात कर्मी है और परिज्ञात संज्ञावाला भी है सुसाधु ४ एक परि-ज्ञात कर्मी भी नहीं है और परिज्ञात संज्ञावाला भी नहीं है मिथ्यात्वी । और भी चार प्रकार के पुरुष कहे हैं १ एक आरंभ परिग्रह से निवर्ते हैं परंतु गृहवास से नहीं निवर्ते हैं आनंदादि श्रावकवत् २ एक गृहवास से निवर्ते हैं परंतु आरंभादिक से नहीं निवर्ते हैं तापसादि ३ एक आरंभादिक से निवर्ते हैं और गृहवास से भी निवर्ते हैं सुसाधु ४ एकनतो आरंभादिक से निवर्ते हैं और न गृहवास से निवर्ते हैं असंयति ॥ और भी चार प्रकार के पुरुष कहे हैं:- १ एक अच्छेभाववाले हैं परंतु गृहवास का त्याग नहीं किया है श्रावक २ एक गृहवास के त्याग युक्त है परंतु अंच्छे भाववाले नहीं है द्रव्यलिंगी साधु ३ एक उत्तम गुणयुक्त भी है और गृहवास के त्याग युक्त भी है ४ एक दोनोंगुण युक्त नहीं है ॥ ३१ ॥ चार

शब्दार्थ

इ० इसलोक के अर्थी ए० कितनेक णो० नहीं प० परलोक के अर्थी ४ । च० चार पु० पुरुष जात ए० एक से ए० कितनेक व० बढते हैं ए० एक से हा० क्षीण होते हैं ए० एक से ए० कितनेक व० बढते हैं दो० दोसें हा० क्षीण होते हैं ४ ॥ ३२ ॥ च० चार कं० घोडे आ० आकीर्ण (वेगादिसे)

सूत्र

णाममेगे इहत्थे, ४ । चत्तारि पुरिस जाया प० तं० एगेण णामं एगेवड्ढइ, एगेण-हायइ, एगेणणामं एगेवड्ढइ दोहिं हायइ, दोहिं णाममेगे वड्ढइ एगेण हायइ, दोहिं णाममेगे वड्ढइ दोहिं हायइ ॥ ३२ ॥ चत्तारि कंथका प० तं० आइन्ने णाम-

भावार्थ

प्रकारके पुरुष कहे १ एक ऐहिक सुखके अर्थी है परंतु पारलौकिक सुखके अर्थी नहीं है २ एक पारलौकिक सुखके अर्थी है परंतु ऐहिक सुखके अर्थी नहीं है ३ एक ऐहिक सुखके अर्थी है और पारलौकिक सुखके भी अर्थी है ४ एक ऐहिक और पारलौकिक दोनों सुखके अर्थी नहीं है १ और भी चार प्रकारके पुरुष कहे हैं १ एक ज्ञानसे वृद्धिपाते हैं और सम्यक्त्वसे हीन होते हैं उत्सूत्र प्ररूपनेसे २ कोई ज्ञानसे वृद्धि पाते हैं और समकित व विनयदोनोंसे हीन होते हैं ३ कोई ज्ञान व क्रिया दोसे वृद्धि पाते हैं और समकितसे हीन होते हैं ४ कोई ज्ञान व क्रिया दोनोंसे हीन होते हैं वैसेही सम्यक्त्व व विनयसे भी हीन होते हैं. दूसरा अर्थ—एक ज्ञानसे बढे और मिथ्यात्वरहित होवे २ एक ज्ञानसे बढे और रागद्वेष दोनोंसे हीन होवे ३ एक ज्ञान व संयमसे बढे और मिथ्यात्व रहित होवे ४ एक ज्ञान

शब्दार्थ

ए० कितनेक आ० आकीर्ण [विनयादि गुणों से] आ० आकीर्ण ए० कितनेक ख० वक्र ४ । ए० ऐसे च० चार पु० पुरुष जात आ० आकीर्ण ए० कितनेक आ० आकीर्ण च० चार भांगे च० चार कं० घोडे आ० आकीर्ण ए० कितनेक आ० आकीर्णता से वि० चलता है आ० आकीर्ण ए० कितनेक ख० वक्रता से वि० चलता है ए० ऐसेही च० चार पु० पुरुष जात आ० आकीर्ण आ० आकीर्णता से वि० चलता है च० चतुर्भंग । च० चार कं० घोडे जा० जातिसंपन्न ए० कितनेक णो० नहीं कु० कुल संपन्न ए०

सूत्र

मेगे आइन्ने, आइन्ने णाममेगे खलुंके, खलुंके णाममेगे आइन्ने, खलुंके णाममेगे खलुंके । एवामेव चत्तारि पुरिस जाया प० तं० आइन्ने नाममेगे आइन्ने, चउभंगो । चत्तारि कंथका प० तं० आइन्ननाममेगे आइन्नत्ताए विहरइ, आइन्ने णाममेगे खलुंकत्ताए विहरइ, ४ । एवामेव चत्तारि पुरिस जायाप० तं० आइन्ने नाममेगे आइन्नत्ताए विहरइ चउभंगो ॥ चत्तारि कंथका प० तं० जाइ संपन्ने नाममेगे णोकुलसंपन्ने, ४ । एवा-

भावार्थ

व संयम दोनोंसे बढे और राग व द्वेष दोनोंसे हीन होवे । तीसरा अर्थ—एक क्रोधसे बढे और मायासे हीन होवे २ एक क्रोधसे बढे और माया व लोभ दोनोंसे हीन होवे ३ एक मायालोभ दोनोंसे बढे और क्रोधसे हीन होवे ४ एक क्रोधमान दोनोंसे बढे और माया लोभ दोनोंसे हीन होवे ॥ ३२ ॥ चार प्रकारके घोडे कहे १ एक अश्व पहिले आकीर्ण (वेगादिगुण युक्त) है और पीछेभी आकीर्ण (विनयादिगुण युक्त) है. २ एक

शब्दार्थ

एसेही च० चार पु० पुरुष जा० जाति संपन्न ए० कितनेक च० चतुर्भंग । च० चार कं० घोडे जा० जातिसंपन्न ए० कितनेक णो० नहीं ब० बलसंपन्न ए० ऐसेही च० चार पुरुष जात जा० जातिसंपन्न ए० कितनेक च० चतुर्भंग च० चार कं० घोडे जा० जातिसंपन्न ए० कितनेक णो० नहीं रू० रूपसंपन्न ए० ऐसेही च० चार पु० पुरुष जात जा० जातिसंपन्न ए० कितनेक णो० नहीं रू० रूपसंपन्न । च० चार कं० घोडे जा० जातिसंपन्न ए० कितनेक णो० नहीं ज० जयसंपन्न ए० ऐसेही च० चार पु० पुरुषजात

सूत्र

मेव चत्तारि पुरिस जाया प० तं० जाइसंपन्ने णामं एगे, चउभंगो । चत्तारि कंथगा प० तं० जाइसंपन्ने णाममेगे णो बलसंपन्ने, ४ । एवामेव चत्तारि पुरिस जाया प० तं० जाइसंपन्ने णाममेगे चउभंगो ॥ चत्तारि कंथगा प० तं० जाइसंपन्ने नाममेगे णो रूवसंपन्ने, ४ । एवामेव चत्तारि पुरिस जाया प० तं० जाइसंपन्ने नाममेगे णो

भावार्थ

अश्व पहिले आकीर्ण होता है और पीछे खलुंक (वेगादिगुण रहित) बनजाता है २ एक पहिले खलुंक और पीछे आकीर्ण ४ एक पहिले भी खलुंक और पीछे भी खलुंक होता है । ऐसेही चार प्रकारके पुरुष कहे हैं:- एक पुरुष पहिले विनयादिगुण युक्त और पीछे भी विनयादि युक्त है ऐसे चार भांगे जानना । और चार प्रकारके घोडे कहे हैं:- १ एक घोडा जातिवंत है और अच्छी तरह चलता है २ एक जातिवंत है परंतु अविनीत जैसे वक्र चालसे चलता है ३ एक जातिवंत नहीं है परंतु अच्छी चालसे चलता है ४

जा० जातिसंपन्न ए० ऐसेही कु० कुलसंपन्न ब० बलसंपन्न ४ कु० कुलसंपन्न रू० रूपसंपन्न ४ कु० कुल संपन्न ज० जयसंपन्न ए० ऐसेही ब० बल सं० संपन्न रू० रूपसंपन्न ब० बलसंपन्न ज० जयसंपन्न स० रूवसंपन्ने. । चत्तारि कंथगा प० तं० जाइसंपन्ने णाममेगे णो जयसंपन्ने, ४ । एवा मेव चत्तारि पुरिसजाया प० तं० जाइसंपन्ने ४ । एवं कुलसंपन्नेणयबलसंपन्नेणय, ४। कुलसंपन्नेणय रूवसंपन्नेणय ४ ।कुलसंपन्नेणय जयसंपन्नेणय ४ । एवं बलसंपन्नेणय रूवसं-

एक जातिवंत भी नहीं है और अच्छी चालसे चलता भी नहीं है इसी तरह चार प्रकारके पुरुष कहे हैं एक पुरुष जातिवंत है और विनयादिगुण युक्त चलता है ४ । और भी चार प्रकारके घोडे कहे हैं १. एक घोडेकी जाति अच्छी है परंतु कुल अच्छा नहीं है २ एक का कुल अच्छा है परंतु जाति अच्छी नहीं है ३ एक का कुल अच्छा है और जाति भी अच्छी है ४ एक की जाति भी अच्छी नहीं है और कुल भी अच्छा नहीं है. ऐसेही चार प्रकारके पुरुष कहे हैं:-एक जाति संपन्न है परंतु कुल संपन्न नहीं है ऐसे चार भांगे जानना । और भी चार प्रकारके घोडे कहे हैं एक जाति संपन्न है परंतु बल संपन्न नहीं है ४ ऐसेही चार प्रकारके पुरुष एक जातिवंत है परंतु बलवन्त नहीं है यों चार भांगे । और भी चार प्रकारके घोडे कहे हैं:-एक जाति संपन्न है परंतु रूप संपन्न नहीं है ४ । ऐसे चार प्रकारके पुरुषः- एक पुरुष जाति संपन्न है परंतु रूप संपन्न नहीं है अर्थात्कुरूप है यों चार भांगे । और चार प्रकारके घोडे कहेः- एक

शब्दार्थ

सर्व पु० पुरुषजात प० कहना च० चार कं० घोडे रू० रूपसंपन्न ए० कितनेक णो० नहीं ज० जयसंपन्न ए० ऐसेही च० चार पु० पुरुषजाति ॥ ३३ ॥ च० चार पु० पुरुषजात प० कही सी० सिंहपनेसे ए० कितनेक नि० नीकलते हैं सी० सिंहपने से वि० विचरते हैं सी० सिंहपने से ए० कितनेक णि० नीकलते हैं सि० शृगालपने से वि० विचरते हैं सि० शृगालपने से ए० कितनेक नि० नीकलते हैं सी० सि-

सूत्र

पन्नेणय, ४ । बलसंपन्नेणय जयसंपन्नेणय, ४ । सव्वत्थ पुरिस जाया पडिवक्खो । चत्तारि कंथगा प० तं० रूवसंपन्ने णाममेगे णोजयसंपन्ने, ४ । एवामेव चत्तारि पुरिस०॥३३॥ चत्तारि पुरिस जाया प० तं० सीहत्ताए णाममेगे निक्खंति सीहत्ताए विहरइ, सीहत्ताए णाममेगे णिक्खंति सियालत्ताए विहरइ, सियालत्ताएणाममेगे निक्खंति सी-

भावार्थ

जाति संपन्न है परंतु जय संपन्न नहीं है अर्थात् संग्रामादिमें जय नहीं प्राप्त कर सकता है ४ ऐसेही चार प्रकारके पुरुष कहे हैं एक जातिवंत है परंतु जय नहीं प्राप्त कर सकता है यों चार भांगे कहना. पहिले जैसे भांगे कहे वैसेही घोडे व पुरुष पर कुल व बल, कुल व रूप, कुल व जय, बल व रूप, बल व जय और रूप व जयके चार २ भांगे जानना ॥३३॥ चार प्रकारके पुरुष कहे १ एक पुरुष सिंह की तरह दीक्षा ग्रहण करतेहैं और सिंहकी तरह पालतेहैं धन्ना अणगारवत् २ एक सिंहकी तरह दीक्षा ग्रहण करते हैं और शृगालवत् पालतेहैं कुंडरिकवत् ३ एक शृगालवत् दीक्षा ग्रहण करते है और सिंह समान पालते हैं मेतारजऋषिवत् ४ एक शृगालवत्

हपने से वि० विचरते हैं सि० शृगालपने से ए० कितनेक नि० निकलते हैं वि० शृगालपने से वि० विचरते हैं ॥ ३४ ॥ च० चार लो० लोक में स० बराबर अ० अप्रतिष्ठान नरक जं० जम्बूद्वीप पा० पालक विमान स० सर्वार्थसिद्ध वि० विमान च० चार लो० लोक में स० सरिखे मा० समान बाजु वाले स० समान प्रतिदिशि वाले सी० सीमंत नरक स० समय क्षेत्र उ० उडुविमान इ० इषत्प्राग्भार पु० पृथ्वी ॥ ३५ ॥

हत्ताए विहरइ, सियालत्ताए णाममेगे निक्खंति सियालत्ताए विहरइ ॥ ३४ ॥ चत्तारि लोगे समा प० तं० अपइट्ठाणे णरए, जंबूदीवेदीवे, पालएजाणविमाणे, सव्वट्ठासेद्धे महा विमाणे, । चत्तारि लोगे समा सपक्खिं सपडिदिसिं प० तं० सीमंतए णरए, समयखेत्ते, उडुविमाणे, इसिंपब्भारापुढवी ॥ ३५ ॥ उड्ढलोएणं चत्तारि विस-

दीक्षा ग्रहण करते हैं और शृगालवत् पालते हैं सोमाचार्यवत् ॥ ३४ ॥ इस लोकमें चार स्थान एक सरिखे कहे हैं १ (सातवी नरकका) अप्रतिष्ठान नामक नरकावासा, २ जम्बूद्वीप नामकद्वीप, ३ सौधर्मेन्द्रका जाने आनेका पालक नामक विमान, और ४ सर्वार्थ सिद्ध नामक अनुत्तर विमान । चार पदार्थ लोकमें लम्बाई चौडाईमें एक सरिखे, वर्तुलाकार, एक एक की उपर, इस तरह रहे हुवे हैं १ प्रथम नरक का सीमंतक नामक नरकावासा २ अढाइ द्वीप सो समय क्षेत्र ३ सौधर्म देवलोकके प्रथम प्रतरमें उडुनामक विमान ४ और ईषत् प्राग्भार नामक पृथ्वी । ये चारों ४५ लक्षयोजनके लम्बे पहोले हैं ॥३५॥ ऊर्ध्व अधो व तिर्यकलोकमें

शब्दार्थ

उ० ऊर्ध्वलोक में च० चार वि० दो शरीरी पु० पृथ्वी कायिक आ० अप् व० वनस्पति उ० औदारिक त्रस प्राणी अ० अधोलोक में च० चार वि० दोशरीरी ए० ऐसेही ति० तिर्यक् लोक में ॥ ३६ ॥ च० चार पु० पुरुष जात हि० ह्रीसत्व हि० ह्रीमनःसत्व च० चलसत्व थि० स्थिरसत्व ॥ ३७ ॥ च०

सूत्र

रीरा प० तं० पुढविकाइया, आउ, वणस्सइ, उरालतसपणा । अहेलोगेणं चत्तारि विसरीरा प० एवंचेव तिरिय लोएवि ॥ ३६ ॥ चत्तारि पुरिसजाया प० तं० हिरिसत्ते, हिरिमणसत्ते, चलसत्ते, थिरसत्ते ॥ ३७ ॥ चत्तारि सेज्जपडिमाओ पण्णत्ताओ, चत्तारि

भावार्थ

चार को दो शरीर कहे हैं पृथ्वीकाय, अप्काय, वनस्पति काय, और त्रसकाय ॥ ३६ ॥ चार प्रकारके पुरुष कहे हैं १ एक पुरुष लज्जासे सत्व रखते हैं-परिषहादि सहन करते हैं, व संग्रमादि करते हैं २ एक लज्जामनःसत्ववाला है अर्थात् परिषह उत्पन्न होनेपर सहन करते हैं ३ एक चलसत्ववाला है परिषह उत्पन्नहोते प्रथम चलित होता है पुनः दृढ बनजाता है ४ और एक स्थिर सत्ववाला है परीषहादिमें स्थिर रहे ॥ ३७ ॥ सत्ववंत पुरुषको चार शैया ग्रहण करनेकी पडिमाओ चार वस्त्रपडिमाओ, चार पात्र की

---

१ ह्रिया लज्जया सत्वं परीषहादिसहने अवष्टम्भो यस्य स ह्रीसत्वः २ ह्रिया हसिष्यंति मामुत्तमकुलजातं जना इति लज्जया मनस्येव सत्वं यस्य स ह्रीमनःसत्वः ३ चलमस्थिरं परीषहादिसम्पाते सत्वं यस्य स चलसत्वः ४ तद्विपर्ययात्स्थिरसत्व इति स्थिरसत्वः ।

१ जिसभवमें जो शरीर होवेसो एक शरीर, और वहांसे चवकर मनुष्यभवमें आकर मोक्षमें जावे उसे दसरा शरीर कहागया है.

शब्दार्थ

चार से० शैय्या प्रतिज्ञा प० प्ररूपी च० चार व० वस्त्र प्रतिज्ञा प० प्ररूपी च० चार पा० पात्र प्रतिज्ञा प० प्ररूपी ठा० स्थानक प० प्रतिज्ञा प० प्ररूपी ॥ ३८ ॥ च० चार स० शरीर वाले जी० जीव फु० स्पर्शे हुवे वे० वैक्रेय आ० आहारक ते० तेजस क० कार्माण च० चार स० शरीर वाले क० कार्माण मीश्र ओ० उदारिक वे० वैक्रेय आ० आहारक ते० तेजस ॥ ३९ ॥ च० चार अ० आस्तिकायसे लो० लोक फु० स्पर्शाया हुवा ध० धर्मास्तिकाया से अ० अधर्मास्तिकाया से जी० जीवास्ति काया से पु० पुद्गलास्तिकायासे च० चार बा० बादर काया से उ० उत्पन्न होते लो० लोक फु० स्पर्शाया हुवा पु० पृथ्वीकाय

सूत्र

वत्थपडिमाओ पण्णत्ताओ, चत्तारि पायपडिमाओ पण्णत्ताओ, चत्तारि ट्ठाणपडिमा॥ ३८॥

चत्तारि सरीरगा जीवफुड़ा प० तं० वेउव्विए, आहारगे, तेयए, कम्मए। चत्तारि सरीरगा कंमुम्मीसगा प० तं० ओरालिए, वेउव्विए, आहारए, तेयए ॥ ३९ ॥

चउहिं अत्थिगाएहिं लोगे फुड़े प० तं० धम्मत्थिकाएणं, अधम्मात्थिकाएणं, जीवत्थि-

भा वार्थ

पडिमाओ, और चार कायोत्सर्ग करनेकी पडिमाओ कही ॥ ३८ ॥ चार शरीर को जीव स्पर्शते हैं वैक्रेय, आहारक, तेजस और कार्माण. चार शरीर कार्माण शरीर मिश्रित हैं उदारिक, वैक्रेय, आहारक और तेजस॥ ३९॥सम्पूर्ण लोकको चार अस्तिकाय स्पर्शकर रही है:—धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय, जीवास्तिकाय, और पुद्गलास्तिकाय. उत्पन्नहोती (अपर्याप्त अवस्थावाली) चार बादरकाया लोकको स्पर्शकर रही है पृथ्वी

शब्दार्थ

आ० अपकाय वा० वायु व० वनस्पति काय च० चार प० प्रदेश तु० तुल्य ध० धर्मास्तिकाय के अ० अधर्मास्ति लो० लोकाकाश के ए० एक जी० जीव के च० चार ए० एक णो० नहीं सु० दृष्टिगोचर पु० पृथ्वी काय का० आ० अप् ते० तेउ व० वनस्पतिकाय का ॥ ४० ॥ च० चार इ० इन्द्रियों के अर्थ पु० स्पर्शाये हुवे वे० वेदते हैं सो० श्रोतेन्द्रिय का अर्थ घा० घ्राणेन्द्रिय का अर्थ जि० जिव्हेन्द्रिय का अर्थ फा० स्पर्शेन्द्रिय का अर्थ ॥ ४१ ॥ च० चार ठा० कारन से जी० जीव पो० पुद्गल णो० नहीं

सूत्र

काएणं, पोग्गलत्थिकाएणं। चउहिं वायरकाएहिं उववज्जमाणेहिं लोगे फुडे प० तं० पुढविकाइएहिं, आउकायवाउवणस्सइकाएहिं। चत्तारि पएसग्गेणं तुल्ला प० तं० धम्मत्थिकाए, अधम्मत्थिकाए, लोगागासे, एगेजीवे। चउण्ह मेगसरीरं नोसुपस्सं भवइ तं० पुढवि काइयाणं आउतेउवणस्सइकाइयाणं ॥ ४० ॥ चत्तारि इंदियत्था पुट्ठा वेदेंति तं० सोइंदियत्थे, घाणिंदियत्थे, जिब्भिंदियत्थे, फासिंदियत्थे, ॥ ४१ ॥ चउहिं ठाणेहिं

भावार्थ

काय, अपकाय, वायुकाय और वनस्पति काय. चार द्रव्य प्रदेशसे सरिखे कहे हैं:-धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय, लोकाकाश और एक जीवके प्रदेश. चार कायके एक शरीर अत्यंत सूक्ष्महोनेसे दृष्टिसे नहीं दीखते हैं पृथ्वीकाय, अपकाय, तेउकाय और साधारण वनस्पति ॥ ४० ॥ चार इन्द्रियों विषयको स्पर्श कर

१ केवली समुद्घात करते एक जीवके प्रदेश संपूर्ण लोकमें व्याप्त होजाते हैं.

शब्दार्थ

सं० समर्थ है ब० बाहिर लो० लोकके अंत ग० जाने को ग० गतिका अ० अभाव से नि० निरुपग्रहता से लु० रुक्षता से लो० लोकानुभाव से ॥ ४२ ॥ च० चार प्रकार के णा० न्याय आ० आहरण आ० आहरण तद्देश आ० आहरण तद्दोष उ० उपपन्नसोपनय आ० आहरण च० चार प्रकार के अ० अपाय उ० उपाय, ठ० स्थापना कर्म प० प्रत्युत्पन्नविनाशी आ० आहरणतद्देश च० चार प्रकार के अ०

सूत्र

जीवा य पोग्गला य णो संचाएइ बहिया लोगंतागमणयाए तं० गइअभावेणं, निरुवग्गहयाए, लुक्खत्ताए, लोगाणुभावेणं ॥ ४२ ॥ चउव्विहे णाए प० तं० आहरणे, आहरणतद्देसे, आहरणतद्दोसे, उवन्नासोवणए । आहरणे चउव्विहे प० तं० अवाए, उवाए, ठवणाकम्मे, पडुपन्नविणासी । आहरणतद्देसे चउव्विहे प० तं० अ-

भावार्थ

वेदती हैं श्रोतेन्द्रिय घ्राणेन्द्रिय, जिव्हेन्द्रिय, और स्पर्शेन्द्रिय. चक्षुइन्द्रिय पदार्थोंको दूरसेही ग्रहण करती है इसलिये यहांपर उसका ग्रहण नहीं किया गया है ॥ ४१ ॥ चार कारनसे जीव तथा पुद्गल लोककी बाहिर अलोकमें जानेको समर्थ नहोवे १. गतिके अभावसे (इन दोनोंकी गति लोकान्त तक होती है जैसे दीपककी गति शिखाके नीचे रहती है.) २ धर्मास्तिकायाके बलका अभावसे जैसे पानी बिना मच्छ नहीं चलता है ३ रुक्षपनासे. जीव पुद्गलोंमें आगे बढनेकी शक्ति जो चिक्कनाइ है सो लोकके

१. धर्मास्तिकाय का अभाव से.

अनुशिष्ट उ० उपालंभ पु० पृच्छा णि० निश्रावचन आ० आहरण तद्दोष च० चार प्रकार के अ० अधर्म

णुसट्ठे, उवालंभे, पुच्छा, णिस्सावयणे। आहरणतद्दोसे चउव्विहे प० तं० अधम्म-

अंतमें पूर्ण होजाती है और जीव पुद्गल रूक्ष होजाते हैं जिससे आगे नहीं बढ सकते हैं ४ लोककी मर्यादासे भी अलोकमें जीव पुद्गल नहीं जा सकते हैं सूर्य मंडलवत् ॥ ४२ ॥ जिससे वस्तुका स्वरूप समजनेमें आवे उसे न्याय कहते हैं इसके चार भेद कहे है १ आहरण सो अप्रसिद्ध अर्थकी प्रतीती करना जैसे पाप दुःखरूप है ब्रह्मदत्तवत्, आहरणतदेश सो एक देशीय दृष्टांत चंद्रवन्मुखं २ आहरण तद्दोष यह दृष्टांत असत्य होता है—जैसे किसी ईश्वरादिने जगतकी घटना की घटपटादिवत् यह सदोष दृष्टांत है क्योंकि जगत शाश्वता है और किसीने इसे नहीं बनाया है. उपन्यासोउपनय वादीका दृष्टांत साधनेके लिये वस्तूकी स्थापना करे जैसे किसीने कहा आत्मा कर्मका कर्ता नहीं है अरूपी होनेसे आकाशवत्.

नोटः—दृष्टांत दोप्रकारकेः-१साधर्मिक जैसे धूम होनेसे यहां अग्निहै २वैधर्मिक दृष्टांत धूम नहीं होनेसे अग्नि नहीं है जलाशयवत् कथनरूप दृष्टांतके दोभेद चरित जैसे नियाणा दुःखका कारण है ब्रह्मदत्तवत् और कल्पित सो प्रमादियोंका यौवन अनित्य है अथवा उपमान जैसे इसके हस्त कुंपल जैसे सुकोमल है अथवा ज्ञानका हेतु यह है कि जैसे किसीने प्रश्नकिया कि इस वस्तु क्यों मोल लेते हो ? उत्तर यह दियाकि क्या मुफ्त मिलती है ?

युक्त प० प्रतिलोम अ० आत्मोपनीक दु० दूरोपनीक उ० उपपन्नासोपनय च० चार प्रकार का त०

जुत्ते, पडिलोमे, अत्तोवणीए, दुरोवणीए । उवण्णासोवणए चउव्विहे प० तं०

उसका उत्तर-यदि आत्मा आकाशवत् है तो उसकी तरह सुख दुःख भोगनेवाला आत्मा नहीं होना चाहिये आहरणके चार भेद १ अपाय अनर्थ सो द्रव्य क्षेत्र काल व भावसे चार प्रकारका है. द्रव्यसे अपाय मत्स्य विदारते द्रव्य नीकला जिससे बहिन व माता मरण शरण हुएं. २ क्षेत्रापाय सो सर्पवालागृह या संक्लिष्ट स्थानक ३ काल सो भद्रासहित दिन ४ भावापाय सो क्रोध युक्त देडकी विराधक साधु हुइ. २ उपाय आहरणके चार भेद द्रव्यसे धातुर्वादके उपायसे द्रव्य उत्पन्न करना २ क्षेत्रसे कृषिकर्म करके द्रव्य उत्पन्न करना २ कालोपाय सो सुभिक्षादिज्ञान और भावोपाय बृहत् कुमारीकी कथासे अभयकुमारने चोर को पहिचाने ३ स्थापना कर्म अन्यमत को दूषित कर अपने मन की स्थापना करनी सो ४ प्रत्युत्पन्नविनाशी सो उत्पन्न होते विनाश करना जैसे एक शाहूकारने अपनी पुत्री के शील रक्षणार्थ राजा के गृह नाटक देखने को नहीं भेजी परंतु अपने घर उत्सव कर के वहां रखी. ऐसेही गुरु शिष्यों के अवगुण की उत्पत्ति से अटकावे ॥ आहरणेतद्देशे के चार भेद अनुसिद्ध-रहे हुवे वर्तमान गुणों की प्रशंसा करना जैसे सुभद्र के शील की प्रशंसा की २ उपालब्ध किया हुवा अपराध केलिये उपालंभ (ठपका) देना जैसे चंदन बालाने मृगावतीको उपालंभ दिया ३ पृच्छा प्रश्नफछना कोणिक राजाने भगवंत महावीरसे प्रश्नोंकी पृच्छा की कि हे

शब्दार्थ तद्वस्तुक त० तदन्य वस्तुक प० प्रतिनिभ हे० हेतु ॥ ४३ ॥ च० चार प्रकार के हे० हेतु या० यापक

सूत्र तव्वत्थुए, तदन्नवत्थुए, पडिणिभे, हेऊ ॥ ४३ ॥ चउव्विहे हेऊ प० तं० जावए,

भावार्थ पूज्य भगवंत ! चक्रवर्ती भोगका त्याग नकरे तो कहां जावे ? मरकर सातवी नरकमें जावे. तब कोणिकने फीर प्रश्न पूछा कि मै कहां जाऊंगा ? छठी नरक में. फीर प्रश्नपूछा कि क्या मैं चक्रवर्ती नहीं हूं ? नहीं. क्योंकि चक्रादि रत्न तेरी पास नहीं है. इतना सुन कृत्रिम रत्नों बनाकर खंड साधने को गया, और कृतमाल देवने गुफाके बाहिर जलाकर भस्मकर दिया. वहां मरकर छट्ठी नरकमें गया ४ निश्रावनः—एक की अपेक्षासे अन्यको प्रतिबोध करना जैसे क्रोधी शिष्य का क्रोधकी शान्तिके लिये क्षमावंतका गुणग्राम करे। आहरण तदोषके चार भेद कहे हैं १ अधम्मजुत्ते जिस दृष्टांत सुननेसे अधर्मबुद्धि उत्पन्न होवे जैसे नलदामा कोलीके बच्चेको मकोडेने काटा इससे उसने उसके बिलमें ऊष्णपानी डाला ऐसा सुन अन्यको भीवैसी बुद्धि उत्पन्न होवे २ प्रतिलोम-मूर्खको मूर्खकी रीतिसे समझाना जैसे अभयकुमार चंद्रप्रद्योतनराजाको बांधकर लाया. ३ अत्तोवणीए-अपना मत दुष्टपनासे स्थापन करना जैसे जीवको मारना नहीं परंतु पापीको मारना और दूरोवणीए-दुष्टभाव प्रगट होवे जैसे किसीने परिव्राजक को मच्छि पकडता देखकर पूछा कि यह किसलिये ? मद्यसाथ खानेके लिये. क्या मद्यपीतेहो ? हां वैसी संगति होनेसे. उपन्यासोपनयके चार भेदः—तव्वत्थु जैसी वस्तु वैसाही दृष्टांत जैसे किसीने कहा कि समुद्र किनारे एक वृक्ष है उसकी शाखा जलस्थल पर

था० स्थापक वं० वंशक लू० लुष्यक अ० अथवा हे० हेतु च० चार प्रकार के प० प्रत्यक्ष अ० अनुमान उ० उपमा आ० आगम अ० अथवा हे० हेतु च० चार प्रकार के अ० अस्तित्व अ० अस्ति सो० वह

थावए, वंसए, लूसए. । अहवा हेऊ चउव्विहे प० तं० पच्चक्खे, अणुमाणे, उवमे,

रही हुई है. उसके जो २ पत्र पानीमें गिरते हैं उसके जलचर होते हैं और जमीनपर पडते हैं उनके स्थलचर बनते हैं. उसका खंडन करते हैं. जो दोनोंके बिचमें पडतेहैं उसका क्या होता है? २ तदन्नवत्थुए अन्यवस्तु का दृष्टांत देकर असत्य ठहराना. जैसे उक्त वृक्षके पत्रोंका जलचर स्थलचर जीवों होते हैं तो मनुष्य आश्रित रही हुई यूकादि मनुष्य क्यों नहीं होती हैं ३ पडिनिभे सदृश वस्तुका दृष्टांत देना-जैसे कोई तापस बोला कि यदि कोई मुझे नहीं सुनी कथा सुनावेतो मैं एक लक्ष मूल्यका सुवर्ण कटोरा देऊं. तब एक सिद्धपुत्रने कहा कि तुम्हारे पिताकी पास मेरी एक लक्ष रूपयेकी थापन है. यदि इस बातको सुनी होवे तो एक लक्ष रुपयेकी थापन देवो! यदि न सुनी होवे तो सुवर्णकटोरा देवो. यों सुन वह मौन रहा. और हेतु-सो हेतुसे उत्तर देवे. अहो साधु क्षमा, संयम, तप, ब्रह्मचर्यादि कष्ट क्यौं सहन करतेहो? साधुने उत्तर दीया कि ऐसे किये विना मुक्ति नहीं मिल सकती है. यह चार न्यायके सोलह भेद हुवे. ॥ ४३ ॥ साध्य को सिद्ध करेसो हेतु. इसके चार भेद कहे हैं. काल व्यतीत कराना सो थापक हेतु कहते हैं जैसे किसी व्यभीचारिणी स्त्रीने अपना कार्य साधनेको पतिसे कहा कि उज्जयनीमें जावो वहां ऊंटके लींडे रूपे रास बिकेंगे यों काल व्यतीत किया २ जो अपना मत स्थापन करे उसे स्थापक हेतु कहते है ३ अन्यको

हे० हेतु अ० अस्तित्व ण० नहीं है सो० हेतु ण० नहीं है अ० है सो० वह हे० हेतु न० नहीं है ण०
आगमे, । अहव हेउ चउव्विहे प० तं० अत्थितं अत्थि सो हेऊ, अत्थितं णत्थि सो हेऊ,

व्यामोह उत्पन्न करे सो वंचए. जैसे कोई गाडेवालेको मार्गमें मरा हुवा तीतर मिला, उसे गाडेको बांधकर शहर में आया, वहां धूर्त मीला उसने पूछा कि इस शकट तीतरी का क्या मूल्य लेता है? उसने कहा तरपण लोढी. उस समय लोगों को साक्षी रखकर उसकी पास से शकट व तीतरी दोनों छीनली, और गाडेवाला खेदित हुवा ४ लूसए-जिसने अपने को ठगा होवे उसे ठगना सो लूसक कहा जाता है. जैसे उक्त प्रकार से ठगाया हुवा गाडेवाला फीरता २ किसीधूर्त से मीला और सब हाल उसे निवेदन किया. वह धूर्त उसके घर जाकर कहने लगा कि तरपण लोढी लाओ. उसने अपनी स्त्रीसे कहाकि इसे सत्तुपानी घोलकर देदो. जब स्त्री सत्तुपानी घोलनेलगी तब इस धूर्तने उसका हाथपकडा. प्रथम धूर्तबोलाकि यह क्या? दूसरेने उत्तर दिया कि यह सत्तुहलानेवाली स्त्री है उसे मैं लेजाऊंगा. प्रथम ठगने गाडी पीछी दे दी। और भी हेतु चार प्रकार के १ प्रत्यक्ष हेतु ज्ञान व चक्षुसे प्रत्यक्ष दीखने में आवे सो, २ अनुमान धूम्रदेख अग्नि कहना, ३ उपमा प्रमाण स्त्री के मुख को चंद्रमा उपमा देवे और ४ आगम प्रमाण आप्त सो तीर्थंकर वचन। और भी चार प्रकार के हेतु कहे हैं. यदि धूमादि है तो अग्नि है सो अस्तित्वास्तित्व हेतु २ अग्नि है परंतु शीत नहीं है सो अस्तित्वनास्तित्व हेतु ३ अग्नि शीत नहीं है परंतु शीत काल में शीत है सो नास्तित्व अस्तित्व हेतु ४ अग्नि में धूम्र नहीं है और धूम्र नहीं होने से काष्ठादि भी नहीं हैं सो नास्तित्व नास्तित्व हेतु ॥४४॥ चार प्रकार की संख्या कही १ सूत्र परिकर्म संकलादि गणित २ व्यवहार गणित ३ रज्जुगणित

शब्दार्थ

नहीं सो० हेतु ॥ ४४ ॥ च० चार प्रकार के सं० गणित प० प्रतिकर्म व० व्यवहार र० क्षेत्रगणित रा० राशि ॥ ४५ ॥ अ० अधोलोक में च० चार अं० अंधकार क० करते हैं ण० नरक णे० नारकी पा० पापकर्म अ० अशुभ पुद्गलों ति० तिर्यक् लोक में च० चार उ० उद्योत क० करते हैं चं० चंद्र सू० सूर्य म० मणि जो० द्युति उ० ऊर्ध्वलोक में च० चार उ० उद्योत क० करते हैं दे० देव दे० देवियों वि० विमान आ० आभरण ॥ ४६ ॥ * * *

सूत्र

णत्थितं अत्थि सो हेऊ, णत्थितं णत्थिसोहेऊ ॥ ४४ ॥ चउव्विहे संखाणे प० तं० पडिकम्मे, ववहारे, रज्जु, रासी ॥ ४५ ॥ अहो लोगेणं चत्तारि अंधकारं करेंति तं० णरगा, णेरइया, पावाइं कम्माइं, असुभा पोग्गला । तिरिक्ख लोगेणं चत्तारि उज्जोयं करेंति तं० चंदा, सूरा, मणी, जोती, । उड्ढलोगेणं चत्तारि उज्जोयं करेंति तं० देवा, देवीओ, विमाणा, आभरणा ॥ ४६ ॥ चउट्ठाणस्स तइओद्देसो सम्मत्तो *

भावार्थ

अर्थात् क्षेत्र गणित, और राशि गणित त्रिराशिक पंचराशिक ॥ ४५ ॥ अधोलोक में चार वस्तु अंधकार करती है नरक, नारकी, पापकर्म और अशुभपुद्गल. तिर्च्छालोक में चार वस्तु उद्योत करती है चंद्र, सूर्य मणि और ज्योति. ऊर्ध्वलोक में चार वस्तु उद्योत करती है देव, देवी, विमान और आभरण ॥ ४६ ॥ यह चौथे ठानेका तीसरा उद्देशा समाप्त हुवा इस के अंतमें देवो का वर्णन किया है. वैसा दैवी सुख प्रसर्पक-सदुद्यम कर के प्राप्त होता है इसलिये आगे उद्देशा के प्रारंभ में प्रसर्पक का कथन करते हैं.

शब्दार्थ

च० चार प० प्रसर्पक अ० अनुत्पन्न भो० भोगों को उ० उत्पन्न करने केलिये ए० कितनेक प० प्रयत्न करते हैं पु० पाहिले उ० उत्पन्न हुवे भो० भोगों का अ० आवियोग से ए० एक प० प्रसर्पक अ० अनुत्पन्न सो० सुख को उ० प्राप्त करने केलिये ए० एक प० प्रसर्पक पु० पूर्व उ० उत्पन्न सु० सुख के अ० अवियोग से ए० एक प० प्रसर्पक ॥ १ ॥ ने० नारकी को च० चार प्रकार का आ० आहार इ० अंगार जैसा मु० मुरमुरे जैसा सी० शीतल हि० हिमजैसा सी० शीतल. ति० तिर्यंचयोनिवालेको च० चार प्रकारके

सूत्र

चत्तारि पसप्पगा प० तं० अणुप्पन्नाणं भोगाणं उप्पायत्ता एगे पसप्पए, पुव्वुप्पन्नाणं भोगाणं अविप्पओगेणं एगे पसप्पए, अणुप्पण्णाणं सोक्खाणं उप्पाइत्ता एगे पसप्पए, पुव्वुप्पन्नाणं सुक्खाणं अविप्पओगेणं एगे पसप्पए ॥ १ ॥ णेरइयाणं चउविहे आहारे प० तं० इंगालोवमे, मुम्मुरोवमे, सीयले, हिमसीयले । तिरिक्ख जोणि-

भावार्थ

चार प्रकार के प्रसर्पक कहे १ अनुत्पन्न भोग (स्त्रियादि) की प्राप्ति केलिये उद्यम करना २ प्राप्त भोगों को रखने केलिये उद्यम करना ३ अनुत्पन्न सुख की प्राप्ति केलिये उद्यम करना ४ प्राप्त सुख की रक्षा केलिये उद्यम करना ॥ १ ॥ उपर्युक्त कर्म करने वाले नरक में जाते हैं. वे नारकी के जीव चार प्रकार का आहार करते हैं १ अग्नि सरिखे २ मुरमुरोपम. (मोमर जैसा) ३ शीतल और ४ हिमशीतल वरफ जैसा

१. भोगादि सुख की प्राप्तिकेलिये उद्यम करना उसे प्रसर्पक कहते हैं.

शब्दार्थ

आ० आहार कं० कंकपक्षी आहार जैसा वि० विलमें प्रवेशकरनेवाले सर्प जैसा पा० हाथी कमांसजैसा पु० पुत्रके मांसजैसा म०मनुष्यको च० चार प्रकार आ० आहार अ० अशन पा० पान खा० खादिम सा० स्वादिम दे० देवों को च० चार प्रकारका आ० आहार व० वर्णवाला गं० गंधवाला र० रसवाला फा० स्पर्शवाला ॥ २ ॥ च० चार जा० स्वभावसे आ० विष वि० वृश्चिकजातिका आ० विष मं० मेंडुकजातिका आ० विष उ० सर्पाजातिका आ०विष म० मनुष्य जातिका आ० विष वि० वृश्चिक जाति

सूत्र

याणं चउव्विहे आहारे प० तं० कंकोवमे, विलोवमे, पाणमंसोवमे, पुत्तमंसोवमे । मणुस्साणं चउव्विहे आहारे प० तं० असणे, पाणे, खाइमे, साइमे । देवाणं चउव्विहे आहारे प० तं० वण्णमंते, गंधमंते, रसमंते, फासमंते ॥ २ ॥ चत्तारि जाइ आसीविसा प० तं० विच्छुयजाइ आसीविसे, मंडुक्कजाइ आसीविसे, उरगजाइ आसीविसे,

भावार्थ

ठंडा. तिर्यंच को चार प्रकार का आहार कहा १ कंकपक्षी जैसा २ विल में प्रवेश करने वाला द्रव्य समान ३ प्राणमंसोवम [हाथी के मांस समान] और ४ पुत्र के मांस समान. मनुष्य को चार प्रकार का आहार कहा अशन, पान, खादिम, स्वादिम. देवता को चार प्रकारका आहार शुभ वर्ण, गंध, रस, व स्पर्श वाला आहार ॥ २ ॥ चार प्रकार के स्वाभाविक आशीविष कहे १ वृश्चिक का, मेडक का, सर्प का, और मनुष्य का. इस में से वृश्चिक को पुंछ में विष रहता है, और अन्यतीनों को मुख में रहता है। अहो

शब्दार्थ

का आ० विषय भं० पूज्य के० कितना वि० विषय प० समर्थ वि० वृश्चिकजातिका विष अ० अर्धभरतप्रमाण बों० शरीर का विषसे वि० विषपरिणत वि० विस्तृत क० करने को वि० विषय से० उसको वि० विस्तृत नो० नहीं सं० संपत्तिसे क० किया, क० करते हैं क० करेंगे मं० मंडुकजातिके विषकी पु० पृच्छा प० समर्थ म० मंडुकजातिका विष भ० भरत प्रमाण बों० शरीरका विषसे वि० विषय से० शेष तं० वैसे जा० यावत् क० करेंगे. उ० सर्पजातिके आ० सर्पकी पु० पृच्छा प० समर्थ उ० सर्पजातिका आशीविष

सूत्र

मणुस्सजाइ आसीविसे। विच्छुयजाइआसीविसस्सणं भंते केवइए विसए प० ? पभूणं विच्छुयजाइआसीविसे अद्धभरहप्पमाणमेत्तं बोंदिं विसेणं विसपरिणयं विसट्टमाणिं करेत्तए, विसएसे विसट्टत्ताए नोचेवणं संपत्तिए करिंसुवा, करेंतिवा, करिस्संतिवा। मंडुक्कजाइ आसीविसस्सपुच्छा. पभूणं मंडुक्कजाइआसीविसे भरहप्पमाणमेत्तं बोंदिं विसेणं विसए तंचेव जाव करिस्संति। उरगजाइ आसीविसस्सपुच्छा, पभूणं उरग

भावार्थ

भगवन् ! वृश्चिक जातिके आशीविष का विषय कितना है ? भगवन्त कहते हैं कि उसका विषय अर्ध भरत क्षेत्र प्रमाण अर्थात् शरीर विषय सहित २६३ योजनतक विष पीडित करे परंतु इतना विषय किसीने किया नहीं है, करते नहीं है, और करेगा नहीं. मेडक जाति के आशीविष का विषय कितना ? मेडक के आशीविष का विषय अपने शरीर सहित भरतक्षेत्र प्रमाण है; परंतु इतना विषय किसीने किया नहीं है, करता

शब्दार्थ

जं० जम्बूद्वीप प्रमाण बों० शरीर वि० विषमे से० शेष तं० तैसे जा० यावत् क० करेंगे. म० मनुष्य जातिके आ० विषकी पु० पृच्छा प० समर्थ म० मनुष्य जातिका विष स० समयक्षेत्र (अढाद्वीप) प्रमाण बों० शरीर वि० विषमे प० परिणत वि० विस्तृत क० करते हैं वि० विषयसे नो० नहीं जा० यावत् क० करेंगे ॥ ३ ॥ च० चार प्रकारकी वा० व्याधि व० वात पि० पित्त सं०कफ स०सन्निपात च० चार प्रकारकी ति० चिकित्सा वि० विद्या ओ० औषध आ० आतुर प० परिचारणा च० चार ति० चिकित्सक आ०

सूत्र

जाइआसीविसे जंबूद्दीवप्पमाणमेत्तं बोंदिं विसेणं सेसं तंचेव जाव करिस्संतिवा । मणुस्सजाइ आसीविसस्स पुच्छा. पभूणं मणुस्सजाइ आसीविसे समयक्खेत्तप्पमाणमेत्तं बोंदिं विसेणं विसपरिणयं विसट्टमाणिं करेंति विसएसे विसट्टत्ताए नो चेवणं जाव करिस्संतिवा ॥ ३ ॥ चउव्विहा वाही प० तं० वाइए, पित्तिए, संभिए, सन्निवाइए । चउव्विहा तिगिच्छा प० तं० विज्जा, ओसहाइं, आउरे, परियारए । चत्तारि तिगिच्छ-

भावार्थ

नहीं है, और करेगा नहीं. सर्प के आशीविष का विषय जम्बूद्वीप प्रमाण है परंतु इतना विषय किसीने किया नहीं है, करता नहीं है, और करेगा नहीं. मनुष्य के आशीविष का विषय अपना शरीर विषय सहित अढाइद्वीप प्रमाण परंतु ऐसा किसीने किया नहीं है, करता नहीं, और करेगा नहीं. ॥ ३ ॥ चार प्रकार की व्याधि कही वात, पित्त, कफ और सन्निपात. चार प्रकार की चिकित्सा (व्याधि का उपचार)

आत्म चिकित्सक ए० कितनेक णो० नहीं प० अन्यका चिकित्सक प० अन्यका चिकित्सक ए० कितनेक णो० नही आ० आत्म चिकित्सक. च० चार भांगे॥४॥च०चार पु० पुरुष जात व० व्रणकरनेवाला ए० एक व० व्रण प०विचारने वाला ४ च०चार पु०पुरुष जात व० व्रणकरनेवाला ए०कितनेक णो० नहीं व०व्रण सा०रक्षा करने

गा प० तं० आयतिगिच्छिए णाममेगे णोपरातीगिच्छिए, परातिगिच्छिए णाममेगे णो आयातीगिच्छिए, चउभंगो ॥ ४ ॥ चत्तारि पुरिस जाया प० तं० वणकरेणाममेगे णो वणपरिमासी, वणपरिमासी णाममेगे णोवणकरे, एगेवणकरेवि वणपरिमासीवि,

कही विद्या मंत्रादि, औषधि, आतुर सो रोगी की परिचारणा. चार प्रकार के चिकित्सक (वैद्य) कहे हैं १ एक अपनी स्वतः की चिकित्सा कर सकता है परंतु अन्य की चिकित्सा नहीं कर सकता है, २ एक अन्य की चिकित्सा कर सकता है परंतु अपनी चिकित्सा नहीं कर सकता है, ३ एक अपनी चिकित्सा करता है और अन्य की भी चिकित्सा करता है, ४ एक अपनी चिकित्सा नहीं कर सकता है एवं अन्य की चिकित्सा भी नहीं कर सकता है. ॥ ४ ॥ चार प्रकार के पुरुष कहे १ एक अपना शरीर का रक्त निकलानेके लिये व्रण करता है परंतु वारंवार उसे स्पर्शता नहीं है, २ एक व्रण करता है और उसे स्पर्शता है, ३ एक स्वयं व्रण करता है और वारंवार स्पर्शता है, ४ एक व्रण करता भी नहीं है और स्पर्शता भी नहीं है. योंही चारों भांगे भाव व्रण (अतिचार) आश्री कहना. जैसे किसी साधु को कारण-

शब्दार्थ

बाला. ४ च० चार पु० पुरुष जात द० व्रणकरनेवाला ए० कितनेक व० व्रण सा० रुझाना ॥ ५ ॥

सूत्र

एगेणोवणकरे णोवणपरिमासी । चत्तारि पुरिसजाया प० तं० वणकरे णाममेगे णो वणसारक्खी, ४ । चत्तारि पुरिसजाया प० तं० वणकरे णाममेगे णोवणरोही ४ ॥ ५ ॥

भावार्थ

वशात् अतिचार लगे तो आलोचनादिकर वारंवार शुद्ध करते हैं इस से उनको पाप का स्पर्श नहीं होता है. २ दूसरेने अतिचार लगाकर लाया हुवा अशनादि भोगव कर पाप को स्पर्शता है योंही चारो भांगे कहना । और भी चार प्रकार के पुरुष कहेः-१ एक स्वयं व्रण करता है परंतु पट्टादि बंधन नहीं रखता है, २ एक दूसरे को व्रण करता है परंतु उसपर पट्टादि बंधकर नहीं रखता है, योंही चार भांगे कहना. और यह चौभंगी अतिचारपर कहनी. एक अतिचार करता है परंतु उसका बंधन नहीं करता है, २ एक अन्य को अतिचार लगाता है परंतु बंध नहीं करता है. यों चार भांगे । और भी चार प्रकार के पुरुष कहेः-१ एक व्रण करता है परंतु औषधादि नहीं करता है, २ एक अन्य को व्रण करता है परंतु उसकी औषधि नहीं करता है, ३ एक व्रण करता है और औषधि भी करता है, और ४ एक व्रण भी नहीं करता है और औषधि भी नहीं करता है. ऐसेही १ एक साधु अतिचार लगाता है परंतु उसका प्रायश्चित्त लेकर शुद्ध नहीं होता है २ एक को अन्यका अतिचार लगता है परंतु प्रायश्चित से शुद्ध नहीं होता है, ३ एक अतिचार लगाता है और प्रायश्चित्त से शुद्ध भी होताहै, और ४ एक न तो अतिचार लगाता है और न शुद्ध होताहै ॥ ५ ॥ चार प्रकारके व्रण कहे हैंः-१ एक अंदर अदृश्य शल्य है परन्तु बाहिर शल्य नहीं हैं २

शब्दार्थ — च० चार व० व्रण अं० आंतरिकशल्य णो० नहीं बा० बाहिरशल्य ४ ए० ऐसेही च० चार पु०० पुरुष जाति अं० आंतरिकशल्य ए० कितनेक णो० नहीं बा० बाहिरकाशल्य ४ च०चार व० व्रण अं० अंदर दु० दुःख देनेवाला णो० नहीं बा० बाहिर दु० दुःख देनेवाला ४ ए० ऐसेही च० चार पु० पुरुषजात अं० अंदरदुष्ट ए० कितनेक णो० नहीं बा० बाहिरदुष्ट ॥ ६ ॥ च० चार पु० पुरुष जात से० श्रेयांस ए०

सूत्र — चत्तारि वणा प० तं० अंतोसल्ले णाममेगे णो बाहिंसल्ले,४ । एवामेव चत्तारि पुरिस जाया प० तं० अंतोसल्लेणाममेगे णो वाहिंसल्ले,४ । चत्तारि वणा प० तं० अंतो दुट्ठेनाममेगे नोवाहिंदुट्ठे, वाहिंदुट्ठेनाममेगे णो अंतोदुट्ठे४ । एवामेव चत्तारि पुरिस जाया प० तं० अंतोदुट्ठेनाममेगे णो वाहिदुट्ठे४ ॥ ६ ॥ चत्तारि पुरिस जाया प० तं०

भावार्थ — एक बाहिर शल्य है. परंतु अंदर नहीं है, २ एक अंदर भी शल्य है और बाहिर भी शल्य है, ४ एक अंदर भी शल्य नहीं हैं और बाहिर भी शल्य नहीं है, ऐसेही चार प्रकार के पुरुष कहे हैं–एक अंदर का शल्य वाला है परंतु बाहिर का शल्य वाला नहीं हैं, यों चौभंगी जाननी. और भी चार प्रकार के व्रण कहे एक व्रण अंदर बहुत दुःखदेता है परंतु बाहिर दुःख नहीं देता है, २ एक बाहिर दुष्ट है परंतु अंदर दुष्ट नहीं है ३ एक अंदर भी दुष्ट है और बाहिर भी दुष्ट है ४ एक अंदर भी दुष्ट नहीं है और बहिर भी दुष्ट नहीं है. ऐसे चार प्रकार के पुरुष कहे कोई अंदर दुष्ट होता है और बाहिर अच्छा बनता है,

शब्दार्थ

कितनेक पा० पापांश ४ च० चार पु० पुरुष जात से० श्रेयांस ए० कितनेक से० श्रेयांस इति सा० सदृशक. से० श्रेयांस ए० कितनेक पा० पापांश इति सा० सदृशक । च० चार पु० पुरुष जात से० श्रेयांस ए० कितनेक से० श्रेयांस म० मानता है से० श्रेयांस ए० कितनेक पा० पापांश म० मानता है २ च० चार पु० पुरुष जात से० श्रेयांस ए० कितनेक ले० श्रेयांस सा० सदृशक म० मानता है से०

सूत्र

सेयंसे णाममेगे सेयंसे, सेयंसे णाममेगे पावंसे, पावंसेनाममेगे सेयंसे, पावंसेणाममेगे पावंसे । चत्तारि पुरिस जाया प० तं० सेयंसेत्ति, सालिसए, । चत्तारि पुरिस जाया प० तं० सेयंसे णाममेगे सेयंसेत्तिमण्णइ, सेयंसेणाममेगे पावंसेतिमण्णइ, । चत्तारि पुरिस जाया प० तं० सेयंसे णाममेगे सेयंसेत्ति सालिसएमन्नइ, सेयंसे णाममेगे पावं-

भावार्थ

यों चौभगी कहनी ॥ ६ ॥ चार प्रकार के पुरुष कहे हैं १ एक पुरुष का नाम श्रेयांस (पुण्य वंत) है और स्वयं प्रशंसनीय है साधु की तरह, २ एक का नाम श्रेयांस है परंतु पाप कर्म करता है, उदाइ नृपवत्, ३ एक नाम से पापी है परंतु अच्छे कर्मों करता है. ४ एक नाम से पापी हैं और पाप कर्म करता है काल शोकरिक की तरह. और भी चार प्रकार के पुरुष, एक पुरुष प्रथम गृहस्थवास में श्रेयांसथा और फिर दीक्षा में भी श्रेयांस रहा, २ एक पहिले श्रेयांस और फीर भी पापी बना, ३ एक पहिले पापी फिर श्रेयांस, और ४ एक पहिले पापी और पीछे भी पापी और चार प्रकार के पुरुष कहे एक स्वयं श्रेयांस है और

शब्दार्थ

श्रेयांस ए० कितनेक पा० पपांश सा० सदृशक म० मानता है ॥ ७ ॥ च० चार पु० पुरुष जात आ० प्ररूपक ए० कितनेक णो० नहीं प० प्रभावक । च० चार पु० पुरुष जात आ० प्ररूपक ए० कितनेक णो० नहीं उ० षट्कायके जीवका संपन्न ॥ ८ ॥ च० चार प्रकारके रु० वृक्षकी वि० विकुर्वणा प० प्रवालपने

सूत्र

सेत्ति सालिसए मन्नइ ॥ ७ ॥ चत्तारि पुरिस प० तं० आघवइत्ता णाममेगे णोपरि भावइत्ता, परिभावइत्ता णाममेगे णो आघवइत्ता । चत्तारि पुरिस जाया प० तं० आघवइत्ता णाममेगे णो उंछजीवियासंपण्णे, उंछजीवियासंपण्णे णाममेगे णो आघवइत्ता । ॥ ८ ॥ चउव्विहा रुक्खविगुव्वणा प० तं० पवालत्ताए, पत्तत्ताए, पुप्फत्ता-

भावार्थ

लोक भी श्रेयांस कर मानते हैं २ एक स्वयं श्रेयांस है और लोक पापी कर मानते हैं. यों चार भांगे. और भी चार प्रकार के पुरुष १ एक स्वयं श्रेयांस है और आत्मा को भी श्रेयांस मानता है साधुवत् २ एक स्वयं श्रेयांस है परंतु आत्मा को पापी कर मानता है दृढ प्रहारी साधुवत् ४ ॥ ७ ॥ चार प्रकार के पुरुष कहे. एक सिद्धांतादिकका प्ररूपक है; परंतु शुद्ध क्रिया नहीं होने से प्रभावक नहीं है २ एक शुद्ध क्रिया से जिनशासन की उन्नति करता है; परंतु सिद्धांत का प्ररूपक नहीं है, यों चारों भांगे कहना. और भी चार प्रकार के पुरुष कहेः-एक सिद्धांत का प्ररूपक है परंतु षट्काया के जीवों का रक्षक नहीं है. २ एक षट्काय के जीवों का रक्षक है; परंतु सिद्धांत का प्ररूपक नहीं है; यों चारों भांगे कहना ॥ ८ ॥

शब्दार्थ

प० पत्रपने पु० पुष्पपने फ० फलपने ॥ ९ ॥ च० चार वा० वादिसमोसरण कि० क्रियावादी अ० अक्रियावादी अ० अज्ञानवादी वे० विणयवादि णे० नारकीको च० चार वा० वादी समोसरण की० क्रियावादी जा० यावत् वे० विनयवादी ए० ऐसे अ० असुरकुमार जा० यावत् थ० स्तनित कुमार ए० ऐसे वि० विकलेन्द्रिय व० वर्ज्य जा० जावत् वे० विमानिकको ॥ १० ॥ च० चार मे० मेघ प० प्ररूपे ग० गर्जनेवाले ए० कितनेक णो० नहीं वा० वर्षनेवाले वा० वर्षनेवाले ए० कितनेक णो० नहीं ग० गर्जने

सूत्र

ए, फलत्ताए ॥ ९ ॥ चत्तारि वाइसमोसरणा प० तं० किरियावाई, अकिरियावाई, अणाणिवाई, वेणइयावाई । णेरइयाणं चत्तारि वाइसमोसरणा प० तं० किरियावाई जाव वेणइयावाई । एव मसुरकुमाराणवि जाव थणियकुमाराणं. एवं विगलिंदियवज्जं जाव वेमाणियाणं ॥ १० ॥ चत्तारि मेहा प० तं० गाजित्ता णाममेगे णो वासित्ता, वासित्ता णाममेगे णो गाजित्ता, एगे गाजित्तावि वासित्तावि, एगे णो गाजित्ता णोवा-

भावार्थ

चार प्रकार से वृक्ष विकुवर्णा करते हैं. प्रवाल (नये अंकूरे) की, पत्र की, पुष्पकी, और फल की विकुवर्णा ॥९॥ चार प्रकार से वादियों के समवसरण कहे. क्रियावादी के १८०, अक्रियावादी के ८४, अज्ञानवादीके ६७, और विनयवादीके ३२, सब ३६३ पाखण्डि के मत हुवे. उसमें से एकेन्द्रिय, द्विइन्द्रिय, तेइन्द्रिय, और चौरेन्द्रिय छोडकर नरक में यावत् वैमानिक तक सब में चारों समवसरण पाते हैं ॥ १० ॥ चार प्रकार के मेघ कहे हैं १ एक मेघ गर्जना करता है परंतु वर्षता नहीं है २ एक मेघ बर्षता है परंतु गर्जता नहीं

शब्दार्थ

वाला। ए० ऐसे च० चार पु० पुरुष जात ग० बोलनेवाला ए० कितनेक णो० नहीं वा० कामकरनेवाला ४। च० चार प्रकारके मेघ ग० गर्जनेवाले णो० नहीं वि० विद्युत् करनेवाले। ए० ऐसे च० चार पु० पु ष जात ग० गर्जनेवाले ए० कितनेक णो० नहीं वि० विद्युत् करनेवाले। च० चार मे० मेघ वा० वर्षनेवाले ए० कितनेक णो० नहीं वि० विद्युत् करनेवाले। ए० ऐसेही च० चार पु० पुरुष जात। च० चार मे०

सूत्र

सित्ता। एवामेव चत्तारि पुरिस जाया प० तं० गज्जित्ताणाममेगे णो वासित्ता ४। चत्तारि मेहा प० तं० गज्जित्ताणाम मेगेणोविज्जुयाइत्ता, विज्जुयाइत्ताणाममेगे णो गज्जित्ता, ४। एवामेव चत्तारि पुरिस जाया प० तं० गाजित्ता णाममेगे णो विज्जुइयात्ता, ४। चत्तारि मेहा प० तं० वासित्ता णाममेगे णो विज्जुयाइत्ता ४। एवामेव चत्तारि पुरिसजाया प० तं० वासित्ता णाममेगे णो विज्जुयाइत्ता ४। चत्तारि मेहा प० तं० कालवासी णाममेगे णो अकालवासी, अकाल-

भावार्थ

है ३ एक गर्जता है और वर्षता भी है और ४ एक मेघ नतो गर्जता है न वर्षता है. ऐसे चार प्रकार के पुरुष की चौभंगी कहना. एक पुरुष बोलता है कि मैं यह करूं परंतु वह करता नहीं है २ एक कहता नहीं है परंतु करता है ३ एक कहता है और करता भी है ४ एक कहता भी नहीं है और करता भी नहीं है। और भी चार प्रकार के मेघ कहे हैं १ एक मेघ गर्जना करता है परंतु विद्युत नहीं करता है २ एक विद्युत करता है परंतु गर्जना नहीं करता है, यों चौभंगी. ऐसेही चार प्रकार के पुरुष

शब्दार्थ

मेघ का० कालमें वर्षनेवाले ए० कितनेक णो० नहीं अ० अकालमें वर्षनेवाले । ए० ऐसे च० चार पु० पुरुष जात । च० चार मे० मेघ खे० क्षेत्रमें वर्षनेवाले ए० कितनेक णो० नहीं अ० अक्षेत्रमें वर्षनेवाले । ए० ऐसेही च० चार पु० पुरुष जात । च० चार मे० मेघ ज० उत्पन्न करनेवाला ए० कितनेक णो० नहीं नि० तैयार करनेवाले । ए० ऐसेही च० चार अ० मातापिता । च० चार मे० मेघ दे० देशवर्षी

सूत्र

वासी णाममेगे णो कालवासी ४ ॥ एवामेव चत्तारि पुरिस जाया प० तं० कालवासी णाममेगे णो अकालवासी, ४ । चत्तारि मेहा प० तं० खेत्तवासी णाममेगे णो अखेत्तवासी, ४ । एवामेव चत्तारि पुरिस जाया प० तं० खेत्तवासी णाममेगे णो अखेत्तवासी ४ । चत्तारि मेहा प० तं० जणइत्ता णाममेगे णो निम्मवइत्ता, णिम्मवइत्ता णाममेगे णो जणइत्ता, ४ । एवामेव चत्तारि अम्मापियरो प० तं० जणइत्ता णाम-

भावार्थ

कहेः-एक वचन से बोलता है परंतु आडंबर नहीं करता है यों चौभंगी । और भी चार प्रकार के मेघ कहे है एक मेघ वर्षता है परंतु विद्युत् नहीं करता है। ४ ऐसेही चार प्रकारके पुरुषपर चौभंगी जानना । और भी चार प्रकार के मेघ कहेः-एक समयानुकुल वर्षता है परंतु अकाल में नहीं वर्षता है ४ ऐसेही चार प्रकार के पुरुष कहे एक अवसर में दान देवे और एक अवसर विना दान देवे ४। और भी चार प्रकारके मेघ कहे एक क्षेत्र में वर्षता है परंतु अन्य स्थान नहीं वर्षता है ४ ऐसेही चार प्रकार के पुरुष कहे १ एक

शब्दार्थ

ए० कितनेक णो० नहीं स० सर्ववर्षी ए० ऐसेही च० चार रा० राजा दे० देशके अ० अधिपति ए० कितनेक णो० नही स० सबके अ० अधिपति च० चार मे० मेघ पु० पुष्कर संवर्तक प० प्रद्युम्न जी० जीमूत जि० जिम्हा पु० पुष्कर संवर्तक म० बडा मे० मेघ ए० एकवार वा० वर्षनेसे द० दशवर्ष स०

सूत्र

मेगे णो णिम्मवइत्ता ४। चत्तारि मेहा प० तं० देसवासी णाममेगे णो सव्ववासी, ४।
एवामेव चत्तारि रायाणो प० तं० देसाहिवई णाममेगे णो सव्वाहिवई, ४ ।
चत्तारि मेहा प० तं० पुक्खलसंवट्टए, जीमूए पज्जुणे, जिम्मए । पोक्खलसंवट्टएणं

भावार्थ

सुपात्र कों दान देता है परंतु कुपात्र को दान नहीं देता है, ४। चार प्रकार के मेघ कहे-१ एक मेघ प्रथम वर्षकर धान्य उत्पन्न करता है परंतु पीछे वर्षकर धान्य नहीं निपजाता है, २ एक मेघ धान्य निपजावे नहीं परंतु उपजाता है. यों चौभंगी. ऐसेही चार प्रकार के माता पिता कहे-१ एक पुत्र का जन्म देते हैं परंतु पालन नहीं करते हैं २ एक पालन करते हैं परंतु उत्पन्न नहीं करते हैं; यों चौभंगी. वैसे ही गुरु शिष्यपर चौभंगीः– एक गुरु शिष्य को दीक्षादेतेहैं और पढातेहैं, २ एक पढाते हैं और दीक्षा नहीं देते हैं। और भी चार प्रकार के मेघ कहे हैं एक मेघ एक देश में वर्षता है परंतु सब जगह नहीं बर्षता है. यों चौभंगी. ऐसेही चार प्रकारके राजा कहेः-एक राजा एक देशका है परंतु सबदेशका नहींहै, २ एक राजा सबदेश का है और एकदेशका नहीं है, ३ एक राजा एकदेशका भी है, और सबदेश का है ४ एक राजा राज्य से

शब्दार्थ

सहस्र भा० स्नेहवंतहोवे प० प्रद्युम्न म० महामेघ ए० एक वा० वर्षासे द० दशवर्ष स० सो भा० स्नेहवंत रहे जी० जीमूत महामेह ए० एक वा० वर्षासे द० दशवर्ष भा० स्नेहवंत रहे जि० जिम्ह म० महामेह ब० बहुवर्षासे ए० एक वा० वर्ष भा० स्नेहवंत रहे ॥१९॥ च० चार क० करंडिमे सो० चंडालका करंडिया

सूत्र

महामेहे एगेणं वासेणं दसवाससहस्साइं भावेइ, पज्जुण्णेणं महामेहे एगेणं वासेणं दसवाससयाइं भावेइ, जीमूएणं महामेहे एगेणं वासेणं दसवासाइं भावेइ, जिम्मेणं महामेहे बहुवासेहिं एगं वासं भावेइवा ण वा भावेइ ॥ ११ ॥ चत्तारि करंडगा, प० त० सोवागकरंडए वेसियाकरंडए गाहा-

भावार्थ

भ्रष्ट बना हुवा एकदेश का भी नहीं है और सवदेश का भी नहीं हैं। और भी चार प्रकारके मेघ कहे हैं-१ पुष्कल संवर्तक २ प्रद्युम्न३ जीमूत और ४ जिम्ह पुष्कल संवर्तक मेघ की संरसाइ एक वार वरसने से दश हजारवर्ष पर्यंत रहती है २ प्रद्युम्न नामा मेघ की सरसाइ एक हजार वर्षतक रहती है, ३ जीमूत नामक मेघ की सरसाइ दश वर्षतक रहती है. और जिम्ह नामक मेघ बहुत वार वरसनेसे एक वार धान्य उत्पन्न होने जैसी जमीन बनाता है और नहीं भी बनाता है. ऐसेही चार प्रकार के पुरुष कहे हैं-१ एक वार उपदेश श्रवण कर के बहुत वर्षतक धारण करता है, २ एक थोडे काल तक धारन करता है, ३ एक बहुत थोडे काल तक धारन करता है, और ४ एक वारंवार उपदेश सुने तो धारेभी और न भी धारे॥१९॥चार प्रकार के करंडिये

शब्दार्थ

वे० वेश्याका करंडिया गा० गाथापतिका करंडिया रा० राजाका करंडिया. ए० ऐसेही च० चार आ० आचार्य सो० सो० चांडालका क० करंडिये समान वे० वैश्यके क० करंडिये समान गा० गाथापतिके क० करंडिये समान रा० राजाके क० करंडिये समान ॥ १२ ॥ च० चार रु० वृक्ष सा० शाल ए० कितनेक सा० शाल प० पर्याय सा० शाल ए० एरंडकी पर्याय ४ । ए० ऐसेही च० चार आ० आचार्य ।

सूत्र

वइकरंडए, रायकरंडए, । एवामेव चत्तारि आयरिया प० तं० सोवागकरंडगसमाणे, वेसियकरंडगसमाणे, गहावइकरंडगसमाणे, रायकरंडगसमाणे ॥ १२ ॥

चत्तारि रुक्खा प० तं० साले णाम मेगे सालपरियाए, सालेनाममेगे एरंडपरियाए,

भावार्थ

कहे-१ चांडाल का करंडीया उस में कचरा भरा होवे इसलिये असार, २ वैश्या का करंडिया कि जिसमे लाख से भरे हुवे आभूषण होवे यह थोडा बहुत सार, ३ गृहपति का करंडिया कि जिसमें सुवर्ण रत्नादि भरे होवे, यह विशेष सार और ४ राजाका करंडिया कि जिसमें अमूल्य रत्न भरे होवे यह सर्वथा सार. ऐसेही चार प्रकार के आचार्य कहे हैं-१ चांडाल के करंडीये समान वे उत्सूत्र भाषी भ्रष्टा चारी होवे, २ वैश्या के करंडिये समान थोडासा सूत्र ज्ञान दुष्टरीति से ग्रहण किया होवे भोले मनुष्यों को समझावे अभव्यवत् ३ गाथा पति के करंडीये समान स्वसमय का जाण विद्यावन्त होवे, ४ और राजा के करंडीये समान सो सब आचार्य के गुण सहित होवे वे जिन नहीं परंतु जिन सारिखे होवे ॥ १२ ॥ चार प्रकारके वृक्ष कहे हैं-१ साल नामकवृक्ष है और साली की पर्याय है अर्थात छाँया साधनहै, २ एक सा-

शब्दार्थ

च० चार स० वृक्ष सा० शाल ए० कितनेक सा० शाल प० परिवार ए० ऐसेही च० चार आ० आचार्य सा० शाल दु० वृक्षके म० मध्यमें ज० जैसे सा० शाल णा० नामक हो० होता है दु० वृक्षराजा इ० ऐसे सुं० सुंदर आ० आचार्य सुं० सुंदर सी० शिष्योंमें मु० जानना. ए० एरंड मध्यमें ज० जैसें सा० शाल नामक हो० होता है दु० वृक्षराजा इ० इति सुं० सुंदर आ० आचार्य मं० खरावशिष्योंमें मु० जानना.

सूत्र

४ । एवामेव चत्तारि आयरिया प० तं० सालेणाममेगे सालपरियाए, सालेणाममेगे एरंडपरियाए, एरंडेणाममेगे० ४ । चत्तारि रुक्खा प० तं० सालेणाममेगे सालपरिवारे ४ । एवामेव चत्तारि आयरिया प० तं० सालेणाममेगे सालपरिवारे, ४॥ गाहा ॥

सालदुममज्झगारे जह साले णामहोइ दुमराया, इयसुंदर आयरिए, सुंदरसीसे मुणेयव्वे

भावार्थ

ल नामक वृक्षहै और एरंडकी पर्याय है, ३ एरंड नामक वृक्षहै और सालिकी पर्याय है और ४ एक एरंड का वृक्ष है और एरंडकी पर्याय है. ऐसेही चार प्रकारके आचार्य कहे–एक आचार्य साल जातिका अर्थात् ऊचकुलमें जन्मलेकर ऋद्धिकात्यागकरने वाला है और साल पर्याय वाला अर्थात् ज्ञान क्रिया युक्त ऐसेही चारों भांगे जानना. और भी चार प्रकारके वृक्ष कहे–१ साल नामका वृक्षहै और उसका सालकाही परिवार हैं, २ एक सालका वृक्ष है और एरंड का परिवार है. ४ ऐसेही चार प्रकारके आचार्य कहे हैं-एक आचार्य साल समान हैं और उनके परिवार भी साल समान हैं अर्थात् ज्ञानादि गुण संपन्न हैं, २ एक

शब्दार्थ

सा० शालवृक्ष म० मध्यमें ए० एरंड हो० होता है दु० द्रुमराज इ० इति मं० खराब आ० आचार्य सुं० सुंदर सी० शिष्यमें मुं० जानना. ए० एरंड म० मध्यमें ए० एरंड नामका हो० होता है दु० द्रुमराजा इ० इति मं० खराब आ० आचार्य मं० खराब सी० शिष्यमें मु० जानना ॥ १३ ॥ च० चार प्रकारके

सूत्र

[१] एरंड, मज्झगारे, जहसासे णामेहोइदुमराया; इयसुंदरआयरिय, मंगुलसीसे मुणेयव्वे ॥ २ ॥ सालदुममज्झयारे, एरंड णामहोइ दुमराया, इयमंगुलआयरिय, सुंदर सीसे मुणेयव्वे ॥ ३ ॥ एरंडमज्झयारे, एरंडणामहोइदुमराया; इयमंगुलआयरिय, मंगुल सीसेमुणेयव्वे ॥ ४ ॥ १३ ॥ चत्तारिमच्छा प० तं० अणुसोयचारी, पडिसोयचारी,

भावार्थ

आचार्य ज्ञानादि गुण संपन्न हैं और परिवार एरंड समान ज्ञानादि गुण रहित हैं, यों चारो भांगे जानना. जैसे शाल नामक वृक्षके मध्यमें शाल नामक वृक्षका राजा हो वैसेहीआचार्य व उनके शिष्यादि परिवार सुंदर होवे, २ एरंड के वृक्षमे जैसे साल नामक वृक्षका राजा होवे वैसे आचार्य उत्तम गुण वाले होवे परंतु कुशिष्यका परिवार होवे, ३ साल वृक्षमें जैसे एरंड राजा होवे जैसे आचार्य खराब और परिवार अच्छा होवे, और एरंड वृक्षमें एरंड राजा होवे तैसे आचार्य व परिवार दोनो आचार हीन होवे ॥ १३ ॥ चार प्रकारके मत्स्य कहे हैं-१ कितनेक मत्स्य प्रवाह की साथ चलते हैं, २ कितके प्रवाह की सामे जातेहैं, ३ कितनेक पानीकी नीचे या पानी के उपर चलते हैं, और ४ कितनेक पानी की मीचमें चलते हैं.

शब्दार्थ

म० मत्स्य अ० अनुश्रोत चारी प० प्रतिश्रोत चारी अं० अंतचारी म० मध्यचारी ए० ऐसेही च० चार भि० भिक्षुक ॥ १४ ॥ च० चार गो० गोले म० मधुसिक्त गोला ज० लाखका गोला, दा० लकडेका गोला म० मिट्टिका गोला ए० ऐसेही च० चार पु० पुरुष जात म० मधुसिक्त गोला समान ४ । च०

सूत्र

अंतचारी, मज्झचारी ॥ एवामेव चत्तारि भिक्खागा प० तं० अणुसोयचारी, पडिसोयचारी, अंतचारी, मज्झचारी ॥ १४ ॥ चत्तारि गोला प० तं० मधुसित्थगोले, जउगोले, दारूगोले, मट्टियागोले; । एवामेव चत्तारि पुरिस जाया प० तं० मधुसित्थगो-

भावार्थ

वैसेही चार प्रकारके भिक्षुक कहे हैं १ कितनेक उपाश्रयसे निकलते अनुक्रमसे घरोंसे भीक्षा ग्रहन करे २ कितनेक जाते नहीं ले परंतु आतेलेवे, ३ कितनेक प्रथम व अन्तिम घरों की भिक्षालेवे, ४ और कितनेक बीच के घरों की भीक्षा लेवे ॥ १४ ॥ चार प्रकार के गोले-कहे १ मधुसिस्थ (मोम) का गोला धूप से पीगल जावे, २ लाख का गोला धूप से पीगले नहीं परंतु अग्नि के ताप से पीगल जावे, ३ काष्ठ का गोला पीगले नहीं परंतु अग्नि में डालने से जलजावे, और मृत्तिका का गोला अग्नि में डालने से पीगले नहीं परंतु पक्व होजावे. ऐसेही चार प्रकार के पुरुष कहे हैं-जैसे किसी साधु का उपहंस सुनकर चार जने को वैराग्य प्राप्त हुवा प्रथम मोम के गोल समान पुरुष बजार में जाता लोको के दुर्वचन सुनकर पीगल गया; २ लाख के गोले समान कुटुम्ब के वचनरूप अग्नि के ताप से पीगल गया, ३ कांष्ट के गोले समान लोकोके व कुटुम्ब

शब्दार्थ

चार गो० गोले आ० लोहेका गोला त० कथीरका गोसा तं० तांबेका गोला सी० सीसेका गोला ए० ऐसेही च० जार पु० पुरुष जात आ० लोहेका गोला समान जा० यावत् सी० क्षीसेका गोला समान च० चार गोला हि० चांदीका गोला सु० सुवर्णका गोला र० रत्तका गोला व० वज्रका गोला ए०

सूत्र

ले समाणे,४ ॥ चत्तारि गोला प० तं० आयगोले, तओगोले, तंबगोले, सीसगोले, एवासेव चत्तारि पुरिस जाया प० तं० अयगोले समाणे जाव सीसगोल समाणे ॥ चत्तारिगोला प० तं० हिरण्णगोले, सुवण्णगोले, रयणगोले, वयरगोले, । एवामेव

भावार्थ

से नहीं पीगलें परंतु स्त्री रूप अंगार से पीगला और मिट्टी के गोले समान पुरुष ज्यों ज्यों संसारियो से उपसर्ग होते गये त्यों त्यों विशेष दृढ बनता गया । और भी चार प्रकार के गोले कहे लोहेका गोला, कथीर का गोला, ताम्बेका गोला ४ और सीसे का गोला. ऐसेही चार प्रकार के पुरुष लोहे के गोले समान कर्म में गुरु, कथीर के गोले समान कर्म में गुरुतर, ताम्बे के गोले समान कर्म में गुरुतम और सीसे के गोले समान कर्म में अत्यंत गुरु । और भी चार प्रकार के गोले कहे हैं-१ चांदी का गोला २ सुवर्ण का गोला उस से अधिक कीमती ३ रत्न का गोला उस से अधिक किमती और ४ वज्ररत्न का गोला सब से ज्यादा कीमती. वैसे ही चार प्रकार के पुरुष कहे-चांदी के गोला समान यावत् वज्र के

शब्दार्थ

ऐसेही च० चार पुरुष जतहि. चांदीके गोले समान जा० यावत् व० वज्रके गोले समान ॥ १५ ॥ च० चार प० पत्र अ० असिपत्र (तरवार) क० करपत्र (कखत) खु० क्षुरपत्र (उस्तरा) क० कलंब वृतिपत्र (खुरपी) ए० ऐसेही च० चार पु० पुरुष जात अ० असिपत्र समान जा० यावत् क० कलंब वृतिपत्र समान ॥ १६ ॥ च० चार क० कडे सुं० वेंतादिकका बंधन वि० वांस प्रमुखका क० बंधन च०

सूत्र

चत्तारि पुरिस जाया प० तं० हिरण्णगोल समाणे, जाव वयरगोल समाणे ॥ १५ ॥

चत्तारि पत्ते प० तं० असिपत्ते, करपत्ते, खुरपत्ते, कलंबवीरियापत्ते । एवामेव चत्तारि पुरुष जाया प० तं० असिपत्तसमाणे, जाव कलंब वीरियापत्ते समाणे ॥ १६ ॥

चत्तारि कडा प० तं० सुंठ्ठकडे, विदलकडे, चंमकडे, कंबलकडे, । एवामेव चत्तारि

भावार्थ

गोले समान ॥ १५ ॥ चार प्रकार के पत्र (शस्त्र) कहे हैं असिपत्र (तरवार) करपत्र [करवत] क्षुरपत्र [उसतरा] और कदम्बवीर पत्र (खुरपी) ऐसेही चार प्रकार के पुरुष कहे हैं १ असि पत्र समान पुरुष तुरंत स्नेह का छेदन करे, २ करवत समान शनैः २ स्नेह का छेदत करे, ३ उस्तरे समान पुरुष उपर के स्नेह का छेदन करे और ४ खुरपी समान पुरुष क्षेत्र में निंदनी जैसे अयोग्य वस्तु का छेदन करे और योग्य वस्तु रक्खे ॥ १६ ॥ चार प्रकार के कडे [गुंथी हुइ सादडी] कहे हैं. सुंठ नामक तुण तुणविशेष से बन्धाइ हुइ सादडी, २ वांसादिक से बनीहुइ ३ चमडे से बनाइ हुइ और ४ कम्बल

शब्दार्थ

चर्मका बंधन कं० कम्बलका बंधन ए० ऐसेही च० चार पु० पुरुष जात ॥ १७ ॥ च० चार प्रकारके च० चतुष्पद ए० एक खुरवाले दो० दोखुरवाले गं० गंडीपदवाले सं० सणपदी. च० चार प्रकारके प० पक्षी च० चर्मपक्षी लो० रोमपक्षी स० समुद्गपक्षी वि० विततपक्षी च० चार प्रकारके खु० क्षुद्रप्राणी बे० बेइन्द्रिय ते० तेइन्द्रिय च० चतुरिन्द्रिय स० समूच्छिम पं० पंचेन्द्रिय ति० तिर्यंच योनिवाले ॥ १८ ॥

सूत्र

पुरिस जाया प० तं० सुंठकड समाणे, जाव कंबलकड समाणे ॥ १७ ॥ चउव्विहा चउप्पया प० तं० एगखुरा, दुखुरा, गंडीपदा, सणप्पदा, । चउव्विहा पक्खी प० तं० चम्मपक्खी, लोमपक्खी, समुग्गपक्खी, वियपक्खी, । चउव्विहा खुद्दपाणा प० तं० बेइंदिया, तेंदिया, चउरिंदिया, समुच्छिमपंचिंदियतिरिक्खजोणिया, ॥ १८ ॥ चत्तारि पक्खी प० तं० णिवइत्ता णाममेगे णो परिवइत्ता, परिवइत्ता णाम-

भावार्थ

के बंध से बंधाइ हुइ. ऐसे चार प्रकार के पुरुष गुर्वादिक के प्रतिबंध आश्री कहे हैं सुंठ की सादडी समान निस्नेही, यावत् कम्बल की सादडी समान ॥ १७ ॥ चार प्रकार के चतुष्पद कहे १ एक खुरवाले अश्वादि २ दोखुरवाले गवादि ३ गंडीपद सो हस्ती वगैरह ४ सणपद नखवाले सिंहप्रमुख. चार प्रकार के पक्षी कहेः-१ चर्म्मपंखी चमडे की पांखवाले वागुलादि २ रोमपंखी रोम की पांखवाले हंसादि ३ समुद्गपंखी बंधीहुइ पांखवाले ४ विततपंखी खुलीपांखवाले. चार प्राकर के क्षुद्र

शब्दार्थ

च० चार प० पक्षी नि० उडनेवाले ए० कितनेक णो० नहीं प० फीरनेवाले ४ । ए० ऐसे च० चार भि साधु ॥ १९ ॥ च० चार पु० पुरुष जात णि० निकृष्ट ए० कितनेक णि० निकृष्टात्मा. णि० निकृष्ट ए० कितनेक अ० अनिकृष्टात्मा च० चार पु० पुरुष जात बु० बुध ए० कितनेक बु० बुध बु० बुध ए० कितनेक अ० अबुध च० चार पु० पुरुष जात बु० बुध ए० कितनेक बु० बुध हि० हृदय च० चार पुरुष जात आ० आत्माकी अ० अनुकंपा रखनेवाला ए० कितनेक णो० नहीं प० अन्यकी अ० अनुकंपा

सूत्र

मेगे णो णिवइत्ता, एगे णिवइत्तावि परिवइत्तावि, एगे णो णिवइत्ता णो परिवइत्ता। एवा मेव चत्तारि भिक्खागा प० तं० णिवइत्ता णाममेगे णो परिवइत्ता, ॥ १९ ॥ चत्तारि पुरिस जाया प० तं० णिक्कट्ठेणाममेगे णिक्कट्ठे, णिक्कट्ठेणाममेगे अणिक्कट्ठे४ । चत्तारि पुरिस जाया प० तं० णिक्कट्ठे णाममेगे णिक्कट्ठप्पा, णिक्कट्ठे नाममेगे अणिक्कट्ठप्पा ४ । चत्तारि पुरिस जाया प० तं० बुहेणाममेगेबुहे, बुहे णाममेगेअबुहे, ४ । च-

भावार्थ

प्राणी कहेः—बेइन्द्रिय, तेइन्द्रिय, चौरेन्द्रिय और समूर्च्छिम तिर्यंच पंचेन्द्रिय ॥ १८ ॥ चार प्रकार के पक्षी कहे हैं १ एक पक्षी उडने को समर्थ है परंतु फीरने को समर्थ नहीं है २ एक फीरने को समर्थ है परंतु उडने को समर्थ नहीं है ३ एक उडने को और फीरने को समर्थ है ४ एक न तो उडने को समर्थ है और न फीरने में समर्थ है. ऐसेही चार प्रकार के भिक्षु कहेः-एक भिक्षालेने केलियें जाने को समर्थ है परंतु फीरने में समर्थ नहीं है, यों चार भांगे जानना ॥ १९ ॥ चार प्रकार

शब्दार्थ करनेवाला. च० चार प्रकारके सं० संवास दि०देवताका आ० असुरका र० राक्षसका मा० मनुष्यका च० चार प्रकारके सं० संवास दे० देव ए० कितनेक दे० देवीके साथ सं० संवास ग० करता है दे० देव ए० कितनेक अ० असुरीसे सं० संवास ग० करता है अ० असुर ए० कितनेक दे० देवीकी साथ सं० संवास ग० करता है अ० असुर ए० कितनेक अ० असुरीकी स० साथ सं० संवास ग० जाता है. च० चार प्रकारके सं० संवास दे० देव दे० देवीकी स० साथ सं० संवास ग० करता है दे० देव

सूत्र

चत्तारि पुरिस जाया प० तं० बुहेणाममेगे बुहहियए४ । चत्तारि पुरिस जाया प० तं० आयाणुकंपए णाममेगे णोपराणुकंपए ४ ॥ २० ॥ चउब्बिहे संवासे प० तं० दिव्वे, आसुरे, रक्खसे, माणुसे । चउब्बिहे संवासे प० तं० देवेणाममेगे देवीए साद्धिं संवासं गच्छइ, देवेणाममेगे असुरीए साद्धिं संवासं गच्छइ, असुरे णाममेगे देवीए साद्धिं

भावार्थ के पुरुष कहे है १ एक साधु तप करने से शरीर से दुर्बल है और भाव से कषायों नहीं होने से भी दुर्बल है २ एक शरीर से दुर्बल है परंतु भाव से दुर्बल नहीं है बहुत कषाय होने से, यों चार भांगे जानना । और भी चार प्रकार के पुरुष कहे हैं एक बहुत शास्त्र का अध्ययन करनेसे द्रव्यसे पंडित है और क्रियावंत होनेसे भावसे भी पंडित है यों चौभंगी जाननी. चार प्रकारके पुरुष कहेः—एक द्रव्य से पंडित और हृदय का भी पंडित अर्थात् विवेक युक्त यों चार भांगे । और भी चार प्रकारके पुरुषः—एक

शब्दार्थ

ए० कितनेक र० राक्षसीकी स० साथ सं० संवास ग० करता है । च० चार प्रकारके सं० संवास दे० देव दे० देवीकी साथ सं० संवास ग० करता है दे० देव ए० कितनेक म० मनुष्यणीकी साथ सं० संवास ग० करता है. च० चार प्रकारके सं० संवास अ० असुर ए० कितनेक अ० असुरीकी साथ सं० संवास ग० करता है अ० असुर ए० कितनेक र० राक्षसीकी स० साथ सं० संवास ग० करता है च० चार

सूत्र

संवासं गच्छइ, असुरे णाममेगे असुरीए सद्धिं संवासं गच्छइ,॥ चउब्बिहे संवासे प० तं० देवेणाममेगे देवीए सद्धिं संवासं गच्छइ, देवेणाममेगे रक्खसीए सद्धिं संवासं गच्छइ, रक्खसेणाममेगे० ४ । चउब्बिहे संवासे प० तं० देवेणाममेगे देवीए सद्धिं संवासं गच्छइ, देवेणाममेगे मणुस्सीहिं सद्धिं संवासं गच्छइ ४ । चउब्बिहे संवासे प० तं० असुरेणाममेगे असुरीहिं सद्धिं संवासं गच्छइ, असुरेणाममेगे रक्खसीहिंसद्धिं संवासं गच्छ-

भावार्थ

आत्माकी अनुकम्पा वांच्छे और अन्य की अनुकम्पा वांच्छे नहीं यों चौभंगी ॥ २० ॥ चार प्रकारके संवास कहे देव वैमानिक, असुर भुवनपत्यादि, राक्षस व्यंतरादि और मनुष्य. और भी चार प्रकारके संवास कहे १ देव वैमानिक देवी की साथ संवास (संभोगादि) करे २ देव असुरी से संभोग करे ३ असुर वैमानिक देवी की साथ संभोग करे और असुर असुरीकी साथ संभोग करे । चार प्रकारके संवास कहे १ देवता देवीसे संवास करे, देवता राक्षसी से संवास करे, राक्षस देवीसे संवास करे, और राक्षस राक्षसी से संवास करे. और भी चार प्रकारके संवास कहेः—देवका देवी की साथ, देव का मनुष्यणी की साथ, मनुष्य

शब्दार्थ

प्रकारके सं० संवास अ० असुर ए० कितनेक असुरी की साथ सं० संवास ग० करता है अ० असुर ए० कितनेक म० मनुष्यणी की साथ सं० संवास ग० करता है च० चार प्रकारके सं० संवास र० राक्षस ए० कितनेक र० राक्षसी की स० साथ सं० संवास ग० करता है र० राक्षस ए० कितनेक मा० मनुष्यणी की साथ सं० संवास ग० करता है ॥ २१ ॥ च० चार प्रकारका अ० अपध्वंस आ० आसुर आ० आभियोग

सूत्र

इ, ४ । चवव्विहे संवासे पण्णत्ते त० असुरे णाममेगे असुरीए साद्धिं संवासं गच्छइ, असुरेणाममेगे मणुस्सीएसाद्धिं संवासं गच्छइ ४ । चउव्विहे संवासे प० तं० रक्खसे णाममेगे रक्खसीएसाद्धिं संबासं गच्छइ, रक्खसे णाममेगे माणुसीएसाद्धिं संवासं गच्छइ ४ ॥ २१ ॥ चउव्विहे अवद्धंसे प० तं० आसुरे, आभियोगे, संमोहे, देवाकिब्बिसे ।

भावार्थ

का देवी की साथ, और मनुष्य का मनुष्यणी की साथ. चार प्रकार के संवासः—असुर का असुरी की साथ, असुर का राक्षसी की साथ, राक्षस का असुरी और राक्षस का राक्षसी की साथ। और भी चार प्रकारके संवासः—असुर का असुरी की साथ, असुर का मनुष्यणी की साथ, यों चार भांगे। चार प्रकारके संवास राक्षस का राक्षसी की साथ, राक्षस का मनुष्यणीकी साथ, मनुष्य का राक्षसीकी साथ, और मनुष्य का मनुष्यणी की साथ ॥ २१ ॥ चार प्रकारके अपध्वंस कहे १ असुरपना पावे २ अभियोगीपना

१ चारित्र के फल का नाश.

शब्दार्थ

सं० संमोह दे० देव किल्विष च० चार कारणसे जी० जीव आ० असुरपनेका क० कर्म प० करते हैं को० क्रोधके स्वभावसे पा० क्लेशके स्वभावसे सं० संसक्त त० तपकर्मसे नि० निमित्त आ० आजीविकासे च० चार कारणसे जी० जीव आ० आभियोगका क० कर्म प० करतेहैं अ० आत्मोत्कर्षसे प० परपरिवादसे भू० भूतिकर्मसे को० कौतुक करनेसे। च० चार कारनसे जी० जीव सं० संमोहपनेका क० कर्म प० करतेहैं उ० उन्मार्गदे० बता-

सूत्र

चउहिं ठाणेहिं जीवा आसुरत्ताएकम्मं पकरेंति तं० कोहसीलयाए, पाहुडसीलयाए, संसत्ततवोकम्मेणं, निमित्ताजीवयाए. । चउहिं ठाणेहिं जीवा आभिओगत्ताए कम्मंपगरेंति, तं० अणुक्कोसेणं, परपरिवाएणं, भूइकम्मेणं, कोउयकरणेणं । चउहिं ठाणेहिं जीवा सम्मोहत्ताए कम्मंपगरेंति तं० उम्मग्गदेसणए, मग्गंतराएणं, कामासंसपओगेणं

भावार्थ

पावे ३ संमोहपना पावे और ४ किल्विषी देवपना पावे. चार प्रकारसे जीव असुरदेवतामें जानेका कर्मबंध करता है १ क्रोधी स्वभाव से २ क्लेशके संबन्धि होने से ३ आहार उपधि वगैरह वस्तु के लिये तप करनेसे ४ ज्योतिषादि निमित्तसे आजीविका करते. चार प्रकारसे जीव आभियोगपने (सेवकपने) का कर्म बांधे १ अपने गुणों का अभिमान करे २ अन्य के दोषों प्रगट करे ३ भूतिकर्म चिकित्साकर्म करे ४ कौतुक कर्म सौभाग्यादिकके निमित्त शरीर स्वच्छ करे । चार कारणसे जीव संमोह (मूढ देव) का कर्म बांधे १ जिनमार्ग

शब्दार्थ रायसे का० विषयके अभिलाषसे भि० लोभसे नि० निदान क० करनेसे च० चार कारन से जी० जीव दे० देवकिल्विषका क० कर्म प० करते हैं अ० अरिहंत के अ० अवर्णवाद व० बोलते अ० अरिहंत प्ररूपित ध० धर्मका अ० अवर्णवाद बोलते आ० आचार्य उ० उपाध्याय के अ० अवर्णवाद व० बोलते चा० चतुर्विध संघके अ० अवर्णवाद व० बोलते ॥ २२ ॥ च० चार प्रकारकी प० प्रवर्ज्या इ० इसलोक प० प्रतिबद्ध प० परलोक प्रतिबद्ध दु० दोनों लोक प्रतिबद्ध अ० अप्रतिबद्ध च० चार प्रकारकी प०

सूत्र भिज्जानियाण करणेणं । चउहिं ठाणेहिं जीवा देवकिव्विसियाए कम्मं पगरेंति, तं० अरहंताणं अवण्णं वयमाणे, अरहंतपण्णत्तस्स धम्मस्स अवण्णं वयमाणे, आयरियउवज्झायाण मवण्णं वयमाणे वा, चाउव्वण्णस्स संघस्स अवण्णं वयमाणे ॥ २२ ॥ चउव्विहा पव्वजा प० तं० इहलोगपडिबद्धा, परलोगपडिबद्धा, दुहओपडिबद्धा, अप्पडिबद्धा ।

भावार्थ से अन्य मार्ग बतलावे, २ मोक्ष मार्गमें चलते को अंतराय देवे ३ काम भोगकी अभिलाषा करे ४ चक्रवर्तीकी ऋद्धि आदिका नियाणा करे । चार कारण से जीव किल्विषि देवताका कर्मबन्ध करता है १ अरिहन्तके अवर्णवाद बोलनेसे २ अरिहंत प्ररूपित धर्म का अवर्णवाद बोलने से ३ आचार्य उपाध्याय का अवर्णवाद बोलने से ४ चतुर्विध संघ का अवर्णवाद बोलने से ॥ २२ ॥ चार प्रकार की प्रवर्ज्या कही १ इसलोक प्रतिबद्ध सो पेटभरा २ परलोक प्रतिबद्ध सो भोगादिक की वांच्छा केलिये ३ इसलोक और परलोक

शब्दार्थ

प्रवर्ज्या पु० पुरत प्रतिबद्ध मा० मार्गत (पीछेका) प्रतिबद्ध दु० दोनोंका प्रतिबद्ध अ० अप्रतिबद्ध च० चार प्रकारकी प० प्रवर्ज्या उ० अपपात प्रवर्ज्या अ० आख्यात प्रवर्ज्या सं० संकेत प्रवर्ज्या वि० पक्षीकी ग० गति समान (दरिद्रतासे) प्रवर्ज्या. च० चार प्रकारकी प० प्रवर्ज्या तु० दुःख उत्पन्न कर पु० अन्यत्र

सूत्र

चउव्विहा पव्वज्जा प० त० पुरओपडिबद्धा, मग्गओपडिबद्धा, दुहओपडिबद्धा, अप्प डिबद्धा । चउव्विहा पव्वज्जा प० तं० उवायपव्वज्जा, अक्खायपव्वज्जा, संगारपव्वज्जा, विहगगइपव्वज्जा। चउव्विहा पव्वज्जा पं० तं० तुयावइत्ता, पुयावइत्ता, मोयावइत्ता, परि-

भावार्थ

(दोनों) लोक प्रतिबद्ध सो दोनोंलोक के भोगोकी वांच्छा केलिये ४ अप्रतिबद्ध सो मोक्ष के लिये । और भी चार प्रकार की दीक्षा कही १ पूर्वप्रतिबद्ध सो साधु बनकर कुटुम्बादिक में स्नेह भाव रखे २ पीछे का प्रतिबद्ध सो शिष्यादिक में स्नेह रखे ३ दोनों प्रतिबद्ध और ४ अप्रतिबद्ध सो मोक्ष केलिये. चार प्रकार की प्रवर्ज्या कही १ अपपात प्रवर्ज्या गुरुसेवा करने केलिये दीक्षाले २ आख्यात प्रवर्ज्या किसी के कहने से दीक्षालेवे ३ संकेत से दीक्षालेवे अर्थात् यदि तू दीक्षा ले तो मैं दीक्षा ग्रहण करूं. ४ पक्षिकी गति की तरह दीक्षाले अर्थात् जैसे पक्षी परिवारादि से हीन होजाय और अकेला देशान्तर चला जावे वैसेही परिवारादि रहित पुरुष देशान्तर में जाकर दीक्षा ग्रहण करे । और भी चार प्रकार की प्रवर्ज्या कही १

लेजाकर मो० मुक्त कराके प० लालचबताकर च० चार प्रकारकी प० प्रवर्ज्या न० नटकी तरह भोजन करनेवाला भ० शूरवीरकी तरह भोजन करे सी० सिंहकी तरह भोजन कर सि० शृगाल की तरह भोजन करे च० चार प्रकारकी कि० कृषि वा० एक वारबोनेसे प० अनेक वार बोनेसे ऊगे णिं०

पुयावइत्ता । चउव्विहा पव्वज्जा प० तं० णडक्खइत्ता, भडक्खइत्ता, सीहक्खइत्ता, सियालक्खइत्ता ॥ चउव्विहा किसी प० तं० वाविया, परिवाविया, णिंदिया, परिणिंदिया । एवामेव चउव्विहा पव्वज्जा प० तं० वाविया, परिवाविया, णिंदिया, परिणिंदि-

पीडा उत्पन्न कर प्रवर्ज्या ग्रहण करे मुनिचन्द्र के पुत्र सागरचंद्रवत् २ अन्यस्थान लेजाकर दीक्षादेवे × ३ परवश पना से मुक्त कराके दीक्षादेवे, ४ भोजन घृतादिक की लालच बताकर दीक्षादेवे । चार प्रकार की प्रवर्ज्या कही १ नटवत् दीक्षा ग्रहण करे—वैराग्य रहित उदर पोषणार्थ धर्मदेशना करे २ सुभटवत् तथाविध बल बतलाकर भोजन करे ३ सिंहवत् सिंहकी समान बल बतलाकर उदरपोषण करे ४ शृगाल समान शियाल जैसे गरिबाइ से उदर पोषण करे । चार प्रकार की कृषि कही १ एक वक्त बोने से ऊगे गेहुं चने २ उखाडकर दुसरी वक्त बोनेसे ऊगे शालिप्रमुख ३ बहु वक्त निंदनेसे ऊगे ४ वारंवार निंदनेसे ऊगे, इसी तरह चार प्रकार की प्रवर्ज्या कही १ एक ही वक्त दीक्षालेवे सामायिक चारित्र (बाइस तीर्थंकर के

× दोषों से मुक्त कर दीक्षादेवे. ऐसा भी अर्थ कितनेक करते हैं.

निंदनेसे ऊगे प० वार वार निंदनेसे ऊगे. च० चार प्रकारकी प० प्रवर्ज्या ध० धान्य पु० शुद्ध समान ध० धान्य वि० विस्तृत समान ध० धान्य वि० विकीर्ण समान ध० धान्य सं० संकर्षित समान ॥ २२ ॥ च० चार स० संज्ञा प० कही आ० आहार संज्ञा भ० भयसंज्ञा मे० मैथुनसंज्ञा प० परिग्रहसंज्ञा च० चार कारनसे आ० आहार संज्ञा स० उत्पन्न होती है ओ० खाली

या । चउव्विहा पव्वज्जा प० तं० धण्णपुंजियसमाणा, धण्णविरल्लियसमाणा धण्ण-विक्खित्तसमाणा, धण्णसंकट्टियसमाणा ॥ २२ ॥ चत्तारि सण्णाओ पण्णत्ताओ तं० आहारसण्णा, भयसण्णा, मेहुणसण्णा, परिग्गहसण्णा । चउहिंठाणेहिं आहारसण्णा

वारे के साधु)२ वारंवार दीक्षा सो छेदोपस्थापनीय चारित्र ३ एक वक्त आलोचना कर शुद्ध होवे फीर पापकरे नहीं ४ वारंवार अतिचार लगावे और प्रायश्चित लेवे. और भी चार प्रकार की प्रवर्ज्या कही १ खले में शुद्ध कर धान्य का ढगकीया वैसी प्रवर्ज्या अतिचार रहित २ खले में वायु से विस्तृत हुवा धान्य जैसी थोडे उपदेश से शुद्ध होवे ३ खले में बैलोंके पगतल नीचे रहे हुवे धान्य जैसी कालान्तर में शुद्ध होवे और ४ खेत में से खले में लाये धान्य जैसी प्रवर्ज्या बहुत अतिचार वाली ॥ २२ ॥ चार प्रकार की संज्ञा कही आहार संज्ञा, भयसंज्ञा, मैथुन संज्ञा, और परिग्रह संज्ञा । जीव को चार स्थानक में आहार लेने की इच्छा उत्पन्न होवे १ उदर खाली होने से २ क्षुधा वेदनीय के उदय से ३ मति से आहार की बात

शब्दार्थ

उदरसे छु० क्षुधावेदनीय क० कर्मके उ० उदयसे म० बुद्धिसे [आहार की बात सुननेसे] त० उसके लिये उ० उपयोगसे । च० चार कारनसे भ० भयसंज्ञा स० उत्पन्न होती है ही० हीनसत्वसे भ० भयवेदनीय क० कर्मके उ० उदयसे म० मतिसे. त० उसकेलिये उ० उपयोगसे च० चार कारणसे मे० मैथुनसंज्ञा स० उत्पन्न होती है चि० संचित मं० मास सो० रुधिरसे मो० मोहनीयकर्मके उ० उदयसे म० मतिसे त० उसके लिये उपयोगसे च० चार कारणसे प० परिग्रह संज्ञा स० उत्पन्न होती है अ० अविमुक्त होनेसे लो० लोभवेद

सूत्र

समुप्पज्जइ तं० ओमकोट्ठयाए, छुहावेयणिज्जस्स कम्मस्स उदएणं, मईए, तदट्ठोवओगेणं ॥ चउहिं ठाणेहिं भयसण्णा समुप्पज्जइ तं० हीणसत्तयाए, भयवेयणिज्जस्स कम्मस्स उदएणं, मईए, तदट्ठोवओगेणं । चउहिंठाणेहिं मेहुणसण्णा समुप्पज्जइ तं० चित्तमंससोणियाए, मोहणिज्जस्सकम्मस्सउदएणं, मईए, तदट्ठोवओगेणं । चउहिं ठाणेहिं परि-

भावार्थ

सुनने से ४ और निरंतर आहार की चिन्तवना करने से । चार प्रकार से भय संज्ञा उत्पन्न होवे १ हीन सत्वपना से अर्थात् बल रहित अशक्त होने से २ भयवेदनी कर्म के उदय से ३ मति से भयकी बात करने से और ४ निरंतर भयकी चिन्तवना करने से । मैथुन संज्ञा चार स्थानक में उत्पन्न होवे १ मांस लोही के बढने से २ मोहनीय कर्म के उदय से ३ मैथुन की कथा सुनने से और ४ उसका निरंतर चिन्तवन करने से । चार स्थानक में परिग्रह संज्ञा उत्पन्न होवे १ भंडोपकरण से मुक्त नहीं होने से २ लोभ

शब्दार्थ

नीयकर्मके उ० उदयसे म० मतिसे त० उसके उपयोगसे ॥ २३ ॥ च० चार प्रकार के का० काम सिं० शृंगार क० करूणा वी० बीभत्स रो० रौद्र सिं० शृगारकाम दे० देवताओंको क० करुणा काम म० मनुष्यको वी० बीभत्स काम ति० तिर्यंचयोनिवालेको रो० रौद्र काम णे० नारकी को ॥ २४ ॥ च० चार प्रकार के उ० पानी उ० उत्तान (तुच्छ) ए० एक उ० उत्तानोदक उ० उत्तान ए० एक गं०

सूत्र

ग्गहसण्णा समुप्पज्जइ तं० अविमुत्तयाए,लोभवेयाणिज्जस्स कम्मस्स उदएणं,मईए,तदट्ठोव-ओगेणं ॥ २३ ॥ चउव्विहा कामा प० तं० सिंगार, कलुणा, वीभच्छा, रोद्दा । सिंगारा कामा देवाणं, कलुणा कामा मणुयाणं बीभच्छा कामा तिरिक्ख जोणियाणं, रोद्दा-कामा णेरइयाणं ॥ २४ ॥ चत्तारि उदगा प० तं० उत्ताणे णाममेगे उत्ताणोदए, उत्ता-णे णाममेगे गंभीरोदए, गंभीरे णाममेगे उत्ताणोदए, गंभीरे णाममेगे गंभीरोदए । एवा-

भावार्थ

वेदनीय के उदय से ३ परिग्रह की बात मति से सुनने से और ४ निरंतर उसका चिन्तवन करने से ॥ २३ ॥ चार प्रकार के काम कहे हैं १ शृगांर २ करुणा, ३ बीभत्स और ४ रौद्र. उस में से शृंगार काम देवों को, करुणा मनुष्यों को, बीभत्स तिर्यंचयोनिवाले को और रौद्र नारकी के जीवों को ॥ २४ ॥ चार प्रकार के पानी कहे. १ एक उत्तान (तुच्छ) पानी और उत्तान (तुच्छ) दीखता है २ एक है तो थोडा पानी परंतु उंडा होने से गंभीर दीखता है ३ एक बहुत पानी वाला है परंतु चौडा होने से

शब्दार्थ

गंभीर गं० गंभीर ए० एक उ० उत्तानोदक गं० गंभीर ए० एक गंभीरोदक ए० ऐसेही च० चार पु० पुरुष जात प० कही उ० उत्तान ए० एक उ० उत्तानहृदय। च० चार उ० पानी उ० उत्तान ए० एक उ० उत्तानभासी गं० गंभीरभासी ए० ऐसेही च० चार पु० पुरुषजात च० चार उ० उदधि उ० उत्तान ए० एक उ० उत्तानोदधि ए० ऐसेही च० चार पु० पुरुष जात उ० उत्तान ए० एक उ० उत्तान हृदय

सूत्र

मेव चत्तारि पुरिस जाया प० तं० उत्ताणे णाममेगे उत्ताणहियए, उत्ताणे णाममेगे गंभीरहियए,४। चत्तारि उदगा प० तं० उत्ताणे णाममेगे उत्ताणभासी, उत्ताणे णाममेगे गंभीरोभासी,४। एवामेव चत्तारि पुरिस जाया प० तं० उत्ताणे णाममेगे उत्ताणभासी, उत्ताणेणाममेगे गंभीरोभासी,४। चत्तारि उदही प० तं० उत्ताणे णा-

भावार्थ

से तुच्छ दीखता है ४ एक बहुत पानी वाला है और गंभीर दीखता है. वैसेही चार प्रकार के पुरुष कहे हैं १ एक का बोलना तुच्छ है और हृदय भी तुच्छ है २ एक मनुष्य का बोलना गंभीर परंतु हृदय तुच्छ यों चौभंगी. और भी चार प्रकार के पानी कहे हैं. १ उत्तान नामा एक जल उत्तान अवभासे स्थान विशेष २ एक उत्तान है परंतु गंभीर दीखता है यों चार भांगे जानना. वैसेही चार पुरुष कहे हैं:- एक पुरुष का नाम भी तुच्छ और हृदय भी तुच्छ २ एक पुरुष का नाम गंभीर और हृदय तुच्छ यों चार भांगे जानना. चार प्रकार के समुद्र कहे हैं:-एक समुद्र में पानी अल्प और दीखने में भी तुच्छ २ एक समुद्र

शब्दार्थ

च० चार उ० उदधि उ० उत्तान उ० उत्तानभासी ए० ऐसे च० चार पु० पुरुष जात उ० उत्तान ए० एक उ० उत्तान भासी ॥ २५ ॥ च० चार त० तीरने वाले स० समुद्र त० तीरुं ए० एक स० समुद्र त० तीरते हैं स० समुद्र त० तीरुं ए० एक गो० गोपपद त० तीरे ४। च० चार त० तीरनेवाले स० समुद्र त० तीरुंगा ए०एक स० समुद्रमें वि०प्रवेशकरे स० समुद्र त०तीरुंगा ए०कितनेक गो०गोपपदमें वि०प्रवेश करे

सूत्र

ममेगे उत्ताणोदही, उत्ताणे णाममेगे गंभीरोदही, ४। एवामेव चत्तारि पुरिस जाया प० तं० उत्ताणे णाममेगे उत्ताणहियए ४। चत्तारि उदधी प०तं० उत्ताणे णाममेगे उत्ताणभासी, उत्ताणे णाममेगे गंभीरोभासी, ४। एवामेव चत्तारि पुरिस जाया प० तं० उत्ताणेणाममेगे उत्ताणोभासी, ४ ॥२५॥ चत्तारि तरगा प० तं० समुद्दं तरामी एगे समुद्दं तरइ, समुद्दं तरामी एगे गोपतं तरइ, गोपतं तरामी एगे ४, । चत्तारि तरगा प० तं० समुद्दं-

भावार्थ

में पानी तुच्छ और दीखने में गंभीर यों चौभंगी. ऐसेही चार प्रकार के पुरुष कहे हैं:-एक मनुष्य दीखने में तुच्छ और स्वभाव का भी तुच्छ यों चार भांगे जानना. और भी चार प्रकार के समुद्र १ एक नाम का उत्तान और उत्तान दीखता है यों चार भांगे जानना. वैसेही चार प्रकार के पुरुष कहे हैं. ॥ २५ ॥ चार प्रकार के तरक (तीरने वाले) कहे १. एक तीरने वाला मैं समुद्र तीरुं ऐसा चिन्तवे और समुद्र भी

शब्दार्थ

॥ २६ ॥ च० चार कुं० कुंभ प० पूर्ण ए० एक पु० पूर्ण पु० पूर्ण ए० एक तु० तुच्छ ४ ए० ऐसेही च० चार पु० पुरुष जात । च० चार कुं० कुंभ (घडे) पु० पूर्ण ए० एक पु० पूर्णभासी पु० पूर्ण ए० एक तु० तुच्छ भासी ए० ऐसे च० चार पु० पुरुष जात । च० चार कुं० कुंभ पु० पूर्ण ए० एक पु० पूर्णरूप पु० पूर्ण ए० एक तु० तुच्छरूप ४ । ए० ऐसेही च० चार पु० पुरुष जात च० चार कुं०

सूत्र

तरित्ता णाम मेगे समुद्दे विसीयइ, समुद्दं तरेत्ता णाममेगे गोपपए विसीयइ, ४ ॥२६॥

चत्तारि कुंभा प०तं० पुण्णे णाममेगेपुण्णे, पुण्णे नाममेगे तुच्छे, तुच्छे णाममेगे पुण्णे, तुच्छे णाममेगे तुच्छे । एवामेव चत्तारि पुरिस जाया प०तं० पुण्णे णाममेगे पुण्णे ४। चत्तारि कुंभा प० तं० पुण्णे णाममेगे पुण्णोभासी, पुण्णेणाममेगे तुच्छोभासी, ४ ।

भावार्थ

तीरे २ एक तीरने वाला समुद्र तीरुं ऐसा चिन्तवे परंतु गोपपद[1] तीरे यों चार भांगे. और भी चार प्रकार के तीरने वाले कहे १ समुद्र में तीरने का कहकर समुद्र में प्रवेश करे २ समुद्र तीरुं ऐसा कहकर गोपपद में प्रवेश करे यों चार भांगे ॥ २६ ॥ चार प्रकार के कुंभ कहे हैं १ एक कुंभ का नाम भी पूर्ण और घृतादि से भी परिपूर्ण २ एक कुंभका नाम पूर्ण और घृतादि से तुच्छ ३ एक कुंभका नाम तुच्छ और घृतादि से परिपूर्ण ४ एक कुंभका नाम तुच्छ और घृतादि से भी तुच्छ. ऐसेही चार प्रकार के पुरुष

१ गोपपद गाय का पांव डुबे जितना पानी.

शब्दार्थ

कुंभ पु० पूर्ण ए० एक पि० प्रिय पु० पूर्ण ए० एक अ० असार तु० तुच्छ ए० एक पि० प्रिय तु० तुच्छ ए० एक अ० असार ए० ऐसेही च० चार पु० पुरुष जात च० चार कुं० कुंभ पु० पूर्ण ए० एक वि० स्रवता है ए० ऐसेही च० चार पु० पुरुष जात त० तैसे। च० चार कुंभ भि० फूटा ज० जरजरा प० क-

सूत्र

एवामेव चत्तारि पुरिस जाया प० तं० पुण्णे णाममेगे पुण्णोभासी, ४। चत्तारि कुंभा प० तं० पुण्णेणाममेगे पुण्णरूवे, पुण्णेणाममेगे तुच्छरूवे, ४। एवामेव चत्तारि पुरिस जाया प० तं० पुण्णेणाममेगे पुण्णरूवे। चत्तारि कुंभा प० तं० पुण्णेवि एगे पियट्ठे, पुण्णेवि एगे अवदले, तुच्छेवि एगे पियट्ठे, तुच्छेविएगे अवदले। एवामेव चत्तारि

भावार्थ

कहे हैं:- एक पुरुष का नाम पूर्ण है और सद्गुणों से परिपूर्ण है; ऐसे चार भांगे जानना. और भी चार प्रकार के कुंभ कहे है १ एक नाम से पूर्ण है और घृतादि से सुशोभित दीखता है २ एक नाम से पूर्ण है परंतु घृतादि रहित दीखता है यों चार भांगे जानना. ऐसेही चार प्रकार के पुरुष कहे हैं एक पुरुष का नाम पूर्ण है और धनादि से परिपूर्ण दीखता है यों चौभंगी जानना. और भी चार प्रकार के पुरुष कहेः-एक कुंभ पूर्ण है और पूर्णरूप (सुंदराकार) है २ एक पूर्ण है परंतु रूप में हीन है यों चौभंगी जानना. ऐसेही चार प्रकार के पुरुष कहे हैं १ एक पुरुष ज्ञानादिक से पूर्ण है और पूर्णरूप है यों चौभंगी जानना. और भी चार प्रकार के कुंभ कहे हैं १ एक कुंभ पूर्ण है और सुवर्ण का

शब्दार्थ चा अ० पक्का ए० ऐसेही च० चारप्रकारके च० चारित्र च० चार कुं० कुंभ म० मधुकुंभ ए० एक म० मधुकाठक्कनवाला म० मधुकुंभ ए० एक वि० विषकाढक्कनवाला वि० विषकुंभ ए० एक म० मधुकाढक्कनवाला वि० विषकुंभ ए० एक वि० विषकाढक्कन ए० ऐसेही च० चारपुरुषजात। हि० हृदय

सूत्र पुरिस जाया प० तं० पुण्णेविएगे पियट्ठे, तहेव ॥ चत्तारि कुंभा प० तं० पुण्णेविएगे विस्संदइ, पुण्णेविएगेणो विस्संदइ, तुच्छेविएगे विस्संदइ, तुच्छे विएगे णो विस्संदइ।एवामेव चत्तारि पुरिस जाया प० तं० पुण्णेविएगेविस्संदइ ४ तहेव। चत्तारि कुंभा प० तं० भिन्ने, जज्जरिए, परिस्साई, अपरिस्साई। एवामेव चउव्विहे चरित्ते

भावार्थ बना हुआ होने से प्रिय है २ एक कुंभ पूर्ण है परंतु मृत्तिका का होने से पक्व नहीं हुआ है ३ एक तुच्छ आकार वाला है परंतु सुवर्ण का होने से प्रिय है और ४ एक तुच्छ आकार वाला है और तुच्छ मृत्तिका का बना हुआ है. ऐसेही चार प्रकार के पुरुष कहे हैं:-एक ज्ञानादिकसे पूर्ण है और प्रिय है यों चौभंगी जानना. और भी चार प्रकार के कुंभ एक कुंभ पूर्ण है परंतु पानी नीकलताहै २ एक पूर्ण है और पानी नहीं नीकलताहै ३ एक तुच्छहै और पानी नीकलता है, और ४ एक तुच्छ है परंतु पानी नहीं नीकलता है. ऐसेही चार प्रकारके पुरुष कहे हैं १ एक पुरुष ज्ञान धनादिकसे पूर्ण है और स्वत्रताहै अर्थात दातार है २ एक ज्ञान धनादिक से पूर्ण है परंतु दातार

शब्दार्थ

अ० पापरहित अ० कालुष्यतारहित जी० जिव्हाभी म० मधुरबोलनेवाली णि० नित्य जं० जिस पु० पुरुषमें वि० होतीहै से० वह म० मधुकुंभ म० मधुकाढक्कनवाला ह० हृदय अ० अपापी अ० कालुष्यता रहित जी० जिव्हा क० कटुबोलनेवाली जं० जिसपुरुषमें वि० विद्यमानहै से० वह म० मधुकुंभ वि० वि-

सूत्र

प० तं० भिन्ने जाव अपरिस्साई । चत्तारि कुंभा प० तं० महुकुंभे णाममेगे महुप्पिहाणे, महुकुंभे णाममेगे विसप्पिहाणे, विसकुंभे णाममेगे महुप्पिहाणे, विसकुंभे णाममेगे विसप्पिहाणे । एवामेव चत्तारि पुरिस जाया प० तं० मधुकुंभेणाममेगे मधुप्पिहाणे, ४ ॥ हियय मपाव मकलुसं । जीहावियमधुर भासिणी णिच्चं ॥ जंमि

भावार्थ

नहीं हैं ३ एक ज्ञान धनादिक से रहित है परंतु दातारहै, और ४ एक ज्ञान धनादिक से रहित है और दातार भी नहीं है. और चार प्रकार के कुंभ कहे हैं १ फटा, २ जरजरा ३ अपक्व और ४ पक्व. ऐसेही चार चारित्र कहे हैं १ एक दीक्षा का भंग करने वाला, २ एक छेदलेने वाला, ३ सूक्ष्म अतिचार वाला और ४ निरतिचारी. और भी चार प्रकार के कुंभ कहे हैं १ एक कुंभ मधु (शहत) का है और उसका ढक्कन भी मधुका है २ एक मधुका है और विषका ढक्कन है ३ एक विषका कुंभ है और ढक्कन मधुका है और ४ एक विषका कुंभ है और विषका ही ढक्कन है. ऐसेही चार प्रकार के पुरुष कहे हैं १ जो पुरुष पाप रहित और मधुर भाषी है सो मधु कुंभ और मधु काही ढक्कन वाला गिना जाता

शब्दार्थ

षकाढक्कन जं० जो हि० हृदय क० कालुष्यतामय जि० जिव्हा म० मधुरभाषिणी णि० नित्य जं० जिस पु० पुरुषमें वि० विद्यमानहै से० वह वि० विषकुंभ म० मधुकाढक्कन जं० जिसका हि० हृदय क० कालुष्यतामय जी० जिव्हाभी क० कटुभाषिनी णि० नित्य जं० जिस पुरुषमें वि० विद्यमान है से० वह वि० विषकुंभ वि० विषका ढक्कन ॥ २७ ॥ च० चार प्रकारके उ० उपसर्ग दि० देवता को मा० मनुष्य के

सूत्र

पुरिसंमि विज्जइ, से मधुकुंभे मंहुपिहाणे ॥ १ ॥ हिययपाव मकलुसं, जीहाविय कडुय भासिणी णिच्चं; जंमिपुरिसंमि विज्जइ, से मधुकुंभे विसपिहाणे ॥२॥ जं हिययं कलुसमयं, जीहाविय महुरभासिणी णिच्चं; जंमि पुरिसंमि विज्जइ, से विसकुंभे मधुपिहाणे ॥ ३ ॥ जं हिययं कलुसमयं, जीहाविय कडुगभासिणी णिच्चं; जम्मिपुरिसंमि विज्जइ, से विसकुंभे विसापेहाणे ॥४॥ २७ ॥ चउव्विहा उवसग्गा प० तं० दिव्वा, माणुसा,

भावार्थ

है २ जिस पुरुष का हृदय पाप रहित है परंतु मिष्ट भाषी नहीं है वह मधु कुंभ और विषका ढक्कन वाला गिना जाता है ३ जिस पुरुष का हृदय पापिष्ट है परंतु मधुर भाषावाला है वह विषका कुंभ और मधुका ढक्कन वाला गिना जाता है ४ जिसका हृदय पापिष्ट है और मधुर भाषा भी नही वह विषका कुंभ और विषका ही ढक्कन वाला गिना जाता है. ॥ २७ ॥ चार प्रकार के उपसर्ग कहे हैं १ देवाता के उपसर्ग, २ मनुष्य

शब्दार्थ

ति० तिर्यंचके आ० आत्म सं० संवेदनीय। दि० देवता के उ० उपसर्ग च० चार प्रकारके हा० हास्य प० द्वेष वी० ईर्षा पु० विविध प्रकारके मा० मनुष्य के उ० उपसर्ग च० चार प्रकारके हा० हास्य प० द्वेष वी० ईर्षा कु० कुशील सेवने का। ति० तिर्यंचके उ० उपसर्ग च० चार प्रकारके भ० भय प० द्वेष आ० आहारके लिये अ० अपत्य (बालक) सा० रक्षाके लिये आ० आत्म संवेदनीय उ० उपसर्ग च० चार

सूत्र

तिरिक्खजोणिया, आयसंवेयणिया. दिव्वा उवसग्गा चउव्विहा प० तं० हासा, प्पओसा, वीमंसा, पुढोवेमाया. । माणुस्सा उवसग्गा चउव्विहा प० तं० हासा, प्पओसा, वीमंसा, कुसील पडिसेवणया । तिरिक्खजोणिया उवसग्गा चउव्विहा प० तं० भया, पदोसा, आहारहेउ, अवच्चलेण सारक्खणया । आयसंवेयणिज्जा उवसग्गा चउव्विहा

भावार्थ

के, ३ तिर्यंच के और ४ स्वतःने उत्पन्न किये हुवे, आत्मघातादि. उस में से देवता के उपसर्ग चार प्रकार के कहे हैं १ हास्य से देवता उपसर्ग करे २ द्वेष से उपसर्ग करे, ३ ईर्षा से उपसर्ग देवे ४ विविध प्रकार से उपसर्ग देवे। मनुष्य के उपसर्ग चार प्रकार के हास्य से, द्वेष से, ईर्षा से, और कुशील सेवने से. तिर्यंच के उपसर्ग चार प्रकार के. भय से, प्रद्वेष से, आहार के लिये, और अपने बच्चेका रक्षण के लिये। आत्म संवेदनीय उपसर्ग चार प्रकार के १ संघटन से अर्थात् आंख में रज पडी होवे उसे हाथ से घसने से वेदना होवे सो २ गिरने से वेदना होवे सो ३ सोते उठते पांवादि स्तंभित होजावे सो. और ४ वायु वगैरह से

१ संगमने महावीर स्वामी को उपसर्ग दिये २ गोशालाने ईर्षासे महावीर स्वामी को उपसर्ग दिये.

प्रकारके ध० संघट्टनसे प० गिरने से थं० स्तब्ध होनेसे ले०, श्लिष्मता से ॥ २८ ॥ च० चार प्रकारके क० कर्म सु० शुभ ए० कितनेक सु० शुभ सु० शुभ ए० कितनेक अ० अशुभ ४ । च० चार प्रकारके क० कर्म सु० शुभ ए० कितनेक सु० शुभ विपाक सु० शुभ ए० कितनेक अ० अशुभ विपाक ४ । च० चार

प० तं० घट्टणया, पवडणया, थंभणया, लेसणया ॥ २८ ॥ चउव्विहे कम्मे प० तं० सुभेणामं एगेसुभे, सुभेणामंमेगे असुभे, असुभे० ४ । चउव्विहे कम्मे प० तं० सुभेणामं एगे सुभविवागे, सुभेणामंएगे असुभविवागे, असुभेणाममेगे सुभविवागे, असुभेणाममेगे असुभविवागे, ॥ चउव्विहे कम्मे प० तं० पगडीकम्मे, ट्ठिईकम्मे,

पांव आदि अगं रहजाय सो ॥ २८ ॥ चार प्रकार के कर्म कहे १ एक कर्म शुभ पुण्य प्रकृतिरूप और भावि में भी शुभफल देने वाला सुबाहु कुमारवत् २ शुभ कर्म होकर अशुभ फल देवे संभूम चक्रीवत् ३ अशुभ कर्म होने पर शुभफलदेवे हृकेश मुनिवत् और ४ अशुभ कर्म होकर अशुभ फल देवे कालकशौकरीकवत् और भी चार प्रकार के कर्म कहे हैं १ एक शुभ कर्म पहिले बांधते समय सुखदेवे और उदय काल में भी सुखदेवे २ एक बांधते समय शुभ परंतु उदय काल में अशुभ कर्म आजाने से अशुभ फलदेवे ३ एक बांधते समय अशुभ परंतु उदय काल में शुभ कर्म आजाने से शुभ फल देवे ४ एक बांधते समय अशुभ और उदय काल में भी अशुभ. और भी चार प्रकार के कर्म कहे हैं १ प्रकृति-कर्मों का स्वभाव २ स्थिति कर्म ३

शब्दार्थ

प्रकारके क० कर्म प० प्रकृति कर्म ठ० स्थिति कर्म अ० अनुभाव कर्म प० प्रदेश कर्म ॥ २९ ॥ च० चार प्रकारके सं० संघ स० साधु स० साध्वी सा० श्राविक सा० श्राविका ॥ ३० ॥ च० चार प्रकार की बु० बुद्धि उ० औत्पातिकी वे० वैनयिकी क० कार्मणकी पा० पारिणामिकी च० चार प्रकारकी म० मति ओ० अवग्रहमति ई० ईहा अ० अवाय धा० धारणा अ० अथवा च० चार प्रकारकी म० मति अ० कुंभ

सूत्र

अणुभावकम्मे, पदेसकम्मे ॥ २९ ॥ चउव्विहे संघे प० तं० समणा, समणीओ, सावगा, साविगाओ ॥ ॥ ३० ॥ चउव्विहा बुद्धी प० तं० उप्पइया, वेणइया, कम्मिया, पारिणामिया ॥ चउव्विहामई प० तं० ओग्गहमई, ईहामई, अवायमई, धारणा-

भावार्थ

अनुभाग कर्म-कर्मोंका रस और ४ प्रदेश कर्म पुद्गलोंकादल. ॥ २९ ॥ चार प्राकारके संघ कहे हैं:-साधु, साध्वी, श्रावक, और श्राविका ॥ ३० ॥ चार प्राकारकी बुद्धि कही, औत्पातिकी अपूर्वतर्क २ वैनयिकी विनय से उत्पन्न होवे ३ कार्मणि की कर्म करने से उत्पन्न होवे ४ पारिणामिकी वय पकने से उत्पन्न होवे। चार प्रकार की मति कही १ अवग्रह सो प्रथम वस्तु ग्रहण २ ईहा सो वस्तु विचारना ३ वस्तुका निश्चय करना सो अवाय और ४ वस्तु को धारण करना सो धारणा। और भी चार प्रकार की मति कही १ अलंजर सो पाबी के गडे समान बहुत अर्थ ग्रहण करसके नहीं २ विदुरोदक (कुवे के पानी) समान नये २

शब्दार्थ का उ० पानी समान बि० बिदुरोदक समान स० सरोवरके उ० पानी समान सा० सागरका उ० पानी समान ॥ ३१ ॥ च० चार प्रकारके सं० संसारको स० प्राप्त जी० जीवों णे० नारकी ति० तिर्यंच म० मनुष्य दे० देव च० चार प्रकारके स० सब जी० जीव म० मनयोगी व० वचन योगी का० काय योगी अ० अयोगी अ० अथवा च० चार प्रकारके स० सब जीव इ० स्त्रीवेदक पु० पुरुषवेदक ण० नपुंसक

सूत्र मई । अहवा चउव्विहामई प० तं० अरंजरोदग समाणा, बियरोदग समाणा, सरोदगसमाणा, सागरोदगसमाणा ॥ ३१ ॥ चउव्विहा संसार समावन्नगा जीवा प० तं० णेरइया, तिरिक्ख जोणिया, मणुस्सा, देवा । चउव्विहा सव्वजीवा प० तं० मणजोगी, वयजोगी कायजोगी, अजोगी. । अहवा चउव्विहा सव्वजीवा प० तं०

भावार्थ अर्थ ग्रहण करे ३ सर (तलाव) के पानी समान बहुत पानी की आवक जावक रहे और लोगों को उपकारी होवे ३ समुद्र के पानी समान सब पदार्थ विशेष जाने अखुट बुद्धि महा ज्ञानी ॥ ३१ ॥ चार प्रकार के संसारी जीव कहे १ नारकी २ तिर्यंच ३ मनुष्य और ४ देवता । सब जीव चार प्रकार के हैं:-मनयोगी, वचनयोगी. काययोगी, और अयोगी. अथवा चार प्रकार के जीव स्त्रीवेदी, पुरुषवेदी नपुंसक वेदी, और अवेदी. और भी सब जीव चार प्रकार के चक्षुदर्शनी, अचक्षुदर्शनी, अवधि दर्शनी, और केवल दर्शनी. अथवा

शब्दार्थ — वेदक अ० अवेदक अ० अथवा च० चार प्रकारके स० सब जीव च० चक्षुदर्शनी अ० अचक्षुदर्शनी ओ० अवधि दर्शनी के० केवल दर्शनी अ० अथवा च० चार प्रकारके स० सब जीव सं० संजती अ० असंजती सं० संजता संजती णो० नहीं संजता संजती ॥ ३२ ॥ च० चार पु० पुरुषजात मि० मित्र ए० कितनेक मि० मित्र मि० मित्र ए० कितनेक अ० अमित्र [शत्रु] च० चार पु० पुरुषजात मि० मित्र ए० कितनेक

सूत्र — इत्थिवेयगा, पुरिसवेयगा, णपुंसकवेयगा, अवेयगा। अहवा चउव्विहा सव्वजीवा प० तं० चक्खुदंसणी, अचक्खुदंसणी, ओहिदंसणी, केवलदंसणी। अहवा चउव्विहा सव्व जीवा प० तं० संजया, असंजया, संजयासंजया, णोसंजयासंजया ॥ ३२ ॥ चत्तारि पुरिस जाया प० तं० मित्तेनाममेगेमित्ते, मित्तेनाममेगे अमित्ते, अमित्ते नाममेगे मित्ते, अमित्ते नाममेगे अमित्ते। चत्तारि पुरिस जाया प० तं० मित्तेणाममेगे मित्त-

भावार्थ — चार प्रकार के जीवः-संजती, असंजती, संजतासंजती, नोसंजतासंजती ॥ ३२ ॥ चार प्रकार के पुरुष कहे १ एक नाम भी मित्र है और कर्तव्य भी मित्र है सद्गुरुवत् इहलोक परलोक को उपकारी २ एक यहां तो मित्र है परंतु आगे दुःखप्रद है स्त्रियादिवत् ३ एक यहां शत्रु है परंतु आगे मित्र है हित शिक्षा देनेवाले गुरु ४ एक इहलोक और परलोक को दुःखदायी है क्लेशी संबन्धी ॥ ३३ ॥ और भी चार प्रकार के पुरुष

शब्दार्थ

मि० मिश्ररूप ॥ ३३ ॥ च० चार पु० पुरुषजात मु० मुक्त ए० कितनेक मु० मुक्त मु० मुक्त ए० कितनेक अ० अमुक्त च० चार पु० पुरुषजात मु० मुक्त ए० कितनेक मु० मुक्तरूप ॥ ३४ ॥ पं० पंचेन्द्रिय ति० तिर्यंच च० चार गतिवाले च० चार आगतिवाले पं० पंचेन्द्रिय ति० तिर्यंच पं० पंचेन्द्रिय तिर्यंच में उ० उत्पन्न होते णे० नारकी में से ति० तिर्यंच में से म० मनुष्य में से दे० देव में से उ० उत्पन्न होवे से० वही पं० पंचेन्द्रिय तिर्यंच पं० पंचेन्द्रिय तिर्यंचपना वि० त्यजते णे० नारकीपने जा० यावत् दे० देवपने उ०

सूत्र

रूवे चउभंगो॥ ३३॥ चत्तारि पुरिस जाया प० तं० मुत्तेणाममेगे मुत्ते, मुत्ते णाममेगे अमुत्ते० । चत्तारि पुरिस जाया प० तं० मुत्तेणाममेगे मुत्तरूवे, ४ ॥ ३४ ॥ पंचेंदिय तिरिक्खजोणिया चउगइया चउआगइया प० तं० पंचेंदियतिरिक्खजोणिए पंचेंदियतिरिक्ख जोणिएसु उववज्जमाणे णेरइएहिंतो वा तिरिक्खजोणिएहिंतो वा, मणुस्सेहिंतोवा, देवेहिंतोवा, उववज्जेज्जा; सेचेवणं से पंचेंदियतिरिक्खजोणिए पंचिंदियतिरिक्खजोणियं विप्पजहयमाणे णेरइयत्ताए जाव देवत्ताए उवागच्छेज्जा ॥ मणुस्सा चउगइया चउआगइया एवं

भावार्थ

कहे १ एक मुक्त पुरुष और मुक्तरूप अर्थात् साधुवेश सहित यों चौभंगी जानना ॥ ३४ ॥ पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिवाले जीवको चार आगति व चार गति कही. पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनि में उत्पन्न होने वाला जीव नारकी, तिर्यंच मनुष्य, और देवता में से आकर उत्पन्न होता है; और उसमें से निकलकर नारकी, तिर्यंच, मनुष्य, और देवत

शब्दार्थ

उत्पन्न होवे म० मनुष्य च० चारगतिवाले च० चार आगतिवाले ए० ऐसे म० मनुष्य का ॥ ३५ ॥ बे० बेइन्द्रिय जीव का अ० आरंभ नहीं करनेवाले को च० चार प्रकारका सं० संयम क० करता है जि० जिव्हाके विकारों के सो० सुखसे अ० दूर नहीं होना भ० होवे जि० जिव्हाके दुःख का अ० संयोग नहीं पावना भ० होवे फा० स्पर्शमय सु० सुख से अ० दूर नहीं होना भ० होवे फा० स्पर्शमय दुःख के अ०

सूत्र

चेवमणुस्सावि. ॥ ३५ ॥ बेइंदियाणं जीवा असमारंभमाणस्स चउव्विहे संजमे कजइ तं० जिब्भामयाओ सोक्खाओ अववरोवेत्ता भवइ, जिब्भामएणं दुक्खेणं असंजोगेत्ता भवइ, फासामयाओ सोक्खाओ अववरोवेत्ता भवइ, फासामयाओ दुःखाओ असंजोगेत्ता भवइ, । एवं चेव बेइंदिया जीवा सामरंभमाणस्स चउव्विहे असंजमे कजइ, जिब्भामयाओ सोक्खाओ ववरोवित्ता भवइ, जिब्भामएणं दुक्खेणं संजोगेत्ता

भावार्थ

में उत्पन्न होवे. वैसेही मनुष्य की चार गति और चार आगति तिर्यंच पंचेन्द्रिय जैसे कहना ॥ ३५ ॥ बेइन्द्रिय जीव का आरंभ नहीं करने वाले को चार प्रकार का संयम कहा है १ जिव्हेन्द्रिय के सुख से रहित होवे नहीं २ जिव्हेन्द्रिय के दुःख होवे नहीं ३ स्पर्शेन्द्रिय के सुख से रहित होवे नहीं और ४ स्पर्शेन्द्रिय के दुःख होवे नहीं. वैसेही बेइन्द्रिय जीव का आरंभ करने वाले को चार प्रकार का असंयम कहा है ।

शब्दार्थ

सजोग नहीं मिलाना भ० होवे ए० ऐसेही बे० बेइन्द्रिय जीव का स० समारंभ करनेवाले को च० चार प्रकारका अ० असंयम क० करता है ॥ ३६ ॥ स० सम्यक् दृष्टि णे० नारकी को च० चार कि० क्रिया प० कही आ० आरंभिकी प० परिग्रहिकी मा० मायाप्रत्ययिकी अ० अप्रत्याख्यानिकी स० सम्यक् दृष्टि अ० असुरकुमार को च० चार कि० क्रिया ए० ऐसेही ए० ऐसे वि० विकलेन्द्रिय व० छोडकर जा० यावत् वे० वैमानिकको ॥ ३७ ॥ च० चार कारन से सं० होते हुवे गु० गुणों णा० नष्ट होवे को० क्रोधसे

सूत्र

भवइ, फासामयाओ सोक्खाओ ववरोवित्ता भवइ, फासामएणं दुक्खेणं संजोगेत्ता भवइ, ॥ ३६ ॥ सम्मदिट्ठियाणं णेरइयाणं चत्तारि किरियाओ पण्णत्ताओ तं० आरंभिया, परिग्गहिया, मायावत्तिया, अप्पच्चक्खाणकिरिया। सम्मदिट्ठियाण मसुरकुमाराणं चत्तारि किरियाओ एवंचेव। एवं विगलिंदियवज्जं जाव वेमाणियाणं ॥३७॥ चउहिं ठाणेहिं संते

भावार्थ

जिव्हाके सुख मिले नहीं २ जिव्हाके दुःख मिले ३ स्पर्शेन्द्रिय के सुख मिले नहीं और ४ स्पर्शेन्द्रिय के दुःख मिले ॥ ३६ ॥ सम्यक्दृष्टि नारकी के जीव को चार क्रिया कही:-आरंभिया, परिग्रहिया, मायावत्तिया, और अपच्चक्खाण वत्तिया. ऐसेही एकेन्द्रिय, बेइन्द्रिय, तेइन्द्रिय और चौरेन्द्रिय को छोडकर अन्य सब जीवो को उक्त चार क्रिया कही ॥ ३७ ॥ चार कारन से विद्यमान गुणों का नाश होता है:-क्रोध, प्रद्वेष, कृत-

शब्दार्थ

प० प्रद्वेष से अ० कृतघ्नता से मि० मिथ्यात्वाभिनिवेश से च० चार कारनसे सं० होते हुवे गु० गुणों दी० दीपते हैं अ० अभ्यास से प० अन्य के छं० अभिप्राय से अ० वर्तने से क० कार्य के हेतु से क० कृतज्ञता से णे० नारकी को च० चार स्थानक णि० निर्वर्तित स० शरीर को० क्रोध निर्वर्तित जा० यावत् लो० लोभ नि० निर्वर्तित ए० ऐसे जा० यावत् वे० वैमानिक को च० चार ध० धर्मद्वार खं० क्षमा

सूत्र

गुणे णासेजा तं० कोहेणं, पडिनिवेसेणं, अकयणुयाए, मिच्छत्ताहिणिवेसणं चउहिं ठाणेहिं संतेगुणे दीवेजा तं० अब्भासवत्तियं, परछंदाणुवत्तियं, कज्जहेउं, कयपडिकए-इ्वा, । णेरइ्याणं चउहिं ठाणेहिं सरीररुप्पत्ती सिया तं० कोहेणं, माणेणं, मायाए लोभेणं, एवं जाव वेमाणियाणं । णेरइ्याणं चउट्ठाण णिव्वत्तिए सरीरए तं० कोहनिव्वत्तिए जाव लोहनिव्वत्तिए । एवं जाव वेमाणियाणं । चत्तारि धम्मदारा प० तं०

भावार्थ

घनता और मिथ्यात्व का अभिनिवेश से । चार कारन से विद्यमान गुणों की दिप्ति होती है १ अधिक २ गुणों का अभ्यास करने से २ अन्य के अभिप्राय अनुसार चलने से ३ कार्य के हेतु से और ४ प्रत्युपकार करने से । नारकी को चार कारन से शरीर उत्पन्न होवेः-क्रोध, मान, माया, व लोभ से. ऐसेही चौविस दंडक के जीवों को जानना. नारकी आदि सब जीवों को चार कारन से शरीर निवृत्ति होवे १ क्रोध, मान, माया, और लोभ निवर्तित । धर्म के चार द्वार कहे हैं क्षान्ति, मुक्ति, ऋजुता और मृदुता

शब्दार्थ

मो० मुक्ति अ० ऋजुता म० मृदुता ॥ ३८ ॥ च० चार ठा० कारन से जी० जीव णे० नारकीपने का क० कर्म प० करते हैं म० महा आरंभ से म० महा परिग्रह से पं० पंचेन्द्रिय के वध से कु० मांसाहार से । च० चार कारनसे जी० जीव ति० तिर्यंच का क० कर्म प० करते हैं मा० माया से नि० निविड माया से अ० असत्य वचन से कू० खोटेतोले कू० खोटेमापेसे । च० चार कारनसे जी० जीव म० मनुष्यपने का क० कर्म प० करते हैं प० प्रकृतिभद्रिक से वि० विनीतपना से सा० दया से अ० मात्सर्यता रहित होनेसे ।

सूत्र

खंति, मोत्ती, अजवे, मद्दवे ॥ ३८ ॥ चउहिं ठाणेहिं जीवा णेरइयत्ताए कम्मं पगरेंति तं० महारंभयाए, महापरिग्गहयाए, पंचेंदियवहेणं, कुणिमाहारेणं। चउहिं ठाणेहिं जीवा तिरिक्खजोणियत्ताए कम्मं पगरेंति तं० माइल्लयाए, नियडिल्लयाए, अलियवयणेणं, कूडतुल्लकूडमाणेणं। चउहिं ठाणेहिं जीवा मणुस्सत्ताए कम्मं पगरेंति तं० पगइभद्दयाए, विणीयाए, साणुक्कोसयाए, अमच्छरियाए। चउहिं ठाणेहिं जीवा देवाउयत्ताए कम्मं पगरेंति, तं० सरा-

भावार्थ

॥ ३८ ॥ चार कारन से जीव नारकी के कर्म बांधते हैं:-महा आरंभ से, महापरिग्रह से, पंचेन्द्रिय के वध से, और मांस का आहार से. चार कारनसे जीव तिर्यंच योनिके कर्म करते हैं. माया करने से, वंचना करने से, असत्य बोलने से, और खोटे तोले माप करने से । चार कारन से जीव मनुष्य में उत्पन्न होने के कर्म करते हैं:-भद्रिक स्वभाव से, विनीत स्वभाव से, दयावन्तपने से, और मात्सर्य भाव रहित होने से । चार

शब्दार्थ

च० चार कारनसे जी० जीव दे० देवपने का क० कर्म प० करते हैं स० रागसहित सं० सयम से सं० संयमासंयम से बा० अज्ञान तप कर्म से अ० अकाम निर्जरा से ॥ ३९ ॥ च० चार प्रकारके व० वादित्र त० तत वि० वितत घ० घन झु० झुसिर । च० चार प्रकारके ण० नाट्य अ० अचित रि० रिभित आ० आरभट भि० भिसोल । च० चार प्रकारके गे० गीत उ० उत्क्षिप्त प० पत्रक मं० मंदक रो० रोविंदक । च० चार प्रकारक की म० माल्य गं० गुंथी हुई वे० लपेटी हुई पू० पुरी हुई सं० एक एक से गुंथी हुइ ।

सूत्र

गसंजमेणं, संजमासंजमेणं, बालतवोकम्मेणं, अकामनिज्जराए ॥ ३९ ॥ चउव्विहे वज्जे प० तं० तते, विततते, घणे, झुसिरे । चउव्विहे णट्टे प० तं० अचिए, रिभिए, आरभडे, भिसोले । चउव्विहे गेये प० तं० उक्खित्ताए, पत्तए, मंदए, रोविंदए । चउव्विहे मल्ले प० तं० गंथिमे, वेढिमे, पुरिमे, संघाइमे, । चउव्विहे अलंकारे प०

भावार्थ

कारन से जीव देवता में उत्पन्न होने के कर्म करते हैं:-सराग संयम से, संयमासंयम से, बाल तप करने से, और अकाम निर्जरा से ॥ ३९ ॥ चार प्रकार के वादित्र कहे हैं १ तत विणादिक, २ वितत पडहादि, ३ घन कास्यतालादि और ४ झुसिर काष्ट की वासली प्रमुख. चार प्रकारके नाट्य कहे हैं:-अचित, रिभित, आरभट, और भिसोल । चार प्रकार के गीत-उत्क्षिप्त, पत्रक, मंदक, और रोविंदक । चार प्रकार की माला कही १ सूत्रादि से गुंथी हुइ, २ अन्य माला से वोष्टित की हुइ, ३ वंसजाल से पूरी हुइ और ४ परस्पर

शब्दार्थ च० चार प्रकार के अं० अलकार के० केशालंकार व० वस्त्रालंकार म० माल्यालंकार आ० आभरणालंकार । च० चार प्रकार के अ० अभिनय दि० द्राष्टांतिक पा० पांडुश्रुत सा० सामंतोपनीक लो० लोकमध्य अवसान ॥ ४० ॥ स० सनत्कुमार म० महेन्द्र दे० देव में वि० विमान च० चार वर्णवाले णी० नीले, लो० रक्त ह० पीले सु० श्वेत म० महाशुक्र स० सहस्रार में क० कल्प में दे० देवों के भ० भवधारणीय स० शरीर उ० उत्कृष्ट च० चार र० हाथ उ० ऊंचे प० कहे ॥ ४१ ॥ च० चार द० पानी के ग० गर्भ उ०

सूत्र तं० केसालंकारे, वत्थालंकारे, मल्लालंकारे, आभरणालंकारे । चउव्विहे अभिणए प० तं० दिट्ठंतिए, पाडंसुए, सामंतोवाणिए, लोगमज्झवासिए ॥ ४० ॥ सणं कुमारमाहिंदेसुणं कप्पेसु विमाणा चउव्वण्णा प० तं० णीला, लोहिया, हलिद्दा, सुक्किल्ला । महासुक्कसहस्सारेसु णं कप्पेसु देवाणं भवधारणिज्जा सरीरगा उक्कोसेणं चत्तारि रयणीओ उड्ढं उच्चत्तेणं पण्णत्ता ॥ ४१ ॥ चत्तारि दगगब्भा प० तं० उ-

भावार्थ बहुत पुष्पों से गुंथी हुइ. । चार प्रकार के अलंकार कहे १ केशालंकार, २ वस्त्रालंकार, ३ माल्यालंकार, और ४ आभरणालंकार, चार प्रकार के अभिनय कहेः-द्राष्टान्तिक, पाडंश्रुत, सामतोवनीक और लोक मध्यावसान ॥ ४० ॥ सनत्कुमार और माहेन्द्रदेव लोक के विमान नीले, रक्त, पीत, और श्वेत ऐसे चार वर्णवाले हैं. महाशुक्र और सहस्रार देवलोक के देवता की भवधारणीय अवगाहना उत्कृष्ट चार हाथ की

शब्दार्थ

ओस म० महिका (धूंअर) सी० शीत उ० ऊष्ण। च० चार द० पानी के ग० गर्भ हे० हिमका गिरना अ० सघन बदल होना सी० शीतोष्ण पं० पंचरूपवाला मा० माघ में हे० हिमका ग० गर्भ फ० फाल्गुनमें अ० बदल का सी० शीतोष्ण चि० चैत्रमें व० वैशाख में पं० पंचरूपी। च० चार म० मनुष्यणी का ग० गर्भ इ० स्त्रीपने पु० पुरुषपने ण० नपुंसकपने बिं० बिंबपने अ० अल्प सु० शुक्र ब० बहुत ओ० ओज

सूत्र

स्सा, माहिया, सीया, उसिणा। चत्तारि दगगब्भा प० तं० हेमगा अब्भसंघडा, पंचरूविया ॥ सिलोगो ॥ माहेउ हेमगा गब्भा। फग्गुणे अब्भसंघडा ॥ सीओसिणा ओय चित्ते। वइसाहे पंचरूविया ॥ १ ॥ चत्तारि मणुस्सीगब्भा प० तं० इत्थित्ताए, पुरिसत्ताए, णपुंसगत्ताए, बिंबत्ताए। सिलोगो ॥ अप्पसुक्कं बहू ओयं। इत्थी तत्थप्पजायइ

भावार्थ

कही ॥ ४१ ॥ चार प्रकार से पानी का गर्भ रहता है १ ओस कि जो सदैव रात्रि में गिरता है २ माहिका सो धूंअर ३ शीत और ४ ऊष्ण और भी चार प्रकार के पानी के गर्भ कहे हैं १ हिमपात २ बहुत बदल होना ३ बहुत ठंड व ताप और ४ पंचरूप वाला आकाश होवे (गर्जारव, विद्युत् जलवात, शीत, और बदल) माघ मास में हिमकागर्भ, फाल्गुन मास में बदलकागर्भ, चैत्रमास में शीतोष्म और वैशाख मास में पंचरूपीपना होता है। मनुष्यणीकागर्भ चार प्रकार [illegible] कहा है १ पुरुषपने, स्त्रीपने, नपुंसकपने और बिंबपने. १ स्त्री को ऋतु संबंधी रुधिर विशेष होवे और पुरुष का शुक्र अल्प होवे तब गर्भ में स्त्री उत्पन्न

शब्दार्थ

(रक्त) र० स्त्री त० उस में प० उत्पन्न होती है अ० अल्प ओ० ओज ब० बहुशुक्र पु० पुरुष त० उसमें जा० उत्पन्न होताहै दो० दोनों र० रक्त सु० शुक्रका चु० समपनामें न० नपुंसक इ० स्त्री के त० उसके आ० संयोगमें बिं० बिंब त० वहां प० उत्पन्न होता हैं ॥ ४२ ॥ उ० उत्पात पु० पूर्वकी च० चार चू० चूलिकावस्तु च० चार प्रकार के क० काव्य ग० गद्य प० पद्य क० कथा गे० गीतवाले ॥ ४३ ॥ णे० नारकीको च०

सूत्र

अप्पओयं बहूसुक्कं, पुरिसो तत्थ जायइ ॥ १ ॥ दोण्हंपि रत्तसुक्काणं, चुल्लभावे नपुंसओ; इत्थीओतस्समाओगे, बिंबं तत्थ प्पजायइ ॥ २ ॥ ४२ ॥ उप्पायपुव्वस्सणं चत्तारि चूलियावत्थु प० । चउव्विहे कव्वे प० गज्जे,पज्जे,कत्थे, गेये॥४३॥णेरइयाणं

भवार्थ

होती है २ अल्प रुधिर और बहुत वीर्य होवे तब पुरुष उत्पन्न होता है ३ रुधिर व शुक्र दोनों बराबर होवे तब नपुंसक उत्पन्न होता है और ४ एकस्त्री का रुधिर और दूसरी स्त्री का शुक्र जैसा श्वेत पदार्थ इनदोनों के संयोगमें बिम्ब उत्पन्न होताहै. (इसमें हड्डी नहीं रहनीहै) ॥४२॥ उत्पाद पूर्व की चार चूलिका वस्तु (अध्ययन रूप) कही. चार प्रकार के काव्य कहे १ गद्यबंध जिसमें छंदादि होवे नहीं शस्त्र परिज्ञा अध्ययनवत् २ पद्य सो छंद से बंधा हुवा विमुक्त अध्ययनवत् ३ कथाग्रंथ ज्ञाता सूत्रवत् और ४ गेय गाने योग्य उत्तराध्ययनवत् ॥ ४३ ॥ नरक व वायु काय के जीवों को चार समुद्घात कही, वेदनीय, कषाय, मारणान्तिय, और

शब्दार्थ

चार स० समुद्घात वे० वेदनी समुद्घात क० कषाय स० समुद्घात मा० मारणान्तिक स० समुद्घात वे० वैक्रेय समुद् घात ए० ऐसे वा० वायु काय के भी ॥ ४४ ॥ अरिहंत अ० अरिष्टने भी के च० चारसो चो० चौदपूर्व वाले अ० अजिन जि० जिनसदृश स० सर्वाक्षर सं० संनिपात वाले जि० जिनजैसे अ० यथातथ्य वा० बोलने वाले की उ० उत्कृष्ट चो० चौदपूर्व की सं० संपदा हो० थी । स० श्रमण भगवंत म० महावीर को च० चारसो वा० वादी की स० देव सहित म० मनुष्य अ० असुर की स० सभा

सूत्र

चत्तारि समुग्घाए प० तं० वेयणसमुग्घाए, कसायसमुग्घाए, मारणंतिय समुग्घाए, वेउव्वियसमुग्घाए । एवं वाउकाइयाणवि ॥ ४४ ॥ अरहओणं अरिट्ठनेमिस्स चत्तारि सया चोद्दसपुव्वीण, माजिणाणं, जिणसंकासाणं, सव्वक्खरसंनिवाईणं, जिणोइव अवितहं वागरमाणाणं, उक्कोसिया चोद्दस पुव्विसंपया होत्था । समणस्स भगवओ महावीरस्स चत्तारि सया वाईणं सदेवमणुयासुराए परिसाए अपराजियाणं

भावार्थ

वैक्रेय ॥४४॥ अरिहन्त अरिष्टनेमी भगवन्त को चौदह पूर्व का ज्ञान धारण करने वाले चार सो साधुथे. वे जिन नहीं परंतु जिन सरिखे, सर्वाक्षर संनिपात योग को जानने वाले, और सत्यप्रश्न करने वाले थे. श्री श्रमण भगवन्त महावीर स्वामी की उत्कृष्टी चार सो वादीकी संपदा थी कि जो वादी देवता मनुष्य व असुर की

शब्दार्थ

में अ० अपराजित उ० उत्कृष्ट वा० वादी की सं० संपदा हो० थी ॥ ४५ ॥ हे० नीचे के च० चार क० कल्प (देवलोक) अ० अर्धचंद्र संठान से सं० संस्थित सो० सोधर्म ई० ईशान सं० सनत्कुमार म० महेन्द्र म० बीच के क० देवलोक प० प्रतिपूर्णचंद्र के सं० संस्थान से सं० संस्थित बं० ब्रह्मलोक लं० लंतक म० महाशुक्र स० सहस्रार उ० उपरके च० चार क० देवलोक अ० अर्धचंद्राकार आ० आणत पा० प्राणत आ० आरण अ० अच्युत ॥ ४६ ॥ च० चार स० समुद्र प० प्रत्येक के ल० लवण वा० वारुण खी०

सूत्र

उक्कोसिया वाइसंपया होत्था ॥ ४५ ॥ हेट्ठिल्ला चत्तारि कप्पा अद्धचंदसंठाण संठिया प० तं० सोहम्मे, ईसाणे, सणंकुमारे, माहिंदे । मज्झिल्ला कप्पा पडिपुण्णचंदसंठाणसंठिया, प० तं० बंभलोगे, लंतए, महासुक्के, सहस्सारे । उवरिल्ला चत्तारि कप्पा अद्धचंद संठाण संठिया प० तं० आणए, पाणए, आरणे, अच्चुए ॥४६॥ चत्तारि

भावार्थ

परिषदा में कोई जीत शके नहीं ॥ ४५ ॥ नीचे के सौधर्म, ईशान, सनत्कुमार, और माहेन्द्र ऐसे चार देवलोक अर्धचंद्राकार है; ब्रह्मदेवलोक, लंतक, महाशुक्र और सहस्रार इन चारों का संस्थान पूर्ण चंद्रमा के आकारका है. आणत, प्राणत, आरण, और आच्युत इन चारो को अर्धचंद्राकार संठान कहे।४६। पृथक २ रसवाले चार समुद्र कहे १ लवण समुद्र लवण जैसा खारा पानीवाला २ वारुणोदधि मदिरा जैसा

शब्दार्थ

क्षीर धि० घृतोदक ॥ ४७ ॥ च० चार प्रकार के अ० आवर्त ख० खारावर्त उ० उन्नतावर्त गू० गुप्तावर्त आ० मांसावर्त । ए० ऐसेही च० चार क० कषाय ख० खारावर्त समान को० क्रोध उ० उन्नतावर्त समान मा० मान गू० गुप्तावर्त समान मा० माया आ० मांसावर्त समान लो० लोभ ख० खारावर्त समान को०

अमू

समुद्दा पत्तोयरसा प० तं० लवणोदए, वारुणोदए खीरोदए, घिओदए ॥ ४७ ॥ चत्तारि आवत्ता प० तं० खरावत्ते, उन्नयावत्ते, गूढावत्ते, आमिसावत्ते । एवामेव चत्तारि कसाया प० तं० खरावत्तसमाणे कोहे, उन्नयावत्तसमाणेमाणे, गूढावत्तसमाणामाया, आमिसावत्त-समाणे लोभे । खरावत्तसमाणं कोहमणुप्पविट्ठे जीवे कालंकरेइ णेरइएसु उववज्जइ, उन्नयावत्तसमाणं एवंचेव, गूढावत्तसमाणं मायमेवंचेव, आमिसावत्तसमाणं लोभं-

भावार्थ

३ क्षीरोदधि क्षीर जैसा और ४ घृतोदधि घी समान पानीवाला ॥ ४७ ॥ पानी के चार आवर्त कहे हैं १ खारावर्त सो कठिन चक्रकी तरह पानी का फीरना २ उन्नतावर्त सो पानी का ऊंचे चडना ३ गुप्तावर्त उपर बराबर रहे परंतु पानी में गुप्त चक्र फीरता रहे और ४ मांसावर्त जैसे चील मांस के लिये भ्रमण करे ऐसेही पानी फीरता रहे. ऐसेही चार कषाय कही १ खारावर्त समान क्रोध, २ उन्नतावर्त समान मान, ३ गूढावर्त समान माया और मांसावर्त समान लोभ. खारावर्त समान क्रोध करनेवाला जीव मरकर नरक में उत्पन्न होता है, २ ऐसेही उन्नतावर्त समान मान, गूढावर्त समान माया और मांसावर्त समान लोभ करनेवाला जीव

शब्दार्थ

क्रोध अ० करने वाला का० कालकरे णे० नारकी में उ० उत्पन्न होवे ॥ ४८ ॥ अ० अनुराधा न० नक्षत्र के च० चार ता० तारे पु० पूर्वाषाढा ए० ऐसेही उ० उत्तराषाढा ॥ ४९ ॥ जी० जीवों च० चार कारन से नि० निवर्तित पो० पुद्गल पा० पापकर्मपने चि० इकठेकिये चि० इकठे करते हैं कि० इकठे करेंगे णे० नारकी णि० निवर्तित ति० तिर्यंययोनि णि० निवर्तित म० मनुष्य निवर्तित दे० देवनिवर्तित ए० ऐसे उ० उपचिनें, उ० उपचिनते हैं उ० उपचिनेंगे ए० ऐसे चि० चिण, उ० उपचिण बं० बंध उ० उदीरणा वे० वेद

सूत्र

मणुप्पविट्ठे जीवे कालं करेइ णेरइएसु उववज्जइ ॥ ४८ ॥ अणुराहा णक्खत्ते चउतारे प० । पुव्वसाढा एवंचेव । उत्तरासाढा एवंचेव ॥ ४९ ॥ जीवाणं चउ-ट्ठाण निव्वत्तिए पोग्गले पावकम्मत्ताए—चिणिंसुवा, चिणिंतिवा, चिणिस्संतिवा तं० णेरइयणिव्वत्तिए, तिरिक्खजोणिणिव्वत्तिए, मणुस्सणिव्वत्तिए, देवाणिव्वत्तिए । एवं उवचिणंसुवा, उवचिणंतिवा, उवचिणिस्संतिवा । एवं चिणउवचिणबंधोदीरवेयतह

भावार्थ

मरकर नरक में उत्पन्न होता है ॥ ४८ ॥ अनुराधा, पूर्वाषाढा और उत्तराषाढा नक्षत्र के चार तारे कहे हैं ॥ ४९ ॥ जीवने चार स्थानक में उत्पन्न होने जैसे पुद्गल को पापकर्मपने संचय किया, संचय करता है और संचय करेगा १ नारकी निवर्तित, तिर्यंच योनि निवर्तित, मनुष्य निवर्तित और देव निवर्तित. ऐसेही तीनों

शब्दार्थ

त० तैसे णि० निर्जरा ॥ ५० ॥ च० चार प्रदेशी खं० स्कंध अ० अनंत प० कहे च० चार प्रदेशावगाढ पो० पुद्गल अ० अनंत प० कहे च० चार स० समयकी ठि० स्थितिवाले पो० पुद्गल अ० अनंत कहे च० चार गुणकाला पो० पुद्गल अ० अनंत जा० यावत् च० चार गुण लु० रूक्ष अ० अनंत ॥ ५१ ॥ *

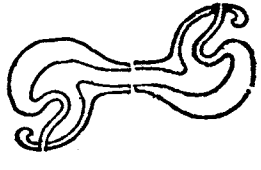
सूत्र

णिज्जरा चेव ॥ ॥ ५० ॥ चउप्पएसिया खंधा अणंता पण्णत्ता । चउप्पएसोगाढा पोग्गला अणंता पण्णत्ता । चउसमयठिईया पोग्गला अणंता पण्णत्ता, चउगुणकाल पोग्गला अणंता पण्णत्ता । जाव चउगुणलुक्खा पोग्गला अणंता पण्णत्ता ॥ ५१ ॥

इति चउट्ठाणस्स चउत्थोद्देसो सम्मत्तो । चउट्ठाणं सम्मत्तं ॥ * *

भावार्थ

काल आश्री उपचिणे, बांधे, उदिरे, वेदे, व निर्जरे ॥ ५० ॥ चार प्रदेशी स्कन्ध अनंते कहे, चार प्रदेशी अवगाहकर रहेवाले पुद्गल अनंते कहे, चार समय की स्थितिवाले पुद्गल अनंते कहे, और चार गुण काला यावत् रूक्ष पुद्गल अनंते कहे ॥ ५१ ॥ यह चौथा स्थानक समाप्त हुवा ॥ ४ ॥ × ×



पञ्चम स्थानकम्.

शब्दार्थ

पं० पांच म० महाव्रत स० सर्वथा पा० प्राणातिपातसे वे० निवर्तना स० सर्वथा मु० मृषावाद से वे० निवर्तना जा० यावत स० सर्वथा प० परिग्रह से वे० निवर्तना पं० पांच अ० अनुव्रत थू० स्थूल पा० प्राणातिपात से वे० निवर्तना थू० स्थूल मु० मृषावाद से वे० निवर्तना थू० स्थूल अ० अदत्तादान से वे० निवर्तना स० स्वदारा से सं० संतोष इ० इच्छा परिमाण ॥ १ ॥ पं० पांच व० वर्ण कि० कृष्ण, णी०

सूत्र

पंच महव्वया प० तं० सव्वाओ पाणाइवायाओ वेरमणं, सव्वाओ मुसावायाओ वेरमणं, जाव सव्वाओ परिग्गहाओ वेरमणं। पंचाणुव्वया प० तं० थूलाओ पाणाइवायाओ वेरमणं, थूलाओ मुसावायाओ वेरमणं, थूलाओ अदिन्नादाणाओ वेरमणं, सदारसंतोसे, इच्छापरिमाणे ॥ १ ॥ पंचवण्णा प० तं० किण्हा, नीला, लोहिया, हा-

भावार्थ

श्री श्रमण भगवन्तने पांच महाव्रत प्ररूपे हैं १ सर्व प्राणातिपातसे निवर्तना २ सर्व मृषावादसे निवर्तना ३ सर्व अदत्तादानसे निवर्तना ४ सर्व मैथुनसे निवर्तना और ५ सर्व परिग्रहसे निवर्तना. पांच अनुव्रत कहे १ स्थूल प्राणातिपातसे निवर्तना, २ स्थूलमृषावादसे निवर्तना ३ स्थूल अदत्तादानसे निवर्तना, ४ स्व स्त्रीसे संतोष रखना और ५ इच्छानुसार परिग्रह का परिमाण रखना ॥ १ ॥ पांच वर्ण कहेः—कृष्ण, नील, रक्त, हरिद्र

शब्दार्थ — नील, लो० रक्त ह० पीला, सु० शुक्ल पं० पांच र० रस ति० तिक्त क० कटुक क० कषयला अं० खट्टा म० मिष्ट पं० पांच का० कामगुण स० शब्द रू० रूप गं० गंध र० रस फा० स्पर्श पं० पांच कारन से जी० जीव स० उद्यम करते हैं स० शब्द में जा० यावत् फा० स्पर्श में ए० इसमें र० आनंद मानते हैं मु० मूर्च्छित होते हैं गि० गृद्ध होते हैं अ० तन्मय बनते हैं पं० पांच कारन से जी० जीव वि० विनिघात को आ० प्राप्त होते हैं, पं० पाच ठा० स्थानक को अ० नहीं जानने वाला जी० जीव अ० अहित

सूत्र — लिद्दा, सुक्किला, । पंचरसा प० तं० तित्ता, कडुया, कसाया, अंबिला, महुरा । पंचकामगुणा प० तं० सद्दा, रूवा, गंधा, रसा, फासा। पंचहि ठाणेहिं जीवा सज्जंति तं० सद्देहिं, जाव फासेहिं । एवं रज्जंति, मुच्छंति, गिज्झंति, अज्झोववज्जंति ॥ पंचहिंठाणेहिं जीवा विणिघायमावज्जइ, तं० सद्देहिं जाव फासेहिं । पंचठाणा अपरिण्णाया जीवाणं अहियाए, असुभाए, अखमाए, अणिस्सेयसाए, अणाणुगामियत्ताए भवंति तं०

भावार्थ — [पीत] और शुक्ल. पांच रस कहेः—तिक्त, कटुक, कषाय, अम्बट, व मधुर. पांच काम गुण कहे हैं शब्द, रूप, गंध, रस और स्पर्श । पांच कारनसे जीव उद्यत होना है शब्द, वर्ण, गंध, रस और स्पर्श ऐसेही इन पांचों कारनोंसे जीव राचत है, मूर्च्छित होता है, गृद्ध होता है, विशेष गृद्ध होता है. और तन्मय होता है. इन पांचों कारणोंको नहीं जानने वाला जीव को अहित, अशुभ, अक्षम, अश्रेय, व अननु

शब्दार्थ केलिये, अ० अशुभ, अ० अक्षम अ० अनिःश्रेयस अ० अनानुगामि केलिये भ० होते हैं पं० पंच ठा० स्थानक सु० अच्छी तरह से जाना हुवा जी० जीव हि० हित सु० शुभ जा० यावत् अ० अनुगामी केलिये भ० होते हैं पं० पंचस्थानक अ० नहीं जानने वाले जी० जीव दु० दुर्गतिगामी भ० होते हैं पं० पांच ठा० स्थानक प० जानने वाला जी० जीव सु० सुगतिगामी भ० होते हैं ॥ २ ॥ पं० पांच ठा० कारन से जी० जीव दु० दुर्गति में ग० जाते हैं पा० प्राणातिपात से जा० यावत् प० परिग्रह से पं० पांच ठा० स्थानक से जी० जीव सो० सुगति में ग० जाते हैं पा० प्राणातिपात से वे० निवर्तने से जा० यावत् प० परिग्रह से निवर्तने

सूत्र सद्दा जाव फासा । पंचठाणा सुपरिण्णाया जीवा णं हियाए, सुभाए, जाव आणुगामियत्ताए भवंति तं० सद्दा जाव फासा । पंचठाणा अपरिण्णाया जीवाणंदुग्गइगमणत्ताए भवंति तं० सद्दा जाव फासा । पंचठाणा परिण्णाया जीवाणं सुगइगमणत्ताए भवंति तं० सद्दा जाव फासा ॥ २ ॥ पंचहिं ठाणेहिं जीवा दुग्गइं गच्छंति तं० पाणाइवाएणं जाव परिग्गहेणं । पंचहिं ठाणेहिं जीवा सोगइं गच्छंति तं० पाणाइवाय

भावार्थ गामी होता है. अच्छीतरहसे जाने हुवे उक्त पांच स्थानक जीव को हित, शुभ, यावत् अनुगामी होता है इन पांच को नहीं जाननेवाला जीव दुर्गति में जानेवाला होता है, और इन को जान्नेवाला जीव सुगति में जानेवाला होता है ॥ २ ॥ प्राणातिपातादि पांच कारनसे जीव दुर्गति में जाता है और इन पांचोंसे

शब्दार्थ

से ॥ ३ ॥ प० पांच प० पडिमा भ० भद्रा सु० सुभद्रा म० महाभद्रा स० सर्वतोभद्रा भ० भद्रोत्तर प्रतिज्ञा ॥ ४ ॥ पं० पांच था० स्थावर काय इ० इन्दिस्थावर काय बं० ब्रह्मस्थावर काय सि० शिल्प स्थावर काय स० समिति स्थावरकाय प० प्राजापत्य स्थावर काय पं० पांच था० स्थावर काया के अ० अधिपति इ० इन्द्रस्थावर काया के अ० अधिपति जा० यावत् प० प्राजापत्य स्थावर काया के अ० अधिपति ॥ ५ ॥ पं० पांच ठा० स्थानक से ओ० अवधि दर्शन स० उत्पन्न होते त० उसको प० प्रथम

सूत्र

वेरमणं जाव परिग्गह वेरमणं ॥ ३ ॥ पंच पडिमाओ पण्णत्ताओ तं० भद्दा, सुभद्दा, महाभद्दा, सव्वओ भद्दा, भदुत्तरपडिमा ॥४॥ पंच थावरकाया प० तं० इंदेथावरकाये, बंभेथावरकाये सिप्पेथावरकाये, समईथावरकाये, पयावएथावरकाये । पंचथावरकायाहिवई प० तं० इंदेथावरकायाहिवई जाव पयावएथावरकायाहिवई ॥ ५ ॥ पंचहिं ठाणेहिं

भावार्थ

निवर्तनेसे जीव अच्छीगति में जाता है. ॥ ३ ॥ पांच प्रकार की पडिमा कही १ भद्रा, २ सुभद्रा, ३ महा भद्रा, ४ सर्वतो भद्रा, और ५ भद्रोत्तर पडिमा. ॥ ४ ॥ पांच स्थावर काय कही १ इन्द्रस्थावर काय पृथ्वी, ब्रह्मस्थावर काय पाणी, ३ शिल्पस्थावर काय अग्नि, ४ समिति स्थावर काय वायु, और ५ प्राजापत्य स्थावरकाय सो वनस्पति. पांच स्थावर कायके अधिपति कहे हैं इन्द्रस्थावर कायके अधिपति यावत् प्रजापति स्थावर काया अधिपति ॥ ५ ॥ पांच कारनसे जीवको अवधि दर्शन उत्पन्न होकर पहिले समय मेंही

शब्दार्थ

समय में ख० क्षोभ पावे अ० अल्प भू० जीवो पा० देखकर त० उसके प० प्रथम समय में ख० क्षोभपावे कुं० जंतु कुं० जंतु के समुह वाली पु० पृथ्वी पा० देखकर त० उसके प० प्रथम समय में० ख० क्षोभ होवे म० बहुत म० बडे म० सर्पके स० शरीर पा० देखकर त० उसके प० प्रथम समय में ख० क्षोभ होवे दे० देव को म० महर्द्धिक जा० यावत् म० बहुमुखी पा० देखकर त० उसके प० प्रथम समय में ख० क्षोभ होवे पु० नगर में पो० प्राचिन म० बहुत म० बडे म० बडे णि० निधान प० नष्ट सा० स्वामी वाले

सूत्र

ओहिदंसणे समुप्पज्जिउकामेवि, तप्पढमयाए खभाएज्जा तं० अप्पभूयं वा पुढविं पासित्ता तप्पढमयाए खभाएज्जा, । कुंथुं कुंथुरासिभूयंवा पुढविं पासित्ता तप्पढमयाए खभाएज्जा । महइ महालयं वा महोरगसरीरं पासित्ता तप्पढमयाए खभाएज्जा । देवं वा महड्ढियं जाव महेसक्खं पासित्ता तप्पढमयाए खभाएज्जा । पुरेसु वा पोराणाइं महइ महालयाइं, महाणिहाणाइं, पहीण सामियाइं, पहीण सेउवाइं, पहीण गोत्तागाराइं,

भावार्थ

स्खलना पाता है. १ पृथ्वी थोडी और बहुत जीवोंसे भरी देखकर स्खलना पाता है अथवा पाहिले बहुत पृथ्वी जानता था परंतु पीछेसे थोडी देखकर स्खलना पावे २ अत्यन्त सूक्ष्म कुंथुवेकी राशिसे भरी हुइ पृथ्वी देखकर स्खलना पावे ३ बहुत लम्बे सर्पादिकके शरीर देखकर [विस्मयसे या भयसे] क्षोभ पावे ४ देवताकी महाऋद्धि और बहुत सुख देखकर क्षोभपावे ५ बडे पुराने ग्राम नगर में बहुत कालका

शब्दार्थ

प० नष्ट से० सेवक वाले न० नष्ट गो० गोत्रघर उ० उच्छेद सा० स्वामी उ० उच्छेद से० सेवक उ० उच्छेद गो० गोत्रघ[illegible] जा० जो इ० ये गा० ग्राम आ० आगर (घर) न० नगर खे० खेडा क० कर्वट मं० मंडप दो० द्रोणमुख प० पाटण आ० आश्रम सं० संवास [illegible] गि० [illegible]घाडे के आका[illegible] जैसे ति० त्रिक च० चतुष्क च० चच्चर च० चौमुख म० विशा[illegible] [illegible] [illegible] [

शब्दार्थ

भ० भवनगृह में सं० गाडा हुवा चि० रहा है ता० उन्हे पा० देखकर त० उसके प० पहिले समय में ख० क्षोभ पावे इ० इन पं० पांच ठा० स्थानक से ओ० अवधि दर्शन स० उत्पन्न होते त० उसके प० पहिले समय में ख० क्षुभित होवे ॥ ६ ॥ पं० पांच कारन से के० केवलवर ना० ज्ञान दर्शन स० उत्पन्न होते त० पहिले [illegible] णो० नहीं ख० क्षुभित होवे अ० अल्प भूतवाली पु० पृथ्वी पा० देखकर से० शेष त० तैसे जा० यावत् भ० भवनगृह में सं० गाड हुवे चि० रहे ता० उन्हे पा० देखकर त० पहिले समय में णो० नहीं ख० क्षुभित होवे से० शेष त० तैसे इ० इन पं० पांच ठा० कारन से जा० यावत् णो०

सूत्र

पंचहिं ठाणेहिं ओहिदंसणे समुप्पज्जिउंकामे तप्पढमयाए खभाएज्जा ॥ ६ ॥ पंचहिं ठाणेहिं केवलवरनाणदंसणे समुप्पज्जिउंकामे तप्पढमयाए णो खभाएज्जा तं० अप्पभूयं वा पुढविं पासित्ता तप्पढमयाए णो खभाएज्जा, सेसं तहेव जाव भवणगिहेसु संनिक्खित्ताइं चिट्ठंति ताइंवा पासित्ता तप्पढमयाए णो खभाएज्जा, सेसं तहेव । इच्चेएहिं

भावार्थ

स्थानोंमे गाडकर रखा होवे उसे देखकर क्षोभ पावे [इतना धन बिना मालिकका है ऐसा विचारसे] इन पांच कारणसे उत्पन्न होता अवधि दर्शन प्रथम समय में क्षोभ पानेसे पीछा चला जाता है ॥ ६ ॥ केवल ज्ञान दर्शन उत्पन्न हुए पीछे पहिले समय में जीव पांच कारनसे क्षोभ नहीं पाता है. अल्पभूत पृथ्वी देखकर यावत् भवनगृहमें स्थापन किया हुवा द्रव्यका निधान देखकर क्षोभ

शब्दार्थ

नहीं ख० क्षुभित होवे ॥ ७ ॥ णे० नारकी के स० शरीर पं० पांच व० वर्णवाले पं० पांचरसवाले कि० कृष्ण जा० यावत् सु० शुक्ल ति० तिक्त जा० यावत् म० मधुर ए० ऐसे नि० निरंतर जा० यावत् वे० वैमानिकको ॥ ८ ॥ पं० पांच स० शरीर ओ० उदारिक वे० वैक्रेय आ० आहारक ते० तेजस क० कार्माण ओ० उदारिक स० शरीर पं० पांच वर्णवाले पं० पांचरसवाले कि० कृष्ण जा० यावत् सु० शुक्ल ति० तिक्त जा० यावत् म० मधुर ए० ऐसे जा० यावत् क० कार्माण स० शरीर स० सब बा० बादर बों० शरीर धारण करने वाले क० कलेवर पं० पांचवर्ण वाले पं० पांचरस वाले दु० दो गंध वाले अ० अष्टस्पर्श वाले

सूत्र

पंचहिं जाव णो खभाएज्जा ॥ ७ ॥ णेरइयाणं सरीरगा पंचवण्णा पंचरसा प० तं० किण्हा जाव सुक्किल्ला । तित्ता जाव मधुरा । एवं निरंतरं जाव वेमाणियाणं ॥ ८ ॥ पंच सरीरगा प० तं० ओरालिए, वेउव्विए, आहारए, तेयए, कम्मए । ओरालिय सरीरे पंचवण्णे पंचरसे प० तं० किण्हे जाव सुक्किले । तित्ते जाव महुरे । एवं जाव कम्मगसरीरे ॥ सव्वेविणं बादरबोंदिधरा कलेवरा पंचवण्णा, पंचरसा, दुगंधा, अट्ठ-

भावार्थ

न पावे ॥ ७ ॥ सब जीवोंको पांच वर्ण और पांच रस कहे हैं ॥ ८ ॥ पांच शरीर प्ररूपे हैं उदारिक, वैक्रेय, आहारक, तेजस, और कार्माण. वे पांचो शरीर पांच वर्णवाले और पांच रस वाले हैं. सब बडे आकार वाले बादर पर्याप्त शरीर को पांच वर्ण, पांच रस, दो गंध और आठ स्पर्श कहे

शब्दार्थ ॥ ९ ॥ पं० पांच ठा० कारन से पु० पहिले प० पीछे के जि० जिनके दु० दुर्गम भ० होता है दु० दुआख्यात दु० दुविभाज्य दु०दुपश्य दु० दुतितिख दु०दुरनुचर पं० पांच ठा० कारन से म० मध्य के सु० सुगम भ० होता है. ॥ १० ॥ पं० पांच स्थानक स० श्रमण भ० भगवंत म० महावीरने स० श्रमण णि० निर्ग्रन्थ को णि० नित्य व० वर्णवे णि० नित्य कि० कीर्तितकिये णि० नित्य बु० कहे णि० नित्य

सूत्र फासा ॥ ९ ॥ पंचहिं ठाणेहिं पुरिमपच्छिमगाणं जिणाणं दुग्गमं भवइ तं० दुआइक्खं, दुव्विभजं, दुपस्सं, दुतितिक्खं, दुरणुचरं । पंचहिं ठाणेहिं माज्झिमगाणं जिणाणं सुग्गमं भवइ तं० सुआइक्खं, सुविभजं सुपस्सं, सुतितिक्खं, सुरणुचरं ॥ १० ॥ पंचठाणाइं समणेणं भगवया महावीरेणं समणाणं निग्गंथाणं णिच्चं वण्णियाइं णिच्चं-

भावार्थ हैं ॥ ९ ॥ प्रथम और अन्तिम तीर्थंकरके साधुओंको पांच कारनसे तत्त्व समझाना बहुत मुश्किल होता है. (वक्र और जड होनेसे) १ शिष्यको कहनाही मुश्किल होता है २ भेद, भावना, व विभाग दुःखसे समझे ३ जीवाजीवको दुःखसे देखे ४ परिषहादि दुःखसे सहन करे और ५ आचार पालना ही बहुत मुश्किल होवे. अन्य बाइस तीर्थंकरोंके साधुओंको पांच कारनसे तत्त्व समझाना बहुत सरल होता है. १ कहना सहज, २ भावभेद समझाना सहज ३ जीवादिकका बताना सहज ४ परिषह जीतना सहज और ५ आचार पालना सहज ॥ १० ॥ श्री श्रमण भगवन्त महावीरने साधुओंको क्षमा, निर्लोभता, ऋजुता

शब्दार्थ

प० प्रशंसा की णि० नित्य अ० आज्ञादी खं० क्षान्ति मो० मुक्ति अ० ऋजुता म० मृदुता ला० लघुता पं० पांच ठा० स्थानक स० श्रमण को जा० यावत् अ० आज्ञादी भ० होती है स० सत्य सं० संयम त० तप चि० त्याग बं० ब्रह्मचर्यवा ॥ ११ ॥ पं० पांच स्थानक स० श्रमण को जा० यावत् अ० आज्ञादी भ० होती है उ० उक्षिप्तचर णि० निक्षिप्तचर अं० अंतचर पं० प्रांतचर लू० रूक्षचर पं० पांच स्थानक जा० यावत् अ० आज्ञादी भ० होती है अ० अज्ञातचर अ० अवेलचर मो० मौनचर सं० संसठचर त० तज्जाय

सूत्र

कित्तियाइं, णिच्चं बुइयाइं, णिच्चं पसत्थाइं, णिच्चमब्भणुण्णायाइं भवंति तं० खंती, मोत्ती, अज्जवे, मद्दवे, लाघवे । पंचठाणाइं समणाणं जाव अब्भणुन्नायाइं भवंति तं० सच्चे, संजमे, तवे, चियाए, बंभचेरवासे । ॥ ११ ॥ पंचठाणाइं समणाणं जाव अब्भणुण्णायाइं भवंति तं० उक्खित्तचरए, णिक्खित्तचरए, अंतचरए, पंतचरए, लूहचरए, । पंचठाणाइं जाव अब्भण्णुन्नायाइं भवंति तं० अन्नायचरए, अन्नवेलचरए, मोणचरए,

भावार्थ

मृदुता, और लघुता ये पांच स्थानक वर्णवे हैं, उनकी कीर्ति की है, प्रशंसा की है, और सदैव नामसे बोलये हैं और भी पांच स्थानक साधुओंको श्री श्रमण भगवन्त महावीरने वखाणे हैं यावत् नामसे बोलोये हैं सत्य, संयम, तप. त्याग और ब्रह्मचर्य ॥ ११ ॥ श्री श्रमण भगवन्त महावीरने पांच स्थानककी आज्ञादी है ३ अपनेलिये भाजनमेंसे नीकालना २ आहार लेनेकी गवेषणा, ३ खाते पीते बचा हुआ लेऊंगा ४ आंत, प्रांत

शब्दार्थ संसट्ठ प० पांच स्थानक जा० यावत् अ० आज्ञादी भ० होती है आ० आयंबिल नि० निवी पु० पुरिमड्ढ प० परिमित पिंडवाइ भि० भिन्न पिंडवाइ पं० पांच स्थानक जा० यावत् अ० आज्ञादी भ० होती है अ० अरस आहारी वि० विरस आहारी अं० अंताहारी पं० प्रान्ताहारी लू० रुक्षाहारी पं० पांच स्थानक जा० यावत् भ० होते हैं अ० अरसजीवी वि० विरसजीवी अं० अंतजीवी पं० प्रांतजीवी लू० रुक्षजीवी

सूत्र संसट्ठकप्पिए, तज्जाय संसट्ठकप्पिए। पंच ठाणाइं जाव अब्भणुन्नायाइं भवंति तं० उवनिहिए, सुद्धेसणिए, संखादत्तिए, दिट्ठलाभिए, पुट्ठलाभिए। पंचठाणाइं जाव अब्भणुन्नायाइं भवंति तं० आयंबिलए, निव्विइए, पुरिमड्ढिए, परिमियपिंडवाइए भिन्नपिंडवाइए। पंचठाणाइं जाव अब्भणुन्नायाइं भवंति तं० अरसाहारे, विरसाहारे, अंताहारे, पंताहारे, लूहाहारे।

भावार्थ चने आदि लेऊंगा ५ रूक्ष विना घी तेल वाली वस्तु लेना। पांच स्थानकमें भगवन्तने आज्ञा दी है १ जाति कुल जाने विना आहार लेना २ भोजन समय छोडकर गौचरीजावे ३ मौनव्रत रखकर गौचरीकरे ४ खरडे हाथसे कल्पनीय आहार लेवे ५ विना खरडे हाथसे लेवे। पांच स्थानककी आज्ञा दी है १ किसी अन्यके लिये लाया हुआ आहार लेवे २ एषणा समिति युक्त आहार लेवे ३ दातिकी संख्या करलेवे, ४ चक्षुसे देखकरलेवे ५ पृच्छा कर लेवे. पांच स्थानककी यावत् आज्ञा दी है १ आयंबिल करे, २ नीवी करे ३ पुरिमार्द्ध (दोप्रहर) करे ४ परिमित द्रव्य कर आहार लेवे ५ निक्षमा (न्हांखने योग्य) आहार लेवे। पांच स्थानक की यावत आज्ञादी है १ अरस लवणादि

शब्दार्थ

पं० पांच स्थानक जा० यावत् भ० होते हैं ठा० कायोत्सर्गकरे उ० उत्कट आसन से प० प्रतिज्ञा में रहे वी० वीरासन में रहे णे० निषेधिका आसन में रहे पं० पांच स्थानक जा० यावत् भ० होते हैं दं० दंडका आसन ल० लकुटासन आ० आतापनालेवे अ० शीत ताप सहे अ० खरज खणे नहीं ॥ १२ ॥ पं० पांच

सूत्र

पंचठाणाइं जाव भवंति तं० अरसजीवी, विरसजीवी, अंतजीवी, पंतजीवी लूहजीवी, पंचठाणाइं जाव भवंति तंजहा ठाणाइए उक्कुडुआसणिए पडिमट्ठाइ वीरासणिए णेसज्जिए । पंचठाणाइं जाव भवंति तं० दंडायइए, लगडसाई, आयावए, अवाउडए अकंडुयए । ॥ १२ ॥ पंचहिं ठाणेहिं समणे निग्गंथे महानिजरे महापज्जवसाणे भवइ

भावार्थ

रहित आहार से जीवे २ विरस पूराणे धान्यका आहारसे जीवे ३ बचाहुआ आहारसे जीवे ४ प्रान्त आहारसे जीवे, रूक्ष आहारसे जीवे । पांच स्थानक की यावत् आज्ञादी है १ कायोत्सर्गकरे. २ उत्कट आसन करे, ३ एक रात्रि प्रमुख प्रतिमा विशेष करे ४ वीरासन करे ५ निषेधिका आसन करे । पांच स्थानक की यावत् आज्ञादी है १ दंडकी तरह लम्बा सोताहवा कायोत्सर्ग करे २ लगडकी तरह मस्तक और पांव दोनों जमीनको लगाकर और सर्व शरीर अधर रखे ३ शीत उष्णकी आतापना लेवे ४ वस्त्र रहित रहे और ५ खुजली कुचरे नहीं ॥ १२ ॥ पांच कारणसे श्रमण निर्ग्रंथ महानिर्जरा करनेवाले, और संसारका अंत

शब्दार्थ

कारन से स० श्रमण णि० निर्ग्रन्थ म० महानिर्जरा म० महापर्यवसान भ० होवे अ० अग्लानपना से आ० आचार्य की वे० वैयावृत्य क० करते ए० ऐसे उ० उपाध्याय की वे० वैयावृत्य थे० स्थविर की वे० वैयावृत्य त० तपस्वी की वे० वैयावृत्य गि० ग्लानिकी वे० वैयावृत्य क० करते पं० पांच ठा० स्थानक से स० श्रमण निर्गन्थ म० महानिर्जरा म० महापर्यवसान भ० होवे अ० अग्लानपना से से० शिष्यकी वे० वैयावृत्य क० करते अ० अग्लानपना से कु० कुलकी वे० वैयावृत्य क० करते अ० अग्लानपना से ग० गणकी वे० वैयावृत्य क० करते अ० अग्लानपना से सं० संघकी वे० वैयावृत्य क० करते अ० अग्लानपना से सा०

सूत्र

तं० अगिलाए आयरिय वेयावच्चं करेमाणे, एवं उवज्झाय वेयावच्चं, थेरवेयावच्चं, तवस्सि वेयावच्चं, गिलाणवेयावच्चं करेमाणे; । पंचहिं ठाणेहिं समणे निग्गंथे महानिजरे महापज्जवसाणे भवइ तं० अगिलाए सेहवेयावच्चं करेमाणे, अगिलाए कुलवेयावच्चं करेमाणे अगिलाए गणवेयावच्चं करेमाणे, अगिलाए संघवेयावच्चं करेमाणे, अगिलाए साहंमिय वे-

भावार्थ

करनेवाले होवे १ अग्लानपने आचार्यकी वैयावृत्य करते २ ऐसेही उपाध्याय, ३ स्थविर ४ तपस्वी और ५ रोगीकी वैयावृत्य करते । १ लघु शिष्य २ कुल ३ गण, ४ संघ और ५ स्वधर्मी इन पांचोंकी अग्लानपने वैयावृत्य करनेवाला श्रमण महानिर्जरा व संसारका अंत करनेवाला होवे ॥ १३ ॥ पांच कारनसे

शब्दार्थ

स्वधर्मी की वे० वैयावृत्य क० करेत ॥ १३ ॥ पं० पांच ठा० कारन से स० श्रमण नि० निर्ग्रन्थ सा० स्वधर्मी सं० संभोगिक को वि० विसंभोगिक क० करते णा० अतिक्रमे नहीं स० क्रिया सहित स्थानक प० सेवनेवाला भ० होवे प० सेवकर णो० नहीं आ० आलोचे आ० आलोचकर णो० नहीं प० स्थापना करे प० स्थापनकरके णो० नहीं णि० प्रवेश करे (आचरण करे) जा० जो इ० ये थे० स्थविरके ठि० स्थिति कल्प भ० हैं ता० उन को अ० अतिक्रम २ कर प० सेवे से० उन्हे हं० खेदार्थ हं० मैं प० सेवूं किं० क्या मे० मेरा थे० स्थविर क० करेंगे. पं० पांच कारन से स० श्रमण णि० निर्ग्रंथ सा० स्वधर्मी पा० पारंचिक क० करते णा० अतिक्रमे नहीं कु० कुलमें व० रहे कु० समुदाय के भे० भेद

सूत्र

यावच्चं करेमाणे, ॥ १३ ॥ पंचहिं ठाणेहिं समणे निग्गंथे साहंमियं संभोइयं विसंभोइयं करेमाणे णाइक्कमइ-तं० सकिरियट्ठाणं पडिसेवित्ता भवति; पडिसेवित्ता णो आलोइए, आलोएत्ता णो पट्ठिवेइ, पट्ठिवेत्ता, णो णिव्विसइ; जाइं इमाइं थेराणं ट्ठिइप्पकप्पाइं भवंति ताइं अइयंचिय २ पडिसेवेइ से हंद हं पडिसेवामि किं मे थेरा करिस्संति ॥ पंचहिं

भावार्थ

श्रमण निर्ग्रंथ अपने संभोगिक स्वधर्मीको विसंभोगिक (मंडली बाहिर) करते हुवे जिनाज्ञाका उल्लंघन नहीं करते हैं १ सक्रिय (पापयुक्त) स्थानका सेवन करे २ सक्रिय स्थानका सेवन किये पीछे गुरुकी आगे उसकी आलोयणाकरे नहीं ३ आलोयणा कर गुरुने दिया हुवा प्रायश्चित अंगीकार करे नहीं ४ प्रायश्चित तप अंगीकार कर उसे पूर्ण करे

शब्दार्थ

क लिये अ० उपस्थित रहे ग० गण के भे० भेद के लिये अ० उपस्थित होवे हिं० हिंसाप्रेक्षी छि० छिद्र-प्रेक्षी अ० वारंवार प० प्रश्न प० प्रयोग करनेवाला भ० होता है. आ० आचार्य उ० उपाध्याय की ग० समुदाय में पं० पांच उ० अवग्रह स्थानक आ० आचार्य उ० उपाध्यायके ग० गण में आ० आज्ञा धा० धारणा णो० नहीं स० सम्यक् प्रकारसे प० प्रयुंजनेवाला भ० होवे आ० आचार्य उ० उपाध्याय के ग० समुदाय में अ० यथा रा० रत्नाधिक को कि० कृतिकर्म णो० नहीं स० सम्यक् रीति से प० प्रयुंजनेवाला भ० होवे आ० आचार्य उ० उपाध्याय के ग० गण में जे० जो सु० श्रुत प० पर्याय जा० जात धा० धारण

सूत्र

ठाणेहिं समणे निग्गंथे साहंमियं पारंचियं करेमाणे णाइक्कमइ तं० कुलेवसइ कुलस्स भेयाए अब्भुट्ठेत्ता भवइ, गणस्सभेयाए अब्भुट्ठेत्ता भवइ, हिंसप्पेही, छिद्दप्पेही, अभिक्खणं २ पसिणाए तेणाइ पउत्ता भवइ । आयरियउवज्झायस्सणं गणंसि पंच वुग्गहट्ठाणा पण्णत्ता तं० आयरियउवज्झायस्सणं गणंसि आणंवा धारणंवा नोसम्मं

भावार्थ

नहीं और ५ जो प्रसिद्ध स्थविरकल्पी मुनिके स्थिति प्रकल्प, मासकल्प, पिंड, शैय्यादि आचार है उस का उल्लंघनकर अनाचार का सेवन करे और विचारे कि गुरुजी नाराज होगा तो मेराक्या करेंगे। श्रमण निर्ग्रन्थ अपने स्वधर्मीको पांच कारनसे प्रायश्चित करता हुवा आज्ञा नहीं लोपते हैं १ जिस संप्रदायमें रहे उसमें भेद करे २ गच्छमें भेद करे ३ हिंसा करे ४ साधुके छिद्र देखे ५ और गुरुको झठे बनानेके लिये वारंवार प्रश्न पुच्छे ।

करे तं० वह का० योग्य समय में स० सम्यक् प्रकार से अ० पढनेवाला भ० होवे आ० आचार्य उ० उपाध्यायके गण में गि० रोगी से० शिष्यकी वे० वैयावृत्य णो० नहीं स० सम्यक् प्रकार से अ० करनेको तत्पर भ० होवे आ० आचार्य उ० उपाध्याय के ग० गण में अ० विना पूछे चलनेवाले णो० नहीं आ० पूछकर चलनेवाले आ० आचार्य उ० उपाध्याय के ग० गण में पं० पांच अ० अव्युद्ग्रह ठा० स्थानक आ० आचार्य उ० उपाध्याय के गण में आ० आज्ञा धा० धारणा स० सम्यक् प्रकार से पं० प्रयुंजनेवाले भ० होवे

पउंजित्ताभवइ, आयरियउवज्झाए णं गणंसि अहाराइणियाए किइकम्मं णोसम्मं पउंजित्ता भवइ, आयरिय उवज्झाए णं गणंसि जे सुयपज्जवजाए धारेइ ते काले णो सम्ममणुप्पव्वाएत्ता भवइ, आयरियउवज्झाएणं गणंसि गिलाणसेहवेयावच्चं णोसम्म मब्भुट्ठेत्ता भवइ, आयरियउवज्झाएणं गणंसि अणापुच्छियचारीयावि हवइ, णोआपुच्छियचारी, आयरियउवज्झायस्सणं गणंसि पंच अवुग्गहट्ठाणा पं० तं० आयरिय उव-

आचार्य उपाध्यायके गच्छमें पांच व्युद्ग्रह (कलहके कारन) कहे हैं १ आचार्य उपाध्यायके गच्छमें जो आज्ञा, धारणा, या संयम प्रयुंजनेवाला न होवे सो कलहकारी जानना २ आचार्य उपाध्याय के गच्छ में रत्नाधिक (बडे) को यथायोग्य वंदना न करे तो ३ आचार्य उपाध्यायके गच्छमें जिस श्रुत पर्याय जाने और उसके अर्थकी धारना करे उसका यथोक्त कालमें अध्ययन करे नहीं परंतु अकाल में अध्ययन करे ४

शब्दार्थ

ए० ऐसे अ० यथारत्नाधिक स० सम्यक् प्रकार से आ० आचार्य उ० उपाध्याय के गण में जे० जो सु० श्रुत प० पर्यव जा० जात ध० धारता है ते० वे का० काल में स० सम्यक् प्रकार से ए० ऐसे गि० रोगी से० शिष्य वे० वैयावृत्य आ० आचार्य उ० उपाध्याय के ग० गण में आ० पूछकर चलनेवाला भ० होवे णो० नहीं अ० अनापुच्छाचारी ॥ १४ ॥ पं० पांच नि० बैठने के आसन प० कहे उ० उत्कटासन गो०

सूत्र

ज्झाएणं गणंसि आणंवा धारणंवा सम्मंपउंजित्ता भवइ, एव महाराइणियाए सम्मं, आयरियउवज्झाएणं गणंसि जेसुयपजवजाए धारेइ ते काले सम्म० । एवं गिलाण सेह वेयावच्चं सम्मं०, आयरियउवज्झाएणं गणंसि आपुच्छियचारीयावि भवइ, णोअणापुच्छियचारी ॥ १४ ॥ पंचनिसिजाओ पण्णत्ताओ तं० उक्कुडुया, गोदोहिया समपा-

भावार्थ

आचार्य उपाध्यायके गच्छमें ग्लानिकी सम्यक् प्रकारसे वैयावृत्य करे नहीं ५ आचार्य उपाध्यायके गच्छमें गुरुको विनापूछे विहार करे गुरुकी आज्ञामें चले नहीं. वे पांचों क्लेशके उत्पादक जानना । आचार्य उपाध्यायके गच्छमें पांच व्युद्ग्रहस्थान (आधारभूत) कहे हैं १ आचार्य उपाध्यायके गच्छमें आज्ञा धारना सम्यक् प्रकारसे प्रयुंजे २ रत्नाधिक को वंदना नमस्कार करे ३ जिस सूत्रकी धारना करे उस का काल में पठन करे ४ ग्लानि शिष्य की वैयावृत्य करे और ५ गच्छमे गुरुको पूछ कर विहार करे अर्थात् गुरुकी आज्ञानुसार चले. ॥ १४ ॥ पांच निषद्या (बैठनेका स्थान) कही १ उत्कटासनसे बैठना, २ गोदुहासन, ३

शब्दार्थ

गोदुह स० बराबर पा० पाद प० पल्यंकासन अ० अर्धपल्यंकासन ॥ १५ ॥ पं० पांच अ० आर्जवस्थानक सा० अच्छी अ० सरलता सा० अच्छी म० मृदुता ला० लघुता खं० क्षमा मो० मुक्ति ॥ १६ ॥ पं० पांच जो० ज्योतिषी चं० चंद्र सू० सूर्य ग० ग्रह न० नक्षत्र ता० तारें ॥ १७ ॥ पं० पांच प्रकार के दे० देव भ० भविद्रव्यदेव ण० नरदेव ध० धर्मदेव दे० देवाधिदेव भा० भावदेव ॥ १८ ॥ पं० पांच प्रकारकी प०

मूल

यपुया, पलियंका, अद्धपलियंका ॥ १५ ॥ पंच अज्जवठाणा प० तं० साहुअज्जवं, साहुमद्दवं, साहुलाघवं,साहुखंति, साहुमोत्ती ॥ १६ ॥ पंचविहा जोइसिया प० तं० चंदा, सूरा, गहा, णक्खत्ता, ताराओ ॥ १७ ॥ पंचविहादेवा प० तं० भवियदव्वदेवा, णरदेवा, धम्मदेवा, देवातिदेवा, भावदेवा ॥ १८ ॥ पंचविहा परियारणा प० तं० का-

भावार्थ

दोनोंपाँव बराबर जोडकर बैठना, ४ पालखी लगाकर बैठना ५ और आधी पालखी लगाकर बैठना ॥१५॥ पांच आर्जव (संवर)स्थान कहे हैं१अच्छी सरलता, २ अच्छी मृदुता ३ अच्छी लघुता ४ अच्छी क्षमा, और ५ अच्छी मुक्ति (निर्लोभता) ॥ १६॥ पांच जातिके ज्योतिष कहे हैं:-चंद्र, सूर्य, ग्रह, नक्षत्र और तारें ॥ १७ ॥ पांच प्रकारके देव १ भाविद्रव्य देव, नरदेव, धर्मदेव, देवाधिदेव और भावदेव ॥ १८ ॥ पांच प्रकारकी परिचारणा कही काम परिचारणा, स्पर्श परिचारणा; रूप परिचारणा, शब्द परिचारणा, और मन

शब्दार्थ

पारचारणा का० काय परिचारणा फा० स्पर्श परिचारणा रू० रूप पारचारणा स० शब्द परिचारणा म० मन परिचारणा ॥ १९ ॥ च० चमर अ० असुरेन्द्र अ० असुर कुमार र० राजा पं० पांच अ० अग्रमहिषी का० काली रा० राजी र० रजनी वि० विद्युत् मे० मेघा ब० बलि व० वैरोचनेन्द्र व० वैरोचन राजा को पं० पांच अ० अग्रमहिषियों सु० शुभा णि० निशुभा रं० रंभा णि० निरंभा म० मदना ॥ २० ॥ च० चमर अ० असुरेन्द्र अ० असुर कुमार राजा को पं० पांच सं० संग्रामिक अ० आनिक पं० पांच सं० संग्रा-

सूत्र

यपरियारणा, फासपरियारणा, रूवपरियारणा, सद्दपरियारणा, मणपरियारणा ॥ १९ ॥ चमरस्सणं असुरिंदस्स असुरकुमाररन्नो पंच अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ त० काली, राई, रयणी, विज्जु, मेहा । बलिस्सणं वइरोयणिंदस्स वइरोयणरण्णो पंच अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ तं० सुभा, णिसुभा; रंभा, णिरंभा, मयणा ॥ २० ॥ चमरस्सणं असुरिंदस्स असुरकुमाररन्नो पंच संगामिया अणिया पंच संगामिया अणियाहिवई

भवार्थ

परिचारणा ॥ १९ ॥ असुर कुमारके चमरेन्द्रको पांच अग्रमहिषी कही १ काली, २ राजी, ३ रजनी, ४ विद्युत और ५ मेघा. बलेन्द्र नामक वैरोचनेन्द्रको पांच अग्रमहिषी कही शुभा, निशुभा, रंभा, निरंभा और मदना ॥ २० ॥ चमर नामक असुरेन्द्रको पांच सांग्रामिक-लडाइकी सेना और पांच सांग्रामिक-सैन्यके अधिपति कहे हैं १ पादात्यानीक (पैदल) २ पीठानीक (घोडेस्वार) ३ हस्तीकी सेना ४ भैंसाकी

शब्दार्थ

सूत्र

भावार्थ

ामके अ० अनिक के अ० अधिपति पा० पादात्यनिक पी० पीठानिक [घोडेस्वार] कुं० कुंजरानिक (हाथी की सेना) भ० भैंसे की सेना र० रथानिक दु० द्रुम पा० पादात्यानिक का अधिपति सो० सोदाम अ० अश्वराज पी० पीठानिक का अ० अधिपति वे० वैकुंथु ह० हस्तिराज कु० कुंजरानिक का अ० अधिपति लो० लोहिताक्ष म० महिषानिक के अ० अधिपति कि० किन्नर र० रथानिक के अ० अधिपति । ब० बलि वे० वैरोचनेन्द्र व० वैरोचन र० राजा को पं० पांच सं० संग्रामिक अ० अनिक पं० पांच सं० संग्रा-

प० तं० पायत्ताणिए, पीढाणिए, कुंजराणिए, महिसाणिए, रहाणिए । दुमे-पायत्ताणियाहिवई, सोदामी आसराया पीढाणियाहिवई वेकुंथु हत्थिराया-कुंजराणियाहिवई, लोहियक्खे महिसाणियाहिवई; किन्नरे रहाणियाहिवई ॥ बलिस्सणं वइरोयणिंदस्स वइरोयणरन्नो पंच संगामिया अणिया, पंच संगामिया अणियाहिवई प० तं० पायत्ताणिए, जाव रहाणिए । महादुमे पायत्ताणियाहिवई, महासोदामे आसराया, पीढाणियाहि-

सेना और ५ रथकी सेना । पांच अधिपति १ पादात्यानिक का अधिपति द्रुम २ पीठानिक का अधिपति सौदाम ३ कुंजरानिक का अधिपति वैकुंथु ४ भैंसाकी सेनाका अधिपति लोहिताक्ष और ५ रथानिकके अधिपति किन्नर । बलि नामक वैरोचनेन्द्र को पांच सांग्रामिक सेना और पांच उनके अधिपति कहे हैं पादात्यानिक यावत रथानिक. उनके अधिपति १ महाद्रुम, २ महा सौदाम ३ माल्यंकार ४ महा लोहिताक्ष

शब्दार्थ

मिक अ० अनिकाधिप प० पादात्यानिक जा० यावत् र० रथानिक म० महादुम प० पादात्यानिक के अ० अधिपति म० महा सो० सौदाम आ० अश्वराज पी० पीठानिक के अ० अधिपति मा० माल्यंकार ह० हस्तिराजा कुं० कुंजरानिक के अ० अधिपति म० महा लोहिताक्ष म० महिषानिक के अ० अधिपति किं० किंपुरुष र० रथानिक के अ० अधिपति ध० धरणेन्द्र ना० नागेन्द्र ना० नागकुमार राजाको पं० पांच सांग्रामिक अ० अनिक (सैन्य) पं० पांच सं० सांग्रामिक अ० अधिपति भ० भद्रसेन. ज० जशोधर सु० सुदर्शन.

सूत्र

वई, मालंकारे हत्थिराया कुंजराणियाहिवई, महालोहिअक्खे महिसाणियाहिवई, किंपुरिसे रहाणियाहिवई, ॥ धरणिंदस्सणं नागिंदस्स नागकुमाररन्नो पंच संगामिया अणिया, पंच संगामिया अणियाहिवई, प० तं० पायत्ताणिए जाव रहाणिए । भद्दसेणे पायत्ताणियाहिवई, जसोधरे आसराया पीढाणियाहिवई, सुदंसणे हत्थिराया कुंजराणियाहिवई, नीलकंठे महिसाणियाहिवई, आणंदे रहाणियाहिवई, ॥ भूयाणंदस्सणं नाग-

भावार्थ

और ५ किंपुरुष । नागकुमार राजाके धरणेन्द्रके पांच सांग्रामिक अनिक और पांच उनके अधिपति कहे हैं:- पादात्यानिक यावत् रथानिक. उनके पांच अधिपति क्रमसे जानना. १ भद्रसेन, २ यशोधर ३ सुदर्शन ४ नीलकंठ और ५ आनंद. नागकुमारके भूतानेन्द्रको पांच सांग्रामिक अनिक और पांच उनके अधिपति कहे हैं:- पादात्यानिक यावत रथानिक. उनके अधिपति १ दक्ष २ सुग्रीव ३ सुविक्रम ४

शब्दार्थी

नी० नीलकंठ आ० आनंद. भू० भूतानेन्द्र ना० नागेन्द्र ना० नागकुमार राजाको पं० पांच सं० सांग्रामिक अ० सैन्य पं० पांच सं० सांग्रामिक अ० सैन्य के अ० अधिपति द० दक्ष सु० सुग्रीव सु० सुविक्रम से० श्रेयकंठ नं० नंदोत्तर वे० वेणुदेव सु० सुवर्णेन्द्र सु० सुवर्ण कुमार राजा पं० पांच सं० सांग्रामिक अ० अनिक के अ० अधिपति पा० पादात्यनिक ए० ऐसे ज० जैसे ध० धरणेन्द्र त० तैसे वे० वेणुदेवको वे० वेणुदाल को ज० जैसे भू० भूतानेन्द्र ज० जैसे ध० धरणेन्द्रको त० तैसे स० सब दा० दाक्षिणके

सूत्र

कुमारिंदस्स नागकुमाररन्नो पंच संगामिया अणिया पंचसंगामिया अणियाहिवई प० तं० पायत्ताणिए जाव रहाणिए । दक्खे पायत्ताणियाहिवई, सुग्गीवे आसराया पीढाणियाहिवई, सुविक्कमे हत्थिराया कुंजराणियाहिवई, सेयकंठे महिसाणियाहिवई, णंदुत्तरे रहाणियाहिवई ॥ वेणुदेवस्सणं सुविण्णिदस्स सुवन्न कुमाररन्नो पंच संगामिया आणिया, पंचसंगामिया आणियाहिवई प० तं० पायत्ताणिए एवं जहा धरणस्स तहा

भावार्थ

श्रेयकंठ और ५ नंदोत्तर. सुवर्णेन्द्रके वेणुदेवको पांच सांग्रामिक अनिक और पांच उनके अधिपति धरणेन्द्रकी समान जानना. और जैसे भूतानेन्द्रके पांच सांग्रामिक सेना व उनके अधिपति कहे हैं वैसेही वेणुदालको जानना. और अन्य सब दाक्षिण दिशाके इन्द्रके पांच सांग्रामिक सेना व उनके अधिपति धरणेन्द्र समान जानना, और उत्तरदिशा के इन्द्रकी पांच सेना व अधिपति भूतानेन्द्र समान जानना. शक्रेन्द्रकी

शब्दार्थ — जा० यावत् घो० घोषका ज० जैसे भू० भूतानेन्द्र त० तैसे स० सब उ० उत्तरके जा० यावत् म० महाघोष को स० शक्र दे० देवेन्द्र दे० देवराजा को पं० पांच सं० सांग्रामिक अ० अनिक पं० पांच सं० सांग्रामिक अ० अनिक के अ० अधिपति पा० पादात्यानीक जा० यावत् उ० ऋषभानिक ह० हरिणगमेषी प० पादात्यानिकके अ० अधिपति वा० वायु आ० अश्वराज पी० पीठानिक अ० अधिपति ऐ० ऐरावण ह० हस्तीराजा कुं० कुजरानिकके अ० अधिपति दा० दामास्ती उ० ऋषभानिके अ० अधिपति मा० मा-

सूत्र — वेणुदेवस्सवि। वेणुदालियस्स य जहा भूताणंदस्स। जहा धरणस्स तहा सव्वेसिं दाहिणिल्लाणं जाव घोसस्स। जहा भूयाणंदस्स तहा सव्वेसिं उत्तरिल्लाणं जाव महाघोसस्स ॥ सक्कस्सणं देविंदस्स देवरन्नो पंच संगामिया अणिया पंच संगामिया अणियाहिवई प० तं० पायत्ताणिए जाव उसभाणिए । हरिणेगमेसी पायत्ताणियाहिवई, वाऊ आसराया पीढाणियाहिवई ऐरावणे हत्थिराया कुंजराणियाहिवई दामट्ठी उसभाणियाहिवई,

भावार्थ — पांच सांग्रामिक सेना व उनके पांच अधिपति कहे हैं १. पादात्यानिक यावत् वृषभानिक रथानिक उनके अधिपति १ हरिणगमेषी २ वायु ३ ऐरावण ४ दामास्ति और ५ माढर. ईशानेन्द्र देवताको पांच अनिक व पांच उनके अधिपति कहे हैं, पादात्यानीक यावत् रथानीक. उनके अधिपति १ लघु पराक्रम, २ महावायु ३ पुष्पदंत ४ महादामास्ति और ५ महामाढर.. जैसे शक्रेन्द्रके पांच अनिक व उनके

शब्दार्थ

ढर र० रथानिकके अ० अधिपति ई० ईशान दे० देवेन्द्रको दे० देवराजा पं० पांच सं० सांग्रामिक अ० अनिक ल० लघुपराक्रम म० महावायु अ० अश्वराज पु० पुष्पदंत ह० हस्तिराज म० महादामास्ति म० महामाढर ज० जैसे स० शक्रके त० तैसे स० सब दा० दक्षिणके दे० देवताओंके जा० यावत् आ० आरणके ज० जैसे ई० ईशानका त० तैसे स० सब उ० उत्तरके जा० यावत् अ० अच्युतके स० शक्र दे० देवेन्द्र दे० देवराजा की अ० आभ्यंतर प० परिषदाके दे० देवताको पं० पांच प० पल्योपमकी ठि० स्थिति ई० ईशान दे० देवेन्द्र दे० देवराजाकी अ० आभ्यंतर प० परिषदामें दे० देवीकी पं० पांच प० पल्योपमकी ठि० स्थिति

सूत्र

माढरे रहाणियाहिवई।ईसाणस्सणं देविंदस्स देवरन्नो पंच संगामिया आणिया जाव पायत्ताणिए पीढा कुंजरा उसभा रहाणिओ। लहुपरक्कमे पायत्ताणियाहिवई, महावाऊ आसराया पीढाणियाहिवई, पुप्फदंते हत्थिराया कुंजराणियाहिवई, महादामट्ठी उसभाणियाहिवई महामाढरे रहाणियाहिवई, । जहा सक्करस तहा सव्वेसिं दाहिणिल्लाणं जाव आरणस्स । जहा ईसाणस्स तहा सव्वेसिं उत्तरिल्लाणं जाव अच्चुयस्स। सक्करसणं देविंदस्स देवरन्नो अब्भिंतरपरिसाए देवाणं पंचपलिओवमाइं ठिई प० । ईसाणस्सणं देविंदस्स देवरन्नो अब्भिंतरपरिसाए देवीणं पंचपलिओवमाइं ठिई प० ॥ २१ ॥ पंच-

भावार्थ

अधिपति कहें वैसे आरण तक सब दक्षिण दिशाके इन्द्रको कहना और जैसे ईशानेन्द्र को कहा वैसे अच्युत तक सब उत्तर दिशाके इन्द्रको कहना. शक्रेन्द्रकी आभ्यन्तर परिषदाके देवताकी पांच पल्योपमकी

शब्दार्थ

॥ २१ ॥ प० पांचप्रकारकी प० प्रतिघात ग० गतिप्रतिघात ठि० स्थितिप्रतिघात बं० बंधप्रतिघात भो० भोगप्रतिघात ब० बल वी० वीर्य पु० पुरुषात्कार प० पराक्रम प० प्रतिघात ॥ २२ ॥ प० पांचप्रकारकी आ० आजीविका जा० जातिआजीविका कु० कुलआजीविका क० कर्मसे आजीविका सि० शिल्पसे आ० आजीविका लिं० लिंगसेआजीविका ॥ २३ ॥ पं० पांच रा० राजाके क० चिन्ह ख० खड्ग छ० छत्र उ० मुकुट प० पगरखी वा० चम्मर ॥ २४ ॥ प० पांच ठा० कारनसे छ० छद्मस्थ उ० उदय-

सूत्र

विहा पडिहा प० तं० गइपडिहा, ठिइपडिहा, बंधणपडिहा, भोगपडिहा; बलवीरियपुरिसक्कार परक्कमपडिहा ॥ २२ ॥ पंचविहे आजीवे प० तं० जाइआजीवे, कुलाजीवे, कम्माजीवे, सिप्पाजीवे, लिंगाजीवे ॥ २३ ॥ पंचरायककुहा प० तं० खग्गं, छत्तं, उप्फेसं, वाहणाओ, वालवीयाणी ॥ २४ ॥ पंचहिं ठाणेहिं छउमत्थेणं उदिण्णे परिस-

भावार्थ

स्थिति कही. और ईशानेन्द्रकी आभ्यन्तर परिषदाकी देवीकी पांच पल्योपमकी स्थिति कही ॥ २१ ॥ पांच प्रकारके प्रतिघात कहें १ गति प्रतिघात, २ स्थिति प्रतिघात ३ बंध प्रतिघात ४ भोग प्रतिघात और ५ बल, वीर्य, पुरुषाकार, व पराक्रम का प्रतिघात. ॥ २२ ॥ पांच प्रकारकी आजीविका कही १ जाति बताकर आजीविका करे, २ कुलबताकर आजीविका करे, ३ कृषी वगैरह कर्म कर आजीविका करे, ४ शिल्पादिसे आजीविका करे और ५ साधुका लिंग (वेष) धारन कर आजीविका करे ॥ २३ ॥ पांच प्रकारके राज्यचिन्ह कहे हैं १ खड्ग, २ छत्र ३ मुकुट ४ पगरखी और ५ चमर ॥२४॥

शब्दार्थ

आयाहुवा प० परीषह उ० उपसर्गको स० सम्यक्प्रकारसे स० सहनकरे ख० खमे ति० तितिक्षे अ० अहियासे तं० वह ज० जैसे उ० कर्मउदयसे ख० निश्चयार्थमें अ० यह पु० पुरुष उ० उन्मत्त भू० हुवा ते० इसलिये मे० मुझे ए० यह पु० पुरुष अ० आक्रोशकरताहै अ० उपहास्यकरताहै णि० कंकरादि डालताहै नि० कुवचनबोलताहै बं० बांधताहै रुं० रुंधनकरताहै छ० अंगोपांगछेदताहै प० मारताहै उ० उद्वेगउपजाताहै व० वस्त्र प० पात्र कं० कंबल पा० रजोहरण आ० लूंटलेताहै वि० फेंकताहै भि० फोडताहै अ० लेजाताहै ज० यक्षाधिष्ट ख० निश्चय अ० यह पु० पुरुष ते० इसलिये ए० यह पु०

सूत्र

होवसग्गे सम्मं सहेज्जा, खमेज्जा, तितिक्खेज्जा, अहियासेज्जा तं० उदिन्नकम्मे खलु अयं पुरिसे उम्मत्तगभूए तेण मे एस पुरिसे अक्कोसइवा, अवहसइवा, णिच्छोडइवा, णिज्झत्थेइवा, बंधइवा, रुंधइवा, छविच्छेयं करेइवा, पमारंवाणेइ, उद्दवेइवा, वत्थपडिग्गहं कंबलं पायपुच्छणमाच्छिंदइवा, विच्छिंदइवा, भिंदइवा, अवहरइवा । जक्खाइट्ठे खलु अयं पुरिसे तेण मे एस पुरिसे अक्कोसइवा तहेव जाव अवहरइवा । ममंचणं तब्भवत्तेय,

भावार्थ

पांच स्थानकसे छद्मस्थ जीव उदय आये हुवे परिषह सहन करे. १ यह पुरुष खरेखर कर्मोदयसे उन्मत्त हुआ है इसलिये मुझे आक्रोश करता है, हसता है; हस्तादिसे कंकर डालता है, कुवचनसे निर्भत्सन करता है; बांधता है, रुंधता है, चर्मछेद करता है, मारता है, उद्वेग उपजाता है, वस्त्र, पात्र, रजोहरणा-

शब्दार्थ

पुरुष अ० आक्रोश करता है त० तैसे जा० यावत् अ० लेजाता है म० मेरे त० पूर्व भव के वे० वेदनीय क० कर्म उ० उदय भ० हुवे हैं ते० इस लिये मे० मुझे ए० यह पु० पुरुष अ० आक्रोश करता है जा० यावत् अ० लेजाता है म० मेरे स० सम्यक् प्रकारसे अ० नहीं सहते अ० नहीं खमते अ० नहीं तितिक्षा करते अ० नहीं अहियासते कि० क्या अ० अन्य क० होगा ए० एकान्त से पा० पापकर्म क० करता है म० मेरे व० सम्यक् प्रकारसे स० सहन करते अ० अहियासते कि० क्या अ० अन्य क० होगा ए० एकान्त से नि० निर्जरा होवे इ० यह पं० पांच ठा० कारनसे छ० छद्मस्थ उ० उदय हुवे प० परीषह उ० उप-

सूत्र

णिज्जे कम्मे उदिन्ने भवइ तेण मे एस पुरिसे अक्कोसइव जाव अवहरइवा । ममंचणं सम्मं असहमाणस्स, अखममाणस्स अतितिक्खेमाणस्स, अणहियासेमाणस्स, किम्मन्ने कज्जइ ? एगंतसो मे पावकम्मे कज्जइ, । ममंचणं सम्मं सहमाणस्स जाव आहियासेमाणस्स किमन्ने कज्जइ, एगंतसो मे निज्जरा कज्जइ, । इच्चेएहिं पंचहिं ठाणेहिं छउमत्थे

भावार्थ

दि ले लेता है ऐसा विचार कर सहन करे २ यह पुरुष खरेखर यक्षाधिष्ट है इसलिये मुझे आक्रोश करता है यावत् मेरे वस्त्रादि लेलेता है ३ मुझे उस भव के वेदनीय कर्म उदय आये हुवे हैं इसलिये यह आक्रोश करता है यावत् मेरे वस्त्रादि लेलेता है ४ यदि उदय आये हुवे पाप कर्म सम्यक् भावसे नहीं सहूंगा तो एकान्त पापकर्म होगा और ५ उन्हे मैं सम्यक् भावसे सहूंगा तो एकान्त

शब्दार्थ

सर्ग स० सम्यक् स० सहे जा० यावत् अ० अहियासे ॥ २५ ॥ पं० पांच ठा० कारनसे के० केवली उ० उदय हुवे प० परीषह उ० उपसर्ग स० सम्यक् स० सहे जा० यावत् अ० अहियासे खि० खिन्न चित्तवाला अ० यह पु० पुरुष ते० इस लिये मे० मुझे ए० यह पु० पुरुष अ० आक्रोश करता है जा० यावत् अ० लेजाता है दि० दीप्त चित्तवाला अ० यह पुरुष ते० इस लिये मे० मुझे ए० यह पुरुष जा० यावत् अ० लेजाता है ज० यक्षाविष्ट अ० यह ते० इस लिये मे० मुझे ए० यह पुरुष जा० यावत् अ० लेजाता है म०

सूत्र

उदिन्ने परीसहोवसग्गे सम्मं सहेज्जा जाव आहियासेज्जा ॥ २५ ॥ पंचहिं ठाणेहिं केवली उदिन्ने परीसहोवसग्गे सम्मं सहेज्जा जाव आहिआसेज्जा तं० खित्तचित्ते खलु अयं पुरिसे तेण मे एस पुरिसे अक्कोसइ वा तहेव जाव अवहरइवा. । दित्तचित्ते खलु अयंपुरिसे तेण मे एसपुरिसे जाव अवहरइवा। जक्खाइट्ठे खलु अयं पुरिसे तेण मे एसपुरिसे जाव अव-

भावार्थ

निर्जरा होगी. ऐसे पांच प्रकारके विचारसे उत्पन्न हुवे उपसर्ग समभावसे सहन करे ॥ २५ ॥ पांच स्थानकसे केवली प्राप्त परिषह सहन करे १ पुत्रादि वियोगके शोकसे नष्ट चित्त वाला यह पुरुष मुझे आक्रोश करता है यावत् मेरेपात्रादि लेजाता है २ पुत्रजन्मादिसे उन्मत्त चित्तवाला यह पुरुष मुझे आक्रोश करता है यावत मेरेपात्रादि ले लेता है ३ यह पुरुष यक्षाविष्ट हुआ है इसलिये मुझे आक्रोश करता है यावत् मेरे

शब्दार्थ

मेरे त० पूर्व भव के वे० वेदनीय कर्म उ० उदय हुवे ते० इस लिये ए० यह पुरुष जा० यावत् अ० लेजाता है म० मेरे स० सम्यक् स० सहते ख० खमते ति० तितिक्षा करते अ० अहियासेते पा० देख कर ब० बहुत अ० अन्य छ० छद्मस्थ स० साधु नि० निर्ग्रन्थ उ० उदय हुवे प० परीषह उ० उपसर्ग ए० ऐसे स० सम्यक् स० सहन करेंगे जा० यावत् अ० अहियासेंगे इ० इन पं० पांच ठा० कारन से के० केवली उ० उदय हुवे प० परीषह उ० उपसर्ग स० सम्यक् स० सहे जा० यावत् अ० अहियासे ॥ २६ ॥ पं० पांच

सूत्र

हरइत्ता । ममंचणं तब्भववेयणिज्जे कम्मे उदिन्ने भवइ तेणमे एस पुरिसे जाव अवहरइत्ता। ममंचणं सम्मं सहमाणं खममाणं तितिक्खमाणं अहियासेमाणं पासित्ता बहवे अन्ने छउमत्था समणा निग्गंथा उदिन्ने परीसहोवसग्गे एवं सम्मं सहिस्संति जाव अहियासिस्संति। इच्चेएहिं पंचहिंठाणेहिं केवली उदिन्ने परीसहोवसग्गे सम्मं सहेज्जा जाव अहियासेज्जा।२६।पं-

भावार्थ

वस्त्र पात्रादि अपहरता है ४ मुझे पूर्वभवके कर्म उदय आये हैं इसलिये यह आक्रोश करता है यावत् मेरे वस्त्रपात्रादि लेलेता है ५ मुझे सम्यक् प्रकारसे परिषह सहन करते देख अन्य छद्मस्थ श्रमण निर्ग्रन्थ उत्पन्न हुवे परिषह सम्यक् रीतिसे सहन करेंगे यावत् अहियासेंगे इन पांच कारनोंसे केवली सम्यक् भावसे परिषह सहन करे ॥ २६ ॥ पांच प्रकारके अनुमानादि हेतु कहे हैं १ हेतु न जाने, २ हेतु नदेखे ३

शब्दार्थ

हे० हेतु प० प्ररूपे हे० हेतु को न० नहीं जा० जानता है हे० हेतु को ण० नहीं पा० देखता है हे० हेतुको न० नहीं बु० समझता हैं हे० हेतु को न० नहीं अ० श्रद्धता है हे० हेतु को न० नहीं अ० अनुसरता है हे० हेतु को अ० अज्ञान म० मरण म० मरता है पं० पांच हे० हेतु हे० हेतुसे ण० नहीं जा० जाने जा० यावत् हे० हेतुसे अ० अज्ञान म० मरण म० मरे पं० पांच हेतु हे० हेतुको जा० जाने जा० यावत् हे० हेतु छ० छद्मस्थ म० मरण म० मरता है पं० पांच हेतु हे० हेतुसे जा० जाने जा० यावत् हे० हेतुसे छ० छद्मस्थ म० मरण म० मरता है पं० पांच अ० अहेतु अ० अहेतुको ण० नहीं जा० जानता है जा० या-

सूत्र

चहेऊ प० तं० हेउं न जाणइ, हेउं ण पासइ, हेउंण बुज्झइ, हेउं णाभिगच्छइ, हेउमन्नाणमरणं मरइ । पंचहेऊ प० तं० हेउणा ण जाणइ जाव हेउणा अन्नाणमरणं मरइ । पंचहेऊ प० तं० हेउं जाणइ जाव हेउं छउमत्थमरणंमरइ । पंचहेऊ प० तं० हेउणा जाणइ जाव हेउणा छउमत्थ मरणं मरइ । पंचअहेऊ प० तं० अहेउं ण जाणइ जाव अहेउं छउमत्थमरणं मरइ । पंचअहेऊ प० तं० अहेउणा-

भावार्थ

हेतु न श्रद्धे ४ हेतु हृदयमें नलावे, और ४ हेतु अज्ञान मृत्युसे मरे. ये हेतु मिथ्यात्वियोंको होते हैं। औरभी पांच प्रकारके हेतु कहे हैं हेतुसे धर्मजाने नहीं यावत् हेतुसे अज्ञान मृत्युमरे । औरभी पांच प्रकारके हेतु कहे हैं हेतु जाने यावत् हेतु छद्मस्थ मरण मरे । पांच प्रकारके हेतु कहे हेतुसे जाने यावत् हेतुसे छद्मस्थ

शब्दार्थ

वत् अ० अहेतु छ० छद्मस्थ म० मरण म० मरता है पं० पांच अ० अहेतु अ० अहेतुसे न० नहीं जा० जाने जा० यावत् अ० अहेतुसे छ० छद्मस्थ म० मरण म० मरे पं० पांच अहेतु प० प्ररूपे अ० अहेतुको जा० जाने जा० यावत् अ० अहेतु के० केवली मरण म० मरे ॥ २७ ॥ के० केवलीके पं० पांच अ० उत्कृष्ट अ० उत्कृष्ट ज्ञान अ० उत्कृष्ट दर्शन अ० उत्कृष्ट चारित्र अ० उत्कृष्ट तप अ० उत्कृष्ट वीर्य ॥ २८ ॥ प० पद्मप्रभु अ० अरिहंत के पं० पांच चि० चित्रा नक्षत्रमें हो० हुवे चि० चित्रामें चु० चवें च० चवकर

सूत्र

नजाणइ जाव अहेउणा छउमत्थमरणं मरइ । पचअहेऊ प० तं० अहेउं जाणइ जाव अहेउं केवलिमरणं मरइ ॥ २७ ॥ केवलिस्सणं पंचअणुत्तरा प० तं० अणुत्तरे नाणे, अणुत्तरे दंसणे, अणुत्तरे चरित्ते, अणुत्तरे तवे, अणुत्तरे वीरिए ॥ २८ ॥ पउमप्पभेण मरहा पंचचित्ते होत्था तं० चित्ताहिं चुए चइत्ता गब्भंवक्कंते, चित्ताहिं जाए, चित्ताहिं

भावार्थ

मरण मरे । पांच अहेतु कहे हैं:-अहेतुसे जाने यावत् अहेतुसे छद्मस्थ मरण मरे. पांच अहेतु कहे अहेतुसे जाने यावत् अहेतुसे केवली मरण मरे ॥ २७ ॥ केवलीको पांच उत्कृष्ट (प्रधान) कहे हैं १ अनुत्तर ज्ञान, २ अनुत्तर दर्शन, ३ अनुत्तर चारित्र, ४ अनुत्तर तप और ५ अनुत्तर वीर्य. ॥ २८ ॥ पद्मप्रभ अरिहंतके पांच कल्याणक चित्रा नक्षत्रमें हुये. १ चवकर गर्भमें उत्पन्न होना, २ जन्म ३ गृहवास छोडकर दीक्षा

शब्दार्थ

ग० गर्भ में व० आये चि० चित्रा में जा० जन्महुवा चि० चित्रा में मु० मुंडहुवे अ० अगार से अ० अनगार को प० ग्रहण कीया चि० चित्रा में अ० अनंत अ० उत्कृष्ट णि० निर्व्याघात नि० निरावरण क० कृत्स्न के० केवलवर ना० ज्ञान दं० दर्शन स० उत्पन्न हुवा चि० चित्रा में प० निर्वाण पधारे पु० पुष्पदंत अ० अरिहंत के पं० पांच मू० मूल नक्षत्र में हो० हुवे मू० मूल में चू० चवे च० चवकर ग० गर्भ में व० आये ए० ऐसे ए० इस अ० अभिलाप से इ० इस गा० गाथा से अ० जानना प० पद्मप्रभु के चि० चित्रा में मू० मूल में पु०

सूत्र

मुंडेभवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइए, चित्ताहिं अणंते अणुत्तरे णिव्वाघाए, निरावरणे, कसिणे, पडिपुन्ने, केवलवरनाणदंसणे समुप्पन्ने, चित्ताहिं परिनिव्वुए ॥ पुप्फदंतेणं अरहा पंच मूले होत्था मूलेणं चूए चइत्ता गब्भं वक्कंते एवंचेव, एएणं अभिलावेणं इमाओ गाहाओ अणुगंतव्वाओ ॥ पउमप्पभस्स चित्ता, मूले पुण होइ पुप्फदंतस्स;

भावार्थ

अंगीकार करना, अनंत, उत्कृष्ट, निर्व्याघात, आवरण रहित, प्रतिपूर्ण केवल ज्ञान उत्पन्न होना, और ९ मोक्ष पहुंचना. ऐसेही पुष्पदंत अरिहंतके पांच कल्याणक मूल नक्षत्रमें हुए. पुष्पदंत स्वामीके मूलनक्षत्र में, शीतलनाथ स्वामी के पूर्वाषाढामें, विमलनाथ स्वामी के उत्तराषाढामें (१) अनंतनाथ स्वामी के रेवती नक्षत्रमें, धर्मनाथ स्वामी के पूष्यमें, शान्तिनाथ स्वामी के भरणीमें, कुंथुनाथ स्वामीके कृत्तिकानक्षत्रमें और अरनाथ स्वामी के रेवती नक्षत्रमें हुए. (२) मुनि सुव्रत के श्रवण नक्षत्रमें, नामिनाथ स्वामी के अश्विनीमें, नेमिनाथ

शब्दार्थ पुष्पदंत के पु० पूर्वाषाढा में सी० शीतलनाथ के उ० उत्तराभाद्रपद में वि० विमलनाथ के रे० रेवती में अ० अनंतनाथ के पु० पूष्य में ध० धर्मनाथ के सं० शांतिनाथ के भ० भरणी में कु० कुंथुनाथ के क० कृत्तिका में अ० अरनाथ के रे० रेवती में मु० मुनिसुव्रत के स० श्रवण में आ० अश्विनी में न० नमिनाथ के ने० नेमनाथके चि० चित्रा में पा० पार्श्वनाथ के वि० विशाखा मे पं० पांच ह० उत्तराफाल्गुनी में वी० वीर के स० श्रमण भ० भगवन् म० महावीर के पं० पांच ह० उत्तराफाल्गुनी में हो० हुवे ह० उत्तराफाल्गुनी में चू० चवे च० चवकर ग० गर्भ में व० आये ह० उत्तराफाल्गुनी में ग० गर्भ में सा० साहरण कीया ह० उत्त-

सूत्र पुव्वा आसाढा सीयलस्स, उत्तरा विमलस्स भद्दवया (१) रेवइय अणंतजिणो, पूसो-धम्मस्स, संतिणो भरणी; कुंथुस्स कत्तियाओ, अरस्स तहा रेवईओय (२) मुणिसुव्वय-रस सवणो, आसिणीनमिणोय, नेमिणोचित्ता पासस्स विसाहाओ, पंचयहत्थुत्तरेवीरो ॥ समणे भगवं महावीरे पंच हत्थुत्तरे होत्था; तं० हत्थुत्तराहिं चुए चइत्ता गब्भंवक्कंते, हत्थुत्तराहिं गब्भाओगब्भं साहरइ, हत्थुत्तराहिंजाए, हत्थुत्तराहिं मुंडे

भावार्थ स्वामी के चित्रामें, पार्श्वनाथ स्वामी के विशाखा, और उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्रमें महावीर स्वामी के पांच कल्याणक हुए. श्री श्रमण भगवंत महावीर उत्तराफल्गुनी नक्षत्रमें चवकर गर्भमें आये, देवानंदाकी कुक्षिसे साहरण होकर त्रिशला की कुक्षिमें आये, ३ उत्तरामें प्रव्रजित बनकर अनगार हुए और उत्तरा

शब्दार्थ

रा फाल्गुनी में जा० उत्पन्न हुवे ह० उत्तरा फाल्गुनी में मुं० मुंडहोकर प० प्रव्रजित हुवे ह० उत्तराफाल्गुनीमें अ० अनंत अ० उत्कृष्ट जा० यावत् के० केवलवर ना० ज्ञान द० दर्शन स० उत्पन्न हुवा ॥ २९ ॥ नो० नहीं क० कल्पता है नि० साधु नि० साध्वी को इ० इन उ० कहीहुइ ग० गिनिहुइ प्रगटकी पं० पांच म० महार्णव म० महानदीयों अ० एकमास में दु० दोवार ति० तीनवार उ० उतरने को सं० तीरने को तं० वह ज० जैसे गं० गंगा ज० जमुना स० सरयू ए० ऐरावती म० मही पं० पांच ठा० कारन

सूत्र

भवित्ता जाव पव्वइए । हत्थुत्तराहिं अणंते अणुत्तरे जाव केवलवरनाणदंसणेसमुप्पन्ने ॥ २९ ॥ इति पंचमट्ठाणस्स पढमोद्देसो सम्मत्तो ॥ * *

नो कप्पइ निग्गंथाणंवा निग्गंथीणंवा इमाओ उद्दिट्ठाओ, गणियाओ, वियंजियाओ पंच महण्णवाओ महाणईओ अंतोमासस्स दुखुत्तोवा, तिखुत्तोवा, उत्तारित्तएवा, संत्तारित्तएवा तं० गंगा, जउणा, सरऊ, एरावती, मही । पंचहिं ठाणेहिं कप्पंति तं०

भावार्थ

मेंही केवलज्ञान उत्पन्न हुआ. ॥ २९ ॥ यह पांचवे स्थानक का पहिला उद्देशा पूर्णहुआ इसमें अन्तिम महावीर स्वामी के पांच उत्तम कल्याण कहे हैं. उनोने ही साधु धर्म बतलाया है इसलिये आगे उसका कथन चलता है. * * * * * *

गंगा, जमूना, सरजु, ऐरावती और मही ये पांच प्रख्यात व बहुत पानी वाली नदियाँ को एक मासमें

शब्दार्थी

से क० कल्पता है भ० भयसे दु० दुर्भिक्षसे प० प्रवाह में इ० डालनेसे को० कोई उ० नदी के ओ० ओघमें ए० तणात म० बडे अ० अनार्य से णो० नहिं क० कल्पता है णि० साधु णि० साध्वी को प० प्रथम पा० वर्षाकाल में गा० ग्रामानुग्राम दू० विचरना पं० पांच ठा० कारन से क० कल्पता है भ० भयसे दु० दुर्भिक्ष से जा० यावत म० बडे अ० अनार्यसे वा० वर्षाकाल तक आ० आवास प० पर्युषणकल्प णो० नहिं क० कल्पता है णि० साधु णि० साध्वी गा० ग्रामानुग्राम दू० विचरनेको पं० पांच ठा० कारन से क० कल्पता है णा० ज्ञानकोलिये दं० दर्शन

सूत्र

भयंसिवा, दुब्भिक्खंसिवा, पव्वाहेजवणंकोई उदयोघंसि एज्जमाणंसि महतावा अणारिएहिं ॥ णो कप्पइ णिग्गंथाणंवा णिग्गंथीणंवा पढमपाउसंसि गामाणुगामं दूइजित्तए पंचहिं ठाणेहिं कप्पइ तं० भयंसिवा, दुब्भिक्खंसिवा, जाव महता वा अणारिएहिं वासावासं पज्जोसवित्ताणं । णोकप्पइ णिग्गंथाणंवा, निग्गंथीणंवा गामाणुगामं दूइजित्तए । पंचहिं ठाणेहिं कप्पइ तं० णाणट्ठयाए, दंसणट्ठयाए, चरित्तट्ठयाए,

भावार्थ

दो वख्त, तीन वख्त, नावादिकसे उतरना या भुजादिकसे तीरना साधु साध्वीको कल्पता नहीं है. परंतु पांच स्थानकमें अपवाद मार्गसे कल्पे. १ राजादिकके डरसे, २ दुष्कालसे २ कोई शत्रु उठाकर उसमें डाल देवेतो ४ पानी उन्मार्गमें जाकर तानकर लावेतो और ५ आनार्य म्लेच्छोंके उपद्रवसे. प्रथम वर्षाकालमें साधु साध्वीको ग्रामानुग्राम विहार करना नही कल्पता है.परंतु पांच कारनसे अपवाद मार्गमें कल्पता है राजादिकके डरसे यावत अनार्य म्लेच्छादिक

शब्दार्थ

केलिये च० चारित्र केलिये आ० आचार्य उ० उपाध्याय वी० कालकर आ० आचार्य उ० उपाध्याय ब० बाहिर वे० वैयावृत्य क०करनेको ॥ १ ॥ पं० पांच अ० अनुद्घातिम ह० हस्तकर्म क० करते मे० मैथुन प० सेवते रा० रात्रि भोजन भुं० करते सा० शैय्यान्तर पिंड भुं० भोगवते रा० राजपिंड भुं० भोगवते पं० पांच ठा० कारनसे स० श्रमण निर्ग्रन्थ रा० अन्तःपुर में अ० प्रवेशकरता ना० उल्लंघन करेनहीं

सूत्र

आयरिय उवज्झाएवा से वीसुंभेज्जा, आयरियउवज्झायाणं वा बहिया वेयावच्चकरणयाए ॥ १ ॥ पंच अणुग्घाइमा प० तं० हत्थकम्मंकरेमाणे, मेहुणंपडिसेवमाणे, राईभोयणं भुंजमाणे, सागारियपिंडं भुंजमाणे, रायपिंडं भुंजमाणे। पंचहिं ठाणेहिं समणे निग्गंथे रायंतेउर मणुपविसमाणे नाइक्कमइ तं० णगरेसिया सव्वओसमंता गुत्ते गु-

भावार्थ

के उपद्रवसे। वर्षाकाल-चतुर्मासमें साधु साध्वीको विहार करना नहीं कल्पता है; परंतु अपवाद मार्गमें पांच कारनसे कल्पता है. ज्ञानके लिये, दर्शन के लिये, चारित्रके लिये, आचार्य उपाध्याय के मरणादि या रोगादि कारणसे, और क्षेत्रबाहिर रहे हुवे आचार्य उपाध्याय की वैयावृत्य करनेके लिये॥१॥पांच अनुद्घातिम कहे हैं १ हस्तकर्म करताहुआ, २ मैथुनसेवन करता हुआ ३ रात्रिभोजन करता हुआ, ४ शैय्यान्तर पिंड भोगता हुआ और ५ राजपिंड भोगता हुआ. पांच कारनसे श्रमण निर्ग्रन्थ राजाके अंतपुरमें

१. यहांपर पर्युषण पर्व तककी गणना की है.

शब्दार्थ

ण० नगरमें सि० होवे स० चारो बाजुसे गु० गुप्त गु० गुप्तद्वार ब० बहुत स० श्रमण मा० माहण णो० नहीं सं० समर्थ होवे भ० भक्त पा० पानी नि० नीकलने प० प्रवेश करने ते० उनकेलिये वि० विनंति करनेको रा० अन्तःपुरमें अ० प्रवेशकरे प० पाटीयारु पी० पाट फ० बाजोठ से० शैय्या सं० संथारा प० पीछादेनेको रा० अन्तःपुरमें अ० जावे ह० अश्व ग० हस्ति दु० मस्त आ० आता भी० डराहुवा रा० अन्तःपुरमें अ० जावे प० दूसरा स० सहसात्कारसे ब० बलसे बा० हस्त से ग० ग्रहणकर रा० अन्तःपुरमें अ० जावे ब० बाहिर

सूत्र

त्तदुवारे बहवे समणमाहणा णो संचाएइ भत्ताएवा पाणाएवा निक्खमित्तएवा पविसित्तए वा तेसिं विणवण्णट्ठयाए रायंतेउर मणुपविसेज्जा, पाडिहारिएवा पीढफलगसेज्जा संथारगं पच्चप्पिणमाणे रायंतेउर मणुपविसेज्जा, हयस्सवा, गयस्सवा, दुट्ठस्स, आगच्छमाणस्स भीए रायंतेउर मणुपविसेज्जा, परो वाणं सहसावा बलसावा बाहाए गहाय

भावार्थ

प्रवेश करते आज्ञाका उल्लंघन करे नहीं १ किसी कार्य प्रसंगसे नगरके चारो तरफके द्वार बंध कीये होवे और आहार पानीके लिये शाक्यादि साधु नीकलने प्रवेश करने को शक्तिवन्त न हो उनके लिये राजाको अंतःपुरमें जानकर वहां जावे; क्योंकि साधु सर्वत्र विश्वासपात्र है. २ पीढ, फलग, शैय्या संथारादि लाये हुवे होवे उसे पीछादेनेके लिये जावे ३ मदोन्मत्त अश्व या हस्ती को सामने आता हुआ देखकर उनसे

शब्दार्थ

व० वनमें आ० बगिचे में गये हुवे उ० उद्यान में गये हुवे रा० अन्तःपुरके ज० मनुष्य स० चारावाजु से सं० घेराये हुवे नि० रहे इ० इन पं० पांच ठा० कारन से स० श्रमण नि० निर्ग्रंथ जा० यावत् ण० नहीं अ० अतिक्रमे ॥ २ ॥ पं० पांच ठा० कारन से इ० स्त्री पु० पुरुषकी स० साथ अ० नहीं संयोग करती ग० गर्भ ध० धारन करती है मि० स्त्री दु० वस्त्ररहित खराब रीतिसे दु० बैठी हुइ सु० शुक्र के पुद्गल अ० ग्रहणकरे सु० शुक्र पुद्गलसे सं० खरडाहुवा से० उसके व० वस्त्र अं० अंदर जो० योनिमें अ० प्रवेश करे स० स्वयं सु० शुक्र

त्रसू

रायंतेउर मणुपविसेज्जा, बहिया वणं आरामगयंवा उज्जाणगयंवा रायंतेउरजणो सव्वओ समंता संपरिक्खित्ताणं निविसेज्जा । इच्चेएहिं पंचहिं ठाणेहिं समणे निग्गंथे जाव णाइक्कमइ ॥ २ ॥ पंचहिं ठाणेहिं इत्थी पुरिसेण सद्धिं असंवसमाणीवि गब्भं धरेज्जा तं० मित्थी दुव्वियडा दुन्निसन्ना सुक्कपोग्गले अहिट्ठेज्जा; सुक्कपोग्गलसंसिट्ठे वा से वत्थे अंतो जोणिए अणुपविसेज्जा, सयं वा से सुक्क पोग्गले अणुपविसेज्जा परो वा से सु-

भावार्थ

डरकर राजाके अंतःपुरमें जावे ४ कोई बलात्कारसे हाथ पकडकर अंतःपुरमें लेजावे तो वहां जावे, अथवा ५ कोई साधु बाहिर बगिचेमें गये होवे और वहांपर राजाके अंतःपुर क्रीडाके लिये आकर रहे तो वहां साधु भी रहे ॥ २ ॥ स्त्री पुरुषकी साथ नहीं रहती हुइ भी पांच कारनसे गर्भ धारन करे १ कोई स्त्री वस्त्र रहित या फटे तुटे वस्त्रसे बैठी होवे और उस स्थानपर शुक्र (वीर्य) के पुद्गल लगे होवे तो उन पुद्गलों

शब्दार्थ

के पुद्गल अ० ग्रहण करे प० दुसरा सु० शुक्र के पु० पुद्गल अ० प्रवेश करावे सी० शीत पानी को वि० अचित आ० पूर्व पतित सु० शुक्र के पुद्गल अ० ग्रहण करे इ० इन पं० पांच कारनसे जा० यावत् ध० धारन करे पं० पांच कारन से इ० स्त्री पु० पुरुषसाथ सं० रहती हुइ भी ग० गर्भ नो० नहीं ध०

सूत्र

कपोग्गले अणुपविसेज्जा, सीओदगवियडेण वा से आयममाणीए सुक्कपोग्गले अणुपविसेज्जा। इच्चेएहिं पंचहिंठाणेहिं जाव धरेज्जा ॥ पंचहिं ठाणेहिं इत्थीपुरिसेण सद्धिं संवसमाणीवि गब्भं नो धरेज्जा, तं० अप्पत्त जोव्वणा, अइक्कंत जोव्वणा जाइवंज्झा, गेलन्नपुट्ठा, दोमणंसिया

भावार्थ

को योनिमार्गसे ग्रहण करे और गर्भ रहे २ शुक्रसे भराहुआ वस्त्र योनिमें प्रवेश करे और पुद्गल ग्रहण करेतो गर्भ रहे ३ अपने शील व लज्जाका रक्षण करती हुइ पुत्र प्राप्तिके लिये किसी पास शुक्रके पुद्गल-मंगवाकर योनिमें रखे ४ श्वश्रू श्वसुर पुत्रकी इच्छासे वधूकी योनिमें शुक्रके पुद्गल रखे ५ नदी द्रहमें स्नान करते पूर्व पतित वीर्यके पुद्गल योनिमें प्रवेशकरे और गर्भ धारन करनेका समय होवेतो गर्भ धारन करे. इन पांच कारनसे पुरुषसे दूर रहती हुइ स्त्री गर्भ धारन करे. स्त्री पुरुषकी साथ रहती हुइ भी पांच कारनसे गर्भ धारन करे नहीं. १ अप्राप्त यौवना होवे २ अतिक्रान्त यौवना होवे ३ जातिवंध्या ४ रोगिष्ट ५ और शोकादिक मानसिक पीडा युक्त। औरभी स्त्री पुरुषकी साथ रहती हुइ पांच कारणसे गर्भ धारन

१ सांप्रत कालमें १२ बरसकी कन्या अप्राप्त यौवना कहेलाती है २ वृद्ध स्त्री अतिक्रान्त यौवना कहलाती है.

शब्दार्थ

धारन करे अ० अप्राप्त यौवन अ० अतिक्रान्त यौवन जा० जाति वंध्या गे० रोगीष्ट दो० मानसीक पीडा युक्त पं० पांच कारनसे इ० स्त्री पु० पुरुष साथ सं० रहती हुई भी ग० गर्भ नो० नहीं ध० धारन करे नि० नित्य ऋतुवाली अ० ऋतु विना की वा० नष्ट सो० गर्भाशय वा० वातवाला सो० स्रोत अ० काम प० सेवनेवाली पं० पांच कारनसे इ० स्त्री पु० पुरुष साथ सं० रहती हुई भी ग० गर्भ नो० नहीं ध० धारन करे उ० ऋतु में णो० नहीं णि० काम प० सेवनेवाली भ० होवे स० आये हुवे सु० शुक्र

सूत्र

इच्चेएहिं पंचहिं ठाणेहिं इत्थी पुरिसेण सद्धिं संवसमाणीवि गब्भं नो धरेज्जा ॥ पंचहिं ठाणेहिं इत्थी पुरिसेण सद्धिं संवसमाणीवि गब्भं नो धरेज्जा तं० निच्चोउआ, अणोउया, वावन्नसोया, वाविद्धसोया, अणंगपडिसेविणी, । इच्चेएहिं पंचहिं ठाणेहिं इत्थी पुरिसेणसद्धिं संवसमाणीवि गब्भं नो धरेज्जा ॥ पंचहिं ठाणेहिं इत्थी पुरिसेण सद्धिं संवसमाणीवि गब्भं नो धरेज्जा तं० उदूसि णो णिगामपडिसेविणी वावि भवइ, समाग-

भावार्थ

करे नहीं १ नित्यर्तुका सदैव रक्तका प्रस्राव होता होवे १ अनर्तुका रक्तका प्रस्राव नहीं होता होवेसो. ३ व्यापन्न स्रोता सो रोगादि कारनसे गर्भाशय नष्टहुवा होवे ४ व्यादिग्ध स्रोता विद्यमान स्रोत वातादि कारनसे शक्ति रहित होनेसे ४ और बहुत काम सेवन करनेसे गणिका प्रमुख. पांच कारनसे स्त्री पुरुषकी साथ रहती हुइभी गर्भ धारन करे नहीं १ ऋतुकालमें बहुत कामसेवन नहीं करनेसे २ योनिदोषसे वीर्यके

शब्दार्थ पुद्गल प० नष्ट होवे उ० कठीन पि० पित्त सो० रुधिर पु० पहिले दे० देव क० कर्म से पु० पुत्रफल नो० नहीं नि० प्राप्त भ० होवे ॥ ३ ॥ पं० पांच कारनसे नि० साधु नि० साध्वी ए० एक स्थान में ठा० कायोत्सर्ग से०शयन नि०स्वाध्याय चे०करते णा०उल्लंघन नहीं करते हैं ए० कितनेक नि० साधु नि० साध्वी म० बडी आ० आइहुइ छि० विना मनुष्य के दी० दीर्घ अ० मार्ग अ० अटविमें अ० गये हुवे

सूत्र

या वा से सुक्कपोग्गले पडिविद्धंसंति, उद्दिन्नेवासे पित्तसोणिए, पुरावा देवकम्मुणा, पुत्तफलेवा नो निविट्ठे भवइ इच्चेएहिं जाव णोधरेज्जा॥ ३॥पंचहिं ठाणेहिं निग्गंथाय निग्गंथीओय एगयओ ठाणंवा, सेज्जंवा निसीहियंवा चेएमाणा णाइक्कमंति तं० अत्थेगइया निग्गंथाय निग्गंथी-ओय एगं महं आगामियं छिन्नावायं दीह मद्धमडवि मणुपविट्ठा तत्थेगयाओ ठाणंवा-

भावार्थ पुद्गल योनिमें आनेपरभी बाहिर नीकल जावे. ३ उत्कट-आकरा स्त्रीको पित्तका रक्त होवे ४ कर्म दोषसे और ५ पुत्र प्राप्ति रूप कर्मकी पूर्वभवमें उपार्जना नहीं की है उससे. इन पांच कारनसे स्त्रीको पुरुषका संयोग होते हुवेभी गर्भ नहीं रहता है. ॥ ३ ॥ पांच कारनसे साधु साध्वी एकत्र कायोत्सर्ग करते हुए आज्ञाका विराधक नहोवे १ कोई साधु साध्वी ऐसी अटविमें पडगये होवेकि जहां कोई जानेकी वांछा करे नहीं, सार्थ प्रमुख मीले नहीं, बहुत बडी होवेतो वहां पास पास शैय्यादि करते आज्ञाका विराधक होवे

सूत्र

भावार्थ

त० तहां ए० साथ ठा० कायोत्सर्ग से० शयन नि० स्वाध्याय चे० करते णा० उल्लंघन करते नहीं हैं अ० हैं ए० कितनेक णि० साधु गा० ग्राम में न० नगर में रा० राजधानि में वा० वास को उ० गये हुवे ए० एकदा उ० उपाश्रय ल० मीले ए० एकदा णो० नहीं ल० मीले त० तहां ए० साथ ठा० कायोत्सर्ग णा० उल्लंघन नहीं करते हैं अ० हैं ए० कितनेक णि० साधु णि० साध्वी णा० नाग कुमार के वास में सु० सुवर्ण कुमार के वास में वा० रहने को उ० गये हुवे त० तहां ए० साथ ठा० कायोत्सर्ग णा० उल्लंघन नहीं करते हैं आ० चोर

सेज्जं वा निसीहियंवा चेएमाणा णाइक्कमंति, अत्थेगइया णिग्गंथा गामंसिवा नगरंसिवा जाव रायहाणिंवा वासं उवगया एगइया यत्थ उवस्सयं लभंति एगइया णोलभंति तत्थेगयाओ ठाणंवा जाव णाइक्कमंति । अत्थेगइया णिग्गंथा णिग्गंथीओय णागकुमारावासंसिवा, सुवन्नकुमारावासंसिवा, वासं उवगया तत्थेगयाओ ठाणंवा जाव णाइक्कमंति । आमोसगा दीसंति इच्छंति णिग्गंथीओ चीवरपडियाए पडिगाहेत्तए,

नहीं. २ ग्राम या नगरमें आये पीछे रहनेके लिये एक ही स्थान मीले अन्य मीले नहीं तो वहां साथ रहते हुवे आज्ञा के विराधक होवे नहीं, ३ कोई साधु साध्वी नागकुमारादि यक्षके मंदिरमें आये वहां रहते आज्ञाका उल्लंघन करे नहीं ५ चौरादि लूटनेकी इच्छा करेतो उनका रक्षणके लिये उनकी साथ रहते आज्ञाका उल्लंघन होवे नहीं ५ कोई युवान पुरुष साध्वी साथ मैथुन करनेकी इच्छासे उनकी पास आवे

शब्दार्थ

दी० दीसता है इ० इच्छता है णि० साध्वी की चौ० साडी प० पकडने को ठा० कायोत्सर्ग जा० यावत् णा० उल्लंघन नहीं करे जु० युवान दी० दीखता है इ० इच्छता है णि० साध्वी मे० मैथुन केलिये प० पकडने को त० तहां ए० साथ ठा० कायोत्सर्ग जा० यावत् णा० उल्लंघन करे नहीं पं० पांच कारन से स० श्रमण नि० निर्ग्रंथ अ० वस्त्ररहित स० वस्त्रसाहित णि० साध्वी साथ सं० रहता हुवा ना० उल्लंघन नहीं करे तं० वह खि० खिन्नचित्तवाला स० श्रमण णि० निर्ग्रंथ नि० निर्ग्रंथ अ० रहित अ० वस्त्र रहित स० वस्त्र साहित नि० साध्वी साथ सं० रहता हुवा ना० उल्लंघन करे नहीं ए० ऐसे

सूत्र

तत्थे गयओ ठाणंवा जाव णाइक्कमंति । जुवाणा दीसंति ते इच्छंति णिग्गंथीओ मेहुणपडियाए पडिगाहेत्तए तत्थे गयओ ठाणंवा जाव णाइक्कमंति । इच्चेएहिं पंचहिं ठाणेहिं जाव णाइक्कमंति ॥ पंचहिं ठाणेहिं समणे निग्गंथे अचेलए सचेलियाहिं निग्गंथीहिं सार्द्धि संवसमाणे नाइक्कमइ. खित्तचित्ते समणे निग्गंथे निग्गंथेहिं अविज्जमाणेहिं

भावार्थ

उस समय उसकी साथ रहते आज्ञाका उल्लंघन होवे नहीं. इन पांच कारनसे साधु साध्वीकी साथ रहते हुए जिनाज्ञाका उल्लंघन करे नहीं. औरभी पांच कारनसे वस्त्र रहित साधु वस्त्र सहित साध्वी साथ रहते हुए जिनाज्ञाका उल्लंघन करे नहीं. १ किसी शोकादि कारनसे कोई साधु व्याकुल चित्तवाला होवे और उसकी साथ अन्य साधु नहोवे तब उस वस्त्र रहित साधुको साध्वी पुत्रवत कर रखे; और इस तरह एकत्र

ए० इस ग० आलाप से दि० दिक्षितचित्तवाला ज० यक्षाधिष्ट उ० उन्मत्त नि० साध्वी से प० प्रव्रजित हुवा स० श्रमण नि०निर्ग्रंथों से अ० रहित अ०वस्त्र रहित स० वस्त्र सहित नि० साध्वी स० साथ सं० रहता हुवा णा० उल्लंघन करे नहीं ॥ ४ ॥ पं० पांच आ० आश्रवद्वार मि० मिथ्यात्व अ० अविरति प० प्रमाद क० कषाय जो० योग पं० पांच सं० संवरद्वार प० प्ररूपे स० सम्यक्त्व वि० विरति अ० अप्रमाद अ०

अचेलओ सचेलियाहिं निग्गंथीहिं सद्धिं संवसमाणे नाइक्कमइ एवमेएणं गमएणं दित्त-चित्ते,जक्खाइट्ठे,उम्मायपत्ते निग्गंथीपव्वावियए समणे निग्गंथेहिं अविज्जमाणेहिं अचेलए सचेलियाहिं निग्गंथीहिं सद्धिं संवसमाणे णाइक्कमइ ॥ ४ ॥ पंच आसवदारा प० तं० मिच्छत्तं, अविरई, पमाओ, कसाया, जोगा ॥ पंच संवरदारा प० तं० संमत्तं, विरती, अपमा-

रहते हुए आज्ञाका उल्लंघन करे नहीं. २ ऐसेही हर्षसे दीक्षाचित्त वालाहुवा होवेतो रखे ३ ऐसेही भूतादि ४ वायुसे उन्मत्त हुवा होवे और पुत्रवत् समझ कर उनको अपनी पास रखेतो आज्ञाका उल्लंघन करे नहीं और ५ कीसी साध्वीने कारन विशेषसे अपने पुत्रको दीक्षादी होवे और कारनवशात् वस्त्र रहित होते हुवेभी साथ रखते जिनाज्ञाका उल्लंघन होवे नहीं ॥ ४ ॥ पांच आश्रव द्वार कहे हैं मिथ्यात्व, अविरति, प्रमाद, कषाय और जोग. पांच संवर द्वार कहे है सम्यक्त्व, विरति, अप्रमाद, अकषाय, और उत्तमयोग. पांच

शब्दार्थ

कषाय जो० योग पं० पांच दंड अ० अर्थदंड अ० अनर्थदंड हिं० हिंसादंड अ० अकस्मात् दंड दि० दृष्टिविपर्यास दंड पं० पांच क्रिया आ० आरंभिया प० परिग्रहिया मा० मायावत्तिया अ० अप्रत्याख्यान मि० मिथ्यादर्शन वत्तिया मि० मिथ्यादृष्टि ने० नारकी को पं० पांच कि० क्रिया आ० आरंभिया जा० यावत् मि० मिथ्यादर्शन वत्तिया ए० ऐसे स० सर्व में नि० निरंतर जा० यावत् मि० मिथ्यादृष्टि वे० वैमानिक को ण० विशेष वि० विकलेन्द्रिय मि० मिथ्यादृष्टि से० शेष त० तैसे ही पं० पांच कि० क्रिया का०

सूत्र

ओ, अकसाया, * जोगित्तं ॥ पंचदंडा प० तं० अट्ठादंडे, अणट्ठादंडे, हिंसादंडे, अकम्हादंडे, दिट्ठिविपरियासियादंडे ॥ पंचकिरियाओ पण्णत्ताओ तं० आरंभिया, परिग्गहिया, मायावत्तिया, अपच्चक्खाणकिरिया, मिच्छादंसणवत्तिया । मिच्छदिट्ठिनेरइयाणं पंचकिरियाओ प० तं० आरंभिया जाव मिच्छादंसणवत्तिया । एवं सव्वेसिं निरंतरं जाव मिच्छदिट्ठियाणं वेमाणियाणं । णवरं विगलेंदिया मिच्छादिट्ठी नभन्नंति सेसंतहे-

भावार्थ

दंड कहे हैं अर्थदंड, अनर्थदंड, हिंसादंड, अकस्मातदंड और दृष्टिविपर्यासदंड. पांच क्रिया कही, आरंभिया, परिग्रहिया, मायावत्तिया, अपच्चक्खाणवत्तिया और मिथ्यादर्शनवत्तिया. मिथ्यादृष्टि नारकी को पांच क्रिया कही आरंभिया यावत् मिथ्यादर्शन वत्तिया. ऐसेही चौविस दंडकके मिथ्यादृष्टि जीवको पांच क्रिया

* मकसुदाबाद की छपीहुइ प्रतमें–"उत्तमजोगित्तं" ऐसा पाठहै ।

शब्दार्थ

काइया अ० अधिकरणिया पा० पाउसिया प० परितापणिया पा० प्राणातिपात ने० नारकी को पं० पांच ए० ऐसे नि० निरन्तर जा० यावत् वे० वैमानीक को पं० पांच क्रिया दि० दिठिया पु० पुठिया पा० पाडुच्चिया सा० सामन्तोवनिया सा० साहत्थिया णे० नारकी को जा० यावत् वे० वैमानीक को पं० पांच क्रिया णे० नेसत्थिया आ० आणवणिया वे० विदारणीया अ० अनाभोगवत्तिया अ० अनवकंखवत्तिया

सूत्र

व ॥ पंचकिरियाओ पण्णत्ताओ तं० काइया, आहिगरणिया पाओसिया, परियावणिया, पाणाइवायकिरिया। नेरइयाणं पंच एवंचेव ॥एवं निरंतरं जाव वेमाणियाणं ॥पंच किरिया-ओ प० तं० दिट्ठिया, पुट्ठिया पाडुच्चिया, सामंतोवणिवाइया, साहात्थिया, । एवं णेर-इयाणं जाव वेमाणियाणं । पंचकिरियाओ प० तं० णेसत्थिया, आणवणिया, वेयाराणिया, अणाभोगवत्तिया, अणवकंखवत्तिया । एवं जाव वेमाणियाणं ।

भावार्थ

जानना. पांच क्रिया कही कायिकी, अधिकरणकी, प्रद्वेषकी, परितापकी और प्राणातिपातिकी. नारकी आदि सब दंडकके जीवों को उक्त पांच प्रकारकी क्रिया कही. और भी पांच प्रकारकी क्रिया कही. दिठिया, पुठिया, पाडुच्चिया, सामंतोवनिका. और साहत्थिया. पांचोक्रिया चौविसही दंडक के जीवोंको जानना. औरभी पांच क्रिया कही नेसत्थिया आणवणिया, विदारणिया, अनाभोगवत्तिया और अणवकंखवत्तिया. ये पांचो क्रिया नारकी आदि सब दंडकमें पाती हैं. और पांच क्रिया कही पेज्जवत्तिया,

शब्दार्थ

जा० यावत् वे० वैमानीक को पं० पांच क्रिया पे० पेजवत्तिया दो० दोसवत्तिया प० प्रयोग क्रिया स० समुदानी इ० ईर्यापथिक म० मनुष्य को से० दुसरे को न० नहीं है ॥ ५ ॥ पं० पांच प० परिज्ञा उ० उपधिपरिज्ञा उ० उपाश्रयपरिज्ञा क० कषायपरिज्ञा जो० योगपरिज्ञा भ० भक्तपानपरिज्ञा ॥ ६ ॥ प० पांच प्रकारके ब० व्यवहार अ० आगम सु० सूत्र आ० आज्ञा धा० धारना जी० जीत ज० जैसे से० व-

सूत्र

पंचकिरियाओ पण्णत्ताओ तं० पेजवत्तिया, दोसवत्तिया, पओगकिरिया, समुदाणकिरिया, इरियावहिया । एवं मणुस्साणवि सेसाणं णत्थि ॥ ५ ॥ पंचविहा परिन्ना प० तं० उवहिपरिन्ना, उवस्सयपरिन्ना, कसायपरिन्ना जोगपरिन्ना, भत्तपाणपरिन्ना. ॥ ६ ॥ पंचविहे ववहारे प० तं० आगमे, सुए, आणा, धारणा, जीए, । जहा से तत्थ आगमे-

भावार्थ

द्वेषवत्तिया , प्रयोगवत्तिया, सामुदानाक्रिया और ईर्यापथिक. ये पांच क्रियाओ मनुष्यको होती हैं अन्य जीवोंको नहीं है. ॥ ५ ॥ वस्तु को त्यागने योग्य जानकर त्यागना उसे परिज्ञा कहते हैं. ऐसी परिज्ञा पांच प्रकारकी है १ वस्त्रादि उपधि अशुद्धकी परिज्ञा, २ उपाश्रय अशुद्धकी परिज्ञा, ३ कषाय परिज्ञा ४ जोग परिज्ञा, ५ भक्त प्रत्याख्यान परिज्ञा. ॥ ६ ॥ पांच प्रकारके व्यवहार कहे है १ जिससे अर्थ जाना जावे उसे आगम व्यवहार कहते हैं, यह आगम व्यवहार केवल, मनःपर्यव, अवधि, चौदह पूर्व तथा नवपूर्वके धारक को होता है. २ शेष आचारागांदि सूत्र सो सूत्र व्यवहार. ३ आज्ञा व्यवहार जो गीतार्थ देशा-

शब्दार्थ

वह त० तहा आ० आगम सि० होवे आ० आगमसे व० व्यवहार प० स्थापनकरे णो० नहीं से० वह त० तहां आ० आगम सि० होवे ज० जैसे से० वह त० तहां सु० श्रुत सि० होवे सु० श्रुतसे व० व्यवहार प० स्थापनकरे णो० नहीं से० वह त० तहां सु० श्रुत सि० होवे ए० ऐसे ज० जैसे त० तहां जी० जीत सि० होवे जी० जीतसे व० व्यवहार प० स्थापनकरे इ० इन पं० पांचोंसे व० व्यवहार प० स्थापनकरे आ० आगमसे जा० यावत् जी० जीतसे ज० जैसे २ से० वह त० त-

सूत्र

सिया आगमेणं ववहारे पट्ठवेज्जा णो से तत्थ आगमोसिया; जहा से तत्थ सुए सिया सुत्तेणं ववहारे पट्ठवेज्जा, णो से तत्थ सुएसिया; एवं जाव जहा से तत्थ जीए सिया, जीएणं ववहारे पट्ठवेज्जा । इच्चेएहिं पंचहिं ववहारं पट्ठवेज्जा. आगमेणं जाव जीएणं, जहा २

भावार्थ

न्तरमें होवे, उसे किसी गुदार्थ पद से अगीतार्थ को प्रायश्चित्तादि कहलावे और उस अनुसार ग्रहण करे. ४ किसी गीतार्थने अन्य किसीको प्रायश्चित्त दीया होवे उसे धारकर प्रसंगवशात् अन्यकोभी ऐसा प्रायश्चित्त देवे सो धारना व्यवहार, ५ जो बहुश्रुतने तपादि आचरा होवे उसे आचरते रहनासो जीत व्यवहार. जो आगम व्यवहारी होते हैं वे अपने ज्ञानसे व्यवहारकी स्थापना करे प्रायश्चित देवे २ सूत्रव्यवहारी व्यवहार स्थापे परंतु प्रायश्चित देवे नहीं. जब सूत्र व्यवहार न होवे तब आज्ञा व्यवहार अनुसार चले, जब आज्ञा व्यवहार न होवे तब धारणा व्यवहार अनुसार चले और जब धारना व्यवहार न होवे तब जीत

शब्दार्थ

हां आ० आगम जा० यावत् जी० जीत० त० तैसे २ व० व्यवहार प० स्थापनकरे से० वह किं० कैसा भं० भगवन् आ० आगम ब० बलवन्त स० श्रमण नि० निग्रन्थ इ० इन पं० पांचप्रकारके व० व्यवहार ज० जिस २ समय ज०जहां २ त०तब २ त०तहां २ अ०अनिश्रित व० वास स० सम्यक् व०व्यवहारपालता स० श्रमण नि० निर्ग्रन्थ आ० आज्ञाका आ० आराधक भ० होवे ॥ ७ ॥ सं० संयति म० मनुष्य सु० सोतेको पं० पांच जा० जागृत प० प्ररूपे स० शब्द जा० यावत् फा० स्पर्श सं० संयति म० मनुष्य जा०

सूत्र

से तत्थ आगमे जाव जीए तहा २ ववहारं पट्ठवेजा; । से किमाउ भंते आगम बलिया समणा निग्गंथा इच्चेयं पंचविहं ववहारं जया २ जहिं २ तया २ तहिं २ अणिस्सिओवस्सियं समं ववहारेमाणे समणे निग्गंथे आणाए आराहए भवइ ॥ ७ ॥ संजयमणु-

भावार्थ

व्यवहार अनुसार चले. पांच व्यवहारमें से जहां जिस व्यवहारकी जरूरत होवे वहां उसकी स्थापना कर उस मुजब चले ॥ अहोभगवन्त ! किस कारनसे इन व्यवहारोंको स्थापनकरनेकी जरुरत होतीहै? १. अहो शिष्य! इन पांच व्यवहारको जिस २ समय जहां २ जैसा क्षेत्र काल हो उस २समय तहां २वैसे आहारादिककी लालच रहित शिष्यादिककी अपेक्षा छोडकर सम व्यवहार से चलताहुवा साधु निर्गन्थ जो व्यवहार होवे उस मुजब चले, और ऐसे चलताहुता जिनाज्ञाका आराधक होताहै ॥ ७ ॥ संयमवन्त मनुष्य (साधु) को पांच बातोंसे सोते हुवे भी जागते कहे हैं:-शब्द, वर्ण, गंध, रस, और स्पर्शसे. जागते हुए संयमवन्त मनुष्यको पांच कारणसे

शब्दार्थ

जागतेको पं० पांच सु० निद्रित स० शब्द जा० यावत् फा० स्पर्श अ० असयति म० मनुष्यको सु० सोतेको जा० जागतेको पं० पांच जा० जागृत स० शब्द जा० यावत् फा० स्पर्श ॥ ८ ॥ पं० पांच ठा० कारनसे जी० जीव र० रज (पापकर्म) आ० बांधे पा० प्राणातिपातसे जा० यावत् प० परिग्रहसे पं० पांच ठा० कारनसे जी० जीव र० रज व० वमे पा० प्राणातिपातसे वे० निवर्तना जा० यावत् प० परिग्रहसे वे० निवर्तना पं० पांच मा० मासकी भि० भिक्षुप्रतिमा प० प्रतिपन्न अ० साधुको क० कल्पतीहै पं० पांच दं० दाती भो० भोजनकी प० लेनेको पं० पांच पा० पानीकी ॥ ९ ॥ पं० पांचप्रकारकी

सूत्र

स्साणं सुत्ताणं पंचजागरा प० तं० सद्दा जाव फासा । संजयमणुस्साणं जागराणं पंचसुत्ता प० तं० सद्दाजावफासा, असंजय मणुस्साणं सुत्ताणंवा जागराणंवा पंचजागरा प० तं० सद्दाजावफासा ॥ ८ ॥ पंचहिं ठाणेहिं जीवारयं आहिज्जंति तं० पाणाइवाएणं जाव परिग्गहेणं । पंचहिं ठाणेहिं जीवा रयं वमंति तं० पाणाइ वायवेरमणेणं जाव परिग्गहवेरमणेणं ॥ पंचमासिएणं भिक्खुपडिमं पडिवन्नस्स अणगारस्स कप्पंति पंचदत्तीओ भोयणस्स पडिगाहेत्तए पंचपाण-

भावार्थ

मस्मसे ढकीहुइ अग्निवत् जागते कहे हैं शब्दसे यावत् स्पर्शसे. सोते हुवे या जागते हुवे असंयति मनुष्य को पांच बातोसे जागते हुए कहे हैं ॥ ८ ॥ जीव पांच कारनसे कर्मरूपी रज ग्रहण कर बांधता है प्राणातिपात यावत् परिग्रहसे. पांच कारनसे जीव पापकर्मका वमन करता है प्राणातिपातसे निवर्तनेसे यावत् परिग्रहसे निवर्तनेसे. पांच मासकी भिक्षुपडिमा अंगीकार करनेवाले को पांच दात आहार की और पांच दात

शब्दार्थ

उ० उपघात उ० उद्गमनउपघात उ० उत्पातनउपघात ए० एषणाउपघात प० परिकर्मउपघात प० परिहरण-उपघात पं० पांचप्रकारकी वि० विशुद्धि उ० उद्गमनविशुद्धि उ० उत्पातन ए० एषणा प० परिकर्म प० परिहरण पं० पांच ठा० कारनसे जी० जीव दु० दुर्लभ बो० बोधिपने क० कर्म प० बांधे अ० अरिहंतके अ० अवर्णवाद व० बोलते अ० अरिहंत प० प्ररूपा ध० धर्मके अ० अवर्णवाद व० बोलते अ० आचार्य उ० उपध्यायके अ० अवर्णवाद व० बोलते चा० चतुर्विध सं० संघ अ० अवर्णवाद

सूत्र

गस्स॥ ९॥ पंचविहे उवघाए प० तं० उग्गमोवघाए, उप्पायणोवघाए, एसणोवघाए परिकम्मो वघाए, परिहरणोवघाए. । पंचविहे विसोही प० तं० उग्गमविसोही, उप्पायणविसोही एसणाविसोही, परिकम्माविसोही परिहरणाविसोही । पंचहिं गणेहिं जीवा दुल्लभबोहियत्ताए कम्मं पगरेंति तं० अरहंताणमवन्नं वदमाणे, अरहंत पण्णत्तस्स धम्मस्स अवन्नं वदमाणे,

भावार्थ

पातीकी लेना कल्पता है ॥ ९ ॥ पांच प्रकारके उपघात (आहारके दोष) कहे हैं १ उद्गमनदोष (आधाकर्मादि से सोलह प्रकार आहार के दोष) यह दोष साधुलगावे. २ उत्पातन आहारादि देते अन्यगृहस्थादि से लगे ३ शंकितादि दश दोष एषणाके ४ वस्त्र पात्रादि विना कारनसे छेदे संन्धे सो परिकर्म दोष, वसतिमें मर्यादासे अधिक रहे सो परिहरन। पांच प्रकारकी विशुद्धि कही है उक्त पांचो दोष न लगावे सो. पांच कारनसे जीव दुर्लभ बोधि होनेका कर्म करता है १ अरिहंतका अवर्णवाद बोलते २ अरिहंत प्ररूपा धर्मका अवर्ण-

शब्दार्थ

व० बोलते वि० विविक्त त० तप बं० ब्रह्मचर्य दे० देवताके अ० अवर्णवाद व० बोलते प० पांचकारनसे जी० जीव सु० सुलभ बोधिपने क० कर्म प० बांधे अ० अरिहंतके व० वर्णवाद व० बोलते जा० यावत् वि० विविक्त बं० ब्रह्मचर्य दे० देवके व० वर्णवाद व० बोलते ॥ १० ॥ पं० पांच प० प्रतिसंलीनता सो० श्रोतेन्द्रिय जा० यावत फा० स्पर्शेन्द्रिय पं० पांच अ० अप्रतिसंलीनता सो० श्रोतेन्द्रिय जा० यावत् फा० स्पर्शेन्द्रिय पं० पांच प्रकारका सं० संवर सो० श्रोतेन्द्रिय जा० यावत्

सूत्र

आयरियउवज्झायाणमवन्नं वदमाणे, चाउवन्नसंघस्स अवन्नं वदमाणे, विविक्कतवबंभचेराणं देवाणं अवन्नं वदमाणे, पंचहिं ठाणेहिं जीवा सुलभबोहियत्ताए कम्मं पगरेंति—अरहंताणं वन्नं वदमाणे, जाव विविक्कतवबंभचेराणं देवाणं वन्नं वदमाणे॥ १०॥ पंचपडिसंलीणा प० तं० सोइंदियपडिसंलीणे, जाव फासिंदियपडिसंलीणे पंच अपडिसंलीला प० तं० सोइंदिय अपडिसंलीने जाव फासिंदिय अपडिसंलीने ॥ पंचविहे संवरे प० तं० सोइंदिय संवरे जाव फासिंदिय संवरे । पंचविहे असंवरे प० तं० सोइंदिय असंवरे जाव फासिंदि

भावार्थ

वाद बोलते ३ आचार्य उपाध्यायका अवर्णवाद बोलते ४ चतुर्विध संघका अवर्णवाद बोलते और तप ब्रह्मचर्यादिसे देवपना पानेवालेका अवर्णवाद बोलते । पांच कारनसे जीव सुलभ बोधिपनेका कर्म करता है अरिहंतका गुणानुवाद बोलते यावत् तपादिसे देवपना पानेवाले देवताओंका गुणानुवाद बोलते ॥ १० ॥ पांच प्रकारकी प्रति संलीनता (इन्द्रियनिग्रह करना) कही श्रोतेन्द्रिय प्रतिसंलीनता यावत स्पर्शेन्द्रिय

शब्दार्थ

फा० स्पर्शेन्द्रिय पं० पांच प्रकारका अ० असंवर सो० श्रोतेन्द्रिय जा० यावत् फा० स्पर्शेन्द्रिय ॥ ११ ॥ पं० पांच प्रकारका सं० संयम सा० सामायिक छे० छेदोपस्थापनीय प० परिहार विशुद्ध सु० सूक्ष्म संपराय अ० यथाख्यात ए० एकेन्द्रिय जी० जीव अ० असमारंभ पं० पांच प्रकारका सं० संयम क० करे तं० वह ज० जैसे पु० पृथ्वी काय सं० संयम जा० यावत् व० वनस्पति काय सं० संयम ए० एकेन्द्रिय जी० जीव स० समारंभ पं० पांच प्रकारका अ० असंयम क० करे पु० पृथ्वी काय असंयम जा० यावत् व० वन-

सूत्र

य असंवरे ॥ ११ ॥ पंचविहे संजमे प० तं० सामाइय संजमे, छेदोवट्ठावणिय संजमे, परिहारविसुद्धिय संजमे, सुहुमसंपराय संजमे, अहक्खाय संजमे, ॥ एगिंदियाणं जीवा असमारंभमाणस्स पंचविहे संजमे कज्जइ, तं० पुढविकाइयसंजमे, जाव वणस्सइकाइय संजमे,। एगिंदिया णं जीवा समारंभमाणस्स पंचविहे असंजमे कज्जइ, तं० पुढविकाइय असंजमे जाव वणस्सइकाइय असंजमे ॥ पंचेंदियाणं जीवाणं असमा-

अर्थ

प्रतिसंलीनता. वैसेही उससे विरुद्ध पांच प्रकारकी अप्रतिसंलीनता कही. पांच प्रकारके संवर कहे श्रोतेन्द्रिय संवर यावत् स्पर्शेन्द्रिय संवर. वैसेही उससे विरुद्ध पांच प्रकारके असंवर कहे हैं. ॥ ११ ॥ पांच प्रकारका संयम (चारित्र) कहा है, १ सामायिक चारित्र, २ छेदोपस्थापनीय चारित्र, ३ परिहारविशुद्ध चारित्र ४ सूक्ष्मसंपराय संयम और ५ यथाख्यात संयम. एकेन्द्रिय जीवों नहीं मारने वालेको पांच प्रकारका

शब्दार्थ

स्पति काय असंयम पं० पंचेन्द्रिय जी० जीव अ० असमारंभ पं० पांच प्रकारका सं० संयम क० करे सो० श्रोतेन्द्रिय जा० यावत् फा० स्पर्शेन्द्रिय जी० जीव स० समारंभ पं० पांच प्रकारका अ० असंयम क० करे सो० श्रोतेन्द्रिय जा० यावत् फा० स्पर्शेन्द्रिय स० सर्व पा० प्राणी भू० भूत जी० जीव स० सत्त्व अ० असमारंभ पं० पांच प्रकारका सं० संयम ए० एकेन्द्रिय जा० यावत् पं० पंचेन्द्रिय स० सर्व पा० प्राणी भू० भूत जी० जीव स० सत्त्व स० समारंभ पं० पांच प्रकार अ० असंयम क० करे

सूत्र

रंभमाणस्स पंचविहे संजमे कज्जइ तं० सोइंदिय संजमे जाव फासिंदिय संजमे, । पंचेंदियाणं जीवा समारंभमाणस्स पंचविहे असंजमे कज्जइ तं० सोइंदिय असंजमे जाव फासिंदिय असंजमे ॥ सव्वपाणभूय जीव सत्ताणं असमारंभमाणस्स पंचविहे संजमे कज्जइ तं० एगिंदिय संजमे जाव पंचेंदिय संजमे । सव्वपाण भूय जीव सत्ताणं समा-

भावार्थ

संयम होता है पृथ्वीकायिक संयम यावत् वनस्पतिकायिक संयम, और एकेन्द्रिय जीवोंका समारंभ करनेवालेको उक्त पांच प्रकारका असंयम कहा है. पंचेन्द्रिय जीवोंका समारंभ नहीं करनेवालेको पांच प्रकारका संयम कहा है. श्रोतेन्द्रिय संयम यावत् स्पर्शेन्द्रिय संवर. और पंचेन्द्रिय जीवोंका समारंभ करनेवालेको उक्त पांच प्रकारका असंयम कहा है. सब प्राण, भूत, जीव, और सत्त्वका समारंभ नहीं करने वालेको पांच प्रकारका संयम कहा है एकेन्द्रिय संवर यावत पंचेन्द्रिय संवर. और उनका समारंभ करनेवाले को

शब्दार्थ

ए० एकेन्द्रिय जा० यावत् पं० पंचेन्द्रिय ॥ १२ ॥ पं० पांच प्रकारकी त० तृणवनस्पति का० काय अ० अग्रबीज मू० मूलबीज पो० पर्वबीज खं० स्कन्ध बीज वी० बीजरुह ॥ १३ ॥ पं० पांच प्रकारका आ० आचार णा० ज्ञानाचार दं० दर्शनाचार च० चारित्राचार त० तपाचार वी० वीर्याचार पं० पांच प्रकारका आ० आचार कल्प मा० मासिक उ० उद्घातिक मा० मासिक अ० अनुद्घातिक च० चार मासिक

सूत्र

रंभमाणस्स पंचविहे असंजमे कज्जइ तं० एगिंदिय असंजमे जाव पंचिंदिय असंजमे ॥ १२ ॥ पंचविहा तणवणस्सइ काइया प० तं० अग्गबीया, मूलबीया, पोरबीया, खंधबीया बीयरुहा ॥ १३ ॥ पंचविहे आयारे प० तं० णाणायारे, दंसणायारे, चरित्तायारे तवायारे, वीरियायारे ॥ पंचविहे आयारपकप्पे प० तं० मासिएउग्घाइए,

भावार्थ

उक्त पांच प्रकारका असंयम कहा है ॥ १२ ॥ पांच प्रकारकी तृण वनस्पति काय कही १ अग्रबीजवाली कोरंटादिवृक्ष, २ मूलबीजवाली उत्पलादिकंद, ३ पर्वबीज सेलडी प्रमुख ४ स्कन्धबीज शालि प्रमुख और ५ बीज ऊगेसो ताडी प्रमुख ॥ १३ ॥ पांच प्रकारका आचार कहा १ ज्ञान देशकाल देखकर अविनयादि आठ दोषका टालना सो ज्ञानाचार, २ समकितके शंका कांक्षादि दोष टालना सो दर्शनाचार ३ चारित्रकी पांच समिति तीन गुप्ति पालना सो चारित्राचार ५ अनशनादि द्वादश प्रकारका तप करना सो तपाचार और ५ धर्ममार्गमें बल वीर्यादिकका फोडना सो वीर्याचार । पांच प्रकारका उत्कृष्ट आचार कहा १

शब्दार्थ

उ० उद्घातिक च०चार मासिक अ०अनुद्घातिक आ० आरोपना आ० आरोपना पं० पाच प्रकारकी प० प्रस्थापित ठ० स्थापित क० पूर्ण अ० अपूर्ण हा० यथायोग्य ॥ १४ ॥ जं० जंबूद्वीप मं० मेरुकी पु० पूर्व में सी० सीता म० महानदी के उ० उत्तरमें पं०पांच व० वक्खार पर्वत मा० मालवंत चि० चित्रकुट

सूत्र

मासिएअणुग्घाइए, चउमासिए उग्घाइए चउमासिए अणुग्घाइए आरोवणा। आरोवणा पंचविहा प० तं० पट्ठविया, ठविया, कसिणा, अकसिणा, हाडहडा ॥१४॥ जंबूदीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स पुरच्छिमेणं सीयाए महानदीए उत्तरेणं पंचवक्खार पव्वया प० तं०

भावार्थ

पारणे सहित एक मासका प्रायश्चित्त (एक उपवास एक पारणा यों १० उपवास १५ पारणा) सो उद्घातिक २ गुरुमास सो विना पारणा किये एक मासका प्रायश्चित देवेसो अनुद्घातिक ३ पारणा सहित चार मासका तप करना सो चौमासिक उद्घातिक ४ पारणा विना चार मासका तपकरे सो चौमासिक अनुद्घातिक और ५ यथा प्रायश्चित देवेसो आरोपना। उसमेंसे आरोपना पांच प्रकारकी कही १ प्रस्थापिता सो शीघ्र तप करना २ स्थापिवा सो स्थापनकर रखे ३ क्रोध रहित तप करे सो पूर्णतप, ४ क्रोध सहित करे को अपूर्ण और ५ उक्त प्रकारके जो लघु गुरु तप है सो वय व शक्ति वगैरह देखकर देवे ॥ १४ ॥ जम्बूद्वीपके मेरु पर्वतकी पूर्वदिशाकी सीता महानदीसे उत्तरमें पांच वक्खार पर्वत कहे हैं १ मालवंत, १ चित्रकूट ३ पद्मकूट,

शब्दार्थ

प० पद्मकूट ण० नलीनकूट ए० एकसैल जं० जंबूद्वीप के मं० मेरु पर्वत के पु० पूर्व में सी० सीता म० महानदीके दा० दक्षिण में पं० पांच व० वक्खारपर्वत ति० त्रिकुट वे० वैश्रमणकूट अं० अंजन मा० मातंजन सो० सोमनस जं० जंबूद्वीप के मं० मेरुकी प० पश्चिम में सी० सीतोदा म० महानदी के दा० दक्षिण में पं० पांच व० वखारापर्वत वि० विद्युत्प्रभ अं० अंकावती प० पद्मावती आ० आशीविष सु० सुखावह जं० जंबूद्वीप के मं० मेरु पर्वत की प० पश्चिम में सी० सीतोदा म० महानदी की उ० उत्तर में पं० पांच व०

सूत्र

मालवए, चित्तकूडे, पम्हकूडे, णलिणकूडे, एगसेले। जंबूमंदरस्स पुरए सीयाए महाणदीए दाहिणेणं पंचवक्खारपव्वया प० तं० तिकूडे, वेसमणकूडे, अंजणे, मायंजणे, सोमणसे, । जंबूमंदरपव्वयस्स पच्चत्थिमेणं सीओयाए महाणदीए दाहिणेणं पंचवक्खार पव्वया प० तं० विज्जुप्पभे, अंकावई, पम्हावई, आसीविसे, सुहावहे, । जंबूमंदरपच्चत्थिमेणं सीओयाए महाणईए उत्तरेणं पंच वक्खारपव्वया प० तं० चंदपव्वए, सू-

भावार्थ

४ नलिनकूट, और ५ एक शैल. और उस सीता महानदीके दक्षिणमें पांच वक्खार पर्वत कहे हैं १ त्रिकूट, २ वैश्रमणकूट, ३ अंजन, ४ मातंजन और ५ सोमनस. जम्बूद्वीपके मेरु पर्वतकी दक्षिणमें आइ हुइ सीतोदा महानदीसे दक्षिणमें पांच वक्खार पर्वत कहे हैं १ विद्युत्प्रभ, २ अंकावती, ३ पद्मावती. ४ आशीविष और ५ सुखावह. और उस सीतोदा महानदीकी उत्तरमें पांच दूसरे वक्खार पर्वत कहे

शब्दार्थ

वक्खारा प० पर्वत चं० चंद्र पर्वत सू० सूर्य पर्वत णा० नाग पर्वत दे० देव पर्वत गं० गंधमादन जं० जंबूद्वीप के मं० मेरु पर्वतकी दा० दक्षिणमें दे० देवकुरुमें पं० पांच म० महाद्रह नि० निषढद्रह दे० देवकुरुद्रह सू० सूरद्रह सु० सुलसद्रह वि० विद्युत्प्रभद्रह जं० जंबूद्वीप के मं० मेरु की उ० उत्तर में उ० उत्तर कुरु में पं० पांच म० महाद्रह नी० नीलवंत उ० उत्तरकुरुद्रह चं० चंद्रद्रह ए० ऐरावणद्रह मा० मालवंतद्रह स० सर्व व० वखारा पर्वत सी० सीता सी० सीतोदा म० महानदी से मं० मेरुसे पं० पंच जो० योजन स० शत उ० ऊंचे उ०

सूत्र

रपव्वए, णागपव्वए, देवपव्वए गंधमायणे । जंबूमंदर दाहिणेणं देवकुराए कुराए पंच महद्दहा प० तं० निसहदहे, देवकुरुदहे, सूरदहे, सुलसदहे, विज्जुप्पहदहे । जंबूमंदरउत्तरेणं उत्तरकुराए कुराए पंचमहद्दहा प० तं० नीलवंतदहे, उत्तरकुरुदहे, चंददहे, एरावणदहे, मालवंतदहे । सव्वेविणं वक्खारपव्वया सीयासीओयाओ महाणई-ओ मंदरंवा पव्वयं तेण पंचजोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं पंचगाउयसयाइं, उव्वेहेणं ।

भावार्थ

हैं १ चंद्रपर्वत, २ सूर्यपर्वत, ३ नागपर्वत, ४ देवपर्वत और ५ गंध मादन. जम्बूद्वीपके मेरुसे दक्षिणमें देव कुरुमें पांच महाद्रह कहे हैं निषढद्रह, देवकुरुद्रह, सूरद्रह, सुलसद्रह, और विद्युत्प्रभद्रह. जम्बूद्वीपके मेरुसे उत्तरमें उत्तरकुरुमें पांच द्रह कहे हैं नीलवन्तद्रह, उत्तरकुरुद्रह, चंद्रद्रह, ऐरावणद्रह और मालवंतद्रह. सब वक्खार पर्वत सीता सीतोदा नदी और मेरुकी तरफ पांचसो योजनके ऊंचे और पांचसो गाऊके ऊंडे कहे

शब्दार्थ — ऊंचपने उ० ऊंडे धा० धातकी खंडकी पु० पूर्वमें मं० मेरुकी पु० पूर्वमें सी० सीतोदा म० महानदीकी उ० उत्तरमें पं० पांच व० वखारा पर्वत मा० मालवंत ए० ऐसे ज० जैसे जं० जंबूद्वीप में त० तैसे जा० यावत् पो० पुष्करवरद्वीप अ० अर्ध प० पश्चिमार्धमें व० वखारा द० द्रह प० वक्षार पर्वतका उ० ऊंचपना भा० कहना स० समयक्षेत्रमें पं० पांच भ० भरत पं० पांच ए० ऐरवत ए० ऐसे ज० जैसे च० चौथे ठाणेमें वि० दूसरे उद्देशे में त० तैसे ए० यहां भा० कहना जा० यावत् पं० पांच मं० मेरु पं० पांच मं० मेरु चूलिका ण० विशेष उ०

सूत्र — धायइखंडदीव पुरत्थिमद्धेणं मंदरस्स पव्वयस्स पुराच्छिमेणं सीओयाए महाणदीए उत्तरेणं पंच वक्खार पव्वया प० तं० मालवंते एवं जहा जंबूदीवे तहा जाव पोक्खरवरदीवड्ढ पच्चत्थिमद्धे वक्खारा दहा य वक्खारपव्वयाणं उच्चत्तं भाणियव्वं । समयखेत्तेणं पंच भरहाइं पंच एरवयाइं एवं जहा चउट्ठाणे विईए उद्देसे तहा एत्थवि भाणियव्वं

भावार्थ — हैं. धातकी खंडद्वीप के पूर्वार्द्धमें मेरु पर्वत से पूर्वदिशा की सीतोदा महानदी से उत्तर में पांच वक्षार पर्वत कहे हैं मालवन्त, चित्रकूट, पद्मकूट नलिनकूट और एकशैल. इसतरह जैसे जम्बूद्वीप का वर्णनकिया वैसेही अर्ध पुष्करवर द्वीप तक का अधिकार जानना. समयक्षेत्र (अढाइ द्वीप) में पांचभरत पांच ऐरवत आदि सब अधिकार चतुर्थ स्थानकका दूसरा उद्देशा अनुसार पांच मेंदर और पांच मंदर चूलिका तकका

शब्दार्थ

इषुकार पर्वत ण० नहीं हैं ॥ १५ ॥ उ० ऋषभदेव अ० अरिहंत को० कौशली पं० पांच ध० धनुष उ० ऊंचे उ० ऊंचपने हो० थे भ० भरतराजा चा० चार दिशा च० चक्रवर्ती पं० पांच ध० धनुष्य उ० उ० ऊंचे उ० ऊंचपने हो० थे बा० बाहुबली अ० साधु ए० ऐसे बं० ब्राह्मी सु० सुंदरी पं० पांच कारन से सु० सोताहुवा बु० जागे स० शब्दसे फा० स्पर्शसे भो० भोजन परिणामसे णि० निद्रापूर्ण होनेसे सु०

सूत्र

जाव पंचमंदरा पंचमंदरचूलिया । णवरं उसुयारा णत्थि ॥ १५ ॥ उसभेणं अरहा कोसलिए पंचधणुसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था । भरहेणंराया चाउरंत चक्कवट्टी पंचधणुसयाइं उड्ढंउच्चत्तेणं होत्था । बाहुबलीण मणगारे एवंचेव । बंभीणं अज्जा एवं चेव । एवं सुंदरीवि ॥ पंचहिं ठाणेहिं सुत्तेवि बुज्झेज्जा तं० सद्देणं, फासेणं, भोयणपरिणामेणं, णिद्दक्खएणं, सुविणदंसणेणं, ॥ पंचहिंठाणेहिं समणे निग्गंथे

भावार्थ

जानना. यहां इतना विशेष जानना कि इषुकार पर्वत नहीं ग्रहण किया है. ॥ १५ ॥ कौशली ऋषभदेव अरिहंत का शरीर पांचसो धनुष्य का ऊंचाथा. भरत नामक चक्रवर्ती, बाहुबलि अनगार और ब्राह्मी व सुंदरी आर्याजी के शरीर की अवगाहना पांच सो धनुष्यकी थी । पांचकारनसे सोता हुआ नुष्य जाग्रत होताहै १ शब्दसुनकर २ किसीका स्पर्शलगने से ३ क्षुधालगनेसे ४ निद्रापूर्ण होनेसे और ५

शब्दार्थ स्वप्न देखनेसे पं० पांच कारन से स० श्रमण नि० निर्ग्रंथ नि० साध्वीको गि० ग्रहणकरता अ० पकडता णा० उल्लंघन करे नहीं नि० साध्वीको अ० कोई प० पशु प० पक्षी ओ० पकडे त० तहां नि० निर्ग्रंथ नि० साध्वीको गि० ग्रहणकरते अ० पकडते णा० उल्लंघन करे नहीं नि० निर्ग्रंथ नि० साध्वीको दु० कठिन वि० विषम प० लपसती प० पडतीहुइ को गि० ग्रहण करते अ० पकडते णा० उल्लंघन करे नहीं नि० निर्ग्रंथ नि० साध्वी को से० पानीमें प० कादवमें प० नीलनफुलनमें उ० पानीमें उ० लपसती

सूत्र निग्गंथिं गिण्हमाणेवा अवलंबमाणेवा णाइक्कमइ तं० निग्गंथिं च णं अन्नथरे पसुजाइएवा पक्खिजाइएवा, ओहाएज्जा तत्थ निग्गंथे निग्गंथिं गिण्हमाणेवा अवलंबमाणेवा णाइक्कमइ। निग्गंथे निग्गंथिं दुग्गंसिवा, विसमंसिवा पक्खलमाणिंवा, पवडमाणिंवा गेण्हमाणेवा, अवलंबमाणेवा णाइक्कमइ। निग्गंथे णिग्गंथिं सेसंसिवा, पंकंसिवा, पणगंसिवा, उदगंसिवा, उक्कस्समाणिंवा, उउज्जुमाणिंवा, गिण्हमाणेवा, अवलंबमाणेवा,

भ्रावार्थ स्वप्न देखनेसे ॥ पांच कारनसे श्रमण निर्ग्रन्थ साध्वी का हस्त ग्रहण करते, अवलम्बन करते जिनाज्ञा नहीं अतिक्रमते हैं. कोई पशु पक्षी साध्वी को मारने के लिये आवे उस समय उसका रक्षणके लिये साधु साध्वीका हस्त ग्रहण करते या अवलम्बन करते जिनाज्ञा उल्लंघे नहीं, २ साध्वीको दुर्गम या विषम स्थानसे गिरती हुइ पकडनेसे जिनाज्ञा का उल्लंघन नहीं होता है ३ पानीमें, कीचडमें, नीलन फूलन में, द्रह,

शब्दार्थ

उ० डुबती को गि० ग्रहण करते णा० उल्लंघन करे नहीं नि० निर्ग्रंथ नि० साध्वी को आ० चढाते ओ० उतारते णा० उल्लंघन करेनहीं खे० खिन्नचित्त दि० दिप्तचित्त ज० यक्षाविष्ट उ० उन्माद को प्राप्त उ० उपसर्ग को प्राप्त सा० क्रोधादियुक्त स० प्रायश्चित युक्त भ० भक्त पा० पानीका प० प्रत्याख्यानयुक्त अ० अर्थजात नि० निर्ग्रंथ नि० साध्वी को गि० ग्रहणकरे अ० पकडते णा० उल्लंघनकरे नहीं ॥ १६ ॥ आ० आचार्य उ० उपाध्या-

सूत्र

णाइक्कमइ । निग्गंथे निग्गंथिं णावं आरुहमाणेवा, ओरुहमाणेवा णाइक्कमइ । खेत्त इत्तं, दित्ताइत्तं, जक्खाइट्ठं, उम्मायपत्तं, उवसग्गपत्तं, साहिगरणं, सपायच्छित्तं भत्तपाणपडियाइक्खित्तं अट्ठजायं निग्गंथे निग्गंथिं गिण्हमाणेवा अवलंबमाणेवा णाइक्कमइ ॥ १६ ॥ आयरिय उवज्झायस्सणं गणंसि पंचअतिसेसा प० तं० आय-

भावार्थ

नदी, तलावादिमें पडती हुइ साध्वी को साधु पकड रखे तो जिनाज्ञा उलंघे नहीं ४ साधु साध्वीको नावामें बैठाते अवलंबे तो जिनाज्ञा उलंघे नहीं ५ रागसे, भयसे, अपमानसे, यक्षाधिष्टित चित्तसे, उन्मादसे, मोहनीयकर्मके उदयसे, और उपसर्ग व उपद्रवसे व्याप्त चित्त जिसका हुवा है ऐसी अथवा क्रोधादिकसे आहार पानीका प्रत्याख्यान किया है जिनोंने ऐसी किसी साध्वी को साधु स्पर्शकरे या पकडरखे तो जिनाज्ञाका उलंघन करे नहीं. ॥ १६ ॥ आचार्य उपाध्याय के गच्छ में पांच अतिशेष कहे १ आचार्य उपाध्याय

शब्दार्थ

ग० गणमें पं० पांच अ० विशेष आ० आचार्य उ० उपाध्यायको अ० उपाश्रयमें पा० पाँव नि० पकड़कर प० झटकता प० पूंजता णा० उल्लंघन करे नहीं आ० आचार्य उ० उपाध्याय अ० उपाश्रयमें उ० उच्चार प्रश्रवण वि० डालते वि० शुद्ध करते णा० उल्लंघन करेनहीं आ० आचार्य उ० उपाध्याय प० समर्थ इ० इच्छा वे० वैयावृत्य क० करे इ० इच्छा णो० नहीं क० करे आ० आचार्य उ०

सूत्र

रिय उवज्झाए अंतोउवस्सयस्स पाये निगिज्झिय २ पप्फोडेमाणेवा, पमज्जेमाणेवा, णाइक्कमइ, । आयरिय उवज्झाए अंतो उवस्सयस्स उच्चार पासवणं विगिंचमाणेवा विसोहेमाणेवा णाइक्कमइ । आयरिय उवज्झाए पभू इच्छा वेयावडियं करेज्जा इच्छा णो करेज्जा । आयरियउवज्झाए अंतोउवस्सयस्स एगराइंवा दुराइंवा वसमाणे णाइक्कमइ ।

भावार्थ

बाहिर से उपाश्रय में आवे उस समय उन के पाँव रजोहरण से या किसी पादपूछनेसे यत्ना पूर्वक पूंजता हुवा आज्ञा अतिक्रमे नहीं २ आचार्य उपाध्याय लघुनीत वडीनीत परठाकर उपाश्रय में आवे उस समय उन के पाँव उक्त विधि अनुसार प्रमार्जे तो आज्ञा अतिक्रमे नहीं ३ आचार्य उपाध्याय की इच्छा होवेतो वैयावृत्य कर और न होवे तो न करे ४ आचार्य उपाध्याय की आज्ञा से ज्ञान ध्यान साधनेके लिये उपाश्रयकी बाहिर एक या दो रात्रि रहेतो आज्ञा अतिक्रमे नहीं ५ आचार्य उपाध्याय की आज्ञा से

शब्दार्थ

उपाध्याय अं० उपाश्रयमें ए० एकरात्रि दु० दोरात्रि ए० एकाकी व० रहते णा० उल्लंघन करेनहीं पं० पांच कारनसे आ० आचार्य उ० उपाध्यायके ग० गच्छापक्रम आ० आचार्य उ० उपाध्यायके ग० गच्छमें आ० आज्ञा धा० धारना नो० नहीं स० सम्यक् प० प्रयुंजनेवाला भ० होवे आ० आचार्य उ० उपाध्यायके ग० गणमें अ० रत्नाधिक कि० कृतिकर्म वे० विनय नो० नहीं स० सम्यक् प० प्रयुंजनेवाला भ० होवे आ० आचार्य उ० उपाध्याय के ग० गण में जे० जो सु० श्रुतपर्याय धा० धारन करता

सूत्र

आयरिय उवज्झाए बाहिं उवस्सगस्स एगराइं दुराइंवा एकागी वसमाणे णाइक्कमइ ॥
पंचहिं ठाणेहिं आयरिय उवज्झायस्स गणावक्कमणे प० तं० आयरिय उवज्झाए गणंसि-आणंवा धारणंवा नोसम्मं पउंजित्ता भवइ । आयरिय उवज्झाए गणंसि अहारायणियाए किइकम्मं वेणइयं नो सम्मं पउंजित्ता भवइ । आयरिय उवज्झाए गणंसि जे सुयपज्जवजाए धारिंति ते काले णो सम्म मणुपवादेत्ता भवइ । आयरिय उवज्झाए

भावार्थ

शून्य गृहादिक में एक दो रात्रि रहता हुवा आज्ञा अतिक्रमे नहीं । पांच प्रकारके गच्छापक्रम (गच्छका बुरा बताने वाले) कहे. १ आचार्य उपाध्याय के गच्छकी जो आज्ञा है उसे सम्यक् प्रकार से प्रयुंजे नहीं २ आचार्य उपाध्याय के गच्छ में छोटा बडे को बंदना करे वैसी जो मर्यादा है उसें सम्यक् प्रकारसे प्रयुंजे नहीं ३ आचार्य उपाध्याय के गच्छमें जो सूत्र की पर्याय धारन की है उसे योग्य समयमें सम्यक प्रकार से पढे

शब्दार्थ

है ते० उसको का० काल में नहीं स० सम्यक् अ० पढना भ० होवे आ० आचार्य उ० उपाध्याय के ग० गण में स० अपनेगण की प० दूसरे गणकी नि० साध्वी की साथ व० आसक्त भ० होवे मि० मित्र णा० ज्ञाति ग० गण में से० उसके ग० गणसे अ० अपक्रमे ते० उनकेलिये सं० संग्रह उ० उपग्रह केलिये ग० गणापक्रमण प० प्ररूपा पं० पांच प्रकार के इ० ऋद्धिवंत म० मनुष्य अ० अरिहंत च० चक्रवर्ती व० बलदेव वा० वासुदेव भा० भवितात्मा अ० साधु ॥ १७ ॥ * *

सूत्र

गणंसि सगणियाएवा, परिगणियाएवा, निग्गंथीए बहिल्लेस्से भवइ । मित्ते णाइगणेवा से गणाओ अवक्कमेज्जा, तेसिं संगहोवग्गहट्ठयाए गणावक्कमणे पण्णत्ते ॥ पंचविहा इड्ढिमंता मणुस्सा प० तं० अरहंता, चक्कवट्टी, बलदेवा, वासुदेवा भावियप्पाणो अणगारा ॥ १७ ॥

इति पंचमट्ठाणस्स बिईओद्देसो सम्मत्तो. * * * *

भावार्थ

नहीं ४ आचार्यउपाध्याय के गच्छमें, रहनेवाला अपने गच्छ में या दूसरे गच्छ में किसी साध्वी साथ अशुभ कर्मोदयसे धर्मध्यान से बाहिर वरते अथवा शिथिल परिणामि होता हुवा मित्र स्वजनादि के गच्छ से बाहिर वरतेतो ५ स्वजनों को वस्त्रादिक का आधार देवे और गच्छ से बाहिर निकल कर उसकी निन्दा करे. पांच प्रकार के ऋद्धिवन्त मनुष्य कहे हैं अरिहन्त, चक्रवर्ती, बलदेव, वासुदेव और भवितात्मा (लब्धिवन्त साधु) ॥ १७ ॥ यह पांचवे स्थानकका द्वितीय उद्देशा संपूर्ण हुवा इसके अन्त में ऋद्धिवन्त पुरुष कहे हैं वे लोक में होते हैं और लोक भी पंचास्तकायरूप है सो बताते हैं ॥ ५ ॥ २ ॥ * *

शब्दार्थ

पं० पांच अ० अस्तिकाय ध० धर्मास्तिकाय अ० अधर्मास्तिकाय आ० आकाशास्तिकाय जी० जीवास्तिकाय पो० पुद्गलास्तिकाय ध० धर्मास्तिकाय अ० अवर्ण अ० अगंध अ० अरस अ० अस्पर्श अ० अरूपि अ० अजीव सा० शाश्वत अ० अवस्थित लो० लोक द्रव्य अ० संक्षेप से पं० पांच प्रकार का द० द्रव्य से खे० क्षेत्र से का० काल से भा० भाव से गु० गुण से द० द्रव्य से ध० धर्मास्तिकाय ए० एकद्रव्य खे० क्षेत्र से लो० लोकप्रमाण का० कालसे न० नहीं क० कदापि न० नहीं आ० थी न० नहीं क०

सूत्र

पंच अत्थिकाया प० तं० धम्मत्थिकाए, अधम्मात्थिकाए, आगासत्थिकाए जीवत्थिकाए पोग्गलत्थिकाए । धम्मात्थिकाए—अवन्ने, अगंधे, अरसे, अफासे, अरूवी, अजीवे,सासए, अवट्ठिए,लोगदव्वे;से समासओ पंचविहे प० तं० दव्वओ खेत्तओ,कालओ, भावओ, गुणओ। दव्वओणं धम्मत्थिकाए एगंदव्वं, खेत्तओ लोगप्पमाणमेत्ते, कालओ नक-

भावार्थ

पांच प्रकारकी अस्तिकाय कही. १ धर्मास्तिकाय २ अधर्मास्तिकाय २ आकाशास्तिकाय ४ जीवास्तिकाय और ५ पुद्गलास्तिकाय. धर्मास्तिकार्य वर्ण, गंध, रस व स्पर्श रहित अरुपी, निर्जीव, अवस्थित, लोक में रही हुइ है. उनके संक्षेपसे पांच भेद कहे हैं द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव और गुण. द्रव्यसे धर्मास्तिकाय एक; क्षेत्र से लोक प्रमाण; कालसे पूर्वकाल में नहीं थी, वर्तमान में नही है व भविष्य में नहीं होगी वैसा नहीं, परंतु भूत में थी, वर्तमान में है, और भविष्य में होगी. यों तीनों काल में ध्रुव, नित्य,

शब्दार्थ

कदापि न० नहीं भ० है ण० नहीं क० कदापि न० नहीं भ० होगा भ० थी भ० है भ० होगी धु० ध्रुव सा० शाश्वत अ० अक्षय अ० अव्यय अ० अवस्थित नि० नित्य भा० भाव से अ० अवर्ण अ० अगंध अ० अरस अ० अस्पर्श गु० गुण से ग० गमन गु० गुण अ० अधर्मास्तिकाय अ० अवर्ण ए० ऐसे न० विशेष गु० गुण से ठा० स्थिर गु० गुण आ० आकाशास्तिकाय अ० अवर्ण ए० ऐसे ण० विशेष खे० क्षेत्रसे, लो० लोकालोक प्रमाण गु० गुण से अ० अवगाहना गु० गुण से० शेष जी० जीवास्तिकाय अ० अवर्ण ण० विशेष द० द्रव्य से जी० जीवास्तिकाय अ० अनंत द० द्रव्य अ० अरूपि जीव सा० शाश्वत

सूत्र

यावि णासी न कयावि न भवइ, ण कयावि न भविस्सइ, भुविंच भवइय भविस्सइय धुवे णितिए सासए अक्खए अव्वए अवट्ठिए णिच्चे । भावतो अवन्ने अगंधे अरसे अफासे । गुणओ गमणगुणेय । अधम्मात्थिकाये—अवण्णे एवंचेव, नवरं गुणओ ठाणगुणे । आगासत्थिकाए अवन्ने एवंचेव, णवरं खेत्तओ लोगालोगप्पमाणे गुणओ अवगाहणा

भावार्थ

शाश्वत, अक्षय, अव्यय अवस्थित व नित्य रहेगी, भाव से वर्ण, गंध, रस व स्पर्श रहित, गुणसे गमन गुण. ऐसेही अधर्मास्तिकाय भी वर्ण रहित यावत् स्पर्शरहित है विशेष इतना कि इसका स्थिरगुण है. आकाशास्तिकाय भी वैसेही जानना विशेष इतना कि क्षेत्रसे लोकालोक प्रमाण और गुणो अवकाश गुण जानना. जीवास्तिकाय वर्ण यावत् स्पर्श रहित जानना विशेष में जीव द्रव्यसे अनंत कहे हैं अरूपी व

शब्दार्थ

गु० गुण से उ० उपयोग गुण से० शेष पो० पुद्गलास्तिकाय पं० पांच वर्णवाला पं० पांच रसवाला दु० दोगंध अ० आठस्पर्श रू० रूपी अ० अजीव सा० शाश्वत अ० अवस्थित जा० यावत् द० द्रव्यसे पो० पुद्गलास्तिकाय अ० अनंतद्रव्य खे० क्षेत्रसे लो० लोकप्रमाण का० कालसे ण० नहीं क० कदापि ण० नहीं आ० है जा० यावत् नि० नित्य भा० भावसे व० वर्णवाला गं० गंधवाला र० रसवाला फा० स्पर्शवाला गु० गुणसे ग० ग्रहणगुण ॥ १ ॥ पं० पांच ग० गति प० प्ररूपी नि० नरकगति ति० तिर्यक्

सूत्र

गुणे सेसं तंचेव । जीवत्थिकाएणं अवन्ने एवं चेव णवरं दव्वओणं जीवत्थिकाए अणंताइं दव्वाइं अरूवी जीवे सासए गुणओ उवओगगुणे सेसंतंचेव । पोग्गलत्थिकाए पंचवन्ने, पंचरसे, दुगंधे, अट्ठफासे, रूवी, अजीवे सासए अवट्ठिए जाव दव्वओणं पोग्गलत्थिकाए अणंताइं दव्वाइं, खेत्तओ लोगप्पमाणमेत्ते, कालओ ण कयावि णासी जाव निच्चे भावओ वन्नमंते गंधमंते रसमंते फासमंते गुणओगहणगुणे ॥१॥

भावार्थ

शाश्वत है और गुणसे उपयोग लक्षण है. वैसेही पुद्गलास्तिकाय पांच वर्ण, पांच रस, दोगंध व आठ स्पर्श साहित रूपी, निर्जीव शाश्वत व अवस्थित है उनके पांच भेद. द्रव्यसे पुद्गलास्तिकाय अनंत द्रव्य, क्षेत्रसे सर्वकाल प्रमाण, कालसे पुद्गलास्तिकाय पूर्वकाल में नहीं थी ऐसा नहीं यावत् शाश्वत नित्य है भावसे पांच वर्ण, पांच रस, दोगंध, आठस्पर्श साहित रूपी, निर्जीव, व गुणसे ग्रहण गुण है ॥ १ ॥

शब्दार्थ

गति म० मनुष्यगति दे० देवगति सि० सिद्धगति पं० पांच इं० इन्द्रियकेअर्थ सो० श्रोतेन्द्रिय का अर्थ जा० यावत् फा० स्पर्शेन्द्रिय का अर्थ पं० पांच मुं० मुंड सो० श्रोतेन्द्रियमुंड जा यावत् फा० स्पर्शेन्द्रियमुंड अ० अथवा पं० पांच मुं० मुंड को० क्रोधमुंड मा० मानमुंड मा० मायामुंड लो० लोभमुंड सि० शिरमुंड ॥ २ ॥ अ० अधोलोक में पं० पांच बा० बादर पु० पृथ्वीकाय आ० अप् वा० वायु व० वनस्पति काय उ० औदारिक त० त्रसप्राणी उ० ऊर्ध्वलोक में पं० पांच बा० बादर ए० ऐसे

सूत्र

पंचगईओ पण्णत्ताओ तं० निरयगई, तिरियगई, मणुयगई देवगई, सिद्धिगई । पंचइंदियत्था प० तं० सोइंदियत्थे जाव फासिंदियत्थे। पंच मुंडा प० तं० सोइंदियमुंडेजाव फासिंदियमुंडे। अहवा पंचमुंडा प० तं० कोहमुंडे, माणमुंडे, मायामुंडे, लोभमुंडे, सिरमुंडे। अहे लोगेणं पंच बादरा प० तं० पुढविकाइया आउवाउवणस्सइकाइया उराला तसा पाणा । उड्ढलोगेणं पंच बादरा, एएचेव । तिरियलोगेणं पंचबादरा प० तं०

भावार्थ

पांच गति कही नरक गति, तिर्यंच गति, मनुष्यगति, देवगति, और सिद्धगति. पांचप्रकारके इन्द्रियके अर्थ कहे श्रोतेन्द्रिय का अर्थ यावत् स्पर्शेन्द्रिय का अर्थः-पांच प्रकारके मुंड. श्रोतेन्द्रिय के विषयको जीतसो श्रोतेन्द्रिय मुंड यावत् स्पर्शेन्द्रिय के विषयको जीते सो स्पर्शेन्द्रिय के मुंड. अथवा पांचप्रकारके मुंड कहे हैं क्रोधमुंड, मानमुंड, मायामुंड, लोभमुंड, शिरमुंड ॥ २ ॥ अधोलोक में पांच बादर कहे हैं पृथ्वीकाय, अप्काय, वायुकाय, वनस्पतिकाय, और औदारिक त्रसप्राण. वैसेही उक्त पांच बादर ऊर्ध्वलोकमें कहे हैं. तिर्य-

शब्दार्थ

ति० तिर्यक्लोक में पं० पांच बा० बादर ए० एकेन्द्रिय जा० यावत् पं० पंचेन्द्रिय पं० पांच प्रकार का बा० बादर ते० तेउकाय इं० अंगारा जा० ज्वाला मु० मुर्मुर अ० झाल अ० निवाडा पं० पांच बा० बादर वायुकाय पा० पूर्ववायु प० पश्चिमवायु उ० उत्तरवायु दा० दक्षिणवायु वि० विदिशा का वायु पं० पांच प्रकार की अ० अचित्त वा० वायु काय अ० चलने से धं० धमण का पी० वस्त्र नीचोते स० श्वासोश्वास का स० संमूर्च्छिम ॥ ३ ॥ पं० पांच नि० नियंठा पु० पुलाक व० वकुश कु० कुशील

त्रसू

एगिंदिया जाव पंचेंदिया ॥ पंचविहा बादर तेउकाइया प० तं० इंगाले, जाला, मुम्मुरे, अच्ची, अलाए । पंच बादर बाउकाइया प० तं० पाईणवाए, पडीणवाए, उदीणवाए, दाहिणवाए, विदिसिवाए । पंचविहा अचित्तावाउकाइया प० तं० अक्कंते, धंते, पीलिए, सरीराणुगए, समुच्छिमे ॥ ३ ॥ पंचनियंठा प० तं० पुलाए, वउसे,

भावार्थ

क लोकमें एकेन्द्रियसे लगाकर पंचेन्द्रिय तकके पांच बादर कहे हैं. बादर तेउकाय पांच प्रकारकी कही १ अंगारा २ ज्वाला ३ मुर्मुर ४ अर्ची (मुलमें अग्निकी झाल) और ५ निवाडा. (कुंभारका) पांच प्रकारकी बादर वायुकाय कही १ पूर्वदिशा का वायु, २ पश्चिमदिशाकावायु ३ उत्तरदिशा का वायु, ४ दक्षिणदिशा का वायु और ५ विदिशा का वायु. पांच प्रकारकी अचित्तवायुकाय कही १ पाँव प्रमुखसे चलतेनीकले सो २ धमनप्रमुख फुंकनेसे निकले सो ३ भींजोया हुवा वस्त्रनीचोते वायुहोवेसो ४ श्वासोश्वासादिकसे वायु नीकले सो और ५ पंखेप्रमुख से वायु नीकले सो संमूर्च्छिम ॥ ३ ॥ पांच प्रकारके नियंठे (निर्ग्रन्थ) कहे हैं

शब्दार्थ

नि० निर्ग्रंथ सि० स्नातक पु० पुलाक पं० पांच प्रकार का णा० ज्ञान पुलाक दं० दर्शन पुलाक च० चारित्र पुलाक लिं० लिंगपुलाक अ० यथासूक्ष्म पुलाक व० बकुश पं० पांच प्रकार का आ० आभोग बकुश अ० अनाभोग बकुश सं० संवृत्त अ० असंवृत्त अ० यथासूक्ष्म कु० कुशील पं० पांच प्रकार का णा०

सूत्र

कुसीले नियंठे, सिणाए । पुलाए पंचविहे प० तं० णाणपुलाए, दंसणपुलाए, चरित्तपुलाए, लिंगपुलाए, अहासुहुमपुलाए नामंपंचमे । वउसे पंचविहे प० तं० आभोगवउसे, अणाभोगवउसे, संवुडवउसे, असंवुडवउसे, अहासुहुमवउसे णामं पंचमे । कुसीले पंचविहे

भावार्थ

१ पुलाक, बकुश, कुशील, निर्ग्रंथ, और स्नातक. पुलाक सो कण रहित तुष समान. अर्थात् खेतमें काटेहुवे शालीके पूलेमें धान्य कम रहता है, और तुष विशेष रहता है; वैसेही जिन साधु को पुलाक लब्धि उत्पन्न हुइ है वे धर्म की हीलना आदि कारन देख अपनी लब्धि फोडकर चक्रवर्ती की सेना का भी संहार करदेवे. वैसे संयम के सार रहित पुलाक निर्ग्रंथ कहे जाते हैं. उसके पांचभेद ज्ञान पुलाक, दर्शन पुलाक, चारित्र पुलाक, लिंगपुलाक (अधिक वस्त्रादि रखे) और यथासूक्ष्म पुलाक प्रमाद से अकल्पनीय वस्तु ग्रहण करे. बकुश निर्ग्रंथ जैसे शालीकेपुले में से घास नीकाले ताहंपि उस में धान्य की अपेक्षा घास विशेष रहता है वैसेही इसमें गुणापेक्षा दोषकी अधिकता रहती है. इसके पांचभेद कहे हैं. १ आभोग बकुश-जानकर दोषोंका सेवन करे २ अनाभोग बकुश-अजानपने दोषोंका सेवन करे ३ संवृत्त बकुश

शब्दार्थ

ज्ञान कुशील दं० दर्शन कुशील च० चारित्र कुशील लिं० लिंगकुशील अ० यथासूक्ष्म कुशील नि० निर्ग्रंथ पं० पांच प्रकार का प० प्रथम समय अ० अप्रथम समय च० चरिम समय का अ० अचरिम समय का अ० यथासूक्ष्म निर्ग्रंथ सि० स्नातक पं० पांच प्रकार का अ० अच्छवी अ०

सूत्र

प०तं०णाणकुसीले,दंसणकुसीले,चरित्तकुसीले,लिंगकुसीले, अहासुहुमकुसीले णामं पंचमे । नियंठे पंचविहे प० तं० पढमसमयनियंठे, अपढमसमयनियंठे, चरिमसमयनियंठे, अचरिमसमयनियंठे, अहासुहुमनियंठे णामं पंचमे । सिणाए पंचविहे प० तं०

भावार्थ

सो पांव प्रमुख धोवे ४ असंवृत्त बकुश सो मूलोत्तर गुणमें संवरी असंवरी होवे और ५ यथासूक्ष्म बकुश सो कुच्छ २ दोषों का सेवन करे. तीसरा कुशील निर्ग्रंथ–जैसे घास से पृथक् किया हुवा धान्य वायु से उफणकर उसमें से कचरा दुर करते हैं. उसमें धान्य की अपेक्षा से कचरा कम रहता है वैसेही इसमें दोषों की अपेक्षा से गुण अधिक रहते हैं अर्थात् मुलगुणों में दोष लगावे नहीं परंतु प्रमाद से उत्तर गुणों में दोष लगावे. इसके पांचभेद ज्ञानकुशील, दर्शन कुशील, चारित्र कुशील, लिंगकुशील और यथासूक्ष्म कुशील । निर्ग्रन्थ–जैसे उस खले में स्वच्छ किया हुवा धान्य को किसी विशाल पात्र में लेकर कंकरादि नीकाल डाले और थोडा बहुत कचरा रहजावे वैसेही इस नियंठावाले साधु मूल व उत्तर गुणों में दोष लगावे नहीं परंतु उपशान्त कषाय रूप मैल रहता है. इसके पांचभेद कहे हैं २ मोहनीय की ग्रन्थि छोड

शब्दार्थ असंबल अ० अकर्मांश सं० शुद्ध णा० ज्ञान दं० दर्शन ध० धरनहार अ० अरिहंत जि० जिनकेवली अ० अपरिश्रावी ॥ ४ ॥ क० कल्पता है नि० साधु नि० साध्वी को पं० पांच वस्त्र धा० धारन करने को

सूत्र

अच्छवी, असंबले, अकम्मंसे, संसुद्धणाणदंसणधरे अरहाजिणे केवली अपरिस्सावी ॥ ४ ॥
कप्पइ निग्गंथाणंवा निग्गंथीणंवा पंचवत्थाइं धारेत्तएवा परिहारित्तएवा तं० जंगिए, भंगिए, साणए, पोत्तिए, तरीडपट्टए णामं पंचमए ॥ कप्पइ निग्गंथाणंवा निग्गंथीणंवा

भावार्थ कर निर्ग्रंथपने में जावे उसमें जो पहिला समय हुवा होवे सो प्रथम समय का निर्ग्रंथ २ प्रथम समय व्यतीत हुए पीछे अन्य समय में जावे सो अप्रथम समय का निर्ग्रन्थ, ३ अंत समय में होवे सो चरिम समय निर्ग्रन्थ ४ दो समय बाकी रहे हुवे सो अचरिम समय निर्ग्रन्थ और ५ सब समय में रहे सो यथासूक्ष्म नामक पांचवा नियंठा। पांचवा स्नातक निर्ग्रन्थ-जैसे उसचुने हुवे धान्यको पानीसे धोकर व कपडेसे पुंछकर स्वच्छ मल रहित करते हैं वैसेही इस निर्गन्थ वाला शुद्ध संयमी व निःकषायी होता है. इसके पांच भेद कहे हैं १ काया के योगों का रुंधन करने से अच्छवी हुवे २ सब अतिचार रहित होनेसे असंबल ३ घनघाति कर्मोंका क्षय करने से अकर्मांश ४ ज्ञानावरणीय के क्षय से अत्यंत शुद्ध ज्ञान दर्शन के धारक बने इसलिये केवली और ५ सब योगों का निरुंधन होनेसे अपरिश्रावी. ॥ ४ ॥ साधु साध्वी को पांच

शब्दार्थ

प० पहिनने को जं० ऊनका भं० रेशम का सा० सनका पो० कपास का त० वृक्षकी छाल का क० कल्पता है नि० साधु नि० साध्वी को पं० पांच र० रजोहरण धा० धारन करने को प० रखने को उ० ऊनका उ० ऊंटके लोमका सा० सनका प० तृणका मुं० कुट्टित मुंजका ॥ ५ ॥ ध० धर्म में च० रहता हुवा पं० पांच नि० विश्रामस्थान छ० छकाय ग० गच्छ रा० राजा गा० गाथापति स० शरीर पं० पांचनिधि

सूत्र

पंचरयहरणाइं धारित्तएवा परिहरित्तएवा तं० उण्णिए, उट्टिए साणिए, पच्चापिच्चिए मुंजापिच्चिए णामं पंचमे ॥ ५ ॥ धम्मेमुणं चरमाणस्स पंचनिस्साट्ठाणा प० तं० छक्काया गणो राया गाहावई सरीरं । पंचणिही प० तं० पुत्तणिही, मित्तणिही, सिप्पणिही, धण-

भावार्थ

प्रकारके वस्त्र रखना कल्पता है १ ऊनके वस्त्र कम्बलादि २ रेशमके ३ सनके ४ कपास के और ५ तृण, घास वृक्षकी छाल के. साधु साध्वी को पांच प्रकार के रजोहरण रखना कल्पता है. १ ऊन का, २ ऊंटके लोम का ३ सण का ४ नरमघास का और ५ कुट्टित मुंज का ॥ ५ ॥ धर्म करनेवाले प्राणि को पांच अवलम्बन स्थान कहेः-१ षट्काया २ गच्छ ३ राजा ४ गाथापति और ५ शरीर कि जिससे तप-

१ पृथ्वीकाय निष्पन्न अवलम्बन सो स्थान आसनादि, अप्काय सो प्राशन प्रक्षालन के लिये ऊष्णोदकादि, तेउसे अचित हुआ अन्नपानी वगैरह, वायुसो श्वासोश्वासादि, वनस्पीतसो शैय्यासनवस्त्र पात्रादि और त्रस सो शिष्य श्रावकादि यों षट् कायाका आधार धर्मात्मा को होता है.

शब्दार्थ

पु० पुत्रनिधि मि० मित्रनिधि सि० विज्ञाननिधि ध० धननिधि ध० धान्यनिधि पं० पांच प्रकार का सो० शौच पु० पृथ्वी शौच आ० अप्शौच ते० अग्निशौच मं० मंत्रशौच बं० ब्रह्मचर्य शौच पं० पांच ठा० स्थान छ० छद्मस्थ स० सर्व भाव से ण० नहीं या० जाने ण० नहीं पा० देखे ध० धर्मास्ति काय अ० अधर्मास्तिकाय आ० आकाशास्तिकाय जी० जीव अ० अशरीर प० प्रतिबद्ध प० परमाणु पुद्गल ए० उनको उ० उत्पन्न ना० ज्ञान दं० दर्शन धरनहार अ० अरिहंत जि० जिन के० केवली स० सर्वभाव से जा० जाने पा० देखे ध० धर्मास्तिकाय जा० यावत् प० परमाणु पुद्गल अ० अधोलोक में पं० पांच अ० उत्कृष्ट म० बडे म० महा-

सूत्र

णिही, धन्नाणिही ॥ पंचविहे सोए प० तं० पुढविसोए, आउसोए, तेउसोए, मंतसोए, बंभ-सोए ॥ पंचट्ठाणाइं छउमत्थे सव्वभावेणं ण याणइ ण पासइ तं० धम्मत्थिकायं, अधम्मत्थि-कायं आगासत्थिकायं, जीवं, असरीरपडिबद्धं परमाणुपोग्गलं, ॥ एयाणिचेव उप्पन्ननाण-दंसणधरे अरहा जिणे केवली सव्वभावेणं जाणइ पासइ धम्मत्थिकायं जाव परमाणु-

भावार्थ

संयमादि होसके. पांच प्रकारके निधि कहे हैं. १ पुत्र निधि, २ मित्र निधि, ३ विज्ञान निधि ४ धन निधि और ५ धान्य निधि. पांच प्रकार की शुचि कही १ पृथ्वी से शुचि होवे २ पानीसे शुचि होवे, ३ अग्नि से शुचि होवे ४ मंत्रसे शुचि होवे और ५ ब्रह्मचर्यसे शुचि। पांच वस्तुको छद्मस्थ स्वभावसे नहीं जान सकताहै धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय आकाशास्तिकाय, शरीर रहित जीव और परमाणु पुद्गल. और उन पांचों

शब्दार्थ

लय म०नरकावास का०काल म० महाकाल रो०रोरुय म०महारोरुयअ अ०अप्रतिष्ठान उ०ऊर्ध्व लोकमें पं०पांच अ०उत्कृष्ट म० बडे म० महालय वि० विजय वि० वैजयन्त ज० जयन्त अ० अपराजित स० सर्वार्थसिद्ध ॥६॥ पं० पांच पु०पुरुष जात हि०लज्जासत्त्व हि०हीमनसत्त्व च०चलसत्त्व थि०स्थिरसत्त्व उ०उदयनसत्त्व पं० पांच म०मच्छ अ० अनुस्रोतचारी प०प्रतिस्रोतचारी अं०अंतचारी म० मध्यचारी सं० सर्वचारी ए० ऐसे भि०

सूत्र

पोग्गलं ॥ अहेलोगेणं पंच अणुत्तरा महइमहालया महाणिरया प० तं० काले महाकाले रोरुए महारोरुए अप्पइट्ठाणे । उड्ढलोगेणं पंचअणुत्तरा महइमहालया महाविमाणा प० तं० विजये वेजयंते जयंते अपराजिए, सव्वट्ठसिद्धे ॥ ६ ॥ पंच पुरिस जाया प० तं० हिरिसत्ते, हिरिमणसत्ते, चलसत्ते, थिरसत्ते उदयणसत्ते

भावार्थ

वस्तु को ज्ञान दर्शन धारन करने वाले अरिहंत केवली स्वभावसे जान व देख सकते हैं. अधोलोक में प्रधान व सबसे बडे पांच नरकवास कहे हैं १. काल, २ महाकाल, ३ रोरुय, ४ महारोरुय और ५ अप्रतिष्ठान, और ऊर्ध्वलोक में पांच बडे अनुत्तर विमान कहे हैं १ विजय, २ वैजयंत, ३ जयंत ४ अपराजित और ४ सर्वार्थसिद्ध ॥ ६ ॥ पांच प्रकार के पुरुष कहे हैं:-१ एक लज्जासे सत्त्व रखे २ एक लज्जासे मन में सत्त्व रखे ३ चल सत्त्व ४ स्थिर सत्व और ५ उदयन सत्त्व सो उत्पन्न होकर वृद्धि पाता जावे.

शब्दार्थ भिक्षाचर तं०वह ज०जैसे अ०अनुस्रोत चारी जा०यावत् स०सर्वस्रोतचारी पं०पांच व० वनीपक अ०अतिथि कि०कृपणवनीपक मा०ब्राह्मण वनीपक सा० श्वानवनीपक स०श्रमणवनीपक पं०पांच कारन से अ० अचेलक प० प्रशस्त भ० होवे अ० अल्पप्रतिलेखासे ल० लघुतासे रू० रूपविश्वाससे त० तपसे अ० अनुज्ञा-

सूत्र पंचमच्छा प० तं० अणुसोयचारी, पडिसोयचारी, अंतचारी, मज्झचारी, सव्वचारी। एवामेव पंच भिक्खागा प० तं० अणुसोयचारी, जाव सव्वसोयचारी पंच वणीमगा प० तं० अतिहिवणीमए, किवणवणीमए, माहणवणीमए, साणवणीमए, समणवणीमए ॥ पंचहिं ठाणेहिं अचेलए पसत्थे भवइ तं० अप्पा पडिलेहा,

भावार्थ पांच प्रकार के मच्छ कहे हैं. १ एक मच्छ जलके प्रवाह की साथ चले २ एक जल के प्रवाह की सन्मुख चले ३ एक पानीपर चले ४ एक पानी की बीच में चले और ५ एक सर्वत्र चले. ऐसेही पांच भिक्षाचर कहे हैं १ एक उपाश्रय से नीकल कर भीक्षा लेता हुवा चला जावे २ एक पीछे आते समय भीक्षा लेवे ३ ऊपर के घरोंसे भीक्षा लेवे ४ नीचे के घरोंसे भीक्षा लेवे और ५ सर्व स्थान से भीक्षा लेवे. पांच प्रकार के वनीपक कहे हैं १ अतिथि वनीपक, २ कृपण वनीपक, ३ ब्राह्मण वनीपक, ४ श्वान वनीपक और ५ श्रमण वनीपक. पांच कारण से अचेलक साधु प्रशस्त (अच्छा) गिनाता है १ अल्प प्रतिलेखना होवे अर्थात बहुत संभाल करनेका होवे नहीं २ विहारादि में हलकापना होवे ३ निर्ममत्व होनेसे सब को

शब्दार्थ

से वि० बहुत इ० इन्द्रिय नि० निग्रह पं० पांच उ० उत्कट पं० दंड उत्कट र० राज्य उत्कट त० शरीर उत्कट दे० देश उत्कट स० सत्त्व उत्कट पं० पांच स० समिति इ० ईर्या समिति भा० भाषा जा० यावत् प० परिस्थापनीय ॥ ७ ॥ प० पांच प्रकार के सं० संसार स० प्राप्त जी० जीव ए० एकेन्द्रिय जा० यावत् पं० पंचेन्द्रिय ए० एकेन्द्रिय पं० पांच गति पं० पांच आगति ए० एकेन्द्रिय ए० एकेन्द्रियमें उ० उपजता ए० एकेन्द्रियसे जा० यावत् पं० पंचेन्द्रियमें से उ० उत्पन्न होवे

सूत्र

लाघविएपसत्थे, रूवेवेसासिए, तवे अणुण्णाए, विउलेइंदियनिग्गहे ॥ पंच उक्कला प० तं० दंडुक्कले, रज्जुक्कले, तणुक्कले, देसुक्कले, सत्तुक्कले ॥ पंच समिइओ प० तं० इरियासमिई, भासा जाव परिट्ठावणिया समिई ॥ ॥ ७ ॥ पंचविहा संसारसमावन्नगा जीवा प० तं० एगिंदिया, जाव पंचेंदिया ॥ एगिंदिया पंचगइया पंचागइया प० तं० एगिंदिए एगिंदिएसु उववज्जमाणे एगिंदिएहिंतो वा

भावार्थ

विश्वासनीय होवे ४ शीतादि सहने से तपकी वृद्धि होवे और ५ इन्द्रिय का बहुत निग्रह होवे. पांच प्रकार का उत्कट कहा है २ अपराधी दंड पावे २ राजाका उत्कट समुदय, ३ शरीरका उत्कट सत्त्वयुक्त, ४ देशका उत्कट और ५ सेनाका उत्कट. पांच प्रकार की समिति कही है ईर्यासमिति, भाषा समिति यावत् परिठावणीया समिति ॥ ७ ॥ एकेन्द्रिय से लेकर पंचोन्द्रिय तक के पांच प्रकार के जीवों संसर

शब्दार्थ से० वह ए० एकेन्द्रिय ए० एकेन्द्रियपना को वि० छोडता हुवा ए० एकेन्द्रियपने जा० यावत् पं० पंचेन्द्रियपने ग० जावे बे० बेइन्द्रिय पं० पांचगति पं० पांच आगति ए० ऐसे जा० यावत् पं० पंचेन्द्रिय पं० पांचगति पं० पांच आगति ॥ ८ ॥ पं० पांच प्रकार के स० सर्व जीव को० क्रोध कषायी जा० यावत् लो० लोभ कषायी अ० अकषायी अ० अथवा ने० नारकी जा० यावत् दे० देव सि० सिद्ध भं० भगवन् क० कलम म० मसूर ति० तिल मु० मुंग मा० उडद णि० वाल कु० कुलथ

सूत्र

जाव पंचिंदिएहिंतो वा उव्वजेजा; सेचेवणं से एगिंदिए एगेंदियत्तं विप्पजहमाणे एगेंदियत्ताएवा, जाव पंचेंदियत्ताएवा गच्छेजा । बेइंदिया पंचगइया पंचागइया एवंचेव एवं जाव पंचेंदिया पंचगइया पंचागइया प० तं० पंचेंदिया जाव गच्छेजा ॥ ८ ॥ पंचविहा सव्व जीवा प० तं० कोहकसायी जाव लोभकसायी, अकसायी । अहवा पंचविहा सव्वजीवा प० तं० नेरइया जाव देवा सिद्धा ॥ अह भंते कलमसूर-

भावार्थ में परिभ्रमण करनेवाले कहे हैं. एकेन्द्रिय जीवों की पांच गति और पांच आगति कही है. एकेन्द्रियमें उत्पन्न होनेवाला जीव एकेन्द्रिय यावत् पंचेन्द्रियमें से आता है और एकेन्द्रियमें से चवकर उनमें जाताहै ऐसेही बेइन्द्रिय यावत् पंचेन्द्रिय तक की गति आगति का अधिकार जानना. ॥ ८ ॥ सब जीव पांच प्रकार के कहे हैं क्रोध कषायी, मानकषायी, मायाकषायी, लोभकषायी, और अकषायी, और भी सब

शब्दार्थ

आ० चौला स० तुअर प० चने ए० इन ध० धान्य को को० कोठे में ज० जैसे सा० शाली के० कितना काल तक जो० योनि सं० रहती है गो० गौतम ! ज० जघन्य अं० अन्तर्मुहूर्त उ० उत्कृष्ट पं० पांच वर्ष ते० पीछे जो० योनि प० म्लानहोतीहै ते० पीछे जोनि वो० विच्छिन्न प० प्ररूपी ॥ ९ ॥ पं० पांच सं० संवत्सर ण० नक्षत्र संवत्सर जु० युगसंवत्सर प० प्रमाणसंवत्सर ल० लक्षणसंवत्सर स० शनैश्चर

सूत्र

तिलमुग्गमासणिप्पावकुलत्थआलिसंदगसईणपलिमंथगाणं; एएसिणं धन्नाणं कोट्ठुत्ताणं जहा सालीणं जाव केवइयं कालं जोणी संचिट्ठइ ? गोयमा ! जहन्नेण मंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं पंच संवच्छराइं, तेणपरं जोणी परिमिलायइ जाव तेण परं जोणी वोच्छेदे पन्नत्ते ॥ ९ ॥ पंच संवच्छरा प० तं० णक्खत्तसंवच्छरे, जुगसंवच्छरे, पमाणसंवच्छरे, लक्खणसंवच्छरे, सणिचरसंवच्छरे । जुगसंवच्छरे पंचविहे प० तं०

भावार्थ

जीवों के पांच भेद किये हैं. नारकी, मनुष्य, तिर्यंच, देवता और सिद्ध. अहो भगवन् ! कलम, वटले, चने, मसूर,तील,मूंग,उडद,वाल,कुलथ, चोला, महुडा, तूअर, व इसजाति के अन्य भी धान्य को कोठे में रख कर बंधकिया होवे तो कितना काल तक उनकी योनि ठहरती है. ? हे गोतम ! उस धान्य की योनि जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट पांच संवत्सरतक रहती है फीर योनि विच्छेद होजाति है. ॥ ९ ॥ पांच प्रकार के संवत्सर कहे हैं. १ नक्षत्र संवत्सर, २ युग संवत्सर, ३ प्रमाण संवत्सर, ४ लक्षण संवत्सर और ५

शब्दार्थ

संवत्सर जु० युगसंवत्सर प० पांच प्रकारका चं० चंद्र चं० चंद्र अ० अभिवर्द्धित चं० चंद्र अभिवर्द्धित प० प्रमाणसंवत्सर ण० नक्षत्र चं० चंद्र ऊ० ऋतु आ० आदित्य अ० अभिवर्द्धित ल० लक्षण सं० संवत्सर पं० पांच प्रकारका सं० सम्यक् न० नक्षत्रयोग जो० योगे सं० सम्यक् ऊ० ऋतु प० परिणमे ण० नहीं अ० अति उ० ऊष्ण सी० शीत ब० बहुपानी न० नक्षत्र सं० शशी स० सकल पु० पूर्णमासी जो० योजे

सूत्र

चंदे, चंदे, अभिवड्ढिए, चंदे, अभिवड्ढिएचेव । पमाणसंवच्छरे पंचविहे प० तं० णक्खत्ते, चंदे, उऊ, आइच्चे, अभिवड्ढिए । लक्खणसंवच्छरे पंचविहे प० तं० समगं नक्खत्ता योगं जोयंति । समगं उऊ परिणमंति ॥ णच्चुण्हणाइसीओ । बहूदओ होइ

भावार्थ

शनिश्चर संवत्सर. युगसंवत्सर पांच प्रकार का कहा १ चंद्रसंवत्सर, २ चंद्रसंवत्सर, ३ अभिवर्द्धित संवत्सर ४ चंद्रसंवत्सर और ५ अभिवर्द्धित संवत्सर, प्रमाण संवत्सर पांच प्रकार का १ नक्षत्र संवत्सर २७ दिन और एकदिन के ६७ भाग में से २१ भाग इतना नक्षत्र संवत्सर का एक मास होता है और इसतरह बारह महिने के ३२७ दिन और ५७ के ५१ भाग होते हैं २ चंद्रप्रमाण संवत्सर सो वदि प्रतिपदा से पूर्णिमा पर्यंत उसके दिन २८ और ३२ भाग ६७ में के यों बारह महिने के ३५४ दिन २१ भाग ६२ को होते हैं ३ ऋतुप्रमाण संवत्सर उसके एक महिने के ३० दिन पूरे होते हैं यों बारह महिने के ३६० होते हैं ४ आदित्य (सूर्य) संवत्सर उसके एक महिने के ३०॥ दिन और बारह महिने के ३६६ दिन होते

शब्दार्थ

वि० विषमचारी न० नक्षत्र क० कटुक ब० बहुत उ० पानी त० उसको आ० कहा सं० संवत्सरचंद्र वि० विषम प० वृक्ष प० होवे अ० विनाऋतुमें दे० देवे पु० पुष्पफल वा० वर्षा न० नहीं स० अच्छीतरह वा० वर्षे त० उसको सं० संवत्सरकर्म पु० पृथ्वी द० पानीका र० रस पु० पुष्पफलको दे० देवे आ० आ-

नक्खत्तो ॥१॥ ससिसगल पुण्णमासी। जोएइ विसमचारिणक्खत्ते। कडुओबहूदओय।
तमाहु संवच्छरं चंदं ॥२॥ विसमं पवालिणो। परिणमंति अणुदूसु देंति पुप्फफलं।

सूत्र

भावार्थ

हैं और ५ अभिवर्द्धित संवत्सर सो तेरह मास का होता है इसमें एक अधिक मास आता है. इन पांचों संवत्सर को पांच प्रकार के लक्षण प्रत्यक्ष प्रमाणसे गाथा द्वारा कहते हैं. जैसा जिस महिने का नाम हो वैसा उसमहिने की पूर्णिमा की रात्रिको उसी नाम का नक्षत्र चंद्रमाका संयोग जोडे. जैसे कार्तिकी पूर्णिमा को कृत्तिका, ज्येष्ट की पूर्णिमा को ज्येष्टा, इत्यादि महिने के सदृश नक्षत्र के नाम होवे और ऋतु भी अनुक्रम से परिणमें जैसे कार्तिकी पूर्णिमा पीछे हेमंतऋतु और पोष पूर्णिमा पीछे शिशिरऋतु इत्यादि समऋतु परिणमें विषम परिणमें नहीं और उसवर्ष में ज्यादा ऊष्णता व शीत नहोवे वैसेही विशेष वर्षा भी नहोवे. इन समपने से जाना जावे कि इसे नक्षत्र संवत्सर कहा है। जब महिने की पूर्णिमा के दिन उसी नाम का नक्षत्र नहोवे परंतु अन्य नक्षत्र होवे जैसे ज्येष्ट की पूर्णिमा को मूल नक्षत्र, श्रावण की पूर्णिमा को धनिष्टा मृगशीर्ष की पूर्णिमा को आर्द्रा नक्षत्र यों मास से विषमचारी होवे, व उसवर्ष में अत्यंत शीत, अत्यंत ऊष्णता

शब्दार्थ

दित्य अ० थोडी वा० वर्षासे स० अच्छा नि० होवे सा० धान्य आ० आदित्यके ते० तापसे त० तपाहुवा ख० क्षण ल० लव दि० दिवस उ० ऋतु प० परिणमें पू० पूरे थ० स्थलको त० उसको अ० अभिवर्द्धित जा० जानना ॥ १० ॥ पं० पांच जी० जीवको णि० निकलनेका म० मार्ग पा० पगसे उ० जंघासे उ० हृदयसे सि० शीर्षसे स० सर्वांगसे पा० पादसें णि० निकलता नि० नरकगामि उ० जंघा-

सूत्र

बासं ण सम्मं वासइ । तमाहु संवच्छरं कम्मं ॥३॥ पुढविदगाणं तु रसं । पुप्फफलाणं तु देंति आइच्चो॥ अप्पेण वि वासेणं। सम्मं निप्पज्जए सासं ॥४॥ आइच्चतेयतविया। खणलवदिवसाउऊ परिणमंति॥ पूरेइ य थलयाइं । तमाहु अभिवड्ढियं जाण ॥ १० ॥ पंचविहे जीवस्स णिज्जाणमग्गे प० तं० पाएहिं, उरूहिं, उरेणं, सिरेणं सव्वंगेहिं ॥

भावार्थ

व अत्यंत वर्षा हो इन लक्षणोंसें उसको चंद्र संवत्सर जानना. विषमऋतु परिणमें अर्थात् विनाऋतु फलपत्र आवे, वर्षा भी अच्छी तरह से न होवे उसे ऋतु संवत्सर या कर्म संवत्सर कहते हैं. जिस वर्ष में वर्षाद के पानी का रस मीष्ट व स्निग्ध होवे यथोचित काल में फुल फल देवे उसे आदित्य संवत्सर कहते हैं इसमें थोडे वर्षादसे धान्य अच्छा होता है । सूर्यके तेजसे क्षण, मुहूर्त, लव सो ४८ श्वासप्रमाण, दिन सो अहोरात्रि, ऋतुसो दो मास प्रमाण जानी जावे और वायुसे बहुत धुल उडती होवे सो अभिवर्द्धित संवत्सर जानना जाता है. अहो शिष्य! इसे तू आचार्य के कहने से जान ॥ १० ॥ पांच प्रकार से जीवको नीकलने का

शब्दार्थ

से णि० नीकलता ति० तिर्यक्गामि उ० हृदयसे णि० निकलता म० मनुष्यमेंजानेवाला सि० शीर्षसे नि० नीकलता दे० देवगामि स० सर्वांगसे णि० नीकलता सि० सिद्धिगति प० पर्यवसान पं० पांच प्रकारका छे० छेदन उ० उत्पादछेदन वि० व्ययछेदन ध्रु० ध्रुवछेदन प० प्रदेशछेदन दो० द्विधाछेदन

सूत्र

पाएहिं णिज्जाणमाणे निरयगामी भवइ, उरूहिं णिज्जाणमाणे तिरियगामी भवइ, उरेणं णिज्जाणमाणे मणुयगामी भवइ, सिरेणं णिज्जाणमाणे देवगामीभवइ, सव्वंगेहिं णिज्जाणमाणे सिद्धिगतिपज्जवसाणे पण्णत्ते ॥ पंचविहे छेयणे प० तं० उप्पायच्छेयणे वियच्छेयणे, बंधणच्छेयणे, पएसच्छेयणे, दोधारच्छेयणे, ॥ पंचविहे आणंतरिए प० तं०

भावार्थ

मार्गकहा. पाँव से, जंघा से, हृदय से, मस्तक से और सर्वांग से. १ पाँवसे नीकलनेवाला जीव मरकर नरक में जाता है २ जंघासे नीकलनेवाला जीव तिर्यंच गामी होता है ३ हृदय से नीकलनेवाला जीव मनुष्य में जाता है शिरसे निकलने वाला देवलोकमें जाताहै, और ५ सर्वांगसे नीकलनेवाला जीव सिद्ध होताहै. पांच प्रकारसे आयुष्य का छेदन होता है १ देव व नरक मेंउत्पन्न होना सो उत्पात; मनुष्यकी पर्यायान्तर होवे सो व्ययछेदन३ जीव को कर्मबंध से मुक्त होना सो बंधन छेदन, ४ जीव के प्रदेशभिन्न होना सो प्रदेशछेदन ५ जीव व प्रदेश भिन्न होना सो द्विधाछेदन. पांच प्रकार से अंतररहितपना कहा १ उत्पात का निरंतर जीव को उत्कृष्ट असंख्यात समय का विरह नहीं है इस लिये २ मनुष्य पर्याय में विशेष काल लगे नहीं सो व्यय ३

शब्दार्थ पं० पांच आ० आनंतर्य उ० उत्पाद वि० व्यय प० प्रदेश स० समय सा० सामान्य आनंतर्य पं० पांच अ० अनंत णा० नाम ठ० स्थापना द० द्रव्य ग० गणित प० प्रदेश अ० अथवा ए० एकप्रकारसे दु० दोकारनसे दे० देशविस्तार स० सर्वविस्तार सा० शाश्वताविस्तार ॥ ११ ॥ पं० पांच प्रकारकाज्ञान

सूत्र उप्पायणंतरिए, वियणंतरिए, पएसाणंतरिए, समयाणंतरिए सामणाणंतरिए पंचविहे अणंतए प० तं० णामाणंतए, ठवणाणंतए, दव्वाणंतए, गणणाणंत्तए, पएसा णंतए, । अहवा पंचविहे अणंतए प० तं० एगओणंतए, दुहओणंतए, देसवित्थारा णंतए, सव्ववित्थाराणंतए सासयाणंतए ॥ ११ ॥ पंचविहे णाणे पण्णत्ते तं० आभिनिबोहियणा-

भावार्थ प्रदेश २ में अंतर नहीं सो प्रदेशान्तर ४ समय २ में अंतर नहीं है सो समयान्तर और ५ सामान्य से सब जीव का अनंतर ८ समय का है सो सामान्यानंतर. पांच वस्तु अनंत कही नाम अनंत, स्थापना अनंत, द्रव्य अनंत, गणित अनंत, और ५ देश अनंत. और भी पांच प्रकार के अनंत कहे हैं १ एक अनंत लम्बपने अनंत एक श्रेणिरूप, २ दो प्रकार लम्बाइ जैसे पूर्व पश्चिम, उत्तर दक्षिण ३ देश विस्तार अनंत पूर्वादि एक दिशि अनंत प्रदेशात्मक ४ सर्व विस्तार अनंत सो सर्वाकाश रूप और ५ शाश्वता अनंत सो अनादि अनंत रूप ॥ ११ ॥ पांच प्रकार से ज्ञान कहा मति ज्ञान, श्रुति ज्ञान, अवधि ज्ञान, मनःपर्यव ज्ञान, व

शब्दार्थ

आ० मतिज्ञान सु० श्रुतज्ञान ओ० अवधिज्ञान म० मनःपर्यवज्ञान के० केवलज्ञान पं० पांच प्रकारका णा० ज्ञानावरणीय कर्म आ० मतिज्ञानावरणीय जा० यावत् के० केवलज्ञानावरणीय पं० पांच प्रकारकी स० स्वाध्याय वा० वांचना पु० पृच्छना प० पर्यटना अ० अनुप्रेक्षा ध० धर्मकथा पं० पांचप्रकारका प० प्रत्याख्यान स० श्रद्धा सु० शुद्ध वि० विनयशुद्ध अ० अनुभाषनाशुद्ध अ०अनुपालनाशुद्ध भा० भावशुद्ध पं० पांचप्रकारका प० प्रतिक्रमण आ० आश्रवद्वार मि० मिथ्यात्व क० कषाय जो० योग भा० भा-

सूत्र

णे, सुयणाणे, ओहिणाणे, मणपज्जवणाणे, केवलणाणे । पंचविहे णाणावरणिज्जेकम्मे प० तं० आभिणिबोहियनाणावरणिज्जे, जाव केवल णाणावरणिज्जे ॥ पंचविहे सज्झाए प० तं० वायणा, पुच्छणा, परियट्टणा, अणुप्पेहा, धम्मकहा ॥ पंचविहे पच्चक्खाणे प० तं० सद्दहणसुद्धे, विणयसुद्धे, अणुभासणासुद्धे, अणुपालणासुद्धे, भावसुद्धे ॥

भावार्थ

केवल ज्ञान. पांच प्रकार के ज्ञानावरणीय कर्म कहे हैं मतिज्ञानावरणीय, श्रुतिज्ञानावरणीय, अवधि ज्ञानावरणीय, मनःपर्यवज्ञानावरणीय, व केवलज्ञानावरणीय पांच प्रकार की स्वाध्याय कही:—वाचना, पुच्छना, पर्यटना, अनुप्रेक्षा व धर्मकथा. पांच प्रकार के प्रत्याख्यान कहे हैं श्रद्धना शुद्ध, विनय शुद्ध, अनुभाषना शुद्ध, अनुपालना शुद्ध और भाव शुद्ध. पांच प्रकार का प्रतिक्रमणः—आश्रवद्वार प्रतिक्रमण,

१. गुरुने प्रत्याख्यान कराये पीछे 'वोसरामि' ऐसापाठ कहना सो.

शब्दार्थ

वप्रतिक्रमण पं० पांच कारनसे सु० सूत्रवांचना सं० संग्रहकेलिये उ० उपग्रहकेलिये नि० निर्जराकेलिये सु० सूत्र मे० मेरा प० शुद्ध भ० होगा सु० सूत्रका अ० अविच्छेदकेलिये पं० पांच कारनसे सु० सूत्र सि० शिखे णा० ज्ञानकेलिये दं० दर्शनकेलिये च० चारित्रकेलिये वु० व्युदग्रह वि० विमोचनाकेलिये अ० यथार्थ भा० भाव जा० जनूंगा सो० सौधर्म ई० ईशान क० देवलोकमें वि० विमान पं० पांचवर्णके कि० कृष्ण जा० यावत् सु० शुक्ल सो० सौधर्म ई० ईशान क० देवलोकमें वि० विमान पं० पांच जो० योजन स० शत

सूत्र

पंचविहे पाडिक्कमणे प० तं० आसवदारपडिक्कमणे, मिच्छत्तपडिक्कमणे, कसाय पडिक्कमणे, जोगपाडिक्कमणे; ॥ पंचहिं ठाणेहिं सुत्तं वाएज्जा तं० संगहट्ठयाए, उवग्गहट्ठयाए, निज्जरट्ठयाए, सुत्ते वा मे पज्जवयाए भविस्सइ, सुत्तस्सवा अव्वोच्छित्तिणयट्ठयाए ॥ पंचहिं ठाणेहिं सुत्तं सिक्खेज्जा तं० णाणट्ठयाए, दंसणट्ठयाए चरित्तट्ठयाए, वुग्गह विमोयणट्ठयाए अहत्थे वा भावे जाणिस्सामि तिकट्टु ॥ सोहम्मीसाणेसुणं क-

भावार्थ

मिथ्यात्व प्रतिक्रमण, कषाय प्रतिक्रमण, जोग प्रतिक्रमण और भाव प्रतिक्रमण. पांच कारन से सूत्र की वांचनादेनी कल्पती है १ शिष्य का संग्रह के लिये २ उपग्रह के लिये अर्थात् पढाने से शिष्य भक्त पान वस्त्रादि लाने को समर्थ होगा ३ कर्मनिर्जराके लिये ४ पढानेसे मुझे सूत्र की विस्मृति हुइ होगा सो अच्छी होगा इस लिये और ५ पढानेसे सूत्र बहुत कालतक रहेगा, विच्छेद नही होगा इसलिये. पांच कारन

शब्दार्थ

उ० ऊंचे उ० ऊंचपने बं० ब्रह्मदेवलोक ल० लंतक क० देवलोकमें दे० देवोंका भ० भवधारणीय स० शरीर उ० उत्कृष्ट पं० पांचहाथ उ० ऊंचे उ० ऊंचपने णे० नारकीको पं० पांचवर्णके पं० पांचरसके पो० पुद्गल बं० बांधे बं० बांधते है बं० बांधेंगे कि० कृष्ण जा० यावत् सु० शुक्ल ति० तिक्त जा० यावत् म० मधुर ए० ऐसे जा० यावत् वे० वैमानिक ॥ १२ ॥ जंबूद्वीपके मं० मेरुकी दा० दक्षिणमें गं० गंगामहानदी

सूत्र

प्पेसु विमाणा पंचवन्ना प० तं० किण्हा जाव सुक्किल्ला, ॥ सोहम्मीसाणेसु णं कप्पेसु विमाणा पंचजोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं प० । बंभलोगलंतएसुणं कप्पेसु देवाणं भवधारणिज्जसरीरगा—उक्कोसेणं पंचरयणीओ उड्ढं उच्चत्तेणं प० । णेरइयाणं पंचवन्ने पंचरसे पोग्गले बंधिंसुवा, बधंतिवा बंधिस्संतिवा, तं० किण्हे जाव सुक्किल्ले। तित्ते जाव मधुरे । एवं जाव वेमाणिया ॥ १२ ॥ जंबूहीवेदीवे मंदरस्स दाहिणेणं गंगामहाणदिं पंच

भावार्थ

से सूत्र शिखता हैः- ज्ञान के लिये, दर्शन के लिये, चारित्र के लिये, अन्यको मिथ्यात्वाभिनिवेष से मुक्त करने को और यथार्थभाव जानने को. सौधर्म और ईशान कल्प में विमान पांच वर्णवाले कहे हैं, कृष्ण यावत् शुक्ल. सौधर्म ईशान देवलोक में विमान पांचसो योजन के ऊंचे कहे हैं. ब्रह्म देवलोक और लंतक में देवताओंकी भवधारणीय अवगाहना पांच हाथ की कही है. नरक से लेकर वैमानिक तक में कृष्णादि पांच वर्ण और तिक्तादि पांच रसके पुद्गल बांधते है, बांधेगें और बांधे ॥ १२ ॥ जम्बूद्वीप के

शब्दार्थ

में पं० पांच म० बडीनदीयां स० मीलती हैं ज० जमुना ल० सरयू आ० आदी को० कौशी म० मही जं० जंबूद्वीपके मं० मेरुकी दा० दक्षिणमें सिं० सिंधुमहानदीमें पं० पांचबडीनदियां स० मीलतीहै स० सद्दु भा० भावीतस्ती व० वभासा ए० ऐरावती चं० चंद्रभागा जं० जंबूद्वीपके मं० मेरुकी उ० उत्तरमें र० रक्ता महानदीमें पं० पांच बडीनदियां स० मीलतीहै कि० कृष्णा म० महाकृष्णा नी० नीला म० महानीला म० महातीरा ज० जंबूद्वीपके म० मेरुकी उ० उत्तरमें र० रक्तावतीमहानदीमें पं० पांचबडीनदियां स० मीलतीहै इं०

सूत्र

महाणदीओ समप्पेंति तं० जउणा, सरऊ, आदी, कोसी, मही। जंबूमंदरस्स दाहिणेणं सिंधुमहानदिं पंचमहाणदीओ समप्पेंति तं० सद्दू, भावितत्थी, वभासा, एरावई, चंदभागा। जंबूमंदरउत्तरेणं रत्तं महानइं पंचमहाणईओ समप्पेंति, तं० किण्हा, महाकिण्हा, नीला, महानीला, महातीरा। जंबूमदरउत्तरेणं रत्तावइं महाणदिं पंच महाणईओ समप्पेंति

भावार्थ

मेरु पर्वत की दक्षिण दिशा में गंगा महानदी को यमुना, सरयू, आदी, कौशी और मही नामक पांच नदियाँ मीलती हैं और सिंधु का सद्दु, भावितस्ती, वभासा, ऐरावती, चंद्राभागा नामक पांच नदियां मीलती हैं. जम्बूद्वीप के मेरुस उत्तर दिशा में रक्ता महानदी को कृष्णा, महाकृष्णा, नीला, महानीला, व महातीरा नामक पांच नदियां मीलती हैं और रक्तावती महानदी को इन्द्रा, इन्द्रसेना, सुषेना, वारिषेना

शब्दार्थ

इन्द्रा इं० इन्द्रसेना सु० सुषेणा वा० वारिषेणा म० महाभागा ॥ १३ ॥ पं० पांच ति० तीर्थंकर कु० कुमारावस्थामें व० रहते मु० मुंड जा० यावत् प० प्रव्रजितहुवे व० वासुपुज्य म० मल्लीनाथ अ० अरिष्टनेमि पार्श्वनाथ वी० महावीर चं० चमरचंचा रा० राजधानिमें पं० पांच स० सभा सु० सुधर्मा उ० उपपात अ० अभिषेक अ० अलंकारिक व० व्यवसाय ए० एक इं० इन्द्रकेस्थानमें पं० पांच स० सभा सु० सुधर्मा जा० यावत् व० व्यवसाय पं० पांचनक्षत्रके पं० पांचतारे ध० धानेष्टा रो० रोहिणी पु० पुनर्वसु ह० हस्त वि० वि-

सूत्र

इंदा, इंदसेणा, सुसेणा, वारिसेणा, महाभागा ॥ १३ ॥ पंचतित्थगरा कुमारवास मज्झे वसित्ता मुंड जाव पव्वइया तं० वासुपुज्जे, मल्ली, अरिट्ठनेमी, पासे, वीरे ॥ चमरचंचाएणं राजधाणीए पंचसभाओ प० तं० सभासुहम्मा, उववायसभा, अभिसेयसभा, आलंकारियसभा, ववसायसभा ॥ एगमेगेणं इंदट्ठाणे पंचसभाओ प० तं० सभासुहम्मा जाव ववसायसभा ॥ पंच णक्खत्ता पंचतारा प० तं० धणिट्ठा, रो-

भावार्थ

और महाभागा नामक पांच नदियां मीलता हैं ॥ १३ ॥ श्री वासुपुज्य, श्री मल्लीनाथ स्वामी, श्री अरिष्टनेमी, श्री पार्श्वनाथ स्वामी और श्री महावीर स्वामी ये पांचो तीर्थंकरों कुमारवास में रहकर अनगार हुए. चमर चंचा राजधानि में पांच सभाओ कहीं १ सुधर्मा सभा, २ उपपात सभा, ३ अभिषेक सभा ४ अलंकार सभा और ५ व्यवसाय सभा. एक २ इन्द्रको उपर्युक्त पांच २ सभाएं कहीं. पांच २

शब्दार्थ

साखा जी० जीव पं० पांचस्थान णि० निवर्तित पो० पुद्गल पा० पापकर्मपने चि० एकठेकिये चि० एकठे करते हैं चि० एकठेकरेंगे ए० एकेन्द्रिय णि० निवर्तित जा० यावत् पं० पंचेन्द्रिय नि० निवर्तित ए० ऐसे चि० चिन उ० उपचिन बं० बंध उ० उदीर वे० वेद नि० निर्जरा पं० पांच प० प्रदेशी खं० स्कन्ध अ० अनन्त प० प्ररूपे पं० पांच प्रदेशी अवगाह्या पो० पुद्गल अ० अनंत प० प्ररूपे जा० यावत् पं० पांच गुणरूक्ष पु० पुद्गल अ० अनंत प० प्ररूपे. ॥ १४ ॥ * * *

सूत्र

हिणी, पुणव्वसू, हत्थो, विसाहा ॥ जीवाणं पंच ट्ठाणणिव्वत्तिए पोग्गले पावकम्मत्ताए चिणिंसुवा, चिणिंतिवा, चिणिस्संतिवा तं० एगेंदियनिव्वत्तिए जाव पंचेंदिय निव्वत्तिए ॥ एवं चिणउवचिणबंधउदीर वेदतह निज्जराचेव ॥ पंचपएसिया खंधा अणंता प० पंचपएसोगाढा पोग्गला अणंता पण्णत्ता । जाव पंचगुणलुक्खा पोग्गला अणंता पण्णत्ता ॥ १४ ॥ इति पंचमंट्ठाणं सम्मत्तं * *

भावार्थ

तारेवाले पांच नक्षत्र कहें धनिष्ठा, रोहिणी, पुनर्वसु, हस्त, और विशाखा. जीवने पांच स्थानक से निवर्तित पुद्गल पापकर्मपने एकत्रित किये, करेंगे और करते हैं एकेन्द्रिय यावत् पंचेन्द्रिय. ऐसेही उपचिणे, बांधे, उदीरे, वेदे और निर्जरे. पांच प्रदेशी स्कंध अनंत कहे हैं पांच प्रदेश अवगाहना करनेवाले पुद्गल अनंते कहे यावत् पांच गुणरूक्ष पुद्गल अनंत कहे. ॥ १४ ॥ यह पांचवा ठाणा समाप्त हुवा इस में जीवादिपदार्थों का अधिकार कहा. आगे यहही विशेष बतलाते हैं. * * *

॥ षष्ठं स्थानकम् ॥

शब्दार्थ

छ० छकारन से अ० अनगार अ० योग्य है ग० गणको धा० धारन करने को सि० श्रद्धावन्त स० सत्यवन्त मे० मेधावी ब० बहुश्रुत स० सत्त्ववन्त अ० अल्प अधिकरण वाला छ० छकारन से नि० साधु नि० साध्वी को गि० ग्रहण करता अ० अवलम्बता ना० उल्लंघन करे नहीं खि० खिन्नचित्तवाली दि० दित्तचित्तवाली ज० यक्षाधिष्ट उ० उन्माद प्राप्त उ० उपसर्ग प्राप्त सा० अधिकरण सहित को छ० छकारन

सूत्र

छहिं ठाणेहिं संपन्ने अणगारे अरिहइ गणं धारित्तए तं० सड्ढिपुरिसजाए, सच्चेपुरिसजाए, मेहावीपुरिसजाए, बहुस्सुएपुरिसजाए, सत्तिमंअप्पाहिगरणे ॥ छहिं ठाणेहिं निग्गंथे निग्गंथिं गिण्हमाणेवा अवलंबमाणेवा नाइक्कमइ तं० खित्तचित्तं, दित्तचित्तं, जक्खाइट्ठं उम्मायपत्तं, उवसग्गपत्तं, साहिगरणं १ छहिं ठाणेहिं निग्गंथा निग्गं-

भावार्थ

छगुण संपन्न साधु अरिहंत भगवन्त के गण (साधु, साध्वी श्रावक श्राविका) को धारण करन योग्य होते हैं. १ श्रद्धावंत (दूसरे की श्रद्धा निश्चल करसकता है) २ सत्यवंत (सब को विश्वासनीय होताहै) ३ बुद्धिवन्त (सबकोमानीय) ४ बहुश्रुत (अन्य को ज्ञानादि देने में समर्थ होताहै) ५ सत्त्ववंत परीषहादि में अडग रहसकता है, और अल्प अधिकरण वाला सो क्रोधादि रहित. साधु साध्वी का अवलम्बन करते छ कारन से जिनाज्ञा अतिक्रमे नहीं. १ खिन्न चित्तसे २ हर्षसे व्याप्तचित्त वाला, ३ यक्षाधिष्टित ४ उन्माद

शब्दार्थ से नि० साधु नि० साध्वी सा० स्वधर्मीपना का० काल को प्राप्त स० आचरते णा० उल्लंघन करे नहीं अं० अंदरसे बा० बाहिर णी० निकालते बा० बाहिरसे णि० दूर णी० नीकालते उ० बंधनकरते उ० जागरणा करते अ० जणावे तु० मौनपने सं० परठने को जाते छ० छकारन से छ० छद्मस्थ स० सर्वभावसे ण० नहीं या० जाने ण० नहीं पा० देखे ध० धर्मास्तिकाय अ० अधर्मास्तिकाय आ० आकाशास्तिकाय जी० जीव अ० अशरीर प्रतिबद्ध प० परमाणु पुद्गल स० शब्द उ० उत्पन्न णा० ज्ञान दं०

सूत्र थीओय साहंमियं कालगयं समायरमाणा णाइक्कमइ तं० अंतोहिंतो बाहिं णीणेमाणा, बाहिंहिंतो वाणिव्वाहिं णीणेमाणा, उवेहमाणावा, उवासमाणावा, अणुन्नवेमाणावा, तुसिणीएवा संपव्वयमाणा (२) छट्ठाणाइं छउमत्थे सव्वभावेणं ण याणइ णपासइ तं० धम्मत्थिकाय मधम्मत्थिकायं, आगासं, जीव मसरीरपडिबद्धं, परमाणुपोग्गलं

भावार्थ प्राप्त ५ उपसर्ग उत्पन्न होते और ६ अधिकरण सहित अर्थात् क्रोधसे हठ में आजावे. छ कारन से साधु साध्वी अपने स्वधर्मी साधु साध्वीको को काल प्राप्त हुवे जानकर उन को उठाने प्रमुखका व्यवहार करते जिनाज्ञा अतिक्रमे नहीं १ उपाश्रय से बाहिर नीकालते २ बाहिर से विशेष बाहिर नीकालते ३ बंधनादि करते ४ रात्रि जागरणादि उपासना करते ५ उन के स्वजनादिक को परिठाने को जनाते और ६ मौनस्थ परिठाने को जाते. छद्मस्थ छ वस्तु को सब भावसे जान नहीं सकता है व देख नहीं

शब्दार्थ

दर्शन ध० धारन करने वाले अं० अरिहंत जि०० जिन स० सर्वभाव को जा० जाने पा० देखे ध० धर्मास्तिकाय जा० यावत् स० शब्द छ० छकारन से स० सर्व जीव को ण० नहीं है इ० ऋद्धि जा० यावत् प० पराक्रम जी० जीव को अ० अजीव क० करने को अ० अजीव को जी० जीव करने को ए० एक स० समय में दो० दोभाषा भा० बोलने को सं० स्वयं क० किया हुवा क० कर्म वे० भोगवने मा० नहीं वे० भोगवने प० परमाणु पुद्गल छे० छेदने को भि० भेदने को अ० अग्निसे ड० जलाने को ब० बाहिर लो०

सूत्र

सद्दं ॥ एयाणिचेव उप्पण्णणाणदंसणधरे अरहा जिणे जाव सव्वभावेणं जाणइ पासइ धम्मत्थिकायं जाव सद्दं (३) छहिं ठाणेहिं सव्वजीवाणं णत्थि इड्ढीतिवा जाव परक्कमेतिवा तं० जीवंवा अजीवं करणयाए, अजीवं वा जीवं करणयाए, एगेसमएणंवा दोभासाओ भासित्तए, सयं कडंवा कम्मंवेएमिवा मा वा वेएमि, परमाणुपोग्गलंवा छिंदित्त-

भावार्थ

सकता है १ धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय, आकाशास्तिकाय, शरीर रहित जीव, परमाणु पुद्गल और शब्द. इन छेही वस्तु को अरिहंत जिन केवली सब भाव से जान व देख सकते हैं. छ कार्य करने को कोई भी जीव ऋद्धि से, द्युति से, तेज से यावत् पराक्रम से समर्थ नहीं हैं. जीव का अजीव करने को, अजीव का जीव करने को, एक समय में दो भाषा बोलने को, अपने किये हुवे कर्म वेदूं या वेदूं नहीं ऐसा करने को, परमाणु पुद्गलों को छेदन, भेदन या अग्निकायासे जलन करने को, और लोक के

शब्दार्थ

लोक से ग० जाने को ॥ १ ॥ छ० छजीवनिकाय पु० पृथ्वीकाय जा० यावत् त० त्रसकाय छ० ताराग्रह सु० शुक्र बु० बुध व० बृहस्पति अं० मंगल स० शनैश्चर के० केतु छ० छप्रकार के सं० संसारी जी० जीव पु० पृथ्वीकाय जा० यावत् त० त्रसकाय पु० पृथ्वीकाय को छ० छगति छ० छआगति पु० पृथ्वीकाय पु० पृथ्वीकाया में उ० उपजता पु० पृथ्वीकाय में से जा० यावत् त० त्रसकाय में से उ० उपजे पु० पृथ्वीकाय पु० पृथ्वीकाय को वि० छोडता पु० पृथ्वीकायपने जा० यावत् त० त्रसकायपने ग०

सूत्र

एवा भिंदित्तएवा, अगाणिकाएण वा समोदहित्तए, बहियावा लोगंतागमणयाए (५) ॥ १ ॥ छजीवनिकाया प० तं० पुढविकाइया जाव तसकाइया (६) छ तारगहा प० तं० सुक्के, बुधे, बहस्सई, अंगारए, सणिच्चरे, केऊ, (७) छव्विहा संसारसमावन्नगा जीवा प० तं० पुढविकाइया जाव तसकाइया (८) पुढविकाइया छगइया छआगइया प० तं० पुढविकाइए पुढविकाइएसु उववज्जमाणे पुढविकाइएहिंतोवा जाव तसकाइएहिंतोवा उववज्जेज्जा ॥ सोचेवणं सेपुढविकाइए पुढविकाइयत्तं विप्पज-

भावार्थ

बाहिर अलोक में जाने को ॥ १ ॥ छ जीवनिकाय कही पृथ्वीकाय, अप्काय, तेऊकाय, वायुकाय, वनस्पतिकाय और त्रसकाय. छ ग्रह तारारूप कहे- शुक्र, बुध, बृहस्पति, अंगारक, (मंगल) शनैश्चर और केतु. पृथ्वीकायादि छप्रकारके जीव संसार में परिभ्रमण करनेवाले कहे. पृथ्वी कायादि छही

शब्दार्थ

जावे आ० अप्कायं छ० छगति छ० छआगति ए० ऐसे जा० यावत् त० त्रसकाय छ० छप्रकार के स० सर्व जीव आ० मतिज्ञानी आ० यावत् के० केवल ज्ञानी अ० अज्ञानी अ० अथवा ए० एकेन्द्रिय जा० यावत् पं० पंचेन्द्रिय अ० अनेन्द्रिय अ० अथवा ओ० औदारिक वे० वैक्रेय आ० आहारिक ते० तेजस् क० कार्माण अ० अशरीरी छ० छप्रकार की त० तृणवनस्पति अ० अग्रबीज मू० मूलबीज पो० पर्वबीज

सूत्र

हमाणे पुढविकाइयत्ताएवा जाव तसकाइयत्ताएवा गच्छेज्जा । आउकाइया छगइया छआगइया एवंचेव । जाव तसकाइया (९) छव्विहा सव्व जीवा प० तं० आभिणिबोहियणाणी जाव केवलणाणी, अन्नाणी (१०) अहवा छव्विहा सव्व जीवा प० तं० एगिंदिया जाव पंचिंदिया, अणिंदिया (११) अहवा छव्विहा सव्व जीवा प० तं० ओरालियसरीरी, वेउव्वियसरीरी, आहारगसरीरी, तेयगसरीरी, कम्मगसरीरी असरीरी (१२) छव्विहा तणवणस्सइकाइया प० तं० अग्गवीया, मूलबी-

भावार्थ

कायों की उक्त छही कायामें गति होती है और उसमेंसे आगति होती है. सब जीवोंके छभेद किये गये हैं मतिज्ञानी, श्रुतज्ञानी, अवधिज्ञानी, मनःपर्यव ज्ञानी, केवल ज्ञानी, व अज्ञानी. और भी सबजीवोंके छ भेदकिये हैं उदारिक शरीरी, आहारक शरीरी, तेजस शरीरी, कार्माण शरीरी, और अशरीरी. छप्रकार की

शब्दार्थ

खं० स्कन्धबीज बी० बीजरूह स० संमूर्च्छिम ॥ २ ॥ छ० छस्थान स० सर्व जीव को णो० नहीं सु० सुलभ भ० होवे म० मनुष्यभव आ० आर्यक्षेत्र में ज० जन्म सु० अच्छाकुल में प० जन्मना के० केवली प० प्ररूपा ध० धर्म स० सूनना सु० सूत्र में श्रद्धा स० श्रद्धकर प० विश्वासकर रो० पसंदकर का० कायासे फा० फरसना करनी छ० छ इ० इन्द्रिय के अर्थ णो० श्रोतेन्द्रिय का अर्थ जा० यावत् स० स्पर्शेन्द्रिय का अर्थ णो० वोइन्द्रिय(मन)का अर्थ छ० छकारका सं० संसारसे० श्रोत्रेन्द्रिय संवर जा० यावत् फा० स्पर्शेन्द्रिय

सूत्र

या, पोरबीया, खंधबीया, बीयरुहा, समुच्छिमा (१३)॥२॥छट्ठाणाइं सव्वजीवाणं णो सुलभाइं भवंति माणुस्सएभवे, आयरिए खेत्ते जम्मं, सुकुले पच्चायाती, केवलीपन्नत्तस्स धम्मस्ससवणया सुयस्सवा सद्दहणया सद्दहियस्सवा पत्तियस्सवा, रोइयस्सवा, सम्मं काएणं फासणया (१४) छइंदियत्था प० तं० सोइंदियत्थे जाव फासिंदियत्थे, णोइंदियत्थे (१५) छव्विहे संवरे प० तं० सोइंदियसंवरे जाव फासिंदियसंवरे णोइंदियसंवरे (१६) छव्विहे असंवरे प० तं० सोइंदियअसंवरे जाव फासिंदिय

भावार्थ

तृण वनस्पतिकाय अग्रबीज; मूलबीज, स्कंधबीज, बीजरूह और समूर्च्छिम ॥ २ ॥ सबजीवों को छ स्थानककी प्राप्तिहोनी सुलभ नहीं है १ मनुष्यभव २ आर्यक्षेत्र में जन्म, ३ उत्तमकुल में उत्पन्न होना ४ केवली प्ररूपित धर्मसुनना ५ उसकी श्रद्धा, प्रतीति व रुचि करना और ६ श्रद्धा प्रतीति व रुचि

शब्दार्थ

नो० मनसंवर छ० छप्रकार का अ० असंवर प० प्ररूपा सो० श्रोतेन्द्रिय असंवर जा० यावत् फा०स्पर्शेन्द्रिय नो० मनअसंवर छ० छप्रकार की सा० साता सो० श्रोतेन्द्रिय साता जा० यावत् नो० मनसाता छ०प्रकार की अ०असाता सो०श्रोतेन्द्रिय असाता जा०यावत् नो०मनअसाता ॥३॥ छ०छप्रकार का पा० प्रायश्चित्त आ० आलोचना प० प्रतिक्रमण उ० आलोचना प्रतिक्रमण वि० विवेक वि० कायोत्सर्ग त० तप

सूत्र

असंवरे, णोइंदिय असंवरे (१७) छव्विहे साए प० तं० सोइंदियसाए जाव नोइंदियसाए (१८) छव्विहे असाए प० तं० सोइंदियअसाए, जाव नोइंदियअसाए (१९) ॥ ३ ॥ छव्विहे पायच्छित्ते प० तं० आलोयणारिहे, पडिक्कमणारिहे, तदुभयारिहे विवेगारिहे, विउस्सग्गारिहे, तवारिहे. छव्विहा मणुस्सा प० तं० जंबूदीवगा

भावार्थ

कर के सम्यक् प्रकार से काया से अंगीकार करना। इन्द्रियों के छ विषय कहे हैं श्रोतेन्द्रिय का विषय, चक्षुइन्द्रिय का विषय, घ्राणेन्द्रिय का विषय, रसेन्द्रिय का विषय स्पर्शेन्द्रिय का विषय और णोइन्द्रिय का विषय, ऐसेही छ इन्द्रियों को संयम में रखने से छ प्रकार का संवर कहा है और संयम में नहीं रखने से उक्त छ प्रकार का असंवर गिनाजाता है. उक्त छ प्रकार से छ इन्द्रिय की छ साता व छ असाता कही है ॥ ३ ॥ छ प्रकार के प्रायश्चित्त कहे हैं १ आलोचना योग्य २ प्रतिक्रमण योग्य. ३ दोनों योग्य ४ विवेक योग्य ५ कायोत्सर्ग योग्य और ६ तप योग्य। छ प्रकार के मनुष्य कहे है १ जम्बूद्वीप के

शब्दार्थ

छ० छप्रकार के म० मनुष्य जं० जम्बूद्वीप के धा० धातकी खंडद्वीप के पु० पूर्वार्ध के धा० धातकी खंडद्वीप के प० पश्चिमार्ध के पो० पुष्करार्धद्वीप के पु० पूर्वार्ध के पु० पुष्करार्ध के प० पश्चिमार्ध के अ० अन्तरद्वीपके अ० अथवा छ० छ प्रकारके म० मनुष्य स० संमूर्च्छिम क० कर्मभूमिके अ० अकर्मभूमिके अ० अन्तरद्वीप के ग० गर्भज म० मनुष्य क० कर्मभूमिके अ० अकर्मभूमिके अ० अन्तरद्वीपके छ० छप्रकार के इ० ऋद्धिवन्त म० मनुष्य अ० अरिहंत च० चक्रवर्ती ब० बलदेव वा० वासुदेव चा० चारण वि० विद्याधर छ०

सूत्र

धायइखंडदीवपुरत्थिमद्धगा, धायइखंडदीवपच्चत्थिमद्धगा, पोक्खरवरदीवद्धपुरत्थिमद्धगा, पुक्खरवरदीवद्ध पच्चत्थिमद्धगा, अंतरदीवगा। अहवा छव्विहा मणुस्सा प० तं० संमुच्छिममणुस्सा-कम्मभूमिगा, अकम्मभूमिगा, अंतरदीवगा, गब्भवक्कंतियमणुस्सा कम्मभूमिगा, अकम्मभूमिगा, अंतरदीवगा (२०) छव्विहा इड्ढिमंता मणुस्सा पं० तं० अरहंता, चक्कवट्टी, बलदेवा, वासुदेवा, चारणा, विज्जाधरा (२१) छाव्विहा अ-

भावार्थ

२ धातकी खंडके पूर्वार्ध भाग के ३ धातकी खंड के पश्चिमार्ध भाग के ४ पुष्करार्धद्वीप के पूर्वार्ध के ५ पुष्करार्ध द्वीप के पश्चिमार्ध और ६ अंतरद्वीप के. और भी छ प्रकार के मनुष्य कहे १ संमूर्छिम मनुष्य १ कर्मभूमिके, २ अकर्मभूमि के ३ अंतरद्वीप के ४ कर्म भूमि के गर्भज मनुष्य ५ अकर्म भूमि के गर्भज मनुष्य और ६ अंतरद्वीप के गर्भज मनुष्य। छ प्रकार के ऋद्धिवंत मनुष्य कहे १ अरिहंत

शब्दार्थ

छप्रकार के अ० ऋद्धिरहित म० मनुष्य हे० हेमवन्त के ए० एरण्यवन्त के ह० हरिवर्ष के र० रम्यकवर्ष के कु० कुरुवर्ष के अ० अन्तरद्वीप के छ० छप्रकार की उ० अवसर्पिणी सु० सुषम सुषम जा० यावत् दु० दुषम दुषम छ० छप्रकार की ओ० उत्सर्पिणी दु० दुषम दुषम जा० यावत् सु० सुषम सुषम जं० जंबूद्वीप के भ० भरत ए० एरवत ती० अतीत उ० उत्सर्पिणी में सु० सुषम सुषम स० काल में म० मनुष्य छ० छ ध० धनुष्य की स० सहस्र उ० ऊंचे उ० ऊंचपने हो० थे छ० छकेअर्ध प० पल्योपम प० उत्कृष्ट

सूत्र

णिद्धिमंता मणुस्सा प० तं० हेमवंतगा, एरण्णवंतगा, हरिवंसगा, रम्मगवंसगा, कुरुवासिणो, अंतरदीवगा (२२) छव्विहा उसप्पिणी प० तं० सुसमसुसमा, जाव दुसमदुसमा (२३) छव्विहा ओसप्पिणी प० तं० दुसमदुसमा जाव सुसमसुसमा (२४) जंबूदीवे दीवे भरहेरवएसु वासेसु तीताए उसप्पिणीए, सुसमसुसमाए समाए मणुया छधणुसहस्साइं उड्ढमुच्चत्तेणं हेात्था, छच्च अद्धपलिओवमाइं परमाउं

भावार्थ

२ चक्रवर्ती ३ बलदेव ४ वासुदेव ५ चारण और ६ विद्याधर। छ प्रकार के ऋद्धि रहित मनुष्य कहे हेमवंत के, एरण्यवन्त के, हरिवास के, रम्यकवास के, कुरु (देवकुरु उत्तर कुरु) के और अंतर द्वीप के। छ प्रकार की उत्सर्पिणि सुषम सुषमा, सुषमा, सुषम दुषमा, दुषम सुषमा, दुषमा और दुषम दुषमा. इससे उलटी छ प्रकार की अवसार्पिणी कही, दुषम दुषमा यावत् सुषम सुषमा. जम्बूद्वीप में भरत

शब्दार्थ

आ० आयुष्य पा० पूर्णकर जं० जंबूद्वीप के भ० भरत एरवत की इ० इस उ० अवसर्पिणी में सु० सुषम सुषम स० काल में ए० ऐसे जं० जंबूद्वीप के भ० भरत एरवत की आ० आगामिक ओ० उत्सर्पिणी में सु० सुषम सुषम में ऐ० ऐसे जं० जंबूद्वीप के दे० देवकुरु उ० उत्तरकुरु के म० मनुष्य छ० छ ध० धनुष्य स० सहस्र उ० ऊंचे उ० ऊंचपने छ० छके अर्ध प० पल्योपम प० उत्कृष्ट आ० आयुष्य पा० पालते हैं ए० ऐसे धा० धातकीखंडद्वीप के पु० पूर्व में च० चार आ० आलापक जा० यावत् पु०

सूत्र

पालइत्ता (२५) जंबूदीवेदीवे भरहेरवएसु वासेसु इमीसे उसप्पिणीए सुसमसुसमाए समाए एवंचेव (२६) जंबूभरहेरवए आगमिस्साए ओसप्पिणीए सुसमसुसमाए एवंचेव, जाव छच्च अद्धपलिओवमाइं परमाउं पालइस्संति (२७) जंबूदीवेदीवे देवकुरुउत्तरकुरासु मणुया छधणुसहस्साइं उद्धमुच्चत्तेणं प० छच्च अद्धपलिओवमाइं परमाउं पालयंति (२८) एवं धायइखंडदीव पुरत्थिमद्धे चत्तारि आलावगा ।

भावार्थ

एरवत क्षेत्र में अतीत उत्सर्पणी के सुषम सुषम समय में मनुष्य की छ हजार धनुष्य की अवगाहना थी और छ अर्धापल्योपम अर्थात् तीन पल्योपम की स्थिति थी. वैसेही वर्तमान अवसर्पिणी में है, और अनागत में होगा । जम्बूद्वीप में देवकुरु उत्तरकुरु में मनुष्य की छ हजार धनुष्य की अवगाहना और छ अर्धापल्योपम की स्थिति कही. ऐसेही धातकी व पुष्करार्ध द्वीपके पूर्व पश्चिम के मीलकर चार २ आलापक

शब्दार्थ

पुष्करार्ध के प० पश्चिमार्ध में च० चार आ० आलापक ॥४॥ छ० छप्रकार के सं० संघयन व० वज्रऋषभ नाराच उ० ऋषभनाराच ना० नाराच अ० अर्धनाराच की० कीलिका छे० छेवट छ० छप्रकार का सं० संठान स० समचतुस्र नि० न्यग्रोध परिमंडल सा० सादि खु० कुब्ज वा० वामन हुं० हुंड छ० छ सं० संस्थान अ० आत्मस्वभाव रहित को अ० अहित अ० अशुभ जा० यावत् अ० अनागामी

सूत्र

जाव पुक्खरवरदीवड्ढ पच्चत्थिमद्धे चत्तारि आलावगा (२९) ॥ ४ ॥

छव्विहे संघयणे प० तं० वइरोसभणारायसंघयणे, उसभनारायसंघयणे, नारायसंघयणे, अद्धणारायसंघयणे, कीलियासंघयणे, छेवट्टसंघयणे (३०) छव्विहे संठाणे प० तं० समचउरंसे, णिग्गोहपरिमंडले, साई, खुज्जे, वामणे, हुंडे (३१) छट्ठाणा

भावार्थ

जानना ॥ ४ ॥ छ संघयन कहे हैं १ वज्र ऋषभ नाराच संघयण १ ऋषभ नाराच संघयण ३ नाराच संघयण ४ अर्ध नाराच संघयण ५ कीलिका संघयण और ६ छेवट संघयण. छ संस्थान कहे १ समचौरस संस्थान २ न्यग्रोध परिमंडल संस्थान ३ सादि, ४ कुब्ज ५ वामन और ६ हुड. अनात्मवंत (कषाय सहित पुरुष) को छस्थानक अहित करनेवाले, अशुभ, अक्षेम, अनिश्रेय यावत् अनानुगामी होते हैं १ दीक्षा या जन्म का अभिमानकरे २ शिष्यादिपरिवारका अभिमान करे ३ सूत्रज्ञानका अभिमान करे ४ तपश्चर्या का अभिमान करे ५ लाभका मान करे और ६ पूजा सत्कार का मानकरे. आत्मस्वभावमें

शब्दार्थ

वाले भ० हैं प० पर्याय प० परिवार सु० सूत्र त० तप ला० लाभ पू० पूजासत्कार छ० छस्थान अ० आत्मस्वभाव वालेको हि० हित जा० यावत् अ० संसार का अंतकरने वाला भ० हैं प० पर्याय प० परिवार जा० यावत् पू० पूजासत्कार छ० छप्रकार के जा० जातिआर्य म० मनुष्य अं० अंबष्ट क० कलिंद वे० विदेह वे० विदेहगा ह० हरिता चुं० चुंचुणा छ० छह ए० यह इ० इभ्य जाति के छ० छप्रकार के कु० कुलआर्य म० मनुष्य उ० उग्र भो० भोग रा० राज इ० इक्ष्वाकु

सूत्र

अणत्तवतो अहियाए असुभाए जाव अणाणुगामियत्ताए भवंति तं० परियाए, परियाले, सुए, तवे, लाभे, पूयासक्कारे (३२) छट्ठाणा अत्तवतो हियाए जाव अणुगामियत्ताए भवंति, तं० परियाए, परियाले जाव पूयासक्कारे (३३) छव्विहा जाइ अरियामणुस्सा प० तं० अंबट्ठाय, कलंदाय, वेदेहा वेदिगाइया, हरिया, चुंचुणाचेव, छप्पेयाइब्भ जाइओ (३४) छव्विहा कुलारिया मणुस्सा प० तं० उग्गा, भोगा,

भावार्थ

रमण करनेवालेको छ स्थानक हित, शुभ, क्षेम यावत् अनुगामी होते हैं:-दीक्षा, परिवार, सूत्र, तप, लाभ व पूजासत्कार का अभिमान नहीं करना. छ प्रकारसे जाति आर्य मनुष्य कहे हैं १ अंबष्ट २ कलिंद ३ विदेह ४ विदेहगा ५ हरिता ६ और चुंचुणा (ये छह इभ्यजातिकी स्त्री के पुत्र है) छ प्रकार

१ जाति आर्य मातृपक्षसे गिनागया है २ कुल पितृपक्ष में गिना जाता है.

शब्दार्थ

णा० ज्ञात को० कौरव छ० छप्रकार की लो० लोकस्थिति आ० आकाश प० प्रतिष्ठित वा० वायु वा० वायु प० प्रतिष्ठित उ० उदधि उ० उदधि प० प्रतिष्ठित पु० पृथ्वी पु० पृथ्वी प० प्रतिष्ठित त० त्रसस्थावर प्राणी अ० अजीव जी० जीव प० प्रतिष्ठित जी० जीव क० कर्म प० प्रतिष्ठित छ० छदिशा प० प्ररूपी पा० पूर्व प० पश्चिम दा० दक्षिण उ० उत्तर उ० ऊर्ध्व अ० अधो छ० छदिशा जी० जीव को ग० गति प० प्रवर्तिक पा० पूर्व जा० यावत् अ० अधो ए० ऐसे आ० आगति व० व्यतिक्रान्ति अ० आहार वु० वृद्धि नि० हानि

सूत्र

राइन्ना, इक्खागा, णाया, कोरवा (३५) छव्विहा लोगट्ठिई प० तं० आगासपइट्ठिए वाए, वायपइट्ठिएउदही, उदहिपइट्ठिया पुढवी, पुढविपइट्ठिया तसा थावरा पाणा, अजीवाजिवपइट्ठिया, जीवाकम्मपइट्ठिया, (३६) छदिसाओ पण्णत्ताओ तं० पाईणा, पडीणा, दाहिणा, उईणा उड्ढा, अहा (३७) छहिं दिसाहिं जीवाणं गई पवत्तइ तं० पाईणाए जाव अहाए । एव मागई, वक्कंती, आहारे, वुड्ढी, निवुड्ढी, विगुव्वणा,

भावार्थ

से कुल आर्य कहे हैं १ उग्रकुल, २ भोगकुल ३ राज्यकुल ४ इक्ष्वाकुकुल ५ ज्ञात कुल ६ कौरव कुल. छ प्रकार की लोक स्थिति कही १ आकाश प्रतिष्ठित वायु २ वायु प्रतिष्ठित उदधि, ३ उदधि प्रतिष्ठित पृथ्वी ४ पृथ्वी प्रतिष्ठित त्रस स्थावर प्राणी रहे हैं ५ जीव के आधार से अजीव और ६ कर्म प्रतिष्ठित जीव रहाहुवा है. छ दिशा कहीः—पूर्व, पश्चिम, दक्षिण, उत्तर, ऊंची और नीची. उक्त छ दिशाओ में

शब्दार्थ वि० विकुर्वणा ग० गतिपर्याय स० समुद्घात का० कालसंयोग दं० दर्शनाभिगम णा० ज्ञानाभिगम जी० जीवाभिगम ए० ऐसे पं० पंचेन्द्रिय ति० तिर्यंच जो० योनिवाले को म० मनुष्य को ॥ ५ ॥ छ० छकारन से स० श्रमण नि० निर्ग्रंथ आ० आहार आ० करता णा० उल्लंघन करे नहीं वे० वेदना वे० वैयावृत्य इ० ईर्यासमितिकेलिये सं० संयमकेलिये त० प्राणरखने केलिये छ० छ ध० धर्म

सूत्र

गइपरियाए, समुग्घाए, कालसंजोगे, दंसणाभिगमे, णाणाभिगमे, जीवाभिगमे, अजीवाभिगमे, एवं पंचेंदिय तिरिक्खजोणियाणवि मणुस्साणवि (३८) ॥ ५ ॥ छहिं ठाणेहिं समणे निग्गंथे आहार माहारेमाणे णाइक्कमइ तं० वेयणवेयावच्चे, इरियट्ठाए, य संजमट्ठाए; तहपाणवत्तियाए, छट्ठंपुणधम्मचिंताए। छहिं ठाणेहिं समणे निग्गंथे आहारं

भावार्थ जीव गमन करता है. ऐसेही उक्त छ दिशाओ में जीवका आना, उत्पन्न होना, आहार लेना, वृद्धिपाना, हीन होना, विकुर्वणा करना, गतिपर्याय, समुद्घात, कालसंयोग, दर्शनाभिगम, ज्ञानाभिगम, जीवाभिगम, अजीवाभिगम होता है. वैसेही तिर्यंच पंचेन्द्रिय को जानना ॥ ५ ॥ छ कारन से साधु निर्ग्रन्थ आहार करता हुआ जिनाज्ञा उल्लंघे नहीं १ क्षुधावेदनीयकी शांति करनेको २ वैयावृत्य करने को ३ ईर्यासमिति पालने को ४ संयम पालने को ५ प्राणरक्षण के लिये और ६ धर्मचिन्तवन के लिये । छ कारण से साधु आहार त्यजता हुआ जिनाज्ञा उल्लंघे नहीं १ रोग उत्पन्न होने से २ उपसर्ग प्राप्त होने से ३ ब्रह्मचर्य की गुप्ति के लिये

शब्दार्थ

चिंतवना केलिये छ० छकारन से स० श्रमण नि० निर्ग्रंथ आ० आहार को वो० छोडता उ० उल्लंघनकरे नहीं आ०रोग से उ०उपसर्ग से ति० सहनशीलता बं० ब्रह्मचर्य केलिये पा० प्राणदया त० तपकेलिये स० शरीर वो० छोडने को छ० छ कारन से आ० आत्मा उ० उन्माद पा० पावे अ० अरिहंत के अ० अवर्ण वाद व० बोलता अ० अरिहंत प० प्ररूपा ध० धर्म का अ० अवर्णवाद व० बोलता आ० आचार्य उ०

सूत्र

वोच्छिंदमाणे णाइक्कमइ तं० आतंके, उवसग्गे, तितिक्खणे बंभचेरगुत्तीए; पाणदया तवहेउं,सरीरवोच्छेयणट्ठाए। छहिं ठाणेहिं आया उम्मायं पाउणेज्जा तं०अरहंताणमवण्णंवदमाणे, अरहंतपण्णत्तस्स धम्मस्स अवण्णं वदमाणे, आयरियउवज्झायाणमवन्नं वदमाणे, चाउवन्नस्ससंघस्सय अवन्नं वदमाणे, जक्खावेसेणचेव मोहणिज्जस्स कम्मस्स उदएणं छव्विहे पमाए प० तं० मज्जपमाए, णिद्दापमाए विसयपमाए, कसायपमाए, जूयपमाए,

भावार्थ

४ जीव दया निमित्त से ५ तप करनेसे और ६ शरीर छोडनेसे (अनशन करनेसे) छ कारण से जीव उन्माद (मिथ्यात्व) पाता है १ अरिहंत के अवर्णवादबोलते २ अरिहंत प्ररूपित धर्मका अवर्णवाद बोलते ३ आचार्य उपाध्याय के अवर्णवाद बोलते, ४ चतुर्विध संघके अवर्णवाद बोलते ५ यक्षादिकके आवेशसे और ६ मोहनीय कर्मके उदयसे। छ प्रकार के प्रमादकहे १ मद्यप्रमाद २ निद्राप्रमाद ३ विषयप्रमाद ४ कषाय प्रमाद ५ जुवाखेलनेका प्रमाद और ६ प्रत्युप्रेक्षण प्रमाद (आहारादिक की गवेषणा करे नहीं)

शब्दार्थ उपाध्याय के अ० अवर्णवाद व० बोलता चा० चतुर्विधसंघ के अ० अवर्णवाद व० बोलता ज० यक्षके अ० आवेश से मो० मोहनीय क० कर्म के उ० उदय से छ० छ प० प्रमाद म० मद्य णि० निद्रा वि० विषय क० कषाय जु० द्युत प० प्रत्युपेक्षणा छ० छप्रकार की प० प्रमाद प्रतिलेखना आ० आरभट सं० संमर्दना व० वर्जना मो० मोसली प० प्रस्फोट वि० व्याक्षिप्ता वे० वेदिका छ० छप्रकार की अ० अप्रमाद प० प्रतिलेखा अ० वस्त्रादि नचावे नहीं अ० शरीर नचावे नहीं अ० विशेष झटके नहीं मो० विनादेखे वस्त्ररखे नहीं छ० छपुरिमा व खोडा पा० प्राणी पा० पानी में वि० शोधना छ० छ ले० लेश्या

सूत्र पडिलेहणापमाए, छव्विहा पमायपडिलेहा, प० तं० आरभडासम्मद्दा, वज्जेयव्वायमोसलीतइया, पप्फोडणी चउत्थी, विक्खित्ता, वेइयाछट्ठा। छव्विहा अप्पमाय पडिलेहा प० तं० अणच्चावियं अचलितं, अणाणुबंधी ममोसलिंचेव; छप्पुरिमाणवखोडा, पाणी

भावार्थ छ प्रकार की प्रमाद प्रतिलेखना कही १ आरभट जल्दी २ वस्त्रादि प्रतिलेखे २ संमर्दना परस्पर वस्त्र-लगावे ३ मोसली तिर्च्छा या गूढवस्त्ररखे ४ प्रस्पोटनी वस्त्र झटकना ५ व्याक्षिप्त ऊंचा नीचा डाले और ६ वेदिका घुटनेपर हाथ रखे। छप्रकारकी अप्रमाद प्रतिलेखना १ वस्त्रादि नचावे नहीं २ शरीर नचावे नहीं ३ विशेषझटके नहीं ४ विनादेखे वस्त्र रखे नहीं ५ प्रत्येक वस्त्र तीनविभागसे अलग २ देखे, पूंजे, और उसी वस्त्रके इसी तरफ के तीन विभाग से अलग २ देखे व पूंजे यह ६ पूरीमा. और पहिले किये हुवे तीन

शब्दार्थ

क० कृष्ण जा० यावत् सु० शुक्ल पं० पंचेंदिय ति० तिर्यंचयोनिवालेको छ० छलेश्या क० कृष्ण जा० यावत् सु० शुक्ल ए० ऐसे म० मनुष्यकों दे० देवताको ॥ ६ ॥ स० शक्र दे० देवेन्द्र दे० देवराजा के सो० सोम म० महाराजाको छ० छ अ० अग्रमहिषी प० प्ररूपी स० शक्र दे० देवेन्द्र दे० देवराजाके ज० यम म० महाराजाको छ० छ अ० अग्रमहिषी प० प्ररूपी ई० ईशान दे० देवेन्द्रकी म० मध्यम प० प-

सूत्र

पाणविसोहणी । छलेस्साओ प०तं०कण्हलेस्सा, जाव सुक्कलेस्सा। पंचेंदियातिरिक्ख जोणियाणं छलेस्साओ प०तं० कण्हलेस्सा जाव सुक्कलेस्सा, एवंमणुस्सदेवाणवि ॥ ६ ॥ सक्करसणं देविंदस्स देवरन्नो सोमस्स महारण्णो छअग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ, (४६) सक्करसणं देविंदस्स देवरन्नो जमस्स महारन्नो छअग्गमहिसीओ प० (४७) ईसाणस्सणं देविंदस्स मज्झिम परिसाए देवाणं छपलिओवमाइं ठिई प० (४८)

भावार्थ

विभाग को ऊपर नीचे और बीचमें यों तीनों विभागों को अलग २ देखे व पूंजे यह नवपखोडे हुए और ६ कुंथु प्रमुख जंतु हस्तमें लेकर देखना. छ लेश्याओं कहीं कृष्णनील, कापुत, तेज्यु, पद्म और शुक्ल. उक्त छ लेश्याओं तिर्यंचपंचेन्द्रिय, मनुष्य व देवता को होती हैं. ॥ ६ ॥ शक्रेन्द्र देवता के पूर्व दिशाके लोकपाल सोमनामक महाराजा को छ अग्रमहिषियाँ कहीं और दाक्षिण दिशाके लोकपालको भी छ अग्रगाहिषियाँ कहीं. ईशान देवेन्द्र के मध्यम परिषदा के देवताओं की छ पल्योपमकी

शब्दार्थ

रिषदा के दे० देवकी छ० छ पल्योपमकी ठि० स्थिति छ० छ दिशाकुमारी म० बडी रू० रूपा रू० रूपांसा सु० सुरूपा रू० रूपवती रू० रूपकांता रू० रूपप्रभा छ० छविद्युत्कुमारी म० बडी अ० आला स० शक्रा स० सतेरा सो० सौदामिनी इं० इन्द्रा घ० घनविद्युता ध० धरण णा० नागकुमारेन्द्रके णा० नागकुमारराजाको छ० छ अ० अग्रमहिषी भू० भूतानणा० नागकुमारेन्द्र के णा० नागकुमार राजा को छ० छअग्रममिषी ज० जैसे ध० धरणेन्द्र को त० तैसे स० सर्व दा० दक्षिण के जा० यावत् घो० घोष के ज०

सूत्र

छद्दिसाकुमारि महत्तरियाओ पण्णत्ताओ तं० रूवा, रूवंसा, सुरूवा, रूववई, रूअकंता, रूयप्पभा (४९) छविज्जुकुमारि महत्तरियाओ पण्णत्ताओ तं० अला, सक्का, सतेरा, सोयामणा, इंदा, घणाविज्जुया (५०) धरणस्सणं णागकुमारिंदस्स णागकुमाररण्णो छअग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ तं० अला, सक्का, सतेरा, सोदामणा, इंदा, घणविज्जुया (५१) भूयाणंदस्सणं णागकुमारिंदस्स णागकुमाररन्नो छअग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ तं० रूवा, रूवंसा, सुरूवा, रूववई रूवकंता, रूयप्पभा (५२)

भावार्थ

स्थिति कहीं. छदिशा कुमारी कहीं १ रूपा, २ रूपांसा ३ सुरूपा ४ रूपवती ५ रूपकांता और ६ रूपप्रभा. छ विद्युत् कुमारी कहीं १ आला २ शक्रा ३ सतेरा ४ सौदामिनी ५ इन्द्रा और ६ घनविद्युता. धरणेन्द्र के नागकुमार को छ अग्र महिषियों कहीं. आला, शक्रा, सतेरा, सौदामिनी, इन्द्रा और घनविद्युता.

जैसे भू० भूतानेन्द्र के त० तैसे स० सर्व उ० उत्तर के जा० यावत् म० महाघोष के ध० धरणके णा० नागकुमार के णा० नागकुमार राजा को छ० छ सा० सामानिक स० सहस्र ए० ऐसे भू० भूतानेन्द्र को जा० यावत् म० महाघोष को ॥ ७ ॥ छ० छप्रकार की ओ० अग्रहमति खि० शीघ्र गि० ग्रहणकरे ब० विलम्ब से गि० ग्रहणकरे ब० बहूतरीति से गि० ग्रहणकरे धु० ध्रुव गि० ग्रहणकरे अ० अनुमान से

सूत्र

जहा धरणस्स तहा सव्वेसिं दाहिणिल्लाणं जाव घोसस्स (५३) जहा भूयाणंदस्स तहा सव्वेसिं उत्तरिल्लाणं जाव महाघोसस्स (५४) धरणस्सणं णागकुमारिन्दस्स णागकुमाररन्नो छसामाणियसाहस्सीओ पण्णत्ताओ ॥ एवं भूयाणंदस्सवि जाव महाघोसस्स (५५)॥७॥ छव्विहा ओग्गहमई प० तं० खिप्पमोगिण्हइ, बहुमोगिण्हइ बहुविधमोगिण्हइ, धुवमोगिण्हइ, अणिस्सियमोगिण्हइ, असंदिद्धमोगिण्हइ, (५६) छव्विहा ईहामई प०

भावार्थ

भूतानेन्द्रके नाग कुमारको छ अग्रमहिषियों कहीं रूपा, रूपांसा, सुरूपा, रूपकांती, रूपकांता और रूपप्रभा. ऐसेही धरणेन्द्रसमान सब दक्षिण दिशा के इन्द्रो को छ अग्रमहिषियों और भूतानेन्द्र समान सब उत्तर दिशाके इन्द्रोको छ अग्रमहिषियों जानना. नागकुमार राजाके धरणेन्द्रको छ हजार सामानिक देवता जानना. और ऐसेही भूतानेन्द्र से लेकर महाघोष तक सब को छ २ हजार सामानिक जानना ॥ ७ ॥ अवग्रह मतिके छ भेद १ शीघ्रतासे अर्थ ग्रहण करे २ बहुत समय पीछे अर्थ ग्रहण करे ३ बहुत प्रकार

शब्दार्थ से गि० ग्रहणकरे अ० संदेह रहित गि० ग्रहणकरे छ० छप्रकार की ई०ईहामति खि० शीघ्र इ० विचारकरे ब०बहुतवार जा० यावत् अ० संदेह रहित इ० विचारकरे छ० छप्रकार की अ० अवायमति खि० शीघ्र अ० निश्चय करना जा० यावत् अ० संदेह रहित छ० छप्रकार की धा० धारना ब० बहुत धा० धारनकरे ब० बहुत प्रकार से धा० धारनकरे पो० पुरानीबात धा० धारनकरे दु० दुर्धर धा० धारनकरे अ० अनिश्रित धा० धारनकरे अ० संदेह रहित धा०

सूत्र तं० खिप्पमीहइ, बहुमीहइ, जाव असंदिद्धमीहइ, (५७) छव्विहा अवायमई प० तं० खिप्पमवेइ जाव असंदिद्धं अवेइ (५८) छव्विहा धारणा प० तं० बहुधारेइ, बहुविहं धारेइ, पोराणंधारेइ, दुद्धरं धारेइ, अणिस्सियं धारेइ, असंदिद्धंधारेइ (५९) छव्विहे बाहिरए तवे प० तं० अणसणं, ओमोयरिया, भिक्खायरिया, रसपरिच्चाए,

भावार्थ से अर्थ ग्रहण करे ४ सदैव अर्थ ग्रहण करे ५ चिन्हके अनुमान से ग्रहण करे और ६ संदेह रहित ग्रहण करे. जो विषय इन्द्रियोंने ग्रहण किया उसका विचार करे सो ईहा. इसके छ भेद अवग्रह जैसे जानना. विचारके निश्चय करना उसे अवाय कहते हैं. इसके भी छ भेद उपर्युक्त कथनानुसार जानना. और निश्चित की हुइ बात को बहुत काल तक याद रखना उसे धारना कहते हैं. इसके छ भेद १ शीघ्र धारन करे २ बहुत प्रकार से धारण करे ३ पुरानी बात धारन करे ४ दुर्धर धारण करे ५ अनिश्रित धारन करे और ६ संदेह रहित धारन करे. छ प्रकार के बाह्यतप कहे हैं १ अनशन, २ अवमोदर्य ३

शब्दार्थ

धारनकरे छ० छप्रकार का बा० बाह्यतप अ० अनशन आ० ऊनोदरी भि० भिक्षाचर्य र० रसपरित्याग का० कायक्लेश प० प्रतिसंलीनता छ० छप्रकार का अ० आभ्यन्तरतप पा० प्रायश्चित्त वि० विनय वे० वयावृत्य स० सज्झाय झा० ध्यान वि० कायोत्सर्ग छ० छप्रकार का वि० विवाद ओ० सरककर उ० उत्सुक बनकर अ० अनुकुल होकर प० प्रतिकुल होकर भ० सेवाकर भे० मीलकर ॥ ८ ॥ छ० छप्रकार

सूत्र

कायकिलसो, पडिसंलीणया (६०) छव्विहे अब्भंतारिए तवे प० तं० पायाच्छित्तं, विणओ, वेयावच्चं, सज्झाओ, झाणं, विउस्सग्गो (६१) छव्विहे विवादे प० तं० ओसक्कइत्ता, उस्सक्कइत्ता, अणुलोमइत्ता, पडिलोमइत्ता, भइत्ता, भेलइत्ता (६२) ॥ ८ ॥ छव्विहा खुद्दापाणा प० तं० बेंदिया, तेंदिया, चउरिंदिया, समुच्छिम पंचिं-

भावार्थ

भिक्षाचर्य ४ रसपरित्याग ५ कायक्लेश ६ प्रतिसंलीनता । आभ्यंतर तपके छ भेद कहे हैं:-प्रायश्चित्त, विनय, वैय्यावृत्य, स्वाध्याय, ध्यान, और कायोत्सर्ग । छ प्रकार के विवाद कहे हैं १ अवसर देखकर एक वार पाछा हट और फीर विवाद करे २ उत्सुक बनकर विवाद करे ३ प्रतिपक्षीका वचन पकडकर विवाद करे ४ प्रतिकूल वचन से विवाद करे ५ एक वक्त सेवा कर विवाद करे और ६ प्रतिपक्षियों में मीलकर विवाद करे ॥ ८ ॥ क्षुद्रप्राणी के छ भेद कहे हैं द्विइन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरेन्द्रिय, संमूर्च्छिम तीर्यंच

शब्दार्थ

के खु० क्षुद्रप्राणी बें० बेइन्द्रिय तें० तेइन्द्रिय च० चौरेन्द्रिय स० समूर्च्छिम पं० पंचेन्द्रिय ति० तिर्यंच योनिवाले ते० तेऊकाय वा० वायु काय छ० छप्रकार की गो० गौचरी पे० पेडा अ० अर्धपेडा गो० गौमूत्राकार प० पतंग के मार्ग जैसे सं० शंखावर्त की जैसे गं० जाकर प० पीछा आना जं० जंबूद्वीप के मं० मेरुपर्वत की दा० दक्षिण में इ० इस र० रत्नप्रभा पु० पृथ्वी में छ० छअकमनीय म० महानरक लो० लोल लो० लोलुक उ० उदिष्ट नि० निर्दिष्ट ज० जरक प० प्रजरक च० चौथी पं० पंकप्रभा पु० पृथ्वी

सूत्र

दिय तिरिक्खजोणिया, तेउकाइया, वाउकाइया (६३) छव्विहा गोयरचरिया प० तं० पेडा, अद्धपेडा, गोमुत्तिया, पतंगवीहिया संबुक्कवट्टा, गंतुपच्चागया [६४] जंबुद्दीवे-दीवे मंदरस्स पव्वयस्स दाहिणेण मिमीसे रयणप्पभाए पुढवीए छ अवक्कंत महा-निरया प० तं० लोले, लोलुए, उद्दड्ढे, निद्दड्ढे जरए, पजरए (६५) चउत्थीएणं पंकप्प-भाए पुढवीए छ अवक्कंत महानिरया प० तं० आरे, वारे, मारे, रोरे, रोरुए, खाड-

भावार्थ

पंचेन्द्रिय, तेऊकाय और वायुकाय. साधु छ प्रकार से गोचरी करते हैं १ पेटीके आकार से चार कोनेके चार घर स्पर्शे २ अर्धपेटीके आकार से दो कोनेके दो घर स्पर्शे ३ गोमुत्राकार एक इधरका और एक उधरका ४ पतंग की तरह छुटकर घरकी गोचरी ५ शंखके आवर्त समान एक घर उपरका और एक नीचेका और ६ उपाश्रय से नीकलता हुवाही गोचरी करता जावे अथवा पीछे आता गोचरी करता

शब्दार्थ

छ० छ अ० अकमनीय म० महानरक आ० आर वा० वार मा० मार रो० रोर रो० रोरुय खा० खाडखड बं० ब्रह्मदेवलोक में छ० छ वि० विमान पाथडा अ० अरत वि०विरत नी०नीरत नि० निर्मल वि० वितिमिर वि० विशुद्ध चं० चंद्र जो० ज्योतिष इन्द्र के जो० ज्योतिष राजा के छ० छनक्षत्र पु० पूर्व में स० समक्षेत्र ती० त्रीसमुहूर्त के पु० पूर्वाभाद्रपद क० कृत्तिका म० मघा पु० पूर्वाफाल्गुनी मू० मूल पु० पूर्वाषाढा चं० चंद्र ज्योतिइन्द्र के जो० ज्योतिष राजा को छ० छनक्षत्र ण० नक्तभाग अ० अर्धक्षेत्र प०

सूत्र

खडे (६६) बंभलोएणं कप्पे छविमाणपत्थडा प० तं० अरए, विरए, नीरए निम्मले, वितिमिरे, विसुद्धे [६७] चंदस्सणं जोइसिंदस्स जोइसरन्नो छणक्खत्ता पुव्वंभागा समक्खेत्ता तीसइमुहुत्ता प० तं० पुव्वाभद्दवया, कत्तिया, महा, पुव्वाफग्गुणी, मूलो, पुव्वासाढा (६८) चंदस्सणं जोइसिंदस्स जोइसरन्नो छणक्खत्ता णत्तंभागा

भावार्थ

आवे. जम्बूद्वीप के मेरु पर्वत की दक्षिण में रत्नप्रभा पृथ्वी में अकमनीय (बहुत खराब) छ नरक कहे. १ लोल २ लोलुक, ३ उद्दिष्ट ४ निर्दिष्ट, ५ जरक और ६ प्रजरक. चतुर्थ पंकप्रभा पृथ्वी में छ अवक्रांत नरक कहे १ आर, २ वार, ३ मार, ४ रोर, ५ रोरुय, ६ खाडखड. छट्ठा ब्रह्म देवलोक में छ विमान के पाथडे कहे है १ अरत, २ विरत, ३ नीरत, ४ निर्मल, ५ वितिमिर और ६ विशुद्ध. ज्योतिष के इन्द्र चंद्रमा को पूर्वभाग में तीसमुहूर्त के छ नक्षत्र समक्षेत्र वाले कहे हैं १ पूर्वाभाद्रपद,

शब्दार्थ

पंदरह मुहूर्त के स० शतभिषा भ० भरणी अ० आर्द्रा अ० अश्लेषा सा० स्वाति जे० ज्येष्ठा चं० चंद्र जो० ज्योतिषइन्द्र के जो० ज्योतिष राजा के छ० छनक्षत्र उ०उभयभाग दि० दिनका अर्धक्षेत्र प० पैंतालीस मुहूर्त के रो० रोहिणी पु० पुनर्वसु उ० उत्तरा फाल्गुणी वि० विशाखा उ० उत्तराषाढा उ० उत्तराभाद्र पद ॥ ९ ॥ अ० अभिचंद्र कु० कुलकर छ० छ ध० धनुष्य स० सो उ० ऊंचे उ० ऊंचपने हो० थे भ० भरत रा० राजा चा० चातुरंत च० चक्रवर्ती छ० छ पु० पूर्व स० लाख म० महाराज हो० थे पा०

सूत्र

अवड्ढक्खेत्ता पन्नरसमुहुत्ता प० तं० सयभिसया, भरणी, अद्दा, अस्सेसा, साई, जेट्ठा (६९) चंदस्सणं जोइसिंदस्स जोइसरन्नो छणक्खत्ता उभयंभागा दिवड्ढक्खेत्ता पणयालीसमुहुत्ता प० तं० रोहिणी, पुणव्वसू, उत्तराफग्गुणी, विसाहा, उत्तरासाढा, उत्तराभद्दवया (७०) ॥ ९ ॥ अभिचंदेणं कुलकरे छधणुसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था (७७) भरहेणं राया चाउरंत चक्कवट्टी छपुव्वसयसहस्साइं महाराया होत्था

भावार्थ

२ कृत्तिका ३ मघा ४ पूर्वाफाल्गुनी ५ मूल और ६ पूर्वाषाढा. ज्योतिषके इन्द्र चंद्रमाको छ नक्षत्र समयोग के अर्धक्षेत्रवाले पंदरह मुहूर्त के कहे हैं. १ शतभिषा २ भरणी ३ आर्द्रा ४ अश्लेषा ५ स्वाति और ६ ज्येष्ठा. ज्योतिष के इन्द्र चन्द्र को छ नक्षत्र उभयभाग के पैंतालीस मुहूर्त के कहे हैं १ रोहिणी २ पुनर्वसु ३ उत्तराफाल्गुणी ४ विशाखा ५ उत्तराषाढा और ६ उत्तराभाद्रपद ॥ ९ ॥ अभिचंद्र नामक

शब्दार्थ

पार्श्वनाथ अ० अरिहंत पु० पुरुषादाणी छ० छसो वा० वादीकी स० देवसहित म० मनुष्य अ० असुर की प० परिषदा में अ० अपराजित सं० संपदा हो० थी वा० वासुपुज्य अ० अरिहंत छ० छ पु० पुरुष स० शत स० साथ मुं० मुंड जा० यावत् प० प्रव्रजित हुवे चं० चंद्रप्रभु अ० अरिहंत छ० छद्मास्थ छ० छद्मस्थ हो० थे तें० तेइन्द्रिय जी० जीव अ० असमारंभी छ० छप्रकार का सं० संयम क० करे घा० घ्राणेन्द्रिय के सो० सुख से अ० अलगकरे नहीं घा० घ्राणेन्द्रिय के दु० दुःख से अ० अलग होवे जि० रसेन्द्रिय

सूत्र

(७२) पासस्सणं अरहओ पुरिसादाणीयस्स छस्सया वाईणं सदेवमणुयासुराए परिसाए अपराजियाणं संपया होत्था (७३) वासपुज्जेणं अरहा छहिंपुरिससएहिं सद्धिं मुंडे जाव पव्वइए (७४) चंदप्पभेणं अरहा छम्मासा छउमत्थेहोत्था (७५) तेइंदियाणं जीवा असमारंभमाणस्स छव्विहेसंजमे कज्जइ तं० घाणामयाओ सोक्खाओ-अववरोवेत्ता भवइ, घाणामएणं दुक्खेणं असंयोगेत्ता भवइ, जिब्भामयाओ

भावार्थ

कुलकर की ६०० धनुष्य की अवगाहनाथी. प्रथम चक्रवर्ती भरत राजाने छ लक्षपूर्व तक राज्य भोगवा. श्री पुरुषादाणी पार्श्वनाथ तीर्थंकर को ६०० वादीथे. जिनको देव मनुष्य व असुरादि परिषदा में कोई नहीं जीत सकतेथे. बारहवे तीर्थंकर श्री वासुपूज्य ६०० पुरुष की साथ दीक्षा धारन कर प्रव्रजित हुवे. आठवे श्री चंद्रप्रभुजी छ मासतक छद्मस्थपने में रहे. तेइन्द्रिय जीवोंका आरंभ नहीं करनेवाले को

शब्दार्थ के सो० सुख से अ० अलगकरे नहीं ए० ऐसे फा० स्पर्शेन्द्रिय को ते० तेइन्द्रिय जीव स० समारंभी छ० छप्रकार का अ० असंयम क० करे घा० घ्राणेन्द्रिय के सो० सुखसे अ० अलगकरे घा० घ्राणेन्द्रिय दु० दुःख से सं० संयोग भ० होवे जा० यावत् फा० स्पर्शेन्द्रिय के दु० दुःख से सं० संयोग भ० होवे जं० जंबूद्वीप में छ० छ अ० अकर्मभूमि हे० हेमवय ए० एरणवय ह० हरिवर्ष र० रम्यकवर्ष दे० देवकुरु उ० उत्तरकुरु जं० जंबूद्वीप में छ० छक्षेत्र भ० भरत ए० एरवत हे० हेमवय ए० एरणवय ह० हरिवर्ष

सूत्र सोक्खाओ अवरोवेत्ता भवइ, एवंचेव फासामयाओवि, (७३) तेइंदियाणं जीवा समारंभमाणस्स छव्विहे असंयमे कज्जइ तं० घाणामयाओ सोक्खाओ ववरोवेत्ता भवइ, घाणामएणं दुक्खेणं संजोयेत्ता भवइ, जाव फासामएणं दुक्खेणं संजोयेत्ता भवइ (७७) जंबूद्दीवेदीवे छअकम्मभूमीओ पण्णत्ताओ तं० हेमवए एरन्नवए,

भावार्थ छ प्रकारका संयम होता है. घ्राणेन्द्रिय के सुखका वियोग होवे नहीं २ घ्राणेन्द्रिय के दुःखका संयोग बने नहीं ३ जिव्हेन्द्रिय के सुखका वियोग होवे नहीं. ४ जिव्हेन्द्रिय के दुःखका संयोग होवे नहीं ५ स्पर्शेन्द्रिय के सुखका वियोग होवे नहीं और ६ स्पर्शेन्द्रिय के दुःखका संयोग मीले नहीं. तेइन्द्रिय जीवोंका आरंभ करनेसे छ प्रकार का असंयम होता है. घ्राणेन्द्रिय के सुखका वियोग होवे यावत् स्पर्शेन्द्रिय के दुःखका संयोग मीले. जम्बूद्वीप में छ अकर्मभूमी कही हैं १ हेमवय २ एरणवय ३ हरिवर्ष ४ रम्यक्वर्ष ५ देवकुरु

शब्दार्थ

र० रम्यकवर्ष जं० जंबूद्वीप में छ० छवर्षधर पर्वत चु० चुल्लहिमवन्त म० महाहिमवन्त नि० निषढ नी० नीलवन्त रु० रुप्पी सि० शिखरी जं० जंबूद्वीप के मं० मेरुकी दा० दक्षिण में छ० छकूट चु० चूलहिमवन्त वे० वैश्रमण म० महाहिमवन्त वे० वेरुलिय नि० निषढ रु० रुचक जं० जंबूद्वीप के मं० मेरु की उ० उत्तर में छ० छकूट नी० नीलवन्त उ० उपदर्शन रु० रुप्पी म० मणिकंचन सि० शिखरी ति० तिगिच्छ जं० जंबू-

सूत्र

हरिवासे, रम्मगवासे, देवकुरा, उत्तरकुरा (७८) जंबूद्दीवेदीवे छवासा प० तं० भरहे, एरव-ए, हेमवए, एरण्णवए, हरिवासे, रम्मगवासे, (७९) जंबूद्दीवे छ वासहरपव्वया प० तं० चुल्लाहेमवंते, महाहिमवंते, निसढे, नीलवंते, रुप्पी, सिहरी, (८०) जंबूमंदरदाहिणेणं छकूडा प० तं० चुल्लहिमवंतकूडे, वेसमणकूडे महाहिमवंतकूडे, वेरुलियकू-

भावार्थ

और ६ उत्तरकुरु. जम्बूद्वीप में छ क्षेत्र कहे हैं १ भरत २ एरवत ३ हेमवय ४ एरणवय ५ हरिवर्ष और ६ रम्यकवर्ष. जम्बूद्वीप में छ वर्षधर पर्वत १ चुल्लहिमवंत. २ महाहिमवंत ३ निषढ ४ नीलवंत ५ रुप्पी और ६ शिखरी. जम्बूद्वीप के मेरुकी दक्षिण में छ कूट १ चुल्ल हिमवंत कूट, २ वैश्रमण कूट ३ महाहिमवंतकूट ४ वेरुलियकूट ५ निषढ कूट और ६ रुचक कूट. जम्बूद्वीपके मेरुकी उत्तर में छ कूट १ नीलवंतकूट, २ उपदर्शन कूट ३ रुप्पीकूट, ४ मणिकंचन कूट ५ शिखरी कूट और ६ तिगिच्छ कूट. जम्बूद्वीप में

शब्दार्थ — द्वीप में छ० छमहाद्रह प० पद्मद्रह म० महापद्मद्रह ति० तिगिच्छद्रह [illegible]सरीद्रह पुं० पुंडरीकद्रह म० महापुंडरीकद्रह त० तहां छ० छदेवियों म० महर्द्धिक जा० यावत् प० पल्योपम ठि० स्थिति की प० रहती हैं सि० श्री हि० ह्री धि० धृति कि० कीर्ति बु० बुद्धि ल० लक्ष्मी जं० जंबूद्वीप के मं० मेरु की दा० दक्षिण में छ० छमहानदियां गं० गंगा सि० सिन्धु रो० रोहिता रो० रोहितांसा ह० हरी ह० हरीकान्ता

सूत्र — डे, रुयगकूडे, (८२) जंबूमंदरउत्तरेणं छकूडा प० तं० नीलवंतकूडे, उवदंसणकूडे, रुप्पिकूडे मणिकंचणकूडे, सिहरिकूडे, तिगिच्छकूडे, (८२) जंबूद्दीवेदीवे छ महादहा प० तं० पउमद्दहे, महापउमद्दहे, तिगिच्छद्दहे, केसरिद्दहे, पुंडरीयद्दहे, महापुंडरीयद्दहे, (८३) तत्थणं छदेवयाओ महिड्ढियाओ जाव पलिओवमट्ठिईया

भावार्थ — मवंत कूट ४ वेरुलिय कूट ५ निषढ कूट और ६ रुचक कूट. जम्बूद्वीपके मेरुकी उत्तर में छ कूट १ नीलवंत कूट, २ उपदर्शन कूट ३ रुप्पि कूट, ४ मणिकंचन कूट ५ शिखरी कूट और ६ तिगिच्छ कूट जम्बूद्वीप में छ महाद्रह कहें १ पद्मद्रह, २ महापद्मद्रह, ३ तिगिच्छद्रह ४ केसरीद्रह ५ पुंडरीकद्रह और ६ महा पुंडरीकद्रह. वहांपर पल्योपम की स्थितिवाली छ महर्द्धिक देवियाँ रहती हैं:-श्री, ह्री, धृति, कीर्ति, बुद्धि और लक्ष्मी. जम्बूद्वीप के मेरुकी दक्षिण में छ बडी नदियाँ कही हैं गंगा, सिंधु, रोहिता, रोहितांसा, हरी

शब्दार्थ

जं० जंबूद्वीप के मं० मेरु की उ० उत्तर में छ० छमहानदी ण० नरकान्ता णा० नारीकान्ता सु० सुवर्ण कुला रु० रूपकुला र० रक्ता र० रक्तावती जं० जंबूद्वीप के मं० मेरुकी पु०पूर्वमें सी० सीतामहानदी के उ० दोनोंबाजु छ० छअंतरनदियाँ गा० गाहावती द० द्रहवती पं० पंकवती त० तप्तजला म० मत्तजला उ० उन्मत्तजला जं०जंबूद्वीप के मं०मेरुकी प०पश्चिममें सी०सीतोदा म०महानदी के उ० दोनों बाजु छ० छअन्तर

सूत्र

परिवसंति. तं० सिरी, हिरी, धिई, कित्ती, बुद्धी, लच्छी (८४) जंबूमंदरदाहिणेणं, छमहानईओ पण्णत्ताओ तं० गंगा, सिंधू, रोहिया, रोहियंसा, हरी, हरिकंता (८६) जंबूमंदरस्स उत्तरेणं छ महाणईओ पण्णत्ताओ तं० णरकंता, णारिकंता, सुवण्णकूला, रुप्पकूला, रत्ता, रत्तवई, (८७) जंबूमंदरपुरच्छिमेणं सीयाए महाणदीए उभयकूले छ अंतरनईओ प० तं० गाहावई, दहवई, पंकवई, तत्तजला, मत्तजला, उम्मत्तजला, [८८] जंबूमंदरपच्चत्थिमेणं सीओयाए महाणईए उभयकूले छ अंतर-

भावार्थ

और हरिकान्ता. जम्बूद्वीप के मेरुकी उत्तर में छ बडी नदियाँ कही हैं नरकान्ता, नारीकान्ता, सुवर्णकूला. रूपकूला, रक्ता और रक्तावती. जम्बूद्वीप के मेरु पर्वतकी पूर्वदिशा में सीता महानदी के दोनों किनारे पर छ अंतर नदियाँ कही हैं १ गाहावती २ द्रहवती ३ पंकवती ४ तप्तजला ५ मत्तजला और ६ उन्मत्तजला. जम्बूद्वीप के मेरुकी पश्चिम दिशा में सीतोदा महानदी के दोनों किनारेपर छ अंतर नदियों कही

शब्दार्थ — नदियां खी० क्षीरोदा सी० सिंहश्रोता अं० अंतर्वाहिनी उ० ऊर्मिमालिनी फे० फेनमालिनी गं० गंभीरमालिनी धा० धातकी खंडद्वीप के पु० पूर्वार्ध में छ० छअकर्मभूमि हे० हेमवय ज० जैसे जं० जंबूद्वीप में त० तैसे जा० यावत् अं० अन्तरनदियां पु० पुष्कर वरद्वीप के प० पश्चिमार्ध में भा० कहना ॥ १० ॥ छ० छऋतु पा० प्रावृट् व० वर्षाऋतु स० शरद् हे० हेमन्त सि० शिशिरऋतु व० वसन्त गि० ग्रीष्म छ० छ ओ० अवमरात्रि त० त्रीजापक्ष में स० सातवापक्ष में ए० अगीयारवापक्ष में प० पन्नरहकेपक्ष में ए० गु-

सूत्र — णईओ प० तं० खीरोदा, सीहसोया, अंतोवाहिणी, उम्मिमालिणी, फेनमालिणी, गंभीरमालिणी, (८९) धायइखंडदीवपुरच्छिमद्धेणं छ अकम्मभूमीओ पण्णत्ताओ तं० हेमवए जहा जंबुदीवे तहा जाव अंतरणईओ जाव पुक्खरवरदीवड्ढपच्चत्थिमद्धे भाणियव्वं (९०) ॥ १० ॥ छउऊ प० तं० पाउसे, वरिसारत्ते, सरए, हेमंते, सिसिररत्ते, वसंते, गिम्हे (९१) छ ओमरत्ता प० तं० तइएपव्वे, सत्तमेपव्वे,

भावार्थ — है. क्षीरोदा. सिंहश्रोता, अंतर्वाहिनी ऊर्मिमालिनी, फेनमालिनी, और गंभीरमालिनी. जैसे जम्बूद्वीपका अधिकार कहा वैसेही धातकी खंडके पूर्वार्ध और पश्चिमार्ध तथा अर्ध पुष्कर द्वीपके पूर्वार्ध और पश्चिमार्ध का अधिकार जानना. ॥ १० ॥ ऋतुके छ भेद कहे हैं १ वर्षाऋतु, २ शरद् ३ हेमन्त, ४ शिशिर ५ वसंत और ६ ग्रीष्म. छ अवमरात्रि (तिथिक्षय) कही. १ तीसरा पक्ष सो भाद्रपदके कृष्णपक्ष में

१ जैन सूत्रानुसार श्रावण वदी प्रतिपदा से संवत्सर गिनाजाता है.

शब्दार्थ

नववें पक्ष में ते० तेवीसवेपक्ष में छ० छअतिरात्रि च० चौथापक्ष में अ० आठवापक्ष में दु० द्वादशपक्ष में सो० सोलहवेपक्ष में वी० वीसवेपक्ष में च० चोवीसवेपक्ष में आ० मतिज्ञान को छ० छप्रकार का अ० अर्था वग्रह सो० श्रोतेन्द्रिय जा० यावत् नो० मन अर्थावग्रह छ० छप्रकार का ओ० अवधिज्ञान अ० अनुगामिक अ०अननुगामिक व० वर्द्धमान ही०हीयमान प०प्रतिपाती अ० अप्रतिपाती नो० नहीं क०कल्पता है नि०साधु

सूत्र

एक्कारसमेपव्वे, पन्नरसमेपव्वे, एगूणवीसइमेपव्वे तेवीसइमे पव्वे (९२) छ अइरत्ता प० तं० चउत्थेपव्वे, अट्ठमेपव्वे, दुवालसमेपव्वे, सोलसमेपव्वे, वीसइमेपव्वे, चउवीसइमेपव्वे (९३) आभिणिबोहियणाणस्सणं छव्विहे अत्थोग्गहे प० तं० सोइंदियत्थोग्गहे जाव नोइंदियत्थोग्गहे (९४) छव्विहे ओहिणाणे प० तं० अणुगामिए, अणाणुगा-

भावार्थ

एक तिथिका क्षय होवे २ सातवा पक्ष सो कार्तिक कृष्ण पक्ष में एक तिथिक्षय होवे ३ अग्यारहवा पक्ष सो पोषवदी में एक तिथि क्षय होवे ४ पन्नरहवा पक्ष सो फाल्गुन कृष्ण पक्ष में एक तिथिका क्षय होवे ५ गुनीसवा पक्ष सो वैशाख वदी में एक तिथिका क्षय होवे और ६ तेइसवा पक्ष सो अषाढ वदी में एक तिथि का क्षय होवे. छ अतिरात्रि (तिथि बढना) कही १ चौथा पक्ष भाद्रपद शुदी में एक तिथि बढे २ आठवा पक्ष सो कार्तिक शुदि में एक पक्ष बढे ३ बारहवा पक्ष सो पोष शुदी में एक तिथि बढे ४ सोलवा पक्ष फाल्गुन शुदी में एक तिथि बढे ५ वीसवा पक्ष सो वैशाख शुदी में एक तिथि बढे और ६ चौविसवा

शब्दार्थ

नि० साधी को अ० अवचन व० बोलने को अ० झुठावचन ही० हीलना का वचन खिं० ईर्षाका वचन फ० कठिन वचन गा० गृहस्थ वचन वि० समाहुवा पु० फीर उ० उदय करने को छ० छ क० साधुको प० प्रायश्चित्त पा० प्राणातिपातका व० वचन बोलता मु० मृषावादका व० वचन बोलता अ० अदत्तादान का वचन व० बोलता अ० अविरति वचन व० बोलता अ० अपुरुष का वचन बोलना दो० दोष व० वचन बोलता

सूत्र

भिए, वड्ढमाणए, हीयमाणए, पडिवाइ, अपडिवाइ (९५) नोकप्पइ निग्गंथाणवा निग्गंथीणवा इमाइं छ अवयणाइं वइत्तए तं० अलियवयणे, हीलियवयणे खिंसियवयणे फरुसवयणे, गारत्थियवयणे, विउसमियंवापुणोउदीरेत्तए (९६) छ कप्पस्स पत्थारा प० तं० पाणाइवायस्स वायं वयमाणे, मुसावायस्सवायंवयमाणे, अदिन्नादाणस्स वायं वयमाणे,

भावार्थ

पक्ष सो अषाढ चुरी में एक तिथि बढे. मति ज्ञान के छ प्रकार का अर्थावग्रह कहा है:- श्रोतेन्द्रिय अर्थावग्रह, चक्षुइन्द्रिय अर्थावग्रह, घ्राणेन्द्रिय अर्थावग्रह. रसेन्द्रिय अर्थावग्रह. स्पर्शेन्द्रिय अर्थावग्रह और नोइन्द्रिय अर्थावग्रह. अवधि ज्ञानके छ भेद अनुगामी, अननुगामि, वर्धमान, हीयमान, प्रतिपाति. और अप्रतिपाति. साधु साधी को छ प्रकार स अवक्तव्य वचन बोलना नहीं कल्पता है १ असत्य वचन, २ हीलणाका वचन ३ खिंसणा छिद्र प्रगट करनेका वचन ४ कठिन वचन ५ गृहस्थका वचन (मा पुत्र वगैरह) और ६ शान्त हुआ क्लेश की उदीरणा होवे वैसा. छ प्रकार के वचन बोलने से साधु को प्रायश्चित्त आता है १ प्राणातिपातका

शब्दार्थ

इ० इन छ० छ क० साधु को प० प्रायश्चित्त स० सम्यक् प्रकार स अ० प्रायश्चित नहीं लेता त० उस ठा० स्थान को प० प्राप्त है छ० छ क० साधु को प० पलिमंथू कु० कुचेष्टा करता सं० संयम का मो० मुवरी स० सत्यवचन का च० चक्षुलोलुपी इ० ईर्यासमिति का तिं० तिंतिणीक ए० एषणा समिति का इ० इच्छालोभी मो० मुक्तिमार्गका भि० लोभसे नि० नियाणा करने से मो० मोक्षमार्गका स० सर्वस्थान

सूत्र

अविरइवायंवयमाणे, अपुरिसवायंवयमाणे, दासवायंवयमाणे; इच्चेए छ कप्पस्स पत्थारे पत्थेरेत्ता सम्ममपडिपूरेमाणे तट्ठाणपत्ते (९७) छ कप्पस्सपलिमंथू प० तं० कुक्कुइए संजमस्सपलिमंथू, मोहरिए सच्चवयणस्स पलिमंथू चक्खुलोलए इरियावहिया पलिमंथू; तिंतिणिए-एसणागोयरस्सपलिमंथू, इच्छालोभे मोत्तिमग्गस्सपलिमंथू, भिज्जा

भावार्थ

वचन बोलते २ मृषावाद बोलते ३ अदत्तादान की वार्तालाप करते ४ अविरति स्त्री की कथा करते, ५ यह नपुंसक है ऐसी बात कहते और ६ किसी के दोष प्रगट करते. इन छ की कथा करने से गुरु जो प्रयश्चित्त देवे उसे अंगीकार न करे तो वह उन प्राणातिपातादिक का करनेवाला है ऐसा जानना. आचार में छ प्रकार के पलिमंथु (मंथनकरनेवाले) कहे १. कुत्सित मनुष्य की तरह अंगकी व उपकरण की कुचेष्टा करे सो संयमका पलिमंथु, २ विना विचारा वचन बोले सो सत्य वचन का पलिमंथु ३ चक्षुलोलुपी सो ईर्यापथिक का पलिमथु ४ अलाभ से खिन्नबना हुआ इच्छानुसार बोले सो पलिमंथु ५ लोभरखे सो

शब्दार्थ भ० भगवानने अ० अनियाणा प० प्रशस्त कीया छ० छप्रकार की क० कल्पस्थिति सा० सामायिक छ० छेदोपस्थापनिक नि० परिहार विशुद्ध नि० परिहार विशुद्ध पूर्ण की जि० जिनकल्प की थे० स्थविर कल्प की ॥ ११ ॥ स० श्रमण भ० भगवान् म० महावीर छ० छठ भक्त से अ० चौविहार मुं० मुंड जा० यावत् प० प्रव्रजित हुवे अ० अनंत अ० अनुत्तर जा० यावत् स० उत्पन्न हुवा सि० सिद्धहुवे

सूत्र

णिदाणकरणे मोक्खमग्गरसपलिमंथू ! सव्वत्थभगवया अणिदानता पसत्था (९८)
छव्विहा कप्पट्ठिई प० तं० सामाइयकप्पट्ठिई, छेओवट्ठावणियकप्पट्ठिई, निव्विसमाणकप्पट्ठिई, निव्विट्ठकप्पट्ठिई, जिणकप्पकप्पट्ठिई, थेरकप्पट्ठिई, (९९) ॥ ११ ॥
समणे भगवं महावीरे छट्ठेणं भत्तेणं अपाणएणं मुंडे जाव पव्वइए (१००)

भावार्थ मुक्तिमार्ग का पलिमंथु और ६ नियाणा करने वाला होवे सो मोक्षमार्ग का पलिमंथु. क्योंकि भगवन्तने सदैव नियाणा नहीं करना श्रेष्ठ कहा है. छ प्रकार की कल्पस्थिति कही है:-सामायिक कल्पस्थिति, छेदोपस्थापनीय कल्पस्थिति, परिहार विशुद्ध चारित्र पालता है जिसकी कल्पस्थिति, परिहार विशुद्ध चारित्र पाल चुके उसकी कल्पस्थिति, जिनकल्पी साधु की मर्याद, और स्थविर कल्पस्थिति. ॥ ११ ॥ श्रमण भगवंत महावीर चौविहार छठ भक्तसे प्रव्रजित हुवे. और चौविहार छठ भक्तसे अनंत अनुत्तर केवल ज्ञान दर्शन

शब्दार्थ — जा० यावत् स० सर्व दुःख छोडे स० सनत्कुमार मा० माहेन्द्र क० कल्प में वि० विमान छ० छयोजने स० शत उ० ऊंचे उ० ऊंचपने स० सनत्कुमार मा० माहेन्द्र कल्प में दे० देवकी भ० भवधारणीय स० शरीर उ० उत्कृष्ट छ० छाथ उ० ऊंचे उ० ऊंचपने छ० छप्रकार का भो० भोजन परिणाम म० मनोज्ञ र० रसयुक्त पी० प्रीणनीय बि० बृंहणीय दी० दीपनीय द० दर्पणीय छ० छप्रकार का वि० विषयपरिणाम

सूत्र — समणस्स भगवओ महावीरस्स छट्ठेणं भत्तेणं अपाणएणं अणंते अणुत्तरे जाव समुप्पन्ने (१०१) समणे भगवं महावीरे छट्ठेणं भत्तेणं अपाणएणं सिद्धे जाव सव्वदुक्खप्पहीणे (१०२) सणंकुमारमाहिंदेसुणं कप्पेसु विमाणा छजोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं प० (१०३) सणंकुमार माहिंदेसुणं कप्पेसु देवाणं भवधारणिज्जगा सरीरगा उक्कोसेणं छरयणीओ उड्ढं उच्चत्तेणं पण्णत्ता (१०५) छव्विहे भोयण-

भावार्थ — उत्पन्न हुआ. श्री श्रमण भगवंत महावीर स्वामी चौविहार छठ भक्त से सब दुःख रहित बन मुक्ति में गये. तीसरा सनत्कुमार और चौथा माहेन्द्र देवलोक में छसो योजन के विमान कहे हैं और इन में रहनेवाले देवताओं की भवधारणीय अवगाहना उत्कृष्ट छ हाथ की कही है. छ प्रकार के भोजन के परिणाम कहे हैं १ मनोज्ञ रसका भोजन अभिलषणीय होता है २ रहित सो मधुर रसादियुक्त ३ प्रीणनीय सो सप्तधातु को सम करता है ४ बृंहनीय सो धातु की वृद्धि करता है ५ दीपनीय जठराग्नि व शक्ति

शब्दार्थ

ड० दाढका भु० खानेयोग्य का नि०उपरलगानका हुवा मं०मांसानुसारी सो०शोणितानुसारी अ० अस्थिमिं-जानुसारी छ० छप्रकार की प० पृच्छा सं० संशय वु० व्युद्ग्रह अ० अनुयोग अ० अनुलोभ त० तथ्य ज्ञा० अज्ञान च० चमरचंचा रा० राजधानी में उ० उत्कृष्ट छ० छमास का वि० विरह उ० उपजने का ए० एक २ इं० इन्द्रस्थान में उ० उत्कृष्ट छ० छमास का वि० विरह उ० उपजने का

सूत्र

परिणामे प० तं० मणुन्ने, रासिए, पीणणिज्जे, विंहणिज्जे, दीवणिज्जे, दप्पणिज्जे, (१०५) छव्विहे विसपरिणामे प० तं० डक्के, भुत्ते, निव्वइए, मंसाणुसारी, सोणियाणुसारी, अट्ठिमिंजाणुसारी (१०६) छव्विहे पट्ठे प० तं० संसयपट्ठे, वुग्गहपट्ठे, अणुजोगी, अणुलोमे, तहणाणे, अतहणाणे (१०७) चमरचंचाणं रायहाणी उक्कोसेणं छमासा विरहिया उववाएणं (१०८] एगमेगेणं इंदट्ठाणे उक्कोसेणं

भावार्थ

बढता है और ६ दर्पणीय सो उत्साह में वृद्धि करता है. छ प्रकार का विषका परिणाम कहा है १ डक्क सो दाढ में विष जैसे सर्प प्रमुख के २ भुक्त खाने योग्य अफीम प्रमुख ३ उपर लगने से विष परिणमे सो सोमलादि ४ कितनेक विष मांस में परिणमनेवाले होते हैं ५ कितनेक रुधिर में परिणमनेवाले होते हैं और ६ कितनेक विष हड्डीकी मिंजी में परिणमने वाले होते हैं. छ प्रकार के प्रश्न कहे हैं १ संशय उत्पन्न होनेसे पूछे २ दूसरे पक्ष को दोष देनेके लिये पूछे ३ अनुयोग सो व्याख्यान करते समय प्रश्न

शब्दार्थ

अ० अर्धा स० सातमी पु० पृथ्वीमें उ० उत्कृष्ट छ० छमास का वि० विरह उ० उपजने का सि० सिद्धगति में उ० उत्कृष्ट छ० छमासका वि० विरह उ० उपजने का छ० छप्रकार का आ० आयुष्यबंध जा० जातिका णि० बन्धा हुवा आ० आयुष्य ग० गति ठि० स्थिति ओ० अवगाहना प० प्रदेश अ० अनुभाग णे० नारकी को छ० छप्रकार का आ० आयुष्यबंध जा० जातिका जा० यावत् अ० अनुभागका ए० ऐसे जा० यावत् वे० वैमानिक णे० नारकी छ० छमास अ० शेषआयुष्य प० परभव का आ०

सूत्र

छम्मासे विरहिए उववाएणं (१०९) अहे सत्तमाणं पुढवी उक्कोसेणं छम्मासा विरहिया उववाएणं (११०) सिद्धिगईणं उक्कोसेणं छम्मासा विरहिया उववाएणं (१११) छव्विहे आउयबंधे प० तं० जाइणामणिहत्ताउए, गइणामणिहत्ताउए ठिइणामनिहत्ताउए, ओगाहणाणामणिहत्ताउए, पएसणामनिहत्ताउए, अणुभावणामाणिहत्ताउए, (११२) णेरइयाणं छव्विहे आउयबंधे प० तं० जाइणामणिहत्ताउए जाव अणुभाव-

भावार्थ

पूछे ४ परस्पर क्षेम कुशलता पूछे ५ ज्ञान प्रश्न और ६ अज्ञान प्रश्न. चमरचंचा राजधानी में देवता उत्पन्न होनेका उत्कृष्ट छमासका विरह होवे. एक इन्द्र चवे उस के पीछे दूसरा इन्द्रका उत्कृष्ट छ मासका विरह होवे. सातमी नरकमें उत्कृष्ट छ मासका विरह, वैसेही सिद्ध गति में उत्कृष्ट छमासका विरह सिद्ध होनेका होवे. छ प्रकार से आयुष्य बंध कहाहै. एकेन्द्रियादि जातिका कर्म उस को साथ बंधा हुवा होवे और उसे समय २ में भोगवे सो जातिनाम कर्म, २ नरकादि चार गतिका कर्म बांधे सो गति नाम कर्म, ३ जितना आयुष्य बंधा होवे उतना भोगना सो स्थिति

शब्दार्थ

आयुष्य प० बांधे ए० ऐसे अ० असुर कुमार जा० यावत् थ० स्थनि कुमार अ० असंख्यात वा० वर्षके आ० आयुष्य वाले सं० संज्ञी पं० पंचेन्द्रिय ति० तिर्यंच णि० निश्चय छ० छमास अ० अवशेष आ० आयुष्य प० दूसरा भवका आ० आयुष्य प० बांधे अ० असंख्यात वा० वर्षके आ० आयुष्य वाले सं० संज्ञी म० मनुष्य णि० निश्चय जा० यावत् प० बांधे वा० व्यानन्त जो० ज्योतिषी वे० वैमानिक ज० जैसे णे० नारकी ॥ १२ ॥ छ० छप्रकार का भा० भाव उ० उदय उ० उपशम ख० क्षायिक ख० क्षयोप

सूत्र

णामणिहत्ताउए, एवं जाव वेमाणियाणं (११३) णेरइया छम्मासावसेसाउया परभवियाउयं पगरेंति ॥ एव मसुरकुमारावि जाव थणियकुमारा ॥ असंखेज्जवासाउया सन्निपंचेंदियतिरिक्खजोणिया णियमं छम्मासावसेसाउया परभवियाउयं पगरेंति ॥ असंखज्जवासाउया सन्निमणुस्सा णियमं जाव पगरेंति ॥ वाणमंतरजोइसिया वेमाणिया जहा णेरइया (११४) ॥ १२ ॥ छव्विहे भावे प० तं० उदइए, उवसमिए,

भावार्थ

नाम कर्म, ४ अवगाहना सो औदारिक शरीर से बंधा हुआ आयुष्यकर्म ५ आयुष्य कर्मके प्रदेश से बंधा हुआ सो प्रदेश नाम कर्म और ६ उस के रससे बांधे सो अनुभाग नामकर्म. नारकी से लेकर वैमानिक तक सब जीवोंको छ प्रकार का आयुष्य का बंध कहा है. सात नारकी, दश भुवनपति, असंख्यात वर्षके आयुष्य वाले संज्ञी तिर्यंच पंचेन्द्रिय, असंख्यात वर्षकी स्थिति वाले मनुष्य, व्यंतर, ज्योतिषी वैमानिक ये सब अपना आयुष्य छमास शेष रहे जब पूर्व भवका आयुष्य बांधते हैं ॥१२॥ छभाव कहे हैं. आगे

शब्दार्थ

शम प० पारिणामिक सं० सन्निपातिक छ० छप्रकारका प० प्रतिक्रमण उ० वडीनीतका पा० लघुनीतका इ० थोडाकालका आ० महाव्रतरूप जं० कांई मि० मिथ्यात्व सो० कायोत्सर्ग क० कृत्तिका ण० नक्षत्रके छ० छतारे अ० अश्लेषा ण० नक्षत्रके छ० छतारे छ० छस्थान नि० निर्वर्तिक पो० पुद्गल पा० पापकर्मपन

सूत्र

खइए, खयोवसमिए, पारिणामिए, संनिवाइए (११५) छव्विहे पडिक्कमणे प० तं० उच्चारपडिक्कमणे, पासवणपडिक्कमणे, इत्तरिए, आवकहिए, जंकंचिमिच्छा, सो-मणंइए (११६) कत्तियाणक्खत्ते छतारे प० (११७) आसिलेसाणक्खत्ते छतारे प० (११८) छट्ठाणनिव्वत्तिए पोग्गले पावकम्मत्ताए चिणिंसुवा चिणिंतिवा,

भावार्थ

कर्म उदय में आवे सो उदयभाव, २ मोहनीय कर्मका उपशम होवेसो उपशम भाव ३ आठों कर्मोंका क्षय करे सो क्षायिकभाव ४ चार घनघाति कर्मोंका क्षयकरे सो क्षायोपशमिक. ५ पारिणामिक भाव सो कर्म स्वभाव और ६ सन्निपातिक भाव उक्त पांचो में एक से एकका या विशेषका संयोग होना. छप्रकार के प्रतिक्रमण कहे १ वडीनीत परठाये पीछे ईर्यावहि करे २ लघुनीति परठाये पीछे ईर्यावहि करे ३ इत्तर थोडा कालका प्रतिक्रमण देवसी रायसी प्रमुख, ४ आव कहा जैसा महाव्रत कहा है वैसा जाव जीव तक पालेरूप ५ थोडा दोष लगेतो मिथ्या दुष्कृत लेना और ६ निद्रा में से उठकर ईर्या वहि पडिकमें कृत्तिका व अश्लेषा नक्षत्र के छ तारे कहे हैं. छ स्थान निष्पन्न पुद्गल जीवने गतकाल में

ठेकिये पु० पृथ्वीकायनिवार्तिक जा० यावत् त्र० त्रसकाय नि० निवर्तिक चि० चिन उ० उप-
बंध उ० उदीर वे० वेद नि० निर्जरा छ० छप्रदेशी खं० स्कन्ध अ० अनंत प० प्ररूपे छ० छप्र-
गाढा पो० पुद्गल अ० अनंत छ० छसमय की ट्ठि० स्थितिवाले पो० पुद्गल अ० अनंत छ० छगुण-
पुद्गल जा० यावत् छ० छगुणरुक्ष पो० पुद्गल अ० अनंत प० प्ररूपे ॥ १३ ॥ * *

सातिवा तं० पुढविकाइय निव्वत्तिए जाव तसकाइय निव्वत्तिए ॥ एवं चिण-
धउदीरवेयतहानिजरा चेव (११८) छप्पएसियाणं खंधा अणंता प०
छप्पएसोगाढा पोग्गला अणंता (१२०) छसमयट्ठिईया पोग्गला
णकालगापोग्गला जाव छगुणलुक्खा पोग्गला अणंता
छट्ठट्ठाणं सम्मत्तं ॥ * * *

निवार्तिक यावत् त्रसकाय निवर्तिक. ऐसेही चिन,
प्रदेशी स्कन्ध अनंत, छ प्रदेश अवगाह्या
काला यावत् छ गुणरुक्ष पुद्गल अनंत
* *

[redacted] ए० कुच्छ रो० रुचताहै ए० कुच्छ
[redacted] व० संशय करताहूं ए० कुच्छ नो० नहीं

[redacted], एगइया रोएमि, एगइया नो रोएमि,

[redacted] तिगिच्छामि, एगइया नो वितिगिच्छामि, सव्व

[redacted] धु [redacted] र्म से नीकलने का कहा है:- अपने गुरु की आज्ञा लेकर सर्व धर्म की
दूसरे गच्छ में जावे २ कुच्छ श्रुत चारित्र की रुचि हुई है, और कुच्छ नहीं हुई है;
करने को गुरुकी आज्ञा लेकर अन्य गच्छ में जावे ३ सब धर्म में अनुकूल लक्षण है
शय रहा हुवा है, इस से उसे मिटाने को अन्य गच्छ में जावे ४ कितनीक बातों का संशय
नीक बातों का संशय नहीं है इस लिये निस्संदेह होने को दूसरे गच्छ में ज्ञानी जानकर जावे
छ में ऐसा योग्य पात्र नहीं है कि जिनको मैं सब धर्मज्ञान दे सकूं इसलिये दूसरे गच्छ में
न दे सकूं ऐसा थोडा बहुत पात्र है और नहीं भी है तो संपूर्ण ज्ञान देनेके लिये अन्य गच्छ
त्र देखकर जावे ७ और गुरुकी पास जाकर कहे कि अहो भगवंत मुझे अकेला विहार करने

शब्दार्थ वि० संशय करताहूं स० सर्वधर्म जु० देताहूं ए० कुच्छ जु० देताहूं ए० कुच्छ नो० नहीं जु० देताहूं इ० इच्छताहूं भं० भगवन् ए० एकलाविहार प० प्रतिमा उ० अंगीकारकर वि० विचरनेको ॥ १ ॥ स० सात प्रकारका वि० विभंगज्ञान ए० एकदिशिमें लो० लोकका अ० ज्ञान पं० पांचदिशामें लोकका अ० ज्ञान कि० क्रिया जीव मु० मृतकजीव अ० अमृतकजीव रू० रूपीजीव स० सर्व इ० यह जी० जीव त० तहां

सूत्र

धम्माजुहुणामि, एगयाजुहुणामि एगइया नोजुहुणामि,इच्छामिणंभंते एगल्लविहारपडिमं उव-संपज्जित्ताणं विहरित्तए। १। सत्तविहे विभंगणाणे प० तं० एगदिसिंलोगाभिगमे,पंचदिसिंलोगा भिगमे,किरियाचरणेजीवे,मुदगो जीवे,अमुदगोजीवे रूवीजीवे,सव्वमिणं जीवा,तत्थखलुइमे पढमे विभंगणाणेजयाणं तहारूवस्स समणस्सवामाहणस्सवा विभंगणाणे समुप्पज्जइ,सेणंतेणं

भावार्थ का भाव है इसलिये आपकी अनुज्ञा होवे तो करूं. यदि गुरु आज्ञा देवे तो गच्छ से अलग निकल कर अकेला विहार करे ॥ १ ॥ सात प्रकार का विभंग ज्ञान कहा है १ एक दिशाके लोक को जाने, २ पांच दिशाके लोक को जाने ३ क्रिया करने से क्रिया ही जीव है कि कोई अन्य जीव है ऐसा जाने ४ बाह्य आभ्यंतर पुद्गल से बना हुआ जीव है ऐसा जाने ५ बाह्य आभ्यंतर पुद्गल रहित जीव है ऐसा जाने ६ जीव रूपी है ऐसा जाने ७ सब पुद्गलादि वस्तु चलती है इसलिये सब जीव है ऐसा जाने । इन सात में से पहिला विभंग ज्ञान का स्वरूप बताते हैं १ जिस समय तथारूप मिथ्यात्वी शाक्यादि श्रमण माहण

शब्दार्थ इ० यह प० प्रथम वि० विभंगज्ञान ज० जिसवक्त त० तथारूप स० श्रमण मा० माहणको वि० विभंग ज्ञान स० उत्पन्न होवे ते० उस वि० विभंग ज्ञान से स० उत्पन्न हुवा पा० देखे पा० पूर्व प० पश्चिम दा० दक्षिण उ० उत्तर उ० ऊर्ध्व जा० यावत् सो० सौधर्मदेवलोक त० उसको ए० ऐसा भ० होवे अ० है म० मुझे अ० उत्कृष्ट णा० ज्ञान दर्शन स० उत्पन्न हुवा ए० एकदिशि में लो० लोक का अ० ज्ञान सं०

सूत्र विभंगणाणेणं समुप्पन्नेणं पासइ;पाईणंवा,पडीणंवा, दाहिणंवा, उदीणंवा उड्ढंवा, जाव सोहम्मो कप्पो तस्सणं एवं भवइ-अत्थिणं मम अइसेसे णाणदंसणे समुप्पन्ने एगादिसिं लोगाभिगमे; संतेगइया समणावा माहणावा एवमाहंसु पंचदिसिं लोगाभिगमे जे ते एवमाहंसु मिच्छंते एव माहंसु पढमेविभंगणाणे,।अहावरे दोचे विभंगणाणे जयाणं तहारूवस्स समणस्सवा माहणस्स

भावार्थ को अज्ञान तपकरने से विभंग ज्ञान उत्पन्न होता है; और उस ज्ञान की प्रबलता से पूर्व, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण ऊंचे यावत् सौधर्म देवलोक तक देखसकता है; उस समय उनको ऐसा विचार उत्पन्न होवे कि मुझे उत्कृष्ट ज्ञान दर्शन उत्पन्न हुआ है और एक दिशिके लोक को जानता हूं परंतु कितनेक शाक्यादि श्रमण माहण ऐसा बोलते हैं कि पांचदिशि लोक का अभिगम है सो मिथ्या है यह विभंगज्ञान का प्रथम भेद जानना २ जिस समय तथारूप मिथ्यात्वी श्रमण माहण विभंग ज्ञान उत्पन्न होने से पूर्व,

१. विभंग ज्ञानवाले को अधोलोक देखना दुरधिगम है.

शब्दार्थ

हैं ए० कितनेक स० श्रमण मा० माहण ए० ऐसा आ० कहते हैं पं० पांचदिशि में लो० लोक का अ० ज्ञान जे० जो ते० वे ए० ऐसा आ० कहते हैं मि० मिथ्या ते० वे ए० ऐसा आ० कहते हैं प० प्रथम विभंग ज्ञान अ० अथ दो० दूसरा वि० विभंग ज्ञान ज० जिसवक्त त० तथारूप स० श्रमण को मा० माहण को वि० विभंग ज्ञान स० उत्पन्न होवे ते० उस वि० विभंग ज्ञान से स० उत्पन्न हुवा पा० देखे पा० पूर्व प० पश्चिम दा० दक्षिण उ० उत्तर उ० ऊर्ध्व जा० यावत् सो० सौधर्मदेवलोक त० उसको ए०

सूत्र

वा विभंगणाणे समुप्पज्जइ सेणं तेणं विभंगणाणेणं समुप्पन्नेणं पासइ-पाईणंवा,पडीणंवा, दाहिणंवा उदीणंवा उड्ढं जाव सोहम्मोकप्पो तस्सणमेवं भवइ अत्थिणं मम अइसेसे णाणदंसणे समुप्पन्ने पंचदिसिं लोगाभिगमे संतेगइया समणावा माहणावा एवमाहंसु एगदिसिं लोगाभिग मेजे ते एवमाहंसु मिच्छंते एवमाहंसु दोच्चे विभंगणाणे । अहावरे तच्चे विभंगणाणे जयाणं तहारूवस्स समणस्सवा माहणस्सवा विभंगणाणे समुप्पज्जइ सेणं तेणं विभंग-

भावार्थ

पश्चिम, उत्तर, दक्षिण ऊर्ध्व यावत् सौधर्म देवलोक देखे उस समय उस को ऐसा होवे कि मुझे उत्कृष्ट ज्ञान दर्शन उत्पन्न हुआ है और पांच दिशा के लोक को जानता हूं. अब जो श्रमण माहण ऐसा कहते हैं कि एक दिशि में ही लोक का अभिगम है सो मिथ्या है यह दूसरा विभंग ज्ञान. ३ अब तीसरा विभंग ज्ञान का स्वरूप बताते हैं. जिस समय तथारूप मिथ्यात्वी श्रमण माहण को विभंग ज्ञान उत्पन्न होने से जीवों

शब्दार्थ

ऐसा भ० होवे अ० है म० मुझे अ० उत्कृष्ट णा० ज्ञान दर्शन स० उत्पन्न हुवा पं० पांचदिशा में लो० लो० का अ० ज्ञान सं० हैं ए० कितनेक स० श्रमण मा० माहण ए० ऐसे आ० कहते हैं एकदिशा में लो० लोक का अ० ज्ञान जे० जो ते० वे ए० ऐसा आ० कहते हैं मि० मिथ्या ते० वे ए० ऐसा आ० कहते हैं दो० दूसरा विभंग ज्ञान अ० अथ त० तीसरा वि० विभंग ज्ञान ज० जिसवक्त त० तथारूप स० श्रमण मा० माहण को वि० विभंग ज्ञान स० उत्पन्न होवे ते० उस वि० विभंग ज्ञान से पा० देखे पा० प्राणा-

सूत्र

णाणेणं समुप्पन्नेणं पासइ पाणअइवाएमाणे, मुसं वयमाणे, अदिन्नमादित्तमाणे, मेहुणं पडिसेवमाणे, परिग्गहं परिगेण्हमाणेवा, राइभोयणं भुंजमाणेवा, पावंचणं कम्मं कीरमाणं णो पासइ तस्सणमेवं भवइ अत्थिणं मम अइसेसे णाणदंसणे समुप्पन्ने किरियाचरणे जीवे संतेगइया समणावा माहणावा एवमाहंसु णोकिरियाचरणे जीवे जे ते एवमाहंसु मिच्छंते एवमाहंसु तच्चेविभंगणाणे. । अहावरे चउत्थे विभंगणाणे जयाणं

भावार्थ

को प्राणातिपात करत, मृषावाद बोलते, अदत्तादान लेते, मैथुन सेवते, परिग्रह रखते, रात्रि भोजन करते, व पापक्रिया करते हुवे देखे, उस समय उस को ऐसा विचार होवे कि मुझे अतिशय ज्ञान दर्शन उत्पन्न हुआ है और इस से मैं जान सकता हूं कि क्रिया चरण जीव है. जो ऐसा कहते हैं कि क्रियाचरण जीव नहीं है सो मिथ्या है यह तीसरा विभंग ज्ञान. ४ अब चतुर्थ विभंग ज्ञान का

शब्दार्थ

तिपात करता मु० मृषावाद व० बोलता अ० अदत्त आ० ग्रहण करता मे० मैथुन प० सेवता प० परिग्रह प० लेता रा० रात्रि भोजन भो० भोगवता पा० पापकर्म की० करता पा० देखे त० उसको भ० होवे अ० है म० मुझे अ० उत्कृष्ट णा० ज्ञान दर्शन स० उत्पन्नहुआ कि० क्रिया जीव सं० हैं ए० कितनेक स० श्रमण मा० माहण ए० ऐसे आ० कहते हैं नो० नहीं कि० क्रिया जीव जे० जो० ते० वे ए० ऐसे आ० कहते हैं मि० मिथ्या ते० वे आ० कहते हैं त० तीसरा वि० विभंग ज्ञान अ० अथ च० चौथा वि० विभंग ज्ञान ज० जिसवक्त त० तथारूप स० श्रमण जा० यावत् स० उत्पन्न होता है ते० वे वि०

सूत्र

तहारूवस्स समणस्सवा जाव समुप्पज्जइ सेणं तेणं विभंगणाणेणं समुप्पन्नेणं देवामेव पासइ वाहिरब्भंतरए पोग्गले परियाइत्ता पुढेगत्तं णाणत्तं फुसित्ता फुरित्ता फुडित्ता विगुव्वित्ता णं चिट्ठित्तए तस्सण मेवं भवइ—अत्थिणं मम अइसेसे णाणदंसणे समुप्पन्ने मुदगो जीवे संतेगइया समणावा माहणावा एवमाहंसु अमुदगो

भावार्थ

स्वरूप कहते है. जिस समय तथारूप मिथ्यात्वी श्रमण माहण विभंग ज्ञान से मात्र देवता को ही बाह्याभ्यंतर पुद्गल ग्रहण करता हुवा अथवा नहीं ग्रहण करता हुवा या भिन्नरूप स्पर्शता यावत् विकुर्वणा करता हुवा देखता है उस समय ऐसा विचार होता है कि मुझे अतिशायी ज्ञान दर्शन उत्पन्न हुआ है और इस से मैं देख सकता हूं कि मृतक जीव बाह्याभ्यंतर पुद्गल रचित शरीर से जाता है. इस मृतक

शब्दार्थ

विभंग ज्ञान से उ० उत्पन्न हुवा दे० देवता को पा० देखता बा० बाह्य अ० आभ्यंतर पो० पुद्गल प०परिणमाकर पु०पृथक् ए०एकत्व णा०विविधरूप फु०स्पर्शकर फु० स्फुरितकर फु०प्रगटकर वि०विकुर्वणाकर चि० रहता हुवा त० उसको भ० होवे अ० है म० मुझे अ० उत्कृष्ट णा० ज्ञान दर्शन स० उत्पन्न हुवा पु० मृतक जीव सं० हैं ए० कितनेक स० श्रमण मा० माहण ए० ऐसा आ० कहते हैं अ० अमृतक जीव जे० जो ए० ऐसा आ० कहते है मि० मिथ्या ते० वे ए० ऐसे आ० कहते हैं च० चौथा वि० विभंग ज्ञान अ० अथ पं० पांचवा वि० विभंग ज्ञान ज० जिसवक्त त० तथारूप स० श्रमण मा० माहण

सूत्र

जीवे जेते एवमाहंसु मिच्छं ते एवमाहंसु चउत्थे विभगंणाणे।अहावरे पंचमेविभंगणाणे-जयाणं तहारूवस्स समणस्स जाव समुप्पजइ सेणं तेणं विभंगणाणेणं समुप्पन्नेणं देवामेव पासइ बाहिरब्भंतरए पोग्गलए अपरियाइत्ता पुढेगत्तं णाणत्तं जाव विउव्वित्ता चिट्ठित्तए, तस्सणमेवं भवइ—अत्थि जाव समुप्पन्ने अमुदगोजीवे संतेगइया समणावा माहणावा एवमाहंसु

भावार्थ

को जब कितनेक श्रमण माहण ऐसा कहते हैं कि अमृतक जीव पुद्गल रहित है सो मिथ्या है यह चौथा विभंग ज्ञान. जिस समय तथारूप श्रमण माहण को विभंग ज्ञान उत्पन्न होवे उस समय भवधारणीय शरीर उत्पन्न होने के समय में देवता को बाह्याभ्यंतर पुद्गल लिये विना देखे अथवा वैक्रेय समुद्घात में वैक्रेय पुद्गल का ग्रहण करते देखे तब ऐसा विचार उत्पन्न

शब्दार्थ

जा० यावत् स० उत्पन्न होता है ते० उस वि० विभंग ज्ञान से उ० उत्पन्न हुवा दे० देवताको ही पा० देखे बा० बाह्य अ० आभ्यंतर पो० पुद्गल को अ० अपरिणमाकर पु० पृथक् णा० विविधरूप जा० यावत् वि० विकुर्वणाकर चि० रहा हुवा त० उसको भ० होवे अ० है जा० यावत् स० उत्पन्न अ० पुद्गल रहित जीव सं० हैं ए० कितनेक स० श्रमण मा० माहण ए० ऐसे आ० कहते हैं पु० पुद्गल जी० जीव मि० मिथ्या ए० ऐसा आ० कहते हैं अ० अथ छ० छठा वि० विभंग ज्ञान ज० जिसवक्त त० तथारूप स० श्रमण मा० माहण को जा० यावत् स० उत्पन्न होवे ते० उस वि० विभंग ज्ञान से उ० उत्पन्न हुवा दे० देवता को पा०

सूत्र

मुदगो जीवे जे ते एवमाहंसु मिच्छंते एवमाहंसु पंचमे विभंगणाणे, । अहावरे छट्ठे विभंगणाणे जयाणं तहारूवस्स समणस्सवा माहणस्सवा जाव समुप्पज्जइ सेणंतेणं विभंगणाणेणं समुप्पन्नेणं देवामेव पासइ-बाहिरब्भंतरए पोग्गले परियाइत्तावा अपरियाइत्तावा पुढेगत्तं णाणत्तं फुसित्ता जाव विउव्वित्ताणं चिट्ठित्तए तस्सणमेवं भवइ अत्थि-

भावार्थ

होवे कि मुझे अतिशायी ज्ञान दर्शन उत्पन्न हुआहै कि अमृतक जीवहै परंतु कितनेक श्रमण ब्राह्मण ऐसा कहतेहैं कि मृतक जीवहै सो मिथ्याहै. यह पांचवा विभंगज्ञान ६ अब छट्ठा विभंगज्ञान कहतेहैं जिससमय तथारूप श्रमण माहण को विभंग ज्ञान उत्पन्न होताहै उस समय बाह्याभ्यंतर पुद्गल ग्रहण कर अथवा विना-ग्रहण किये भिन्न या एकरूप, या बहुरूप स्पर्शकर यावत् विकुर्वणा करते देवता को ही देखताहै जब ऐस,

शब्दार्थ

देखे वा० बाह्य अ० आभ्यंतर पो० पुद्गल प० परिणमाकर अ० अपरिणमाकर पु० पृथक् णा० नानारूप फु० स्पर्शकर जा० यावत् वि० विकुर्वणाकर वि० रहा हुवा त० उसको ए० ऐसा भ० होवे अ० है म० मुझे अ० उत्कृष्ट णा० ज्ञान दर्शन स० उत्पन्न हुवा रू० रूपीजीव सं० है ए० कितनेक स० श्रमण मा० माहण ए० ऐसा आ० कहते हैं अ० अरूपीजीव मि० मिथ्या ते० वे आ० कहते हैं अ० अथ स० सातवां वि० विभंग ज्ञान ज० जिसउक्त त० तथारूप स० श्रमण मा० माहण को वि० विभंग ज्ञान स० उत्पन्न होवे ते० उस वि० विभंग ज्ञान से स० उत्पन्न हुवा पा० देखे सु० सूक्ष्म वा० वायु काय फु०

सूत्र

णं मम अइसेसे णाणदंसणे समुप्पन्ने रूवीजीवे, संतेगइया समणावा माहणवा एव माहंसु अरूवीजीवे जेते एवमाहंसु मिच्छंते एवमाहंसु छट्ठे विभंगणाणे । अहावरे स-त्तमे विभंगणाणे जयाणं तहारूवस्स समणस्सवा माहणस्सवा विभंगणाणे समुप्पज्जइ सेणं तेणं विभंगणाणेणं समुप्पन्नेणं पासइ सुहुमेणं वाउकाएणं फुडं पोग्गलकायं एयंतं

भावार्थ

विचार होता है कि मुझे अतिशायी ज्ञान दर्शन उत्पन्न हुआ है कि जीव रूपी है परंतु कितनेक शाक्यादि साधु ब्राह्मण जो कहते हैं कि जीव अरूपी है सो मिथ्या है यह छट्ठा विभंग ज्ञान. ७ अब सातवा विभंग ज्ञान का स्वरूप कहते हैं. जिस समय तथारूप श्रमण माहण को विभंग ज्ञान उत्पन्न होवे उस समय सूक्ष्म वायु काय से स्पर्शते, कंपते, चलते, स्थिर होते, स्पंदते, संघट्टना करते,

शब्दार्थ

स्पर्शती पो० पुद्गल काया को ए० कंपती वे० विशेष कंपती च० चलती खु० क्षोभपाती फं० स्फुरती घ० संघट्टती उ० प्रेरती तं० उसभाव को प० परिणमंती त० उसको भ० होवे अ० है म० मुझे अ० उत्कृष्ट णा० ज्ञान दर्शन स० उत्पन्न हुवा म० सर्व जी० जीव सं० हैं ए० कितनेक स० श्रमण मा० माहण ए० ऐसा आ० कहते हैं जी० जीव अ० अजीव जे० जो ते० वे ए० ऐसा आ० कहते हैं मि० मिथ्या ते० वे ए० ऐसा आ० कहते हैं उ० उसको इ० यह च० चार जी० जीवनिकाय णो० नहीं स० सम्यक् उ० जानी हुई भ० हैं तं० वह ज० जैसे पु० पृथ्वी काय जा० यावत् वा० वायु

सूत्र

वेयंतं चलंतं खुब्भंतं फंदंतं घट्टंतं उदीरेंतं तंभावं परिणमंतं, तस्सणमेवं भवइ, अत्थिणं मम अइसेसे णाणदंसणे समुप्पन्ने सव्वमिणंजीवा संतेगइया समणावा माहणावा एवमाहिंसु जीवाचेव अजीवाचेव जेते एवमाहिंसु मिच्छंते एवमाहिंसु तस्सणमिमे चत्तारि जीवनिकाया णोसंममुवगया भवंति तं० पुढविकाइया, जाव वाउ-

भावार्थ

प्रेरते, अनेक भावों से परिणमते पुद्गल देखे. ऐसा देखकर ऐसा विचार होवे कि मुझे संपूर्ण ज्ञान दर्शन उत्पन्न हुवा है और इससे जान सकता हूं कि यह सब चलनेवाली पुद्गल जाती ही जीव है; परंतु कितनेक श्रमण माहण ऐसा कहते हैं कि वे जीव भी है और अजीव भी है सो मिथ्या है (उनको पृथ्वीकाय अप्काय, तेउकाय, और वायुकाय इन चारोंजीवनिकाय को नहीं चलने [redacted]

शब्दार्थ

काय इ० इन च० चार जी० जीवनिकाय से मि० मिथ्यादंड में प० [redacted] विभंग ज्ञान ॥ २ ॥ स० सात प्रकार की जो० योनिसंग्रह अं० अंडज पो० [redacted] सं० संस्वेदज सं० संमूर्च्छिम उ० उद्भिज अं० अंडज की स० सातगति स० सातआगति अं० अंडज अं० अंडज में उ० उपजता अं० अंडज में से पो० पोतज में से जा० यावत् उ० उद्भिज में से उ० उत्पन्न होवे से० वह अं० अंडज अं० अंडज को वि० छोडता अं० अंडजपने पो० पोतजपने जा० यावत् उ० उद्भिजपने ग० जावे पो० पोतजकी स० सातगति स० सात आगति ए० ऐसे स० सात को ग० गति

सूत्र

काइया, इच्चेएहिं चउहिं जीवनिकाएहिं मिच्छादंडं पवत्तेइ सत्तमे विभंगणाणे ॥ २ ॥ सत्तविहे जोणिसंगहे प० तं० अंडजा, पोतजा, जराउजा, रसया, संसेयया, संमुच्छिमा, उब्भिया ॥ अडंगा सत्तगइया सत्तागइया प० तं० अंडगे अडंगेसु उववज्जमाणे अंडएहिंतोवा पोयएहिंतोवा जाव उब्भिएहिंतोवा उववज्जेजा संचेवणंसे अंडए अंडगत्तं विप्पजहमाणे अंडयत्ताएवा पोययत्ताएवाजाव उब्भियत्ताएवा गच्छेज्जा । पोयया सत्तगइया

भावार्थ

हैं उस से उन की हिंसा करे) यह सातवा विभंग ज्ञान ॥ २ ॥ सात प्रकार का योनिसंग्रह-जीव के उत्पत्ति स्थान) कहे हैं १ अण्डज, २ पोतज, ३ जरायुज ४ रसज, ५ संस्वेदज, ६ संमूर्च्छिम और ७ उद्भिज. अण्डे में उत्पन्न होनेवाले जीवों अण्डज यावत् उद्भिज इन सात मेंसे आते हैं और इन सातों में जाते हैं जैसे अण्डज की सात गति सात आगति कही वैसेही पोतज यावत् उद्भिज की सात गति

शब्दार्थ

आ० आगति भा० कहना जा० यावत् उ० उद्विजपने ॥ ३ ॥ आ० आचार्य उ० उपाध्याय के ग० गण में स० सात सं० संग्रहस्थान आ० आचार्य उ० उपाध्याय के ग० गण में आ० आज्ञा धा० धारणा स० सम्यक् प० प्रयुंजना भ० होवे ज० जैसे पं० पांचवें ठाणे में आ० आचार्य उ० उपाध्याय के ग० गणमें आ० पूछकर चा० चलने वाला होवे नो० नहीं अ० वें विना पूछकर चा० चलने वाला भ० होवे आ० आचार्य उ० उपाध्याय के ग० गणमें अ० अनुत्पन्न उ० उपकरण स० सम्यक् उ० प्राप्त करना भ० होवे आ० आचार्य उ० उपाध्याय के ग० गणमें उ० उत्पन्न उ० उपकरण को स० सम्यक्

सूत्र

सत्तागइया एवंचेव, सत्तण्हवि गइरागई भाणियव्वा, जाव उब्भियात्ति ॥ ३ ॥ आयरिय उवज्झायस्सणं गणंसि सत्तसंगहट्ठाणा प० तं० आयरियउवज्झाए गणंसि आणंवा धारणंवा सम्मं पउंजित्ता भवइ, एवं जहा पंचट्ठाणे जाव आयरियउवज्झाए गणंसि आपुच्छियचारियावि भवइ, णो अपुच्छियचारीयावि भवइ, आयरियउवज्झाएणं गणंसि अणुप्पन्नाइं उवकरणाइं सम्मं उप्पाइत्ता भवइ, आयरियउवज्झाएणं गणंसि

भावार्थ

और सात आगति जानना ॥ ३ ॥ आचार्य उपाध्याय के गच्छ में सात संग्रह स्थान कहे हैं १ आचार्य उपाध्यायके गच्छमें आज्ञा पूर्वक सूत्र अर्थको सम्यक् प्रकारसे धारे सो साधु संग्रहरूप है, इसतरह पांचवा ठाणामें जैसा अधिकार कहा है वैसा आचार्य उपाध्यायकी आज्ञा अनुसार चले, वहां तकका सब अधिकार

शब्दार्थ

सा० रक्षे सं० गोपवे भ० होवे ॥ ४ ॥ आ० आचार्य उ० उपाध्याय के ग० गणमें स० सात अ० असंग्रह स्थान आ० आचार्य उ० उपाध्याय के ग० गणमें आ० आज्ञा धा० धारणा नो० नहीं स० सम्यक् प० प्रयुंजना भ० होवे ए० ऐसे जा० यावत् उ० उपकरण नो० नहीं स० सम्यक् सा० रक्षे सं० गोपवे भ० होवे ॥ ५ ॥ स० सात पिं० पिंडैषणा ॥ ६ ॥ स० सात पा० पानी की एषणा ॥ ७ ॥ स० सात ओ०

सूत्र

पुव्वुप्पन्नाइं उवकरणाइं सम्मं सासक्खित्ता संगोवित्ता भवइ ॥४॥ आयरियउवज्झायस्सणं गणंसि सत्तअसंगहट्ठाणा प० तं० आयरियउवज्झाएणंगणंसि आणंवा धारणंवा नोसम्मं पउंजित्ता भवइ, एवं जाव उवगरणाणं नोसम्मं सारक्खित्ता संगोवेत्ता भवइ ॥ ५ ॥ सत्तपिंडेसणाओ प० ॥ ६ ॥ सत्तपाणेसणाओ पण्णत्ताओ ॥ ७ ॥

भावार्थ

जानना विशेष में ६ आचार्य उपाध्यायके गच्छमें वस्त्र पात्रादि उपकरण न होवे तो उसे प्राप्त करनेको समर्थ होवे, ७ आचार्य उपाध्यायके गच्छमें जोवस्त्र पात्रादि होवे उसे सम्यक् प्रकारसे रखे खराब होने देवे नहीं ॥४॥ आचार्य उपाध्यायके गच्छमें सात असंग्रह स्थान कहे हैं:-आचार्य उपाध्यायके गच्छमें आज्ञा धारना सम्यक् प्रकारसे प्रयुंजे नहीं यावत् प्राप्त वस्त्र पात्रादि उपकरण की रक्षाकरे नहीं और खराब करे ॥ ५ ॥ सात प्रकारकी पिण्डेषणा (आहार ग्रहण करनेरूप प्रतिज्ञा) ॥ ६ ॥ सातप्रकारकी पानी ग्रहण करने रूप प्र-

शब्दार्थ

अवग्रह प्रतिमा ॥ ८ ॥ स० सप्त स० सप्तैकेक ॥ ९ ॥ स० सात म० बडे अध्ययन ॥ १० ॥ स० सात स० सप्तमिका भि० भिक्षुप्रतिमा ए० गुनपचास रा० अहोरात्रि से ए० एक छ० छन्नु भि० भिक्षाशत अ० यथासूत्र जा० यावत् आ० आराधिक भ० होवे ॥ ११ ॥ अ० अधोलोक में स० सात पु० पृथ्वी स०

सूत्र

सत्तओगाह पडिमाओ पण्णत्ताओ ॥ ८ ॥ सत्तसत्तिक्कया प० ॥ ९ ॥ सत्तमहज्झय णा प० ॥ १० ॥ सत्त सत्तमियाणं भिक्खुपडिमा एगूणपन्नयाए राइंदिएहिं एगेगय छण्णउएणं भिक्खासएणं अहासुत्तं जाव आराहियावि भवइ ॥ ११ ॥ अहेलोगेणं

भावार्थ

तिज्ञासो पानैषणा कही ॥ ७ ॥ सात प्रकारकी अवग्रह पडिमा (उपाश्रय ग्रहण करने की प्रतिज्ञा) ॥ ८ ॥ सात सप्तैकेक कहे १ स्थान सप्तैकेक २ नेषेधिकी सप्तैकेक ३ उच्चारप्रश्रवण सप्तैकेक ४ शब्द सप्तैकेक ५ रूप सप्तैकेक ६ परक्रिया सप्तैकेक और ७ अन्योन्य क्रिया सप्तैकेक ॥९॥ द्वितीय सूयगडांग सूत्र के प्रथम श्रुत स्कंध की अपेक्षासे बडे द्वितीय श्रुत स्कंध के सात महा अध्ययन कहे हैं १ पुंडरीक २ क्रिया, ३ आहार परिज्ञा ४ प्रत्याख्यान परिज्ञा ५ भाषा परिज्ञा ६ आर्द्रकुमार और ७ उदक पेढाल पुत्र ॥ १० ॥ सात सप्तमिका साधु प्रतिज्ञा [अभिग्रह रूप] कही. उसकी ४९ अहोरात्रि होती हैं और १९६ दात आहार की और १९६ दात पानी की होती हैं. ॥ ११ ॥ अधोलोक में सात पृथ्वी, सात घनोदधि सात घनवात, सात

सात घनोदधि स० सात घ० घनवात स० सात त० तनुवात स० सात उ० उवासांतरा ए० इन स० सात उ० आंतरे में स० सात त० तनुवात प० प्रतिष्ठित स० सात त० तनुवात में स० सात घ० घनवात प० प्रतिष्ठित स० सात घ० घनवात में स० सात घ० घनोदधि प० प्रतिष्ठित स० सात घ० घनोदधि में पिं० पिंडग पि० पृथुल सं० संठान से सं० संस्थित स० सात पृथ्वी प० प्रथम जा० यावत् स० सातमी स० सात पृथ्वी के स० सात णा० नाम घ० घम्मा वं० वंशा से० सेला अं० अंजना रि० रिष्टा म० मघा

सत्तपुढवीओ पण्णत्ताओ, सत्तघणोदहीओ पण्णत्ताओ, सत्तघणवायाओ प० सत्ततणुवाया प०, सत्तउवासंतरा प०, । एएसुणं सत्तसु उवासंतरेसु सत्त तणुवाया पइट्ठिया, एएसुणं सत्तसु तणुवाएसु सत्तघणवाया पइट्ठिया, सत्तसु घणवाएसु सत्त-घणोदही पइट्ठिया, एएसुणं सत्तसु घणोदहीसु पिंडलगपिहुलसंठाणसंठियाओ सत्तपुढवीओ पण्णत्ताओ तं० पढमा जाव सत्तमा । एयासिणं सत्तण्हं पुढवीणं सत्त-णामधेज्जा प०तं० घम्मा वंसा सेला, अंजणा, रिट्ठा, मघा, माघवई । एयासिणं सत्त-

तनुवात, सात उवासंतरा [पृथ्वी का अंतर] कहे हैं. उन आंतरे में सात तनुवात रहे हैं उन तनुवात में सात घनवात रहे हैं, सात घनवात में सात घनोदधि, उन घनोदधि में पिंडग पृथुल संस्थान वाली सात पृथ्वी रही हैं जिनके नाम १ घम्मा, २ वंशा, ३ सेला ४ अंजना ५ रिष्टा ६ मघा और ७ माघवती. इन

शब्दार्थ

मा० माघवती स० सात पु० पृथ्वी के स० सात गो० गोत्र र० रत्नप्रभा स० शर्करप्रभा वा० बालुकप्रभा पं० पंकप्रभा धू० धूमप्रभा त० तमा त० तमतमा ॥ १२ ॥ स० सात प्रकार का बा० बादर वायुकाय पा० पूर्वका प० पश्चिम का दा० दक्षिण का उ० उत्तर का उ० ऊर्ध्ववायु अ० अधो वायु वि० विदिशा का ॥ १३ ॥ स० सात सं० संस्थान दी० दीर्घ र० लघु व० वर्तुल तं त्रिंस च० चतुरंस पि० पहोला प० परिमंडल ॥ १४ ॥ स० सात भ० भयस्थान इ० यह लोक प० परलोक आ०

सूत्र

इमं पुढवीणं सत्तगोत्ता प० तं० रयणप्पभा, सक्करप्पभा, बालुयप्पभा, पंकप्पभा, धूमप्पभा तमा, तमतमा ॥ १२ ॥ सत्तविहा बायर वाउकाइया प० तं० पाईणवाए, पडीणवाए, दाहिणवाए, उदीणवाए, उड्ढवाए, अहेवाए, विदिसिवाए॥ १३ ॥ सत्तसंठाणा प० तं० दीहे, रहस्से, वट्टे, तंसे, चउरंसे, पिहुले, परिमंडले ॥ १४ ॥ सत्त भयट्ठाणा प० तं० इहलोगभए, परलोगभए, आदाणभए, अकम्हाभए, वेयणाभए, मरणभए, असिलोग-

भावार्थ

सात पृथ्वी के सात गोत्र कहे हैं १ रत्नप्रभा २ शर्कर ३ बालुक प्रभा ४ पंकप्रभा ५ धूमप्रभा ६ तमा और ७ तमतमा प्रभा ॥ १२ ॥ बादर वायु काया के सात भेद कहे हैं. पूर्व का, पश्चिम का, दक्षिण का, उत्तर का, ऊर्ध्व का अधो का और विदिशा का ॥ १३ ॥ सात संस्थान कहे हैं १ दीर्घ, २ ह्रस्व ३ वर्तुलाकार ४ त्रीकोन ५ चतुष्कोन ६ पहोला और ७ परिमंडल [वलियाकार] ॥ १४ ॥ सात प्रकार के

शब्दार्थ

आदान अ० अकस्मात् वे० वेदना म० मरण अ० अपयश ॥ १५ ॥ स० सात ठा० स्थान से छ० छद्मस्थ जा० जानना पा० प्राणातिपात करना मु० मृषा व०बोलता अ० अदत्त आ० लेना स० शब्द फ० स्पर्श र० रस रू० रूप गं० गंध आ० स्वादलेना पू० पूजा स० सत्कार अ० वांछता सा० सावद्य को प० प्ररूपता प० सेवता णो० नहीं ज० यथा वा० बोलता त० तथा का० करता ॥ १६ ॥ सात स्थान

मूत्र

भए ॥ १५ ॥ सत्तहिं ठाणेहिं छउमत्थं जाणेजा, तं० पाणेअइवाएत्ता भवइ, मुसंवदित्ता भवइ, अदिन्नमाइत्ता भवइ, सद्दफरिसरसरूवगंधेआसदेत्ता भवइ, पूयासक्कारमणुवूहेत्ता भवइ, इमंसावज्जंति पण्णवेत्ता पडिसेवेत्ता भवइ, णोजहावादी तहाकारीयावि भवइ ॥ १६ ॥ सत्तहिं ठाणेहिं केवली जाणेजा तं० णो पाणेअइवाएत्ताभवइ, जाव ज-

भावार्थ

भयके स्थानक कहे हैं १ इस लोक का भय (सो मनुष्य को मनुष्य का भय) २ परलोक भय सो मनुष्य को तिर्यंचादि का भय ३ आदान भय सो लेने का भय ४ अकस्मात् भय सो अनजानते भय आजावे ४ वेदना रोगादिक का भय ६ मरण और ७ अपयश का भय ॥ १५ ॥ सात कारन से छद्मस्थ जाना जाता है. १ प्राणातिपात करने से २ मृषावाद बोलने से ३ अदत्तादान लेने से ४ शब्द रूप गंध व रसादिक का आस्वादन करनेसे ५ पूजा सत्कार इच्छने से ६ यह सावद्य काम है वैसा उपदेश देकर उस का सेवन करनेसे और ७ और जैसा कहे वैसा नहीं करने से ॥ १६ ॥ सात कारन से केवली जान

शब्दार्थ

से के० केवली जा० जानता णो० नहीं पा० प्राणातिपात करता जा० यावत् ज० यथा बो० बोलता त० तथारूप का० करता ॥ १७ ॥ स० सात मू० मूलगोत्र का० काश्यप गो० गौतम व० वत्स को० कुत्स को० कौशिक मं० मंडप व० वासिष्ठ जे० जो का० काश्यप ते० वह स० सात प्रकार का ते० तेकाश्यप त० तेसांडिल्य ते० तेगोल ते० तेवाल ते० तेमुंज ते० तेपर्वत ते० तेवरिसकृष्ण जे० जो गो० गौतम ते० वह स० सप्तविध ते० तेगोतम ते० तेगर्ग ते० भारद्वाज ते० तेअंगिरस ते० तेशर्कराभ ते० तेभास्कराभ ते०

सूत्र

हा वाइंतहाकारियावि भवइ ॥ १७ ॥ सत्तमूलगोत्ता प० तं० कासवा, गोयमा, वत्था, कोत्था, कोसिया, मंडवा, वासिट्ठा ॥ जे कासवा ते सत्तविहा प० तं० तेकासवा, तेसंडिल्ला, तेगोला, तेवाला, तेमुंजतिणो, तेपव्वतिणो, तेवरिसकण्हा ॥ जे गोयमा ते सत्तविहा प० तं० तेगोयमा, तेगग्गा, तेभारद्दा, तेअंगिरसा, तेसक्कराभा, तेभक्खराभा, तेउदत्ताभा ॥ जे वत्था ते सत्तविहा प० तं० तेवत्था, तेअग्गिया, तेमि-

भावार्थ

सकते हैं प्राणातिपात नहीं करनेसे यावत् जैसा कहे वैसा करने से ॥ १७ ॥ सात मूल गोत्र कहे हैं १ काश्यप, २ गौतम ३ वत्स ४ कुत्स, ५ कौशिक ६ मंडप और ७ वासिष्ठ. उस में से काश्यप गोत्र सात प्रकार के कहे हैं १ काश्यप, २ सांडिल्य ३ गोल ४ वाल ५ मुंज ६ पर्वत और ७ वरिसकन्ह. गौतम गोत्रके सात भेद १ गौतम, २ गर्ग ३ भारद्वाज ४ अंगीरस ५ शर्कराभ ६ भास्कराभ औ ७ उदत्ताभ.

शब्दार्थ

तेउदग्गाभ जे० जो व० वत्स ते० वह स० सप्तविध ते० तेवत्स ते० तेअंगिय ते० तेमित्तिय ते० तेसामलीण ते० तेसेलवय ते० तेअस्थिसेन ते० तेवायुकृष्ण जे० जो को० कुत्स ते० वह स० सप्तविध ते० तेकुत्स ते० तेमौद्गलायन ते० तेपिंगतण ते० तेकोडिन्न ते० तेमंडलीक ते० तेहारित ते० तेसामभेजी जे० जो को० कौशिक ते० वह स० सप्तविध ते० तेकौशिक ते० तेकात्यायन ते० तेशालंकायन ते० तेगोलिंकायन ते० ते० तेपरिकंकायन ते० तेअगिच्चा ते० तेलोहित्य जं० जो मं० मंडप स० सप्तविध ते० तेमंडप ते० तेआ

सूत्र

त्तिए, ते सामलिणो, तेसेलयया, तेअट्ठसेणा, तेवायकण्हा ॥ जे कोत्था तेसत्तविहा प० तं० तेकोत्था, तेमोग्गलायणा, तेपिंगायणा, तेकोडीणा, तेमंडलिणो तेहारिया, तेसोमया ॥ जे कोसिया तेसत्तविहा प० तं० तेकोसिया, तेकच्चायणा, तेसालंकायणा, तेगोलिकायणा, तेपारिकंकायणा, तेअगिच्चा, तेलोहिच्चा ॥ जे मंडवा तेसत्तविहा प० तं० तेमंडवा, तेआरिट्ठा, तेसंमुत्ता, तेहेरा, तेएलावच्चा, तेकंतेल्ला, तेक्खायणा ॥

आवार्थ

वत्सगोत्र के सातभेद १ वत्स, २ अंगिय, ३ मित्तिय ४ सामलीण ५ सेलवय ६ अस्थिसेन और ७ वायुकृष्ण. कुत्स गोत्र के सात भेद १ कुत्स २ मौद्गलायन ३ पिंगतण ४ कोडिन्न ५ मंडलीक ६ हारित और ७ सामभेजी. कौशिक गोत्र के सात भेद १ कौशिक २ कात्यायन ३ शालंकायन ४ गोलिकायण ५ परिकंकायन ६ अगिच्चा और ६ लौहित्य. मंडप गोत्र के सात भेद १ मंडप २ आरिष्ट

शब्दार्थ रिष्ट ते० तेसंमुत ते० तेभेला ते० तेएलापत्य ते० तेकंतेल्ल ते० तेखायण जे० जो बा० वासिष्ठ स० सप्तविध ते० तेवासिष्ठ ते० तेउंजायण ते० तेजारुकन्हा ते० तेवग्घावच्चस ते० तेकोडिन्न ते० तेसन्नि ते० तेपारासर

सूत्र जे वासिट्ठा तेसत्तविहा प० तं० तेवासिट्ठा, तेउंजायणा, तेजारुकण्हा, तेवग्घावच्चा, तेकोडिन्ना, तेसत्ती, तेपारासरा ॥ १८ ॥ सत्तमूलणया प० तं०

भावार्थ ३ संमुत ४ भेला ५ एलापत्य ६ कंतेल्ल और ७ खायण. वासिष्ठ गोत्र के सात भेद १ वासिष्ठ २ उंजायण ३ जारुकन्हा ४ वग्घावच्चस ५ कोडिन्न ६ सन्नी ७ पारासर ॥ १८ ॥ मूल सात नय हैं १ निगमेषु वार्थबोधेषु कुशलो भवो वा नैगमः अथवा नैकेगमाः पंथानो यस्य स नैकगम अर्थात् जिसके अनेक मार्ग (विकल्प) होवे, अनेक गमसे वस्तु को माने. और वस्तु में एकांशगुण होने से ही वस्तु मानता है वैसेही संपूर्ण गुण होनेसे भी वस्तु को वस्तु मानता है. २ संग्रह-भेदा न्संगृह्यन्ते वा भेदा संगृह्यन्ते येन स संग्रहःभिन्न २ भेदों का जो संग्रह कह सकता है अर्थात् किसी वस्तु का नाम लेनेसे सब वस्तु का संग्रह करे. ३ व्यवहार नय जो विशेष में देखने में आवे; उसकी मुख्यतासे उसी गुणमय उस वस्तु को माने सो व्यवहार नय ३ ऋजुसूत्र ऋजु-सरल सूत्रबोध जो वस्तु का अर्थग्रहण सरलता से होवे सो ऋजुसूत्र नय. ५ शब्दनय सो जिस से वस्तु को बोलाने में आवे और उस नामसे ही अन्य समझे और उसी के अनेक नाम होनेपर एक ही अर्थ करे सो शब्द नय ६ समभिरूढ नय जो २ पर्याय

॥ १८ ॥ स० सात मृ० मूलनय ने० नैगम सं० संग्रह व० व्यवहार उ० ऋजुसूत्र स० शब्द स० समभिरूढ ए० एंभूत ॥ १९ ॥ स० सप्त स० स्वर ष० षड्ज रि० रिषभ गं० गांधार म० मध्यम पं० पंचम धे०

नेगमे, संगहे, ववहोर, उज्जुसुए, सद्दे; समभिरूढे, एवंभूते ॥ १९ ॥

जिस २ अर्थ में होवे उस २ पर्याय को उस ही अर्थ में ग्रहण करे. और ७ एंभूतनय जिस प्रकार पदार्थ होवे उसी प्रकार के सर्व गुण संपन्न यदि वह पदार्थ होवे, एक गुणकी भी हीनता न होवे, और जिस क्रिया के योग्य होवे उसी क्रिया में प्रवर्ता हुआ होवे तो वस्तु को वस्तु माने. ये सातों नय एक एक से अधिक विषय वाली हैं संग्रह नय वाला सामान्य ग्रहण करता है और नैगमनयवाला सामान्य विशेष दोनों ग्रहण करता है. व्यवहार नयवाला एक आकृति युक्त वस्तु ग्रहण करता है और संग्रह नय वाला आकृति उत्पन्न होने की सत्ता को भी ग्रहण करता है. व्यवहार नयवाला मृत्तिका से घट बना हुआ है उसे घट कहता है, और संग्रह नय वाला मृत्तिका के पिंडसे घट बन रहा है उसे भी घट कहता है. ऋजुसूत्र नय वाला भूत भविष्य छोडकर वर्तमान अवस्था ही मानता है; जब व्यवहार नय वाला तीनों काल को मानता है. शब्दनयवाला लिंग वचन में भेद नहीं मानता है और ऋजुसूत्रनयवाला लिंग वचनादि में भेद मानता है. शब्द नय अर्थवाचक पर्याय को ही ग्रहण करता है; और ऋजुसूत्र नय एक पर्याय को ग्रहण करता है, एंवभूत नय प्रति समय क्रिया करने के भाव को ग्रहण करे; और समभिरूढ क्रिया को ग्रहण करे. विशेष खुलासा अनुयोगद्वार सूत्र में जानना ॥ १९ ॥ सात स्वर कहे हैं. १ षड्ज २ रिषभ

शब्दार्थ

धैवत धे० निषाद स० स्वर स० सात वि० कहैं ए० इन स० सात स० स्वर के स० सात स० स्वरस्थान स० षड्ज अ० अग्र जि० जिव्हा के उ० हृदय में रि० रिषभस्वर कं० कंठाग्र मे गं० गांधार म० मध्य में जि० जिव्हा के म० मध्यम णा० नासिका में पं० पंचम बू० कहा दं० दंतोष्ठ में धै० धैवत मु० मूर्द्धा में णे० निषाद स० स्वर स्थान वि० कहै स० सात स्वर जी० जीवनिश्रित स० षड्ज र० बोलता है म० मयूर कु० मूरगा रि० रिषभ स्वर हं० हंस ण० बोलता है गं० गांधार म० मध्यम को ग० बकरा

सूत्र

सत्तसरा प० तं० (गाथा) सजे रिसभे गंधारे। मज्झिमे पंचमे सरे ॥ धेवते चेव णेसादे। सरासत्त वियाहिया ॥ १ ॥ (सूत्र)—एएसिणं सत्ताण्हं सराणं सत्तसरट्ठाणा प० तं० (गाथा)—सजं तु अग्गजिब्भाए। उरेणरिसभं सरं॥ कण्ठुग्गएण गंधारं। मज्झजिब्भाए मज्झिमं ॥१॥ णासाए पंचमं बूया। दंतोट्ठेणय धेवयं ॥ मुद्धाणेणयणेसायं। सरट्ठाणा वियाहिया ॥ २ ॥ (सूत्र) सत्तसरा जीव निस्सिया प० तं० (गाथा) सजंरवइमयूरो।

भावार्थ

३ गांधार ४ मध्यम ५ पंचम ६ धैवतस्वर और ७ निषाद. इन सातों स्वर के सात स्वर स्थान कहे हैं षड्ज का स्थान जिव्हा का अग्रभाग २ रिषभ का स्थान हृदय ३ गांधारका स्थान कंठाग्र ४ मध्यम का स्थान जिव्हा का मध्यभाग ५ पंचम स्वर का स्थान नासिका ६ धैवत का स्थान दांत-वओष्ठ और ७ कपाल से बोलना सो निषाद स्वर. अब सात स्वर जीव निश्रित कहे हैं अर्थात्

शब्दार्थ कु० कुसुम की सं० उत्पत्ति का० वक्त में को० कोकिला पं० पंचमस्वर को छ० छठा सा० सारस को० क्रौंच णे० निषाद स० सातवाको ग० गज स० सप्तस्वर अ० अजीवनिश्रित स० षड्ज र० बोले मु० मादल गो० गौमुखी रि० रिषभस्वर सं० शंख ण० बोलता है गं० गांधार म० मध्यम को झ० झालर च० चार च० पगसे प० रही हुई गो० गोहिआ पं० पंचमस्वर को आ० ढोलका धे० धैवत म० महाभेरी स० सातमा को ए० इन स० सात स० स्वर के स० सात लक्षण स० षड्ज से ल० प्राप्त

सूत्र कुक्कुडो रिसभं सरं ॥ हंसो णदइ गंधारं । मज्झिमं तु गवेलगा ॥ १ ॥ अहकुसुमसंभवे काले । कोइला पंचमं सरं ॥ छट्ठं चसारसा कोंचा । णेसायं सत्तमं गओ ॥ २ ॥ (सूत्र) सत्तसरा अजीवनिस्सिया प० तं० (गाथा) सज्जं रवइ मुत्तिंगो । गोमुही रिसभंसरं ॥ संखो णदइ गंधारं ॥ मज्झिमं पुण झल्लरी ॥ १ ॥ चउचलणपइट्ठणा । गोहिया पंचमं सरं ॥ आडंवरोय धेवययं । महाभेरीय सत्तमं ॥ २ ॥ (सूत्र) एएसिणं सत्ताण्हं सराणं सत्तालक्खणा

भावार्थ जानवरों की बोली से सातों स्वरों की पहिचान करवाते हैं. १ षड्ज स्वर मयूर बोलता है २ कुर्कट रिषभ स्वर बोलता है ३ हंस गांधारस्वर उच्चारताहै ४ मध्यमस्वर बकरा बोलता है ५ पंचम स्वर कोकिला करतीहै ६ धैवत स्वर सारस बोलता है और ७ हस्ती निषाद स्वरसे बोलता है जैसे जीव निश्रित स्वर कहें वैसेही अजीव निश्रित स्वर कहते हैं १ षड्ज स्वर मादलका होताहै २ रिषभस्वर गौ-

शब्दार्थ

होवे वि० लक्ष्मी क० कदापि न० नहीं वि० विनसे गा० गाय मि० मित्र पु० पुत्र णा० नारीको व० वल्लभ रि० रिषभ से ए० ऐश्वर्य से० सेनापति ध० धनपति व० वस्त्र गं० गंध अ० अलंकार इ० स्त्री स० शयन गं० गांधारसे गी० गीतयुक्त व० वाद्यवृत्ति क० कलाशिखावुहा क० कवि प० प्रज्ञावंत जे० जो अ० अन्य स० शास्त्रपारगामि म० मध्यमस्वरवाला भ० होताहै सु० सुखसेजीनेवाला खा० खाता है पि० पीताहै दे० देताहै म० मध्यम ल० स्वराश्रित पं० पांचवास्वरवाला भ० होताहै पु० पृथ्वीपति सू०

सूत्र

प० तं० (गाथा-) सज्जेण लभइ वित्तिं । कयंचन विणस्सइ ॥ गावो मित्ताय पुत्ताय । णारीणंचेववल्लहो ॥ १ ॥ रिसभेणउ एसज्जं । सेणावच्चं धणाणिय ॥ वत्थगंधमलंकारं । इत्थीओ सयणाणिय ॥ २ ॥ गंधारेगीयजुत्तिण्णा । वज्जवित्तिकलाहिया ॥ भवंति कविणो-पन्ना । जे अन्नसत्थपारगा ॥ ३ ॥ मज्झिमसरसंपन्ना । भवंतिसुहजीविणो ॥ खायति पि-यतिदेति । मज्झिमं सरमस्सिओ ॥ ४ ॥ पंचमसरसंपन्ना । भवंति पुढवीवई ॥ सूरासंगह-

भावार्थ

मुखीका होताहै ३ गांधारस्वर शंखका होता है ४ मध्यमस्वर झालरका ५ पंचमस्वर दुंदरीका ६ धैवत स्वर ढोलका और ७ निषादस्वर महाभेरीका होताहै. सातस्वरके सात लक्षण कहेहैं १ षड्ज स्वर वालेको लक्ष्मी पुत्र भी मित्र गाय वगैरह वस्तुओंकी प्राप्ति होती है और कीसी प्रकार का विनाश नहीं होता है वैसेही स्त्री को वल्लभ होता है २ रिषभ स्वरवाला राज्यका सेनापति होवे धन, वस्त्र, गंध अलंकार, स्त्री,

१ यह एक जातिका वादित्र होता है.

शब्दार्थ

सूर स० संग्रह क० करनेवाला अ० अनेक ग० गण णा० नायक धे० धैवत स० स्वरसंपन्न भ० होवे क० कलहप्रिय सा० हिंसक व० शिकारी सो० शूकर म० मच्छ बं० बांधने वाला चं० चांडाल मु० मौष्टिकमल्ल जे० जो अ० अन्य पा० पापकर्मी गो० गोघातक चो० चोर णि० निषाद स० स्वराश्रित ए० इन स० सात स० स्वर के त० तीन गा० ग्राम स० षड्जग्राम म० मध्यमग्राम गं० गांधारग्राम स०

सूत्र

कत्तारो। अणेग गणणायगा ॥ ५ ॥ धेवयसरसंपन्ना। भवंतिकलहप्पिया ॥ साउणित्ता-
गुरिया। सोयरियामच्छबंधाय ॥ ६ ॥ चंडालामुट्ठियामेया। जे अन्नेपावकम्मिणो।
गोघायगा य जे चोरा। णेसायं सरमस्सिता ॥ ७ ॥ (सूत्र) एएसिणं सत्तण्हं सराणं
तयो गामा प० तं० सज्जगामे, मज्झिमगामे, गंधारगामे, । सज्जगामस्सणं सत्तमुच्छ-

भावार्थ

शैय्या आसन वगैरह पावे ३ गांधारवाला कवीश्वर बुद्धिवाला व धनुर्विद्यादि शस्त्र का पारगामी होवे ४ मध्यम स्वर वाला सुखस आजीविका करे खावे पीवे देवे वगैरह करे ५ पंचम स्वर वाला पुरुष पृथ्वीपति होवे अथवा अनेक समुदाय का नायक होवे. ६ धैवत स्वरवाला कलहप्रिय होवे जीव हिंसा करने वाला होवे और ७ निषाद स्वरवाला पुरुष चांडाल मौष्टिकमल्ल तथा अन्य जो पापकारी कामों होवे उसको करने वाला होवे. इन सातों स्वर के तीन ग्राम कहे हैं १ षड्ज स्वरग्राम २ मध्यम स्वर ग्राम ३ और गांधार ग्राम. षड्ज ग्राम की सात मूर्च्छना (अन्य स्वर को उत्पन्न करना सो) १ मंगी

शब्दार्थ

षड्जग्राम की स० सात मु० मूर्च्छना मं० मंगी को० कौरवी ह० हरीत र० रजनी सी० सीरकांता सा० सारसी मु० श्रुतसज्जा म० मध्यमग्राम के स० सात मु० मूर्च्छना उ० उत्तरमंदा र० रजनी उ० उत्तरा उ० उत्तरसमा अ० अश्वकांता सौ० सौवीरा अ० अभिरूपवती गं० गांधारग्राम की स० सात मु० मूर्च्छना णं० नदीता खु० खुद्रिमा पू० पूरीमा सु० शुद्धगांधारा उ० उत्तरगांधारा सु० सुष्ठुतर आयमा सा० सह छ० छठी णि० निश्चय सा० वह ना० जाना अ० अथ उ० उत्तराकोडी स० सातवी मु० मूर्च्छना स० सात स० स्वर

सूत्र

णाओ पण्णत्ताओ तं० (गाथा) मंगीकोरव्वीया हरीय। रयणीय सीरकंताय ॥ छट्ठिय सारसीणाम। सुद्धसज्जायसत्तमा ॥ १ ॥ (सूत्र) मज्झिम गामस्सणं सत्तमुच्छणाओ प० तं० (गाथा) उत्तरमंदा रयणी। उत्तरा उत्तरासमा ॥ अस्सोकंतायसोवीरा। अभीरूहवईसत्तमा ॥ १ ॥ (सूत्र) गंधारगामस्सणं सत्तमुच्छणाओ प० तं०(गाथा) णंदीय खुद्दिमा पूरिमा। चउत्थीय सुद्धगंधारा ॥ उत्तरगंधारावि य। पंचमिया हवइ

भावार्थ

२ कौरवी ३ हरीत ४ रजनी ५ सीरकांता ६ सारसी ७ श्रुतसज्जा. मध्यम ग्रामकी सात मूर्च्छना कही १ उत्तर मंदा, २ रजनी ३ उत्तरा ४ उत्तर समा ५ अश्वकान्ता ६ सौवीरा और ७ अभिरूपवती. गांधार ग्राम की सात मूर्च्छना कहीं १ नंदिता २ खुद्रिमा ३ पूरिमा ४ शुद्ध गांधारा ५ उत्तर गांधारा ६ सुष्ठुतर आयमा और ७ उत्तरा कोडी. सात स्वर कहांसे उत्पन्न होते हैं? गाने की कोनसी

शब्दार्थ क० कहां से सं० उत्पन्न होता है ग० गानेकी का० कौनसी भ० है जो० योनि क० कितने स० समय उ० उश्वास क० कितने गे० गाने के आ० आकार स० सात स० स्वर णा० नाभि से भ० होते हैं गी० गाना रु० रोना जो० योनि पा० पद स० सम उ० उश्वास ति० तीन गी० गाने के आ० आकार आ० प्रथम मि० मृदु आ० आरंभ में स० जोर से म० मध्य में अ० छेल्ले ति० हलका ति० तीन गे०

सूत्र मुच्छाओ ॥ १ ॥ सुदुत्तरमायामा । साछट्ठी णियमसाउनायव्वा ॥ अहउत्तरायकोडी । मायसा सत्तर्मामुच्छा ॥ २ ॥ सत्तसरा कओ संभवंति । गेयस्स का भवइ जोणी ॥ कइसमया उस्सासा । कइवा गेयस्स आगारा ॥ १ ॥ सत्तसरा णाभीओ भवति । गीतंचरुन्नजोणीयं ॥ पादसमाउस्सासा । तिन्नि य गेयस्स आगारा ॥ २ ॥ आइमिउआरभंता, समुव्वहंताय

भावार्थ योनि है ? कितना काल लगता है ? गीत के कितने आकार हैं ? उत्तर. सातों स्वर नाभि मंडल से उत्पन्न होते हैं. गीतकी और रुदन की एक ही योनी है; क्योंकि दोनों की जाति एक है. श्लोक के पदका उच्चारण करते जितना श्वासोश्वास लगे उतना उसका काल है. गीत के तीन आकार छ दोष आठ गुण और वृत्तपद्य के तीन प्रकार कहे हैं. उन्हे जानकर जो गीत गाता है वह ही शिक्षित कहा जा सकता है. तीन आकार का स्वरूप कहते हैं. प्रारंभ में मृदु, मध्य में बडी गीत धरने और अंत में क्षय पाते हुई हलकी होवे. छ दोष कहते हैं १ डरता हुवा गावे २ शीघ्रगावे ३ शनैःगावे ४ विना ताल से गावे ५ काकस्वर से

शब्दार्थ

गाने का आ० आकार छ० छद्दोष अ० अष्टगुण ति० तीन वि० वृत्त दो० दो भ० कहा जो० जो णा० जाने सो० सो गा० गावे सु० अच्छाशिखा हुवा रं० रंगमध्य में भी० डरता दु० शीघ्रता से र० लघुता से गा० गाता मा० साचवे नहीं ता० ताल को का० काकस्वर अ० नाक में हों० है गे० गायन का छ० छद्दोष पु० पूर्ण र० रक्त अ० अलंकृत व० व्यक्त त० तथा अ० अविस्वर म० मधुर सु० सुकुमार अ० आठगुण हों० हैं गे० गाने का उ० उर कं० कंठ सि० शिर प० प्रशस्त गि० गाना म० मृदुता से आ०

सूत्र

मज्झगारंमि, अवसाणेतज्झिविंतो, तिन्नियगेयस्स आगारा ॥ ३ ॥ छद्दोसे अट्ठगुणे, तिन्नियवित्ताइं दोयभणियाओ; जोणाहिइ सो गाहिइ, सुसिक्खिओ रंगमज्झंमि ॥ ४ ॥ भीतं दुतं रहस्सं। गायंतोमायगाहिउत्तालं॥ काकस्सरमणुणासं च। होंति गेयस्स छद्दोसा ॥५॥ पुन्नं रत्तं चअलंकियं। ववत्तं तहाय अविघुट्ठं ॥ मधुरं समसुकुमालं ॥ अट्ठगुणा

भावार्थ

गावे, ८ नाक से गावे. आठ गुण १ पूर्णकला सहित गावे २ राग में रक्त बन कर गावे २ अन्य स्वर विशेष से अलंकृत करे ४ स्पष्ट गावे ५ खराब स्वर से गावे नहीं ५ मधुर स्वर से गावे ७ ताल, वंश स्वर से मिलता हुवा गावे और ८ ललित मनोहर रीतिसे गावे यह गाने के आठ गुण बतलाये. उरकंठ व मस्तक से शुद्ध गाना वैसेही घोलवा सहित, पद बद्ध, गेय पद सहित, ताल समान पदका उच्चारण करना, और सात स्वर के सम अक्षरों सहित गाना सो ही गीत कहाता है. दोष रहित, अर्थयुक्त,

शब्दार्थ

घोलना प० पदबद्ध स० समताल प० प्रत्युत्क्षेप स० सातस्वर के सी० सीहर गे० गीत नि० निर्दोष सा० अर्थयुक्त हे० हेतुयुक्त अ० अलंकृत उ० उपसंहारयुक्त सो० उपचारयुक्त मि० सम म० मधुर स० समवृत्त अ०अर्धसम स० सर्वत्र वि०विषम ति०तीन वि०वृत्त प० पद च० चौथा नो० नहीं ल०प्राप्त होवे सं०संस्कृत पा० प्राकृत दु० दोप्रकार के भ० कहना स० स्वर मंडल में गि० गाते प० प्रशस्त भा० कहा के० कौनसी गा० गाती है म० मधुर के० कौनसी गा० गाती है ख० खर रु० रूक्ष के० कौनसी गा० गाती

सूत्र

होंति गेयस्स ॥ ६ ॥ उरकंठसिरपसत्थं च । गिज्जए मउ आरिभियपदंबद्धं ॥ समताल पदुक्खेवं । सत्तसर सीहरंगेयं ॥ ७ ॥ निद्दोसं सारवंतंच । हेतुजुत्तमलंकियं ॥ उवणीयं सोवयारंच, मित्तंमहुरमेवय॥ ८ ॥ सममद्धसमंचेव। सव्वत्थाविसमंचजं, ॥ तिन्निवित्तप-यायाइं, चउत्थंनोवलब्भइ ॥ ९ ॥ सक्कया पागयाचेव, दुविहाभाणिउ आहिया; सर-मंडलंमि गिज्जंते । पसत्थाइसि भासिया ॥ १० ॥ केसी गायइ महुरं । केसी गायइ

भावार्थ

हेतुयुक्त, काव्य के अलंकार युक्त, उपसंहार युक्त, उपचार सहित, अनिष्टुर पदवाला, पदक्षय में प्रमाण युक्त व मधुर शब्दार्थ वाला ही गीत कहलाता है. सब सरीखे अक्षर सो समवृत्त, पहिला तीसरा पदसम और दूसरा चौथा पद बराबर सो अर्धसमवृत्त, और एक भी पद बराबर नहीं सो विषम पद. संस्कृत व प्राकृत इन दोनों प्रकार के श्लोकों में गाना स्वर मंडल में प्रशस्त गिना गया है. अब गायन करती

शब्दार्थ

है च० चतुर के० कौनसी वि० विलम्ब से दु० जलदी के० कौनसी वि० वेस्वर पु० फीर के० कौनसी सा० श्यामा गा० गाती है म० मधुर का० काली गा० गाती है ख० खर रु० रूक्ष गो० गौरी गा० गाती है च० चतुर का० काणी वि० विलंब से दु० जलदी अं० अंधी वि० वेस्वर पिं० पिंगला तं० तंतिसरिखा ता० तामसरिखा ल०लयसरिखा ग० गाथा सरिखा नी०निःश्वास ऊ० उश्वास सरिखा सं० संचार समान स० स्वर स० सात स्वर त० तीन गा० ग्राम मू० मूर्च्छना ए० एकवीस ता० तान ए० गुनपचास सं० समा

सूत्र

खरं च रुक्खंच, केसी गायइ चउरं। केसीविलंबं दुतं केसी॥ ११॥विस्सरं पुण केरिसी। सामा गायइ महुरं। कालीगायइ खरंच रुक्खंच गोरीगायइ चउरं। काणबिलंबं दुतं अंधा॥ १२॥ विस्सरं पुण पिंगला, तंति समंतालसमं; पादसमं लयसमं गहसमंच, नीससिऊसासियसमं, संचारसमा सरासत्त ॥ १३ ॥ सत्तसरा तओगामा, मुच्छणाएगविंसती; ताणा एकूण-

भावार्थ

स्त्रियों की पहिचान बताते हैं. कैसी स्त्री मधुर गाती है? कैसी स्त्री खर व रुक्ष गाती है? कैसी स्त्री चातुर्यता से गाती है? कैसी स्त्री विलंब से गावे? कैसी स्त्री शीघ्रतासे गावे? कैसी स्त्री खराब स्वरसे गावे? श्यामा सोलह वर्ष की स्त्री मधुर गाती है, काली स्त्री रुक्ष गाती है, गौरी स्त्री चतुर्यतासे गाती है, एक नेत्रसे काणी स्त्री विलम्ब से गाती है, अन्धी स्त्री शीघ्र गाति है, और पिंगला कापिला स्त्री खराब स्वर से गाती है.'(गायन विधि) वीणा के शब्द समान गावे, ताल समान, पद समान, लय समान, गाथा समान, निश्वास उश्वास समान, संचार समान, और स्वरांतर समान. सात स्वर, तीन

शब्दार्थ

हुवा स० स्वर मंडल ॥ २० ॥ स० सात प्रकार का का० कायाक्लेश ग० कायोत्सर्ग उ० ऊकडु आसन प० भिक्षुप्रतिमा बी० वीरासन णे० सिंहासन दं० दंडासन सं० लगडासन ॥ २१ ॥ जं० जंबूद्वीप में स० सातक्षेत्र भ० भरत ए० एरवत हे० हेमवय ऐ० एरनवय ह० हरिवर्ष र० रम्यकवर्ष म० महाविदेह ॥२२॥ जं० जंबूद्वीप में स० सात व० वर्षधर पर्वत चु० चुल्लहिमवंत म० महाहिमवंत नि० निषढ नी० नीलवन्त रु० रुप्पि सि० शिखरी मं० मेरु ॥ २३ ॥ स० सात म० महानदीयां पु० पूर्वमूव से ल० लवण समुद्र

सूत्र

पण्णासा, संमत्तं सरमंडलं ॥ १४ ॥ २० ॥ सत्तविहे कायकिलेसे प० तं० ठाणाइए, उकुडुआसाणिए, पडिमट्ठाई, वीरासणिए, णेसज्जिए, दंडायइए, लगडंसाई ॥ २१ ॥ जंबूद्दीवेदीवे सत्तवासा प० तं० भरहे, एरवए, हेमवए, एरन्नवए, हरिवासे, रम्मगवासे, महाविदेहे ॥ २२ ॥ जंबूद्दीवेदीवे सत्त वासहरपव्वया प० तं० चुल्लहिमवंते, महाहिमवंते, निसहे, नीलवंते, रुप्पी, सिहरी, मंदरे, ॥ २३ ॥ जंबू-

भावार्थ

ग्राम, एकवीस मूर्च्छना गुनपचास तान. यह सब स्वरूप का संक्षेप में दर्शाने वाला स्वरमंडल पूर्ण हुवा ॥ २० ॥ सात प्रकार का काया क्लेश तप कहा १ कायोत्सर्ग २ उत्कटआसन ३ भिक्षु प्रतिम ४ वीरासन ५ निषद्यासन सिंहकी तरह बैठे ६ दंडासन और ७ लगडासन. ॥ २१ ॥ जम्बूद्वीप में सात क्षेत्र कहे हैं. भरत, एरवत, हेमवय, एरणवय, हरिवर्ष, रम्यक्वर्ष और महाविदेह. ॥ २२ ॥ जम्बूद्वीप में सात वर्षधर पर्वत कहे हैं चुल्ल हिमवंत, महा हिमवंत, निषध, नीलवंत, रूपी, शिखरी और मेरुपर्वत॥२३॥

शब्दार्थ में स० जाती हैं गं० गंगा रो० रोहिता ह० हरीसलीला सी० सीता ण० नरकान्ता सु० सुवर्णकुला र० रक्ता ॥ २४ ॥ स० सात म० बडी नदियां प० पश्चिम मुखसे ल० लवण समुद्र में स० जाती हैं सिं० सिंधु रो० रोहितांसा ह० हरीकान्ता सी० सीतोदा णा० नारीकान्ता रु० रूप्यकूला र० रक्तावती ॥२५॥ धा० धात की खंड के पु० पूर्वार्ध में स० सातक्षेत्र भ० भरत जा० यावत् म० महाविदेह धा० धात की खंड पु० पूर्वार्ध में स० सात वा० वर्षधर पर्वत चु० चुल्लहिमवंत जा० यावत् मं० मेरु धा० धात की खंड

सूत्र

दीवे दीवे सत्तमहानदीओ पुरत्थाभिमुहीओ लवणसमुद्दं समप्पेंति तं० गंगा, रोहिया, हरीसलीला, सीता, णरकंता, सुवन्नकूला, रत्ता ॥२४॥ जंबूद्दीवेदीवे सत्त महानदीओ पच्चत्थाभिमुहीओ लवणसमुद्दं समप्पेंति—सिंधु रोहियंसा, हरिकंता, सीतोदा, णारिकंता, रुप्पकूला रत्तवई ॥ २५ ॥ धायइखंडदीव पुरच्छिमद्धेणं सत्तवासा प० तं० भरहे, जाव महाविदेहे ॥ धायइखंड दीवपुरच्छिमेणं सत्त वासहरपव्वया प०

भावार्थ जम्बूद्वीप में सातबडी नादियां पूर्व के लवण समुद्र में मीलती है गंगा, रोहिता, हरिसलिला, सीता, नरकांता, सुवर्णकूला, और रक्ता. ॥ २४ ॥ जम्बूद्वीप में सात बडी नादियां पश्चिम दिशा के लवण समुद्र में मीलती हैं सिंधु, रोहितांसा, हरिकान्ता, सीतोदा, नारीकान्ता, रूप्यकूला, और रक्तवती ॥ २५ ॥ धातकी खंड

शब्दार्थ

के पु० पूर्वार्ध में स० सात महानदियों पु० पूर्वमूख से का० कालोदधि समुद्र में सं० जाती हैं गं० गंगा जा० यावत् र० रक्ता धा० धात की खंड के पु० पूर्वार्ध में स० सात बडी नदियों प० पश्चिममूख से ल० लवण समुद्र में स० जाती हैं सिं० सिन्धु जा० यावत् र० रक्तवती धा० धात की खंड के प० पश्चिमार्ध में० सातक्षेत्र ए० ऐसेही ण० विशेष पु० पूर्वमूख से ल० लवण समुद्र में प० पश्चिममूख से का० कालोदधि में ॥ १६ ॥ पु० पुष्करार्धद्वीप के पु० पूर्वार्ध में स० सातक्षेत्र त० तैसेही ण० विशेष पु० पूर्वमूख से पु० पुष्करोदधि स० समुद्र में सं० जाती है प० पश्चिममूख से का० कालोदधि समुद्र में सं० जाती हैं ए०

सूत्र

तं० चुल्लहिमवंते जाव मंदरे, ॥ धायइ खंडदीवपुरत्थिमद्धेणं सत्तमहानदीओ पुरत्थाभिमुहीओ कालोदसमुद्दं समप्पेंति तं० गंगा जाव रत्ता ॥ धायइखंडदीव पुरत्थिमद्धेणं सत्तमहानदीओ पच्चत्थाभिमुहीओ लवणसमुद्दं समप्पेंति तं० सिंधू जाव रत्तवई धायइखंडदीव पच्चत्थिमद्धेणं सत्तवासा एवं चेव, णवरं पुरत्थाभिमुहीओ लवणसमुद्दं समप्पेंति पच्चत्थाभिमुहीओ कालोदं सेसंतंचेव ॥ २६ ॥ पुक्खवरदीवड्ढ पुर-

भावार्थ

के पूर्वार्ध में और पश्चिमार्ध में सात क्षेत्र, सात वर्षधर पर्वत, पूर्व पश्चिम के कालोदधि समुद्र में व पश्चिम पूर्वके लवण में मीलने वाली सात २ नदियों जम्बूद्वीप जैसे कही हैं. ॥ २६ ॥ पुष्करवरद्वीपार्ध के पूर्व में व पश्चिम में सात क्षेत्र सात वर्षधर पर्वत और पूर्वका पुष्करोदधि व पश्चिम के के कालोदधि में सात नदियों तथा पश्चिम के पुष्करोदधि व पूर्व के कालोदधि में

शब्दार्थ

ऐसे प० पश्चिमार्ध में ण० विशेष पु० पूर्वभ्रम से का० कालोदधि स० समुद्र में प० पश्चिम भ्रम से पु० पुष्करोदधि स० समुद्र में स० जाती [illegible] स० सर्वक्षेत्र वा० वर्षधर पर्वत ण० नदियों भा० कहना ॥ २७ ॥ ज० जंबूद्वीप क भा० भरतक्षेत्र [illegible] अ० अतीत उ० उत्सर्पिणी में स० सात कु० कुलकर हो० हुवे थ इम० मित्रदाम सु० सुदाम सु० सुपार्श्व स० स्वयंप्रभ वि० विमलघोष सु० सुघोष म० महाघोष ॥ २८ ॥ इ० इस ओ० अवसर्पिणी में स० सात कु० कुलकर हो० वे प० प्रथम वि० विमल वाहन च० चक्षुष्मा ज०

सूत्र

त्थिमद्धेणं सत्तवासा तहेव, णवरं पुरत्थाभिमुहीओ पुक्खरादं समुद्दं समप्पेंति, पच्चत्थाभिमहीओ कालोदं समुद्दं समप्पेंति. सेसं तंचेव एवं पच्चत्थिमद्धेवि णवरं पुरत्थाभिमुहीआ कालादं समुद्दं समप्पेंात पच्चत्थाभिमहीओ पुक्खरोदं समुद्दं समप्पेंति सव्वत्थवासा, वासहरपव्वया, णईओय भाणियव्वाणि जंबूद्दीवे दीवे भारहेवासे तीयाए उस्सप्पिणीए सत्त कुलकरा होत्था तंजहा मित्तदामे सुदामेय। सुपासेय सयंपभे। विमलघोसे सुघोसे य। महाघोसेय सत्तमे ॥ २८ ॥ जंबूद्दीवे दीवे भारहे वासे इमीसे ओसप्पिणीए सत्तकुलगरा होत्था तं० पढमित्थविमलवाहण। चक्खुमजसमं चउत्थ

भावार्थ

मीलने वाली सात नदियों कही हैं. ॥ २७ ॥ जम्बूद्वीपमें गत उत्सर्पिणीमें सात कुलकर हुवे १ मित्रदाम, २ सुदाम ३ सुपार्श्व, ४ स्वयंप्रभु ५ विमलघोष, ६ सुघोष, ७ महाघोष. ॥२८॥ जम्बूद्वीप में वर्तमान अवसर्पिणी में सात कुलकर हुए. १ विमल वाहन, २ चक्षुष्मा ३ जसम ४ अभिचंद्र, ५ प्रसेनपति ६ मरुदेव ७ नाभी.

शब्दार्थ जसम च० चौथा अ० अभिचंद्र प० पसेनपति म० मेरुदेव ना० नाभी ए० इन स० सात कु० कुलकर को स० सात भा० भार्या हो० थी चं० चंद्रयशा चं० चंद्रकान्ता सु० सुरूपा प० प्रतिरूपा च० चक्षुकांता सि० श्रीकांता म० मरुदेवा कु० कुलकर की इ० स्त्री के णा० नाम ॥ २९ ॥ जं० जंबूद्वीप में भा० भरत क्षेत्र में आ० आगामीक उ० उत्सर्पिणी में स० सात कु० कुलकर भ० होंगे मि० मित्रवाहन सु० सुभूम सु० सुप्रभ स० स्वयंप्रभ द० दत्त सु० सुहुम सु० सुबन्धु ॥ ३० ॥ वि० विमल वाहन कु० कुलकर को स०

सूत्र

मभिचंदे ॥ तत्तो पसेणवईपुण । मरुदेवे चेव नाभीय ॥ १ ॥ एएसिणं सत्ताण्हं कुलकराणं सत्त भारिया होत्था तं० चंदजस चंदकंता । सुरूवपडिरूवचक्खुकंताय ॥ सिरिकंता मरुदेवी । कुलकर इत्थीण णामाइं ॥ २ ॥ २९ ॥ जंबूदीवे दीवे भारहे वासे आगमिस्साए उस्सप्पिणीए सत्तकुलकरा भविस्संति जं० मित्तवाहण सुभोमेयसुप्पभेय सयंपभे दत्ते सुहुमे सुबंधूय । आगमिस्सेणहोक्खइ ॥ ३० ॥ विमल वाहणेणं कुलकरे

भावार्थ इन सात कुलकरों की सात स्त्रीयों कहीं. चंद्रयशा २ चंद्रकान्ता ५ सुरूपा ४ प्रतिरूपा ५ चक्षुकान्ता ६ श्री कान्ता और ७ मरुदेवा ॥ २९ ॥ जम्बूद्वीप में आगामीक उत्सर्पिणी में सात कुलकर होंगे १ मित्र वाहन २ सुभूम, ३ सुप्रभ ४ स्वयंप्रभ ५ दत्त ६ सुहुम और ७ सुबंधु ॥ ३० ॥ विमल वाहन कुलकर

शब्दार्थ

सात प्रकार के रु० वृक्ष उ० उपभोग में ह० शीघ्र आ० आये म० मत्तंग भि० भृगांग तु० तूटितांग चि० चित्रांग वि० विचरस म० मणियांग अ० अनीयक ॥ ३१ ॥ स० सातप्रकार की दं० दंडनीति ह० हकार म० मकार धि० धिक्कार प० परिभाषा मं० मंडलबन्ध चा० मारना छ० अंगछेदन ॥ ३२ ॥ ए० एकेक र० राजा चा० चातुरंत च० चक्रवर्ती को स० सात ए० एकेन्द्रिय र० रत्न च० चक्ररत्न छ० छत्ररत्न च० चमररत्न दं० दंडरत्न अ० खड्गरत्न म० मणिरत्न का० कांगणीरत्न ॥३३॥ ए० एकेक र० राजा चा०

सूत्र

सत्तविहा रुक्खा उवओगत्ताए हव्वमागच्छिसु तं० मत्तंगाय भिंगा तुडियंग। चित्तंगाचेव होंति चित्तरसा ॥ माणियंगाय अणिअणा । सत्तमगा कप्परुक्खाय॥३१॥ सत्तविहा दंडणीई प० तं० हक्कारे मक्कारे धिक्कारे परिभासे मंडलिबंधे चारए छविच्छेदे ॥ ३२ ॥ एगमेगस्सणं रन्नो चाउरंत चक्कवट्टिस्स सत्तएगेंदियरयणा प० तं० चक्करयणे छत्तरयणे चम्मरयणे दंडरयणे असिरयणे मणिरयणे काकणिरयणे ॥ ३३ ॥ एगमे-

भावार्थ

को सात प्रकार के कल्प वृक्ष मांगने में आतेथे १ मतंग २ भृगांग ३ त्रुटितांग ४ चित्रांग ५ विचरस ६ मणियांग और ७ अनियक ॥ ३१ ॥ सात प्रकार की दंड नीति कही १ हकार २ मकार ३ धिक्कार ४ परिभाषा ५ नरबंध ६ हड्डीमें घात और ७ अंगछेदन. ॥ ३२ ॥ एक २ चक्रवर्ती को सात २ एकेन्द्रिय रत्न कहेहैं १ चक्ररत्न २ छत्ररत्न ३ चमररत्न ४ दंडरत्न ५ खड्गरत्न ६ मणिरत्न और ७

शब्दार्थ

चातुरंत च० चक्रवर्ती को स० सात पं० पंचेन्द्रियरत्न से० सेनापति गा० गाथापति व० वार्द्धिक पु० पुरोहित इ० स्त्रीरत्न आ० अश्व ह० हस्ति ॥ ३४ ॥ सात कारन से ओ० प्रकर्ष दु० दुष्काल जा० जाने अ० अकाल में व० वर्षे का० काल में ण० नहीं व० वर्षे अ० असाधु को पु० पूजे सा० साधु को ण० नहीं पु० पूजे गु० गुरुसे ज० लोक मि० मिथ्या प० प्रतिपन्न म० मन दुःख व० वचन दुःख ॥ ३५ ॥ स० सात कारन से ओ० प्रकर्ष सु० सुषम जा० जानना अ० अकाल में ण० नहीं व० वर्षे

सूत्र

गस्सणं रन्नो चाउरंत चक्कवट्टिस्स सत्तपंचेंदिय रयणा प० तं० सेणावइरयणे गाहावइ रयणे वड्ढइरयणे पुरोहियरयणे इत्थिरयणे आसरयणे हत्थिरयणे ॥३४॥ सत्तहिं ठाणेहिं ओगाढं दुस्समं जाणेजा तं० अकाले वरिसइ, काले ण वरिसइ, असाधू पुजंति, साधू ण पुजंति, गुरूहिं जणो मिच्छं पडिवन्नो, मणोदुहया, वइदुहया ॥ ३५ ॥ सत्तहिं ठाणेहि मोगाढं सुसमं जाणेजा, तं० अकाले ण वरिसइ, काले वरिसइ, असाधू ण पु-

भावार्थ

कांगणीरत्न ॥ ३३ ॥ एक २ चक्रवर्ती को सात २ पंचेन्द्रियरत्न कहेहैं १ सेनापति २ गाथापति ३ वार्द्धिक ४ पुरोहित ५ स्त्रीरत्न ६ अश्वरत्न और ७ गजरत्न ॥३४॥ सात कारनसे बहुत दुस्सम काल जानना १ अकालमें वर्षा होवे २ वर्षा समय में वर्षा न होवे ३ असाधु की पूजा होवे ४ साधु की पूजा न होवे ५ गुरुकी साथ दुष्टतासे चले ६ मनका दुःख होवे, और ७ वचन का दुःख होवे ॥३५॥ सात कारनसे बहुत अच्छा सुषमकाल जानना. १ अकालमें वर्षेनहीं २ कालमें वर्षे

शब्दार्थ

का० काल में व० वर्षे अ० असाधु को ण० नहीं पु० पूजे सा० साधु को पु० पूजे गु० गुरुसे ज० लोक म० सम्यक् प० प्रतिपन्न म० मनसुख व० वचनसुख ॥ ३६ ॥ स० सात प्रकार के सं० संसारी जीव ने० नारकी ति० तिर्यंच ति० तिर्यंचणी म० मनुष्य म० मनुष्यणी दे० देवता दे० देवी ॥ ३७ ॥ स० सात प्रकार का आ० आयुष्यभेद अ० अध्यवसाय से णि० निमित्त से आ० आहार से वे० वेदना से प० पराघात से फा० स्पर्श से आ० श्वास से स० सात कारन से भि० भेदावे आ० आयुष्य ॥ ३८ ॥ स०

सूत्र

जंति, साधू पुजंति, गुरूहिं जणो संमंपडिवन्नो, मणोसुहया, व०सुहया ॥ ३६ ॥ सत्त-विहा संसारसमावन्नगा जीवा प० तं० नेरइया, तिरिक्खजोणिया, तिरिक्खजोणीओ, मणुस्सा, मणुस्सीओ, देवा, देवीओ ॥ ३७ ॥ सत्तविहे आउभेदे प० तं० (गाथा) अज्झवसाण निमित्ते । आहारे वेयणा पराघाए ॥ फासे आणापाणू । सत्तविधं भिजए आओ

भावार्थ

३ असाधुकी पूजा नहोवे ४ साधुकी पूजा होवे ५ गुरुकी साथ अच्छी तरहसे चले सेवाभक्ति करे ६ मनकासुखी और वचनका सुखी ॥३६॥ संसारी जीवके सात भेद १ नारकी २ तिर्यंच ३ तीर्यचणी ४ मनुष्य ५ मनुष्यणी ६ देव और ७ देवी ॥३७॥ सात प्रकारसे आयुष्यका भेद (नाश) होताहै १ भयानक अध्यवसाय से २ दंडशस्त्रा दि निमित्त से ३ बहुत आहारकरनेसे ४ शूलादि वेदनासे ५ पराघात देखकर ६ सर्पादिक के डंशसे और ७ श्वासके रोगसे ॥ ३८ ॥ सब जीवके सात भेद पृथ्वी, अप्, तेउ, वायु, वनस्पति, त्रसकाय, और

शब्दार्थ

सात प्रकार के स० सर्व जीव पु० पृथ्वीकाय आ० अप् ते० तेजस वा० वायु व० वनस्पति त० त्रसकाय अ० अकाय ॥ ३९ ॥ अ० अथवा क० कृष्णलेशी जा० यावत् सु० शुक्ललेशी अ० अलेशी ॥ ४० ॥ बं० ब्रह्मदत्त रा० राजा चा० चातुरंत च० चक्रवर्ती स० सात ध० धनुष्य उ० ऊंचे उ० ऊंचपने स० सात वा० सवा पं० उत्कृष्ट आ० आयुष्य पा० पालकर का० काल के अवसर में का० काल करके अ० अधो स० सातवी पु० पृथ्वी में अ० अप्रतिष्ठान न० नरक में ने० नारकीपने उ० उत्पन्न हुवे ॥ ४१ ॥ म० मल्लीनाथ अ० अरिहंत अ० पीछे स० सातमा मुं० मुंड हुवे अ० अगार से अ०

सूत्र

॥ १ ॥ ३८ ॥ सत्तविहा सव्वजीवा प० तं० पुढविकाइया, आउ—तेउ—वाउ—वण-स्सइ—तसकाइया, अकाइया ॥ ३९ ॥ अहवा सत्तविहा सव्वजीवा प० तं० कण्ह-लेसा जाव सुक्कलेसा अलेसा ॥ ४० ॥ बंभदत्तेणं राया चाउरंत चक्कवट्टी—सत्तधणूइं उड्ढं उच्चत्तेणं, सत्तयवाससयाइं परमाउं पालइत्ता कालमासे कालंकिच्चा अहे सत्तमाए पुढवीए अप्पइट्ठाणे नरए नेरइयत्ताए उववन्ने ॥ ४१ ॥ मल्लीणंअरहा अप्प-

भावार्थ

अकाय ॥ ३९ ॥ और भी सब जीव के सात भेद १ कृष्णलेशी २ नीललेशी ३ कापुतलेशी ४ तेजुलेशी पद्मलेशी ६ शुक्ललेशी और ७ अलेशी. ॥ ४० ॥ ब्रह्मदत्त चक्रवर्तीकी सात धनुष्य की अवगाहना थी, और सातसो वर्षका आयुष्य पालकर काल के अवसर में काल कर सातवीं नरक के अप्रतिष्ठान नरकावास में नारकीपने उत्पन्न हुवे ॥ ४१ ॥ श्री मल्लिनाथ भगवन्त स्वतःसातवा (छ अन्य राजाओं और

शब्दार्थ

अगगार को प० प्रव्रजित हुवे म० मल्लीविदेह रा० राजवर कन्या प० प्रतिबुद्धि इ० इक्ष्वाकुराजा चं० चंद्रच्छाय अं० अंगदेशका राजा रु० रुप्पी कु० कुणालाधिपति सं० शंख का० काशीका राजा अ० अदीनशत्रु कु० कुरुदेशका राजा जि० जितशत्रु पं० पंचालकाराजा ॥ ४२ ॥ स० सात प्रकार का दं० दर्शन म० सम्यक् मि० मिथ्या दर्शन स० समामिथ्या दर्शन च० चक्षुदर्शन अ० अचक्षु दर्शन ओ० अवधि दर्शन के० केवल दर्शन ॥ ४३ ॥ छ० छद्मस्थ वी० वीतराग मो० मोहनीय व० वर्जकर स० सात क०

सूत्र

सत्तमे मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइए तं० (गाथा) मल्ली विदेहराय-वरकन्नगा, पडिबुद्धी इक्खागराया, चंदच्छाए अंगराया, रुप्पीकुणालाहिवई, संखेकासीराया, अदीणसत्तकुरुराया, जियसत्तू पंचालराया, ॥ ४२ ॥ सत्तविहे दंसणे प० तं० सम्मदंसणे, मिच्छदंसणे, सम्ममिच्छादंसणे, चक्खुदंसणे अचक्खुदंसणे, ओहिदंसणे, केवलदंसणे ॥ ४३ ॥ छउमत्थवीयरागेणं मोहणिजवजाओ सत्तकम्म

भावार्थ

सातया स्रतः) मुंडभवनकर दीक्षित हुवे. उन सातों के नाम १ श्री मल्ली विदेहराजवर की कन्या २ प्रतिबुद्धि इक्ष्वाकुराजा ३ चंद्रच्छाय अंगदेशका राजा ४ रुपी कुणाला का राजा ५ शंख काशी देशका राजा ६ अदीनशत्रु कुरु देशका राजा ७ जितशत्रु पांचाल देशका राजा ॥ ४२ ॥ दर्शन के सात भेद कहे हैं १ सम्यक दर्शन २ मिथ्यादर्शन ३ समामिथ्यादर्शन ४ चक्षु दर्शन ५ अचक्षुदर्शन ६ अवधिदर्शन और ७ केवल

शब्दा

कर्म प्रकृति वे० वेदते हैं ना० ज्ञानावरणीय दं० दर्शनावरणीय वे० वेदनीय आ० आयुष्य ना० नाम गो० गोत्र अं० अंतराय ॥ ४४ ॥ स० सात ठा० स्थान से छ० छद्मस्थ स० सर्वभाव को न० नजाने न० नदेखे ध० धर्मास्तिकाय अ० अधर्मास्तिकाय आ० आकाशास्तिकाय जी० जीव अ० अशरीरी प० परमाणु पुद्गल स० शब्द गं० गंध ॥ ४५ ॥ ए० इन को उ० उत्पन्न ना० ज्ञान दं० दर्शन जा० यावत् जा० जाने पा० देखे ध० धर्मास्तिकाय जा० यावत् गं० गंध ॥ ४६ ॥ स० श्रमण भ० भगवन्त म० महावीर

सूत्र

पयडीओ वेएइ तं० नाणावरणिज्जं, दंसणावरणिज्जं, वेयणीयं, आउयं, नामं, गोयं, मंतराइयं ॥४४॥ सत्तट्ठाणाइं छउमत्थे सव्वभावेणं नजाणइ नपासइ तं० धम्मत्थिकायं, अहम्मत्थिकायं, आगासत्थिकायं, जीवंअसरीरं, परमाणुपुग्गलं, सद्दं गंधं ॥ ४५ ॥ एयाणिचेव उप्पन्ननाणे जाव जाणइ पासइ इं० धम्मत्थिकायं जाव गंधं ॥ ४६ ॥

भावार्थ

दर्शन ॥ ४३ ॥ छद्मस्थ वीतराग को सात कर्म प्रकृति होती है १ ज्ञानावरणीय, २ दर्शनावरणीय ३ वेदनीय ४ आयुष्य, ५ नाम ६ गोत्र और ७ अंतराय ॥ ४४ ॥ धर्मास्तिकाय २ अधर्मास्तिकाय, ३ आकाशास्तिकाय ४ अशरीरी जीव ५ परमाणु पुद्गल ६ शब्द और ७ गंध इन सातों को छद्मस्थ सब भावसे नहीं जान व देख सकते हैं ॥ ४५ ॥ परंतु केवली इन सातों पदार्थों को सब भाव से जान व देख सकते हैं ॥ ४६ ॥ वज्रऋषभ नाराच संघयन और समचतुरस्र संस्थान वाले श्रमण भगवंत महावीर

शब्दार्थ

व० वज्रऋषभ नाराच सं० संघयण स० समचौरस संठान सं० सहित स० सात ह० हाथ उ० ऊंचे उ० ऊंचपने हो० थे ॥ ४७ ॥ स० सात वि० विकथा इ० स्त्रीकथा भ० भक्तकथा दे० देशकथा रा० राजकथा मि० मृदुकारुणीक दं० दर्शन भेदनेवाली च० चारित्र भेदनेवाली ॥ ४८ ॥ आ० आचार्य उ० उपाध्याय के ग० गणमें स० सात अ० उत्कृष्ट अ० आचार्य उ० उपाध्याय के अं० अंदर उ० उपाश्रय के पा० पांवको नि० पकडकर प० पुंजे प० प्रमार्जे ना० उल्लंघनकरे नहीं ए० ऐसा ज० जैसा पं० पांचवा ठाणा में जा० यावत् बा० बाहिर उ० उपाश्रय के ए० एकरात्रि दु० दोरात्रि व० रहता न० उल्लंघनकरे नहीं उ०

सूत्र

समणे भगवं महावीरे वइरोसभनारायसंघयणे, समचउरंस संठाणसंठिए सत्तरयणीओ उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था ॥ ४७ ॥ सत्तविकहाओ प० तं० इत्थिकहा, भत्तकहा, देसकहा, रायकहा, मिउकालणिया, दंसणभेयणी, चरित्तभेयणी, ॥ ४८ ॥ आयरिय उवज्झायस्सणं गणंसि सत्तअइसेसा प० तं० अयरिय उवज्झाए अंतोउवस्सगस्स

भावार्थ

सात हाथ के ऊंचेथे ॥ ४७ ॥ सात विकथा १ स्त्री कथा २ भक्त कथा ३ देश कथा ४ राज कथा ५ मृदु कारुणी स्त्री पूत्रादिक के वियोगकी कथा६ समकीत भेदक की कथा और ७ चारित्र भेदक की कथा ॥४८॥ आचार्य उपाध्याय के गच्छ में सात अतिशेष कहे हैं:-आचार्य उपाध्याय बाहिर से आवे उस समय उस के पांव ले कर रजोहरण से पूंजे यावत् उन की आज्ञा से उपाश्रय बाहिर एक रात्रि या दोरात्रि

शब्दार्थ

उपकरण म० भक्त पा० पानी ॥ ४९ ॥ स० सात प्रकार का सं संयम पु० पृथ्वीकाय संयम जा० यावत् त० त्रसकाय अ० अजीवकाय ॥ ५० ॥ स० सात प्रकार का असंयम पु० पृथ्वी काय जा० यावत् त० त्रसकाय अ० अजीवकाय असंयम ॥ ५१ ॥ स० सात प्रकार का आ० आरंभ पु० पृथ्वीकाय आ० आरंभ जा० यावत् अ० अजीवकाय आरंभ ए० ऐसे अ० अनारंभ के ए० ऐसे सा०

सूत्र

पाए निगज्झिय २ पप्फोडेमाणेवा पमज्जेमाणेवा नाइक्कमइ एवं जहा पंचट्ठाणे जाव बाहिं उवस्सगस्स एगरायंवा दुरायंवा वसमाणे नाइक्कमइ, उवगरणाइसेसे भत्तपाणाइसेसे॥ ४९॥ सत्तविहे संयमे प० तं० पुढविकाइयसंयमे जाव तसकाइयसंयमे; अजीवकायसंयमे ॥ ५० ॥ सत्तविहे असंयमे प० तं० पुढविकाइय असंयमे, जाव तसकाइयअसंयमे अजीवकायअसंयमे ॥ ५१ ॥ सत्तविहे आरंभे पण्णत्ते तं० पुढविकाइयआरंभे

भावार्थ

रहते आज्ञा अतिक्रमे नहीं यह अधिकार पांचवे ठाणे जैसे कहना और ६ गुरु के उपकरण धोते अति शुद्ध करने ६ इच्छित भात पानी ला देते ॥ ४९ ॥ पृथ्वी काय, अप् काय, तेऊ काय, वायु काय, वनस्पति काय, त्रसकाय और अजीव काय इन सातों भेद से संयम कहा है ॥ ५० ॥ और इन सातों को दुःख देने व अयत्ना करने से सात प्रकार का असंयम कहा है ॥ ५१ ॥ पृथ्वी कायादि सात प्रकार

शब्दार्थ

सारंभ के ए० ऐसे अ० असारंभ के ए० ऐसे स० समारंभ के ए० ऐसे अ० असमारंभ के जा० यावत् अ० अजीवकाय अ० असमारंभ ॥ ५२ ॥ अ० अथ भं० भगवन् अ० अलसी कु० कुसंभ को० कोद्रव के कं० कांग रा० राल ग० गवार को० धान्य विशेष स० सण स० सरिसव मू० मूल बी० शाक ए० इत्य ध० धान्य को को० कोठे में जा० यावत् पि० ढांके के० कितना का० काल यो० योनि सं० रहे ज० जघन्य अं० अंतर्मुहूर्त उ० उत्कृष्ट स० सातवर्ष ते० उसपीछे जो० योनि प० ग्लान होती है जा० यावत् जो० योनि वु० विच्छेद प० प्ररूपी ॥ ५३ ॥ बा० बादर अप्काय उ०

सूत्र

जाव अजीवकाय आरंभे ॥ एवमणारंभेवि, एवंसारंभेवि, एवमसारंभेवि, एवंसमारंभेवि, एवंअसमारंभेवि, जाव अजीवकाय असमारंभेवि ॥ ५२ ॥ अहभंते अयसि कुसुभ कोद्दव कंगु राल गवरा कोद्दसग्गा सण सरिसव मूलग बीयाणं, एएसिणं धन्नाणं कोट्ठाउत्ताणं जाव पिहियाणं केवइयं कालं जोणी संचिट्ठइ? जहन्नेण मंतोमुहुत्त मुक्कोसेणं सत्तसंवच्छराइं, तेणपरं जोणी पमिलायइ जाव जोणीवुच्छेए प०

भावार्थ

का आरंभ, अणारंभ, सारंभ, असारंभ, समारंभ, असमारंभ जानना ॥ ५२ ॥ अहो भगवन्त! अलसी, कुसुंभ, कोद्रव, कांग, राल, गवार सण, सरिसव, और मूलक के बीज को कोठे में डालकर बंधकिये होवे तो कितने काल तक योनि रहती है? जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट सात वर्ष तक योनि रहती है

शब्दार्थ

उत्कृष्ट स० सातहजारवर्ष ठि० स्थिति ॥ ५४ ॥ त० तीसरी वा० वालु प्रभा पु० पृथ्वी उ० उत्कृष्ट ने० नारकी को स० सात सागरोपम की ठि० स्थिति ॥ ५५ ॥ च० चौथी पं० पंकप्रभा पु० पृथ्वी में ज० जघन्य ने० नारकी को स० सात सागरोपम की ठि० स्थिति ॥ ५६ ॥ स० शक्र दे० देवेन्द्र दे० देवराजा के व० वरुण म० महाराजा को स० सात अ० अग्रमहिषी ॥ ५७ ॥ इ० ईशान दे० देवेन्द्र दे०

सूत्र

॥ ५३ ॥ बायरआउकाइयाणं उक्कोसेणं सत्तवाससहस्साइं ठिई प० ॥ ५४ ॥ तच्चाएणं वालुयप्पभाए पुढवीए उक्कोसेणं नेरइयाणं सत्तसागरोवमाइं ठिई प० ॥ ५५ ॥ चउत्थीएणं पंकप्पभाए पुढवीए जहन्नेणं नेरइयाणं सत्तसागरोवमाइं ठिई प० ॥ ५६ ॥ सक्कस्सणं देविंदस्स देवरन्नो वरुणस्स महारन्नो सत्तग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ ॥ ५७ ॥ ईसाणस्सणं देविंदस्स देवरण्णो सोमस्स महारण्णो सत्तग्ग-

भावार्थ

बादमें विच्छेद होजाती है ॥५३॥ बादर अप्काय की उत्कृष्ट सात हजार वर्ष की स्थिति कही॥५४॥ तीसरी बालुप्रभा पृथ्वी के नेरयों की उत्कृष्ट स्थिति सात सागरोपम की कही ॥५५॥ चौथी पंक प्रभा पृथ्वी के नेरयों की जघन्य स्थिति सात सागरोपम की कही ॥५६॥ शक्रेन्द्रके वरुण महाराजा को सात अग्र महिषियों कहीं ॥ ५७ ॥ ईशानेन्द्र देवके सोम महाराजा को सात अग्र महिषियों कहीं ॥ ५८ ॥

शब्दार्थ

देवराजा के सो० सोम म० महाराजा को स० सात अग्रमहिषी ॥ ५८ ॥ ई० ईशान दे० देवेन्द्र दे० देवराजा के ज० यम म० महाराजा को स० सात अग्रमहिषी ॥ ५९ ॥ ई० ईशान दे० दे० देवेन्द्र दे० देवराजा की आ० आभ्यंतर प० परिषदा के दे० देवता की स० सात प० पल्योपम ठि० स्थिति ॥ ६० ॥ स० शक्र दे० देवेन्द्र दे० देवराजा की आ० आभ्यंतर प० परिषदा के दे० देवता की स० सात प० पल्योपम की ठि० स्थिति ॥ ६१ ॥ स० शक्र दे० देवेन्द्र दे० देवराजा की अ० अग्रमहिषी दे० देवीकी स० सात प० पल्योपम की ठि० स्थिति ॥ ६२ ॥ सो० सौधर्म कल्प में प० परिग्रही दे०

सूत्र

महिसीओ प० ॥ ५८ ॥ ईसाणस्सणं देविंदस्स देवरन्नो जमस्स महारण्णो सत्तग्ग महिसीओ पण्णत्ताओ, ॥ ५९ ॥ ईसाणस्सणं देविंदस्स देवरण्णो अब्भिंतर परिसाए देवाणं सत्तपलिओवमाइं ठिई प० ॥ ६० ॥ सक्कस्सणं देविंदस्स देवरण्णो अब्भिंतर परिसाए देवाणं सत्तपलिओवमाइं ठिई प० ॥ ६१ ॥ सक्कस्सणं देविंदस्स देवरण्णो अग्गमहिसीणं देवीणं सत्तपलिओवमाइंठिई प० ॥ ६२ ॥ सोहम्मेकप्पे परिग्गहियाणं

भावार्थ

ईशानेन्द्र देवके यम महाराजा को सात अग्र महिषियों कहीं ॥ ५९ ॥ ईशानेन्द्र देवकी आभ्यन्तर परिषदा के देवों की सात पल्योपम की स्थिति कही ॥ ६० ॥ शक्रेन्द्र देवेन्द्रकी आभ्यंतर परिषदा के देवोंकी सात पल्योपम की स्थिति कही ॥ ६१ ॥ शक्रेन्द्र देवकी अग्र महिषियों की सात पल्योपम की स्थिति कही॥६२॥

शब्दार्थ दे० देवीकी उ० उत्कृष्ट स० सात प० पल्योपम की ठि० स्थिति ॥ ६३ ॥ सा० सारस्वत आ० आदित्य को स० सातदेवता स०सात सो देवतावाले ॥ ६४ ॥ ग० गर्दतोय तु० तुषित दे० देवता को स० सातदेव स० सात हजारदेववाले ॥६५॥ स० सनत्कुमार देवलोकमें उ० उत्कृष्ट दे० देवताकी स० सातसागरोपमकी ठि० स्थिति ॥ ६६ ॥ मा० माहेन्द्रदेवलोकमें उ० उत्कृष्ट दे० देवताकी सा० साधेरी स० सातसागरोपमकी ठि० स्थिति ॥ ६७ ॥ बं० ब्रह्मदेवलोकमें ज० जघन्य दे० देवताकी स० सातसागरोपमकी ठि० स्थिति

सूत्र देवीणं उक्कोसेणं सत्तपलिओवमाइं ठिई प० ॥ ६३ ॥ सारस्सयमाइच्चाणं सत्त-देवा सत्तदेवसया प० ॥ ६४ ॥ गद्दतोय तुसियाणं देवाणं सत्तदेवा सत्तदेवसहस्सा प० ॥ ६५ ॥ सणंकुमारेकप्पे उक्कोसेणं देवाणं सत्तसागरोवमाइं ठिई प० ॥ ६६ ॥ माहिंदेकप्पे उक्कोसेणं देवाणं साइरेगाइं सत्तसागरोवमाइंठिई प० ॥ ६७ ॥ बंभ-

भावार्थ सौधर्म देवलोक में परिग्रही देवीकी सात पल्योपम की स्थिति ॥ ६३ ॥ सारस्वत आदित्य देवको सात सो देव के परिवार सात देवता वाले कहें ॥ ६४ ॥ गर्दतोय व तुषित को सात हजार देव के परिवारवाले सात देव कहें ॥ ६५ ॥ सनत्कुमार विमान में देवताओं की स्थिति उत्कृष्ट सात सागरोपम की कही ॥ ६६ ॥ माहेन्द्र देवलोक में देवता की स्थिति उत्कृष्ट सात सागरोपम साधेरी कही ॥ ६७ ॥ ब्रह्म

शब्दार्थ

॥ ६८ ॥ बं० ब्रह्मदेवलोक लं० लंतक क० देवलोकमें वि० विमान स० सात जो० योजन स० शत उ० ऊंचे उ० ऊंचपने ॥ ६९ ॥ भ० भवनपति दे० देवताकी भ० भवधारणीय स० शरीर उ० उत्कृष्ट स० सात र० हाथ उ० ऊंचे उ० ऊंचपने ए० ऐसे वा० वाणव्यंतर जो० ज्योतिषी सो० सौधर्म ई० ईशान क० देवलोकमें दे० देवताकी भ० भवधारणीय स० शरीर स० सात र० हाथ उ० ऊंचे उ० ऊंचपने ॥ ७० ॥ न० नंदीश्वरद्वीपके अ० अंदर स० सातद्वीप जं० जंबूद्वीप धा० धातकीखंड पु० पुष्करवर वा० वारुणि

सूत्र

लोएकप्पे जहन्नेणं देवाणं सत्तसागरोवमाइं ठिई प० ॥ ६८ ॥ बंभलोयलंतएसुणं कप्पेसु विमाणा सत्तजोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं प० ॥ ६९ ॥ भवणवासीणं देवाणं भवधारणिज्ज सरीरगा उक्कोसेणं सत्तरयणीओ उड्ढं उच्चत्तेणं । एवं वाणमंतराणं । एवं जोइसियाणं । सोहम्मीसाणेसुणं कप्पेसु देवाणं भवधारणिज्जगा सरीरा सत्तरयणीओ उड्ढंउच्चत्तेणं प० ॥ ७० ॥ नंदीसरवर दीवस्सणं दीवस्स अंतोसत्तदीवा प० तं०

भावार्थ

देवलोक में देवताओं की स्थिति जघन्य सात सागरोपम की कही ॥ ६८ ॥ ब्रह्म देवलोक और लंतक में सात सौ योजन के ऊंचे विमान कहे ॥ ६९ ॥ भवनपति, वाणव्यंतर, ज्योतिषी, और सौधर्म व ईशान देवलोक में देवताओं के शरीर की अवगाहना उत्कृष्ट सात हाथ की कही ॥ ७० ॥ नंदीश्वर द्वीप में सात

शब्दार्थ

खी० क्षीरवर घ० घृतवर खो०क्षोदवर ॥७१॥ नं० नंदीश्वरद्वीपके अ० अंदर स० सातसमुद्र स० लवणसमुद्र का० कालोदधि पु० पुष्करोदधि व० वरुणोदधि खी० क्षीरोदधि घ० घृतोदधि खी० इक्षोदधि ॥ ७२ स० सात से० श्रेणि उ० ऋजु आ० सरल ए० एकवाजुसे वं० टेढी दु० दोनोंवाजुसे वं० टेढी ए० एकवाजुसे खु० अंकुशाकार द० दोनोंवाजुसे खु० अंकुशाकार व० चक्रवाल अ० अर्धचक्रवाल ॥ ७३ ॥ च० चमरको अ० असुरेन्द्र अ० असुरकुमारराजाके स० सात अ० अनिकके अधिपति पा० पादात्यनीक

सूत्र

जंबूद्दीवे, धायइखंडे, पुक्खरवरे, वारुणिवरे, खीरवरे, घयवरे, खोयवरे ॥ ७१ ॥
नंदीसरवरस्संणं दीवस्स अंतो सत्तसमुद्दा प० तं० लवणे, कालोए, पुक्खरोदे, वरुणोदे, खीरोदे, घओदे खोए ॥ ७२ ॥ सत्तसेढीओ प० तं० उज्जुआयया, एगओवंका, दुहओवंका एगओखुहा, दुहओखुहा, चक्कवाला, अद्धचक्कवाला ॥७३॥ चमरस्सणं असुरिंदस्स असुरकुमाररन्नो सत्तअणिया सत्तअणियाहिवई प० तं० पायत्ताणिए, पीढा-

भावार्थ

अंतर द्वीप कहे हैं जम्बूद्वीप, धातकी खंड, पुष्कर वर, वारुणि वर, क्षीर वर, घृत वर, क्षोद वर ॥७१॥ नंदीश्वर द्वीप में सात समुद्र कहे लवण समुद्र, कालोदधि, पुष्करोदधि, वरुणोदधि, क्षीरोदधि, घृतोदधि, इक्षोदधि. ॥ ७२ ॥ सात श्रेणी कही १ ऋजु-सरल-लंबी श्रेणी २ एक तरफ टेढी ३ दो तरफ टेढी ४ एक बाजु अंकुशाकार ५ दो बाजु अंकुशाकार ६ बलयाकार और ७ अर्ध बलयाकार ॥ ७३ ॥ चमर

शब्दार्थ

पी०पीठानीक कु०कुंजरानीक म०महिषानीक र०रथानीक न०नाट्यानीक गं० गंधर्वानीक दु० द्रुम पा० पादात्यनीकके अधिपति ए०ऐसे ज०जैसे प०पांचवेठाणेमें जा०यावत् कि०किन्नर र०रथाधिपति रि०रिष्ट ना०नाट्यानीक अधिपति गी०गीतरती गं०गंधर्वानीकअधिपति ब०बलिको म०वैरोचनेन्द्र व०वैरोचनराजाके स०सात अ०अनिक स०सात अ०अनीकाधिपति पा०पादात्यनीक जा०यावत् गं०गंधर्वानीक म०महाद्रुम पा०पादात्यनीक अधिपति जा० यावत् किं० किंपुरुष र० रथानीक का अधिपति म०महारिष्ट ण०नाट्यानीकका अधिपति गी०गीतयश

सूत्र

णिए,कुंजराणिए,महिसाणिए,रहाणिए,नट्टाणिए,गंधव्वाणिए। दुमे पायत्ताणियाहिवई, एवं जहा पंचट्ठाणे जाव किन्नरे रहाणियाहिवई,रिट्ठे नट्टाणियाहिवई, गीयरई गंधव्वाणियाहिवई, ॥ बलिस्सणं वइरोयणिंदस्स वइरोयणरण्णो सत्तअणिया सत्तअणियाहिवई प० तं पायत्ताणियं जाव गंधव्वाणियं ॥ महद्दुमे पायत्ताणियाहिवई, जाव किंपुरिसे रहाणियाहिवई; महारिट्ठे णट्टाणियाहिवई, गीयजसे गंधव्वाणियाहिवई ॥

भावार्थ

नामक असुरेन्द्र के असुर कुमार राजा को सात अनिक व सात उन के अधिपति कहे हैं. १ पादात्यनिक २ पीठानिक, ३ कुंजरानिक ४ महिषानिक ५ रथानिक ६ नाटक का अनिक और ७ गंधर्वानिक. द्रुम-पादात्यनिक का अधिपति २ सोदामी पीठानिक का अधिपति ३ वेकुंथु कुंजरानिक का अधिपति ४ लोहितक्ष महिषानिक का अधिपति, ५ किन्नररथानिक का अधिपति, ६ रिष्ट नाट्यानिकका स्वामी और ७ गीतरति,

गं० गंधर्वानीक अधिपति ध० धरणको ना० नागेन्द्र ना० नागकुमारराजाके स० सात अ० अनीक स० सात अ० अनीकाधिपति पा० पादात्यनीक जा० यावत् गं० गंधर्वानीक रु० रुद्रसेन पा० पादात्यानीकके अधिपति जा० यावत् आ० आनंद र० रथानीकके अधिपति न० नंद न० नाट्याधिपति ते० तेतलि गं० गंधर्वाधिपति भू० भूतानेन्द्र को स० सात अ० अनीक स० सात अ० अनीकाधिपति पा० पादात्यनीक जा० यावत् गं० गंधर्वानीक द० दक्ष पा० पादात्यनीकके अधिपति जा० यावत् नं० नंदुत्तर र० रथानीकका अधिपति र० रती ना० नाट्यानीक

सूत्र

धरणस्सणं नागकुमारिंदस्स नागकुमाररण्णो सत्तअणिया सत्तअणियाहिवई प० तं० पायत्ताणिए जाव गंधव्वाणिए ॥ रुद्दसेणे पायत्ताणियाहिवई जाव आणंदे रहाणियाहिवई, नट्टणे नट्टाणियाहिवई, तेतले गंधव्वाणियाहिवई ॥ भूयाणंदस्स सत्त आणिया सत्त आणेयाहिवई प० तं पायत्ताणिए जाव गंधव्वाणिए । दक्खे पायत्ताणियाहिवई, जाव णंदुत्तरे रहाणियाहिवई, रई नट्टाणियाहिवई, माणसे गंधव्वाणिया-

भावार्थ

गंधर्वानिक का स्वामी. बलि नामक वैरोचनेन्द्रको सात अनिक व सात उनके अधिपति कहे. महाद्रुम यावत् किंपुरुष और महारिष्ट तथा गीतयश. धरण नामक नागकुमार के नागराजा को सात अनिक व सात उनके अधिपति कहे हैं पादात्यनिक यावत् गंधर्वानिनिक अधिपति. रुद्र यावत् आनंद, नंद नाट्यानिकका स्वामी और तेतलि गंधर्वानिकका स्वामी । भूतानेन्द्र को सात अनिक व सात उनके अधिपति पादात्यनीक

शब्दार्थ

अधिपति मा० मानस गं० गंधर्वानीक अधिपति ए० ऐसे जा० यावत् घो० घोष म० महाघोष ने० जानना
सक्र दे० देवेन्द्र दे० देवराजा को स०सात अ० अनीक स० सात अ० अनीकाधिपति पा० पादात्यनीक
ना० यावत् गं० गंधर्वानीक ह० हरिणगमेषी पा० पादात्यनीक अधिपति जा० यावत् मा० माढर र०
त्यानीक अधिपति से० श्वेत न० नाट्यानीक अधिपति तु० तुंबरु गं० गंधर्वानीक अधिपति ई० ईशान
दे०देवेन्द्र दे०देवराजाको स०सात अ०अनीक स०सात अ० अनीकाधिपति पा०पादात्यानिक जा०यावत् गं०
धर्वानीक ल० लघुपराक्रम पा० पादात्यनीकाधिपति जा० यावत् म०महाश्वेत न० नाट्यानीकाधिपति णा०

सूत्र

हिवई ॥ एवं जाव घोसमहाघोसाणं नेयव्वं सक्कस्सणं देविंदस्स देवरण्णो सत्त आणिया सत्त आणियाहिवई प० तं० पायत्ताणिए जाव गंधव्वाणिए । हरिणगमेसी पायत्ताणियाहिवई, जाव माढरे रहाणियाहिवई सेए नट्टाणियाहिवई तुंबरु गंधव्वाणियाहिवई ॥ ईसाणस्सणं देविंदस्स देवरण्णो सत्त आणिया सत्त आणियाहिवई प० तं० पायत्ताणिए जाव गंधव्वाणिए । लहुपरक्कमे पायत्ताणियाहिवई, जाव महासेए नट्टाणिया

भावार्थ

यावत् गंधर्वानिक. दक्ष यावत् नंदोत्तर. रति और मानस । ऐसे घोष महाघोष का जानना. शक्रेन्द्र देवके सात अनिक व सात उनके अधिपतिकहे हैं पादात्यानिक यावत् गंधर्वानिक. उनके अधिपति हरिणगमेषी यावत् माढर, श्वेत, व तुंबरु इशानदेवेन्द्र के सात अनिक वसात उनके अधिपति जानना. लघुपराक्रम यावत् महाश्वेत

गारद गं० गंधर्वानीकाधिपति से० शेष ज० जहां पं० पांचवे ट्ठा० ठाने में ए० ऐसे अ० अच्युतेन्द्र ने० जानना ॥ ७४—७५ ॥ च० चमर के अ० असुरेन्द्र अ० असुरकुमार राजा के दु० द्रुम पा० पादात्यनीक के अधिपति को स० सातकच्छ प० प्रथमकच्छ जा० यावत् स० सातमीकच्छ प० प्रथमकच्छ में च० चोराशी दे० देव स० सहस्र जा० जितने प० प्रथमकच्छ में त० उनसे वि० द्विगुने दु० दूसरी कच्छ में त० उनसे वि० द्विगुने त० तीसरी कच्छ में ए० ऐसे जा० यावत् जा० जितने छ० छठीकच्छ में वि०

हिवई, णारए गंधव्वाणियाहिवई ॥ सेसं जहा पंचट्ठाणे एवं जाव अच्चुयस्सेति नेयव्वं ॥ ७४—७५ ॥ चमरस्सणं असुरिंदस्स असुरकुमाररण्णो दुमस्स पायत्ताणियाहिवइस्स सत्तकच्छाओ प० तं० पढमाकच्छा जाव सत्तमाकच्छा ॥ चमरस्सणं असुरिंदस्स असुरकुमाररण्णो दुमस्स पायत्ताणियाहिवइस्स पढमाए कच्छाए चउसट्ठि देवसहस्सा पण्णत्ता । जावइया पढमा कच्छा तावइगुणा दुच्चाकच्छा, तावइगुणा तच्चाकच्छा,

ट्यानिक के अधिपति और रत गंधर्वानीक के अधिपति. शेष जैसे पांचवे स्थानकमें कहा है वैसे ही अनिक व उनके अधिपति अच्युत तक कहना ॥ ७४—७५ ॥ चमर असुरेन्द्र के द्रुमनामक पादात्यनीक के स्वामीको सात कच्छ (सेनाके भिन्न २ समुदाय) कहे. उस में से प्रथम समुदाय में ६४,००० देव रहे हुवे हैं. इस से दुसरी कच्छ में दुगुने देवताओ हैं (एक लक्ष अठाइस हजार) और दूसरी कच्छ में से तीसरी कच्छ

शब्दार्थ

द्विगुणा स० सातमीकच्छ में ए० ऐसे ब० बलिको न० विशेष म० महाद्रुम को स० साठ दे० देवता स्र० सहस्र ध० धरण को न० विशेष अ० अठावत दे० देवता स० सहस्र ज० जैसे धरण को ए० ऐसे जा० यावत् म० महाघोष का न० विशेष पा० पादात्यानीकाधिपति अ० अन्य ते० वे पु० पूर्व भ० कहा ॥७६॥ स० शक्रदेवेन्द्र दे० देवराजा को ह० हरिणगमेषी को स० सातकच्छ प० प्रथमकच्छ ए० ऐसे ज० जैसे

सूत्र

एवं जाव जावइया छट्ठाकच्छा, ताव्विगुणा सत्तमाकच्छा । एवं बलिस्सवि नवरं महद्दुमे सट्ठि देवसाहस्सिओ सेसं तंचेव । धरणस्स एवंचेव णवर मट्ठावीसं देवसहस्सा, सेसंतंचेव । जहाधरणस्स एवं जाव महाघोसस्स, नवरं पायत्ताणियाहिवई, अन्नेते पुव्वभणिया ॥ ७६ ॥ सक्कस्सणं देविंदस्स देवरण्णो हरिणेगमेसिस्स सत्तकच्छाओ पण्णत्ताओ तं० पढमाकच्छा एवं जहा चमरस्स तहा जाव अच्चुयस्स

भावार्थ

में दुगुने देवताओं ऐसेही छट्ठी कच्छ में से सातवीं कच्छ में दुगुने देवताओं कहे हैं. ऐसेही बलेन्द्र व धरणेन्द्र तक जानना परंतु बलेन्द्र के पादात्यानिक का आधिपति महाद्रुम की पहिली कच्छ में साठ हजार देवताओं व धरणेन्द्र की कच्छ में अठाइस हजार देवताओं. और आगे दुगुने २ कहना. और धरणेन्द्र जैसे अन्य सब इन्द्र के आनिक के स्वामी का समुदाय भिन्न २ जानना. ॥ ७६ ॥ शक्रेन्द्र देवता का हरिणगमेषी नामक पादात्यनिक के अधिपति को सात समुदाय कहे. यह सब अधिकार अच्युतेन्द्र तक पहिले जैसे

च० चमर को जा० यावत् अ० अच्युत को ना० जानना पा० पादातानीकाधिपति पु० पहिले भ० कहा दे० देवपरिमाण स० शक्रको च० चौरासी दे० देवता स० सहस्र ई० ईशान को अ० अस्सी दे० देव स० सहस्र दे० देवता इ० इस गा० गाथा मे अ० जानना च० चौरासी अ० अस्सी बा० बहत्तर स० सित्तर स० साठ प० पचास च० चालीस ती० तीस वी० वीस द० दस सहस्र जा० यावत् अ० अच्युत को ल० लघुपराक्रम को द० दश दे० देवता स० सहस्र जा० जितना छ० छट्ठीकच्छ में वि० द्विगुण स० सातवी

णाणत्तं पायत्ताणियाहिवईणं ते पुव्व भणिया. देवपरिमाण निमं-सक्कस्स चउरासीइदेवसहस्सा ईसाणस्स असीइदेव सहस्साइं देवा इमाए गाहाए अणुगंतव्वा-चउरासीइ असीइ, बावत्तरि सत्तरीय सट्ठीय पन्ना चत्तालीसा । तीसा वीसा दस सहस्सा । जाव अच्चुयस्स लहुपरक्कमस्स देवसहस्सा जावइया छट्ठा कच्छा, ताव्विगुणा सत्तमा कच्छा ॥ ७७ ॥

वहना. देवता का प्रमाण इस तरह है. शक्रेन्द्र को चौरासी हजार, ईशानेन्द्र को अस्सी हजार, सनत्कुमारेन्द्र को बहत्तर हजार, माहेन्द्र को सित्तर हजार, ब्रह्मदेव लोक को साठ हजार, लंतक को पचास हजार, महाशुक्रेन्द्र को चालिस हजार, सहस्रारेन्द्र को तीस हजार, प्राणतेन्द्र के बीस हजार, और अच्युतेन्द्र को दश हजार. आगेकी समुदायो में इस से दुगुने २ कहना यावत् सातवी समुदाय में छट्ठी से दुगुने कहना ॥ ७७ ॥ सात प्रकार का वचन विकल्प कहा है १ थोडा बोलना सो आलाप २ कुत्सित

शब्दार्थ

कच्छ ॥ ७७ ॥ स० सात प्रकार का व० वचन विकल्प आ० आलाप अ० अनालाप उ० उल्लाप अ० अणुल्लाप सं० संलाप प० प्रलाप वि० विप्रलाप ॥ ७८ ॥ स० सात प्रकार का वि० विनय ना० ज्ञान दं० दर्शन चा० चारित्र म० मन व० वचन का० काय लो० लोकोपचार विनय ॥ ७९ ॥ प० प्रशस्त म० मन विनय स० सात प्रकार का अ० पापरहित अ० सावद्यरहित अ० क्रियारहित नि० क्लेशरहित अ०

सूत्र

तृतीय वाणाङ्ग सूत्र

सत्तविहे वयण विकप्पे प० तं० आलावे, अणालावे, उल्लावे, अणुल्लावे, संलावे, पलावे, विप्पलावे ॥ ७८ ॥ सत्तविहे विणए प० तं० नाणविणए, दंसणविणए, चरित्तविणए, मणविणए, वइविणए, कायविणए, लोगोवयारविणए ॥ ७९ ॥ पसत्थ मणविणए सत्तविहे प० तं० अपावए, असावज्जे, अकिरिए, निरुवक्केसे, अणण्हकरे,

भावार्थ

बोलना सो अनालाप ३ मर्यादा उल्लंघकर बोलना सो उल्लाप ४ मर्यादा रहित खराब बोलनासो अणुल्लाप ५ परस्पर बोलना सो संलाप ६ निरर्थक बोलना सो प्रलाप और ७ विरुद्ध बोलना सो विप्रलाप ॥७८॥ सात प्रकार का विनय कहाः ज्ञान विनय, दर्शन विनय, चारित्र विनय, मन विनय, वचन विनय, काय विनय और लोकोपचार विनय ॥ ७९ ॥ प्रशस्त मन का विनय सात प्रकार का १ पाप रहित विचार २ सावद्य की चिन्तवना करे नहीं ३ क्रिया रहित ४ क्लेश रहित ५ आश्रव रहित ६ किसी जीव को दुःख न देवे और

आश्रव रहित अ० पीडाकी चिन्तवना रहित अ० भूतकी शंकारहित ॥ ८० ॥ अ० अप्रशस्त म० मन विनय स० सात प्रकार का पा० पाप सा० सावद्य स० क्रियासहित स० क्लेशसहित अ० आश्रव सहित छ० पीडाचिंतवे भु० भूतकीशंकासहित ॥८१॥ प० प्रशस्त व० वचन विनय स० सात प्रकार का अ० पापरहित अ० सावद्यरहित जा० यावत अ० भूतकीशंकारहित ॥८२॥ अ० अप्रशस्त व० वचन विनय स० सात प्रकार का पा० पापसहित जा० यावत् भू० भूतकीशंकासहित ॥८३॥ प० प्रशस्त का० काया विनय स० सातप्रकार

शब्दार्थ

सूत्र

अच्छविकरे, अभूयाभिसंकमणे ॥ ८० ॥ अपसत्थ मण विणए सत्तविहे प० तं० पावए, सावज्जे, सकिरिए, सउवक्केसे, अण्हकरे, छविकरे, भूयाभिसंकमणे ॥ ८१ ॥ पसत्थ वइविणए सत्तविहे प० तं० अपावए, असावज्जे, जाव अभूयाभिसंकमणे ॥ ८२ ॥ अपसत्थ वइविणए सत्तविहे प० तं० पावए जाव भूयाभिसंकमणे ॥८३॥

भावार्थ

७ किसी भूत का शंका न उत्पन्न करे ॥ ८० ॥ अप्रशस्त मनका विनय सात प्रकार का १ पाप सहित, २ सावद्य सहित ३ क्रिया सहित ४ क्लेशसहित ५ आश्रव सहित ७ जीवों को शंका उत्पन्न करे ॥ ८१ ॥ प्रशस्त वचन का विनय सात प्रकार का १ शुभ वचन, २ असावद्य वचन यावत् प्राणी भूत जीव को भय उत्पन्न न करे वैसा वचन ॥ ८२ ॥ अप्रशस्त वचन का विनय सात प्रकार का अशुभ वचन यावत् प्राणी को भय उत्पन्न होवे वैसा वचन ॥ ८३ ॥ प्रशस्त कायाका विनय सात प्रकार का १ यत्ना

शब्दार्थ

का आ० यत्ना से ग० जाना ठा० रहना नि० बैठना तु० सोना उ० उल्लंघन करना प० बहुत उल्लंघन करना स० सर्व इ० इन्द्रिय जो० योग प० प्रयुंजना ॥ ८४ ॥ अ० अप्रशस्त का० काया विनय स० सात प्रकार का अ० यत्नारहित ग० जाना जा० यावत् अ० यत्नारहित स० सर्व इ० इन्द्रिय जो० जोग प० प्रयुंजना ॥ ८५ ॥ लो० लोकोपचार वि० विनय स० सात प्रकारका अ० आचार्य समीप अ० बैठना प० दूसरे को अ० अनुसरना क० कार्य करिये क० किया हुवा का प० पीछा करना अ० दुःखी को

सूत्र

पसत्थ कायविणए सत्तविहे प० तं० आउत्तंगमणं, आउत्तंठाणं, आउत्तंनिसियणं, आउत्तंतुयट्टणं, आउत्तंउल्लंघणं, आउत्तंपल्लंघणं, सव्विंदिय जोगजुंजणया ॥ ८४ ॥ अपसत्थ कायविणए सत्तविहे प० तं० अणाउत्तंगमणं जाव अणाउत्तं सव्विंदिय जोगजुंजणया ॥ ८५ ॥ लोगोवयारविणए सत्तविहे प० तं० अब्भासवत्तियं, परच्छंदाणुवत्तियं कज्जहेउं, कयपडिकइया, अत्तगवेसणया, देसकालणया, सव्वत्थेसुयप-

भावार्थ

पूर्वक चलना २ यत्ना पूर्वक खडेरहना ३ यत्ना पूर्वक बैठना ४ यत्ना पूर्वक सोना ५ यत्ना पूर्वक उल्लंघना ६ यत्ना पूर्वक बहुत उल्लंघना और ७ यत्ना से सब इन्द्रियों के योगों को प्रयुंजना ॥ ८४ ॥ अप्रशस्त कायाके विनय का सात भेद अयत्ना से चलना यावत् अयत्ना से सब इन्द्रियों के योगो को प्रयुंजना. ॥ ८५ ॥ लोकोपचार विनय के सात भेद १ आचार्यादिक के समीप बैठना २ अन्य के कथनानु

शब्दार्थ — ग० गवेषणा करना दे० देशकाल को जानना स० सर्व अर्थ में अ० अनुकुल होना ॥ ८६ ॥ स० सात स० समुद्घात वे० वेदनीय क० कषाय मा० मारणांतिक वे० वैक्रेय ते० तेजस अ० आहारक के० केवली ॥ ८७ ॥ स० श्रमण भ० भगवन्त म० महावीर के ति० तीर्थ में स० सात प० प्रवचन नि० निन्हव ब० बहुत जी० जीवप्रदेश अ० अव्यक्त सा० सामुच्छेदिक दो० दोक्रिया ते० त्रैराशिक अ० बन्धनरहित ए० इन स० सात प० प्रवचन नि० निन्हव के स० सात ध० धर्माचार्य ज० जमाली ती० तिष्यगुप्त आ० आषाढाचार्य आ०

सूत्र — डिलोमया ॥ ८६ ॥ सत्तसमुग्घाया प० तं० वेयणासमुग्घाए, कसायसमुग्घाए, मारणंतयसमुग्घाए वेउव्विय समुग्घाए, तेजससमुग्घाए, आहारकसमुग्घाए, केवलिसमुग्घाए, ॥ मणुस्साणं सत्तसमुग्घाया प० एवंचेव ॥ ८७ ॥ समणस्सणं भगवओ महावीरस्स तित्थंसि सत्तपवयण निन्हवा प० तं० १ बहुरया, २ जीवपएसिया, ३ अव्वत्तिया, ४ सामुच्छेइया, ५ दोकिरिया, ६ तेएसिया, ७ अबद्धिया एएसिणं सत्तण्हं पवयण निण्हगाणं सत्तधम्मायरिया

भावार्थ — सार चलना ३ कार्य के लिये विचार करना ४ किया हुआ उपकार का फीर प्रत्युपकार करना ३ दुःखीजीवों पर उपकार करना ६ देशकाल जानना और ७ सब प्रकार के विषय में अनुकुलता रखना ॥ ८६ ॥ सात समुद्घात कही १ वेदनीय समुद्घात २ कषाय समुद्घात ३ मारणान्तिक समुद्घात ४ वैक्रेय समुद्घात

शब्दार्थ

आसमित्र गं० गंग छ० षडुलूक गो० गोष्ठामाहिल ए० इन स० सात प० प्रवचनके नि० निन्हव की स० सात उ० उत्पत्ति नगर सा० श्रावस्ती उ० ऋषभपूर से० श्वेताम्बिका मि० मिथिला उ० उल्लुकातीर पु०

सूत्र

रिया होत्था- जमाली, तीसगुत्ते, आसाढे, आसमित्ते, गंगे, छल्लुए, गोट्ठामाहिले ॥ एएसिणं सत्तण्हं पवयण निण्हगाणं सत्तउप्पत्तिनगरे होत्था-तं० सावत्थी, उसभपुरं, सेयाविया, मिहलउ, ल्लुगातीरं; पुरिमंतरं, दसपुर, निण्हगउप्पत्ति नगराइं

७०५

भावार्थ

५ तेजस समुद्घात ६ आहारक समुद्घात और ७ केवली समुद्घात. ये सातों समुद्घात मनुष्य को होती हैं ॥ ८७ ॥ श्रमण भगवन्त महावीर स्वामी के तीर्थमें सात निन्हव हुवे. १ श्रावस्ती नगरी में जमाली हुवे उनोंने बहुत मत स्थापा. इन का मत यह था कि "करे माणे अकरे" कार्य पूर्ण हुवे पीछेही कार्य हुवा कहना और भगवान् फरमाते हैं कि "करेमाणे करे" कार्यका प्रारंभ हुवा वहां से ही कार्य कहना. तिष्यगुप्तने ऋषभपुर में आत्मप्रवाद पूर्व की स्वाध्याय करते पढनेमें आया कि आत्माके एक प्रदेश को जीव कहना, दो, तीन, चार, संख्यात, यावत् असंख्यात को जीव कहना परंतु भगवान का यही उपदेश है कि सब प्रदेश पूर्णहोवे जब ही जीव कहना. इस से उन को ऐसी श्रद्धा हुईकि जीव का अंतिम प्रदेश यह ही जीव है.३ अषाढाचार्य-इन का मत यह है कि जो वस्तु है सो संपूर्ण जानने में नही आती है. यह आचार्य श्वेतांबिका नगरी में अकस्मात् आयुष्य पूर्णकर देवता हुए और

पुरिमताल द० दशपुर ॥ ८७ ॥ सा० सातावेदनीय क० कर्म का स० सातप्रकारका अ० अनुभाग म० मनोज्ञ स० शब्द रू० रूप जा० यावत् फा० स्पर्श म० मनसुख व० वचनसुख ॥ ८८ ॥ अ० असा-

॥ ८७ ॥ सायावेयणिज्जस्सणं कम्मस्स सत्तविहे अणुभावे प० तं० मणुन्नासद्दा, मणुन्नारूवा, जाव मणुन्नाफासा, मणोसुहया, वइसुहया, ॥ ८८ ॥ असायावेयणिज्ज-

अपनी संप्रदाय में साधुओं को अल्पज्ञ जानकर पुनः अपने शरीर में आये और शिष्यों को पढाये, फीर सब भेद प्रकटकर देवलोक में चलेगये. उस से उन का नाम मतिसिद्ध हुवा. गांगेय मिथिला नगरी में हुवे क्षण क्षयद्रव्यके स्थापक अर्थात् आत्मा व वस्तु का क्षण २ में परिवर्तन होता है. आस-मित्रने उल्लुकानीर में एक समय में दोक्रिया की जाती है ऐसा मत स्थापन किया जैसे नदी उतरते पाँव में शीत और उपर सूर्य का आताप से ऊष्णता लगती है. बहुलूकजीने पुरिमताल नगर में त्रिराशिक मतकी स्थापना की जीवराशि अजीवराशि और नोजीव नोअजीवराशि. और सातवा गोष्टामाहिलाने दशपुर में ऐसा स्थापनाकिया कि जीव को कर्मबंध नही होता है मात्र सर्प त्वचा जैसे जीव कर्म को स्पर्श कर उस का फल वेदता है. ये सातों जिन प्रवचन के उत्थापक होने से निन्हव कहलाये हैं ॥ ८७ ॥ साता वेदनीय कर्म का सात प्रकार से अनुभव होता है १ मनोज्ञ शब्द २ मनोज्ञ रूप ३ मनोज्ञ गंध, ४ मनोज्ञ रस ५ मनोज्ञ स्पर्श ६ मनका सुख ७ वचन का

शब्दार्थ

तावेदनीय कर्म स० सात प्रकार का अ० अमनोज्ञ शब्द जा० यावत् व० वचन दुःख ॥ ८९ ॥ म० मघानक्षत्रके स० सततारे ॥ ९० ॥ अ० अभिजितादि स० सातनक्षत्र पु० पूर्वद्वारवाले अ० अभिजीत स० श्रवण ध० धनिष्ठा स० शतभिषा पु० पूर्वभाद्रपद उ० उत्तराभाद्रपद रे० रेवती अ० अश्विनीआदि दा० दक्षिणद्वारके अ० अश्विनी भ० भरणी क० कृत्तिका रो० रोहिणी मि० मृगशर अ० आर्द्रा पु० पुनर्वसु पु० पुष्यादि स० सातनक्षत्र अ० पश्चिमद्वारके पु० पुष्य अ० अश्लेषा म० मघा पु० पूर्वाफाल्गुणी ऊ०

सूत्र

स्स कम्मस्स सत्तविहे अणुभावे प० तं० अमणुन्नासद्दा जाव वइदुहया ॥ ८९ ॥ महानक्खत्ते सत्ततारे प०, ॥ ९० ॥ अभिईयाइया सत्तनक्खत्ता पुव्वदारिया प० तं० अभिई, सवणो, धनिट्ठा, सयभिसया, पुव्वाभद्दवया, उत्तराभद्दवया, रेवई ॥ अस्सिणियाइया सत्तनक्खत्ता दाहिणदारिया प० तं० अस्सिणी, भरिणी, कत्तिया, रोहिणी, मिगासिर, अद्दा, पुणव्वसू, ॥ पुस्साइयाणं सत्तनक्खत्ता अवरदारिया प० तं० पुस्सो,

भाषार्थ

सुख ॥ ८८ ॥ असाता वेदनीय कर्म का सात प्रकार से अनुभव होता है अमनोज्ञ यावत् पावन का दुःख ॥ ८९ ॥ मघा नक्षत्र के सात तारे कहे हैं ॥ ९० ॥ अभिजित, श्रवण, धनिष्ठा शतभिषा, पूर्वाभाद्र पद, उत्तराभाद्रपद, और रेवती इन सात नक्षत्रों के सात तारे कहे हैं. अश्विनी, भरणी, कृत्तिका, रोहिणी, मृगसर, आर्द्रा और पुनर्वसुइन सात नक्षत्र दक्षिण द्वारवाले कहे हैं. पुष्य, अश्लेशा, मघा, पूर्वाफाल्गुनी,

शब्दार्थ

उत्तराफाल्गुणी ह० हस्त चि० चित्रा सा० स्वातिआदि स० सातनक्षत्र उ० उत्तरद्वारके सा० स्वाति वि० विशाखा अ० अनुराधा जि० ज्येष्ठा मु० मूल पु० पूर्वाषाढा उ० उत्तराषाढा ॥ ९१ ॥ जं० जंबूद्वीप के सो० सोमनस व० वक्खार पर्वत में स० सातकूट सि० सिद्ध सो० सोमनस मं० मंगलावती दे० देवकुरु वि० विमल कं० कांचन वि० विशिष्ट ॥ ९२ ॥ जं० जंबूद्विप में गं० गंधमादन व० वक्खार पर्वत

सूत्र

असिलेसा, मघा, पुव्वाफग्गुणी, उत्तराफग्गुणी, हत्थो, चित्ता ॥ साइयाणं सत्तनक्खत्ता उत्तरदारिया प० तं० साइ, विसाहा, अणुराहा, जिट्ठा, मुलो, पुव्वाआसाढा उत्तरा आसाढा ॥ ९१ ॥ जंबुद्दीवे दीवे सोमणसे वक्खारपव्वए सत्तकूडा प० तं० (गाथा) सिद्धेसोमण सेया, बोधव्वे मंगलावई कूडे, देवकुरु विमलकंचण, विसिट्ठकूडेयबोधव्वे ॥ १ ॥ ॥ ९२ ॥ जंबुद्दीवे दीवे गंधमायणे वक्खार पव्वए सत्तकूडा प० तं० (गाथा)

भावार्थ

उत्तराफाल्गुनी; हस्त, चित्रा, ये सात नक्षत्र पश्चिम द्वारवाले कहे हैं स्वाति, विशाखा, अनुराधा, ज्येष्टा, मूल, पूर्वाषाढा, और उत्तराषाढा ये सात नक्षत्रों उत्तर द्वारवाले कहे हैं. ॥ ९१ ॥ जम्बूद्वीप में सोमनस वक्षस्का पर्वत पे सात कूट कहे हैं १ सिद्ध, २ सोमनस ३ मंगलावनी कूट ४ देवकुरु ५ विमल ६ कांचन ७ विशिष्ट ॥ ९२ ॥ जम्बूद्वीप में गंधमादन वक्षस्का पर्वत पे सात कूट कहे हैं १ सिद्ध २ गंध

शब्दार्थ में स० सातकूट सि० सिद्ध गं० गंधमादन गं० गंधिलावती उ० उत्तरकुरु फ० स्फाटिक लो० लोहित अं० आनंदन ॥९३॥ बे० बेइन्द्रिय के जा० जातिकुल को०कोडी जो० योनि प० प्रमुख स० सातहजार ॥ ९४ ॥ जी० जीवने स० सात स्थान नि० निवर्तित पु० पुद्गल पा० पापकर्मपने चि० इकठेकिये चि० इकठे करते है चि० इकठे करेंगे ने० नारकी निवर्तित जा० यावत् दे० देवनिवर्तित ए० ऐसे चि० चिन जा० यावत् नि० निर्जरा ॥ ९५ ॥ स० सात प्रदेशी खं० स्कन्ध अ० अनंत प० प्ररूपे ॥९६॥ स०सात प० प्रदेशअव-

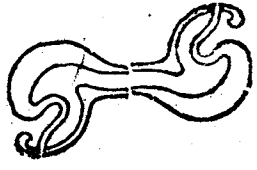
सूत्र सिद्धेय गंधमायणे, बोधव्वे गंधिलावई कूडे; उत्तरकुरुफलिहे लोहियक्ख आणंदणे चेव (१) ॥ ९३ ॥ बेंदियाणं सत्तजाइकुलकोडिजोणीपमुहसत्तसहस्सा प० ॥ ९४ ॥ जीवाणं सत्तट्ठाणनिव्वत्तिए पुग्गले पावकम्मत्ताए चिणिंसुवा, चिणंतिवा, चिणिस्संतिवा, तं० नेरइय निव्वत्तिए जाव देवनिव्वत्तिए; एवंचिण जाव निजरा चेव ॥ ९५ ॥ सत्त पएसिया खंधा अणंता प० ॥ ९६ ॥ सत्तपएसोगाढापुग्गला

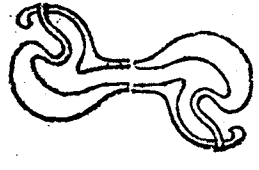
भावार्थ मादन ३ गंधिलावती ४ उत्तरकुरु ५ स्फाटिक ६ लोहित और ७ आनंदन कूट ॥ ९३ ॥ बेइन्द्रिय की सात जाति कुलकोडी योनि प्रमुख सात हजार की कही ॥ ९४ ॥ जीवने सात स्थान निवर्तित पुद्गल पाप कर्मपने संचित किये, संचित करते हैं, और संचित करेंगे. नरक निवर्तित यावत् देव निवर्तित. यों चिन,

गाहा पु० पुद्गल जा० यावत् स० सात गु० गुणरुक्ष पु० पुद्गल अ० अनंत प० प्ररूपे ॥ ९७ ॥ *

जाव सत्तगुणलुक्खा पुग्गला अणंता पण्णत्ता ॥ ९७ ॥इति सत्तमं ठाणं सम्मत्तं ॥ ७ ॥ * * * *

उपचिन यावत् निर्जरात क जानना ॥ ९५ ॥ सात प्रदेशी स्कंध अनंत कहें॥९६॥ सात प्रदेश की अवगाहना करनेवाले पुद्गल अनंत कहे हैं यावत् सात गुणरुक्ष पुद्गल अनंत कहे हैं ॥९७॥ यह सातवा स्थानक समाप्त हुवा.





॥ अष्टमं स्थानम् ॥

शब्दार्थ

अ० आठ ठा० स्थान सं० युक्त अ० अनगार अ० योग्य है ए० एकल विहार प० प्रतिमा उ० अंगीकार कर वि० विचरने को स० श्रद्धावन्त स०सत्यवन्तपुरुष मे०मेधावी ब०बहुश्रुत स० शक्तिवन्त अ०अल्पाधिकरणी धि० धैर्यवन्त वी० वीर्ययुक्त ॥ १ ॥ अ० आठ प्रकार का जो० योनिसंग्रह अं० अंडज पो० पोतज जा० यावत् उ० उद्भिज उ० औपपातिक अं० अंडज अ० आठगति अ० आठ आगति अं० अंडज अं० अंडज में उ० उत्पन्नहो अं० अंडज में से पो० पोतज में से जा० यावत् उ० उपपात में से उ०

सूत्र

अट्ठहिं ठाणेहिं संपन्ने अणगारे अरिहइ एगल्लविहारपडिमं उवसंपज्जित्ताणं विहरित्तए तं० सड्ढीपुरिसजाए, सच्चेपुरिसजाए, मेहावीपुरिसजाए, बहुस्सुएपुरिसजाए, सत्तिमं अप्पाहिगरणे धिइमं वीरियसंपन्ने ॥ १ ॥ अट्ठविहे जोणिसंगहे प० तं० अंडया, पोयया, जाव उब्भिया, उववाइया ॥ अंडया अट्ठगइया अट्ठागइया प० तं० अंडए अंडएसु उववज्जमाणे अंडएहिंतोवा पोयएहिंतोवा जाव उववाइएहिंतोवा उववाजि-

भावार्थ

अष्ट गुण संपन्न अणगार एकल विहारी बनने की प्रतिमा अंगीकार कर सकता है. १ श्रद्धावंत पुरुष २ सत्यवादी ३ बुद्धिवंत ४ बहुश्रुत ६ शक्तिवंत ६ अल्पाधिकरणी (क्रोध रहित) और ८ वीर्यवन्त ॥ १ ॥ आठ प्रकार का योनिसंग्रहः-अंडज, पोतज यावत् उद्भिज और औपपातिक (देव नारकी) अण्डज,

शब्दार्थ

उत्पन्न होवे अं० अंडज अं० अंडज को वि० त्रजता अं० अंडजपने पो० पोतजपने जा० यावत् उ० उपपातपने उ० उत्पन्न होनेको ग० जावे ए० ऐसे पो० पोत ज० जरायुज से० दूसरे की ग० गति आ० आगति ण० नहीं है॥२॥ जी० जीवने अ० आठकर्म प्रकृति चि० इकठी की चि० इकठी करते हैं चि० इकठी करेंगे ना० ज्ञानावरणीय द० दर्शनावरणीय वे० वेदनीय मो० मोहनीय आ० आयुष्य ना० नाम गो० गोत्र अं० अंतराय ने० नारकीने अ० आठकर्म प० प्रकृति चि० इकठी की चि० इकठी करते हैं चि० इकठी करेंगे ए०

सूत्र

जा; से चेवण मंडए अंडगत्तं विप्पजहमाणे अडगत्ताएवा, पोयगत्ताएवा, जाव उववाइयत्ताएवा गच्छेजा ॥ एवं पोययावि, जराउयावि, सेसाणं गइरागई नत्थि ॥ २ ॥ जीवाणं अट्ठकम्मपयडीओ चिणंसुवा, चिणंतिवा, चिणिस्संतिवा तं० नाणावरणिज्जं, दरिसणावरणिज्जं, वेयाणिज्जं, मोहणिज्जं, आउयं, नामं, गोयं, अंतराइयं ॥ नेरइयाणं अट्ठकम्मपयडीओ चिणंसुवा, चिणंतिवा, चिणिस्संतिवा, तं० नाणावरणिज्जं, दरिसणावरणिज्जं, वेयणिज्जं, मोहणिज्जं, आउयं, नामं, गोयं, अंतराइयं ॥ एवं निरंतरं जाव

भावार्थ

पोतज, और जराउज इन तीनों की आठ की गति और आठ की आगति कही अण्डज यावत् उपपात. दूसरे की गति आगति नहीं है. ॥ २ ॥ जीवने आठकर्म की प्रकृति गतकाल में संचित की, वर्तमान में कर रहे हैं और भविष्य में करेंगे. १ ज्ञानावरणीय, २ दर्शनावरणीय, ६ वेदनीय, ४ मोहनीय ५ आ-

शब्दार्थ

ऐसे जा० यावत् वे० वैमानिक को जी० जीव को अ० आठकर्म प्रकृति उ० विशेष इकठी की ए० ऐसे चि० चिण उ० उपचिण बं० बंध उ० उदीर वे० वेद नि० निर्जरा च० चौवीस दं० दंडक भा० कहना ॥ ३ ॥ अ० आठ ठा० स्थान से मा० मायी मा० माया करके णो० नहीं आ० आलोवे प० प्रतिक्रमे प० प्रतिवर्जे क० कीया क० करताहूं क० करूंगा अ० अपकीर्ति मे० मेरी सि० होवे अ० अवर्ण मे० मेरा

सूत्र

वेमाणियाणं जीवाणं अट्ठकम्मपयडीओ उवचिणिंसुवा, एवंचिणउवचिणबंधउदीर-वेय तहनिज्जराचेव ॥ एए चउवीसा दंडगा भाणियव्वा, ॥ ३ ॥ अट्ठहिं ठाणेहिं माई मायंकट्टु नो आलोइज्जा नो पडिक्कमेज्जा जाव नो पडिवज्जेज्जा तं० करिंसुवाहं, करेमिवाहं, करिस्सामिवाहं, अकित्तीवा मे सिया, अवन्नेवा मे सिया, अवण्णएवा मे सिया,

भावार्थ

युष्य ६ नाम ७ गोत्र और ८ अंतराय. योंही नीरंतर २४ ही दंडक के जीवों को जानना. एसे ही वे जीवों आठ कर्म की प्रकृति को उपचिने, बांधे यावत् निर्जरे. ॥ ३ ॥ आठ कारन से मायावी माया कर के उस की आलोचना, प्रतिक्रमण यावत् तप अंगीकार नहीं कर सकता है. १ मैंने अपराध किया अब अपराध करके कैसे आलोचना करनी? २ मैं पाप कर रहा हूं तो विना निवृति आलोचना कैसे करनी? ३ भविष्य में ऐसा करूंगातो कैसे आलोचना करूं ४ मेरी अपकीर्ति होवे ५ मेरा अवर्णवाद होवे ६ मेरा-सत्कार सन्मान न होवे ७ मेरी कीर्ति का नाश होवे ८ मेरा यश का जो विस्तार हो रहा है सो क्षीण

शब्दार्थ सि० होवे अ० अवर्णवाद मे० मेरा सि० होवे कि कीर्ति मे० मेरी प० नाशहोगी ज० जश मे० मेरा प० नाशहोगा ॥ ४ ॥ अ० आठ ठा० स्थान से मा० मायी मा० मायाकर के आ० आलोवे जा० यावत् प० प्रतिवर्जे मा० मायी की अ० इसलोक में गं० निंदा भ० होती है उ० उपपात में ग० निंदा भ० होवे आ० आत्माकी ग० निन्दा भ० होवे मा० मायी मा० माया करके नो० नहीं आ० आलोवे जा० यावत् णो०

सूत्र कित्ती वा मे परिहायइस्सइ, जसेवामे परिहायइस्सइ, अट्ठहिं ठाणेहिं माईमायंकट्टु आलोएज्जा जाव पडिवज्जेज्जा तं० माइस्सणं अस्सिलोगे गरहिए भवइ, उववाएगरहिए भवइ, आयाईगरहियाभवइ, एगामवि । माई मायंकट्टु नो आलोइज्जा जाव नो पडिवज्जेज्जा नत्थि तस्स आराहणा एगामवि । माईमायंकट्टु आलोएज्जा जाव पडिव-

भावार्थ होजाय. आठ कारन से मायावी पुरुष माया कर के उस की आलोचना यावत् तप अंगीकार करता है. १ मायावी पुरुष की इस लोक में निंदा होती है २ मायावी पुरुष मरकर जहां उत्पन्न होवे वहांपरभी उस की निंदा होती है ३ एक ही माया का स्थान सेवनेवाला यदि आलोचना न करे यावत् तप अंगीकार करे नहीं तो वह आराधक नहीं होता है ४ एक भी माया का स्थान को सेवन करके उस की आलोचना यावत् तप अंगीकार करेतो वह आराधक होता है ५ बहुत माया के स्थानक सेवकर उस की आलोचना करे नहींतो वह आराधक नहीं होता है ६ बहुत मायाके स्थान का सेवन कर उस की आलो-

शब्दार्थ

नही प० प्रतिवर्जे न० नहीं है त० उसको आ० आराधना मा० मायी मा० मायाकरके आ० आलोवे प० प्रतिवर्जे न० है उ० उसको आ० आराधना ब० बहुत मा० मायी मा० मायाकरके नो० नहीं आ० आलोवे जा० यावत् नो० नहीं प० प्रतिवर्जे न० नहीं हैं उ० उसको आ० आराधना ब० बहुत मा० मायी मा० माया करके आ० आलोवे जा० यावत् अ० है त० उसको आ० आराधना आ० आचार्य उ० उपाध्याय को अ० अतिशेष ना० ज्ञान दं० दर्शन स० उत्पन्न होवे म० मुझे आ० आलोवे मा० मायी मा० मायाकरके से०

सूत्र

जेजा, अत्थि तस्स आराहणा बहुओवि । माई मायंकट्टु नो आलोएजा जाव नो पडिवजेजा नत्थि तस्स आराहणा बहुओवि । माई मायं कट्टु आलोएजा जाव अत्थि तस्स आराहणा । आयरियउवज्झायस्स वा मे अइसेसे नाणदंसणे समुप्पाजिजा सेय ममं आलोएजा। माईणं एसे माईणं मायं कट्टु से जहानामए-आयागरेइवा, तंवागरेइवा, तउआगरेइवा, सीसागरेइवा, रुप्पागरेइवा, सुवण्णागरेइवा, तिलागणीइवा,

भावार्थ

यावत् तप अंगीकार करे तो आराधक होवे ७ आचार्य उपाध्याय को मेरे से विशेष ज्ञान दर्शन हैं इस लिये वे देखेंगे कि यह मायावी है ऐसा जानकर उस की आलोचना करे. जैसे की लोहेको तपानेवाला, तांबेको गालनेवाला, त्रपुवेको गालनेवाला, सीसेको गालनेवाला, चांदीको गालनेवाला, व सुवर्णको गालनेवाला तिलके काष्टकी अग्नि, तुसकी अग्नि. लक्कडके बूरके अग्नि, नलपोला सराकार की अग्नि मदिरासे आटेको श्वेत करे उसके भाजन की

शब्दार्थ

वह ज०जैसे आ०लोहेको धमनेवाला तं०तांबा को तपानेवाला त०तरुबेको तपानेवाला सी०सीसाको तपानेवाला रु० रुपेको तपानेवाला सु०सुवर्णको तपानेवाला ति०तिलकी अग्नि तु०तुसकी अग्नि बु०बुसकीअग्नि न०नलपोला सला-कारकी द० पत्तेकी सुं० मदीरा लिं० भट्ठी भं० भांडेकी लिं० भट्ठी गो० हंडी की लिं० भट्ठी कु० कुम्भ-कार की वा० भट्ठी क० कवेलू की वा० भठी इ०इंटकी वा० भठी जं० ऊस की चु० चुल्ह लो० लुहार व० भठी त० तपावे स० जाज्वल्यमान सरिखे कि० किंशुक पुष्पसमान उ० चिनगारियों स० सहस्र

सूत्र

तुसागणीइवा, बुसागणीइवा, नलागणीइवा, दलागणीइवा; सुंडियालिंछाणिवा, भंडियालिंछाणिवा, गोलियालिंछाणिवा, कुंभारावाएइवा, कवेलुयावाएइवा, इट्टावाएइवा, जंतवाडचुल्लइवा, लोहारंवरीसाणिवा, तत्ताणिसमजोइभूयाणि, किंसुयफुल्लसमाणाणि, उक्कासससहस्साइं विणिंमुयमाणाइं २ जालासहस्साइं पमुंचमाणाइं २ इंगालसहस्साइं पविकिरमाणाइं२, अंतो २ झियायंति, एवामेव मायी मायंकट्टु अंतो२ झियाइ । जइ

भावार्थ

अग्नि, मदिराकारकी बडीहंडी की अग्नि, कुंभारके निभाडे की अग्नि, कवेलू चुने की भठी की अग्नि, ईटंके निभाडे की अग्नि, इक्षुरस का गुड बनाते भठी सलगावे उस की अग्नि, और लोहार की भठी की अग्नि यह सब प्रकार की अग्नि को तपा कर जाज्वल्यमान करे उस की ज्योति केसुडा के फुल सरिखी करे, उस के पिंड में से हजारो कण उछलते होवे और वे कणों विखरते २ अंदर इन्धन को दीप्त करते होवे

शब्दार्थ

वि० छोडते जा० ज्वाला सहस्र प० विखरते ई० अग्नि सहस्र प० फेंकते अं० अंदर झि० सिझे ए० ऐसे मा० मायी मा० माया करके अं० अंदर झि० सिझावे ज० यदि अ० अन्य के० कोई व० कहते हैं मा० मायावी जा० जानता है अ० मैं अ० शंका करता हूं मा० मायी मा० माया करके अ० नहीं आलोचता प० प्रतिक्रमता का० काल के अवसर में का० काल करके अ० अन्यतर दे० देवलोक में दे० देवतापने उ० उत्पन्न भ० होवे नो० नहीं म० महर्द्धिक नो० नहीं दू० दूरजानेवाला नो० नहीं चि०

सूत्र

वियणं अन्ने केइ वदंति तंपियणं माई जाणइ अहमेसे अभिसंकिज्जामि २, माईणं मायं कट्टु अणालोइय पडिक्कंते कालमासे कालंकिच्चा अण्णतरेसु देवलोगेसु देवत्ताए उववत्तारो भवंति तं० नोमहड्ढिएसु, जाव नो दूरंगइएसु, नो चिरट्ठिईएसु; सेणं तत्थ देवेभवइ, नो महड्ढिए जाव णो चिरंट्ठिईए जावियसे तत्थ बाहिरब्भंतरिया परिसा भवति सावियणं नो आढाइ नो परियाणइ, नो महारिहेणं आसणेणं उवनिमंतेइ,

भावार्थ

वैसेही मायावी पुरुष विचार कर के पश्चाताप रूप अग्निसे प्रज्वले. और कोई दुसरा कहे तो मायावि जाने कि यह मनुष्य पाप करानेवाला है इस लिये सदैव शंका करता हुवा रहे. और भी मायी माया की आलोचना किये विना काल कर के अन्य व्यंतरादिक देव में उत्पन्न होवे वहांभी उस को विशेष ऋद्धि मीले नहीं. और सौधर्मादि देवलोक में उत्पन्न हो सके नहीं. वैसेही ज्यादा स्थितिभी होवे नहीं.

शब्दार्थ

लंबीस्थितिवाला दे० देव भ० होवे नो० नहीं म० महर्द्धिक जा० यावत् नो० नहीं चि० लंबीस्थितिवाला त० तहां बा० बाह्य अ० आभ्यंतर प० परिषदा भ० है सा० वह नो० नहीं आ० आदर देवे नो० नहीं प० आया जाने नो० नहीं म० बडेकेयोग्य आसन उ० निमंत्रणकरे भा० भाषा भा० बोलतेको च० चार पं० पाच देव अ० विना आज्ञा अ० ऊठे मं० मत ब०बहुत भा० बोलो त० तहां से दे० देवलोक से आ० आयुष्य क्षयसे भ० भवक्षयसे ठि० स्थितिक्षय से अ० पीछे च० चवकर मा० मनुष्यभवमें जा०

सूत्र

भासंपियसे भासमाणस्स जाव चत्तारि पंचदेवा अणुण्णाचेव अब्भुट्ठिंति, माबहु देवे भासओ; । सेणंतओ देवलोगाओ आउक्खएणं, भवक्खएणं, ठिइक्खएणं, अणंतरं चयं चइत्ताणं इहेव माणुस्सएभवे जाइं इमाइं कुलाइं भवंति तं० अंतकुलाणिवा, पंतकुलाणिवा, तुच्छकुलाणिवा, दरिद्दकुलाणिवा, किविणकुलाणिवा, भिक्खागकुलाणिवा, तहप्पगारेसु कुलेसु पुमत्ताए पच्चायाइसेणं तत्थ पुमेभवइ, दुरूवे, दुवन्ने, दुगं-

भावार्थ

वहां बाहिर की व अंदरकी जो परिषदा है उन के देवताओं उस का आदर सन्मान करे नहीं, अन्य महर्द्धिक देव समान उस को निमंत्रणभी करे नहीं, और कदाचित् वह बोले तो अन्य चार पांच देवताओं उठकर कहे कि अरे देवता बहुत बकवाद मत कर, मौन रहे. और वहां से आयुष्य पूर्ण होने से चवकर मनुष्य लोक में अंत प्रांत कुल, चांडाल कुल, तुच्छकुल, दरिद्र कुल, भिक्षाचरका कुल, कृपण

शब्दार्थ

जाति कु० कुलमें भ० होवे अ० अंतकुलमें पं० प्रांतकुल में तु० तुच्छकुलमें द० दरिद्रकुलमें कि० कृपणकुल में भि० भिक्षुककुलमें त० तथा प्रकार के कुलमें पु० मनुष्यपने प० उत्पन्न होवे त० तहां पु० मनुष्य भ० होवे दु० कुरूप दु०खराब वर्ण दु० दुर्गंध दु० खराबस्पर्श अ० अनिष्ट अ०अक्रांत अ० अप्रिय अ०अमनाम ही० हीनस्वर दी० दीनस्वर अ० अनिष्टस्वर अ० अक्रांत स्वर अ० अप्रिय स्वर अ० अमनोज्ञ स्वर

सूत्र

धे,दुरसे,दुफासे, अणिट्ठे, अकंते, अप्पिाए, अमणुन्ने, अमणामे; हीणस्सरे, दीणस्सरे अणिट्ठस्सरे,अकंतस्सरे,अप्पियस्सरे,अमणोहास्सरे,अमणामस्सरे अणाएज्जवयणपच्चायाए जावियसे तत्थ बाहिरब्भंतरिया परिसा भवइ सावियणं णो आढाइ णोपरियाणाइ, णोमहरिहेणं आसणेणं उवनिमंतेइ, भासंपियसे भासमाणस्स जाव चत्तारि पंचजणा अवुत्ताचेव

भावार्थ

तृतीय ठाणाङ्ग सूत्र

का कुल, और भी इस प्रकार के अन्य कुल में उत्पन्न होवे वहां भी वह पुरुष खराब रूप, वर्ण, गंध, रस, स्पर्श वाला होवे, अनिष्ट, अक्रांत, अप्रिय, अमनोज्ञ, मन पसंद न होवे वैसा, हीन स्वर वाला, अनिष्ट स्वर वाला, अक्रांत स्वर वाला, अप्रीतिकारी स्वर वाला, अमनोज्ञ स्वर वाला, अमनाम स्वर वाला, अनादेयवचन वाला होवे. उसकी बाह्य व आभ्यंतर परिषदावाले स्त्री, मित्र, पुत्रादि वर्ग भी उसका आदर करे नहीं यावत् महान पुरुष को योग्य आमंत्रण करे नहीं और बोले तो दूसरा कहे कि अरे हीनपुन्य वाला बहुत मत बोल, चूप रहे इस तरह अपमान करे. ऐसी बहुत विटम्बना मायावी पुरुष को होती है. अब

शब्दार्थ

अ० अमनायस्वर अ० अनादेय वचन प० उत्पन्न होवे त० वहां बा० बाह्य अ० आभ्यंतर प० परिषदा भ० होवे सा० उत्तर दे नो० आ० आदरपावे णो० नही प० आया जाने नो० नहीं म० बडेको योग्य आ० आसन उ० निमंत्रण करे भा० भाषा भा० बोलते को च० चार पं० पांच मनुष्य अ० विनाकहे अ० उठकर मा० मत व० बहुत अ० आर्यपुत्र भा० बोलो मा० मायी मा० माया करके आ० आलोचकर प०

सूत्र

अब्भुट्ठिति, माबहुं अज्जउत्तो भासओ २ ॥ माईणं मायंकट्टु आलोइय पडिक्कंते कालेकिच्चा अण्णतरएसु देवलोएसु देवत्ताए उववत्तारो भवंति, तंजहा-महिड्ढिएसु जाव चिरट्ठिईएसु; सेणं तत्थदेवे भवइ महिड्ढिए जाव चिराट्ठईए, हारविराइयवच्छे, कडकतुडियथंभियभुए, अंगय कुंडल मट्ठगंडयल कण्ण पीठ धारी, विचित्तहत्थाभरणे,

भावार्थ

मायावी पुरुष माया की आलोचना यावत् तप अंगीकार कर काल के अवसर में काल करने से सौधर्मादि देवलोकमें महर्द्धिक यावत् चिरस्थितिवाले देवपने उत्पन्नहोवे उनके वक्षःस्थल हारोंसे विराजित रहते हैं उनकी भुजाओं कंकणोंसे सुशोभित दीखती हैं, उनके कानोंमें कुंडल रहते हैं, हस्तमें विचित्र प्रकारके आभरण है, उनको विचित्रप्रकारके वस्त्र रहते है, विचित्रप्रकारकीमाला तथा मुकटो होते हैं, कल्याणकारी वस्त्र पहिने हुवे रहते हैं, कल्याणकारी गंध, माला, कुसुम, फूल विलेपनके धरनेवाले होते हैं, देदीप्यमान

मैतिक्रमकर का० कालकर अ० अन्यतर दे० देवलोक में दे० देवतापने उ० उत्पन्न भ० होवे म० महर्द्धिक जा० यावत् चि० लंबी स्थिति वाला में त० तहां दे० देव भ० होवे म० महर्द्धिक जा० यावत् चि० लंबी स्थिति वाला हा० हारसे वि० शोभित व० वक्ष क० कटक तु० त्रुटित थं० रहा हुवा भु० हस्त अं० अंगद कुं० कुंडल म० घसाते गं० गलस्थान क० कर्णपीठ वि० विचित्र ह० हस्ताभरण वि० विचित्र व० वस्त्राभरण वि० विचित्र मा० मुकुट क० कल्याण प० प्रवर गं० गंध म० माला अ० अनुलेपन ध० धारन करने वाला भा० देदीप्यमान बों० शरीर प० लंबी व० वन माला ध० धारनकरने वाला दि० दिव्य वर्ण दि० दिव्य गंध दि० दिव्य रस दि० दिव्य स्पर्श दि० दिव्य संघयन दि० दिव्य संठान

विचित्तवत्थाभरणे विचित्तमालामउलीकल्लाणगपवरगंधमल्लाणुलेवणधरे, भासुरबोंदीपलंबवणमालधरे, दिव्वेणंवन्नेणं, दिव्वेणं गंधेणं, दिव्वेणंरसेणं, दिव्वेणंफासेणं, दिव्वेणं संघाएणं दिव्वेणं संठाणेणं, दिव्वाएइड्ढीए, दिव्वाएजुत्तीए, दिव्वाएपभाए, दिव्वाएछायाए, दिव्वाएअच्चीए, दिव्वेणंतेएणं, दिव्वेणंएसाए, दसदिसाओ उज्जोएमाणे पभासेमाणे, महयाहयणट्टगीयवाइयतंतीतलतालतुडियघणमुइंगपडुपवाइयरवेणं दिव्वाइं भोगाइं भुंजमा-

शरीर जितनी लम्बी वनमाला जिनको रहती हैं और भी वे दीव्यवर्णवाले, दीव्यगंधवाले, दीव्यरसवाले, दीव्यस्पर्शवाले दीव्यसंघयन, संस्थान, ऋद्धि, द्युति, प्रभा, कान्ति, अर्ची, तेज व लेश्यावालेहैं दशों दि-

शब्दार्थ

दि० दिव्य ऋद्धि दि० दिव्य द्युति दि० दिव्य प्रभा दि० दिव्य कान्ति दि० दिव्य अर्चि दि० दिव्य तेज दि० दिव्य लेश्या द० दशदिशा में उ० उद्योत करने वाला प० प्रभा करने वाला म० बडा अ० आहत न० नाटक गी० गीत वा० वादित्र तं० तंती त० तल ता० ताल तु० त्रुटित घ० घन मु० मादल प० पटवडी प० पडह र० स्वर से दि० दिव्य भोग भुं० भोगता वि० विचरता है त० तहां बा० बाह्य अ० आभ्यंतर प० परिषदा भ० होवे सा० उस में आ० आदरपावे प० आया जाने प० बडे को योग्य आ० आसन पे उ० निमंत्रण करे भा० भाषा भा० बोलता जा० यावत् च० चार पं० पांच देव अ०

सूत्र

णे विहरइ । जावियसे तत्थ बाहिरब्भंतरिया परिसा भवइ, सावियणं आढाइ परियाणइ महरिहेणं आसणेणं उपनिमंतेइ भासंपियसे भासमाणस्स जाव चत्तारि पंचदेवा अवुत्ता चेवअब्भुट्ठेंति बहुदेवे भासओ २,। सेणं तओ देवलोयाओ आउक्खएणं भवक्खएणं, ठिइक्खएणं जाव चइत्ता इहेव माणुस्सए भवे जाइं इमाइं कुलाइं भवंति, आढाइ जाव बहुजणस्स अपरिभूयाइं तहप्पगारेसु कुलेसु पुमत्ताए पच्चायाइ,

भावार्थ

शिमें उद्योत करते हुवे आहत, ना क, गीत, वादित्र, तंती, वीणा तल, ताल, त्रुटित, घन, मादल, पडवडी, डह वगैरह शब्दोंसे दीव्यभोग भोगते हुवे विचरते हैं वहां जो बाह्याभ्यंतर परिषदा रही हुइ है उनके देवताभी उनको आदर सत्कार करते हैं और बोलता होवेतो कहतेभी हैं अहो आयुष्यमन्

शब्दार्थ

विनाकहे अ० उठ ब० बहूत दे० देव भा० बोलो त० तहां से आ० आयुष्यक्षय से जा० यावत् च० चवकर मा० मनुष्य भव में इ० यहां कु० कुल भ० हैं आ० आदरपावे जा० यावत् ब० बहुत लो० लोक से अ० अपरिभूत त० तथा प्रकार का कु० कुल में पु० पुरुष पने प० उत्पन्न त० तहां पु० पुरुष भ० होवे सु०सुरूप सु०सुवर्ण सु० सुगंध सु०सुरस सु०सुस्पर्श इ०इष्ट क०कांत जा०यावत् म० मनयोग्य अ० अहीन स्वर जा० यावत् म० मणाम स्वर आ० आदेय वचन प० उत्पन्न त० तहां बा० बाह्य अ० आभ्यन्तर प० परिषदा भ० होवे सा० उस में आ० आदरपावे जा०यावत् ब०बहूत अ० आर्य भा० बोलो ॥ ४ ॥ अ०

सूत्र

सेणं तत्थ पुमे भवइ, सुरूवे, सुवन्ने, सुगंधे, सुरसे, सुफासे, इट्ठे, कंते, जाव मणामे, अहीणस्सरे, जाव मणामस्सरे आदेज्जवयण पच्चायाए, जावियसे तत्थ बाहिरब्भंतरिया परिसा भवइ सावि य आढाइ जाव बहु अज्जउत्ते भासओ २ ॥ ४ ॥

भावार्थ

देवता और भी बोलो. वहां आयुष्यका क्षय हुये पीछे वहांसे चवकर मनुष्य में बहूत लोकोसे अपरिभूत कुलमें उत्पन्न होताहै वहां पुरुषपने अच्छा वर्ण, गंध, रस, स्पर्शवाला इष्ट कान्त यावत् मनगमता, अदीन स्वरवाला यावत् आदेयवचनवाला होता है. उनके पुत्र मित्रादिभी उनको यथायोग्य सत्कार सन्मान देते हैं और बोलते ऐसाभी कहे कि अहो आर्यपुरुष थोडाविशेष बोलो !! ४ ॥ आठ प्रकारका संवर कहा

शब्दार्थ

आठ प्रकार का संवर सो० श्रोतेन्द्रिय संवर जा० यावत् फा० स्पर्शेन्द्रिय संवर म० मनसंवर व० वचन संवर का० कायसंवर अ० आठ प्रकार का अ० असंवर सो० श्रोतेन्द्रिय जा० यावत् का० काय असंवर ॥ ५ ॥ अ० आठस्पर्श क० कर्कश मा० मृदु गु० गुरु ल० लघु सी० शीत उ० ऊष्ण नि० स्निग्ध लु० रुक्ष ॥ ६ ॥ अ० आठ प्रकार की लो० लोकस्थिति आ० आकाश प्रतिष्ठित वा० वायु वा० वायु प० प्रतिष्ठित उ० उदधि ए० ऐसे जा० यावत् छ० छठाठाणा में जा० यावत् जी० जीव क० कर्म प० प्रतिष्ठित

सूत्र

अट्ठविहे संवरे प० तं० सोइंदियसंवरे, जाव फासिंदियसंवरे, मणसंवरे, वयसंवरे, कायसंवरे ॥ अट्ठविहे असंवरे प० तं० सोइंदिय असंवरे जाव कायअसंवरे ॥ ५ ॥ अट्ठफासा प० तं० कक्खडे, माउए, गुरुए, लहुए, सीए, उसिणे, निद्धे, लुक्खे, ॥ ६ ॥ अट्ठविहा लोगट्ठिई प० तं० आगासपइट्ठिए वाए, वायपइट्ठिए उदही, एवं जाव छट्ठा-

भावार्थ

हैं १ श्रोतेन्द्रिय संवर यावत् स्पर्शेन्द्रिय संवर, मनसंवर, वचनसंवर और कायाका संवर, उन आठों का निग्रह नहीं करने से आठ प्रकार असंवर होता है ॥ ५ ॥ आठ स्पर्श १ कर्कश २ मृदु ३ गुरु ४ लघु ५ शीत ६ ऊष्ण ७ स्निग्ध और ८ रुक्ष ॥ ६ ॥ आठ प्रकार की लोकस्थिति आकाश प्रतिष्ठित उदधि यावत् कर्म प्रतिष्ठित जीव, जीव संग्रहीत अजीव और कर्म संग्रहीत जीव. शेष छठे

शब्दार्थ

अ० अजीव जी० जीव सं० संग्रहीत जी० जीव क० कर्म सं० संग्रहीत अ० आठ प्रकार की ग० गण संपदा आ० आचार संपदा सु० श्रुतसंपदा स० शरीर संपदा व० वचन संपदा वा० वांचना संपदा म० मतिसंपदा प० प्रयोग संपदा सं० संग्रह प० प्रतिज्ञा अ० आठवीं ॥ ७ ॥ ए० एक २ म० महानिधि अ० आठ चक्रवाल प० प्रतिष्ठान अ० आठ २ जो० योजन उ० ऊंचे उ० ऊंचपने ॥ ८ ॥ अ० आठ स० समिति ई० ईर्यासमिति भा० भाषा समिति ए० एषणा समिति आ० आदान भंडपात्र निक्षेपन उ० उच्चार

सूत्र

णे जाव जीवा कम्मपइट्ठिया अजीवाजीवसंगहिया, जीवा कम्मसंगहिया, ॥ अट्ठविहा गणिसंपया प०तं० आयार संपया, सुयसंपया, सरीरसंपया, वयणसंपया, वायणासंपया, मइसंपया, पयोगसंपया, संगहपरिण्णाणाम अट्ठमा ॥ ७ ॥ एगमेगेणं महानिही अट्ठचक्कवाल पइट्ठाणे अट्ठ अट्ठ जोयणाइं उड्ढं उच्चत्तेणं प० ॥ ८ ॥ अट्ठसमिईओ प० ईरिया समिई, भासासमिई, एसणा समिई, आयाणभंडमत्तनिक्खेवणा-

भावार्थ

ठाणे जैसे कहना. आठ प्रकार से आचार्य की संपदा कही १ आचार संपदा, २ श्रुतसंपदा, ३ शरीर संपदा, ४ वचन संपदा, ५ वांचना संपदा ६ मतिसंपदा ७ प्रयोग संपदा, और ८ संग्रह प्रतिज्ञा (वस्त्रपात्रादि अंगीकार करनेकी) ॥ ७ ॥ चक्रवर्ती के एक २ निधान आठ २ चक्रप्रतिष्ठित हैं और वे आठ योजन के ऊंचे हैं (नव २ योजन के चौडे और बारह २ योजन के लम्बे हैं) ॥ ८ आठ समिति कहीं १ ईर्यासमिति २ भाषासमिति ३ एषणासमिति ४ आदान भंडपात्र निक्षेपन समिति ५ उच्चारप्रस्रवणपरिस्थापनि का

पा०पासवण खे०खेलजल सिं०सिंघाण प०परिठावणिया म०मन व०वचन का०काया समिति ॥९॥ अ०आठ स्थान से सं० युक्त अ० अनगार अ० युक्त है आ० आलोचना प० देनेको आ० आचारवंत आ० आधारवंत व० व्यवहारवंत उ० लज्जा रहित प० शुद्ध करावे अ० दूसरे को कहवे नहीं णि० निर्वाह करता अ० दूसरे को फल बतलावे ॥ १० ॥ अ० आठस्थान से सं० संपन्न अ० अनगार अ० योग्य है अ० आत्मदोष

सूत्र

समिई, उच्चार पासवण खेलजल्ल सिंघाण पारिट्ठावणियासमिई, मणसमिई, वयसमिई, कायसमिई॥९॥ अट्ठहिं ठाणेहिं संपन्ने अणगारे अरहइ आलोयणा पडिच्छित्ताए तं० आयारवं, आहारवं, ववहारवं, उव्वीलए, पकुव्वए, अपरिस्सावी, णिज्जवए अवायदंसी, ॥१०॥अट्ठहिं ठाणेहिं संपन्ने अणगारे अरहइ अत्तदोसं आलोएत्तए तं० जाइसंपन्ने,

सार्थ

समिति, ६ मनसमिति ७ वचन समिति और ८ काया समिति ॥९॥ आठ गुणसंपन्न अणगार आलोयणा देने योग्य होता है १ आचारवंत २ अतिचार कहे सो धारकर रखे ३ आगमश्रुतादि व्यवहारवंत ४ आलोयणालेनेवाले को लज्जा रहित करके सब भेद श्रवण करे ५ शुद्धकरावे ६ आलोचना दोष अन्य को कहे नहीं ७ शिष्य निर्वाह करसके वैसी विधि बतावे ८ यदि आलोचना नहीं करेतो उसका दुष्टफल उनको बताकर आलोचना करने का उत्साही बनावे ॥ १० ॥ आठ गुणसंपन्न अणगार स्वतः के दोष की आलो-

शब्दार्थ

आ० आलोचने योग्ग जा० जातिसंपन्न कु० कुलसंपन्न वि० विनय संपन्न ना० ज्ञानसंपन्न दं० दर्शन संपन्न च० चारित्रसंपन्न खं० क्षमावन्त द० दमवन्त ॥ ११ ॥ अ० आठ प्रकार का पा० प्रायश्चित आ० आलोचना प० प्रतिक्रमन उ० उभय वि० विवेक वि० कायोत्सर्ग त० तप छे० छेद मू० मूल ॥ १२ ॥ अ० आठ म० मदस्थान जा० जातिमद कु० कुलमद ब० बलमद रू० रूपमद त० तपमद सु० श्रुतमद ला० लाभमद ई० ऐश्वर्यमद ॥ १३ ॥ अ० आठ अ० अक्रियावादी ए० एकवादी अ० अनेकवादी मि० मितवादी नि० निमि-

सूत्र

विणयसंपन्ने नाणसंपन्ने, दंसणसंपन्ने, चरित्तसंपन्ने खंते, दंते ॥ ११ ॥ अट्ठविहे पायच्छित्ते प० तं० आलोयणारिहे, पडिक्कमणारिहे, तदुभयारिहे, विवेगारिहे, विउस्सग्गारिहे तवारिहे, छेयारिहे, मूलारिहे ॥ १२ ॥ अट्ठमयट्ठाणे प० तं० जाइमदे, कुलमदे, बलमदे, रूवमदे, तवमदे, सुयमदे, लाभमदे, ईसरियमदे ॥ १३ ॥ अट्ठ

भावार्थ

चना करने को योग्य होता है १ जातिसंपन्न २ कुलसंपन्न ३ विनय संपन्न ४ ज्ञानसंपन्न ५ दर्शन संपन्न ६ चारित्र संपन्न ७ क्षमावन्त और ८ दमितेन्द्रिय ॥ ११ ॥ प्रायश्चित के आठभेद कहे हैं १ आलोचना योग्य २ प्रतिक्रमण योग्य ३ दोनों योग्य ४ विवेक योग्य ५ कायोत्सर्ग योग्य ६ तपयोग्य ७ पर्याय (दीक्षा) छेद योग्य और ८ मूलछेद योग्य अर्थात् पुनः दीक्षादेवे ॥ १२ ॥ आठ मदस्थानक कहे हैं १ जातिमद १ कुलमद, ३ बलमद, ४ रूपमद, ५ तपमद ६ सूत्रमद ७ लाभमद ८ ऐश्वर्यमद ॥ १३ ॥ आठ अक्रियावादी १

शब्दार्थ

त्तवादी सा० सातावादी स० समुच्छेदवादी णि० नियतवादी ण० नहीं है प० परलोकवादी ॥ १४ ॥ अ० आठ प्रकार का म० महानिमित्त भो० भूमि उ० उत्पात सु० स्वप्न अ० आकाश अं० अंग स० स्वर ल० लक्षण वं० व्यंजन ॥ १५ ॥ अ० आठ प्रकार की व० वचन विभक्ति नि० निर्देश उ० उपदेश क० करण सं० संप्रदान अ० अपादान सा० स्वामि का० वचन स० सन्निधान आ० आमन्त्रण त० तहां

सूत्र

आकिरियावादी प० तं० एकावादी, अणेक्कावादी, मितवादी, निमित्तवादी, सायवादी, समुच्छेदवादी, णियययवादी णसंतिपरलोगवादी ॥ १४ ॥ अट्ठविहे महानिमित्ते प० तं० भोमे, उप्पाए, सुविणए अंतलिक्खे अंगे, सरे, लक्खणे, वंजणे ॥ १५ ॥ अट्ठविहा वयण विभत्ती प० तं० (गाथा) निद्देसे पढमा होइ, बिइया उवदेसणे; त

भावार्थ

एकही आत्मा भिन्न २ घट में व्यापक है, २ अनेकवादी सो आत्मा बहुत है ३ मितवादी सो जीव को अंगुष्ट प्रमाण माने ४ निमित्तवादी सो जगत् को बनाने में ईश्वर भूत है ५ सातावादी सो सुखभोगवने से सुखमीले ६ समुच्छेदवादी सो क्षण २ में वस्तु का नाश है ७ नियतवादी सो लोक एकान्त नित्य है ऐसामाने और ८ परलोक पुण्य पाप कुछभी नही हैं ऐसामाने ॥ १४ ॥ आठ प्रकार का महानिमित्त कहा है १ भूमिकंपादि फल शास्त्र २ रुधिर वृष्टयादि ३ शुभाशुभ स्वप्न शास्त्र ४ आकाश नगरादि शास्त्र ५ अंगस्फुरण शास्त्र ६ स्वरशास्त्र ७ शरीर लक्षण और ८ व्यंजन मसतिलकादि ॥ १५ ॥ कर्तृत्व कर्मादि

शब्दार्थ प० प्रथमा वि० विभक्ति निर्देश अ० मैं व० बोलता हूं वि० द्वितीया उ० उपदेश में भ० सीख कु० कर व० वचन त० तृतीय क० करण क० किया णी० लिया क० किया ते० उसने व० वचन हं० खेद में ण० नमस्कार सा० स्वाहा ह० होती है च० चतुर्थी प० संप्रदानमें अ० दूर कर गे० ग्रहण कर

सूत्र

इयाकरणंमि कया, चउत्थी संपयावणे ॥ १ ॥ पंचमीय अवायाणे, छट्ठीसस्सासिवायणे; सत्त-
मी सन्निहाणत्थे; अट्ठमी आमंतणेभवे ॥ २ ॥ तत्थ पढमा विभत्ती, निद्देसेसो इमो
अहंवत्ती; बिइयाउणउवएसे; भणकुणवइमं वतंवत्ती ॥ ३ ॥ तइया करणंमिकया, णीयंच
कयंच तेणवमएवा, हंदिणमो साहाए, हवइ चउत्थी पयाणंमि ॥ ४ ॥ अवणे गेण्हसु

भावार्थ लक्षण से जो विभाग किया जाता है उसे विभक्ति कहते हैं. उसके आठभेद कहे हैं १ प्रथमा विभक्ति का निर्देश अर्थ में प्रयोग किया जाता है " जैसे यह पुरुष है, या यह पुरुष जाता है." २ द्वितीया उपदेश अर्थमें जैसे " कुरुग्रामं याति, " " घटं ददाति, " कुरुग्रामको जाताहै या घट देता है ३ करण अर्थमें तृतीया का प्रयोग किया जाता है 'भिन्नः शरेण रामेण रावणः' रावण को रामने बाणसे मारा ४ संप्रदान अर्थमें चतुर्थी साधुभ्यो दानं ददाति साधु को दान देते हैं श्री जिनायनमः ५ अपादान अर्थ में पंचमी ग्रामात् आ-गतः ग्राम से आया ६ स्वामीत्वमें षष्ठी राज्ञः पुत्रः राजाका पुत्र७ सन्निधान में सप्तमी "कूपे पतितः" कूवे में

शब्दार्थ

त०उससे इ०यहांसे पं०पंचमी अ० अपादान छ० छठी त० उसका इ० इनका ग०गजका सा० स्वामि संबंध ह० है स० सप्तमी इ० इस में आ० आधार का० काल भा० भाव आ० आमंत्रण में भ० होवे अ० अष्टमी ज० जैसे हे० हेयुवान ॥ १६ ॥ अ० आठ स्थान छ० छद्मस्थ सर्व भाव से न० जाने नहीं न० देखे नहीं ध० धर्मास्तिकाय जा० यावत् गं० गंध वा० वायु ए० उनको उ० उत्पन्न ना० ज्ञान दर्शन धरने वाला अ०अरिहंत जि०जिन के०केवली जा०जाने पा०देखे ध०धर्मास्तिकाय जा०यावत् गं०गंध वा०वायु

सूत्र

तत्तो, इओत्ति वा पंचमी अवादाणे; छट्ठी तस्स इमस्स व, गयस्स वासामीसंबंधे ॥५॥ हवइ पुणसत्तमीयं, इमंमि आधार काल भावेय; आमंतणे भवेअट्ठमीय, जह हेजुवाणत्ति ॥ ६ ॥ १६ ॥ अट्ठठाणाइ छउमत्थे सव्वभावेणं नजाणइ नपासइ, तं० धम्मत्थिकायं जाव गंधं वायं । एयाणे चेव उप्पण्णणाणदंसणधरे अरहा जिणे केवली जाणइ पासइ तं० धम्मत्थिकायं जाव गंधं वायं ॥ १७ ॥ अट्ठविहे आउव्वेए प०

भावार्थ

पडा हुवा ८ आमंत्रण अर्थ में अष्टमी अर्थात् किसी को याद करना होवे जैसे हे गौतम! तू वीर वाक्य सुन. इस में से पंचमी तो मैं हूं, द्वितीया कार्य करें, तृतीय इससे ले, चतुर्थी नमः स्वाहा, पंचमी यहां से ले, षष्ठी इस को, सप्तमी उस में और अष्टमी आमंत्रण में हे युवान ! ॥ १६ ॥ छद्मस्थ जीव आठ स्थानकको सब भाव से नहीं जान व देख सकते हैं धर्मास्तिकाय यावत् गंध तथा वायु. इन आठों को केवल ज्ञान

शब्दार्थ

जा को अ० आठ अ० अग्रमहिषी क० कृष्णा क० कृष्णराजी रा० रामा रा० रामरक्षिता व० वसु व० वसुगुप्ता व० वसुमित्रा व० वसुंधरा ॥ २० ॥ स० शक्र देवेन्द्र दे० देवराजा के सो० सोम महाराजा को अ० आठ अ० अग्रमहिषी ई० ईशान दे० देवेन्द्र दे० देवराजाके वे० वैश्रमण म० महाराजा को अ० आठ अ० अग्रमहिषी ॥ २१-२२ ॥ अ० आठ म० महाग्रह चं० चंद्र सु० सूर्य सु० शुक्र बु० बुध व० बृहस्पति अं० मंगल स० शनैश्चर के० केतु ॥ २३ ॥ अ० आठ प्रकार की त० तृणवनस्पति काय मू०

सूत्र

ईसाणस्सणं देविंदस्स देवरण्णो अट्ठ अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ तं० कण्हा, कण्हराई, रामा, रामरक्खिया, वसू, वसुगुत्ता, वसुमित्ता, वसुंधरा ॥ २० ॥ सक्कस्सणं देविंदस्स देवरण्णो सोमस्स महारण्णो अट्ठ अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ । ईसाणस्सणं देविंदस्स देवरण्णो वेसमणस्स महारण्णो अट्ठ अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ ॥ २१—२२ ॥ अट्ठ महग्गहा प० तं० चंदे, सूरे, सुक्के, बुहे, बहस्सइ, अंगारए, सणिंचरे, केऊ ॥ २३ ॥ अट्ठविहा तणवणस्सइ काइया प० तं० मूले, कंदे, खंधे,

भावार्थ

कृष्ण राजी ३ रामा ४ राम रक्षिता ५ वसु ६ वसुगुप्ता ७ वसुमित्रा और ८ वसुंधरा ॥ २० ॥ शक्रेन्द्र देवका सोम महाराजा और ईशानेन्द्र देव का वैश्रमण महाराजा को आठ अग्रमहिषीयों कहीं. ॥ २१-२२ ॥ आठ महाग्रह कहे हैं. चंद्र, सूर्य, शुक्र, बुध, बृहस्पति, मंगल, शनैश्चर और केतु ॥ २३ ॥ आठ प्रकार की

शब्दार्थ

॥१७॥ अ० आठ प्रकार का आ० आयुर्वेद कु० कुमार का औषध का० काया चिकित्सा सा० शालाक्या स० शल्य काढना जं० विष नीकालने का भू० भूतविद्या ख० क्षार शास्त्र र० रसायन ॥ १८ ॥ स० शक्र दे० देवेन्द्र दे० देवराजा को अ० आठ अ० अग्रमहिषी प० पद्मा सि० शिवा सु० शूची अ० अंजू अ० अमला अ० अप्सरा ण० नवमिका रो० रोहिणी ॥ १९ ॥ ई० ईशान दे० देवेन्द्र दे० देवरा-

सूत्र

तं० कुमारामिच्चे, कायतिगिच्छा, सालाइ, सल्लहत्ता, जंगोली, भूयविज्जा, खारतंते, रसायणे ॥ १८ ॥ सक्कस्सणं देविंदस्स देवरण्णो अट्ठ अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ तं० पउमा, सिवा, सूई, अंजू, अमला, अच्छरा, णवमिया, रोहिणी ॥ १९ ॥

भावार्थ

दर्शन वाले जान व देख सकते हैं ॥ १७ ॥ आठ प्रकारका आयुर्वेद कहा है १ बालक को स्तन्य दुध का रोग जिस का औषध २ ज्वरादिरोगग्रस्त कायाकी चिकित्सा ३ शालाक्य शास्त्र सो कान, नाक, आंख प्रमुख के कीडे का ४ शल्य निकालने का ५ विष निवारन का औषध ६ भूत विद्या व्यंतर के उपसर्ग निवारन का उपाय ७ क्षार शास्त्र सो लिंगवृद्ध्यादि वाजीकरण और ८ सुवर्ण चांदी पारा वगैरह मारने की रसायन विद्या ॥ १८ ॥ शक्रेन्द्र को आठ अग्र महिषियों कही १ पद्मा २ शिवा, ३ शूची ४ अंजू ५ अमला ६ अप्सरा ७ नवमिका ८ रोहिणी ॥ १९ ॥ ईशानेन्द्र को आठ अग्र महिषियों कही १ कृष्णा २

शब्दार्थ

मूल कं० कंद खं०स्कन्ध त०त्वचा सा०शाखा प०प्रवाल प०पत्र पु०पुष्प ॥२४॥ च०चौरेन्द्रिय जी० जीवका अ०असमारंभ करनेवाले को अ०आठ प्रकार का सं०संयम क० करता है च०चक्षु के सो० सुख से अ० दुर करे नहीं च० चक्षु से दु० दुःख का अ० संयोग होवे नहीं ए० ऐसे जा० यावत् फा० स्पर्शके सो० सुख से अ०दूरकरे नहीं फा०स्पर्श के दु०दुःख का अ०संयोग होवे नहीं ॥२५॥ च०चौरेन्द्रिय जीवका स०समारंभ करते को अ० आठ प्रकार का अ० असंयम क० करता है च० चक्षुको सो० सुख से व० दूरकरे च० चक्षु के दु० दुःख का सं० संयोग भ० होवे ए० ऐसे जा० यावत् फा० स्पर्शके सो० सुख से ॥ २६ ॥ अ०

सूत्र

तया, साले, पवाले, पत्ते, पुप्फे ॥ २४ ॥ चउरिंदियाणं जीवा असमारभमाणस्स अट्ठविहे संजमे कज्जइ तं० चक्खुमाओ सोक्खाओ अवरोवेत्ता भवइ; चक्खुमएणं दुक्खेणं असंजोएत्ता भवइ एवं जाव फासामाओ सोक्खाओ अवरोवेत्ता भवइ फासामएणं दुक्खेणं असंजोएत्ता भवइ; ॥ २५ ॥ चउरिंदियाणं जीवा समारभमाणस्स अट्ठविहे असंजमे कज्जइ तं० चक्खुमाओ सोक्खाओ ववरोवेत्ता भवइ, चक्खुमएणं दुक्खेणं संजोएत्ता भवइ, एवं जाव फासामाओ सोक्खाओ ॥ २६ ॥ अट्ठ सुहुमा प०

भावार्थ

तृण वनस्पति काय कही मूल, कंद, स्कंध, त्वचा, शाखा, प्रवाल, पत्र, और पुष्प ॥ २४ ॥ चतुरेन्द्रिय जीव का असमारंभ करनेवाले को आठ प्रकार का असंयम होता है चक्षु के सुख से पृथक् होवे नहीं यावत् स्पर्श के दुःख का संयोग होवे नहीं ॥ २५ ॥ चतुरेन्द्रियका आरंभ करनेवाले को आठ प्रकारका असंयम

शब्दार्थ

आठ सु० सूक्ष्म पा० प्राण प० पनक बी० बीज ह० हरित पु० पुष्प अ० अंडग ले० कीटिका सि० स्नेह ॥ २७ ॥ भ० भरत रा० चा० चातुरंत च० चक्रवर्ती अ० आठ पु० पुरुषजुग अ० अनुक्रम से सि० सिद्ध हुवे ज० यावत् स० सर्व दु० दुःख से प० मुक्त हुवे आ० आदित्ययश म० महायश अ० अतिबल म० महाबल ते० तेजवीर्य कि० कीर्तिवीर्य दं० दंडवीर्य ज० जलवीर्य ॥ २८ ॥ पा० पार्श्वनाथ अ० अरि-

सूत्र

तं० पाणसुहुमे, पणगसुहुमे, बीयसुहुमे, हरियसुहुमे, पुप्फसुहुमे, अंडगसुहुमे, लेणसुहुमे सिणेहसुहुमे ॥२७॥ भरहस्सणं रण्णो चाउरंत चक्कवट्टिस्स अट्ठपुरिसजुगाइं अणुवद्धं सिद्धाइं जाव सव्वदुक्खप्पहीणाइं तं० आइच्चजसे, महाजसे अइबले, महाबले, तेयवीरिए, कित्तवीरिए, दंडवीरिए जलवीरिए ॥२८॥ पासस्सणं अरहओ पुरिसादाणीयस्स

भावार्थ

होता है चक्षुइन्द्रियका सुख से पृथक् होवे यावत् स्पर्शेन्द्रिय के दुःख का संयोग होवे ॥ २६ ॥ आठ सूक्ष्म कहे हैं १ प्राण, २ पनक (नीलफूलन) ३ बीज ४ हरितकाय ५ उंबर के पुष्प ६ अंड ७ कीटिका और ८ स्नेह सो कि धूंभर प्रमुख सूक्ष्म ॥ २७ ॥ भ त चक्रवर्ती के आठ पुरुषयुग अनुक्रम से सिद्ध हुवे यावत् सब दुःख से मुक्त हुवे १ आदित्य यश २ महायश ३ अतिबल ४ महाबल ५ तेज वीर्य ६ कीर्ति वीर्य ७ दंड वीर्य और ८ जल वीर्य ॥ २८ ॥ पुरुषादाणी श्री पार्श्वनाथ तीर्थंकर को आठ गण (गच्छ)

१. एक की पीछेपर दूसरा और दूसरे पीछे तीसरा उसे युगवाहन कहते हैं वैसे आठ पुरुष हुवे.

शब्दार्थ

हुंता पु०पुरुषादानी अ०आठगण अ०आठगणधर हो०हुवे सु०शुभ अ०आर्यघोष व० वशिष्ठ बं० ब्रह्मचारी सो० सोम सि० श्रीधर वी० वीर्य भ० भद्रयश ॥ २९ ॥ अ० आठ प्रकारका दं० दर्शन स० सम्यक् दर्शन मि०मिथ्या दर्शन स०तममिथ्या दर्शन च०चक्षुदर्शन जा०यावत् के०केवल दर्शन सु०स्वप्नदर्शन ॥३०॥ अ० आठ प्रकार की अ० कालकी उपमा प० पल्योपम सा० सागरोपम ओ० उत्सर्पिणी उ० अवसर्पिणी पो० पुद्गल परावर्तन ती० अतीतकाल अ० अनागतकाल स० सर्वकाल ॥ ३१ ॥ अ० अरिहंत अ० अरिष्टनेमी

सूत्र

अट्ठगणा अट्ठगणहरा होत्था तं० सुभे, अज्जघोसे, वसिट्ठे, बंभचारी, सोमे, सिरिधरे, वीरिए, भद्दजसे॥२९॥अट्ठविहे दंसणे प० तं० सम्मदंसणे, मिच्छदंसणे, सम्ममिच्छदंसणे, चक्खुदंसणे, जाव केवलदंसणे सुविणदंसणे ॥३०॥अट्ठविहे अद्धोवमिए प० तं० पलिओवमे, सागरोवमे, ओस्सप्पिणीए, उस्सप्पिणीए, पोग्गलपरियट्टे, तीतद्धा, अणागयद्धा, सव्वद्धा; ॥ ३१ ॥ अरहओणं अरिट्ठनेमिस्स जाव अट्ठमाओ परिसजुगाओ जु-

भावार्थ

और आठ गणधर हुवे. उन गणधरों के नाम १ शुभ, २ आर्य घोष ३ वशिष्ठ ४ ब्रह्मचारी ५ सोम ६ श्रीधर ७ वीर्य और ८ भद्रयश ॥२९॥ दर्शन के आठ भेद कहे हैं १ सम्यक् दर्शन २ मिथ्या दर्शन ३ सममिथ्या दर्शन ४ चक्षुदर्शन, ५ अचक्षु दर्शन, ६ अवधि दर्शन ७ केवल दर्शन और ८ स्वप्न दर्शन ॥ ३० ॥ आठ प्रकारसे कालकी उपमा कही है १ पल्योपम २ सागरोपम ३ उत्सर्पिणी ४ अवसर्पिणी ५ पुद्गलपरावर्तन

शब्दार्थ

जा०यावत् अ०आठ पु०पुरुषयुग जु०युगांतकरभूमि दु० दोवर्षकी प० दीक्षा से अं०अंत अ० कीया ॥३२॥ स० श्रमण भ० भगवन्त म० महावीर ने अ० आठराजाको मुं० मुंड कर अ०अगार से अ० अनगार को प०प्रव्रजितकिये वी०वीरंगक वी०वीरयश सं०संजत णि०नेयक रा०राजर्षि से०श्वेत सि०शिव उ०उदायन सं० शंख का० काशीका ॥ ३३ ॥ अ० आठ प्रकारका आ० आहार म० मनोज्ञ अ० अशन पा० पानी खा०

सूत्र

गंतगरभूमी दुवास परियाए अंतमकासी. ॥ ३२ ॥ समणेणं भगवया महावीरेणं अट्ठरायाणो मुंडा भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वाविया तं (गाथा) वीरंगय वीरजसे । संजयए णिजएय रायरिसी ॥ सेय सिवे उदायणे । तहसंखे कासिवद्धणए (१) ॥ ३३ ॥ अट्ठविहे आहारे प० तं० मणुण्णे—असणे, पाणे, खाइमे, साइमे, अम-

भावार्थ

६ अतीतकाल, ७ अनागत काल और ८ सब काल ॥ ३१ ॥ अरिष्टनेमी मोक्षपधारे पीछे उनकी आठ पाट तक मुक्त होता रहा. और श्री अरिष्टनेमी को केवल ज्ञान हुवे पीछे दोवर्ष से मोक्षजाना शरूहुवा. श्रमण भगवन्त महावीरने आठ राजा को मुंडकर दीक्षाग्रहण कराइ १ वीरंगक २ वीरयश ३ संजत ४ प्रदेशी राजा का गोत्रीय नेयक राजर्षि ५ श्वेत ६ शिव ७ उदायन ८ और काशा देशका राना शंख ॥ ३३ ॥ आठ प्रकार का आहार मनोज्ञ अशन, पान, खादिम, स्वादिम और अमनोज्ञ अशन, पान, खादिम, व

शब्दार्थ

खादिम सा० स्वादिम अ० अमनोज्ञ अ० अशन पा० पानी खा० खादिम सा० स्वादिम ॥ ३४ ॥ उ० उपर स० सनत्कुमार मा० माहेन्द्र कल्पके हे० नीचे बं० ब्रह्मदेवलोकके रि० रिष्ठ वि० विमान प० पाथडा अ० अखाडक स० समचौरस संठाणसे सं० रहा हुवा अ० आठ क० कृष्ण राजी पु० पूर्वमें दो० दोकृष्णराजी दा० दक्षिणमें दो० दोकृष्णराजी प० पश्चिममें दो० दोकृष्णराजी उ० उत्तरमें दो० दोकृष्णराजी पु० पूर्वकी अ० आभ्यंतर क० कृष्णराजी दा० दक्षिणकी बा० बाहिरकी क० कृष्णराजी

सूत्र

णुण्णे—असणे, पाणे खाइमे, साइमे ॥ ३४ ॥ उप्पिं सणंकुमार माहिंदाणं कप्पाणं हेट्ठिं बंभलोए कप्पे रिट्ठेविमाणपत्थडे एत्थणं अक्खाडगसमचउरंससंठाणसंठियाओ अट्ठकण्हराईओ पण्णत्ताओ तं० पुरच्छिमेणं दोकण्हराईओ, दाहिणेणं दोकण्हराईओ, पच्चत्थिमेणं दोकण्हराईओ, उत्तरेणं दोकण्हराईओ ॥ पुरच्छिमा अब्भंतरा कण्हराई दाहिणं बाहिरं कण्हराइं पुट्ठा । दाहिणा अब्भंतराकण्हराई, पच्चत्थिमं

भावार्थ

स्वादिम ॥ ३४ ॥ सनत्कुमार व माहेन्द्र देवलोक की उपर और ब्रह्मदेवलोक की नीचे रिष्ठ नामक विमान के पाथडे में प्रेक्षण अखाडे के आकारवाली समचतुस्र संस्थान से संस्थित आठ कृष्णराजी कही. पूर्वदिशा में दो कृष्णराजी, दक्षिणदिशामें दो, पश्चिम में दो और उत्तर में दो. पूर्वदिशा की आभ्यंतर में दो कृष्णराजी दाक्षिण की बाहिर की कृष्णराजी को स्पर्शकर रही है, दक्षिण की आभ्यंतर कृष्णराजी पश्चिम की बाहिर

शब्दार्थ

को पु० फरसीहुइहै दा० दक्षिणकी अ०आभ्यंतर क०कृष्णराजीप०पश्चिमकी बा०बाहिर की क०कृष्णराजी को पु० स्पर्शकर रहीहुइ है प० पश्चिमकी अ० आभ्यन्तर क०कृष्णराजी उ० उत्तरकी बा० बाहिरकी क० कृष्णराजी को उ० उत्तरकी अ० आभ्यन्तर क० कृष्णराजी पु० पूर्वकी बा० बाहिरकी क० कृष्णराजी को पू० पूर्व पश्चिमकी बा० बाहिर की दो० दोकृष्णराजी छ० छअंशकी उ० उत्तरदक्षिणकी बा० बाहिरकी दो० दोकृष्णराजी तं० त्र्यंत स० सर्व की अ० आभ्यन्तर क० कृष्णराजी च० चौरस

सूत्र

बाहिरं कण्हराइं पुट्ठा । पच्चत्थिमा अब्भंतरा कण्हराई उत्तरं बाहिरं कण्हराइं पुट्ठा । उत्तरा अब्भंतरा कण्हराई पुरच्छिमं बाहिरं कण्हराइं पुट्ठा ॥ पुरच्छिमिल्लाओ बाहिराओ दोकण्हराईओ छलंसाओ । उत्तरदाहिणाओ बाहिराओ दोकण्हराईओ तंसाओ सव्वाओविणं अब्भंतरकण्हराईओ चउरंसाओ । एयासिणं अट्ठण्हं कण्हराईणं अट्ठ-नामधेज्जा प० तं० कण्हराईतिवा, मेहराईतिवा, मघातिवा, माघवईतिवा, वातफलिहे-

भावार्थ

की कृष्णराजी को स्पर्शकर रही है, पश्चिम की आभ्यंतर कृष्णराजी उत्तर की बाहिर की कृष्णराजी को स्पर्शकर रही है. उत्तर की आभ्यंतर कृष्णराजी पूर्वकी बाहिर की कृष्णराजी को स्पर्शकर रही है. पूर्व पश्चिमकी बाहिर की दो कृष्णराजी छ अंशकी है, उत्तरदक्षिणकी बाहिरकी दो कृष्णराजी त्र्यंश है, और सब अंदरकी कृष्णराजी चौरंस है. उनके नाम १ कृष्णराजी, २ मेघराजी, ३ मघा ४ माघवती ५ वात

शब्दार्थ

ए० इन अ० आठ क० कृष्णराजिके अ० आठनाम क० कृष्णराजी मे० मेघराजी म० मघा मा० माघवती वा० वातफलिहा वा० वातफलिक्षोभा दे० देवफलिहा दे० देवफलिक्षोभा ए० इन अ० आठ क० कृष्ण राजी के अ० आठ उ० आंतरेमें अ० आठ लोकान्तिक वि० विमान अ० अर्चि अ० अर्चिमाली व० वैरोचन प० प्रभंकर चं० चंद्राभ सु० सुराभ सु० सुप्रतिष्ठाभ अ० अग्निचाभ ए० इन अ० आठ लो० लोकान्तिक वि० विमान में अ० आठ प्रकार के लो० लोकान्तिक दे० देव सा० सारस्वत आ० आदित्य व० वन्हि व० वरुण ग० गर्दतोय तु० तुषित अ० अव्याबाध अ० अग्निच ए० इन अ० आठ प्रकार के

सूत्र

तिवा, वातफलिखोभेतिवा, देवफलिहेतिवा, देवफलिखोभेतिवा, । एयासिणं अट्ठण्हं कण्हराईण अट्ठसु उवासंतरेसु अट्ठलोगंतिय विमाणा प० तं० अच्ची, अच्चिमाली, वइरोयणे, पभंकर, चंदाभे, सुराभे, सुपइट्ठाभे, अग्गिच्चाभे । एएसिणं अट्ठसु लोगंतिय विमाणेसु अट्ठविहा लोगंतिया देवा प० तं० (गाथा) सारस्सय माइच्चा, वण्ही वरुणाय गद्दतोयाय तुसिया अव्वावाहा, अग्गिच्चाचेवबोधव्वा (१) एएसिणं अट्ठवि-

भावार्थ

फलिहा ६ वातफलिक्षोभा ६देवफलिहा और ८देवफलिक्षोभा. इन आठकृष्णराजी के आठ आंतरे में आठ लोकांतिक देव के आठ लोकान्तिक विमान कहे हैं १ अर्चि, २ अर्चिमाली ३ वैरोचन ४ प्रभंकर ५ चंद्राभ ६ सुराभ ७ सुप्रतिष्ठाभ और ८ अग्निचाभ. उन आठ लोकान्तिक विमान में आठ लोकान्तिक देव कहे

शब्दार्थ

लो० लोकान्तिक दे० देवकी अ० मध्यम अ० आठ सा० सागरोपमकी वि० स्थिति ॥ ३५ ॥ अ० आठ ध० धर्मास्तिकाय का म० मध्यम प० प्रदेश अ० आठ अ० अधर्मास्तिकाय के म० मध्यम प० प्रदेश अ० आठ आ० आकाशास्तिकायके म० मध्यम प्रदेश अ० आठ जी० जीव के म० मध्यम प्रदेश ॥ ३६ ॥ अ० अरिहंत म० महापद्म अ० आठराजा को मुं० मुंड भ० कर अ० अगारसे अ० अनगार को प० प्रव्रज्यादेंगे प० पद्म प० पद्मगुल्म न० नलीन न० नलीनगुल्म प० पद्मरथ ध० धनुरथ क० कनकरथ भ०

सूत्र

हाणं लोगंतियाणं देवाणं अजहण्णमणुक्कोसेणं अट्ठसागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता. ॥३५॥
अट्ठधम्मत्थिकायमज्झप्पएसा, प० अट्ठअहम्मत्थिकायमज्झप्पएसा प० ॥ अट्ठ आगासत्थिकायमज्झप्पएसा प० एवंचेव अट्ठजीवमज्झप्पएसा पण्णत्ता ॥ ३६ ॥
अरहाणं महापउमे अट्ठरायाणो मुंडाभवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वावेइति

भावार्थ

हैं १ सारस्वत २ आदित्य ३ वन्ही ४ वरुण ५ गर्दतोय ६ तुसित ७ अव्याबाध और अगिच्च. इन आठों लोकान्तिक देवता को जघन्य उत्कृष्ट आठ सागरोपमकी स्थिति कही ॥ ३५ ॥ आठ धर्मास्ति कायाके मध्यमदेश. आठ अधर्मास्ति कायाके मध्यमदेश, आठ आकाशास्ति कायाके मध्यमदेश वैसेही जीव के आठमध्यमदेश ॥ ३६ ॥ आगामिक उत्सर्पिणीमें होने वाले प्रथम तीर्थंकर श्री महापद्मस्वामी आठ राजाओंको मुंडकर गृहवास से मुक्तकर प्रव्रजितकरेंगे उनके नामः-१पद्म २ पद्मगुल्म ३ नलिन ४ नलिनगुल्म

शब्दार्थ

भरत ॥ ३७ ॥ क० कृष्ण वा० वासुदेवकी अ० आठ अ० अग्रमहिषी अ० अरिहंत अ० अरिष्टनेमी अं० पास मुं० मुंड होकर अ० अगारसे अ० अनगारको प० प्रव्रजितहुइ सि० सिद्धहुइ जा० यावत् स० सर्व दुःखसे प० मुक्तहुइ प० पद्मावती गो० गौरी गं० गंधारी ल० लक्ष्मणा सु० सुसीमा जं० जंबूवती स० सत्यभामा रु० रूपिणी अ० अग्रमहिषी ॥ ३८ ॥ वी० वीर्यपूर्व की अ० आठ व० वत्थु अ० आठ चू० चूलिका वत्थु ॥ ३९ ॥ अ० आठ गति नि० नरकगति ति० तिर्यक् जा० यावत् सि० सिद्धिगति गु० गुरुगति प०

सूत्र

तं० पउमं, पउमगुम्मं, नलिनं, नलिनगुम्मं, पउमद्धयं, धणुद्धयं, कणगरहं, भरहं ॥ ३७ ॥ कण्हस्सणं वासुदेवस्स अट्ठअग्गमहिसीओ, अरहओणं अरिट्ठनेमिस्स अंतियं मुंडाभवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइत्ता सिद्धाओ जाव सव्वदुक्खप्पहीणाओ तं० (गाथा) पउमावईयगोरी । गंधारी लक्खणा सुसीमाय ॥ जंबूवई सच्चपभा, रुप्पिणी अग्गमहिसीओ ॥ १ ॥ ३८ ॥ वीरियपुव्वस्सणं अट्ठवत्थू अट्ठचूलियावत्थू प० ॥ ३९ ॥ अट्ठगईओ प० तं० निरियगई, तिरियगई, जाव सिद्धिगई, गुरु-

भावार्थ

५ पद्मरथ ६ धनुरथ ७ कनकरथ ८ भरत ॥ ३७ ॥ कृष्ण वासुदेवकी आठ पटराणियों श्री अरिष्ट नेमीकी पास मुंडनकर प्रव्रजितबनी और अंतमें सब दुःख से मुक्तबनकर मोक्षमें गइ १ पद्मावती, २ गौरी ३ गंधारी ४ लक्ष्मणा ५ सुसीमा ६ जंबूवती ७ सत्यभामा और ८ रूपिणी ॥ ३८ ॥ वीर्यपूर्वकी आठ वत्थु और

शब्दार्थ

पणोल्लगगति प० प्रणोदनगति ॥४०॥ गं० गंगा सिं० सिंधु र० रक्ता र० रक्तवती दे० देवी के दी० द्वीप अ० आठ जो० योजन आ० लंबा वि० पहोले ॥४१॥ उ० उल्कामुख मे० मेघमुख वि० विद्युन्मुख वि० विद्युदन्त दी० द्वीप [illegible] अ० लंबे वि० पहोले ॥ ४२ ॥ का० कालोदधि स० समुद्र अ० आठ जो० योजन च० शत लक्ष व० चक्रवाल वि० पहोला ॥ ४३ ॥ अ० आभ्यंतर पु०

सत्र

गई, पणोल्लगगई, पब्भारगई, ॥ ४० ॥ गंगासिंधुरत्तारत्तवई देवीणं दीवा अट्ठट्ठ-जोयणाइं आयाम विक्खंभेणं प० ॥ ४१ ॥ उक्कामुह, मेहमुह, विज्जुमुह; विज्जुदंत दीवाणदीव अट्ठट्ठ जोयणसयाइं आयाम विक्खंभेणं पण्णत्ता ॥ ४२ ॥ कालोदेणं समुद्दे अट्ठ जोयण सयसहस्साइं चक्कवाल विक्खंभेणं प० ॥ ४३ ॥ अब्भंतर

भावार्थ

आठ वस्तु चुलिका की कही ॥ ३९ ॥ आठगति कही १ नरकगति, २ तिर्यंचगति, ३ मनुष्यगति, ४ देवगति, ५ सिद्धिगति ६ गुरुगति सो परमाणु कीगति ७ प्रणोदनगति प्रेरणासे चले ८ प्रागभारगति सो भारसे अधोगति होवे ॥ ४० ॥ गंगा, सिंधु, रक्ता और रक्तवती देवियोंके द्वीप आठ २ योजनके लम्बे चौडे कहे हैं ॥ ४१ ॥ उल्कामुख, मेघमुख, विद्युन्मुख और विद्युदंत द्वीप आठ २ सो योजनके लम्बे व चौडे कहे हैं ॥ ४२ ॥ कालोदधिसमुद्र आठ लक्ष योजन का चक्रवाल चौडा है ॥४३॥ अंदरका अर्धपुष्करवरद्वीप और

शब्दार्थ

पुष्करार्ध अ० आठ जो० योजन स० शतसहस्र च० चक्रवाल वि० पहोला ए० ऐसा बा० बाहिरका पु० पुष्करार्ध ॥४४॥ ए०एकेक र०राजा चा०चातुरंत च०चक्रवर्ती को०अ०आठ सो०सुवर्णका का०कांगणीरत्न छ० छतल दु० बारा पांखडी अ० आठ क०कर्णिक अ०अधिकरण सं० संस्थित ॥ ४५ ॥ मा० मागध जो० योजन अ० आठ ध० धनुष्य स० सहस्र नि० कहा ॥ ४६ ॥ जं० जंबू सु० सुदर्शन अ० आठ जो० योजन उ०ऊंचा उ० ऊंचपने ब० बहुमध्यभाग में अ० आठ जो० योजन वि० पहोला सा० झाझेरा अ०

सूत्र

पुक्खरद्धणं अट्ठ जोयण सय सहस्साइं चक्कवालविक्खंभेणं पण्णत्ते ॥ एवं बाहिर पुक्खरद्धेवि ॥ ४४ ॥ एगमेगस्सणं रन्नो चाउरंत चक्कवट्टिस्स अट्ठ सोवन्निए काकिणिरयणे छत्तले दुवालसंसिए, अट्ठकण्णिए अधिकरणिएसंट्ठिए पण्णत्ते॥४५॥मागधस्सणं जोयणस्स अट्ठ धणुसहस्साइं निधत्ते प० ॥ ४६॥ जबूणंसुदंसणा अट्ठ जोयणाइं उड्ढंउच्चत्तेणं; बहुमज्झदेसभागे अट्ठ जोयणाइं विक्खंभेणं, साइरेगाइं अट्ठ जोयणाइं

भावार्थ

बाहिरका अर्धपुष्करवरद्वीप आठ २ लक्षयोजनके चक्रवाल चौडे कहे हैं. ॥ ४४ ॥ प्रत्येक चक्रवर्ती को आठ सुवर्ण की जाति का कांगणी रत्न कहा है. जिसको छतले, बाराहांसे, आठ खूने कहे हैं और एरनके आकारवाला रहा हुवाहै॥४५॥मगधदेशका योजन आठ सहस्र धनुष्य प्रमाणका कहा॥४६॥जम्बू सुदर्शन वृक्ष आठ योजनका ऊंचा कहा है उसके मध्यभाग में आठ योजन की चौडाइ कही है और सबमीलकर आठ योजन

शब्दार्थ

सूत्र

भावार्थ

सव्वंगेणं प० ॥ ४७ ॥ कूडसामलीणं अट्ठ जोयणाइं एवंचेव ॥ ४८ ॥ तिमिस-
गुहाणं अट्ठ जोयणाइं उड्ढं उच्चत्तेणं ॥ ४९ ॥ खंडप्पवायगुहाणं अट्ठजोयणाइं उड्ढं
उच्चत्तेणं, एवंचेव ॥ ५० ॥ जंबूमंदरस्स पव्वयस्स पुरच्छिमेणं सीयाए महानईए
उभयतटे अट्ठ वक्खार पव्वया प० तं० चित्तकूडे, पम्हकूडे, नलिणकूडे, एगसेले,
तिकूडे, वेसमणकूडे, अंजणे मायंजणे ॥ ५१ ॥ जंबूमंदरपच्चत्थिमेणं सीआयाए

से अधिक कहा है. ॥ ४७ ॥ इसी तरह कूट सामली वृक्ष का भी जानना. ॥ ४८ ॥ तिमिस्रा नामकगुफा आठ योजन की ऊंची कही है ॥४९॥ खंड प्रताप गुफा आठ योजन की ऊंची कही है ॥ ५० ॥ जम्बूद्वीप के मेरु की पूर्वदिशा में सीता महानदी के दोनों किनारेपे आठ वक्षस्कार पर्वत कहे हैं १ चित्रकूट, २ पद्मकूट, ३ नलीनकूट, ४ एकशैल ५ त्रिकूट ६ वैश्रमण कूट, ७ अंजन और ८ मातंजन ॥ ५१ ॥ जम्बू

शब्दार्थ

के उ० दोनों बाजु अ० आठ व० वक्खार प० पर्वत अं० अंकावती प० पद्मावती आ० आशीर्विष सु० सुखावह चं० चंद्रपर्वत सू० सूरपर्वत ना० नागपर्वत दे० देवपर्वत ॥ ५२ ॥ जं० जंबूद्वीप के मं० मेरुकी पु० पूर्व में सी० सीता म० महानदी की उ० उत्तर में अ० आठ च० चक्रवर्ती वि० विजय क० कच्छ सु० सुकच्छ म० महाकच्छ क० कच्छगावती आ० आवर्त जा० यावत् पु० पुष्कलावती ॥ ५३ ॥ जं जंबूद्वीपके मेरुकी पु० पूर्व में सी० सीता म० महानदी की दा० दक्षिण में अ० आठ च० चक्रवर्ती विजय व० वच्छ

सूत्र

महाणईए उभयकूले अट्ठ वक्खार पव्वया प० तं० अंकावई, पम्हावई, आसीविसे, सुहावहे, चंदपव्वए, सूरपव्वए, नागपव्वए, देवपव्वए, ॥ ५२ ॥ जंबूमंदरपुरच्छिमेणं सीयाए महाणईए उत्तरेणं अट्ठ चक्कवट्टिविजया प० तं० कच्छे, सुकच्छे, महाकच्छे, कच्छगावई, आवत्ते, जाव पुक्खलावई ॥ ५३ ॥ जंबूमंदरपुरच्छिमेणं सीयाए महाणईए दाहिणेणं अट्ठ चक्कवट्टिविजया प० तं० वच्छे सुवच्छे जाव मंग-

भावार्थ

मेरुकी पश्चिम दिशामें सीतोदा महानदी के दोनों किनारेपर आठ वक्षस्कार पर्वत कहे हैं १ अंकावती २ पद्मावती ३ आशीर्विष ४ सुखावह ५ चंद्रपर्वत ६ सूरपर्वत ७ नागपर्वत और ८ देवपर्वत ॥ ५२ ॥ जम्बू मंदर की पूर्व में सीता महानदी से उत्तर में आठ चक्रवर्ती विजय कहे हैं १ कच्छ २ सुकच्छ ३ महाकच्छ ४ कच्छगावती ५ आवर्त यावत पुष्कलावती ॥ ५३ ॥ जम्बूद्वीप के मेरु की पूर्व में सीता से

शब्दार्थ

सु० सुवच्छ जा० यावत् मं० मंगलावती ॥५४॥ जं० जंबूद्वीप के मं० मेरुकी प० पश्चिम में सी० सीतोदा म० महानदी की दा० दक्षिण में अ० आठ च० चक्रवर्ती विजय प० पद्मा यावत् स० सलिलावती ॥ ५५ ॥ जं० जंबूद्वीप के मेरुकी प० पश्चिम में सी० सीतोदा म० महानदी की उ० उत्तर में अ० आठ च० चक्रवर्ती विजय व० वप्र सु० सुवप्र जा० यावत् गं० गंधिलावती ॥ ५६ ॥ जं० जंबूद्वीपके मेरुकी पु० पूर्व में सी० सीता म० महानदी की उ० उत्तर में अ० आठ रा० राज्यधानी खे० क्षेमा क्षे० क्षेमपुरा जा० यावत् पु० पुंडरीकिणी ॥५७॥ जं० जंबूद्वीप के मेरुकी पु० पूर्व में सी० सीता म० महानदी की दा० दक्षिण में अ० आठ

सूत्र

लावई ॥ ५४ ॥ जंबूमंदर पच्चत्थिमेणं सीओयाए महानईए दाहिणेणं अट्ठ चक्कवट्टि-विजया प० तं० पम्हे जाव सलिलावई ॥ ५५ ॥ जंबूमंदर पच्चत्थिमेणं सीओयाए महानईए उत्तरेणं अट्ठ चक्कवट्टि विजया प० तं० वप्पे, सुवप्पे, जाव गंधिलावई, ॥ ५६ ॥ जंबूमंदर पुरच्छिमेणं सीयाए महानईए उत्तरेणं अट्ठ रायहाणीओ पण्णत्ताओ तं० खेमा खेमपुरा चेव, जावपुंडरीगिणी ॥५७॥ जंबूमंदर पुरच्छिमेणं सी-

भावार्थ

दक्षिण में आठ चक्रवर्ती विजय कहे हैं. वच्छ, सुवच्छ यावत् मंगलावती ॥ ५४ ॥ जम्बूद्वीप के मेरु की पश्चिम में सीतोदा महानदी से दक्षिण में आठ विजय १ पद्म यावत् सलिलावती ॥ ५५ ॥ जम्बू मंदर की पश्चिम में सीतोदा महानदी की उत्तर में आठ चक्रवर्ती विजय कहे हैं वप्र, सुवप्र यावत् गंधिलावती ॥५६॥ जम्बूद्वीप के मेरु की पूर्व में सीता महानदी से उत्तर में आठ राज्यधानियों कहीं क्षेमा क्षेमपुरा यावत्

शब्दार्थ

रा० राज्यधानी सु० सुषीमा कुं० कुंडला जा० यावत् र० रत्नसंचया ॥ ५८ ॥ जं० जंबूद्वीप के मं० मेरुकी प० पश्चिम में सी० सीतोद म० महानदी की दा०दक्षिण में अ० आठ रा० राज्यधानी आ० आसपुरा जा० यावत् वी०विगशोका ॥ ५९ ॥ जं० जंबूद्वीप के मेरुकी प० पश्चिम में सी सीतोदा म० महानदी की उ० उत्तर में अ० आठ रा० राज्यधानी वि० विजया वे० वैजयन्ती जा० यावत् अ० अयोध्या ॥६०॥ जं० जंबूदी के मं० मेरुकी पु० पूर्व में सी० सीता म० महानदी की उ० उत्तर में उ० उत्कृष्ट पद में अ० आठ अ०

सूत्र

आए महाणईए दाहिणेणं अट्ठ रायहाणीओ प० तं० सुसीमा, कुंडलाचेवं, जाव रयणसंचया ॥ ५८ ॥ जंबूमंदर पच्चत्थिमेणं सीओआए महाणईए दाहिणेणं अट्ठ रायमहाणीओ प० आसपुरा जाव वीयसोगा ॥ ५९ ॥ जंबूमंदर पच्चत्थिमेणं सीओआए महाणईए उत्तरेणं अट्ठरायहाणीओ प० तं० विजया वेजयंती जाव अउज्झा ॥६०॥ जंबूमंदर पुरच्छिमेणं सीयाए महाणईए उत्तरेणं उक्कोसपदे अट्ठ अरिहंता, अट्ठचक्कव-

भावार्थ

पुंडरीकिनी ॥ ५७ ॥ जम्बूद्वीप के मेरु की पूर्व में सीता महानदी से दक्षिण में आठ राज्यधानियों कहीं सुसीमा, कुंडला, यावत् रत्नसंचया ॥ ५८ ॥ जम्बू मंदर की पश्चिम में सीतोदा महानदी से दक्षिण में आठ राज्यधानियों कहीं आसपुरा यावत् विगतशोका ॥ ५९ ॥ जम्बू मंदर से पश्चिम में सीतोदा महानदी से उत्तर में आठ राज्यधानियों कहीं विजया वैजयन्ती यावत् अयोध्या ॥ ६० ॥ जम्बूद्वीप के पूर्व में

शब्दार्थ

अरिहंत च० चक्रवर्ती ब० बलदेव वा० वासुदेव उ० उत्पन्न हुवे उ० उत्पन्न होते हैं उ० उत्पन्नहोंगे ॥६१॥ सी० सीता महानदी की दा० दक्षिण मे उ० उत्कृष्ट ए० ऐसे ॥ ६२ ॥ जं० जंबूद्वीप के मं० मेरुकी प० पश्चिम में सीतोदा म० महानदी की दा० दक्षिण मे उ० उत्कृष्ट ए० ऐसे ॥ ६३ ॥ ए० ऐसे उ० उत्तर में ॥ ६४ ॥ जं जंबूद्वीप के पु० पूर्व में सी० सीता महानदी की उ० उत्तर में अ० आठ दी० दीर्घ वे० वैताढ्य अ० आठ ति० तिमिसगुफा अ० आठ खं० खंड प्रपातगुफा अ० आठ क० कृतमाल देवता अ०

सूत्र

ट्ठी, अट्ठबलदेवा, अट्ठवासुदेवा, उप्पज्जिंसुवा, उप्पज्जंतिवा, उप्पज्जिस्संतिवा ॥ ६१ ॥ जंबूमंदर पुरच्छिमेणं सीआए महाणईए दाहिणेणं उक्कोसपए एवंचेव ॥ ६२ ॥ जंबूमंदर पच्चत्थिमेणं सीओआए महाणईए दाहिणेणं उक्कोसपए एवंचेव ॥ ५३ ॥ एवं-उत्तरेणंवि ॥ ६४ ॥ जंबूमंदर पुरच्छिमेणं सीआए महाणईए उत्तरेणं अट्ठदीहवेयड्ढा अट्ठ तिमिसगुहाओ, अट्ठ खंडगप्पवायगुहाओ, अट्ठ कयमालगादेवा अट्ठ णट्टमालगा-

भावार्थ

सीता महानदी से उत्तर में उत्कृष्ट आठ अरिहंत, आठ चक्रवर्ती, आठ बलदेव और आठ वासुदेव, उत्पन्न हुवे, उत्पन्न होते हैं और उत्पन्न होवेंगे. ॥ ६१ ॥ ऐसेही आठ अरिहंत, आठ चक्रवर्ती, आठ बलदेव और आठ वासुदेव जम्बूद्वीप के मेरु की पूर्वमें सीता महानदी से दक्षिण में जम्बू मंदर की पश्चिम में सीतोदा महानदी से दक्षिण तथा उत्तर में उत्पन्न हुवे. उत्पन्न होते हैं और उत्पन्न होवेंगे ॥ ६२-६४ ॥ जम्बू

शब्दार्थ

आठ ण० नट्टमाल देवता अ० आठ गं० गंगा सिं० सिंधु गं० गंगाकूट सिं० सिंधुकूट उ० ऋषभकूट अ० आठ उ० ऋषभकूट देवता ॥ ६५ ॥ सी० सीता म० महानदी की दा० दक्षिण में अ० आठ दी० दीर्घ वैताढ्य ए० ऐसे जा० यावत् अ० आठ उ० ऋषभकूट देव न० विशेष ए० यहां र० रक्ता र० रक्तवती ता० उस के कू० कूट ॥ ६६ ॥ जं० जंबूद्वीप की मं० मेरुकी प० पश्चिम में सी० सीतोदा

सूत्र

देवा, अट्ठगंगाओ, अट्ठसिंधूओ, अट्ठ गंगाकुंडा, अट्ठ सिंधुकुंडा, अट्ठ उसभकूडा, प० । अट्ठ उसभकूडादेवा प० ॥ ६५ ॥ जंबूमंदर पुरच्छिमेणं सीयाए महाणईए दाहिणेणं अट्ठ दीहवेयड्ढा एवं चेव जाव अट्ठ उसभकूडादेवा प० । नवरमेत्थ रत्ता रत्तवईओ तासिंचेवकूडा ॥ ६६ ॥ जंबूमंदर पच्चत्थिमेणं सीओयाए महाणईए दाहिणेणं अट्ठ दीहवेयड्ढा जाव अट्ठनट्टमालगादेवा, अट्ठगंगाकुंडा, अट्ठसिंधुकूडा,

भावार्थ

मंदर की पूर्व में सीता महानदी से उत्तर में आठ दीर्घ वैताढय, आठ तिमिस्रगुफा, आठ खंडप्रपातगुफा, आठकृतमालदेवता आठ नट्टमालदेवला, आठ गंगा आठसिंधुनदी, आठगंगाकूट, आठसिंधुकूट, आठ ऋषभ कूट व आठ ऋषभकूट देव कहे हैं ॥ ६५ ॥ ऐसेही जम्बू मंदर से पूर्व में सीता महानदी की दक्षिण में, जम्बू मंदर की पश्चिम में सीतोदा महानदी से दक्षिण व उत्तर में आठ दीर्घवैताढ्य यावत् आठ ऋषभकूट

शब्दार्थ

म० महानदी की दा० दक्षिण में अ० आठ दी० दीर्घ वैताढ्य जा० यावत् न० नट्टमाल देव गं० गंगा कूट सिं० सिंधुकूट गं० गंगा सिं० सिंधु उ० ऋषभकूट उ० ऋषभकूट देव ॥ ६७ ॥ सी० सीतोदा म० महानदी की उ० उत्तर में अ० आठ दी० दीर्घ वैताढ्य जा० यावत् न० नट्टमाल देवता र० रक्ताकूट र० रक्तवतीकूट र० रक्ता जा० यावत् उ० ऋषभकूट देव ॥ ६८ ॥ जं० जंबूद्वीप के मेरुकी चू० चूलिका ब० बहूत म० मध्यभाग में अ० आठ जो० योजन वि० पहोला ॥ ६९ ॥ धा० धातकी खंडद्वीप पु०

सूत्र

अट्ठगंगाओ, अट्ठसिंधूओ, अट्ठउसभकूडपव्वया, अट्ठउसभकूडादेवा, प० ॥ ६७ ॥ जंबूमंदर पच्चत्थिमेणं सीओयाए महाणईए उत्तरेणं अट्ठदीहवेयड्ढा. जाव अट्ठणट्टमालगादेवा, अट्ठरत्ताकुंडा, अट्ठरत्तवइकुंडा, अट्ठरत्ताओ जाव अट्ठ उसभकूडादेवा प० ॥ ६८ ॥ जंबूमंदर चूलियाणं बहुमज्झदेसभाए अट्ठजोयणाइं विक्खंभेणं प० ॥ ६९ ॥ धायइखंडदीव पुरच्छिमद्धेणं धायइरुक्खे अट्ठजोयणाइं उड्ढंउच्च-

भावार्थ

के देवता कहे हैं विशेष इतना कि सीता की दक्षिण में व सीतोदा महानदी की उत्तर में गंगासिंधु, गंगा कूट व सिंधुकूट के स्थान में रक्ता, रक्तवती व उनकेकूट कहना. ॥ ६६-६८ ॥ जम्बू मेरु की चूलिका बीच में आठ योजन की चौडी है ॥ ६९ ॥ धातकी खंडद्वीप की पूर्वार्ध में धातकी वृक्ष आठ योजन

शब्दार्थ

पूर्वार्द्ध में धा० धातकी वृक्ष अ० आठ जो० योजन उ० ऊंचा उ० ऊंचपने व० बहुत म० मध्यभाग में अ० आठ जो० योजन वि० पहोला सा० झाझेरा अ० आठ योजन स० सर्वबाजुसे ए० ऐसे धा० धातकी वृक्षसे आ० लेकर स० सर्व ज० जंबूद्वीप की व० वक्तव्यता भा० कहनी जा० यावत् मं० मंदरचूलिका ए० ऐसे प० पश्चिमार्द्ध में म० महाधातकी वृक्ष से आ० लेकर जा० यावत् मं० मंदर चूलिका ॥ ७० ॥ ए० ऐसे पु० पुष्करार्धद्वीपकी पु० पूर्वार्द्धमें प० पद्मवृक्षसे आ० लेकर जा० यावत् मं० मंदर चूलिका

सूत्र

त्तेणं प० ॥ बहुमज्झदेसभाए अट्ठ जोयणाइं विक्खंभेणं, साइरेगाइं अट्ठजोयणाइं सव्वंगेणं पण्णत्ते ॥ एवं धायइ रुक्खाओ आढवित्ता सव्वेव जंबूदीववत्तव्वया भाणियव्वा जावमंदरचूलियत्ति ॥ एवं पच्चत्थिमद्धेवि महाधायइरुक्खाओ आढवित्ता जाव मंदरचूलियत्ति ॥ ७० ॥ एवं पुक्खरवरदीवड्ढ पुरच्छिमद्धेवि पउमरुक्खाओ आढवेत्ता जाव मंदरचूलियत्ति ॥ एवं पुक्खरवरदीवड्ढ पच्चत्थिम महापउमरुक्खा

भावार्थ

का ऊंचा, बीच में आठ योजन का चौडा, और साधिक आठ योजन का सर्वांग कहा है. ऐसेही धातकी वृक्ष से लगाकर मंदर चूलिका तक का सब अधिकार जम्बूद्वीप जैसे कहना. इस तरह धातकी खंड के पश्चिमार्ध में महाधातकी वृक्ष से लगाकर मंदरचूलिका तक जानना. ॥ ७० ॥ ऐसेही पुष्करवर द्वीप की पूर्व में पद्म वृक्ष और पश्चिम में महापद्म वृक्ष से लगाकर मंदरचूलिका तकका सब अधिकार जम्बूद्वीप

शब्दार्थ

ए० ऐसे पु० पुष्करार्ध द्वीपकी प० पश्चिमार्द्धमें म० महापद्मवृक्षसे जा० यावत् मं० मेरुकी चूलिका ॥ ७१ ॥ जं० जंबूद्वीपमें म० मेरुपर्वतपे भ० भद्रशालवनमें अ० आठ दि० दिशा में ह० हस्तिकूट प० पद्मोत्तर नी० नीलवंत सु० सुहस्ति अं० अंजनगिरि कु० कुमुद म० पलास व० वतंस रो० रोहिणगिरि ॥ ७२ ॥ जं० जंबूद्वीपकी ज० जगति अ० आठ जो० योजन उ० ऊंची उ० ऊंचपने ब० बहूत म० मध्यभागमें अ० आठ जो० योजन वि० पहोली ॥ ७३ ॥ जं० जंबूद्वीपमें मं० मेरुकी दा० दक्षिणमें म० महाहिम-

सूत्र

ओ जाव मंदर चूलियत्ति ॥ ७१ ॥ जंबूद्दीवे दीवे मंदरे पव्वए भद्दसालवणे अट्ठ दिसा हत्थिकूडा प० तं० (गाथा) पउमुत्तरे नीलवंते, सुहत्थी अंजनगिरी; कुमुदेय, पलासेय, वडिंसे रोहणगिरी (१) ॥ ७२ ॥ जंबूद्दीवस्सणं दीवस्स जगई अट्ठ जोयणाइं उड्ढं उच्चत्तेणं बहुमज्झदेस भाए अट्ठ जोयणाइं विक्खंभेणं प० ॥ ७३ ॥ जंबूद्दीवेदीवे मंदर पव्वयस्स दाहिणेणं महाहिमवंते वासहर पव्वए अट्ठकू-

भावार्थ

जैसे कहना. ॥ ७१ ॥ जम्बूद्वीप के मेरु पर्वत के भद्रशालवन की आठों दिशाओं में आठ हस्तिकूट कहे हैं १ पद्मोत्तर, नीलवंत, सुहस्ति, अंजनगिरि, कुमुद, पलास, वतंस, और रोहिणगिरि, ॥ ७२ ॥ जम्बूद्वीप की जगती (कोट) आठ योजन की ऊंची कही और उसका मध्यभाग आठ योजन चौडा कहा ॥ ७३ ॥ जम्बू मंदर की दक्षिण में महाहिमवंत वर्षधर पर्वतपर आठकूट कहे हैं १ सिद्ध, २ महाहिमवंत

शब्दार्थ

वंत वा० वर्षधर प० पर्वतपे अ० आठकूट सि० सिद्ध म० महाहिमवंत हि० हिमवंत. रो० रोहित ह० हरिकूट ह० हरिकान्ता ह० हरिवर्ष वे० वेरुलिक ॥ ७४ ॥ जं० जंबूद्वीपके म० मेरुकी उ० उत्तरमें रु० रुपी वा० वर्षधर प० पर्वतपे अ० आठकूट सि० सिद्ध रु० रुप्पी र० रम्यक न० नरकांता बु० बुद्धि रु० रुप्य हे० एरनवय म० मणिकांचन ॥ ७५ ॥ जं० जंबूके मं० मेरु की पु० पूर्व में रु० रुचकवर प० पर्वतपे अ० आठकूट रि० रिष्ट त० तपनीय कं० कांचन र० रजत दि० दिशास्वस्तिक प० प्रलंब अं० अंजन

सूत्र

डा प० तं० (गाथा) सिद्धमहाहिमवंते, हिमवंते रोहियाय हिरिकूडे हरिकंता हरिवासे, वेरुलिए चेव कूडाओ (१) ॥ ७४ ॥ जंबूमंदर उत्तरेणं, रुप्पिम्मिवासहर पव्वए अट्ठ कूडा प० तं० (गाथा) सिद्धे रुप्पी रम्मग, नरकंता बुद्धि रुप्प कूडेय; हेरण्णवए मणिकंचणेयरुप्पिम्मि कूडाय (१) ॥ ७५ ॥ जंबूमंदर पुरच्छिमेणं रुयगवरे पव्वए अट्ठकूडा प० तं० (गाथा) रिट्ठ तवणिज कंचण, रययदिसा सो-

भावार्थ

३ हेमवंत ४ रोहित ५ हरिकूट ६ हारेकान्ता ७ हरिवर्ष और ८ वेरुलिय ॥ ७४ ॥ जम्बू मंदर की उत्तर में रुपी वर्षधर पर्वतपर आठकूट कहे हैं १ सिद्ध २ रुप्पि, ३ रम्यक ४ नरकान्ता ५ बुद्धि ६ रुप्यकूट ७ एरनवय और ८ मणिकांचन ॥ ७५ ॥ जम्बूमंदर की पूर्व में रुचक पर्वत में आठ कूट कहे हैं १ रिष्ट २ तपनीय ३ कांचन ४ रजत ५ दिशास्वस्तिक ६ प्रलंब ७ अंजन और ८ अंजनपुलक. उसपे महर्द्धिक व

शब्दार्थ

अं० अंजनपुलक त० तहां अ० आठ दि० दिशाकुमारी म० बडी म० महर्द्धिक जा० यावत् प० पल्योपमकी ठि० स्थितिवाली प० रहतीहै नं० नंदोत्तरा णं० नंदा आ० आनंदा नं० नंदिवर्द्धना वि० विजया वे० वैजयन्ती ज० जयन्ती अ० अपराजीता ॥ ७६ ॥ ज० जंबूद्वीपकेमं० मेरुकी दा० दक्षिणमें रु० रुचकवर पर्वतपे अ० आठ कू० कूट क० कनक कं० कंचन प० पद्म न० नलीन स० शशी दि० दिवाकर वे० वैश्रमण वे० वेरुलिय त० तहां अ० आठ दि० दिशाकुमारि म० बडी म० महर्द्धिक जा० यावत् प०

सूत्र

वच्छिए पलंबेय, अंजणे अंजण पुलए, रुयगस्स पुरच्छिमेकूडा (१) तत्थणं अट्ठ दिसाकुमारि महत्तरियाओ महिड्ढियाओ जाव पलिओवमट्ठिईयाओ परिवसंति तं० (गाथा) णदुत्तराय णंदाय, आणंदा णंदिवद्धणा विजया वेजयंतीय; जयंती अपराजिया, (१) ॥ ७६ ॥ जंबूमंदर दाहिणेणं रुयगवरे पव्वए अट्ठ कूडा प० तं० (गाथा) कणए कंचणपउमे, नालिणे ससि दिवाकरे चेव; वेसमणे वेरुलिए, रुयगस्सय दाहिणे कूडा॥ १ ॥तत्थणं अट्ठ दिसाकुमारि महत्तरियाओ महिड्ढियाओ जाव पलिओ-

भावार्थ

पल्योपम की स्थिति वाली आठ दिशा कुमारी रहती हैं जिके नाम १ नंदोत्तरा २ नंदा ३ आनंदा ४ नंदीवर्द्धना ५ विजया ६ वैजयंती ७ जयंती और ८ अपराजिता॥ ७६ ॥ जम्बूके मेरूकी दक्षिणमें रुचकवर पर्वत पर आठ कूट कहे १ कनक, २ कांचन ३ पद्म ४ नलिन ५ शशी ६ दिवाकर ७ वैश्रमण और ८ वेरुलिय

शब्दार्थ

पल्योपम की ट्ठि० स्थितिवाली प० रहती हैं स० समाहारा सु० सुप्रतिज्ञा सु० सुपव्वई ज० यशोधरा ल० लक्ष्मीवती से० शेषवती चि० चित्रगुप्ता व० वसुंधरा ॥ ७७ ॥ जं० जंबूद्वीप के मं० मेरुकी प० पश्चिम में रु० रुचक पर्वत में अ० आठ कूट सो० स्वस्तिक अ० अमोघ हि० हिमवंत मं० मंदर रु० रुचक रु० रुचकोत्तम चं० चंद्र सु० सुदर्शन त० तहां अ० आठ दि० दिशाकुमारी म० बडी म० महर्द्धिक जा० यावत् प० पल्योपमकी ठि० स्थितिवाली प० रहती हैं इ० इलादेवी सु० सुरादेवी पु० पृथ्वी प० पद्मावती ए०

सूत्र

वमट्ठिईयाओ परिवसंति तं० (गाथा) समाहारा सुप्पइन्ना, सुप्पबुद्धा, जसोहरा, लच्छिवई सेसवई, चित्तगुत्तावसुंधरा (१) ॥ ७७ ॥ जंबूमंदर पच्चच्छिमेणं, रुयगवरे पव्वए अट्ठकूडा प० तं० सोच्छिएय अमोहेय, हिमवंतमंदरेतहा; रुयगे रुयगुत्तमे चंदे, अट्ठमेअ सुदंसणे (१) तत्थणं अट्ठ दिसाकुमारि महत्तरियाओ महिड्ढियाओ जाव पलिओवमट्ठिईयाओ परिवसंति तं० (गाथा) इलादेवी सुरादेवी, पुढवी

भावार्थ

वहांपर आठ दिशा कुमारियाँ महर्द्धिक यावत् पल्योपम की स्थितिवाली रहती हैं १ समाहारा २ सुप्रतिज्ञा ३ सुपव्वई ४ यशोधरा ५ लक्ष्मीवती ६ शेषवती ७ चित्रगुप्ता और ८ वसुंधरा ॥ ७७ ॥ जम्बूद्वीपके मेरुकी पश्चिमके रुचकवर द्वीप पर आठकूट कहे हैं १ स्वस्तिक २ अमोघ ३ हिमवंत ४ मंदर ५ रुचक ६ रुचकोत्तम७चंद्र और८सुदर्शन. वहां महर्द्धिक बडी व पल्योपमकी स्थिति वाली आठ दिशा कुमारी रहती हैं १ इलादेवी

शब्दार्थ

एक नाशा न० नवमिका सी० सीता भ० भद्रा ॥ ७८ ॥ जं० जंबूद्वीप के मे० मेरुकी उ० उत्तर में रु० रुचक पर्वतपे अ० आठ कूट र० रत्न र० रत्नोच्चय स० सर्व रत्न र० रत्न संचय वि० विजय वे० वैजयन्त ज० जयन्त अ० अपराजित त० तहां अ० आठ दिशाकुमारी म० बडी म० महर्द्धिक जा० यावत् प० पल्योपम की ठि० स्थितिवाली प० रहती हैं अ० अलंबुसा मि० मित्र केशी पु० पुंडरीकिणी वा० वारुणी आ० आसा स० सर्वगा सि० श्री हि० ह्री ॥ ७९ ॥ अ० आठ अ० अधोलोक में व० रहनेवाली दि०

सूत्र

पउमावई, एगनासा णवमिया, सीया भद्दाय अट्ठमा (१) ॥ ७८ ॥ जंबूमंदर उत्तर रुयगवरे पव्वए अट्ठकूडा प० तं० (गाथा) रयणे रयणुच्चए सव्वरयणे रयणसंचएचेव; विजए वेजयंतेय, जयंते अपराजिए (१) तत्थणं अट्ठदिसाकुमारि महत्तरियाओ महिड्ढियाओ जाव पलिओवमट्ठिईयाओ परिवसंति तं० (गाथा) अलंबुसामित्तकेसी, पुंडरीगीयवारुणी, आसायसव्वगाचेव, सिरीहिरीचेव उत्तराओ (१)

भावार्थ

२ सुरादेवी ३ पृथिवी ४ पद्मावती ५ एकनाशा ६ नवमिका ७ सीता और ८ भद्रा ॥ ७८ ॥ जम्बूमंदर से उत्तर का रुचकवर पर्वतपर आठकूट कहे हैं १ रत्न २ रत्नोच्चय, ३ सर्व रत्न ४ रत्नसंचय ५ विजय ६ वैजयंत ७ जयंत और ८ अपराजित. वहांपर महर्द्धिक यावत् पल्योपम की स्थितिवाली आठदिशा कुमारियों रहती हैं. १ अलंबुसा २ मित्रकेशी ३ पुंडरीकिणी ४ वारुणी ५ आसा ६ सर्वगा ७ श्री और ८ ह्री

शब्दार्थ

दिशाकुमारी म० बडी म० महर्द्धिक भो० भोगंकरा भो० भोगवती सु० सुभोगा भो० भोगमालिनी सु० सुवच्छा व० वत्समित्रा वा० वारिषेणा व० वलाहका ॥ ८० ॥ अ० आठ उ० ऊर्ध्व व० रहनेवाली मे० मेघंकरा मे० मेघवती सु० सुमेघा मे० मेघमालिनी तो० तोयधारा वि० विचित्रा पु० पुष्पमाला अ० आनंदिता ॥ ८१ ॥ अ० आठ क० देवलोक में ति० तिर्यंच मि० मिश्र उ० उत्पन्नहोनेवाले सो० सौधर्म जा०

सूत्र

॥ ७९ ॥ अट्ठ अहोलोगवच्छव्वाओ दिसाकुमारिमहत्तरियाओ प० तं० (गाथा) भोगंकरा भोगवती, सुभोगा भोगमालिणी, सुवच्छावच्छमित्ताय, वारिसेणावलाहगा (१) ॥ ८० ॥ अट्ठ उड्ढलोगवच्छव्वाओ दिसाकुमारिमहत्तरियाओ पण्णत्ताओ तं० (गाथा) मेहंकरा मेहवई, सुमेघा मेघमालिनी, तोयधाराविचित्ताय, पुप्फमाला अणिंदिया (१) ॥ ८१ ॥ अट्ठकप्पा तिरियमिस्सोववन्नगा प० तं० सोहम्मे, जाव

भावार्थ

॥ ७९ अधोलोक में रहने वाली आठ बडी दिशाकुमारी कहीं १ भोगकरा २ भोगवती ३ सुभोगा ४ भोग मालिनी ५ सुवच्छा ६ वत्समित्रा ७ वारिषेणा और ८ वलाहका ॥ ८० ॥ ऊर्ध्वलोक में रहने वाली आठबडी दिशाकुमारियों कहीं १ मेघंकरा २ मेघवती ३ सुमेधा ४ मेघमालिनी ५ तोयधारा ६ विचित्रा ७ पुष्पमाला और ८ आनंदिता ॥ ८१ ॥ आठवा देवलोक तक तिर्यंच की उत्पत्ति होती है सौधर्म

यावत् स० सहस्रार ॥ ८२ ॥ ए० इन अ० आठकल्पम अ० आठइन्द्र स० शक्र जा० यावत् स० सहस्रार ॥ ८३ ॥ ए० इन अ० आठ इं० इन्द्रके अ० आठ प० परियान वि० विमान पा० पालक पु० पुष्पक सो० सोमनस सि० श्रीवत्स णं० नंदियावर्त का० कामकम पी० प्रीतिमन वि० विमल ॥ ८४ ॥ अ० आठ अ० आठमिआ भि० भिक्षुप्रतिमां च० चौसठ रा० अहोरात्रि दो० दो अ० अठयासी भि० क्षाशत अ० यथाश्रुत जा० यावत् अ० पालाहुत्ता भ० होवे ॥ ८५ ॥ अ० आठ प्रकारका सं० संसारी

सूत्र

सहस्सारे ॥ ८२ ॥ एएसुणं अट्ठसुकप्पेसु अट्ठ इंदा प० तं० सक्के जाव सहस्सारे ॥८३ ॥एएसिं अट्ठण्हं इंदाणं अट्ठ परियाणिया विमाणा प० तं० पालए, पुप्फए, सोमणसे, सिरिवच्छे, णंदियावत्ते, कामकमे, पीइमणे, विमले ॥ ८४ ॥ अट्ठट्ठमियाणं भिक्खुपडिमाणं चउसट्ठीएहिं राइंदिएहिं दोहियअट्ठासीएहिं भिक्खासएहिं अहासुत्ता, जाव अणुपालियावि भवइ ॥ ८५ ॥ अट्ठविहा संसार समावन्नगा जीवा प० तं० प-

भावार्थ

ईशान, सनत्कुमार, माहेन्द्र, ब्रह्म, लंतक, महाशुक्र और सहस्रार ॥ ८२ ॥ इन आठों देवलोक में आठ इन्द्र कहे हैं. शक्रेन्द्र यावत् सहस्रारेन्द्र ॥ ८३ ॥ इन आठों इन्द्रोंको आठ परियान विमान कहे हैं १ पालक २ पुष्पक ३ सोमनस ४ श्रीवत्स ५ नंदियावर्त ६ कामकम७ प्रीतिमन और ८ विमल ॥ ८४ ॥ अट्ठ

शब्दार्थ

जी० जीव प० प्रथमसमयके ने० नारकी जा० यावत् अ० अप्रथमसमयके दे० देव ॥ ८६ ॥ अ० आठ प्रकार का स० सर्व जीव ने० नारकी ति० तिर्यंच ति० तिर्यंचणी म० मनुष्य म० मनुष्यणी दे० देव दे० देवी सि० सिद्ध अ० अथवा आ० मतिज्ञानी जा० यावत् के० केवलज्ञानी म० मतिअज्ञानी सु० श्रुत

सूत्र

ढमसमय नेरइया एवं जाव अपढमसमयदेवा ॥ ८६ ॥ अट्ठविहा सव्वजीवा प० तं० नेरइया तिरिक्खजोणिया तिरिक्खजोणीओ, मणुस्सा, मणुस्सीओय, देवा; देवी-ओय सिद्धा । अहवा अट्ठविहा सव्वजीवा प० तं० आभिणिबोहियनाणी, जाव

भावार्थ

आठमिआ भिक्षु प्रतिमा कही. इसमें चौसठ आहोरात्रि व्यतीत होती है और दोसोअठयासी भीक्षा होती है. उसे जैसे शास्त्र में कही है वैसे काया से स्पर्शकरे यावत् पाले ॥ ८५ ॥ संसारी जीव के आठ भेद प्रथम समय के नारकी यावत् अप्रथम समय के देव.॥८६॥ सब जीवके आठ भेद १ नारकी २ तिर्यंच, ३ तिर्यंचणी ४ मनुष्य ५ मनुष्यणी ६ देव ७ देवी और ८ सिद्ध. और भी सब जीव के आठ भेद मतिज्ञानी यावत्

---

१. पहिले आठदिन तक एक दाति आहार की और एक दाति पानी की, दूसरे आठदिन में दो दाति आहार की और दो दाति पानी की यावत् आठवे आठदिन में आठदाति आहार की और आठदाति पानी की लेना. इससे आठदिन की ३६ दाति आहारकी और ३६ दातिपानी की होती है. सब मीलकर २८८ दाति आहार की और २८८ दातिपानी की होती है. इसमें ६४ अहोरात्रि लगती है.

शब्दार्थ

अज्ञानी वि० विभंगज्ञानी ॥ ८७ ॥ अ० आठ प्रकार का सं० संयम प० प्रथम समय सु० सूक्ष्म संपराय अ० अप्रथम समय सु० सूक्ष्म संपराय प० प्रथम समय बा० बादर संपराय अ० अप्रथम समय बा० बादर संपराय प० प्रथम समय उ० उपशांत कषाय वी० वीतराग संयम अ० अप्रथम समय उपशांत क० कषाय वी० वीतराग संयम प० प्रथम समय क्षीण कषाय वीतराग संयम अ० अप्रथम समय क्षीण कषाय वी० वी-

सूत्र

केवलनाणी, मइअन्नाणी सुयअन्नाणी, विभंगनाणी ॥ ८७ ॥ अट्ठविहे संजमे प० तं० पढम समय सुहुम संपराय संजमे, अपढम समय सुहुम संपराय संजमे, पढम समयबादर संपराय संजमे, अपढम समय बादर संपराय संजमे, पढम समय उवसंत कसाय वीयराग संजमे, अपढम समय उवसंत कसाय वीयराग संजमे, पढम समयक्खीण कसाय वीयराग संजमे, अपढम समयक्खीण कसाय वीयराग संजमे,

भावार्थ

केवल ज्ञानी और मतिअज्ञानी, श्रुतअज्ञानी व विभंगज्ञानी ॥ ८७ ॥ आठ प्रकार का संयम १ प्रथम समय का सूक्ष्म संपराय संयम २ अप्रथम समय का सूक्ष्य संपराय संयम ३ प्रथम समय का बादर संपराय संयम अप्रथम समय का बादर संपराय संयम ५ प्रथम सयम का उपशांत कषाय वीतराग संयम ६ अप्रथम समय का उपशांत कषाय वीतराग संयम ७ प्रथम समय का क्षीण कषाय वीतराग संयम ८ अप्रथम समय का

शब्दार्थ

तराग संयम ॥ ८८ ॥ अ० आठ पु० पृथ्वी र० रत्नप्रभा जा० यावत् अ० अधो स० सातवी ई० ईसीप-
भारा॥८९॥ ई०ईसीपभारा पृथ्वी ब०बहुत म०मध्यभाग अ०आठ योजनका क्षि०क्षेत्र अ०आठ योजन बा०जाड-
पने॥९०॥ई०ईसीपभारा पु०पृथ्वी के अ०आठ णा०नाम ई०ईसी ई०ईसीपभारा त०तनु त०तनुतनु सि०सिद्धि
सि० सिद्धालय मु० मुक्ति मु० मुक्तालय ॥९१॥ अ० आठ ठा० स्थान से स० सम्यक् प्रकारसे सं० घटाना
ज० प्रयत्न करना प० पराक्रम फोडना अ०नहीं सुना ध०धर्म को स०सम्यक् सु०सुनने को अ० उठना सु०

सूत्र

॥ ८८ ॥ अट्ठ पुढवीओ प० तं० रयणप्पभा जाव अहे सत्तमा ईसिप्पब्भारा
॥ ८९ ॥ ईसिप्पब्भाराएणं पुढवीए बहुमज्झदेसभाए अट्ठ जोयणेक्खित्ते अट्ठ जो-
यणाइं बाहल्लेणं प० ॥९०॥ ईसिप्पब्भाराएणं पुढवीए अट्ठ नामधेज्जा प० तं० ईसीइवा
ईसिप्पब्भाराइवा, तणुइवा, तणुतणुइवा, सिद्धीइवा, सिद्धालएइवा, मुत्तीइवा, मुत्तालएइवा,
॥ ९१ ॥ अट्ठहिं ठाणेहिं सम्मं संघडियव्वं, जइयव्वं, परक्कमियव्वं, अस्सिंचणं अट्ठ

भावार्थ

क्षीण कषाय वीतराग संयम ॥ ८८ ॥ आठ प्रकार की पृथ्वी कही रत्नप्रभा यावत् तमतमा पृथ्वी और
इषत्प्राग्भार पृथ्वी ॥ ८९ ॥ ईषत्प्राग्भार पृथ्वी का बीचका आठ योजन का क्षेत्र आठ योजन जाड
पने में है ॥ ९० ॥ ईषत्प्राग्भार पृथ्वी के आठ नाम कहे हैं १ ईषत् २ ईषत्प्राग् भार ३ तनु ४ तनुतनु ५
सिद्धि ६ सिद्धालय ७ मुक्ति और ८ मुक्तालय ॥ ९१ ॥ आठ कार्योंमें पराक्रम करना, उद्यम करना, व

शब्दार्थ

सुना हुवा ध० धर्म को ओ० ग्रहणकरने को ओ० धारने को अ० उठना त० तप क० कर्म सं० संयम से अ० नहीं करने को अ० उठना पो० पूर्वके क० कर्म को त० तप से वि० दूरकरने को वि० विशुद्ध करने को अ० उठना अ० अनाश्रित प० परिजन को सं० ग्रहणकरने को अ० उठना से० शिष्य आ० आचार गो० गोचर ग० ग्रहणकरने को अ० उठना गि० ग्लानीकी अ० अग्लान पने वे० वैयावृत्य क० करने को अ० उठना सा० साधर्मी अ० अधिकरण उ० उत्पन्न अ० अनिश्रित उ० उपश्रित अ०

सूत्र

नोवमा एवं भवइ,असुयाणं धम्माणं सम्मंसुणणयाए अब्भुट्ठेयव्वं,सुयाणं धम्माणं ओगिण्हयाए ओवहारणयाए अब्भुट्ठेयव्वं भवइ, तवाणं कम्माणं संजमेणं अकरणयाए अब्भुट्ठेयव्वं भवइ, पोराणाणं कम्माणं तवसा विगिंचणयाए विसोहणत्ताए अब्भुट्ठेयव्वं भवइ, असंगिहीय परिजणस्स संगिण्हयाए अब्भुट्ठेयव्वं भवइ, सेहं आयारगोयरं गहणयाए अब्भुट्ठेयव्वं भवइ, गिलाणस्स आगिलाए वेयावच्चं करणयाए अब्भुट्ठेयव्वं भवइ, साहम्मियाणं अहिगरणंसि उप्पन्नंसि तत्थ आणिस्सिओवस्सिए अपक्खग्गाही मज्झत्थ भावभूए

भावार्थ

किंचिन्मात्र प्रमाद नहीं करना कहा है १ नहीं सुना हुवा धर्म सुनने को उद्यम करना २ सुना हुवा धर्म को ग्रहण करने केलिये उद्यमवंत बनना ३ संयम से नये कर्म को रोकने केलिये उद्यमवन्त बनना ४ तपश्चर्या से पुराने कर्मों क्षय करने केलिये उद्यमी होना ५ शिष्यादि अनाश्रित परिवार को ग्रहण करने को उद्यमी

शब्दार्थ

पक्षरहित म० मध्यस्थ होकर क० कोई सा० साधर्मी अ० अवाजरहित अ० झंझारहित अ० क्रोधरहित उ० शमाने के अ० उठना ॥ ९२ ॥ म० महाशुक्र स० सहस्रार क० देवलोक में वि० विमान अ० आठ जो० योजन स० शत उ० ऊंचे उ० ऊंचपने ॥ ९३ ॥ अ० अरिहंत अ० अरिष्टनेमि को अ० आठसो वा० वादी म० देव सहित म० मनुष्य अ० असुर प० परिषदा में अ० अपराजित उ० उत्कृष्ट वा० वादीसंपदा हो० थी ॥ ९४ ॥ अ० आठ सा० समय की के० केवली समुद्घात प० प्रथम समय में दं० दंड करे बी०

सूत्र

कहण्णु साहम्मिया अप्पसद्दा, अप्पझंझा, अप्पतुमतुमा, उवसामणयाए अब्भुट्ठेयव्वं भवइ ॥ ९२ ॥ महासुक्क सहस्सारेसुणं कप्पेसु विमाणा अट्ठ जोयणसयाइं, उड्ढंउच्चत्तेणं प० ॥ ९३ ॥ अरहओणं अरिट्ठनेमिस्स अट्ठसया वाईणं सदेवमणुयासुराए परिसाए वाए अपराजियाणं उक्कोसिया वाइसंपयाहोत्था, ॥ ९४ ॥ अट्ठसामइए केवलि

भावार्थ

बनना ६ नवदीक्षित को आचार गोचर ग्रहण कराने को उजमाल होना ७ ग्लानी की अग्लानपने वैयावृत्य करने को उद्यमी होना ८ स्वधर्मी में रागद्वेष उत्पन्न होवे तो वहां शिष्यादिक की अपेक्षा रहित मध्यस्थ भावपना से उन को क्रोध रहित बनाने को उद्यमी होना ॥ ९२ ॥ महाशुक्र और सहस्रार आठ सो योजन के ऊंचे कहे हैं ॥ ९३ ॥ मनुष्य देव व असुरों की परिषदा में भी अपराजित आठ सो वादी की संपदा श्री अरिष्ट नेमिनाथ को थी ॥ ९४ ॥ आठ समय की केवली समुद्घात कही १ प्रथम समय में

शब्दार्थ — दूसरे समय में क० कपाटकरे त० तीसरा समय में मं० मंथनकरे च० चौथा समय में सो० लोकको पूरे पं० पांचवा समय में लो० लोकको प० साहरनकरे छ० छठासमय में मं० मंथन को प० साहरनकरे स० सातवे समय में कपाटको प० साहरनकरे अ० आठवे समय में दं० दंडको प० साहरनकरे ॥९५॥ स० श्रमण भ० भगवन्त म० महावीर को अ० आठ सो अ० अनुत्तरोवाई ग० गतिकल्याण जा० यावत् आ० आगम में भ० भद्रक उ० उत्कृष्ट अ० अनुत्तर वा० वादीसंपदा ॥ ९६ ॥ अ० आठ प्रकार के वा०

सूत्र — समुग्घाए प० तं पढमे समए दंडं करेइ बीएसमए कवाडं करेइ, तइएसमए मंथं करेइ, चउत्थे समए लोगं पूरेइ, पंचमे समए लोगं पडिसाहरइ, छट्ठे समए मंथं पडिसाहरइ, सत्तमेसमए कवाडं पडिसाहरइ, अट्ठमेसमए दंडं पडिसाहरइ ॥९५॥ समणस्सणं भगवओ महावीरस्स अट्ठसया अणुत्तरोववाइयाणं गइकल्लाणाणं जाव आगमेसि भद्दाणं उक्कोसिया अणुत्तरोववाइसंपया होत्था ॥ ९६ ॥ अट्ठविहा वाणमंतरा देवा

भावार्थ — दंडके अर्थात् चौदह राजुलोक में आत्म प्रदेश को दंडकी तरह विस्तृत करदेवे २ दूसरे समय में दंडके कपाट करे ३ तीसरे समय में मंथनकरे ४ चौथे समय में सबलोक का आंतरापूरे ५ पांचवा समय में लोक के आंतरे साहरे (पीछे खेंचे) ६ छट्ठे समय में मंथन साहरे ७ सातवे समय में कपाट साहरे और ८ आठवे समय में दंड पीछा खेंचे ॥ ९५ ॥ श्री श्रमण भगवंत महावीर को अनुत्तर विमानरूप कल्याण

शब्दार्थ

वाणव्यंतर देव पि० पिशाच भू० भूत ज० यक्ष रा० राक्षस कि० किन्नर किं० किंपुरुष म० महोरग गं० गांधर्व ॥ ९७ ॥ ए० इन अ० आठ वा० वाणव्यंतर के अ० आठ चे० चैत्यवृक्ष का० कलंबवृक्ष व० व० वटवृक्ष तु० तुलसी कं० कंडक अ० अशोक चं० चंपक ना० नागवृक्ष तिं० तिंदुक ॥ ९८ ॥ इ०

सूत्र

प० तं० पिसाया, भूया, जक्खा, रक्खसा, किण्णरा, किंपुरिसा, महोरगा, गंधव्वा, ॥ ९७ ॥ एएसिणं अट्ठण्हं वाणमंतराणं देवाणं अट्ठ चेइयरुक्खा प० तं० (गाथा) कलंबोउ पिसायाणं, बडो जक्खाण चेइयं, तुलसी भूयाणंभत्रे, रक्खसाणंच कंडओ ॥ असोगो किण्णराणंच, किंपुरिसाणंच चंपओ, नागरुक्खो महोरगाणं, गंधव्वाणंतु तिंदुओ (२) ॥ ९८ ॥ इमीसेरयणप्पभाए पुढवीए बहुसमरमणिज्जाओ भूमिभा-

भावार्थ

कारी गति में जानेवाले यावत् सूत्र में भद्रिक ऐसे आठसो पुरुषों की संपदा थी ॥ ९६ ॥ आठ वाणव्यंतर देव कहे हैं १ पिशाच २ भूत ३ यक्ष ४ राक्षस ५ किन्नर ६ किंपुरुष ७ महोरग और ८ गांधर्व ॥ ९७ ॥ इन आठों व्यंतर देवताओं को आठ चैत्यवृक्ष कहे हैं १ पिशाच को कलंब वृक्ष २ यक्ष को वट वृक्ष ३ भूत को तुलसी ४ कंडक वृक्ष राक्षस को ५ किन्नर को अशोक ६ किंपुरुष को चंपकवृक्ष ७ महोरग को नागवृक्ष और ८ तिंदुक वृक्ष गांधर्व को ॥ ९८ ॥ इस रत्नप्रभा पृथ्वी के बहुत सम रमणिक भूमि

शब्दार्थ

इस र० रत्नप्रभा पु० पृथ्वीकी ब० बहुत र० रमणिक भू० भूमिभागसे अ० आठ जो० योजनशत उ० ऊंचे अ०अंतर रहितसू० सूर्यविमान चा० चलता है ॥ २९ ॥ अ० आठ न० नक्षत्र के चं० चंद्रमासाथ प० प्रमर्द जो० योग जो० योजता है क०कृत्तिका रो०रोहिणी पु०पुनर्वसु म०मघा चि०चित्रा वि० विशाखा अ० अनुराधा जि० ज्येष्ठा ॥ १०० ॥ जं० जंबूद्वीप के दा० द्वार अ० आठ योजन उ० ऊंचे उं० ऊंचपने ॥ १०१ ॥ स० सर्व दी० द्वीप स० समुद्र के दा० द्वार अ० आठ जो० योजन उ० ऊंचे ऊंचपने

सूत्र

गाओ अट्ठ जोयणसए उड्ढं बबाहाए सूरविमाणं चारं चरइ ॥ ९९ ॥ अट्ठ नक्खत्ता णं चंदेणसद्धिं पमद्दं जोगं जोएइ तं० कत्तिया; रोहिणी, पुणव्वसू, महा, चित्ता, विसाहा, अणुराहा, जिट्ठा, ॥ १०० ॥ जंबूदीवस्सणं दीवस्स दारा अट्ठ जोयणाइं उड्ढं उच्चत्तेणं प० ॥ १०१ ॥ सव्वसिंविणं दीवसमुद्दाणं दारा अट्ठजोयणाइं उड्ढं उच्चत्तेणं पं० ॥ १०२ ॥ पुरिस वेयणिजस्सणं कम्मस्स जहण्णेणं अट्ठ संवच्छराइं

भावार्थ

भाग से अबाधापने आठसो योजन ऊंचे सूर्य चलता है॥९९॥आठनक्षत्र चंद्रमा की साथ स्पर्शकर योग जोडते हैं १ कृत्तिका २ रोहिणी ३ पुनर्वसु ४ मघा ५ चित्रा ६ विशाखा ७ अनुराधा और ८ ज्येष्ठा ॥ १०० ॥ जम्बूद्वीप के द्वार आठ योजन के ऊंचे कहे हैं ॥ १०१ ॥ सब द्वीपों के द्वार आठ योजन के ऊंचे कहे

शब्दार्थ ॥ १०२ ॥ पु० पुरुष वे० वेदनीय कर्मकी ज० जघन्य अ० आठवर्ष की ब० बंध स्थिति ॥ १०३ ॥ ज० यशकीर्ति ना० नामकर्म की ज० जघन्य अ० आठ मुहूर्त की ॥१०४॥ उ० ऊंचगोत्र की ए० ऐसे ॥१०५॥ ते० तेइन्द्रिय की अ० आठ जा० जाति कुलकोडी जो० योनिप्रमुख स० शतसहस्र ॥ १०६ ॥ जी० जीव को अ० आठ समय नि० निर्वर्तित पु० पुद्गल पा० पाप कर्म पने चि० इकठेकिये चि० इकठे करते हैं चि० इकठेकरेंगे प० प्रथमसमय ने० नारकी नि० निर्वर्तित जा० यावत् अ० अप्रथम समयदेव नि० निर्वर्ति

सूत्र बंधाट्ठिई प० ॥ १०३ ॥ जसोकित्तिनामएणं कम्मस्स जहन्नेणं अट्ठमुहुत्ताइं. बंधाट्ठिई प० ॥ १०४ ॥ उच्चागोयस्सणं कम्मस्स एवं चेव ॥ १०५ ॥ तेइंदियाणं अट्ठजाइकुलकोडि जोणि पमुहसयसहस्सा प० ॥ १०६ ॥ जीवाणमट्ठट्ठाण निव्वत्तिए पोग्गले पाव कम्मत्ताए चिणींसुवा, चिणंतिवा, चिणिस्संतिवा, पढमसमय नेरइय निव्वत्तिए जाव अपढम समय देवनिव्वत्तिए । एवं चिण उवचिण जाव

भावार्थ ॥ १०२ ॥ पुरुष वेदनीय कर्म की जघन्य आठ वर्ष की बंध स्थिति कही ॥ १०३ ॥ यशकीर्ति नाम कर्मकी जघन्य आठ मुहूर्त की बंध स्थिति कही ॥ १०४ ॥ उच्चगोत्र कर्म की भी वैसे ही जानना ॥१०५॥ तेइन्द्रिय की कुलकोडी आठ लक्ष की कही ॥ १०६ ॥ जीवने आठ समय निवर्तित पुद्गल पाप कर्मपने संचित किये, करते हैं और करेंगे, प्रथम समय नारकी निवर्तित यावत् अप्रथम समय देव

शब्दार्थ

त ए० ऐसे चिण उ० उपचिण जा० यावत् नि० निर्जरा ॥ १०७ ॥ अ० आठ प्रदेशी खं० स्कन्ध अ० अनंत ॥ १०८ ॥ अ० आठ प्रदेश अवगाह्या पो० पुद्गल अ० अनंत ॥ १०९ ॥ जा० यावत् अ० आठ गुण लु० रुक्ष पो० पुद्गल अ० अनंत प० प्ररूपे, ॥ ११० ॥ × *

सूत्र

णिज्जराचेव ॥ १०७ ॥ अट्ठपएसियाखंधा अणंता प० ॥ १०८ ॥ अट्ठप्पएसोगाढा-पोग्गला अणंता प० ॥ १०९ ॥ जाव अट्ठगुण लुक्खा पोग्गला अणंता पण्णत्ता ॥ ११० ॥ इति अट्ठमं ठाणं सम्मत्तं, * * * *

भावार्थ

निवर्तित ऐसेही चिण, उपचिण यावत् निर्जरा तक जानना ॥ १०७ ॥ आठ प्रदेशी स्कंध अनंत कहे हैं ॥ १०८ ॥ आठ प्रदेश अवगाह्या पुद्गल अनंत कहे हैं ॥ १०९ ॥ यावत् आठगुण रुक्ष पुद्गल अनंत कहे हैं ॥ ११० ॥ यह आठवा स्थानक समाप्त हुवा * * * *



॥ नवम स्थानकम् ॥

शब्दार्थ

न० नव ठा० कारन से स० श्रमण नि० निर्ग्रंथ सं० संभोगिक को वि० विसंभोगिक क० करते ना० उल्लंघन करे नहीं आ० आचार्य के प्रत्यनीक को उ० उपाध्याय के प्रत्यनीक को थे० स्थविर के कु० कुल के ग० गणके सं० संघ के ना० ज्ञान के दं० दर्शन के च० चारित्र के प्रत्यनीक को ॥ १ ॥ न० नव बं० ब्रह्मचर्य के अध्ययन स० शस्त्र परिज्ञा लो० लोकविजय जा० यावत् उ० उपधान श्रुत म० महा-

सूत्र

नवहिं ट्ठाणेहिं समणे निग्गंथे संभोइयं विसंभोइयं करेमाणे नाइक्कमइ तं० आयरिय पडिणीयं, उवज्झाय पडिणीयं, थेरपडिणीयं, कुल-गण-संघ-नाण-दंसण-चरित्त-पडिणीयं, ॥ १ ॥ नव बंभचेरा प० तं० सत्थपरिन्ना, लोगविजओ य, जाव उवहाणसुयं महा-परिन्ना । नवबंभचेरगुत्तीओ प० तं० विवित्ताइं सयणासणाइं सेवित्ता भवइ, नो-

भावार्थ

नव कारण से साधु निर्ग्रंथ अपने संभोगिक साधु को विसंभोगिक करते आज्ञा अतिक्रमे नहीं १ आचार्य का प्रत्यनीक को २ उपाध्यायका प्रत्यनीक को ३ स्थविरका प्रत्यनीक को ४ कुल ५ गण ६ संघ ७ ज्ञान ८ दर्शन और ९ चारित्रका प्रत्यनीक को ॥ १ ॥ आचारांग सूत्रका ब्रह्मचर्य नामक श्रुतस्कंधके नव अध्ययन कहे हैं १ शस्त्र परिज्ञा २ लोकविजय यावत् उपधानश्रुत और ९ महा परिज्ञा

शब्दार्थ परिज्ञा न० नव ब्रह्मचर्य की गु० गुप्ति वि० विविक्त स० शयन आ० आसन से० सेवनेवाला भ० होवे नो० नहीं इ० स्त्री साथ नो० नहिं प० पशुसाथ नो० नहिं पं० नपुंसक साथ नो० नहीं इ० स्त्री की क० कथा क० कहनेवाला नो० नहीं इ० स्त्री के ठा० स्थान से० सेवनेवाला नो० नहीं इ० स्त्री की इ० इन्द्रियों को म० मनोहर म० मनोरम आ० देखनेवाला नि० विचारनेवाला नो० नहीं प० स्निग्ध र० रस भोगी नो० नहीं पा० पानी भो० भोजन का अ० अतिशय आ० आहारकरता नो० नहीं पु० पूर्व र० रत पु० पूर्वक्रीडा स० स्मरण करनेवाला नो० नहीं स० शब्द को अनुसरे नो० नहीं रू० रूप अ० अनुपाति नो० नहीं सि० यश अनुचारी नो० नहीं

सूत्र इत्थीसंसत्ताइं नोपसुसंसत्ताइं, नोपंडगसंसत्ताइं, नो इत्थीणं कहं कहेत्ता, नोइत्थिट्ठाणाइं सेवित्ता भवइ,नो इत्थीणं इंदियाइं मणोहराइं मणोरमाइं आलोइत्ता निज्झाइत्ता भवइ, णो पणीयरसभोई,णो पाणभोयणस्स अइमाय माहारए सया भवइ, णो पुव्वरयं पुव्वकीलियं सरित्ता भवइ, णो सदाणुवाई, नोरूवाणुवाई, नो सिलागाणुवाई, नो-

भावार्थ नव प्रकार की ब्रह्मचर्य की गुप्ति कही १. स्त्री, पशु, नपुंसक वाली वसति में रहे नहीं २ स्त्री की कथा करे नही ३ स्त्री जहां बैठी होवे वहां बैठे नहीं ४ स्त्री की मनोहर इन्द्रियों मनोरम दृष्टि से देखे नहीं ५ स्निग्ध रसका आहार करे नहीं ६ भोजन पानी का अतिशय आहार करे नहीं ७ पूर्व के भोगो व पूर्व के विषय सुख को यादकरे नहीं ८ स्त्री के शब्द को अनुसरे नहीं, रूप का अनुपाति होवे नहीं, और यशः

शब्दार्थ

सा० साता सु० सुख प० प्रतिबद्ध भ० होवे ॥ २ ॥ न० नव बं० ब्रह्मचर्य की अ० अगुप्ति नो० नहीं वि० विविक्त स० शयन आ० आसन से० सेवनेवाला इ० स्त्री साथ प० पशुसाथ पं० नपुंसक साथ इ० स्त्रीकथा क० कहनेवाला इ० स्त्री के ठा० स्थान से० सेवनेवाला इ० स्त्री की इं० इन्द्रिय म० मनोहर जा० यावत् नि० विचारनेवाला प० स्निग्ध रसभोगी पा० पानी भो० भोजन अ० अतिशय आ० आहार करनेवाला पु० पूर्वरत पु० पूर्वक्रीडा स्मरण करनेवाला स० शब्दानुपाति सि० यश कहनेवाला जा० यावत् सा० साता सु० सुख प० प्रतिबद्ध

सूत्र

सायासुक्ख पडिबद्धे आवि भवइ ॥ २ ॥ नवबंभचेर अगुत्तीओ प० तं० नो विवित्ताइं सयणासयाइं सेवित्ता भवइ, इत्थिसंसत्ताइं पसुसंसत्ताइं पंडगसंसत्ताइं; इत्थीणं कहंकहेत्ता भवइ; इत्थिट्ठाणाइं सेवित्ता भवइ; इत्थिणं इंदियाइं मणोरमाइं जाव निज्झाइत्ता भवइ, पणीयरसभोई, पाण भोयणस्स अइमाय माहारए सयाभवइ, पुव्वरयं पुव्व-कीलियं सरित्ता भवइ, सद्दाणुवाई सिलोगाणुवाई जावसाया सुक्खपडिबद्धेयावि भवइ॥ ३॥

भावार्थ

ख्याति को भी अनुसरे नहीं ९ सुख में तत्पर बने नहीं ॥ २ ॥ नव प्रकार से ब्रह्मचर्य की अगुप्ति कही १ स्त्री, पशु, नपुंसक वाली बसति में रहे २ सरागपना से स्त्री की कथा करे ३ स्त्री जहां बैठी होवे वहां बैठे ४ स्त्री की इन्द्रियों सराग दृष्टि से देखे ५ स्निग्ध रसादिक का आहार करे ६ भोजन पानी का अतिशय आहार करे ७ पूर्व के कामभोग व पूर्व के विषय सुख को याद करे ८ स्त्री के शब्दों को अनुसरे

शब्दार्थ

भ० होवे ॥ ३ ॥ अ० अभिनंदन अरिहंत से सु० सुमतिनाथ अ० अरिहंत न० नव सा० सागरोपम को० कोडी स० शतसहस्र वी०व्यतीत हुवे स०उत्पन्न हुवे ॥ ४ ॥ न० नव स० सद्भाव प० पदार्थ जी० जीव अ० अजीव पु० पुण्य पा० पाप आ० आश्रव सं० संवर नि० निर्जरा बं० बंध मो० मोक्ष ॥ ५ ॥ न० नव प्रकार का सं० संसारी जीव पु० पृथ्वीकाय जा० यावत् व० वनस्पतिकाय बे० बेइन्द्रिय जा० यावत्

सूत्र

अभिनंदणाओणं अरहाओ सुमईअरहा, नवहिं सागरोवमकोडिसयसहस्सेहिं वीइक्कंतेहिं समुप्पन्ने ॥ ४ ॥ नवसब्भाव पयत्था प० तं० जीवा, अजीवा, पुन्नं, पावं, आसवो, संवरो, निजरा, बंधो, मोक्खो ॥ ५ ॥ नवविहा संसारसमावन्नगा जीवा प० तं० पुढवि काइया जाव वणस्सइ काइया, बेंदिया जाव पंचेंदिया. पुढविकाइया नवगइया

भावार्थ

रूपका अनुपाति होवे व यशः कीर्तिको भी अनुसरे और ९ सुख में तत्पर होवे ॥ ३ ॥ श्री अभिनंदन अरिहंत के बाद नवलक्ष कोडीसागरोपम व्यतीत हुवे पीछे श्री सुमतिनाथ तीर्थंकर हुवे ॥ ४ ॥ अस्तित्व भाववाले नव पदार्थ कहे. १ चैतन्य लक्षणवाला जीव २ जड लक्षणवाला अजीव ३ शुभफल देनेवाला पुण्य ४ अशुभफल देनेवाला पाप ५ कर्म का आगमन होना सो आश्रव ६ आते कर्मोंको रोकना सो संवर ७ कर्म का झरना सो निर्जरा ८ कर्मका बांधना सो बंध और ९ सब कर्मों का क्षयहोनासो मोक्ष ॥ ५ ॥ नव प्रकारके संसारी जीव कहे हैं १ पृथ्वीकाय यावत् वनस्पतिकाय और बेइन्द्रिय यावत् पंचेन्द्रिय

शब्दार्थ

पं० पंचेन्द्रिय पु० पृथ्वीकायाकी न० नवगति न० नव आगति पु० पृथ्वीकाय पु० पृथ्वी काया में उ० उपजता पु० पृथ्वी काया में से जा० यावत् पंचेन्द्रिय में मे उ० उत्पन्न होवे पु० पृथ्वीकाय पु० पृथ्वीकाया को वि० त्यजता पु० पृथ्वीकायापने जा० यावत् पं० पंचेन्द्रियपने ए० ऐसे आ० अप्काय जा० यावत् पं० पंचेन्द्रिय ॥ ६ ॥ न० नव प्रकार के स० सर्व जीव ए० एकेन्द्रिय बे० बेइन्द्रिय ते० तेइन्द्रिय च० चौरेन्द्रिय ने० नारकी पं० पंचेन्द्रिय तिर्यंच म० मनुष्य दे० देव सि० सिद्ध ॥ ७ ॥ अ० अथवा प० प्रथम

सूत्र

नव आगइया प०तं०पुढविकाइए पुढविकाइएसु उववज्जमाणे पुढविकाइएहिंतो जाव पंचिंदिएहिंतोवा उववज्जेज्जा, सेचेवणं से पुढविकाइए पुढविकाइयत्तं विप्पजहयमाणे पुढवि काइयत्ताए जाव पंचिंदियत्ताएवा; एवं आउकाइयावि जाव पंचिंदियत्ति ॥ ६ ॥ नवविहा सव्व जीवा प०तं० एगिंदिया, बेंदिया,तेइंदिया, चउरिंदिया नेरइया, पंचिंदियतिरिक्खजोणिया, मणुया, देवा, सिद्धा ॥ ७ ॥ अहवा नवविहा सव्व जीवा प० तं०

भावार्थ

पृथ्वीकायकी नवकी गति और नवकी आगति कही पृथ्वीकायिक जीव पृथ्वीकाया में यावत् पंचेन्द्रियमें उत्पन्न होता है और उनहीमेंसे आता है. ऐसेही अप्काय, तेउ, वाउ, वनस्पति, यावत् पंचेन्द्रिय तक जानना ॥ ६ ॥ सब जीवोंके नव भेद कहे हैं एकेन्द्रिय, द्विइन्द्रिय, तेइन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय, नारकी, तिर्यंच पंचेन्द्रिय, मनुष्य, देव व सिद्ध ॥ ७ ॥ और भी सब जीवोंके नव भेद प्रथम समयके नारकी, अप्रथम

शब्दार्थ

समय के नारकी अ० अप्रथम समय के नारकी जा० यावत् अ० अप्रथम समय के देव सि० सिद्ध ॥८॥ न० नव प्रकार की स० सर्व जीव की ओ० अवगाहना पु० पृथ्वीकाय आ० अप् जा० यावत् व० वनस्पति की बे० बेइन्द्रिय ते० तेइन्द्रिय च० चौरेन्द्रिय पं० पंचेन्द्रिय ॥ ९ ॥ जी० जीव को न० नवस्थान से सं० संसार में व० भ्रमणकीया व० भ्रमण करते हैं व० भ्रमण करेंगे ए० एकेन्द्रियपने जा० यावत् पं० पंचेन्द्रियपने ॥१०॥

सूत्र

पढम समय नेरइया अपढम समय नेरइया जावअपढम समय देवा, सिद्धा ॥ ८ ॥ नवविहा सव्व जीवोवगाहणा प० तं० पुढविकाय ओगाहणा, आउ जाव वणस्सइकाइय ओगाहणा, बेंदियोगाहणा, तेइंदियोगाहणा, चउरिंदियोगाहणा, पंचेंदियोगाहणा, ॥ ९ ॥ जीवा णं नवहिं ठाणेहिं संसारं वत्तिंसुवा ३, तं० पुढविकाइयत्ताए जाव पंचिंदियकाइयत्ताए ॥ १० ॥ नवहिं ठाणेहिं रोगुप्पत्तीसिया. तं० अच्चासणयाए, अहियासणयाए, अइ-

भावार्थ

समयके नारकी यावत् अप्रथम समयके देव व सिद्ध ॥ ८ ॥ नव प्रकारकी सब जीवों की अवगाहना पृथ्वीकायाकी अवगाहना २ अप्, ६ तेउ, ४ वायु ५ वनस्पति ६ द्वीइन्द्रिय की अवगाहना ७ त्रीन्द्रिय-की अवगाहना ८ चतुरेन्द्रियकी अवगाहना और ९ पंचेन्द्रियकी अवगाहना ॥ ९ ॥ नवस्थान रूप संसारमें जीवने परिभ्रमणकिया, करते हैं और करेंगे; पृथ्वीकायपने यावत् त्रसकायपने॥१०॥ नव कारणसे रोगकी

शब्दार्थ

न० नवस्थानसे रो० रोगोत्पत्ति सि० होवे अ० अति आहारसे अ० अहित आहार से अ० अतिनिद्रा से अ० अतिजगने से उ० वडीनीत नि० रोकने से पा० लघुनीत नि० रोकनेसे अ० मार्गमें ग० चलनेसे भो० भोजन प० प्रतिकूल इ० इन्द्रियार्थ के को० विपाकसे ॥११॥ न० नवप्रकार का दं० दर्शनावरणीय कर्म नि० निद्रा नि० निद्रा निद्रा प० प्रचला प० प्रचलाप्रचला थी० स्त्यानगृद्धि च० चक्षुदर्शनावरण अ० अचक्षुदर्शनावरण ओ० अवधि दर्शनावरण के० केवल दर्शनावरण ॥१२॥ अ० अभिजित् न० नक्षत्र स० शाश्वेरा न० नवमुहू-

सूत्र

निद्दाए, अइजागरिएणं, उच्चारनिरोहेणं, पासवणनिरोहेणं, अद्धाणगमणेणं; भोयण पडिकूलयाए, इंदियत्थ कोवणयाए ॥ ११ ॥ नवविहे दंसणावरणे कम्मे प० तं० निद्दा, निद्दानिद्दा, पयला, पयलापयला, थीणगिद्धी, चक्खुदरिसणावरणे, अचक्खुदंसणावरणे, ओहिदंसणावरणे, केवलदंसणावरणे, ॥ १२ ॥ अभिईणं नक्खत्ते

भावार्थ

उत्पत्ति होती है १ अति आहार करनेसे २ अहित भोजन करनेसे ३ अति निद्रा करनेसे ४ बहुत जगनेसे ५ वडीनीत रोकनेसे ६ प्रस्रवण (लघुनीत) रोकनेसे ७ बहुत मार्ग चलनेसे ८ प्रतिकूल भोजन करनेसे ९ इन्द्रियके विषयमें अत्यंत मग्न रहनेसे ॥ ११ ॥ दर्शनावरणीय कर्मके नव भेद निद्रा, निद्रानिद्रा, प्रचला, प्रचलाप्रचला, स्त्यानगृद्धि, चक्षुदर्शनावरणीय, अचक्षुदर्शनावरणीय अवधिदर्शनावरणीय और केवलदर्श-

शब्दार्थ

र्तं च० चंद्रमाथ जो०योग जो०योजता है ॥१३॥ अ०अभिजितादि न०नवनक्षत्र चं०चंद्रको उ०उत्तरसे जो० योग जो० योजते हैं अ० अभिजित् स० श्रवण ध० धनिष्टा जा० यावत् भ० भरणी ॥ १४ ॥ इ० इस र० रत्नप्रभा पृथ्वी के ब० बहुत र० रमणिक भू० भूमिभाग से न० नव जो० योजनशत उ० ऊंचे अ० आंतरारहित उ० उपर ता० तारारूप च० चलता है ॥ १५ ॥ जं० जंबूद्वीप में न० नवयोजन का म० मच्छ

सूत्र

साइरेगे नवमुहुत्ते चंदेणं सद्धिं जोगं जोएइ ॥ १३ ॥ अभिई आइयाणं नव नक्खत्ता चंदस्स उत्तरेणं जोगं जोएइ, तं० अभिई, सवणो, धणिट्ठा, जाव भरणी, ॥१४॥ इमीसेणं रयणप्पभाए पुढवीए बहुसमरमणिजाओ भूमिभागाओ नवजोयणसए उड्ढं अवाहाए उवरिल्ले तारारूवे चारंचरंति ॥ १५ ॥ जंबूद्दीवेणंदीवे नवजोयणिया

भावार्थ

नावरणीय ॥ १२ ॥ अभिजित नक्षत्र नवमुहूर्त अधिक तक चंद्रमाकी साथ योग करता है ॥ १३ ॥ अभिजितसे लगाकर भरणी तक के नव नक्षत्र चंद्रकी उत्तर में योग करते हैं ॥ १४ ॥ इस रत्नप्रभा पृथ्वीके बहुत रमणिक भूमिसे बाधा रहित नवसो योजन ऊंचे तारारूप (शनैश्चर) चलता है ॥ १५ ॥ लवण समुद्र के नाले की पास भरतक्षेत्रकी खाइ है इसमें उस नालेसे नव योजन के मत्स्य आये, आते हैं और आवेंगे : (यद्यपि लवण समुद्र में ५०० योजन के शरीरवाले मत्स्य रहेहुवे हैं परंतु वे नहीं

शब्दार्थ

प० प्रवेशकीया प० प्रवेश करता हूं प० प्रवेश करेगा ॥ १६ ॥ जं० जंबूद्वीप में इ० इस उ० अवसर्पिणी में न० नव ब० बलदेव वा० वासुदेवके पि० पिता हो० थे प० प्रजापति बं० ब्रह्म रु० रुद्र सो० सोम सि० शिव म० महासिंह अ० अग्निसिंह द० दशरथ व० वसुदेव इ० यहां से आ० लेकर ज० जैसे स० समवायांगमें नि० निरविशेष जा० यावत् ए० एक ग० गर्भ में व० रहकर सि० सीझेगा आ० आगामिक में ॥ १७ ॥ जं० जंबूद्वीप में भ० भरत क्षेत्र में आ० आगामिक उ० उत्सर्पिणी में न० नव बलदेव वा० वासुदेव

सूत्र

मच्छा पविसिंसुवा पविसंतिवा, पविसिस्संतिवा॥ १६॥जंबूद्दीवेदीवे भरहेवासे इमीसे उस्सप्पिणीए नवबलदेववासुदेवपियरो होत्था, (गाथा) पयावईय बंभेय, रुद्दे सोमे सिवेइय; महासीहे अग्गसीहे दसरहे नवमेय वसुदेवे ॥ १ ॥ इत्तो आढत्तं जहा समवाए निरवसेसं जाव एगासे गब्भवसही सिज्झिस्सइ आगमिस्सेणं॥ १७ ॥ जंबूद्दीवेदीवे भरहेवासे आगमेस्साए उस्सप्पिणीए नवबलदेववासुदेवपियरो भविस्संति नवबलदेव मायरो भविस्संति एवं जहा

भावार्थ

आसकते हैं ॥ १६ ॥ जम्बूद्वीपके भरतक्षेत्रमें इस अवसर्पिणि में नव बलदेव वासुदेवके पिता हुए- १ प्रजापति २ ब्रह्म ३ रुद्र ४ सोम ५ शिव ६ महासिंह ७ अग्निसिंह ८ दशरथ और ९ वासुदेव. यहां से लेकर जैसा समवायांगमें माता पिताका पूर्वभवका, व धर्माचार्यका निदान कहा है यावत् मोक्ष जावेंगे वहां तक का सब अधिकार जानना ॥ १७ ॥ जम्बूद्वीपके भरतक्षेत्र में आगामिक उत्सर्पणी में नव बल-

शब्दार्थ पि० पिता भ० होंगे न० नव व० बलदेव की मा० माता भ० होंगे ए० ऐसे ज० जैसे स० समवायाग में नि० निरविशेष जा० यावत् म० महाभीमसेन सु० सुग्रीव अ० छेल्ला प० प्रतिशत्रु कि० कीर्तिवन्त पु० पुरुष वा० वासुदेव से स० सर्व च० चक्रयोधी हं० हणाते हैं स० स्वचक्रसे ॥ १८ ॥ ए० एकेक म० महानिधि न० नव२ योजन वि० चौडा ए० एकेक र० राजा चा० चातुरंत च० चक्रवर्ती को न० नव म० महानिधि ने० नैसर्प पं० पंडुक पि० पिंगल स० सर्वरत्न म० महापद्म का० काल म० महा काल मा०

सूत्र समवाए निरवसेसं जाव महाभीमसेणे सुग्गीवेय अच्छिमे. एएणंदुगडिसत्तू कित्ती पुरिसाण वासुदेवाणं सव्वेविचक्कजोही हम्मीहंती सचक्केहिं ॥ १ ॥ १८ ॥ एगमेगेणं महानिही नवनव जोयणाइं विक्खंभेणं प० एगमेगस्सणं रण्णो चाउरंत चक्कवट्टिस्स नवमहानिहीओ पण्णत्ताओ तं० नेसप्पपंडुए पिंगलेय, सव्वरयणे, महापउमे, कालेय

भावार्थ देव वासुदेव के पिता होवेंगे इनका सब अधिकार समवायांग में महाभीमसेन सुग्रीव वगैरह अपने शत्रु प्रतिवासुदेवको अपने चक्रसे हणे वगैरह जानना ॥ १८ ॥ एक २ निधान नव २ योजनका चौडा कहा. एक २ चक्रवर्तीको ऐसा नव २ महानिधान कहे हैं १ नैसर्प २ पंडुक ३ पिंगल ४ सर्वरत्न ५ महापद्म ६ काल ७ महाकाल ८ माणवक और ९ शंख. नैसर्प निधानमें ग्राम, आगर, पाटन, द्रोणमुख, मंडप, कंठ

शब्दार्थ

मानवक म०महानिधि सं०शंख ने०नैसर्प में गा० ग्राम अ०आगर न०नगर प०पाटण दो० द्रोणमुख म० मडंब खं० कंटक गि० गृह ग० गणित बी० बीज का मा० मान उ० उन्मान प० प्रमाण धा० धान्य बी० बीज की उ० उत्पत्ति पं० पंडुक में भ० कहना स० सर्व आ० आभरण विधि पु० पुरुष की जा० जात म० स्त्री की आ० अश्व ह० हस्तिकी पिं० पिंगलनिधि र० रत्न स० सर्वरत्न च० चौदा प० प्रधान च० चक्रवर्ती को उ० उत्पन्न होवे ए० एकेन्द्रिय पं० पंचेन्द्रिय व० वस्त्र उ० उत्पत्ति नि० निष्पत्ति स० सर्व

सूत्र

महाकाले, माणवग महानिही संखे, (१) नेसप्पम्मि निवेसा, गामागरनगर पट्टणा-
णंच; दोहमुह मडंबाणं खंधाराणं गिहाणंच (२) गणियस्सय बीयाणं, माणुम्माणस्स जंपमा-
णंच, धण्णस्सय बीयाणं, उप्पत्ती पंडुए भणिया (३) सव्वा आभरणविही,
पुरिसाणं जायहोइ महिलाणं; आसाणयहत्थीणय पिंगलगणिहिम्मि सा भणिया (४)
रयणाइं सव्वरयणे, चउदसपवराइं चक्कवट्टिस्स, उप्पज्जंतिय एगिंदियाइं पंचिंदियाइंच

भावार्थ

क निवेश का समावेश होता है पंडुक निधान में गणितका मानउन्मान बीजका प्रमाण व चौविस प्रकारके धान्य की उत्पत्ति कही है. सब प्रकारके आभरण की जाति स्त्रीपुरुषके अश्व व गजके लक्षण पिंगल नामक तीसरे निधानमें है. चक्रवर्ती के सात एकेन्द्रिय व सात पंचेन्द्रिय रत्न तथा अन्य सब जातिके रत्न सर्वरत्न नामक निधान में है. सब प्रकारके वस्त्र व धान्यकी उत्पत्ति वैसेही वस्त्र रंगने व

शब्दार्थ

तरह की रं० रंगने की धो० धोने की स० सर्व ए० वह म०महापद्म का०काल में का० काल का ज्ञान भ० भावी पु० पुरातन ती० तीन वा० काल में सि० शिल्प स० शतकर्म ति० नीन प० मनुष्यलोक में हि० हितकर्ता लो० लोहे की उ० उत्पत्ति रो० हीरा म० महाकाल आ० आगर रु० रुपेकी सु० सुवर्ण की म० मणि मोती प० प्रवाल जो० योधे की उ० उत्पत्ति आ० आवरण प० प्रहरण स० सर्व जु० युद्ध णी०

सूत्र

(५) वत्थाणय उप्पत्ती, निप्पत्तीचेव सव्वभत्तीणं रंगाणय धोवाणय, सव्वा एसा महापउमे (६) काले कालण्णाणं, भव्वपुराणंच तीसुवासेसु, सिप्पसयंकम्माणं, तिन्निपयायहियकराइं (७) लोहस्सय उप्पत्ती, होइ महाकाल आगराणंच, रुप्पस्स सुवण्णस्सय, मणिमुत्ति सिलप्पवालाणं (८) जोहाणय उप्पत्ती आवरणाणंच पहरणाणंच सव्वाय जुद्धणीई माणवएदंडनीईय (८) णट्टविहिणाडयविही, कव्वस्स चउव्विहस्स-

भावार्थ

धोने की विधि महापद्म निधान में है. कालका शुभाशुभ ज्ञान, पुराणी वस्तु, भावी वस्तु, व वर्तमान वस्तु तीनों कालविषय, शिल्पज्ञान, शतकर्म, कृषिवाणिज्यादि यह सब प्रजा को हित करनेवाले हैं; वगैरह कालनिधान में है. लोहकी उत्पत्ति, सुवर्ण, चांदि, मोती, प्रवाल, वगैरह की उत्पत्ति महाकाल नामक निधान में है. सुभट की उत्पत्ति, आवरण व सन्नाइ (बक्खतर) वगैरह की उत्पत्ति माणवक निधान में रही हुइ है. इसे दंडनीति भी कहते है. और शंख महानिधान में नाटक की विधि, नृत्यकरने की विधि, धर्म, अर्थ व काम कहे हैं, वैसे ही त्रुटित वादित्र वगैरह वहां रहे हुवे हैं इन नवों निधानों की संदूकों आठ

शब्दार्थ

नीति मा० मानवक दं० दंडनीति ण० नाट्यविधि णा० नाटकविधि कं० काव्य की च० चार प्रकार की उ० उत्पत्ति सं० शंख म० महानिधि में तु० त्रुटितांग म० सर्व च० चक्र अ० आठ प० प्रतिष्ठित अ० आठ उ० ऊंचे न० नव वि० पहोला बा० बारह दी० दीर्घ सं० संजुत्त स० संस्थित जा० जान्हवी के मु० मुख वे० वैडूर्य के म० मणि क० कपाट क० कनकमय वि० विविध र० रत्न से प० प्रतिपूर्ण स० चंद्र सू० सूर्य च० चक्र ल० लक्षण अ० अनुसम जु० युग समान बा० बारसाख व० वदनमें प० पल्योपम ठि० स्थितिवाले नि० निधि सि० सरखे नामवाले ते० उस में दे० देवता जे० जिनमें आ० आवास अ०

सूत्र

उप्पत्ती, संखेमहानिहिम्मि, तुडियंगाणच सव्वेसिं ॥ १० ॥ चक्कट्ठप इट्ठाणा अट्ठुस्से-
हाय नवयविक्खंभे, बारसदीहामंजू, ससंट्ठिया जाण्हवीइमुहे ॥ ११ ॥ वेरुलिय मणि-
कवाडा, कणगमया विविहरयणपडिपुण्णा; ससिसूरचक्कलक्खण, अणुसमजुगबाहुव-
यणाय ॥ १२ ॥ पलिओवमट्ठिईया, निहिसरिणामाय तेसुखलुदेवा, जेसिं तेआवासा,

भावार्थ

चक्रवाली हैं; आठ योजन की चौडी हैं, बारह योजन की लम्बी हैं और गंगानदी के मुख के आकार वाली है. अर्थात् गंगानदी जैसे समुद्र में मीलती है वैसे रही हुइ हैं. उन पेटियों को वैडूर्य रत्न के कपाट हैं, सुवर्ण रत्नमय हैं, विविध प्रकार के रत्नों से परिपूर्ण हैं, चंद्र, सूर्य व चक्र के लक्षणवाली हैं. उन की आगे बराबर धोसरे जैसे लम्बे बारसाख हैं. उन निधान के नामवाले व पल्योपमकी स्थितिवाले

शब्दार्थ

अक्रेय आ० आधिपत्य ए० यह न० नव नि० निधि प० प्रभूत ध० धन र० रत्न सं० संचय स० समृद्धि जे० जो स० सम्यक् उ० आते हैं स० सर्व च० चक्रवर्ती को ॥ १९ ॥ न० नव वि० विगय खी० दुध द० दहि ण० मक्खन स० घृत ति० तेल गु० गुड म० मधु म० मद्य मं० मांस ॥ २० ॥ न० नव स्रोत प० परिस्राव बों० शरीर दो० दोश्रोत दो० दोनेत्र दो० दोनाशिका मु० मुख पो० उपस्था पा० पायु॥२१॥

सूत्र

अक्केयाआहिवच्चंच ॥ १३ ॥ एए ते नवनिहिओ, पभूयधणरयणसंचयसमिद्धा, जेवसमुव गच्छंती, सव्वेसिं चक्कवट्टीणं ॥ १४ ॥ ॥ १९ ॥ नवविगईओ पण्णत्ताओ तं० खीरं, दहि, णवणीयं, सप्पि तिल्लं, गुलो, महु, मज्जं, मंसं ॥ २० ॥ नवसोय परिस्सवा बोंदी प० तं० दोसोया, दोणित्ता, दोघाणा, मुहं, पोसए, वाउ ॥ २१ ॥

भावार्थ

उन के अधिपति देवों वहां ही रहते हैं. उन के निवास अक्रेय है परंतु क्रेय नहीं हैं. वे नव निधि बहुत धन व रत्नों से परिपूर्ण हैं और चक्रवर्ती के पुण्यसे सम्यक् प्रकार से उन को ही काम में आते हैं॥१९॥ नव विगय कहीं. १ दुध, २ दधि ३ मक्खण ४ घृत ५ तेल ६ गुड ७ मधु ८ मद्य और ९ मांस ॥ २० ॥ उदारिक शरीर में नव छिद्रों स्रोते कहे हैं. दोकान, दोचक्षु दोनाक, मुख, उपस्थापायु-वडीनीत करने कास्थान और नववां लघुनीत करने का स्थान ॥ २१ ॥ नव प्रकार के पुण्य कहे हैं. १ अन्नपुण्य,

शब्दार्थ

न० नव प्रकार का पु० पुण्य अ० अन्नपुण्य पा० पानपुण्य व० वस्त्र पुण्य ले० शय्या स० शयन म० मन व० वचन का० काय न० नमस्कार ॥ २२ ॥ न० नव पा० पाप का आ० आयतन पा० प्राणातिपात जा० यावत् प० परिग्रह को० क्रोध मा० मान मा० माया लो० लोभ ॥ २३ ॥ न० नव प्रकार का पा० पापश्रुत का प० प्रसंग उ० उत्पात ने० नैमित्तिक मं० मंत्र आ० आइस्क ति० चिकित्सा क० कला शास्त्र

सूत्र

नवविहेपुण्णे प० तं० अण्णपुण्णे, पाणपुण्णे, वत्थपुण्णे, लेणपुण्णे, सयणपुण्णे, मणपुण्णे, वयपुण्णे, कायपुण्णे, नमोक्कारपुण्णे ॥ २२ ॥ नव पावस्सायययणा प० तं० पाणाइवाए, जाव परिग्गहे कोहे, माणे, माया, लोहे ॥ २३ ॥ नवविहे पावस्सुयपसंगे प० तं० उप्पाए नेमित्तिए, मंते आइक्खए तिगिच्छिए, कलावरण अन्नाणे, मिच्छापावयणे

भावार्थ

२ पाणपुण्य ३ वस्त्रपुण्य ४ लेणपुण्य, ५ शयन पुण्य ६ मनपुण्य ७ वचनपुण्य ७ कायपुण्य और ९ नमस्कारपुण्य. ॥ २२ ॥ नव पाप के स्थानक कहे हैं. प्राणातिपात यावत् परिग्रह, क्रोध, मान, माया व लोभ ॥ २३ ॥ नव प्रकार का पापश्रुत का प्रसंगकहा. १ उत्पात रुधिरवृष्टिप्रमुख २ नैमित्तिक ३ मंत्रशास्त्र ४ आइस्क जिस में मातंगनी विद्या होवे ५ वैद्यक जिस में औषधोपचार होवे ६ कला शास्त्र जिस में पुरुष की ७२ कला व स्त्री की ६४ कला होवे ७ आवरण सो वस्तु बनाने का ८ अज्ञान शास्त्र सो भरत

शब्दार्थ

आ० आवरण अ० अज्ञान मि० मिथ्या प्रवचन ॥ २४ ॥ न० नव नि० निपुण व० वस्तु सं० संख्या में नि० निमित्त का० कायिक पो० पौराणिक पा० पारिहस्तिक प० परिपंडित वा० वादी भू० भूमिकर्म ति० चिकित्सा में ॥ २५ ॥ स० श्रमण भ० भगवान् म० महावीर को न० नवगण हो० थे गो० गोदासगण उ० उत्तरबलियगण उ० उद्देहगण चा० चारणगण उ० उद्वैवातिकगण वि० विश्ववादीगण का० कामर्द्धिकगण मा० मानवगण को० कोटिकगण ॥ २६ ॥ स० श्रमण भ० भगवान् म० महावीर स० श्रमण नि० निर्ग्रंथ

सूत्र

तिय (१) ॥ २४ ॥ नवनिउणियावत्थु प० तं० संक्खाणे निमित्ते काईए, पोराणे पारिहत्थिए; परिपंडिए य वाईय, भूइकम्मे तिगिच्छिए ॥ २५ ॥ समणस्स भगवओ महावीरस्स नवगणाहोत्था तं० गोदासगणे, उत्तरबलियस्सयगणे, उद्देहगणे, चारणगणे, उड्डुवाइयगणे, विस्सवाइगणे, कामिड्ढियगणे, माणवगणे, कोडियगणे,

भावार्थ

वगैरह भरना २ मिथ्या प्रवचन सो शाक्यादि दर्शन शास्त्र. ॥ २५ ॥ नव निपुण पुरुष कहे हैं. १ गणित में निपुण २ निमित्तादिक में निपुण ३ कायिक नाडी परीक्षादि में निपुण ४ पौराणिक वृद्धावस्थावाला अथवा पुराण जानने वाला निपुण ५ प्रकृतिसे ही दक्ष अर्थात् समय का जान ६ प्रकृष्ट पंडित सो बहुश्रुत जानने वाला होवे ७ वादी सो मंत्रवादी धनुर्वादि वगैरह ८ भूतिकर्म में निपुण और ९ चिकित्सा कर्म में निपुण ॥ २५ ॥ श्री श्रमण भगवंत महावीर स्वामी को नवगण हुवे १ गोदासगण २ उत्तरबलिय

शब्दार्थ

को न० नवकोटि प० परिशुद्ध भि० भिक्षा न० नहीं ह० हणे न० नहीं हणावे ह० हणते को अ० अच्छा जाने नहीं न० नहीं पकावे न० नहीं पकवावे प० पकाते को न० नहीं अ० अच्छा जाने न० नहीं कि० मोललेवे नहीं न० नहीं मोललेवरावे कि० मोललेते को न० नहीं अ० अच्छा जाने ॥२७॥ ई० ईशान दे० देवेन्द्र दे० देवराजा के व० वरुण म० महाराजा को न० नव अ० अग्रमहिषी॥ ५८ ॥ ई० ईशान दे०

सूत्र

॥ २६ ॥ समणेणं भगवया महावीरेणं समणाणं णिग्गंथाणं नवकोडिपरिसुद्धे भिक्खे प० तं० ण हणइ, ण हणावेइ, हणंतं नानुजाणइ; नपयइ, नपयावेइ, पयंतं णाणुजाणइ; नकिणइ, नकिणावेइ, किणंतं नाणुजाणइ ॥ २७ ॥ ईसाणस्सणं देविंदस्स देवरण्णो वरुणस्स महारन्नो नव अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ ॥ २८ ॥

भावार्थ

गण ३ उद्दहगण ४ चारणगण ५ ऊर्ध्ववार्तिकगण ६ विश्ववादीगण ७ कामार्धिक गण ८ माणवगण और ८ कोटिक गण ॥ २६ ॥ श्री श्रमण भगवंत महावीर स्वामी ने श्रमण निर्ग्रंथों को नवकोटी शुद्धभिक्षा कही है १ आहारादिक के लिये स्वतः हणे नहीं २ अन्य से हणावे नहीं और ३ हणते को अच्छा जाने नहीं ५ किसी वस्तु को अग्निपर स्वतः पणावे नहीं ५ अन्य की पास पकवावे नहीं और ६ पकाते को अच्छा जाने नहीं ७ स्वतः मोललेवे नहीं ८ अन्य की पास मोल लेवरावे नहीं और ९ मोललेते को अच्छा जाने नहीं ॥ २७ ॥ ईशानेन्द्र के देवराजा वरुण को नव अग्रमहिषियों कही ॥ २८ ॥ ईशानेन्द्र

शब्दार्थ

देवेन्द्र दे० देवराजा की अ० अग्रमहिषी की न० नव पल्योपम की ठि० स्थिति ॥ २९ ॥ ई० ईशान देवलोक में दे० देवीकी न० नव प० पल्योपम की ठि० स्थिति ॥ ३० ॥ न० नव दे० देवनिकाय सा० सारस्वत आ० आदित्य व० वन्ही व० वरुण ग० गर्दतोय तु० तुषित अ० अव्याबाध अ० अग्गिच्च रि० रिष्ट ॥ ३१ ॥ अ० अव्याबाध दे० देवता को न० नव दे० देव श० शत ए० ऐसे अ० अग्गिच्च की रि० रिष्ट को ॥ ३२ ॥ न० नव गे० ग्रैवेयक विमान के प० पाथडे हि० नीचे के ठि० नीचे के ग० ग्रैवेयक

सूत्र

ईसाणस्सणं देविंदस्स देवरण्णो अग्गमहिसीणं नवपलिओवमाइं ठिई प० ॥ २९ ॥ ईसाणे कप्पे उक्कोसेणं देवीणं णवपलिओवमाइंठिई प० ॥ ३० ॥ नव देवनिकाया प० तं० (गाथा) सारस्सय माइच्चा, वण्ही वरुणाय गद्दतोयाय, तुसिता अव्वाबाहा, अग्गिच्चाचेवरिट्ठाय ॥ १ ॥ ३१ ॥ अव्वाबाहाणं देवाणं नवदेवसया प० एवं अग्गिच्चावि । एवंरिट्ठावि ॥ ३२ ॥ नव गेविज्जविमाणपत्थडा प० तं० हिट्ठिम

भावार्थ

देवता की अग्रमहिषियों की स्थिति उत्कृष्ट नौ पल्योपम की कही ॥ २९ ॥ ईशान देवलोक में देवियों की उत्कृष्ट स्थिति नव पल्योपम की कही ॥ ३० ॥ नव देव निकाय कहे हैं १ सारस्वत २ आदित्य ३ वन्हि ४ वरुण ५ गर्दतोय ६ तुषित ७ अव्याबाध ८ अग्नेय और ९ रिष्ट ॥ ३१ ॥ अव्याबाध, अग्नेय और रिष्ट देवता को नवसो देवताओं हैं ॥ ३२ ॥ नवग्रैवेयक विमान कहे १ नीचे की त्रिक का नीचेका

शब्दार्थ

विमान के प० पाथडे हि० नीचे के म० मध्यम गे० ग्रैवेयक विमान के प० पाथडे हि० नीचे के उ० उपर के गे० ग्रैवेयक विमान के प० पाथडे म० मध्यम के हि० नीचे गे० ग्रैवेयक विमान के प० पाथडे म० मध्यम के म० मध्यम गे० ग्रैवेयक विमान के प० पाथडे म० मध्यम के उ० उपर के गे० ग्रैवेयक विमान के प० पाथडे उ० उपर के हि० नीचे के गे० ग्रैवेयक विमान के प० पाथडे उ० उपर के म० मध्यम गे० ग्रैवेयक विमान के प० पाथडे उ० उपर के उ० उपर के गे० ग्रैवेयक विमान के प० पाथडे ॥३३॥ ए० इन न० नव गे० ग्रैवेयक विमान के न० नवनाम भ० भद्र सु० सुभद्र सु० सुजात सो० सोमनस पि० प्रियदर्शन सु० सुदर्शन अ०

सूत्र

हिट्ठिम गेविज्ज विमाणपत्थडे, हिट्ठिम मज्झिम गेविज्जविमाणपत्थडे, हिट्ठिम उवरिम गेविज्जविमाणपत्थडे, मज्झिमहिट्ठिम गेविज्जविमाणपत्थडे, मज्झिम मज्झिम गेविज्जविमाणपत्थडे, मज्झिम उवरिम गेविज्जविमाणपत्थडे, उवरिमहिट्ठिम गेविज्जविमाणपत्थडे, उवरिम मज्झिम गेविज्जविमाणपत्थडे, उवरिम उवरिम गेविज्जविमाणपत्थडे ॥ ३३ ॥ एएसिणं नवण्हं गेविज्जविमाणपत्थडाणं नवनामधेज्जा प० तं० भद्दे सुभद्दे सुजाए, सोमणसे पियदंसणे; सुदंसणे अमोहेय, सुप्पबुद्धे जसोहरे (१)

भावार्थ

मध्यका और उपरका, मध्यकी त्रिकका नीचेका, मध्यका और उपरका ओर उपरकी त्रिकका नीचेका, मध्यका और उपरका ऐसे नव पाथडे हुवे ॥ ३३ ॥ इन ग्रैवेयक विमानके नव पाथडे के नव नाम कहे

आमोघ सु० सुप्रबुद्ध ज० यशोधर ॥ ३४ ॥ न० नव प्रकार का आ० आयुष्य प० परिणाम ग० गति ग० गति बंधन ठि० स्थिति ठि० स्थिति बंधन उ० ऊर्ध्वगमन अ० अधोगमन ति० तिर्यक् गमन दी० दीर्घगमन र० ह्रस्वगमन ॥ ३५ ॥ न० नव न० नवमिका भि० भिक्षु प्रतिमा ए० इकासी रा० रात्रि-दिवस च० चार पं० पांच भि० भिक्षाशत अ० यथासूत्र आ० आराधिक भ० होवे ॥ ३६ ॥ न० नव

॥ ३४ ॥ नवविहे आओपरिणामे प० तं० गइपरिणामे, गइबंधणपरिणामे, ठिइपरिणामे, ठिइबंधणपरिणामे, उड्ढगारवपरिणामे अहेगारव परिणामे, तिरियंगारव परिणामे, दीहंगारव परिणामे, रहस्संगारव परिणामे, ॥ ३५ ॥ नवनवमियाणं भिक्खुपडिमा एकासीएहिं राइंदिएहिं चउहिय पंचुत्तरेहिं भिक्खासएहिं अहासुत्ता जाव आराहिया-

१ भद्र २ सुभद्र ३ सुजात ४ सोमनस ५ प्रियदर्शन ६ सुदर्शन ७ आमोघ ८ सुप्रबुद्ध और ९ यशोधर ॥ ३४ ॥ नव प्रकारका आयुष्यका परिणाम कहा है १ गतिस्वभाव २ गति बंधनस्वभाव ३ स्थिति स्वभाव ४ स्थितिबंधनस्वभाव ५ ऊर्ध्वगमनस्वभाव ६ अधोगमनस्वभाव ७ तिर्च्छा जानेका स्वभाव ८ दीर्घ गमन स्वभाव और ९ ह्रस्वगमन स्वभाव ॥ ३५ ॥ नव नवमिक भीक्षुप्रतिमा कही जिसमें इकाशी रात्री लगती हैं और चारसो पांच भिक्षाकी दाति होती हैं उसका जैसे सूत्रमें वर्णन कियाहै वैसे अंगीकार करना ॥ ३६ ॥ नव प्रकारका प्रायश्चित्त आलोयणारिह यावत् मूलारिह और ९ अनवस्थ पारांचिक

शब्दार्थ

प्रकार का पा० प्रायश्चित आ० आलोचना जा० यावत् मू० मूल अ० अनवस्थाप्या ॥ ३७ ॥ जं० जंबूद्वीप के मं० मेरुकी दा० दक्षिण में भ० भरतमें दी० दीर्घवैताढय मे न० नवकूट सि० सिद्ध भ० भरत खं० खंडक मा० माणिभद्र वे० वैताढय पु० पूर्णभद्र ति० तिमिस्रगुफा भ० भरत वे० वैश्रमण ॥ ३८ ॥ नि० निषधवर्षधर प० पर्वत पे न० नवकूट सि० सिद्ध नि० निषध ह० हरिवर्ष वि० विदेह हि० ह्री धि० धृति सी० सीतोदा अ० अपरविदेह रु० रुचक ॥ ३९ ॥ जं० जंबूमंदर के णं० नंदनवन में न०

सूत्र

विभवइ ॥ ३६ ॥ नवविहे पायच्छित्ते प० तं० आलोयणारिहे, जाव मूलारिहे, अणवट्ठप्पारिहे ॥ ३७ ॥ जंबूमंदर दाहिणेणं भरहे दीहवेयड्ढे नवकूडा प० तं० (गाथा) सिद्धे भरहे खंडग माणीवेयड्ढ पुण्ण तिमिसगुहा ॥ भरहे वेसमणेय, भरहे कूडाण नामाइं (१) ॥ ३८ ॥ जंबूमंदर दाहिणेणं निसढवासहरे पव्वए नवकूडा प० तं० (गाथा) सिद्धे निसहे हरिवस्स विदेहे हिरिधिईय सीओया अवर विदेहेरुयगे, निसहेकूडाण नामाइं (१) ॥ ३९ ॥ जंबूमंदर पव्वए णंदणवणे

भावार्थ

॥ ३७ ॥ जम्बूद्वीपके मेरुकी दक्षिणमें भरतका दीर्घवैताढ्यपे नवकूट कहे हैं १ सिद्ध २ भरत ३ खंडक ४ माणिभद्र ५ वैताढ्य ६ पूर्णभद्र ७ तिमिस्रकूट ८ भरत और ९ वैश्रमणकूट ॥ ३८ ॥ जम्बूमंदर की दक्षिण में निषध पर्वत पर नवकूट कहे हैं १ सिद्ध २ निषध ३ हरिवर्ष ४ विदेह ५ ही ६ धृति ७ सीतोदा

शब्दार्थ — नवकूट नं० नंदन मं० मंदर नि० निषध हे० हेमवय र० रजत रु० रुचक सा० सागरचित्र व० वज्र ब० बलकूट ॥ ४० ॥ मा० मालवंत व० वक्षस्कार प० पर्वतपे न० नवकूट सि० सिद्ध मा० मालवंत उ० उत्तर कुरु क० कच्छ सा० सागर र०रजत सी०सीता पु०पूर्णभद्र ह० हरि जं०जंबूकी कच्छमें दी० दीर्घ वैताढ्यपे न० नवकूट सिद्ध क० कच्छ खं०खंडक म०माणिभद्र वे०वैताढ्य पु०पूर्णभद्र ति०तिमिस्रगुफा क०कच्छ वे०

सूत्र — नवकूडा प० तं० (गाथा) नंदणे मंदरे चेव, निसहे हेमवय रयत रुयए य; सागर चित्ते वइरे. बलकूडे चेवबोधव्वे (१) ॥ ४० ॥ जंबूद्दीवेदीवे मालवंते वक्खार पव्वए नवकूडा प० तं० (गाथा) सिद्धेय मालवंते, उत्तरकुरु कच्छ सागरे रयए॥सीयाय पुन्न नामे हरिस्सकूडेय बोधव्वे (१) जम्बूकच्छे दीहवेयड्ढे नवकूडा प० तं० सिद्धे कच्छे खंडग, माणीवेयड्ढ पुन्नतिमिसगुहा ॥ कच्छे वेसमणेय,

भावार्थ — ८ अपर विदेह और ९ रुचक ॥ ३९ ॥ जम्बूमंदर पर्वत के नंदनवन में नव कूट कहे हैं १ नंदन २ मंदर ३ निषध ४ हेमवय ५ रजत ६ रुचक ७ सागरचित्र ८ वज्र और ९ बलकूट ॥ ४० ॥ जम्बूद्वीप में मालवंत वक्षस्कार पर्वत पर नव कूट कहे हैं १ सिद्ध २ मालवंत ३ उत्तरकुरु ५ कच्छ ५ सागर ६ रजत ७ सीता ८ पूर्णभद्र और ९ हरिकूट. जम्बूद्वीप के कच्छ विजय में दीर्घवैताढ्यपर नव कूट कहे हैं १ सिद्ध २ कच्छ ३ खंडक ४ माणिभद्र ५ वैताढ्य ६ पूर्णभद्र ८ तिमिस्र गुफा ८ कच्छ और ९

शब्दार्थ

वैश्रमण सु० सुकच्छ में दी० दीर्घ वे० वैताढ्य में न० नवकूट सि० सिद्ध सु० सुकच्छ खं० खंडग मा० माणिभद्र वे० वैताढ्य पु० पूर्णभद्र ति० तिमिस्रगुफा सु० सुकच्छ वे० वैश्रमण ॥ ४१ ॥ ए० ऐसे जा० यावत् पुष्कलावती में दी० दीर्घ वैताढ्य ए० ऐसे व० वच्छ में दी० दीर्घ वैताढ्य में ए० ऐसे जा० यावत् मं० मंगलावतीमें दी० दीर्घ वैताढ्य ॥ ४२ ॥ जं० जंबूद्वीप में वि० विद्युत्प्रभ व० वक्षस्कार पर्वतपे न० नवकूट

सूत्र

कच्छ कूडाण नामाइं ॥ १ ॥ जम्बूसुकच्छे दीहवेयड्ढेणं नवकूडा प० तं० सिद्धे सुकच्छ खंडग । माणीवेयड्ढ पुन्नतिमिसगुहा ॥ सुकच्छे वेसमणेय । सुकच्छकूडाण णामाइं (१) ॥ ४१ ॥ एवं जाव पुक्खलावइंमि दीहवेयड्ढे ॥ एवं वच्छे दीहवेयड्ढे॥ एवं जाव मंगलावइंमि दीहवेयड्ढे ॥ ४२ ॥ जंबूविज्जुप्पभे वक्खारपव्वए नवकूडा प० तं० सिद्धेय विज्जुनामे, देवकुरा पम्ह कणगसोवत्थी, सीओदाए सजले हरिकूडे चेव बोधव्वे (१) जम्बूपम्हेदीहवेयड्ढे नवकूडा प० तं० सिद्धे पम्हे खंडग माणी-वेयड्ढए ॥ एवं चेव जाव सलिलावइंमि दीहवेयड्ढे । एवं वप्पे दीहवेयड्ढे एवंजाव गं-

भावार्थ

वैश्रमण. जम्बूद्वीप के सुकच्छ विजय में दीर्घ वैताढय पर्वत पर नव कूट कहे हैं १ सिद्ध २ सुकच्छ ३ खंडग ४ माणिभद्र ५ वैताढय ६ पूर्णभद्र ७ तिमिस्रगुफा ८ सुकच्छ और ९ वैश्रमण ॥ ४१ ॥ ऐसे ही पुष्कलावती में दीर्घवैताढय, वच्छ का दीर्घ वैताढ्य, यावत् मंगलावती में दीर्घ वैताढ्यपर नव २ कूट जान-

शब्दार्थ

सि०सिद्ध वि०विद्युत्प्रभ दे०देवकुरु प०पद्म क०कनक सो०सोवत्थी सी०सीतोदा स०सजल ह०हरिकूट॥४३॥ जं०जंबूद्वीपमें प०पद्म दी०दीर्घ वैताढ्यपे न०नवकूट सि०सिद्ध प०पद्म खं० खंडग मा० माणिभद्र वे० वैताढ्य ए०ऐसे जा०यावत् स०सलिलावनी में दी०दीर्घ वैताढ्य ए०ऐसे व० वप्रमें दी० दीर्घ वैताढ्यपे जा० यावत् गं०गंधिलावती के दी० दीर्घ वैताढ्यपे न०नवकूट सि०सिद्ध गं० गंधिलावती खं० खंडग मा० माणिभद्र वे० वैताढ्य पु० पूर्णभद्र ति०तिमिस्रगुफा गं०गंधिलावती वे०वैश्रमण ए० ऐसे स०सर्वदी०दीर्घ वैताढ्यपे दो०दोकूट

सूत्र

धिलावइंमि दीहवेयड्ढे नवकूडा प० तं० सिद्धे गंधिल खंडग माणीवेयड्ढ पुन्न तिमिसगुहा । गंधिलावइ वेस्समणे कूडाणं होंति नामाइं ॥ १ ॥ एवं सव्वेसु दीहवेयड्ढेसु

भावार्थ

ना ॥ ४२ ॥ जम्बूद्वीप में विद्युत्प्रभ वक्षस्कार पर्वत पर नव कूट कहे हैं १ सिद्ध २ विद्युत्प्रभ ३ देवकुरु ४ पद्म ५ कनक ६ सोवत्थी ७ सीतोदा ८ सजल ९ हरिकूट ॥ ४३ ॥ जम्बूद्वीप में पद्म नामक दीर्घ वैताढ्य पर नवकूट कहे हैं सिद्ध, पद्म, खंडग, माणीभद्र, वैताढ्य वगैरह सलीलावती में दीर्घ वैताढ्य तक जानना. वप्र यावत् गंधिलावती दीर्घ में वैताढ्य पर नवकूट १ सिद्ध २ वप्र ३ खंडग ४ माणीभद्र ५ वैताढ्य ६ पूर्णभद्र ८ तिमिस्रा ८ वप्र और ९ वैश्रमण, इसतरह दूसरा और आठवा नाम विजय जैसे कहना; शेष

शब्दार्थ

स० सरिखे नामवाले ॥ ४४ ॥ जं० जंबूद्वीप के मं० मेरु की उ० उत्तर में नी० नीलवन्त वा० वर्षधर प० पर्वतपे न० नवकूट सि० सिद्ध नी० नीलवन्त वि० विदेह सी० सीता कि० कीर्ति ना० नारीकान्ता अ० अपर विदेह र० रम्यक उ० उपदर्शन ॥ ४५ ॥ जं० जंबूद्वीप के मं० मेरु की उ० उत्तर में ए० ऐरवत में दी० दीर्घ वैताढ्यपे न० नवकूट सि० सिद्ध ए० ऐरवत खं० खंडग मा० माणिभद्र वे० वैताढ्य पु० पूर्णभद्र ति० तिमिस्रगुफा ए० ऐरवत वे० वैश्रमण ए० ऐरवत कू० कूट के ना० नाम ॥ ४६ ॥ पा०

सूत्र

दोकूडा सरिसनामगा सेसा तेचेव ॥ ४४ ॥ जंबूमंदर उत्तरेणं नीलवंते वासहर पव्वए नवकूडा प० तं० सिद्धे नीलवए विदेहे सीया कित्तीय नारिकंताय, अवर विदेहेरम्मग, कूडे उवदंसणे चेव ॥ ४५ ॥ जंबूमंदर उत्तरेणं एरवए दीहवेयड्ढे नवकूडा प० तं० सिद्धेरवए खंडग, माणीवेयड्ढ पुण्णतिमिसगुहा, एरवए वेसमणे, एरवए कूड नामाइं ॥ १ ॥ ४६ ॥ पासेणं अरहा पुरिसादाणीए वज्जारिसहनारायसंघयणे

भावार्थ

सातों नाम उक्त मुवाफीक जानना ॥ ४४ ॥ जम्बूमंदर की उत्तर में नीलवंत पर्वतपर नव कूट कहे हैं १ सिद्ध २ नीलवंत ३ विदेह ४ सीता ५ कीर्ति ६ नारीकान्ता ७ अपरविदेह ८ रम्यक और ९ उपदर्शन ॥ ४५ ॥ जम्बूमंदर की उत्तर में ऐरवत क्षेत्र में दीर्घ वैताढ्य पर्वतपर नव कूट कहे हैं १ सिद्ध २ ऐरवत ३ खेडग ४ माणीभद्र ५ वैताढ्य ६ पूर्णभद्र ७ तिमिस्रगुफा ८ ऐरवत और ९ वैश्रमण ॥ ४६ ॥

शब्दार्थ

पार्श्वनाथ अ० अरिहंत पु० पुरुषादाणी व० वज्र ऋषभ नाराच सं० संघयन स० समचौरस सं० संठान से सं० संस्थित न० नव र० हाथ उ० ऊंचे उ० ऊंचपने हो० थे ॥ ४७ ॥ स० श्रमण भ० भगवन्त म० महावीर के ति० तीर्थ में न० नव जो० जीवने ति० तीर्थंकर ना०नामगोत्र क० कर्म नि० बांधा से० श्रेणिक सु० सुपार्श्व उ० उदाई पु० पोट्टिल अनगार द०दृढायु सं० शंख स०शतक सु० सुलसा श्राविका रे० रेवती ॥ ४८ ॥ अ० आर्य क० कृष्ण वासुदेव रा० रामबलदेव उ० उदक पेढालपुत्र पु० पोट्टिल स० शतक

सूत्र

समचउरंससंट्ठाणसंट्ठिए नवरयणीओ उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था ॥ ४७ ॥ समणस्स भगवओ महावीरस्स तित्थंसि नवहिं जीवेहिं तित्थंकर नाम गोयकम्मे निव्विसिए तं०से णिएणं, सुपासेणं, उदाइणा पुट्टलेणं, अणगारेणं, दढाउणा, संखेणं सयएणं, सुलसाए स.वि.ाए, रेवईए, ॥ ४८ ॥ एसणं अज्जो कण्हे व सुदेवे, रामेबलदेवे, उदये पेढालपुत्ते,

भावार्थ

वज्रऋषभ नाराच संघयण और समचतुस्र संस्थान वाले श्री पुरुषादाणी पार्श्वनाथ अरिहंत के शरीर की अवगाहना नव हाथकी थी ॥ ४७ ॥ श्री श्रमण भगवंत महावीर स्वामी के तीर्थ में नव जीवोंने तीर्थंकर नाम कर्म की उपार्जना की १ श्रेणिकराजा २ श्री श्रमण भगवंत महावीर स्वामी के पितृ सुपार्श्व ३ कोणिकराजा के पुत्र उदाई ४ पोट्टिल अनगार ५ दृढायु ६ शंख ७ शतक ८ सुलसाश्राविका और ९ रेवती ॥ ४८ ॥ अब जो आगामिक उत्सर्पिणी में तीर्थंकर बन कर केवलज्ञान प्राप्तकर मोक्ष जावेंगे उन के

शब्दार्थ

गाथापति दा० दारुक निर्ग्रंथ स० सत्यकी णि० निर्ग्रंथी पुत्र सा० श्राविका बुद्ध अ० अंबड प० परिव्राजक अ० आर्या सु० सुपार्श्वा पा० पार्श्वनाथकीचेली आ० आगामिक उ० उत्सर्पिणीमें चा० चार जा० याम ध० धर्म प० प्ररूपकर सि० सिद्धहोंगे जा० यावत् अं० अंतकरेंगे ॥ ४९ ॥ अ० आर्य से० श्रेणिक राजा भि० भिंभसार-का० कालकेअवसरमें का० कालकरके इ० इस र० रत्नप्रभा पु० पृथ्वीमें सी० सीमंत न०

सूत्र

पुट्टिले, सयये गाहावई, दारुएनियंठे, सच्चई णियंठीपुत्ते, साविय बुद्धे अम्मडे परिव्वाए, अज्जाविणंसुपासा पासावच्चेज्जा. आगमेस्साए उसप्पिणीए चाउज्जामं धम्मं पन्नवित्ता सिज्झिहिंति, जाव अंतंकाहिंति ॥ ४९ ॥ एसणं अज्जो सेणिए राया भिंभिसारे कालमासे कालंकिच्चा इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए सीमंतए नरए चउरासीइ

भावार्थ

नाम १ कृष्णवासुदेव २ रामबलदेव २ उदक पेढाल विद्याधरका पुत्र ४ पोट्टिल ५ शतक गाथापति ६ दारुक ७ सुज्येष्ठा साध्वीका पुत्र सत्यकी ८ सुलसासे प्रतिबोध पाया हुआ अम्बड सन्यासी और ९ श्री पार्श्वनाथ स्वामी की शिष्या सुपार्श्वा. ये नव जण चार महाव्रत रूप धर्मकी प्ररूपणा कर के मोक्ष में जावेंगे यावत् संसारका अंत करेंगे ॥ ४९ ॥ अब आगे उत्सर्पिणी काल में जो प्रथम तीर्थंकर श्री महापद्म स्वामी होवेंगे उनका विस्तार कहते हैं. अहो आर्यो! श्रेणिक राजा कि जिसका अपर नाम भंभसार

शब्दार्थ

नरक च० चौरासी वा० सहस्रवर्षकी ठि० स्थितिवाली न० नरक में ने० नारकीपने उ० उत्पन्न होंगे त० तहां ने० नारकी भ० होंगे का० काला का० कालीप्रभा जा० यावत् प० परम कृष्णवर्ण त० तहां वे० वेदना वे० वेदेंगे उ० उज्वल जा० यावत् दु० दुःखसेसहन होवे त० वहांसे न० नरक से उ० चवकर आ० आगामिक उ० उत्सर्पिणी में इ० इस जं० जंबूद्वीप में भ० भरत क्षेत्र में वे० वैताढ्य पर्वत के मू० मूल में पुं० पुंडदेश में स० शत द्वार न० नगर में सं० संमुई कु० कुलकर की० भ० भद्रा भा० भार्या की कु०

सूत्र

वाससहस्से ठिइयंसि नरगंसि नेरइत्ताए उववज्जेहिंति, सेणं तत्थ नेरइए भविस्संति काले कालोभासे जाव परमकिण्हवन्नेणं सेणं तत्थ वेयणं वेएहिंति उज्जलं जाव दुरहियासं । सेणं तओनरगाओ उव्वट्टित्ता आगमिस्साए उस्साप्पिणीए, इहेव जंबूद्दीवेदीवे भरहेवासे वेयड्ढ गिरिपायमूले पुंडेसु सयदुवारे नयरे संमुइयस्स कुलगरस्स भद्दाए भारियाए कुच्छिंसि पुमत्ताए पच्चायाहिए, तएणं सा भद्दा भारिया नवण्हं मासाणं बहुप-

भावार्थ

है वह काल के अवसर में काल कर के रत्नप्रभा नामक पृथ्वी के सीमंत नरकावास में चौरासी हजार वर्ष की स्थिति से नारकीपने उत्पन्न होवेंगे. वहां उनका शरीर काले वर्णका, काली प्रभावाला, व अत्यंत कृष्ण होगा. और वह बहुत कठिन व दुःसह वेदना वेदेगा. फीर आयुष्य पूर्ण होनेसे वहांसे नीकल कर आगामिक उत्सर्पिणी में इसी जम्बूद्वीप के भरत क्षेत्र में वैताढ्य पर्वत के मूल में पंडनामक

शब्दार्थ

कुक्षि में पु० पुत्रपने प० उत्पन्न होंगे त० तब सा० वह भ० भद्रा भा० भार्या न० नव मा० मास ब० बहुत प० प्रतिपूर्ण अ० अर्ध अ० आठ रा० अहोरात्रि वि० व्यतिक्रमहोते सु० सुकुमाल पा० हस्त पा० पाद अ० अहीन प० पूर्ण पं० पांच इंन्द्रिय वाला स० शरीर ल० लक्षण वं० व्यंजन जा० यावत् सु० सुरूप दा० पुत्र प० जनेगी जं० जिस र० रात्रिको से० वह दा० पुत्र प० जनेगा तं० उस र० रात्रिमें स०

सूत्र

डिपुन्नाणं अद्धट्ठमाणय राइंदियाणं विइक्कंताणं सुकुमालपाणिपायं अहीणपडिपुन्न पंचिंदियसरीरं लक्खण वंजणं जाव सुरूवं दारगं पयाहिंति। जं रयणिं चणं से दारए पयाहिंति तं रयणिं चणं सयदुवारेनगरे सब्भिंतर बाहिरए भारग्गसोय, कुंभग्गसोय पउमवासेय, रयणवासेय वासिहिंतित्ति. । तएणंतस्स दारयस्स अम्मापियरो इक्कारसमे

भावार्थ

देश के शतद्वार नगर में संमुइ कुलकर की भद्रा भार्याकी कुक्षिमें पुत्रपने उत्पन्न होंगे. तत्पश्चात् नव मास व साढेसात रात्रि पूर्ण हुवे पीछे उन भद्रा भार्या को कोमल हस्तपांव वाला, परिपूर्ण इन्द्रियवाला व लक्षण व्यंजन वाला पुत्र रत्न उत्पन्न होवेगा. जिस रात्रि में पुत्रका जन्म होवेगा उस रात्रि में शतद्वार नगर में सर्वत्र भार प्रमाण व कुंभ प्रमाण पद्म रत्नों की वर्षा होवेगी. बारहवे दिन में उन के मातापिता भार प्रमाण व कुंभ प्रमाण पद्मरत्न की वर्षा होनेसे उसी स्वरूपवाला गुण निष्पन्न महापद्म नाम रखेंगे. जब महापद्म कुमार की वय आठवर्ष से कुछ अधिक होवेगी उस समय बडेराज्या-

शब्दार्थ

शतद्वार नगर में स० आभ्यंतर बा० बाहिर भा० भार प्रमाण सो० स्रोत कुं० कुंभ प्रमाण स्रोत प० पद्म की वर्षा र० रत्नकी वर्षा वा० होवेगी त० तब त० उस दा० पुत्रके अ० मातापिता इ० इग्यारह दिवस वि० व्यतीत हुवे जा० यावत् बा० बारह दि० दिवस में ए० ऐसारूप गो० गौण गु० गुणनिष्पन्न ना० नाम का० करेंगे ज० जब अ० मुझे इ० यह दा० पुत्र जा० उत्पन्न हुवा स० समय में स० शतद्वार न० नगर में स० आभ्यंतर बा० बाहिर भा० भार प्रमाण कु० कुंभ प्रमाण प० पद्म वर्षा र० रत्नवर्षा वु० वर्षी तं० इसलिये हो० होवो अ० हमारा इ० इस दा० पुत्रका ना० नाम म० महापद्म त० तब त० उस दा० पुत्रके अ० मातापिता न० नाम का० करेंगे म० महापद्म म० महापद्म पुत्रको अ० मातापिता सा० झाझेरा अ० आठ

सूत्र

दिवसे विइक्कंते जाव बारिसाह दिवसे अयमेयारूवं गोणं गुणानिप्फन्नं नामधिज्जं काहिंति. जम्हाणं अम्हं इमंसि दारगंसि जायंसि समाणंसि सयदुवारे नगरे सब्भिंतर बाहिरिए भारग्गसोय कुंभग्गसोय पउमवासेय रयणवासे यवुट्ठे, तं होऊ णं अम्हं इमस्स दारगस्स नामधिज्जं महापउमे । तएणं तस्स दारगस्स अम्मापियरो नामधिज्जं काहिंति महापउमे २ त्ति ॥ तएणं महापउमं दारगं अम्मापियरो साइरेगट्ठवास जायगं-

भावार्थ

षिषेक से उन को अभिषेक करेंगे और राजा बनावेंगे. महाहिमवंत मलय मेरू राजा की समान अपना राज्य करते हुवे विचरेंगे. उन महापद्म राजा को पूर्णभद्र व माणभद्र नामक दोनों देवता

शब्दार्थ

वा० वर्षी जा० जानकर रा० राज्याभिषेकसे अ०सिंचन करेंगे त०तह। रा० राजा भ० होंगे म०महा हि० हिमवन्त म० मलय मं० मेरु रा० राजा का व० वर्णन जा० यावत् र० राज्यको प० विस्तार कर्ता वि० रहेगा त० उस म० महापद्म र० राजा को अ० अन्यदा क० कदापि दो० दोदेव म० महर्द्धिक जा० यावत् म० महासुखी से० सेवा क० कर्म क० करेंगे पु० पूर्णभद्र मा० माणिभद्र स० शतद्वार नगर में ब० बहुत रा० राजेश्वर त० तलवर मां० माडंबिक को० कौटुम्बिक इ० व्यवहारी से० शेठ से० सेनापति स० सार्थवाह प० प्रमुख अ० अन्योन्य स० शब्द करेंगे ए० ऐसे व० कहेंगे ज० जब दे० देवानुप्रिय म० महापद्म र० राजाको दो० दो देव म० महर्द्धिक जा० यावत् म० महासुखी से० सेवाकर्म क० करते हैं पु० पूर्णभद्र मा०

सूत्र

जाणित्ता रायाभिसेएणं अभिसिंचिहिंति । सेणं तत्थ राया भविस्सइ। महया हिमवंत मलयमंदर रायवन्नओ जाव रज्जं पसासेमाणे विहरिस्सइ ॥ तएणं तस्स महापउमस्स रन्नो अन्नयाकयाइ दो देवा महिड्ढिया जाव महेसक्खा सेणाकम्मं काहिंति तं० पुन्नभद्देय माणिभद्देय. तएणं सयदुवारे बहवे राईसर तलवर माडंबिय, कोडुंबिय, इब्भ, सेट्ठि, सेणावइ, सत्थवाहप्पभिईओ अन्नमन्नं सद्दावेहिंति, एवं वइस्संति जम्हाणं

भावार्थ

सेवा करेंगे जिससे शतद्वार नगर के राज, राजेश्वर, तलवर माडंबीय, शेठ, सेनापति, गाथापति वगैरह परस्पर ऐसा वार्तालाप करेंगे कि अहो देवानुप्रिय ! हमारे महापद्म राजा को महर्द्धिक यावत् बहुत सुखके मालिक

शब्दार्थ

माणिभद्र त० इसलिये हो०होवो अ० मैं दे० देवानुप्रिय म० महापद्म र० राजा का दु० दूसरा ना० नाम दे० देवसेन त० तब त० उस म० महापद्म र० राजा को दु० दूसरा ना० नाम भ० होगा दे० देवसेन त० तब त० उस दे० देवसेन र० राजा को अ० अन्यदा क० कदापि से० श्वेत सं० शंखतल वि० विमल सं० सदृश च० चारदांत वाला ह० हस्ती स० उत्पन्न होगा त० तब स० वह दे० देवसेनराजा त० उस से० श्वेत सं० शंखतल वि० विमल सं० सदृश च० चारदंतवाला ह० हस्तिरत्न-पे दु० चढकर स० शतद्वार नगरकी म० मध्यमें अ० वारंवार अ० आवे प० जावे त० तब स० शतद्वार

सूत्र

देवाणुप्पिया अम्हं महापउमस्सरन्नो दोदेवा महिड्ढिया जाव महेसक्खा सेणाकंमं कारिं-
ति तं० पुन्नभद्देय माणिभद्देय तं होउ णं अम्हं देवाणुप्पिया महापउमस्सरन्नो दुच्चेवि
नामधिज्जे देवसेणे । तएणं तस्स महापउमस्सरन्नो दुच्चेवि नामधिज्जे भविस्सइ देवसेणे
त्ति ॥ तएणं तस्स देवसेणस्स रण्णो अन्नया कयाइ सेयसंखतलविमलसंनिकासे

भावार्थ

दो देव सेवकका कार्य करते हैं; इसलिये महापद्म राजाका अपर नाम देवसेन कहेंगे. एकदा समय में श्री देवसेन राजा को श्वेत शंख जैसा निर्मल चार दांतवाला हस्तीरत्न उत्पन्न होवेगा, और उसपर स्वारी कर के शतद्वार नगर में वारंवार आते जाते रहेंगे; उस समय उस नगर में राज राजेश्वर यावत् शेठ सेनापति ऐसा वार्तालाप करेंगे कि हमारे देवसेन राजा को श्वेत शंख समान निर्मल चार दांतवाला हस्ती

शब्दार्थ

नगरमें व० बहुत ई० राजेश्वर त० तलवर जा० यावत् अ० अन्योन्य स० बोलेंगे व० कहेंगे दे० देवानुप्रिय अ० हमारे दे० देवसेन राजा को से० श्वेत सं० शंखतल वि० विमल स० सदृश च० चार दंतवाला ह० हस्तिरत्न स० उत्पन्न हुवा हो० होवो अ० हमारा दे० देवसेनराजा का त० तीसरा ना० नाम वि० विमलवाहन त० तब दे० देवसेन र० राजा का त० तीसरा ना० नाम भ० होगा वि० विमलवाहन त०

सूत्र

चउदंते हत्थिरयणे समुप्पज्जिहिंति । तएणं से देवसेणे राया तं सेयसंखतलविमल संनिकासं चउदंतं हत्थिरयणं दुरूढे समाणे सयदुवारं नगरं मज्झंमज्झेणं अभिक्खणं २ अइज्जाहि पणिज्जाहिय । तएणं सयदुवारे नगरे बहवे ईसरतलवर जाव अन्नमन्नं सद्दाविहिंति एवं वइस्संति, जम्हाणं देवाणुप्पिया अम्हं देवसेणस्स रण्णो सेतसंखतलविमल सन्निकासे चउदंते हत्थिरयणे समुप्पन्नेय, होट णं अम्हंदेवाणुप्पिया देवसेणस्सरण्णो तच्चेवि नामधिज्जे विमलवाहणे, । तएणं तस्स देवसेणस्स रण्णो तच्चे नाम-

भावार्थ

प्राप्त हुआ है इसलिये श्री देवसेन राजाका तीसरा नाम विमलवाहन होगा. अब विमलवाहन राजा तीस वर्ष पर्यंत गृहस्थ वास में रहेंगे और मातापिता देवलोक गये पीछे बडे पुरुषों की अनुज्ञा लेकर शरदऋतु में स्वयं संबुद्ध बनेंगे अर्थात् मोक्ष मार्ग में प्रवर्तेंगे. उस समय लोकान्तिक देव जीताचार अनुसार इष्ट, कान्त, प्रिय, मनोहर, मनोज्ञ, उदार, कल्याणकारी, निरुपद्रव, धन्यकारी व मंगलकारी वचनों से

शब्दार्थ

तव वि० विमल वाहन राजा ती० तीस वा० वर्ष अ० अगार मध्ये व० रहकर अ० मातापिता दे० देव-लोकग०गयेबाद गु०बडेसे अ०आज्ञालेकर उ० ऋतु स०शरदमें सं०संबुद्धअ०अनुत्तर मो०मोक्षमार्ग में लो०लो-कान्तिक जी० जीत क० मर्यादा से ता० उस इ० इष्ट कं० कांत पि० प्रिय म० मनोज्ञ म० मनाम ओ० उदार क० कल्याणकारी ध० धन्यकारी सि० सुखकारी मं० मंगलकारी स० सश्रीक व० वचन से अ० अभिनंदते अ० स्तवते सं० संबोधन से सं० संबोधे सु० सुभूमिभाग उ० उद्यान में ए० एक दे० देवदूष्य

सूत्र

धिज्जे भविस्सइ विमलवाहणे ॥ तएणं से विमलवाहणे राया तीसंवासाइं अगार वासम-ज्झे वसित्ता अम्मापीईहिं देवत्तगएहिं गुरुमहत्तरेहिं अब्भणुन्नाए समाणे उदुंमि सर-ए संबुद्धे अणुत्तरे मोक्खमग्गे, पुणरवि लोगंतिए जीयकप्पिएहिं देवेहिं ताहिं इट्ठाहिं कंताहिं पियाहिं मणुन्नाहिं मणामाहिं ओरालाहिं कल्लाणाहिं धन्नाहिं सिवाहिं मं-गल्लाहिं सस्सिरीआहिं वग्गूहिं अभिणंदिज्जमाणे अभिथुवमाणेय संबोहणाहिं संबोहिए ।

भावार्थ

प्रशंसते, स्तवन करते, संबोधते बाहिर सुभूमिभाग उद्यान में एक देवदूष्य वस्त्र देंगे. उसे लेकर लोच कर के गृहवासपनेका त्याग कर के दीक्षित होवेंगे. जिस समय दीक्षा ग्रहण करेंगे उस समय से वे ऐसा अभिग्रह धारण करेंगे कि देव मनुष्य व तिर्यंचसे जो कोई उपसर्ग परीषह उत्पन्न होवेंगे वे सब सम्यक् प्रकार से सहन करुंगा यावत् आहियासूंगा. तत्पश्चात् भगवंत ईर्यासमित, भाषासमिति, यावत् गुप्त ब्रह्मचारी,

शब्दार्थ

आ० लेकर मुं० मुंडहोकर अ० अगार से अ० अनगार को प० प्रव्रजित होवेंगे से० वह भ० भगवंत जं० जिस दि० दिवस मुं०मुंड भ०होवे जा०यावत् प०प्रव्रजित होंगे तं०उस दिन से अ०यह ए०ऐसा अ० अभिग्रह अ०ग्रहण करेंगे जे०जो के०कोई उ०उपसर्ग उ०उपजते हैं ते०वे स०सब सं०सम्यक् स०सहन करेंगे ख०खमेंगे ति०तितिक्षा करेंगे अ०अहियासेंगे त०तब भ०भगवान् ई०ईर्यासमिति भा०भाषा समिति जा०यावत् गु० गुप्त बं० ब्रह्मचारी अ० मायारहित अ० कांचन रहित छि० छिन्न गं० ग्रन्थ नि० निरूपलेप कं० कांस्य

सूत्र

सुभूमिभागे उज्जाणे एगंदेवदूसमादाय मुंडेभवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वयाही। सेणं भगवं जंचेव दिवसं मुंडे भवित्ता जाव पव्वयाही तंचेवदिवसं अयमेयारूवं अभिग्गहं अभिगिण्हिति जेकेइ उवसग्गा उप्पज्जंति तं० दिव्वावा माणुस्सावा तिरिक्ख जोणियावा ते सव्वे सम्मंसहेज्जा, खमेज्जा, तितिक्खेज्जा, अहियासेज्जा, ततेणं भगवं अणगारे भविस्सइ ईरियासमिए, भासासमिए, एसणासमिए, आयाणभंडमत्तनिक्खे-

भावार्थ

ममत्वभाव रहित, अकिंचन, मोहरूप ग्रन्थि छेदनेवाले, निरुपलेपी, कांस्य पात्र समान वगैरह जैसे आचारांग सूत्र में भगवन्त महावीर स्वामीका भावना में अधिकार कहा है वैसे ही यहां कहना. अब गाथा से भगवन्त के गुणोंका वर्णन करते हैं १ कांस्य के पात्र जैसे निरुपलेप २ शंख जैसे निर्मल ३ जीव जैसे अप्रतिबंध ४ आकाश जैसे निरावलम्ब ५ वायु जैसे अप्रतिहत ६ शरदऋतुके पानी जैसे निर्मल, ७ कमलपत्रसमान

शब्दार्थ

के पात्र मु० मुक्त तो० पानी ज० जैसे भा० भावना में जा० यावत् सु० सुहुत हु० हुताशन ते० तेजसे ज० ज्वलन्त कं० कांक्ष सं० शंख जी० जीव ग० गगन वा० वायु सा० शरद के स० सलिल पु० पुष्कर प० पत्र कु० कूर्म वि० विहग ख० खड्ग भा० भारंड कुं० कुंजर व० वृषभ सी० सिंह न० पर्वत सा० सागर अ० अक्षोभ चं० चंद्र सू० सूर्य क० कनक व० वसुंधरा सु० सुहुत हु० हुताशन न० नहीं है भ० भा[illegible] को क० कहां से प० प्रतिबंध भ० होवे से० वह प० प्रतिबंध च० चार प्रकार का अं० अंडज पो० पोतज उ० अवग्रह प० अग्रहीत जं० जो २ दि० दिशा में इ० इच्छते हैं तं० उस २ दि० दिशामें अ

सूत्र

वणा समिए, उच्चार पासवण खेलजल्लसंघयणपरिट्ठावणिया समिए, मणगुत्ते, वयगुत्ते, कायगुत्ते, गुत्तिंदिए, गुत्तबंभयारी, अममे, अकिंचणे, छिन्नगंथे, निरूवलेवे, कंस पाईव मुक्कतोए, जहा भावणाए, जाव सुहुयहुयासणे तिवा तेयसाजलते; कंसे, संखे, जीवे, गगणे, वायेय, सारए सलिले, पुक्खरपत्ते, कुंमे, विहगे, खग्गेय, भारंडे, कुंजरे, वसहे, सीहे, नगराया

भावार्थ

निर्लेपी ८ कूर्म जैसे गुप्तेन्द्रिय ९ पक्षीकी तरह अप्रतिबद्धी १० गेंडेके शृंगकी तरह एकाकी ११ भारंड पक्षीकी तरह अप्रमादी १२ हस्तिकी तरह शूर १३ वृषभ जैसे धीर १४ सिंहकी तरह साहसिक १५ मेरु जैसे निश्चल १६ सागर समानअक्षुब्ध १७ चंद्र जैसे शीतल १८ सूर्यकी समान तेजस्वी १९ सुवर्ण की समान

शब्दार्थ

अप्रतिबद्ध सु० शुचिभूत ल० लघुभूत अनुपग्रन्थ सं० संयम से त० तपसे अ० आत्मा को भा० भावता वि० विचरेंगे भ० भगवन्त को अ० अनुत्तर ना० ज्ञान अ० अनुत्तर दं० दर्शन अ० अनुत्तर च० चारित्र वि० विहार से अ० ऋजुता मा० मृदुता ला० लघुता खं० क्षमा मु० मुक्ति गु० गुप्ति स० सत्य सं० संयम त० तपगुण सु० सुचारित्र सो० शौच वि० विज्ञान फ० फल प० परिनिर्वाण म० मार्ग में भा० भावते झा० ध्यानान्तर में व० वर्तते को अ० अनंत अनुत्तर नि० निर्व्याघात जा० यावत् के०

सूत्र

चेव, सागरमक्खोभे, चंदे, सूरे, कणगे, वसुंधराचेव, सुहुयहुयासणे ॥ नत्थिणं तस्स भगवंतस्स कत्थइ पडिबंधे भवइ, सेयपडिबंधे चउव्विहे प० तं० अंडएइवा, पोयएइवा, उग्गहेइवा; पग्गहिएइवा, जंणं जंणं दिसं इच्छइ तंणंतंणं दिसं अपडिबंद्धे सुइभूए, लघुभूए अणुप्पगंथे, संजमेणंतवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरिस्सइ ।तस्सणं भगवंतस्स

भावार्थ

कीट रहित २० पृथ्वीकी तरह क्षमाभावी २१ हुताशन की तरह देदीप्यमान. अण्डज, पोतज, अवग्रह और प्रग्रहीत इन चार प्रकारके प्रतिबंध में से किसी प्रकारका प्रतिबंध भगवंत को नहीं है. जिस दिशामें जानेकी इच्छाकरे उस दिशामें ममत्व रहित बनकर संयम व तपसे आत्मा के भाव में रहे हुवे विचरते हैं. इस तरह विहार करते बारह वर्ष व्यतीत होकर तेरहवे वर्षके तेरहवे पक्षके अन्तर में सर्वोत्तम प्रधानज्ञान,

शब्दार्थ

केवल ज्ञान दर्शन स० उत्पन्न होगा त० तब से० वह भ० भगवान् अ० अरिहंत जि० जिन भ० होंगे के० केवली स० सर्वज्ञ स० सर्वदर्शी स० देवसहित म० मनुष्य अ० असुर लो० लोक की प० पर्याय जा० जाने पा० देखे स० सर्व लोक के स० सब जी० जीव की आ० आगति ग० गति ठि० स्थिति च० चवन उ० उपपात त० तर्क म० मन मा० मानसीक भु० खाया क० कीया प० सेवा हुवा आ० प्रकट कर्म र० रहस्य कर्म अ० अरिहंत अ० प्रगट तं० उस का० काल को प० मनके व० वचन के का० काया

सूत्र

अणुत्तरेणं णाणेणं, अणुत्तरेणं दंसणेणं, अणुत्तरेणं चरित्तेणं एवं आलएणं विहारेणं अजवे मद्दवे लाघवे खंती मुत्ती सच्च संयमतवगुण सुचरिय सोअवियफल परिनिव्वाणमग्गेणं अप्पाणं भावमाणस्स झाणंतरियाए वट्टमाणस्स अणंते अणुत्तरे निव्वाघाए जाव केवलवरनाणदंसणे समप्पज्जिहिंति । तएणंसे भगवं अरहा जिणे भविस्सइ, केवली सव्वन्न सव्वदरिसी सदेवमणुयासुरस्स

भावार्थ

दर्शन, चारित्रसे वसति में विहार करते क्षान्त, मुक्त, गुप्ति, सत्य व तपादिगुण को अच्छी तरहसे सेवते व शौचादिकका फल जो मोक्षमार्ग उस से आत्मा को भावते, शुक्ल ध्यान के तीसरे पाये पर पहुंचते, अनंत अनुत्तर निर्व्याघात केवल ज्ञान दर्शन उत्पन्न होगा. तब वे सर्वदर्शी बन हुव अरिहंत केवली, देवता, मनुष्य, व असुर लोक की पर्याय को जानते सबलोक के जीवों की गति, आगति, स्थिति, चवन,

शब्दार्थ

क जो० योग में व० वर्तता स० सर्व लोक के स० सब जीव के स० सर्व भाव को जा० जानते पा० देखते वि० विचरते हैं त० तब से० वह भ० भगवानते० उस के० केवल ज्ञान के० केवल दर्शन से० देवसहित म० मनुष्य अ० असुर लोक को अ० जानकर स० श्रमण नि० निर्ग्रंथ पं० पांच म० महाव्रत को स० भावना सहित छ० छजीव निकाय ध० धर्म दे० देतेहुवे वि० विचरेंगे अ० आर्य म० मैंने स० श्रमण नि० निर्ग्रंथको ए० एक आ० आरंभ स्थान प० प्ररुपा म० महापद्म अ० अरिहंत स० श्रमण नि० निर्ग्रंथ को ए० एक आ० आरंभ स्थान प० प्ररूपेंगे अ० आर्य स० श्रमण नि० निर्ग्रंथ को० दु० दोप्रकार का बं० बधन पे०

सूत्र

लोगस्स परियागं जाणइ, पासइ सव्वलोए सव्वजीवाणं आगइगइट्ठियं चवणं उववायं तक्कं मणोमाणसियं भुत्तं कडं परिसेवियं, आवीकम्मं, रहोकम्मं अरहा अरहस्सभागी तं तंकालं मणस वयस काइए जोगे वट्टमाणाणं सव्वलोए सव्वजीवाणं सव्वभावे जाणमाणे पासमाणे विहरइ,। तएणं से भगवं तेणं अणुत्तरेणं केवलवरनाणंदसणेणं सदेवमणुया सुरलोगं आभिसमिच्चा समणाणं निग्गंथाणं पंचमहव्वइयाइं सभावणाइं छच्चजीवनिकाए धम्मं देसमाणे विहरिस्सइ ॥

भावार्थ

उपपात, तर्क, मनोगत भाव, खाया हुवा, कियाहुवा, सेवा हुवा, प्रगट कर्म, गुप्तकर्म, प्रत्येक समय के मन वचन व काया के प्रवर्तते हुवे जोग सबलोक में सबभाव को जानते व देखते हुवे विचरेंगे. फीर वे भगवंत अनुत्तर केवल ज्ञान दर्शन से देव, मनुष्य व असुरों की परिषदाको जानकर श्रमण निर्ग्रंथ

शब्दार्थ

रागबंधन दो० द्वेषबंधन म० महापद्म अ० अरिहंत स० श्रमण नि० निर्ग्रंथ को दु० दोभकार का बं० बधन प० प्ररूपेंगे पे० रागबंधन दो० द्वेषबंधन अ० आर्य स० श्रमण नि० निर्ग्रंथ को त० तीनदंड म० मनदंड म० महापद्म स० श्रमण नि० निर्ग्रंथ को त० तीन दंड प० प्ररूपेंगे म० मनदंड ए० इस अ० अभिलाप से च० चार कषाय को० क्रोध कषाय पं० पांच कामगुण स० शब्द छ० छजीवनिकाय पु० पृथ्वी काय जा० यावत् त० त्रसकाय ए० इस अ० अभिलाप से स० सात भ० भयस्थान अ० आठ

सूत्र

से जहा नामए अज्जो मए समणाणं णिग्गंथाणं एगे आरंभट्ठाणे प० एवामेव महापउमेवि अरहा समणाणं निग्गंथाणं एगं आरंभट्ठाणं पन्नवेहिंति; सेजहानामए अज्जो मए समणाणं णिग्गंथाणं दुविहे बंधणे प० तं० पेज्जबंधणेय, दोसबंधणेय एवामेव महापउमेवि अरहा समणाणं णिग्गंथाणं दुविहं बंधणं पन्नवेहिंति,तं० पेज्जबंधणंच दोसबंधणं च। सेजहा नामए अज्जो मए समणाणं णिग्गंथाणं तओदंडा प० तं० मणदंडे वयदंडे का-

भावार्थ

को पांच महाव्रत, पचीस भावना व छजीव निकाय रूप धर्मकी देशना करते हुवे विचरेंगे. अहो आर्यो! जैसे मैंने श्रमण निर्ग्रंथ को आरंभका स्थानक कहा वैसे ही श्री महापद्म अरिहंत श्रमण निर्ग्रंथ को कहेंगे. जैसे मैंने रागबंधन नामक व द्वेषबंधन नामक दोबंधन कहे वैसे ही पद्मनाभ अरिहंत भी दो प्रकार के बंधन कहेंगे. जैसे मैंने मनदंडादि तीन दंड, क्रोधादि चार कषाय, काम के पांच गुण, छजीव निकाय, सात

शब्दार्थ

म० मदस्थान ण० नव बं० ब्रह्मचर्य गुप्ति द० दश प्रकार का स० श्रमण धर्म जा० यावत् ते० तेतीस अ० असातना अ० आर्य म० मैंने स० श्रमण नि० निर्ग्रंथ न० नग्नभाव मुं० मुंडभाव अ० स्नान रहित अ० दातन रहित अ० छत्ररहित अ० वाहन रहित भू० भूमि शैय्या फ० पाट शैय्या क० काष्ट शैय्या के० केश लोच बं० ब्रह्मचर्य प० परगृह प्रवेश ल० लब्ध अ० अलब्ध वि० वृत्ति प० प्ररूपी म० महापद्म अ० अरिहंत स० श्रमण नि० निर्ग्रंथ को ण० नग्नभाव जा० यावत् ल० लब्ध अ० अलब्ध वि० वृत्ति प० प्ररूपेंगे अ० आर्य म० मैंने स० श्रमण नि० निर्ग्रंथ आ० आधाक

सूत्र

यदंडे, एवामेव महापउमेवि समणाणं निग्गंथाणं तओदंडे पण्णवेहिंति तं० मणोदंडं ३। सेजहा नामए एएणं अभिलावेणं चत्तारि कसाया प० तं० कोह कसाए ४। पंचकामगुणा प० तं० सद्दा ५। छजीवनिकाया प० तं० पुढविकाइया जाव तसकाइया, एवामेव जाव तसकाइया। सेजहा नामए एएणं अभिलावेणं सत्तभयट्ठाणा प० एवामेव महापउमेवि अरहा समणाणं निग्गंथाणं सत्तभयट्ठाणे पन्नवेहिंति। एवं अट्ठमयट्ठाणे, णव बंभचेरगुत्तीओ, दसविहे समणधम्मे एवं जाव तेत्तीसमासातणाओत्ति। सेजहानामए अज्जोमए समणाणं निग्गंथाणं नग्गभावे, मुंडभावे, अण्हाणए, अदंतवणे, अच्छत्तए, अणुवाहणए

भावार्थ

भयके स्थानक आठ मदस्थानक, नव ब्रह्मचर्य की गुप्ति; दशप्रकारका यतिधर्म यावत् तेतीस असातना कही वैसे ही श्री महापद्म स्वामी कहेंगे. और भी श्रमण निर्ग्रन्थको नग्नभाव मुंडभाव, स्नान नहीं करना, छत्र नहीं

शब्दार्थ

कर्मीक उ० उद्देशिक मि० मिश्रजात अ० साधु केलिये पू० पूतिकर्म की० कीया हुवा पा० मांगकर लाया अ० लगाहुवा अ० एक कोदेवे अ० सामालाया हुवा कं० अटवीका भक्त पा० दु० दुर्भिक्ष भक्त ग० ग्लान भक्त व० बद्दलभक्त पा० अतिथि भक्त मू० मूल भोजन कं० कंद भोजन फ० फल भोजन बी० बीज भोजन ह० हरित भोजन प० प्रतिषेधकिया म० महापद्म अ० अरिहंत स० श्रमण नि० निर्ग्रंथ आ० आधाकर्मी जा० यावत् ह० हरित भोजन प० प्रतिसेधेंगे अ० आर्य म० मैंने स० श्रमणको पं० पांच महाव्रत स० प्रतिक्रमण अ०

सूत्र

भूमिसेज्जा, फलगसेज्जा, कट्ठसेज्जा, केसलोए, बंभचेरवासे परघरप्पवेसे लद्धावलद्ध वित्तीओजाव पण्णत्ताओ एवामेव महापउमेवि अरहा समणाणं णिग्गंथाणं नग्गभावे जाव लद्धावलद्ध वित्तीओ जाव पन्नवेहिंत्ति । से जहा णामए अज्जो मए समणाणं निग्गंथाणं आहाकम्मिएइवा, उद्देसिएइवा, मीसजाएइवा, अज्झोयरएइवा, पूइए कीए पामिच्चे अच्छिज्जे अणिस्से, अभिहडेइवा, कंतारभत्तेइवा दुब्भिक्खभत्तेइवा, गिलाणभत्तेइवा बद्दरियभत्तेइवा, पाहुणगभत्तेइवा, मूलभोयणेइवा, कंदभोयणेइवा, फलभोयणेइवा, बीयभोयणेइवा,

भावार्थ

रखना, पगरखी नहीं पहिनना, भूमिशैय्या , केशलोचन, ब्रह्मचर्यपालना, अन्य के गृह में भिक्षार्थजाना, प्राप्त अप्राप्त आहार की वृत्ति वगैरह जैसे मैंने कहा है वैसे ही महापद्म अरिहंत भी कहेंगे. औरभी श्रमण निर्ग्रन्थ को आधाकर्मी, उद्देसिक-साधु आये जान ज्यादा बनाया हुवा, पूतिकर्म वाला, मोललीया हुवा,

शब्दार्थ

अचेलक धर्म प०प्ररूपा म०महापद्म अ०अरिहंत स० श्रमण नि०निर्ग्रंथको पं०पंचमहाव्रत जा०यावत् अ० अचेलक धर्म प० प्ररूपेंगे अ० आर्य पं० पांच अनुव्रत स० सात सि० शिक्षाव्रत दु० बारह प्रकार का सा० श्रावक धर्म म० महापद्म अ० अरिहंत पं० पांच अनुव्रत जा० यावत् सा० श्रावक धर्म प० प्ररूपेंगे अ० आर्य स० श्रमण को सि० शय्यान्तरपिंड रा० राजपिंड प० प्रतिषेधकीया म० महापद्म अ० अरिहंत सि०

सूत्र

हरियभोयणेइवा पडिसिद्धे; एवामेव महापउमेवि अरहा समणाणं णिग्गंथाणं आहाकम्मियंवा जाव हरियभोयणंवा पडिसेहिस्सइ । से जहा नामए अज्जो मए समणाणं पंचमहव्वइए सपडिक्कमणे अचेलए धम्मे प० एवामेव महापउमेवि अरहा समणाणं निग्गंथाणं पंचमहव्वइयं जाव अचेलगंधम्मं पन्नविस्सइ ॥ से जहा नामए अज्जोमए पंचाणुव्वइए सत्तसिक्खावइए दुवालसविहे सावगधम्मे प० एवामेव महापउमेवि अरहा पंचाणुव्वइयं जाव सावगधम्मं पण्णविस्सति । से जहानामए अज्जो मए समणाणं सिज्जा-

भावार्थ

उछीना लीयाहुवा, छीनकर लीयाहुवा, मालिक की रजा विना लिया हुवा, सन्मुख लाकर दिया हुवा अटवि में देनेका करार किया हुवा, दुर्भिक्ष के लिये किया, रोगी के लिये किया, बदल के लिये किया हुवा, प्राहुने को जिमाने के लिये किया हुवा और उनोंने नहीं भोगवा हुवा, सचित्त मूलका भोजन, सचित्त कंद, सचित्त फल, बीज, हरिकाय वगैरह जैसे मैंने निषेध किये हैं वैसे ही श्री महापद्म तीर्थंकर

शब्दार्थ

शय्यान्तरपिंड रा० राजपिंड प० प्रतिषेध करेंगे अ० आर्य म०मुझे न०नवगण इ०इग्यारह गणधर म० महापद्म अ० अरिहंत को न० नवगण इ० इग्यारह गणधर म० होंगे अ० आर्य अ० मैं ती० तीसवर्ष अ० अगार में व० रहकर मुं० मुंडहुवा जा० यावत् प० प्रव्रजित हुवा दु० द्वादश संवत्सर ते० तेरह प० पक्ष छ० छद्मस्थ प० पर्याय पा० पालकर ते० तेरहवे प० पक्षमें उ० ऊने ती० तीसवर्ष के० केवली प० पर्याय पा०

सूत्र

यरपिंडेइवा, रायपिंडेइवा पडिसिद्धे; एवामेव महापउमेवि अरहा समणाणं सिज्जाय-रपिंडेइवा रायपिंडेइवा पडिसेहिंति । सेजहानामए अज्जोमए नवगणा इक्कारस गण हरा, एवामेव महापउमस्सवि अरहओ नवगणा इक्कारसगणहरा भविस्संति । से जहा नामएअज्जो अहं तीसं वासाइं अगारवासमज्झेवसित्ता मुंडेभवित्ता जाव पव्वइए दु-वालस संवच्छराइं तेरसपक्खा छउमत्थ परियागं पाउणित्ता तेरसहिं पक्खेहिं ऊणगाइं तीसंवासाइं केवलिपरियागं पाउणित्ता बायालीसं संवच्छराइं सामन्नपरियागं

भावार्थ

उक्त बातोंका निषेध करेंगे. अहो आर्यो ! जैसे मैंने श्रमण निर्ग्रंथ को प्रतिक्रमण सहित पंचमहाव्रत रूप अचेलक धर्म, पांच अणुव्रत, सात शिक्षाव्रत रूप बारह प्रकारका श्रावक धर्म कहा वैसे ही श्री पद्मनाभ तीर्थंकर करेंगे. अहो आर्यो ! जैसे मैंने शय्यांतरपिंड व राजपिंडका श्रमण निर्ग्रंथो को प्रतिषेध किया वैसे ही श्री महापद्म अरिहंत भी करेंगे. जैसे मेरे नव गण और अग्यारह गणधर हैं वैसे ही महापद्म

शब्दार्थ पालकर वा० बीयालीस सं० संवत्सर सा० सामान्य पर्याय पा० पालकर वा० बहोत्तर वा० वर्ष स० सर्व आयुष्य पा० पालकर सि० सिद्ध होऊंगा जा० यावत् स० सर्व दुःख का अं० अंतकरूंगा ए० ऐसेही म० महापद्म अ० अरिहंत सी० शील स० सरिखाचार अ० अरिहंत ति० तीर्थंकर म० महावीर का सी० सील स० सरिखाचार हो० होगा अ० अरिहंत म० महापद्म के ॥ ५० ॥ न० नवनक्षत्र चं० चंद्रकी

सूत्र

पाउणित्ता बावत्तरिवासाइं सव्वाउयं पालइत्ता सिज्झिस्सं जाव सव्वदुक्खाणं अंतंकरेस्सं, एवामेव महापउमेवि अरहा तीसंवासाइं अगारवासमज्झेवसित्ता जाव पव्वहित्ति, दुवालससंवच्छराइं बावत्तरिवासाइं सव्व उयं पालइत्ता सिज्झिहित्ति जाव सव्वदुक्खाण मंतंकाहित्ति (गाथा)जस्सील समायारो अरहा तित्थंकरो ॥ महावीरो, तस्सील समायारो, होइउ अरहामहापउमे (१) ॥ ५० ॥ नवनक्खत्ता चंदस्स पच्छंभागा

भावार्थ अरिहंत को नवगच्छ व अग्यारह गणधर होवेंगे. अहो आर्यो! जैसे मैं तीस वर्ष पर्यंत गृहस्थावास में रहकर मुंड हुआ यावत् दीक्षा अंगीकार की, बारहवर्ष और तेरह पक्षतक छद्मस्थ पर्याय, तीसवर्षतक केवल पर्याय पालकर बीयालीस वर्षपर्यंत चारित्र की पर्याय पालते, सब मीलकर बहोत्तर वर्षका आयुष्य पालकर सिद्ध होऊंगा यावत् सब दुःखका अंत करूंगा वैसे ही महापद्म तीसवर्ष पर्यंत गृहवास में यावत् दीक्षालेकर बहोत्तर वर्ष में सिद्ध होवेंगे और जो शील आचार महावीर भगवंतका है सोही शील आचार श्री महापद्म स्वामी का होगा ॥ ५० ॥ नव नक्षत्र चंद्रमा के पश्चिम भाग में कहे हैं १ अभिजित २

शब्दार्थ

प० पार्श्वमम अ० अभिजित स० श्रवण ध० धनिष्ठा रे० रेवती अ० अश्विनी मि० मृगसर पु० पुष्य ह० हस्त चि० चित्रा ॥ ५१ ॥ आ० आणत पा० प्राणत आ० आरण अ० अच्युत क० देवलोक के वि० विमान न० नवयोजन स० सत उ० ऊंचे उ० ऊंचपने ॥ ५२ ॥ वि० विमलवाहन कु० कुलकर न० नव ध० धनुष्य उ० ऊंचे उ० ऊंचपने हो० थे ॥ ५३ ॥ उ० ऋषभदेव अ० अरिहंत को० कौशली इ० इस उ० अवसर्पिणी में न० नव सा० सागरोपम को० क्रोडा क्रोडी वी० व्यतीतहुवे ति० तीर्थ प० प्रवर्त्तायो

सूत्र

प० तं० अभिई सवण धणिट्ठाय, रेवई अस्सिणी मिगासिरं पूसो हत्थो चित्ताय तहा पच्छं भागा नव भवंति (१) ॥ ५१ ॥ आणय पाणय आरण अच्चुएसु कप्पेसु विमाणा नवजोयण सयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं प० ॥ ५२ ॥ विमलवाहणेणं कुलगरे नवधणुसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था ॥५३॥ उसभेणं अरहा कोसलिएणं इमीसे उस्सप्पिणीए नवहिं सागरोवम कोडाकोडीहिं वीइक्कंताहिं तित्थे पवत्तिए ॥ ५४ ॥

भावार्थ

श्रवण ३ धनिष्ठा ४ रेवती ५ अश्विनी ६ मृगसर ७ पुष्य ८ हस्त ९ चित्रा ॥ ५१ ॥ आणत, प्राणत, आरण और अच्युत देवलोक में नवसो योजन के ऊंचे विमान कहे हैं ॥ ५२ ॥ विमलवाहन कुलकर की नवसो धनुष्य की अवगाहना थी ॥ ५३ ॥ इस अवसर्पिणी के नव कोडा कोड सागर व्यतीत हुवे पीछे श्री कौशली ऋषभ देव स्वामीने तीर्थ प्रवर्ताया ॥ ५४ ॥ घनदंत, लष्टदंत गूढदंत शुद्धदंत ये चारों अंतरद्वीप

शब्दार्थ ॥ ५४ ॥ घ० घणदंत ल० लट्ठदंत गू० गूढदंत सु० शुद्धदंत द्वीप न० नव जो० शतयोजन आ० लंबे वि० चौडे ॥ ५५ ॥ सु० शुक्र म० महाग्रहको न० नवविथि ह० हय ग० गज ना० नाग व० वृषभ गो० गौ उ० उरग अ० अज मि० मृग वे० वैश्वानर ॥ ५६ ॥ न० नव प्रकार का नो० नोकषाय वे० वेदनीय कर्म इ० स्त्रीवेद पु० पुरुषदेव न० नपुंसकवेद हा० हास्य र० रति अ० अरति भ० भय सो० शोक दु० दुगंच्छा ॥ ५७ ॥ च० चतुरेन्द्रिय की न० नव कु० कुलकोडी जो० योनि प० प्रमुख स०

सूत्र घणदंत लट्ठदंत गूढदंत सुद्धदंत दीवाणंदीवा णवजोयणसयाइं आयाम विक्खंभेणं प० ॥५५॥ सुक्कस्सणं महग्गहस्स नववीहीओ पण्णत्ताओ तंजहा हयवीही, गयवीही नागवीही, वसभवीही, गोवीही, उरगवीही, अयवीही, मियवीही, वेसाणवीही ॥ ५६ ॥ नवविहे नोकसाय वेयाणिजेकम्मे प० तं० इत्थीवेए, पुरिसवेए, नपुंसकवेए, हासे, रई, अरई, भए; सोगे, दुगंछा. ॥ ५७ ॥चउरिंदियाणं नव जाइकुल-

भावार्थ नवसो योजन के लम्बे व चौडे हैं ॥ ५५ ॥ शुक्र नामक महाग्रह की नव विथि कहीं १ अश्वविथि २ गज विथि ३ नागविथि ४ वृषभविथि ५ गौविथि ६ उरगविथि ७ अजविथि ८ मृगविथि और ९ वैश्वानरविथि ॥ ५६ ॥ नो कषाय मोहनीय कर्म के नवभेद कहे हैं १ स्त्रीवेद २ पुरुषवेद ३ नपुंसक वेद ४ हास्य ५

शब्दार्थ

शतसहस्स ॥ ४८ ॥ भु० भुजग प० परिसर्प थ० स्थलचर प० पंचेन्द्रिय ति० तिर्यंच योनि की न० नवजाति कु० कुलकोडी जो० योनि प० प्रमुख स० शतसहस्स ॥ ५९ ॥ जी० जीवने न० नवस्थान निवर्तित पो० पुद्गल पा० पापकर्म पने चि० इकठकीये चि० इकठे करता है वि० इकठा करेगा पु० पृथ्वीकाय नि० निवर्तित जा० यावत् पंचेन्द्रिय नि० निवर्तित ए० ऐसे चि० चिण उ० उपचिन जा० यावत् नि० निर्जरा ॥ ६० ॥ न० नवप्रदेशी खं० स्कंध अ० अनंत ॥ ६१ ॥ न० नवप्रदेशी अवगाहा पु० पुद्गल अ०

सूत्र

कोडि जोणि पमुह सयसहस्सा प० ॥ ५८ ॥ भुयग परिसप्प थलयर पंचिंदिय तिरिक्ख जोणियाणं नवजाइ कुलकोडि जोणि पमुह सयसहस्सा प० ॥ ५९ ॥ जीवाणं नवट्ठाण निव्वत्तिए पोग्गले पावकम्मत्ताए चिणिंसुवा चिणंतिवा, चिणिस्संतिवा, ॥ पुढविकाइय निव्वत्तिए जाव पंचिंदिय निव्वत्तिए। एवंचिण उवचिण जाव निज्जराचेव ॥ ६० ॥ नवपएसियाखंधा अणंता पण्णत्ता ॥६१॥ नवपदेसोगाढा

भावार्थ

रति ६ अरति ६ भय ८ शोक २ दुगंच्छा ॥५७॥ चतुरेन्द्रिय जाति की नव लाख कुल कोडी कही ॥५८॥ भूजपर सर्प स्थलचर तिर्यंच पंचेन्द्रिय की नव लक्ष कुल कोडी कही ॥५९॥ जीवने नव स्थान निवर्तित पुद्गल पापकर्म पने संचित किये, करते हैं और करेंगे पृथ्वीकाय निवर्तित यावत् त्रसकाय निवर्तित ऐसेही चिन उपचिन यावत निर्जरातक जानना ॥ ६० ॥ नव प्रदेशी स्कंध अनंत कहे ॥ ६१ ॥ नवप्रदेश अव-

शब्दार्थ

अनंत ॥ ६२ ॥ न० नव गु० गुण लु० रूक्ष पुद्गल अ० अनंते प० प्ररूपे ॥ ६३ ॥ * *

सूत्र

पुग्गला अणंता पण्णत्ता ॥ ६२ ॥ नवगुण लुक्खा पुग्गला अनंता पण्णत्ता ॥ ६३ ॥ इइ नवमट्ठाणं समत्तं * * * * * *

भावार्थ

गाहा पुद्गल अनंत ॥ ६२ ॥ नवगुणरुक्ष पुद्गलअनंत कहे ॥ ६३ ॥ यह नववा स्थानक समाप्त हुवा. अब आगे दशवा स्थानक कहते हैं. * * * *

॥ दशम स्थानकम् ॥

शब्दार्थ

द० दश प्रकार की लो० लोक स्थिति जी० जीव उ० मरकर त० तहां भु० वारंवार प० उपजते हैं ए० ऐसे ए० एक लो० लोक स्थिति ज० जो जी० जीव स० सदा पा० पापकर्म क० करता है ए० एक लो० लोकस्थिति ज० जो जीव स० सदा मो० मोहनीय पा० पापकर्म क० करता है ए० एक लो० लोकस्थिति ण० नहीं ए० यह भू० हुवा भ० होता है भ० होगा ज० जो जी० जीव अ० अजीव भ० होंगे अ० अजीव

सूत्र

दसविहा लोगट्ठिई पण्णत्ता तंजहा-जण्णं जीवा उद्दारइत्ता २ तत्थेव २ भुज्जो २ पच्चायंति एवं एगा लोगट्ठिई प० । जण्णं जीवाणं सयासमिते पावेकम्मे कज्जति एवंएगा लोग-ट्ठिई प० । जण्णं जीवाणं सयासमियं मोहणिज्जे पावेकम्मे कज्जइ एवं एगालोगट्ठिई प० ।

भावार्थ

दश प्रकारसे लोकस्थिति कही १ जो जीव मरकर वहांही उत्पन्न होते हैं सो एक लोकस्थिति २ जो जीव सदैव पापकर्म करता है सो दूसरी लोकस्थिति ३ जो जीव सदैव मोहनीय पापकर्म करते हैं ४ जीवका अजीव व अजीव का जीव हुवा नहीं है, होता नहीं है और होगा नहीं सो लोकस्थिति ५ ऐसाभी नहीं हुवा है नहीं होता है और होवेगाभी नहीं कि सब त्रसजीवोंका विच्छेद होगा और स्थावर रहजावेंगे

शब्दार्थ

जी० जीव भ० होंगे ए० एक लो० लोकस्थिति न० नहीं ए० एसा भू० हुवा त० त्रसप्राणी वु० विच्छेद-होंगे था० स्थावर प्राणी भ० रहेंगे था० स्थावरप्राणी वु० विच्छेद होंगे त० त्रसप्राणी भ० रहेंगे ए० एक लो० लोकस्थिति न० नहीं ए० ऐसा भू हुवा जं० जो लो० लोक अ० अलोक भ० होगा अ० अलोक लो० लोक भ० होगा ए० एक लो० लोकस्थिति न० नहीं ए० ऐसा भू० हुवा० जं० जो लो० लोक अ० अलोक में प० प्रवेशकरेगा अ० अलोक लो० लोकमें प० प्रवेशकरेगा ए० एक लो० लोक

सूत्र

णय एयं भूयंवा भव्वंवा भविस्सइवा जं जीवा अजीवा भविस्संति, अजीवा जीवा भविस्संति, एवं एगा लोगट्ठिई प० । णयएयं भूयंवा भव्वंवा भविस्सइवा जंतसा पाणा वुच्छिज्जिस्संति थावरापाणा भविस्संति, थावरापाणा वुच्छिज्जिस्संति तसा पाणा भविस्संति एवं एगा लोगट्ठिई प० । नय एयं भूयं ३ जं लोए अलोगे भविस्सइ, अलोए लोए भविस्सइ एवंएगालोगट्ठिई प० । न एयं भूयंवा ३ जं लोए अलोए पविस्सइ अलोएवा

भावार्थ

अथवा सब स्थावर का विच्छेद होगा और त्रसरहजायेंगे यह एक लोकस्थिति ६ ऐसा नहीं हुवा है, नहीं होता है और नहीं होगा कि लोकका अलोक बनजाय या अलोक का लोक बन जाय यह एक लोकस्थिति ७ ऐसा नहीं हुवा है, नहीं होता है और नहीं होवेगा कि लोक में अलोक जायगा या अलोक

शब्दार्थ

स्थिति जा० जहां २ लो० लोक ता० वहां २ जी० जीव जा० जहां २ जी० जीव ता० तहां २ लो० लोक ए० एक लो० लोकस्थिति जा० जहां २ जीवकी पु० पुद्गलकी ग० गतिपर्याय ता० तहां २ लो० लोक जा० जहां २ लो० लोक ता० तहां २ जी० जीवकी पु० पुद्गलकी ग० गतिपर्याय ए० एक लो० लोकस्थिति स० सर्व लो० लोकके अंदर अ० अबद्ध पा० पार्श्व पु० स्पृष्ट पु० पुद्गल लु० रुक्षपना क० करते हैं जे० जिससे जी० जीव पु० पुद्गल नो० नहीं० स० समर्थ है ब० बाहिर लो० लोकके ग०

सूत्र

लोए पविस्सइ एवं एगा लोगट्ठिई प० जाव जाव लोए तावताव जीवा जाव जाव जीवा ताव ताव लोए एवं एगालोगट्ठिई ॥ जाव जाव जीवाण य पुग्गलाण य गइपरियाए तावताव लोए जाव जाव लोए तावताव जीवाण य पुग्गलाण य, गइपरियाए एवं एगा लोगट्ठिई ॥ सव्वेसुविणं लोगंतेसु अबद्ध पासपुट्ठा पुग्गला लुक्खत्ताए कज्जंति जेणं जीवाय पुग्गलाय नोसंचायंति बाहिया लोगंतागमणत्ताए एवं एगालोगट्ठिई प० ॥ १ ॥

भावार्थ

में लोक जायगा. ८ जब लग लोक है वहांलग जीव है और जहांलग जीव है वहांलग लोक है ९ जहां लग जीव व पुद्गल की गति पर्याय है वहांलग लोक है और जहांलग लोक है वहांलग जीव पुद्गल की गति पर्याय है और १० लोकान्त में अबद्ध पार्श्वस्पृष्ट सब परस्पर स्पर्शाये हुवे पुद्गल रुक्षपना करेतहैं जिससे जीव व पुद्गल लोकसे बाहिर जाने को समर्थ नहीं है यह एक लोक स्थिति कही ॥ १ ॥ दश

शब्दार्थ

दानेको ॥ १ ॥ द० दशप्रकारका स० शब्द नी० नीहरिम पि० पिंड लु० रुक्ष भि० भिन्न ज० जर्जरित दी० दीर्घ र० ह्रस्व पु० पृथक् का० झीणा खि० घुघरी ॥ २ ॥ द० दश इं० इन्द्रियार्थ दे० देशसे ए० एक स० शब्द सु० सुने स० सर्वसे ए० एक स० शब्द सु० सुन दे० देशसे ए० एक रू० रूप पा० देखे स० सर्वसे ए० एक रू० रूप पा० देखे गंध र० रस फा० स्पर्श जा० यावत् स० सर्वसे ए० एक फा० स्पर्श प० वेदे द० दश इं० इन्द्रियार्थ प० वर्तमान दे० देशसे ए० एक स० शब्द सुनता

सूत्र

दसविहे सद्दे प० तं० नीहारि पिंडिमे लुक्खे भिन्ने जज्जरिएइय दीहे रहस्से पुहत्तेय, काकणी खिंखणिस्सरे(१)॥२॥दस इंदियत्था तीता प०तं० देसेणवि एगेसद्दाइं सुणिंसु, सव्वेणविएगे सद्दाइंसुणिंसु देसेणवि एगे रूवाइं पासिंसु,सव्वेणविएगे एगेरूवाइं पासिंसुएवं गंधाइं रसाइं फासाइं जाव सव्वेणवि एगे फासाइं पडिसंवेदिइंसु. दसइंदियत्था पडुप्पन्ना प०

भावार्थ

प्रकार का शब्द कहा है. १ निहारिय सो घंटा शब्द २ पिण्डका शब्द ३ ढक्का भेरी का रुक्ष शब्द ४ भिन्न शब्द ५ झालर का शब्द ६ दीर्घ शब्द ७ ह्रस्व शब्द ८ पृथक् शब्द सो बहुत वाद्यिंत्र एक स्थान बजनेपर भिन्न २ शब्द मालूम पडे ९ झीणा मधुर शब्द सो कोकिलाका १० कंकन की घुघरियों का शब्द ॥ २ ॥ इन्द्रियों के दश विषय कहे सो कहते हैं. १ देश में से एक शब्द सुने २ सर्व में से

है स० सर्वसे ए० एक स० शब्द सु० सुनता है ए० एसे जा० यावत् फा० स्पर्श द० दशइन्द्रियार्थ अ० अनागत दे० देशसे स० शब्द सु० सुनेगा स० सर्वसे ए० एक स० शब्द सु० सुनेगा ए० ऐसे जा० यावत् स० सर्वसे ए० एक फा० स्पर्श प० स्पर्श करेंगे ॥ ३ ॥ द० दश ठा० कारनसे अ० अच्छिन्न पु० पुद्गल च० चले आ० आहार करते च० चले प० परिणमते च० चले ओ० उश्वासलेते च० चले प० परिगमाते च० चले नि० निश्वासलेते च०चले वे० बेदते च०चले नि० निर्जरते च०चले वि०

तं० देसेणवि एगे सद्दाइं सुणेंति सव्वेणवि एगे सद्दाइं सुणेंति एवं जाव फासाइं ॥ दस इंदियत्था अणागया प० तं० देसेणवि एगे सद्दाइं सुणिस्सइ सव्वेणवि एगे सद्दाइं सुणिस्सइ । एवं जाव सव्वेणवि एगे फासाइं पडिसंवेदिस्सइ ॥ ३ ॥ दसहिं ठाणेहिं अच्छिन्नेपुग्गले चलेज्जा तं० आहारिज्जमाणेवा चलेज्जा, परिणामिज्जमाणेवा चलेज्जा, ओस्सस्सेज्जमाणेवा चलेज्जा, परियाएज्जमाणेवा चलेज्जा, निससिज्जमाणेवा चलेज्जा, वेदिज्जमाणेवा चलेज्जा निज्ज-

एक शब्द सुने २ देश में से एक रूप देखे ४ सब में से एक रूप देखे ५ देशमें से एक गंध ग्रहण करे ६ सबमेंसे एक गंध ग्रहण करे ७ देशमें से एक रसस्वाद लेवे ८ सबमेंसे एक रस स्वाद लेवे ९ देशसे स्पर्श स्पर्शे और १० सबमें स्पर्शस्पर्शे ऐसे ही दश विषय वर्तमान काल व भविष्य काल आश्रित कहे हैं ॥ ३ ॥ दश कारन से अच्छिन्न (शरीर व स्कंध को लगेहुवे) पुद्गल चलित होते हैं. १ आहार करते २ परिणमावते ३ उश्वास लेते ४ मैथुन संज्ञासे

शब्दार्थ

वैक्रेयशरीर करते च० चले ज० यक्षाधिष्ट च० चले वा० वायुपरिगमते च० चले ॥ ४ ॥ द० दशस्थान से को० क्रोधउत्पत्ति म० मनोज्ञ स० शब्द जा० यावत् गं० गंध अ० अपहरे अ० अमनोज्ञ स० शब्द जा० यावत् उ० दीये म० मनोज्ञ मे० मुझे स० शब्द फ० स्पर्श र० रस रू० रूप गं० गंध अ० दूरकरता है अ० अमनोज्ञ स० शब्द फ० स्पर्श र० रस रू० रूप गं० गंध उ० देता है म० मनोज्ञ स० शब्द फ० स्पर्श रू० रूप गं० गंध अ० दूरकरेगा अ० अमनोज्ञ स० शब्द जा० यावत्

सूत्र

रिज्जमाणेवा चलेज्जा, विओविज्जमाणेवा चलेज्जा, परियारिज्जमाणेवा चलेज्जा, जक्खाइट्ठेवा चलेज्जा, वातपरिगएवा चलेज्जा, ॥ ४ ॥ दसहिं ठाणेहिं कोहुप्पत्ती सिया तं० मणुन्नाइं मे सद्दाइं जाव गंधाइं अवहरिंसु, अमणुन्नाइं मे सद्दाइं जाव उवहरिंसु; मणुन्नाइं मे सद्दफरिसरसरूवगंधाइं अवहरइ अमणुन्नाइं मे सद्दफरिसरसरूवगंधाइं उवहरइ मणुन्नाइं मे सद्दफरिसरसरूवगंधाइं अवहरिस्सइ अमणुन्नाइं मे सद्दाइं जाव उवहरिस्सइ मणुन्नाइं मे सद्दाइं जाव गंधाइं अवहरिंसु अवहरइ अवहरिस्सइ, अमणुन्नाइं मे सद्दाइं जाव उवहरिंसु उवहरइ उवहरिस्सइ मणुन्नामणुन्नाइं मे सद्दाइं जाव अवहरिंसु अवहरइ

भावार्थ

परगमाते ५ स्त्रीके शरीर में वीर्यके पुद्गल निवास लेते चले ७ निर्जरते ८ वैक्रेय शरीर पने परगमाते ९ जिस को यक्षाधिष्ठित है उन शरीर में पुद्गल चले १० वायु के परगमनेसे पुद्गल चले ॥ ४ ॥ दश स्थानकमें क्रोध की उत्पत्ति होती हैं. १ मेरे मनोज्ञ शब्द यावत् गंध इसने ले लीया ऐसा विचार से २ मुझे अमनोज्ञ शब्द यावत् गंध दिया ऐसा विचार से ३ मनोज्ञ शब्द यावत् गंध यह लेता है ४ अमनोज्ञ शब्द यावत्

शब्दार्थ

गं० गंध उ० देगा म० मनोज्ञ स० शब्द जा० यावत् गं० गंध अ० दूरकिया अ० दूरकरता है अ० दूरकरेगा अ० अमनोज्ञ स० शब्द जा० यावत् उ० दिया उ० देता है उ० देगा म० मनोज्ञ अ० अमनोज्ञ स० शब्द जा० यावत् अ० दूरकिया अ० दूरकरता है अ० दूरकरेगा उ० दिया उ० देता है उ० देगा अ० मैं आ० आचार्य उ० उपाध्याय से स० सम्यक् व० वर्तताहूं म० मुझे आ० आचार्य उ० उपाध्याय मिथ्या वि० विप्रतिपन्न ॥ ५ ॥ द० दशप्रकारका सं० संयम पु० पृथ्वीकाय आ० अप् ते०

सूत्र

अवहरिस्सइ, उवहरिंसु उवहरइ उवहरिस्सइ ॥ अहंचणं आयरिय उवज्झायाणं सम्मंवट्टामि, ममंचणं आयरियउवज्झाया मिच्छं विपडिवन्ना ॥ ५ ॥ दसविहे संयमे प० तं० पुढविकाय संजमे, आउ—तेउ—वाउ—वणस्सइ—बेइंदिय संजमे तेइंदिय—चउरिंदियसंजमे पंचेंदियसंजमे—अजीवकायसंजमे ॥६॥ दसविहे असंजमे प० तं० पुढवि-

भावार्थ

गंध यह देता है ऐसा विचार से ५ मेरे मनोज्ञ शब्द यावत् गंध ले लेवेगा ६ अमनोज्ञ शब्द यावत् गंध देवेगा ७ मनोज्ञ शब्द यावत् गंध हरणकिया करता है व करेगा ८ अमनोज्ञ शब्द यावत् गंध दिया देता है और देवेगा ९ मनोज्ञ अमनोज्ञ शब्द यावत् गंध का हरन किया, करता है और करेगा, दिया देता है देवेगा १० मैं आचार्य उपाध्याय का सम्यक् प्रकार से विनय करता हूं परंतु वे मेरे से विपरीत रहते हैं ॥ ५ ॥ दश प्रकार का संयम कहा १ पृथ्वी, अप्, तेउ, वायु, वनस्पति, बेइन्द्रिय, तेइन्द्रिय, चतुरेन्द्रिय,

शब्दार्थ

तेजस वा० वायु व० वनस्पति बे० बेइन्द्रिय ते० तेइन्द्रिय च० चौरेन्द्रिय प० पंचेन्द्रिय अ० अजीवकाय॥६॥ द० दश प्रकार अ० असंयम पु० पृथ्वीकाय जा० यावत् अ० अजीव ॥ ७ ॥ द० दश प्रकार का सं० संवर सो० श्रोतेन्द्रिय जा० यावत् फा० स्पर्शेन्द्रिय म० मन व० वचन का० काया उ० उपकरण सू० शुचीकुशाग्र ॥ ८ ॥ द० दश प्रकार का अ० असंवर सो० श्रोतेन्द्रिय असंवर जा० यावत् सू० शुचीकुशाग्र ॥ ९ ॥ द० दश स्थान से अ० मैं इ० ऐसा थं० मदकरे जा० जातिमद से कु० कुलमद जा० यावत् इ०

सूत्र

काइय असंजमे जाव अजीवकाइय असंजमे ॥ ७ ॥ दसविहे संवरे प० तं० सोइंदियसंवरे जाव फासिंदियसंवरे, मण—वइ—काय—उवगरणसंवरे, सूई कुसग्ग संवरे ॥८॥ दसविहे असंवरे प० तं० सोइंदिय असंवरे जाव सूईकुसग्ग असंवरे॥९॥ दस-

भावार्थ

पंचेन्द्रिय, और अजीव काया इन दश की सम्यक् प्रकार से यत्ना करनेसे दश प्रकार का संयम कहा जाता है ॥ ६ ॥ उन दशों की अयत्ना करने से दश प्रकार का असंयम गिना जाता है ॥ ७ ॥ दश प्रकार का संवर कहा है श्रोतेन्द्रिय संवर यावत् स्पर्शेन्द्रिय संवर मन, वचन, काया को संयममेंरखे सो संवर और उपकरणव शूचीकुशाग्र को यत्ना पूर्वक रखे सो दश प्रकार का संवर ॥ ८ ॥ उक्त श्रोतेंद्रिय यावत् काया को संयम में न रखे व उपकरण और शूची कुशाग्र को अयत्ना पूर्वक रखे सो दश प्रकार का असंवर ॥ ९ ॥ दश कारन से मनुष्य मैं ही सब से अधिक हूं ऐसा मद करे. जाति मद यावत् ऐश्वर्य

शब्दार्थ

ऐश्वर्यमद ना० नागदेवता सु० सुवर्ण देवता मे० मेरी अं० पास ह० शीघ्र आ० आते हैं पु० पुरुष धर्मसे उ० उत्कृष्ट अ० अवधि ना० ज्ञान दं० दर्शन स० उत्पन्न हुवा ॥ १० ॥ द० दश प्रकार की स० समाधि पा० प्राणातिपात वेरमण मु० मृषा अ० अदत्त मे० मैथुन प० परिग्रह वेरमण ई० ईर्यासमिति भा० भाषा समिति ए० एषणा समिति आ० आदान उ० वडीनीत पा० लघुनीत खे० खेल सिं० सिंघाण पा० पारिठावनीया ॥ ११ ॥ द० दश प्रकार की अ० असमाधि पा० प्राणातिपात जा० यावत् प० परिग्रह

सूत्र

हिंठाणेहिं अहमंतीति थंभेज्जा तं० जाइमएणवा, कुलमएणवा, जाव इस्सरियमएण वा, नागसुवन्नावा मे अंतियं हव्वमागच्छंति, पुरिस धम्माओवा मे उत्तरिए अहोवहिए नाणदंसणे समुप्पन्ने ॥ १० ॥ दसविहा समाही प० तं० पाणाइवाय वेरमणे, मुसा-अदिन्ना मेहुण परिग्गहवेरमणे, ईरियासमिईए भासासमिईए एसणासमिईए, आयाण उच्चारपासवणखेलजल्लसिंघाणग पारिट्ठावणिया समिईए॥ ११ ॥ दसविहा असमाही

भावार्थ

मद २ नाग देवता सुवर्ण देवता मेरी पास आते हैं और १० सब से मुझ उत्कृष्ट अवधि ज्ञान प्राप्त हुवा है ऐसा विचार से ॥ १० ॥ दश प्रकार की समाधि कही १ प्राणातिपात, २ मृषावाद, ३ अदत्तादान ४ मैथुन ४ परिग्रहसे न निवर्तनेसे ६ ईर्या समिति ७ भाषा समिति ८ एषणा समिति ९ आदान भंड निक्षेपना समिति और १० उच्चार प्रस्रवण खेल जल परिस्थापनीय समिति ॥ ११ ॥ दश प्रकार की

शब्दार्थ

ई० ईर्या असमिति जा० यावत् उ० वडीनीत पा० लघनीत खे० खेल सिं० सिंघाण पा० पारिठावणिया अ० असमिति ॥ १२ ॥ द० दश प्रकार प० प्रव्रज्या छं० छं० से गे० रोग से प० दारिद्र्यता से सु० स्वप्न से प० प्रतिज्ञा से सा० पूर्व भवयाद आने से गे० रोग से अ० अनादर से दे० देववोध से व० पुत्रादिसंबंध से ॥ १३ ॥ द० दश प्रकार का स० श्रमण धर्म खं० क्षमा मु० मुक्ति अ० ऋजुता म० मृदुता

सूत्र

प० पाणाइवाए जाव परिग्गहेरियाअसमिई जाव उच्चार पासवण खेल सिंघाणग पारिट्ठावणिया समिई ॥ १२ ॥ दसविहा पव्वज्जा प० तं० छंदारोसा परिजुन्ना, सुविणा पडिस्सुयाचेव; सारणियारोगिणिया, अणाढिया देवसन्नत्ती ॥ १ ॥ वच्छानुबंधिया ॥ १३ ॥ दसविहे समण धम्मे प० तं० खंती मुत्ती, अज्जवे, मद्दवे, लाघवे, सच्चे,

भावार्थ

असमाधि कही. प्राणातिपात यावत् परिग्रह में रमण करना. ईर्या असमिति यावत् उच्चार प्रसवण खेल जल परिस्थापनीय असमिति ॥ १२ ॥ दश प्रकार की दीक्षा कही १ छंद से भवदेव वत् २ रोष से शिवभूति वत् ३ दारिद्र्यतासे मातारी वत् (कृष्णका पूर्वभव) ४ स्वप्न से पुष्पचूलवत् ५ प्रतिज्ञा से जम्बू वत् ६ पूर्वभवका स्मरण होने से श्री मल्लीनाथ जीके षड्मित्रवत् ७ रोग से सनत्कुमारवत् ८ अनादर से नंदीषेण(वसुदेव का पूर्वभव वत्)९ देवता के प्रतिवोध से मेतार्य कुमारवत् १० पुत्रादि संबंध से भृगु पुरोहितवत् ॥ १३ ॥ दश प्रकार का साधु धर्म कहा है १ क्षमा २ निर्लोभता ३ ऋजुता ४ मृदुता

शब्दार्थ

ला० लघुता स० सत्य सं० संयम त० तप चि० त्याग बं० ब्रह्मचर्य ॥ १४ ॥ द० दश प्रकार की वे० वैयावृत्य आ० आचार्य की उ० उपाध्याय की थे० स्थविर की त० तपस्वी की गि० ग्लानी की से० शिष्य की कु० कुल की ग० गणकी० सं० संघकी सा० स्वधर्मी की ॥ १५ ॥ द० दश प्रकार का जी० जीव परिणाम ग० गति इं० इन्द्रिय क० कषाय ले० लेश्या जो० योग उ० उपयोग ना० ज्ञान दं०

सूत्र

संजमे, तवे, चियाए, बंभचेरवासे ॥ १४ ॥ दसविहे वेयावच्चे प० तं० आयरिय वेयावच्चे, उवज्झाय वेयावच्चे; थेरवेयावच्चे तवस्सि वेयावच्चे, गिलाणवेयावच्चे सेहवेयावच्चे, कुलवेयावच्चे, गणवेयावच्चे, संघवेयावच्चे, साहम्मियवेयावच्चे, ॥ १५ ॥ दसविहे जीव परिणामे प० तं० गइपरिणामे, इंदिय परिणामे, कसायपरिणामे, लेस्सापरिणामे जोगपरिणामे, उवओगपरिणामे, नाणपरिणामे, दंसणपरिणामे, चरि०

भावार्थ

५ लघुता ६ सत्य ७ संयम ८ तप ९ त्याग और १० ब्रह्मचर्य ॥ १४ ॥ दश प्रकार की वैयावृत्य कही १ आचार्य की वैयावृत्य २ उपाध्याय की ३ स्थविर की ४ तपस्वी की ५ ग्लानि की ६ शिष्य की ८ कुल की ८ गच्छ की ९ संघ की और १० स्वधर्मी की वैयावृत्य ॥ १५ ॥ दश प्रकार का जीव परिणाम १ गति २ इन्द्रिय ३ कषाय ४ लेश्या ५ योग ६ उपयोग ७ ज्ञान ७ दर्शन ९ चारित्र और १०

शब्दार्थ

दर्शन च० चरित्र वे० वेद ॥ १६ ॥ द० दश प्रकारका अ० अजीव परीणाम बं० बंधन ग० गति ठा० संस्थान भे० भेद व० वर्ण र० रस गं० गंध फा० स्पर्श अ० अगुरुलघु स० शब्द ॥१७॥ द० दश प्रकार की अं० अंतरिक्ष अ० अनध्याय उ० उल्कापात दि० दिशादाह ग० गर्जारव वि० विजली नि० निर्घात जू० संध्याकाल ज० यक्षालिप्त धू० धूम्रम० धूंअर र० रजोवृष्टि ॥ १८ ॥ द० दशप्रकारकी ओ० उदारिक

सूत्र

त्तपरिणामे, वेदपरिणामे, ॥ १६ ॥ दसविहे अजीवपरिणामे प० तं० बंधणपरिणामे, गइपरिणामे, ठाणपरिणामे, भेदपरिणामे, वन्नरस परिणामे गंधएफासपरिणामे, अगरुयलहुयसद्दपरिणामे, ॥ १७ ॥ दसविहे अंतलिक्खिए असज्झाइए प० तं० उक्कावाए, दिसिदाहे, गज्जिए, विज्जुए, निग्घाए, जूयए, जक्खालित्तए धूमिए, महिया, रज्जुग्घाए ॥ १८ ॥ दसविहे ओरालिए असज्झाइए प० तं०

भावार्थ

वेद परिणाम ॥ १६ ॥ दश प्रकार का अजीव परिणाम १ बंधन २ गति ३ संस्थान ४ भेद ५ वर्ण ६ गंध ७ रस ८ स्पर्श ९ अगुरु लघु और १० शब्द ॥ १७ ॥ दश प्रकार से आकाश की अस्वाध्याय कही १ उल्कापात २ दिशिदाहसो दशों दिशि लाल रहे ३ गर्जना ४ विद्युत् ५ निर्घात-कडाके ६ संध्याकाल ७ यक्षालिप्त अर्थात् आकाश में यक्षों के चिन्ह ८ आकाश में धूम्र ९ धूंअर और १० रजोवृष्टि ॥१८॥ दश

शब्दार्थ

अ० अस्वज्झाय अ० अस्थि म० मांस सो० श्रोणित अ० विष्टा म० श्मशान च० चंद्रग्रहण सू० सूर्य ग्रहण प० राजवरण रा० राजसंग्राम उ० उपाश्रय की अं० अंदर औ० उदारिक स० शरीर ॥१९॥ प० पंचेन्द्रिय जी० जीव का अ० असमारंभ द० दशप्रकारका सं० संयमक० करे सो० श्रोतेन्द्रिय के सु० सुख से अ० अलगकरनहीं सो० श्रोतके दु० दुःखसे अ० असंयोग भ० होवे ए० ऐसे० जा० यावत्

सूत्र

अट्ठि, मंसे, सोणिए, असुइसामंतं, मसाण सामंतं चंदोवराए, सूरोवराए, पडणे, रायवुग्गहे, उवस्सयस्स अंतो ओरालिए सरीरे ॥ १९ ॥ पंचिंदियाणं जीवाणं असमारभमाणस्स दसविहे संजमे कज्जइ तं० सोयामयाओ सुक्खाओ अववरोवित्ता भवइ, सोयामएणं दुक्खेणं असंजोइत्ता भवइ, एवं जाव फासामएणं दुक्खेणं असंजोएत्ता भवइ. ॥२०॥

भावार्थ

प्रकार की उदारिक शरीर संबंधी अस्वाध्याय कही १ हड्डी २ मांस ३ रुधिर ४ अशुचि समीप में होवे ५ समीप में स्मशान होवे ६ चंद्रग्रहण ७ सूर्यग्रहण ८ राजाकामरण ९ राज्य संग्राम और १० उपाश्रय में जीव रहित उदारिक शरीर ॥ १९ ॥ पंचेन्द्रिय जीवों का समारंभ नहीं करने वाले को दश प्रकार का संयम कहा जाता है १ श्रोतेन्द्रिय के सुख से पृथक् होवे नहीं, श्रोतेन्द्रिय के दुःखका संयोग होवे नहीं यावत् स्पर्शेन्द्रिय के दुःख का संयोग होवे नहीं ॥ २० ॥ ऐसे ही पंचेन्द्रिय का समारंभ करनेवाले को

शब्दार्थी

फा० स्पर्शके दु० दुःखसे अ० असंयोग भ० होवे ॥ २० ॥ ए० ऐसे अ० असंयम भा० कहना ॥२१॥ द० दश सु० सूक्ष्म पा० प्राणसूक्ष्म प० पनगसूक्ष्म जा० यावत् स० स्नेहसूक्ष्म ग० गणितसूक्ष्म भं० भंगसूक्ष्म ॥ २२ ॥ जं० जंबूद्वीपके मं० मेरुकी दा० दक्षिणमें गं० गंगा सिं० सिंधु म० महानदियोंमें द० दश म० महानदियों स० मीलती है ज० यमुना स० सरयू आ० आदी को० कोशी म० मही स० सतद्रु वि० वितस्ता वि० विभाषा ए० ऐरावती चं० चंद्रभागा ॥ २३ ॥ जंबूद्वीपके मं० मेरुकी उ० उत्तरमें

सूत्र

एवं असंजमोवि भाणियव्वो ॥ २१ ॥ दससुहुमा प० तं० पाणसुहुमे, पणगसुहुमे, जाव सिणेहसुहुमे गणियसुहुमे भंगसुहुमे ॥ २२ ॥ जंबूमंदर दाहिणेणं गंगासिंधूओ महाणईओ दसमहानईओ समर्प्पिति तं० जउणा, सरऊ, आदी, कोसी, मही, सयदू, विवच्छा, विभासा एरावई, चंदभागा॥ २३॥ जंबूमंदर उत्तरेणं रत्तारत्तवईओ महाणईओ दसमहाणई

भावार्थ

दश प्रकार का असंयम होता है ॥ २१ ॥ सूक्ष्म के दश भेद कहे हैं. प्राण सूक्ष्म पनग सूक्ष्म यावत् स्नेह सूक्ष्म गणित सूक्ष्म और भंगजाल सूक्ष्म ॥ २२ ॥ जम्बूमंदर से दक्षिण में गंगा सिंधु नदियों में दश बडी नदियों मीलती हैं १ यमुना २ सरयू ३ आदी ४ कोशी ५ मही ६ सतद्रु ७ वितस्ता ८ विभाषा ९ ऐरावती १० चंद्र भागा ॥ २३ ॥ जम्बूमंदर की उत्तर में रक्ता और रक्तवती नामक बडी नदियों

शब्दार्थ

र० रक्ता र० रक्तवती म० महानदियोंमें द० दशमहानदियों स० मीलती हैं कि० कृष्णा म० महा कृष्णा नी० नीला म० महानीला नी० नीरा म० महानीरा इं० इन्द्रा जा० यावत् म० महाभागा ॥२४॥ जं० जंबूद्वीपमें भ० भरतक्षेत्रमें द० दश रा० राज्यधानी च० चंपा म० मथुरा वा० वाणारसी सा० सावत्थी सा० साकेता ह० हस्तिनापुर कं० कंपिल्लपुर म० मिथिला को० कोशंबी रा० राजगृह ॥२५॥ ए० इन द० दश रा० राज्यधानी में द० दश रा० राजा मुं० मुंड हुवे जा० यावत् प० प्रव्रजित हुवे भ० भरत स० सगर म० मघवा स०

सूत्र

ओ समप्पेंति तं० किण्हा, महाकिण्हा, नीला, महानीला, निरा, महानीरा, इंदा जाव महाभागा ॥ २४ ॥ जंबुद्दीवेदीवे भरहेवासे दसरायहाणीओ पण्णत्ताओ तं० चंपा महुरा वाणारसीय सावत्थि तह य साएयं, हत्थिणपुर कंपिल्लं, मिहिला कोसंबि-रायगिहं ॥ २५ ॥ एयासुणं दससु रायहाणीसु दसरायाणो मुंडाभवित्ता जाव पव्वइया तं० भरहे सगरे, मघवं, सणंकुमारे, संती, कुंथू, अरे महापेउमे, हरि-

भावा

में दश अन्य बडी नदियों मीलती हैं १ कृष्णा २ महाकृष्णा ३ नीला ४ महानीला ५ नीरा ६ महानीरा ७ इन्द्रा ८ महाइन्द्रा ९ भागा और महाभागा ॥ २४ ॥ जम्बूद्वीपमें भरतक्षेत्रमें दशबडी राज्यधानियों कहीं १ चंपा २ मथुरा ३ वाणारसी ४ सावत्थी ५ साकेता ६ हस्तिनापुर ७ कंपिल्लपुर ८ मिथिला ९ कोशंबी १० राजगृह ॥ २५ ॥ इन दश राज्यधानियोंमें दश राजा मुंडबनकर के दीक्षित हुवे १ भरत २

शब्दार्थ

सनत्कुमार सं० शांतिनाथ कुं० कुंथुनाथ अ० अरनाथ म० महापद्म ह० हरिषेण ज० जयनाम ॥ २६ ॥ जं० जंबूद्वीपका मं० मेरुपर्वत द० दशयोजन स० शत उ० ऊंडा ध० धरतीतलपे द० दश जो० योजन स० सहस्र वि० चौडा उ० उपर द० दश जो० योजन स० शत वि० चौडा द०दश दश जो० योजन स० सहस्र स० चारोंबाजुसे ॥ २७ ॥ जं० जंबूद्वीप के मं० मेरुपर्वत की ब० बहुत मध्यभाग में इ० इस र० रत्नप्रभा पु० पृथ्वीके उ० उपर हे० नीचे खु० छोटे प० प्रतर में अ० आठ प्रदेश का रु० रुचक

सूत्र

सेणे, जयनामे ॥ २६ ॥ जंबूद्दीवेदीवे मंदरेपव्वए दस जोयण सयाइं उव्वेहेणं धरणीतले दसजोयण सहस्साइं विक्खंभेणं उवरिं दसजोयण सयाइं विक्खंभेणं दसदसाइं जोयणसहस्साइं सव्वग्गेणं प० ॥ २७ ॥ जंबूद्दीवेदीवे मंदरस्सपव्वयस्स बहुमज्झ देसभाए इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए उवरिमहेट्ठिल्लेसु खुड्डगपयरेसु एत्थणं

भावार्थ

सगर ३ मघवा ४ सनत्कुमार ५ शान्तिनाथ ६ कुंथुनाथ७ अरनाथ ८ महापद्म ९ हरिषेण और १० जयनाम ॥ २६ ॥ जम्बूद्वीपमें मेरुपर्वत दश सो (एक हजार) योजन जमीनमें है पृथ्वीतलमें दश हजार योजन का चौडा, उपर दश हजार योजन चौडा, और सब मीलकर दश दश हजार अर्थात एक लक्ष योजन का ऊंचा है ॥ २७ ॥ जम्बूद्वीपके मेरुकी बहुत मध्य भागमें इस रत्नप्रभा पृथ्वीमें उपर नीचे छोटे प्रतरमें आठ प्रदेशका रुचक कहा है और यहांसे दश दिशाओं नीकली हुई है १ पूर्व २ अग्नि ३ दक्षिण ४ नैऋत्य ५

शब्दार्थ

ज०जहां से इ०ये द०दश दिशाओं प०नीकलती हैंपु०पूर्व पु० पूर्व दक्षिण दा० दक्षिण दा० दक्षिण पश्चिम प० पश्चिम प० पश्चिम उत्तर उ०उत्तरउ०उत्तर पूर्व उ०ऊर्ध्व अ०अधो ए० इनके द०दशनाम इं०इन्द्रा अ० अग्नि ज० यमा नै० नैऋति व० वारुणी वा० वायव्या सो० सोमा इ० ईशान वि० विमला त० तमा बो० जानना ॥ २८ ॥ ल० लवणसमुद्र का द० दश जो० योजन स० सहस्र गो० गौतीर्थ वि० विरहित खि० क्षेत्र ॥ २९ ॥ ल० लवणं समुद्रको द० दश जो० योजन स० सहस्र का उ० उदगमाला ॥ ३० ॥ स० सर्व

सूत्र

अट्ठपएसिए रुयगे प० जओणं इमाओ दसदिसाओ पवहंति तं० पुरच्छिमा, पुरच्छिमदाहिणा, दाहिणा, दाहिणपच्चत्थिमा; पच्चत्थिमा, पच्चत्थिमुत्तरा, उत्तरा ,उत्तरपुरच्छिमा, उड्ढा, अहो ॥ एएसिणं दसनामधिज्जा प० तं० इंदा, अग्गीइ, जमा; णेरई, वरुणीय, वायव्वा, सोमा, ईसाणाओ, विमलाय, तमाय, बोधव्वा (१) ॥ २८ ॥ लवणस्सणं समुद्दस्स दसजोयण सहस्साइं गोतित्थ विरहिए खित्ते पण्णत्ते ॥ २९ ॥ लवणस्सणं समुद्दस्स दसजोयण सहस्साइं उदगमाले पण्णत्ते ॥ ३० ॥ सव्वेविणं

भावार्थ

पश्चिम६ वायव्य ७ उत्तर ८ ईशान९ ऊर्ध्व और १० अधो. इन दशोंदिशाओंके दश नाम कहे हैं १ इन्द्रा २ अग्नि ३ यमा ४ नैऋति ५ वारुणी ६ वायव्या ७ सोमा ८ ईशान ९ विमला और १० तमा ॥ २८ ॥ लवणसमुद्र गोतीर्थरूप भूमि छोडकर दश हजार योजन का ऊंडाकहा ॥ २९ ॥ लवण समुद्रमें दशहजार

शब्दार्थ

म० महा पाताल कलश द० दश २ जो० योजन स० सहस्र उ० ऊंडे मू० मूल में द० दश जो० योजन म० सहस्र वि० चौडे ब० बहुत म० मध्यदेशभा[illegible] ए० एक प्रदेश वे० श्रेणी द० दश २ योजन म० सहस्र वि० चौडे उ० उपर मु० मुखमें द० द[illegible] [illegible] वि० चौडा ते० उस पाताल कलश-की कु० ठिकरी म० सर्व ब० वज्ररत्नमय स० सर्व [illegible] [illegible] दश जो० योजन स० शत वा० जाडी स० सर्व खु० छोटे पा० पाताल कलश द० दश जो० [illegible] [illegible] शत उ० ऊंडे मू० मूलमें द० दश २

सूत्र

महापायाला दसदसाइं जोयणसहस्साइं उव्वेहेणं प० मूले दसजोयणसहस्साइं विक्खंभेणं प० बहुमज्झदेसभाए एगपएसियाए सेढीए दसदसाइं जोयणसहस्साइं विक्खंभेणं प० उवरिमुहमूलेदसजोयणसहस्साइं विक्खंभेणं प० । तेमिणं महापायालाणं कुडा सव्ववइरामया सव्वत्थसमा दसजोयणसयाइं बाहल्लेणं प० सव्वेविखुड्डापायाला दसजोयण सयाइं उव्वेहेणं प० मूलेदसदसाइं जोयणाइं विक्खंभेणं प० बहुमज्झदेसभागे एग

भावार्थ

योजन ऊंची दगमाल कही ॥ ३० ॥ सब पातालकलश दशदश गुने हजार (एक लक्ष) योजन के ऊंडे कहे, मूलमें दश हजार योजन के चौडे कहे, बहुत मध्यभाग में एक प्रदेशकीश्रेणिमे एक २ प्रदेश बढते दश दश गुने हजार चौडे कहे अर्थात् बीचमें एक लक्ष योज[illegible] के चौडे कहे उपर मुखके मूलमें दश हजार योजन के चौडे कहे, उन महापाताल कलशोंकी ठिकरी वज्ररत्नमय व सर्वत्र सम कही. और दश सो (एकहजार) योजनकी जाडपनमें कहीं. इन चारों बडे कलशकी बीचमें छोटे २ कलशकी नव लडों लगी हैं

शब्दार्थ

जो० योजन वि० चौडा व० बहुत मध्यदेशभाग में ए० एक प्रदेशकी से० श्रेणीसे द० दश जो० योजन स० शत वि० चौडा उ० उपर मु० मुखमें द० दश २ जो० योजन वि० चौडा ते० उन खु० छोटे पा० पाताल कलश की कु० ठिंकरी स० सर्व व० वज्ररत्नमय स० सबबाजु स० सरिखे द० दश जो० योजन वा० जाडपने ॥ ३१ ॥ धा० धातकीखंडके मं० मेरु द० दश जो० योजन स० शत उ० ऊंडे ध० धरतीतलपे दे० देशऊणे द० दशयोजन स० सहस्र वि० चौडे उ० उत्तर द० दशयोजन स० शत वि० चौडे ॥ ३२ ॥

सूत्र

पणसियाए सेढीए दस जोयणसयाइं विक्खंभेणं प० उवरि मुहमूले दसदसाइंजोयणाइं विक्खंभेणंप० तेसिणं खुड्डा पायालाणं कुड्डासव्ववइरामया सव्वत्थसमा दसजोयणाइं बाहल्लेणं प०॥३१॥धायइखंडगाणं मंदरा दस जोयणसयाइं उव्वेहेणं धरणि तले देसूणाइं दसजोयण सहस्साइं विक्खंभेणं उवरिं दसजोयण सयाइं विक्खंभेणं प०॥३२॥ पुक्खरवर

भावार्थ

वे सब छोटे कलश एक हजार योजनके ऊंडे कहे हैं, मूलमें दश दश गुने अर्थात् सो योजन के चौडे कहे, मध्य में एक हजार योजनके चौडे कहे हैं, और मुखमें सो योजन के चौडे हैं. सब वज्ररत्नमय हैं. उनकी ठिंकरी दशयोजन की जाडी है ॥ ३१ ॥ धातकी खंडके मेरु पर्वत एक हजार योजन के ऊंडे पृथ्वी में कहे, देशऊणे दश हजार योजन के पृथ्वीतलमें चौडे और उपर एक हजार योजन के चौडे कहे हैं

शब्दार्थ

पु० पुष्करवर अर्धद्वीपके मे० मेरु द० दश योजन ए० ऐसे ॥ ३३ ॥ स० सर्व वृत्तवैताढ्य प० पर्वत द० दश जो० योजन स० शत उ० ऊंचे उ ऊंचपने द० दशगाउ स० शत उ० ऊंडे स० चारोंबाजु प० पालाके सं० संस्थान से सं० रहेहुवे द० दश योजन स० शत वि० चौडे ॥ ३४ ॥ जं० जंबूद्वीप में द० दशक्षेत्र भ० भरत ए० ऐरवत हे० हेमवय हे० एरनवय ह० हरिवर्ष र० रम्यकवर्ष पु० पूर्वविदेह अ० अपरविदेह दे० देवकुरु उ० उत्तरकुरु ॥३५॥ मा० मानुषोत्तर पर्वत मू० मूल में द० दश बा०

सूत्र

दीवड्ढगाणं मंदरा दसजोयणा एवंचेव ॥३३॥ सव्वेविणं वट्टवेयड्ढ पव्वया, दसजोयण-सयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं दसगाउयसयाइं उव्वेहेणं सव्वत्थसमा पल्लग संट्ठाणसंठिया दस जोयणसयाइं विक्खंभेणं प० ॥ ३४ ॥ जंबूद्दीवेदीवे दस खेत्ता प० तं० भरहे, एरवए, हेमवए, हेरण्णवए, हरिवस्से, रम्मगवस्से, पुव्वविदेहे, अवरविदेहे, देवकुरा,

भावार्थ

॥ ३२ ॥ धातकी खंड के मेरु समान पुष्करवरद्वीपके मेरुका जानना ॥ ३३ ॥ सब वृत्तवैताढय पर्वत दशसो (एकहजार) योजन के ऊंचे दशसो (एकहजार) गाऊ के ऊंडे सर्वत्र सरिखे पर्यंकासनके संस्थानवाले कहे हैं और दशसो योजन के चौडे कहे हैं ॥ ३४ ॥ जम्बूद्वीप में दशक्षेत्र कहे हैं भरत, ऐरवत हेमवय एरनवय, हरिवर्ष, रम्यकवर्ष, पूर्वविदेह, अपरविदेह, देवकुरु व उत्तर कुरु ॥ ३५ ॥

शब्दार्थ

बावीस जो० योजन स० शत वि० चौडा ॥ ३६ ॥ स० सर्व अं० अंजनागिरि प० पर्वत द० दश योजन स० शत उ० ऊंडे मू० मूल में द० दश जो० योजन स० सहस्र वि० चौडा उ० उपर द० दश जो० योजन स० शत वि० चौडा ॥ ३७ ॥ स० सर्व द० दधिमुख पर्वत द० दश योजन शत उ० ऊंडे स० चारों बाजुसे स० सरिखे प० पालाके सं० संस्थान से सं० रहेहुवे द० दश योजन स० सहस्र वि० चौडा ॥३८॥ स० सर्व र० रतिकर पर्वत द० दश योजन स०

सूत्र

उत्तरकुरा ॥ ३५ ॥ माणुसुत्तरेणं पव्वए मूले दसबावीसे जोयणसए विक्खंभेणं प० ॥ ३६ ॥ सव्वेविणं अंजणगपव्वया दस जोयणसयाइं उव्वेहेणं, मूले दसजोयण सहस्साइं विक्खंभेणं उवरिं दसजोयणसयाइं विक्खंभेणं प० ॥ ३७ ॥ सव्वेविणं दधिमुहपव्वया दस जोयण सयाइं उव्वेहेणं सव्वत्थसमा पल्लग संट्ठाण संठिया दसजोयण सहस्साइं विक्खंभेणं प० ॥ ३८ ॥ सव्वेविणं रइकरपव्वया दसजोयण सयाइं उड्ढंउच्चत्तेणं दसगाउयसयाइं उव्वेहेणं

भावार्थ

अढाइद्वीपकी मर्यादा करने वाला मानुषोत्तर पर्वत मूलमें दश बावीस सो (बत्तीससो) योजनका चौडा है ॥ ३६ ॥ सब अंजनक पर्वत दशसो (एक हजार) योजन के ऊंडे हैं. मूलमें दशहजार योजन के चौडे हैं. उपर दशसो योजन के चौडे कहे हैं. ॥ ३७ ॥ सब दधिमुख पर्वत दशसो (एक हजार) योजन के ऊंडे और पाला के संठाण वाले सब सब जु सरिखे रहे हैं और दशहजार योजन के चौडे कहे हैं. ॥ ३८ ॥ सब रतिकर पर्वत दशसो योजन के ऊंचे दशसो गाऊ के ऊंडे सब सरिखे झालरके संठान वाले और दश हजार

शब्दार्थ

शत उ० ऊंचे उ० ऊंचपने में द० दश गा० गाउ स० शत उ० ऊंडे स० चारों बाजु स० सरिखे झ० झाझरसे सं० रहाहुवा द० दश जो० योजन स० सहस्र वि० चौडा रु० रुचक प० पर्वत द० दश जो० योजन स० शत उ० ऊंडा मू० मूल में द० दश जो० योजन स० सहस्र वि० चौडा उ० उपर द० दश जो० योजन स० शत वि० चौडा ए० ऐसे कुं० कुंडलवर ॥३९॥ द० दश प्रकार का द० द्रव्यानुयोग द०

सूत्र

सव्वत्थसमा झल्लरिसंठिया, दसजोयण सहस्साइं विक्खंभेणं प० रुयगवरेणं पव्वए दस जोयण सयाइं उव्वेहेणं, मूले दस जोयण सहस्साइं विक्खंभेणं, उवरिं दसजोयण सयाइं विक्खंभेणं प० ॥ एवं कुंडलवरेवि ॥३९॥ दसविहे दवियाणुओगे प० तं०

भावार्थ

योजन के चौडे कहे हैं. रुचकवर पर्वत दश सो योजन का ऊंडा मूलमें दश हजार योजन का चौडा उपर दशसो योजन का चौडाकहा. ऐसे ही कुंडलवर का जानना ॥ ३९ ॥ दश प्रकार का द्रव्यानुयोग कहा १ द्रव्यानुयोग सो गुणपर्यायवंत जीव का अनुयोग २ मातृकानुयोग सो ५२ अक्षरका अनुयोग ३ एकार्थानुयोग सो जीव प्राण भूत व सत्व ये एकार्थवाची शब्द है ४ करणानुयोग सो काल, स्वभाव, पूर्वकृत व उपयोग इनपांच करणाविना जीव कुच्छ नहीं कर सकता है ५ अर्पितानर्पितानुयोग सो विशेषण अविशेषित जैसे जीवद्रव्य कैसा? जीव द्रव्य संसारी-संसार में भी त्रसरूप, उस में भी पंचेन्द्रिय, और विकलेन्द्रियमें भी नररूप सो अनर्पित. ६ भाविताभितानुयोग सो जीवद्रव्य सब संसार के भावसे भावित भी है और अभा

शब्दार्थ

द्रव्यानुयोग भा० मातृकानुयोग ए० एकार्थानुयोग क० करणानुयोग अ० अर्पित अ० अनर्पित भा० भावित अ० अभावित बा० बाह्य अ० अबाह्य सा० साश्वत अ० अशाश्वत त० तथाज्ञान अ० अतथाज्ञान ॥ ४० ॥ च० चमरके अ० असुरेन्द्र अ० असुरकुमार राजाके ति० तिगिच्छ कूट उ० उत्पात प० पर्वत मू० मूल में द० दश बा० बावीस जो० योजन स० शत वि० चौडा ॥ ४१ ॥ च० चमरे० के अ० असुरेन्द्र अ० असुरकुमार

सूत्र

दवियाणुजोगे, माउयाणुजोगे, एगट्ठियाणुजोगे, करणाणुजोगे, अप्पियाणप्पिए, भाविया भाविए, बाहिराबाहिरे, सासयासासए, तहनाणे, अतहनाणे, ॥ ४० ॥ चमरस्सणं असुरिंदस्स असुरकुमाररन्नो तिगिच्छकूडे उप्पाय पव्वए मूले दसबावीसे जोयणसए विक्खंभेणं प० ॥ ४१ ॥ चमरस्सणं असुरिंदस्स असुरकुमाररन्नो सोमस्स महारण्णो सोमप्पभे उप्पायपव्वए दसजोयण सयाइं उड्ढंउच्चत्तेणं, दसगाउय सयाइं

भावार्थ

वितभी है ७ बाह्याबाह्यनुयोग सो आकाशास्ति कायसे विलक्षण धर्म चैतन्यापना सहित सो बाह्य और अमूर्तत्व धर्म होने से अबाह्य ८ शाश्वताशाश्वत जीवद्रव्य अनादिपना से शाश्वत है और पर्याय पलटनेसे अशाश्वत है ९ तथाज्ञान सो यथार्थ जानना और १० अतथाज्ञान सो मिथ्या जानना ॥ ४० ॥ चमर असुरेन्द्र के असुरकुमार राजा का तिगिच्छकूट उत्पात पर्वत मूलमें दश बावीश (बत्तीस) सो योजन का चोडा है ॥ ४१ ॥ चमर असुरेन्द्र असुरकुमार राजाका सोम महाराजा को सोमप्रभ उत्पा-

शब्दार्थ

राजा के सो० सोम महाराजा को सो० सोमप्रभ उ० उत्पात पर्वत द० दश जो० योजन स० शत उ० ऊंचे उ० ऊंचपने द० दश गाउ स० शत उ० ऊंडे मू० मूल में द० दश योजन स० शत वि० चौडा॥४२॥ च० चमर के अ० असुरेन्द्र के ज० यम म० महाराजा को ज० यमप्रभ उ० उत्पात पर्वत ए० ऐसे व० वरुणको वे० वैश्रमण को ॥ ४३ ॥ ब० बली के व० वैरोचन व० वैरोचन राजा के रु० रुचकेन्द्र उ० उत्पात प० पर्वत मू० मूल में द० दश बा० बावीस जो० योजन शत वि० चौडा ॥ ४४ ॥ ब० बली के व० वैरोचन राजा के सोम को ए० ऐसे ज० जैसे च० चमर के लो० लोकपाल के ब०

सूत्र

उव्वेहेणं मूले दसजोयणसयाइं विक्खंभेणं प० ॥ ४२ ॥ चमरस्सणं असुरिंदस्स जमस्स महारण्णो जमप्पभे उप्पायपव्वए एवंचेव ॥ एवं वरुणस्सवि ॥ एवं वेसमणस्सवि ॥ ४३ ॥ बलिस्सणं वइरोयणिंदस्स वइरोयणरन्नो रुयगिंदे उप्पायपव्वए मूले दस बावीसे जोयणसए विक्खंभेणं प० ॥ ४४ ॥ बलिस्सणं वइरोयणरन्नो

भावार्थ

त पर्वत दश सो योजन का ऊंचा दश सो गाउका ऊंडा और मूलमें दश सो योजन का चौडा कहा॥४२॥ चमर असुरेन्द्र का जम महाराजा को जमप्रभ उत्पात पर्वत का भी सोमप्रभ उत्पात पर्वत जैसे कहना और ऐसे ही वरुण व वैश्रमण का भी जानना ॥ ४३ ॥ बलिनामक वैरोचनेन्द्र वैरोचन राजा का रुचकेन्द्र उत्पात पर्वत मूलमें दश बावीश सो योजन का चौडा कहा ॥ ४४ ॥ बलि वैरोचनेन्द्र के सोम

शब्दार्थ

बलि को ॥ ४५ ॥ ध० धरण के ना० नागकुमारेन्द्र ना० नागकुमार राजा को ध० धरणप्रभ उ० उत्पात प० पर्वत द० दश जो० योजन स० शत उ० ऊंचा उ० ऊंचपने द० दश गा० गाउ स० शत उ० ऊंडा भू० मूल में द० दश योजन स० शत वि० चौडा ध० धरण जा० यावत् ना० नागकुमार राजा को का० कालवाल म० महाराजा को का० कालप्रभ उ० उत्पात पर्वत द० दश योजन स० शत उ० ऊंचा उ० ऊंचपने ए० ऐसे जा० यावत् सं० संखवाल को भू० भूतानेन्द्र के लो० लोकपाल को से० वह ज० जैसे

सूत्र

सोमस्स एवं चेव जहा चमरस्स लोगपालाणं तंचेव बलिस्सवि ॥ ४५ ॥ धरणस्सणं नागकुमारिंदस्स नागकुमाररन्नो धरणप्पभे उप्पाय पव्वए दसजोयण सयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं दसगाउय सयाइं उव्वेहेणं, मूले दस जोयण सयाइं विक्खंभेणं । धरण स्सणं जाव नागकुमाररन्नो कालवालस्स महारन्नो कालप्पभे उप्पायपव्वए दस-जोयण सयाइं उड्ढंउच्चत्तेणं एवंचेव ॥ एवं जाव संखवालस्स । एवं भूयाणंदस्सवि,

भावार्थ

लोकपाल का चमरेन्द्र के लोकपाल जैसे कहना. ॥ ४५ ॥ धरण नामक नागकुमारेन्द्र के नाग कुमार राजा के धरणप्रभ उत्पात पर्वत दश सो योजन का ऊंचा दशसो गाउ का ऊंडा और मूलमें दश सो योजन का चौडा कहा. धरण नामक नागकुमारेन्द्र का नागकुमार राजा का कालवाल महाराजा का कालप्रभ नामक उत्पात पर्वत दश सो योजन का ऊंचा दश सो गाउ का ऊंडा व दश सो योजन का

शब्दार्थ

ध० धरण को ए० ऐसे जा० यावत् थ० स्थनित कुमारके स० लोकपाल सहितको भा० कहना स० सर्व उ० उत्पात पर्वत भा० कहना स० सरिखे ना० नामवाले ॥ ४६ ॥ स० शक्र दे० देवेन्द्र दे० देवराजा को स० शक्रप्रभ उ० उत्पात पर्वत द० दश योजन स० सहस्र उ० ऊंचे उ० ऊंचपने द० दश गाउ स० सहस्र उ० ऊंडे मू० मूल में द० दश योजन स० सहस्र वि० चौडे स० शक्र दे० देवेन्द्र दे० देवराजा को ज० जैसे स० शक्र को त० तैसे स० सर्व लोकपाल के स० सर्व ई० इन्द्र को जा० यावत् अ० अच्यु-

सूत्र

एवं लोगपालाणंवि से जहा धरणस्स एवं जाव थणिय कुमाराणं सलोगपालाणं भाणियव्वं । सव्वेसिं उप्पायपव्वया भाणियव्वा, सरिसनामगा ॥ ४६ ॥ सक्कस्सणं देविंदस्स देवरण्णो सक्कप्पभे उप्पाय पव्वए दसजोयण सहस्साइं उड्ढंउच्चत्तेणं, दस गाउय सहस्साइं उव्वेहेणं, मूले दस जोयण सहस्साइं विक्खंभेणं प० ॥ सक्कस्सणं देविंदस्स देवरण्णो जहा सक्कस्स तहासव्वेसिं लोगपालाणं सव्वेसिंच इंदाणं जाव

भावार्थ

मूलमें चौडा कहा है ऐसे ही संख्वाल तक ऐसे ही भूतानंद यावत् स्थनित कुमार तक लोक पाल सहित के पर्वत का अधिकार धरणेन्द्र जैसे कहना. उन सबके उत्पात पर्वत का नाम उन के नाम जैसे कहना. ॥ ४६ ॥ शक्र देवेन्द्र देवराजाका शक्रप्रभ उत्पात पर्वत दश हजार योजन का ऊंचा दश हजार गाउ का ऊंडा व मूल में दश हजार योजन का चौडा कहा है. शक्रेन्द्र समान सब लोगपाल व अच्युतेन्द्रतक

शब्दार्थ

त स० सर्व में इ० एक सरिखा ॥ ४७ ॥ बा० बादर वनस्पाते का० काया की उ० उत्कृष्ट द० दश जो० योजन स० शरीर अवगाहना ॥ ४८ ॥ ज० जलचर पं० पंचेन्द्रिय ति० तिर्यंच की उ० उत्कृष्ट द० दश जो० योजन स० शत स० शरीर अवगाहना उ० उरपर स० सर्प थ० स्थलचर पं० पंचेन्द्रिय ति० तिर्यंच को उ० उत्कृष्ट ए० ऐसे ॥ ४९ ॥ सं० संभवनाथ अ० अरिहंतसे अ० अभिनन्दन अ० अरिहंत द० दश सा० सागरोपम को० कोडी स० लक्ष वी० व्यतीत हुवे स० उत्पन्न हुवे ॥ ५० ॥ द० दश प्रकार का

सूत्र

अच्चुयत्ति ॥ सव्वेसिं पमाणं इक्कं ॥ ४७ ॥ बायर वणस्सइ काइयाणं उक्कोसेणं दसजोयण सयाइं सरीरोवगाहणा प० ॥ ४८ ॥ जलयरपंचिंदिय तिरिक्ख जोणियाणं उक्कोसेणं दस जोयण सयाइं सरिरोवगाहणा प० उरपरिसप्प थलयर पंचिंदिय तिरिक्खजोणियाणं उक्कोसेणं एवंचेव ॥४९॥ संभवओणं अरहाओ अभिणंदणे अरहा दसहिं सागरोवम कोडिसयसहस्सेहिं वीइक्कंतेहिं समुप्पण्णे ॥ ५० ॥ दसविहे अणंतए पण्णत्ते

भावार्थ

सब इन्द्रके उत्पात पर्वत का अधिकार एक सरिखा जानना ॥ ४७ ॥ बादर वनस्पति काय की शरीर अवगाहना उत्कृष्ट दश हजार योजन की जानना ॥४८॥ जलचर पंचेन्द्रियतिर्यंच की उत्कृष्ट शरीर अवगाहना एक हजार योजन की जानना व उरपर सर्प स्थलचर पंचेन्द्रिय तिर्यंच की शरीर अवगाहना उत्कृष्ट एक हजार योजन की जानना ॥४९॥ दश लाखक्रोड सागरोपम श्री संभवनाथ अरिहंत से व्यतीत हुवे पीछे श्री अभिनंदन स्वामी हुवे ॥ ५० ॥ दश प्रकार के अनंत कहे हैं. १ नाम अनंत २ स्थापना अनंत ३

शब्दार्थ

अ० अनंत ना० नाम ठ० स्थापना द० द्रव्य ग० गणना प० प्रदेश ए० एक दु० द्विधा दे० देशविस्तार स० सर्वविस्तार सा० शाश्वत ॥ ५१ ॥ उ० उत्पाद पूर्व की द० दशवत्थु ॥ ५२ ॥ अ० अस्ति न० नास्ति प० प्रवाद पूर्व की द० दश चूलिका वत्थु ॥ ५३ ॥ द० दश प्रकार की प० प्रतिसेवना द० दर्प प० प्रमाद अ० अनाभोग आ० आतुर आ० आपदा सु० शुद्धसंकित स० सहसात्कार भ० भय प०

सूत्र

तं० णामाणंतए, ठवणाणंतए, दव्वाणंतए गणणाणंतए, पएसाणंतए, एगयोगाणंतए, दुहओणंतए, देसवित्थाराणंतए, सव्ववित्थाराणंतए, सासयाणंतए ॥ ५१ ॥ उप्पायपुव्वस्सणं दसवत्थू प० ॥ ५२ ॥ आत्थिणत्थिप्पवाय पुव्वस्सणं दसचूलावत्थू प० ॥ ५३ ॥ दसविहा पडिसेवणा प० (गाथा) दप्पपमायाणाभोगे, आउरे

भावार्थ

द्रव्य अनंत ४ गणना अनंत ५ प्रदेश अनंत ६ एक अनंत ७ द्विधा अनंत ८ एक आकाश प्रदेश सो देश विस्तार अनंत ९ सब आकाशास्ति काय शाश्वत अनंत सो सब विस्तार अनंत और १० जीवादि षट् द्रव्यशाश्वत हैं सो शाश्वतानंत॥५१॥उत्पाद पूर्वकी दशवत्थु कही ॥५२॥ अस्तिनास्ति उत्पादपूर्व की दश चूलिका वत्थु कही ॥ ५३ ॥ दश प्रकार की प्रतिसेवना कही १ दर्प प्रतिसेवना कामवशसे दोष लगावे २ प्रमाद प्रतिसेवना प्रमादसे दोष लगावे ३ अनाभोग सो विस्मृति से दोष लगावे ४ आतुर सो ग्लान बना हुवा आतुरतासे दोष लगावे ५ आपदा सो दुःख आये दोष लगावे ६ संकित बनकर दोष लगावे ७

शब्दार्थ

प्रद्वेष वि० विमर्श ॥ ५४ ॥ द० दश आ० आलोचना दोष आ० वर्जकर आ० अनुमान से दि० देखा हुवा बा० बादर सु० सूक्ष्म छ० गुप्त स० मोटे से ब० बहुत जन अ० अव्यक्त त० तत्सेवी ॥ ५५ ॥ द० दश स्थान स० युक्त अ० अनगार अ० योग्य है अ० आत्म दोष आ० आलोवने को जा०

सूत्र

आवईसुयसंकिए सहसागारे भयप्पयोस वीमसा (१) ॥ ५४ ॥ दस आलोयणा दोसा प० आकंपइत्तु अणुमाणइत्तुजंदिट्ठ बायरंच सुहुमंवा; छन्नं सद्दाउलगं बहुजन अव्वत्ततस्सेवी (१) ॥ ५५ ॥ दसहिं ठाणेहिं संपन्ने अणगारे अरिहइ

भावार्थ

सहसात्कार से दोष लगावे ८ नृपादिभय से ९ प्रद्वेष मात्सर्यतासे दोष लगावे और १० विमर्श से दोष लगावे ॥ ५४ ॥ आलोचना दोष के दशभेद कहे हैं १ प्रथम वैयावृत्यादिक खुशामतकर आलोवे २ प्रायश्चित्तादिकका अनुमान कर आलोवे ३ आचार्यने जो दोष देखे होवे उन्हें ही आलोवे. ४ बडे २ दोषों की आलोचना करे परंतु छोटे २ दोषों को तुच्छ जान उन की आलोचना करे नहीं ५ छोटे २ दोषों की आलोचना करे और बडे दोषो को छोड देवे ६ गुरु अच्छी तरह से सुने नहीं इस तरह आलोवे ७ बहुत जोर २ से बोलकर आलोचना करे ८ अन्य की साथ अपनी आलोचना करे ९ प्रायश्चित्त के अनजान की पास अपनी आलोचना करे और १० जो दोष गुरुसे हुवा होवे उस की आलोचना आप स्वयं करे ॥ ५५ ॥ दश गुण संपन्न अनगार अपने दोषों की आलोचना करने योग्य होता है जाति

शब्दार्थ

जाति संपन्न कु० कुलसंपन्न ए० ऐसे ज० जैसे अ० आठवे ठाणे में खं० क्षमावन्त दं० दमितेन्द्रिय अ० अमायी अ० अपच्छानुतापी ॥५६॥ द० दश स्थान सं० युक्त अ० अनगार प० योग्य है आ० आलोचना प० अंगीकारकरने को आ० आचारवंत आ० आधारवंत जा० यावत् अ० परलोक देखने वाला पि० प्रियधर्मी द० दृढधर्मी ॥ ५७ ॥ द० दश प्रकार का पा० प्रायश्चित्त आ० आलोचना जा० यावत् अ० अनवस्था पा० पारांचिक ॥ ५८ ॥ द० दशप्रकारका मि० मिथ्या

सूत्र

अत्तदोसं आलोइत्तए तं० जाइसंपन्ने कुलसंपन्ने; एवं जहा अट्ठट्ठाणे-खंते दंते अमाई अपच्छाणुतावी ॥ ५६ ॥ दसहिं ठाणेहिं संपन्ने अणगारे अरिहइ आलोयणं पडिच्छित्तए, तं० आयारवं आहारवं, जाव अवायदंसी, पियधम्मे, दढधम्मे ॥ ५७ ॥ दसविहे पायच्छित्ते प० तं० आलोयणारिहे, जाव अणवट्ठप्पारिहे, पारंचियारिहे, ॥ ५८ ॥ दसविहे मिच्छत्ते प० तं० अधम्मे धम्मसन्ना, धम्मे अधम्मसन्ना,

भावार्थ

संपन्न कुल संपन्न वगैरह आठवे ठाणे जैसे कहना, और अमायी व पीछे तपे नहीं ॥ ५६ ॥ दशगुण संपन्न अणगार आलोयणा करके प्रायश्चित्तलेने योग्य हो सकता है. आचारवंत, धारणावंत यावत् परलोक का कष्ट देखनेवाला प्रियधर्मी, दृढधर्मी ॥ ५७ ॥ दश प्रकार का प्रायश्चित्त कहा है आलोयणारिह यावत् अनवस्थारिह और पारांचिक कितनेक काल तक व्रतसे अलग करके व दोषटाल करके पुनःव्रतमें स्थापन करना यह पारांचिक ॥ ५८ ॥ दश प्रकार

शब्दार्थ

त्त अ० अधर्म में ध० धर्म स० संज्ञा ध० धर्ममें अ० अधर्मसंज्ञा उ० उन्मार्गमें म० मार्गसंज्ञा म० मार्गमें उ० उन्मार्ग स० संज्ञा अ० अजीवमें जी० जीव स० संज्ञा जी० जीवमें अ० अजीव स० संज्ञा अ० असाधु में सा० साधु स० संज्ञा सा० साधुमें अ० असाधु संज्ञा अ० अमुक्तमें मु० मुक्तसंज्ञा मु० मुक्तमें अ० अमुक्तसंज्ञा ॥ ५९ ॥ चं० चंद्रप्रभ अ० अरिहंत द० दश पूर्व स० लक्ष स० सर्वआयुष्य पा० पालकर सि० सिद्धहुवे जा० यावत् प० मुक्तहुवे ॥ ६० ॥ ध० धर्मनाथ अ० अरिहंत द० दशवर्ष स० लक्ष स०

सूत्र

उम्मग्गे मग्गसन्ना, मग्गे उम्मग्गसन्ना, अजीवेसु जीवसन्ना, जीवेसु अजीवसन्ना, असाहुसु साहुसन्ना, साहुसु असाहुसन्ना; अमुत्तेसु मुत्तसन्ना; मुत्तेसु अमुत्तसन्ना,॥५९॥ चंदप्पभेणं अरहा दसपुव्वसतसहस्साइं सव्वाउयं पालइत्ता सिद्धे जाव पहीणे ॥६०॥ धम्मेणं अरहा दस वाससयसहस्साइं सव्वाउयं पालइत्ता सिद्धे जाव पहीणे

भावार्थ

का मिथ्यात्व कहा है १ अधर्म में धर्मकी संज्ञा २ धर्ममें अधर्मकी संज्ञा ३ उन्मार्गमें मार्ग की संज्ञा ४ मार्गमें उन्मार्ग की संज्ञा ५ अजीवमें जीव की संज्ञा ६ जीवमें अजीव की संज्ञा ७ असाधुमें साधु ८ साधु में असाधु ९ अमुक्तमें मुक्त की संज्ञा और २० मुक्तमें अमुक्तकी संज्ञा ॥ ५९ ॥ श्रीचंद्रप्रभ अरिहंत सब मीलाकर दश लक्ष पूर्व आयुष्यपालकर सिद्धहुवे यावत् सब दुःखसे मुक्तहुवे ॥ ६० ॥ श्री

शब्दार्थ

सर्वआयुष्य पा० पालकर सि० सिद्धहुवे जा० यावत् प० मुक्तहुवे ॥ ६१ ॥ न० नमिनाथ अ० अरिहंत द० दशवर्ष स० सहस्र स० सर्वआयुष्य पा० पालकर सि० सिद्ध जा० यावत् प० मुक्तहुवे ॥ ६२ ॥ पु० पुरुषसिंह वा० वासुदेव द० दशवर्ष स० सहस्र स० सर्वआयुष्य पा० पालकर छ० छठी त० तमा पु० पृथ्वी में ने० नारकीपने उ० उत्पन्न हुवे ॥ ६३ ॥ ने० नेमिनाथ अ० अरिहंत द० दश ध० धनुष्य उ० ऊंचे उ० ऊंचपने द० दशवर्ष स० शत स० सर्व आयुष्य पा० पालकर सि० सिद्धहुवे जा० यावत् प० मुक्त

सूत्र

॥ ६१ ॥ नमीणं अरहा दस वाससहस्साइं सव्वाउयं पालइत्ता सिद्धे जावपहीणे ॥ ६२ ॥ पुरिससीहेणं वासुदेवे दसवास सहस्साइं सव्वाउयं पालइत्ता छट्ठीए तमाए पुढवीए नेरइयत्ताए उववन्ने; ॥ ६३ ॥ नेमीणं अरहा दसधणूइं उड्ढं उच्चत्तेणं, दसवास सयाइं सव्वाउयं पालइत्ता सिद्धे जावपहीणे ॥ ६४ ॥ कण्हेणं

भावार्थ

धर्मनाथ अरिहंत दशलक्ष वर्ष का आयुष्य पालकर सब दुःखसे मुक्तहुवे ॥ ६१ ॥ श्रीनामिनाथ अरिहंत दशहजार वर्षका आयुष्य पालकर सिद्धहुवे यावत् सब दुःखसे मुक्तहुवे ॥ ६२ ॥ पांचवा पुरुषसिंह वासुदेव सब मीलकर दश हजार वर्ष का आयुष्य पालकर छठी तम नामक नरक में नारकीपने उत्पन्न हुवे ॥ ६३ ॥ श्री नेमीनाथ अरिहंतकी उत्कृष्ट दश धनुष्यकी अवगाहना थी और दश सो (एक हजार) वर्ष आयुष्य पालकर सिद्ध हुवे यावत् सब दुःख से मुक्त हुवे ॥ ६४ ॥ श्री कृष्ण वासुदेव के शरीर की अव-

शब्दार्थ

हुवे ॥ ६४ ॥ क० कृष्ण वासुदेव द० दश धनुष्य ऊ० ऊंचे उ० ऊंचपने द० दशवर्ष स० शत स० सर्व आ० आयुष्य पा० पालकर त० तीसरी बा० बालुप्रभा पु० पृथ्वीमें ने० नारकीपने उ० उत्पन्न हुवे ॥६५॥ द० दश प्रकार के भ० भवनवासी देव अ० असुर कुमार जा० यावत् थ० स्थनित कुमार ॥ ६६ ॥ ए० उन द० दश प्रकार के भ० भवनवासी को द० दश चे० चैत्यवृक्ष अ० अश्वस्थ स० सप्तपर्ण सा० सामली उं० उंबर सि० सिरीस द० दधिपर्ण वं० वंजुल प० पलास व० वड क० कनयर ॥ ६७ ॥ द० दशप्रकार

सूत्र

वासुदेवे दसधणूइं उड्ढं उच्चत्तेणं, दसवाससयाइं सव्वाउयं पालइत्ता तच्चाए बालुयप्पभाए पुढवीए नेरइयत्ताए उववन्ने ॥ ६५ ॥ दसविहा भवणवासी देवा पण्णत्ता तं० असुर कुमारा जाव थणियकुमारा ॥ ६६ ॥ एएसिणं दसविहाणं भवणवासीणं दसचेइय रुक्खा प० तं० अस्सोट्ठ सत्तिवन्ने, सामलि उंबर सिरीस दहिवन्ने ॥ वंजुल पलास वप्पा; यएवकण्णिया रुक्खेय ॥ १ ॥ ६७ ॥ दसविहे सुक्खे प० तं० आरोग्ग दीहमाउ,

भावार्थ

गाहना उत्कृष्ट दश धनुष्य की थी और दश सो (एक हजार) वर्ष का आयुष्य पालकर तीसरी बालुप्रभा नामक नरक में नारकी पने उत्पन्न हुवे ॥६५॥ दश प्रकार के भुवनपति देव कहे हैं. १ असुरकुमार २ नागकुमार यावत् स्थनित कुमार ॥६६॥ इन दश भुवनपति देवोंको दश प्रकार के चैत्यवृक्ष कहे हैं १ अश्वस्थ २ सप्तपर्ण ३ सामली ४ उंबर ५ सिरीस ६ दधिपर्ण ७ वंजुल ८ पलास ९ वड और १० कणयर ॥६७॥ दश

शब्दार्थ

का सु० सुख आ० आरोग्यता दी० दीर्घायुष्व अ० धनाढ्यता का० काम भो० भोग सं० संतोष अ० अस्ति सु० सुख भोग नि० दीक्षा अ० अनाबाध ॥ ६८ ॥ द० दश प्रकार का उ० उपघात उ० उद्गम उ० उत्पातन ज० जैसे पं० पांच वे ठाणे में जा० यावत् प० परिहरण णा० ज्ञान दं० दर्शन च० चारित्र अ० अवियत्त मा० मूर्छा ॥ ६९ ॥ द० दश प्रकार की वि० विशुद्धि उ० उद्गम उ० उत्पातन जा० यावत्

सूत्र

अड्डेजं कामभोग संतोसो अत्थिसुहभोग निक्खममेव तत्तो अणावाहे ॥ १ ॥ ६८ ॥ दसविहे उवघाए प० तं० उग्गमोवघाए, उप्पायणोवघाए, जहा पंचमेट्ठाणे जाव परिहरणोवघाए णाणोवघाए, दंसणोवघाए, चरित्तोवघाए, अवियत्तोवघाए, सारक्खणोवघाए, ॥ ६९ ॥ दसविहा

भावार्थ

प्रकार के सुख कहे हैं १ आरोग्य सोनिरोगीपना २ दीर्घ आयुष्य ३ धनिकपना ४ शब्दरूपमें सुख होनासो काम ५ गंधरस वगैरह भोग ६ संतोष ७ जिस समय जैसा इच्छे वैसे भोग मीलजाय ८ सुख भोग सो अनिन्दित काम भोग ९ निष्क्रम सो संसार छोडकर नीकलना और १० अनाबाधसो मोक्षसुख ॥ ६८ ॥ दश प्रकारके उपघात कहे हैं १ उद्गमन दोष २ उत्पातन यावत् अकल्पनीय उपकरण ग्रहण करना वगैरह दोष पांचवे ठाणे जैसे कहना ६ ज्ञान का उपघात, दर्शन का उपघात, चारित्र का उपघात, विनयादि करे नहीं सो अवियत्तोपघात और शरीरादिकमें मूर्च्छा करे सो सारक्खणोपघात ॥ ६९ ॥ दश प्रकार की विशुद्धि कही है उद्गमन दोष से बचना सो उद्गमन विशुद्धि यावत् शरीर में ममत्व नहीं करना सो सार

शब्दार्थ

सा० मूर्च्छा ॥ ७० ॥ द० दश प्रकार का सं० संक्लेश उ० उपाधि उ० उपाश्रय क० कषाय भ० भक्त पान म० मन व० वचन का० काया ना० ज्ञान दं० दर्शन च० चारित्र ॥ ७१ ॥ द० दश प्रकार का अ० असंक्लेश उ० उपाधि जा० यावत् च० चारित्र ॥ ७२ ॥ द० दश प्रकार का ब० बल सो० श्रोतेन्द्रिय जा० यावत् फा० स्पर्शेन्द्रिय ना० ज्ञान दं० दर्शन च० चारित्र त० तप वी० वीर्य ॥ ७३ ॥ द० दश

सूत्र

विसोही प० तं० उग्गमविसोही, उप्पायणविसोही, जाव सारक्खणविसोही, ॥ ७० ॥ दसविहे संकिलेसे प० तं० उवहि संकिलेसे, उवस्सय संकिलेसे कसाय संकिलेसे, भत्तपाण संकिलेसे, मण संकिलेसे, वय संकिलेसे काय संकिलेसे नाण संकिलेसे दंसण संकिलेसे चरित्त संकिलेसे ॥ ७१ ॥ दसविहे असंकिलेसे प० तं० उवहि असंकिलेसे जाव चरित्त असंकिलेसे ॥ ७२ ॥ दसविहे बले प० तं० सोइंदिय बले जाव फासिंदियबले, नाणबले, दंसणबले, चरित्तबले, तवबले, वीरियबले

भावार्थ

क्खण विशुद्धि ॥ ७० ॥ दश प्रकार का संक्लेश कहा है १ उपाधि-उपकरण-संक्लेश २ उपाश्रयसंक्लेश ३ कषाय ४ भक्तपान ५ मन ६ वचन ७ काय ८ ज्ञान का ९ दर्शनका और १० चारित्र का संक्लेश ॥ ७१ ॥ दश प्रकारका असंक्लेश(समाधिके कारण)कहे हैं उपाधि असंक्लेश यावत् चारित्र असंक्लेश॥७२॥दश प्रकारके बल कहे हैं १ श्रोतेन्द्रियका बल यावत् स्पर्शेन्द्रियका बल ज्ञानबल, दर्शनबल, चारित्रबल, तपबल और वीर्यबल

शब्दार्थ

प्रकार का स० सत्य ज० जनपद स० संमत ठ० स्थापना ना० नाम रू० रूप प० प्रत्यय व० व्यवहार भा० भाव जो० योग ओ० उपमा ॥ ७४ ॥ द० दश प्रकार की मो० मृषा को० क्रोध मा० मान मा०

सूत्र

॥७३॥ दसविहे सच्चे प० तं० जणवय सम्मयट्ठवणा, नामे रूवे पडुच्च सच्चेय; ववहार भावजोगे, दसमे ओवम्म सच्चेय (१) ॥ ७४ ॥ दसविहे मोसे प० तं०

भावार्थ

॥ ७३ ॥ दश प्रकार के सत्य कहे हैं १ जनपदसत्य-जिस देशमें जिस २ अर्थका वाचक जो २ रूढशब्द होवे उस नाम से कहना सो जैसे पानी को कोकण देशमें पिच्च कहते हैं, उस को जल, नीर वगैरह पृथक् २ नामसे बोलाते भी हैं. २ संमत सत्य अरविंद सो पंकज ३ स्थापना सत्य सो किसी को किसी नाम से स्थापना. जैसे काष्ट को चित्रित कर स्थापना करना ४ नामसत्य जैसानाम रखने में आया होवे सो. कुलवर्धन नाम वाले को कुलवर्धन कहना फीर चाहे कुलबढता होवे या नहीं ५ रूप सत्य सो साधु का रूप (वेष) धारण किया परंतु गुण नहीं है तो भी उसे साधु कहना ६ अन्यवस्तु का आश्रय लेकर प्रतीती करना सो प्रतीत्य सत्य जैसे अनामिका से कनिष्ट अंगुली छोटी है या तर्जनी बडी है ७ व्यवहार सत्य घडा गलता है गिरि जलता है वगैरह बोलना ८ भाव सत्य निश्चयात्मक ९ जोगसत्य सो संबंध से कहाजावे जैसे दंड के संबंध से दंडी वगैरह १० औपम्य सत्य जैसे समुद्र जैसा तलाव ॥ ७४ ॥ दश प्रकार के असत्य (मृषा) कहे. १ क्रोधाश्रित २ मानाश्रित ३ मायाश्रित ४ लोभ ५ राग ६ द्वेष ७ हास्य

७८

ब्दार्थ माया लो० लोभ पि० राग दो द्वेष हा० हास्य भ० भय अ० आख्यात उ० उपघात नि०आश्रित ॥७५॥ द० दश प्रकार का स० सत्यमृषा उ० उत्पन्न वि० विगत उ० उत्पन्न विगत जी० जीव अ० अजीव जी० जीवा जीव अ० अनंत प० परित्त अ० अद्धा अ० अद्धद्धा ॥ ७६ ॥ दि० दृष्टिवाद के द० दशनाम दि० दृष्टिवाद हे० हेतुवाद भू० भूतवाद त० तथ्यवाद स० सम्यक् वाद ध० धर्मवाद भा० भाषाविजय पु०

सूत्र कोहेमाणे माया, लोभे पिज्जे तहेव दोसेय; हास भये अक्खाइय, उवघाए निस्सिए दसमे (१) ॥ ७५ ॥ दसविहे सच्चामोसे प० तं० उप्पन्नमीसए, विगय मीसए, उपन्नविगय मीसए, जीव मीसए, अजीव मीसए, जीवाजीव मीसए अणंत मीसए, परित्त मीसए अद्धा मीसए, अद्धद्धा मीसए ॥ ७६ ॥ दिट्ठिवायस्सणं दस नामधिज्जा प० तं० दिट्ठिवाएइवा, हेतुवाएइवा, भूयवाएइ वा, तच्चावाएइवा, सम्मावाएइवा,

भावार्थ ८ भय ९ आख्यात विकथा और १० उपघात आश्रित ॥ ७५ ॥ दश प्रकार के सत्य मृषा कहे १ उत्पन्न मिश्र इस ग्राम में आज सो बालक का जन्म हुआ ऐसा कहना सो २ विगत मिश्र यहां सो मरगये सो ३ उत्पन्न विगत मिश्र सो का जन्म हुवा और सो मरगये ४ जीव मिश्र ५ अजीव मिश्र ६ जीवाजीव मिश्र ७ अनंत मिश्र ८ परित्त मिश्र ९ अद्धा मिश्र सो काल संबंधी और १० अद्धद्धा मिश्र ॥ ७६ ॥ दृष्टिवाद के दश नाम कहे हैं १ दृष्टिवाद २ हेतुवाद ३ भूतवाद ४ तथ्यवाद ५ सम्यक्त्व वाद ६ धर्मवाद

शब्दार्थ

पूर्वगत अ० अनुयोग गत स० सर्व पा० प्राण भू० भूत जी० जीव स० सत्व सु० सुखावह ॥ ७७ ॥ द० दश प्रकार के स० शस्त्र अ० अग्नि वि० विष लो० लवण सि० स्नेह खा० क्षार अ० अंबट दु० दुष्पयुक्त म० मन व० वचन का० काया भाव अ० अविरति ॥ ७८ ॥ द० दश प्रकार का दो० दोष जा० जाति म० मतिभंग प० प्रशस्त प० परिहरन स० सलक्षण का० कारन हे० हेतु सं० संक्रमण

सूत्र

धम्मावाएइवा, भासाविजयेइवा, पुव्वगएइवा, अणुओगएइवा, सव्वपाण भूयजीव सत्तसुहावहेइवा, ॥ ७७ ॥ दसविहे सत्थे प० तं० सत्थ मग्गी विसं लोणं सिणंहो खारमंबिलं दुप्पउत्तो मणोवाया, काओ भावोय अविरई ॥ १ ॥ ७८ ॥ दसविहे दोसे प० तं० तज्जायदोसे, मइभंगदोसे, पसत्थारदोसे, परिहरणदोसे, सलक्खणकारण-

भावार्थ

७ भाषा विजय ८ पूर्वगत ९ अनुयोग गत और १० सब प्राण भूत जीव सत्व सुखावह ॥ ७७ ॥ दश प्रकार के शस्त्र कहे हैं १ अग्नि २ विष ३ लवण ४ स्नेह सो तैल घृतादि ५ भस्मादिक्षार ६ कांजी वगैरह खटाइ ७ खराब प्रवर्ताया हुवा मन ८ वचन ९ काया और १० अविरति रूप भाव ॥ ७८ ॥ दश प्रकार के दोष कहे हैं १ तज्जात दोष सो जाति कुलका दोष देना २ मतिभंग सो बुधिका नाश होना ३ प्रशास्ता सो मर्यादाकारी सभानायक का दोष ४ परिहरण दोष सो वादी प्रतिवादी की असेव्य वस्तु का सेवन करना ५ स्वलक्षण दोष सो उपयोग लक्षण वाला जीव है परंतु वह यव

नि० निग्रह व० वस्तु ॥ ७९ ॥ द० दश प्रकार का वि० विशेष व० वस्तुतज्जात ए० एकार्थिक का० कारण प० प्रत्युत्पन्न नि० नित्य हि० हितार्थ अ० आत्म उ० उपनीत ॥ ८० ॥ द० दश प्रकार

हेउ दोसे; संकामणं निग्गह वत्थु दोसे ॥ १ ॥ ७९ ॥ दसविहे विसेसे प० तं०
वत्थु तज्जाय दोसेय, दोसेएगट्ठिएइय, कारणेय, पडुप्पन्ने, दोसेनिच्चहियट्ठमे ॥ १ ॥
अत्तणा उवणीएय, विससेनीयते दस ॥ ८० ॥ दसविहे सुद्धावायाणुजोगे प० तं०

प्रमाण है ६ कारण दोष ७ हेतु दोष ८ संक्रामण दोष ९ निग्रह दोष और १० वस्तुक्षेप॥७९॥दश प्रकारके विशेष दोष कहे १ वस्तु दोष सो अन्यकृत छेदादि• सर्वथा दुषित कहे २ तज्जात दोष सो जन्म धर्म कर्मादिक का दोष नीकाले ३ उक्तदोनों प्रकार के दोष उपर्युक्त दश दोषों में कहाये गये हैं. शेष आठ दोष रहे हैं उन का समावेश इस दोष शब्द में होता है. इन दोनों की तरह शेष का भी विशेष अर्थ समझना सो दोषायदोष; अथवा किसी के दोष में दोष नीकाले जैसे यह असत्य भाषा बहुत कठोर बोला यह दोषाय दोष ४ एकार्थी दोष सो बहुत शब्द का एक ही अर्थ करे जैसे औस, वाणी, पानी, वैल वगैरह शब्दका एकगौ अर्थ करे ५ कारण दोष सो जिसकार्यका जो कारण होवे सो नहीं कहते अन्यही बतलावे सो कारण दोष ६ प्रत्युत्पन्न दोष सो भूत भविष्य को छोडकर वर्तमान को माने ७ सब वस्तु को नित्य माने सो नित्य दोष ८ दीयमढ सो विवाद व्याख्यानादि में निरर्थक कथा वगैरह कहकर समय व्यतीतकरे ९ आत्म कृत दोष और १० परोपनीत सो पर प्रापित दोष ॥ ८० ॥ दश प्रकार से शुद्ध वचनानुयोग कहा है

शब्दार्थ

का सु० शुद्ध वा० वचन अ० अनुयोग चं० चकार मं० मकार पिं० अपिकार से० श्रेयस्कार सा० सायंकार ए० एकत्व पु० पृथकत्व सं० समास सं० संक्रामित भि० भिन्न ॥८१॥ द० दश प्रकार का दा० दान अ० अनुकंपा सं० संग्रह भ० भय का० कारुणिक ल० लज्जा गा० गर्व अ० अधर्म ध० धर्म को० क्रोधसे क० कीयाहुवा है ॥ ८२ ॥ द० दश प्रकार की ग० गति नि० नरकगति नि० नरक विग्रहगति ति० तिर्यंच

सूत्र

चंकारे, मंकारे, पिंकारे, सेयंकारे, सायंकारे, एगत्ते, पुहुत्ते, संजूहे, संकामिए, भिन्ने,॥८१॥
दसविहे दाणे प० तं० अणुकंपा संगहे चेव, भयाकालुणिएतिय, लज्जाए गारवेणंच,
अधम्मेय पुणसत्तमे ॥ १ ॥ धम्मे अट्ठमेवुत्ते, काहिइय कयंतिय ॥ ८२ ॥ दसविहा

भावार्थ

१ चकार २ मकार ३ अपिकार ४ श्रेयस्कार ५ सायंकार ६ एकत्व ७ पृथकत्व ८ समास ९ संक्रामित और १० कालक्रम भेदादि सो भिन्न ॥ ८१ ॥ दश प्रकार के दान कहे हैं १ अनुकंपा दान २ संग्रह दान सो कष्ट आनेपर देवे ३ भयसे देवे ४ शोकसे देवे अर्थात् किसी के मृत्युपीछेदेवे ५ लज्जा से देवे ६ अभिमान से देव ७ अधर्म दान सो वेश्यादिक को विषय बुद्धि से देवे ८ धर्मदान सो सुपात्र को देना ९ क्रोध से देवे और १० उपकार किये हुवे को देवे ॥ ८२ ॥ दश प्रकार की गति कही. १ नरक गति २ नरक विग्रह गति ३ तिर्यंच गति ४ तिर्यंच विग्रहगति ५ मनुष्यगति ६ मनुष्य विग्रहगति ७ देवगति ८

शब्दार्थ

गति ति० तिर्यंच विग्रहगति जा० यावत् सि० सिद्धगति सि० सिद्धविग्रहगति ॥ ८३ ॥ द० दश मुंड सो० श्रोतेन्द्रिय मुंड जा० यावत् फा० स्पर्शेन्द्रियमुंड को० क्रोध मुंड जा० यावत् लो० लोभमुंड सि० शिरमुंड ॥ ८४ ॥ द० दश प्रकार की सं० संख्या प० परिकर्म व० व्यवहार र० राज्य गणित रा० राशि क० कला स० सवर्ण जा० जाव ताव व० वर्ग घ० घन व० वर्गावर्ग क० कल्प ॥ ८५ ॥ द० दश प्रकार का

सूत्र

गई प० तं० निरयगई, निरयविग्गहगई; तिरियगई तिरिय विग्गहगई; एवं जाव सिद्धगई, सिद्धविग्गहगई, ॥८३॥ दसमुंडा, प० तं० सोइंदियमुंडे, जाव फासिंदियमुंडे; कोहे जाव लोभमुंडे, सिरमुंडे ॥८४॥ दसविहे संखाणे प० तं० परिकंमं ववहारे, रज्जुरासी कला सवन्नेय; जावं ताव तिवग्गो; घणोय तहवग्गवग्गोवि ॥ १ ॥ कप्पोय ॥ ८५ ॥

भावार्थ

देव विग्रहगति ९ सिद्धगति और १० सिद्ध विग्रहगति ८३ ॥ दश प्रकार के मुंड कहे हैं. श्रोतेन्द्रिय मुंड यावत् स्पर्शेन्द्रिय मुंड, क्रोध मुंड यावत् लोभ मुंड और शिरमुंड ॥ ८४ ॥ दश प्रकार की संख्या कही. १ संकलनादि अनेक गणित सो परिकर्म २ व्यवहार गणित ३ राज्य गणित ४ राशि गणित ५ कलासवर्ण गणित ६ जाव ताव गणित ७ वर्ग ८ घन ९ वर्गावर्ग और १० कल्प सो काष्ठादि छेदन करना सो ॥ ८५ ॥ दश प्रकार के प्रत्याख्यान १ अनागत तप सो गुरु आदि की वैय्यावृत्य

शब्दार्थ

प० प्रत्याख्यान अ० अनागत अ० अतिक्रान्त को० कोटि सहित नि० नियमित सा० आगार अ० अनागार प० परिमाणकृत नि० निर्विशेष सं० संकेत अ० अर्धकाल प० प्रत्याख्यान द० दश प्रकार के ॥८६॥ द० दश प्रकार की स० समाचारी इ० इच्छा समाचारी मि० मिथ्यादुष्कृत्य त० तथाकार आ० आवस्यही

सूत्र

दसविहे पच्चक्खाणे प० तं० अणागय मइक्कंतं, कोडीसहियं नियंटियंचेव,सागार मणागारं, परिमाणकडं निरवसेसं ॥ १ ॥ संकेयंचेव अद्धाए पच्चक्खाणं दसविहंतु ॥ १ ॥ ८६ ॥ दसविहा सामायारी प० तं० इच्छा मिच्छा तहक्कारो, आवस्सिया

भावार्थ

करने का अवसर अनागत में आवेगा इस लिये आगामी तप वर्तमान में करूं २ अतिक्रान्त सो व्याख्यानादि कार्य होनेसे फीर तपश्चर्या करे ३ कोटि सहित दो करन तीनयोग या तीन करण तीन योग ४ नियमित निश्चय करे कि यह प्रत्याख्यान पूर्ण हुवे पीछे दूसरा तप करूंगा ५ अनत्था भोग वगैरह आगार सहित तपस्या करे ६ आगार रहित तप करे सो अनागार ७ परिमाण सो दाति प्रमुखका ८ निर्विशेष सो चौ विहार तप ९ संकेत सो गंठी मुठी सहित और १० अद्धाकाल सो काल की मर्यादा सहित पौरसी आदि॥८६॥ दश प्रकार की समाचारी कही है १ इच्छा समाचारी सो गुर्वादिक की इच्छानुसार कार्य करे २ मिथ्या सो भूलसे अयोग्य आचरण होगया होवे उसका मिथ्या दुष्कृतलेना ३ गुर्वादिक के वचन को तहत्ति कहना ४ जाते आवस्सही कहना ५ कार्यकर पीछे आतेनिस्सही कहना ६ गुरुसे पूछकर कार्य करना

शब्दार्थ

नि० निस्सही आ० आपुच्छना प० प्रतिपुच्छा छं० छंदना नि० निमंत्रणा उ० उपशांत का० काल ॥ ८७॥ स० श्रमण भ० भगवन्त म० महावीर छ० छद्मस्थ का० काल में अ० छेली रा० रात्रि में द० दश म० महास्वप्न पा० देखकर प० जगे ए० एक म० महाघोररूप दि० दिप्तवंत ता० तालपिशाच को सु० स्वप्न में प० पराजित प० देखकर प० जगे ए० एक म० बडा सु० शुक्ल प० पांखका पु० पुरुषकोकिलाको सु० स्वप्न में पा०

सूत्र

निसीहिया; आपुच्छणाय पडिपुच्छा, छंदणाय निमंतणा ॥ १ ॥ उवसंपयाय काले सामायारी भवे दसहा ॥ ८७ ॥ समणे भगवं महावीरे छउमत्थ कालियाए अंतिमराइयंसि इमे दस महासुमिणे पासित्ताणं पडिबुद्धे तं० एगंचणं महाघोररूवंदित्तधरं तालपिसायं सुमिणे पराइयं पासित्ताणं पडिबुद्धे, एगंचणं महंसुक्किल्लपक्खगं पुंसको

भावार्थ

स्वाध्यायादि की वारंवार पृच्छा करना ८ गुरुके अभिप्राय अनुसार चलना ९ लाये हुवे आहारादिक की निमंत्रणा करना और १० मैं आपकाही हूं ऐसा कहना ॥ ८७ ॥ श्री श्रमण भगवंत महावीर स्वामी छद्मस्थ अवस्था की अंतिम रात्रिमें दश स्वप्न देखकर जागृत हुवे. १ एकमहाघोर दिप्तरूप का धारक ताड जैसा ऊंचा ताल पिशाच को पराजित कीया देखकर जागृत हुवे २ एक बडा श्वेत पांखवाला पुंस्को

१ श्री श्रमण भगवन्त महावीर स्वामी नें छद्मस्थ अवस्था की अन्तिम रात्रि में गोदुहासन से ध्यान करते २ मुहूर्त मात्र की निद्रा में दश स्वप्न देखे.

शब्दार्थ

देखकर प० जगे ए० एक म० बडा चि० चित्र विचित्र प० पांखका पुं० पुरुष कोकिलको सु० स्वप्न में पा० देखकर प० जगे ए० एक म० बडी दा० दोमाला स० सर्व र० रत्नमय सु० स्वप्न में पा० देखकर ए० एक म० बडा से० श्वेत गो० गौवर्ग पा० देखकर प० जगे ए० एक म० बडा प० पद्मसरोवर स० चारों बाजु कु० कुसुमवाला पा० देखकर प० जगे ए० एक म० बडासागर उ० लहरी स० हजारों भु० भुजासे ति० तीरे सु० स्वप्न में पा० देखकर प० जगे ए० एक म० बडा दि० सूर्य ते० तेजसे ज० जाज्वल्यमान सु०

सूत्र

इलगं सुमिणे पासित्ताणं पडिबुद्धे, एगंचणं महंचित्तविचित्तपक्खगं पुंसकोइलगं सुमिणे पासित्ताणं पडिबुद्धे, एगंचणं महंदामदुगं सव्वरयणामयं सुमिणे पासित्ताणं पडिबुद्धे, एगंचणंमहं सेयं गोवग्गं पासित्ताणं पडिबुद्धे, एगंचणं महं पउमसरं सव्वओ समंता कुसुमियं सुमिणे पासित्ताणं पडिबुद्धे, एगंचणं महं सागरं उम्मीवीई सहस्सकलियं भुयाहिं तिन्नं सुमिणे पासित्ताणं पडिबुद्धे, एगंचणं महं दिणकरं तेयसा जलं-

भावार्थ

किल स्वप्न में देखकर जागृत हुवे ३ एक बडा विविध प्रकार की पांखवाला पुंस्कोकिल स्वप्न में देखकर जागृत हुवे ४ रत्नमय दो पुष्प की मालाओं देखकर जागृत हुवे ५ श्वेतगायों का वर्ग देखकर जागृत हुवे ६ चारें दिशि में कुसुमों से आच्छादित एक बडा पद्मसरोवर देखकर जागृत हुवे ७ हजारों बाजु लहरियोंवाला एक बडा समुद्र भुजा से तीरा हुवा स्वप्न में देखा ८ तेजसे जाज्वल्यमान एक बडा सूर्य

शब्दार्थ

स्वप्न में पा० देखकर प० जगे ए० एक म० बडा ह० पीला वे० वेरुलिय व० वर्णवाला नि० स्वतःके अ० आंतरडेसे मे मा० मानुषोत्तर प० पर्वत स० सर्ववाजु से आ० वींटा हुवा प० घेराहुवा सु० स्वप्न में पा० देखकर प० जगे ए० एक म० बडा मं० मेरु पर्वत की मं० मस्तके चूलिका उ० उपर सी० सिंहासन पे ग० गये अ० आत्मा को सु० स्वप्न में पा० देखकर प० जगे ज० जो स० श्रमण अ० भगवान् म० महावीरने ए० एक म० बडा घो० घोररूप दि० दिप्तवंत ता० ताल पिशाच को सु० स्वप्न में प० पराजित

सूत्र

तं सुमिणे पासित्ताणं पडिबुद्धे, एगंचणं महं हरिवेरुलिय वण्णाभेणं नियएणं अंतेणं माणुसुत्तरं पव्वयं सव्वओ समंता आवेढिय परिवेढियं सुमिणे पासित्ताणं पडिबुद्धे, एगंचणं महं मंदरे पव्वए मंदर चूलियाए उवरिं सीहासणवरगयं अत्ताणं सुमिणे पासित्ताणं पडिबुद्धे जन्नं समणे भगवं महावीरे एगंमहं घोररूवं दित्तंधरं तालपिसायं सुविणे पराजियं पासित्ताणं पडिबुद्धे, तण्णं समणेणं भगवया महावीरेणं मोहणिज्जे कम्मे मू-

भावार्थ

स्वप्नमें में देखकर जागृत हुवे १ पीले वेरुलिय रत्न समान अपने आंतरडेसे मानुषोत्तर पर्वत को चारों दिशा में लपेटा हुवा स्वप्न में देखा और २ मेरु पर्वत की चूलिकापर रहाहुवा सिंहसन पर स्वप्नमें स्वतः को बैठेहुवे देख कर जागृत हुवे. अब दश स्वप्न का फल बतलाते हैं. १ जो श्री श्रमण भगवंत महावीर स्वामी स्वप्न में तालपिशाच को पराजित किया हुवा देखकर जागृत हुवे इस लिये श्री श्रमण भगवंत

शब्दार्थ

किया पा० देखकर प० जगे त० उससे स० श्रमण भ० भगवान् म० महावीरने मो० मोहनीय क० कर्म मू० मूलसे ओ० क्षयकीया स० श्रमण भ० भगवान् म० महावीर ए० एक सु० शुक्ल प० पांखवाला जा० यावत् प० जगे स० श्रमण भ० भगवान् म० महावीर सु० शुक्लध्यान सहित वि० विचरते हैं स० श्रमण भ० भगवान् म० महावीर ए० एक म० बडा चि० चित्रविचित्र प० पांखवाला जा० यावत् प० जगे स० श्रमण भ० भगवान् म० महावीर स० स्वसमय प० परसमय चि० विविध दु० द्वादशांगी आ० कहे प० प्ररुपे प०

सूत्र

लओ ओग्घाइए । जण्णं समणे भगवं महावीरे एगं महं सुक्किल पक्खगं जाव पडिबुद्धे, तण्णं समणे भगवं महावीरे सुक्कज्झाणोवगए विहरइ, । जण्णं समणे भगवं महावीरे एगंमहं चित्तविचित्तपक्खगं जाव पडिबुद्धे, तण्णं समणे भगवं महावीरे ससमय परसमयं चित्तविचित्तं, दुवालसंगं गणिपिडगं आघवेइ पन्नवेइ परूवेइ दंसेइ निदंसेइ उवदंसेइ तं० आयारं जाव दिट्ठिवायं । जन्नं समणे भगवं महावीरे एगं महं

भावार्थ

महावीर स्वामीने मोहनीय कर्मरूप पिशाच का मूल से नाश किया २ श्री श्रमण भगवंत महावीरने एक बडा उज्वल पांखोंवाला पुंस्कोकिल स्वप्नमें देखा इस से भगवंत शुक्लध्यान से विचरे ३ श्री श्रमण भगवंत ने विविध प्रकार की पांखोंवाला एक पुंस्कोकिल पक्षी देखा जिस से श्री श्रमण भगवंत स्वसमय परसमय की विविध प्रकार के अर्थवाली आचारांग यावत् दृष्टिवादरूप द्वादशांगी कही, प्ररूपी बतलाइ, निर्देशकी

शब्दार्थ

प्ररूपे दं० बतलावे नि० विशेष बतलावे उ० उपदेश देवे आ० आचारांग जा० यावत् दि० दृष्टिवाद स० श्रमण भ० भगवान् म० महावीर ए० एक म० बडी दा० दोमाला सं० सर्व रत्नमय जा० यावत् प० जगे स० श्रमण भ० भगवान् म० महावीरने दु० दोप्रकार का ध० धर्म प० प्ररूपा आ० आगार धर्म अ० अनगार धर्म स० श्रमण भ० भगवान् म० महावीरने ए० एक म० बडा से० श्वेत गो० गौवर्ग सु० स्वप्न में जा० यावत् प० जगे स० श्रमण भ० भगवान् म० महावीर को चा० चतुर्विध सं० संघ

सूत्र

दामदुगं सव्वरयणामयं जाव पडिबुद्धे तण्णं समणे भगवं महावीरे दुविहं धम्मं पण्णवेइ तं आगारधम्मं च, अणगारधम्मं च, । जन्नं समणे भगवं महावीरे एगं महं सेयं गोवग्गं सुमिणे जाव पडिबुद्धे. तण्णं समणस्स भगवओ महावीररस्स चाउवन्नाइन्ने संघे तं० समणा समणीओ सावगा साावियाओ । जण्णं समणे भगवं महावीरे एगं महापउमसरं जाव पडिबुद्धे तण्णं समणेणं भगवया महावीरेणं चउव्विहे

भावार्थ

व उपदेशी ४ श्री श्रमण भगवंतने रत्नमय दो पुष्पकी मालाओं देखी जिस से श्रमण भगवंतने आगार धर्म व अणगार धर्म ऐसा दो प्रकारका धर्म कहा ५ जब श्री श्रमण भगवंतने स्वप्न में श्वेत गायोंका वर्ग देखा उस से श्री श्रमण भगवंतने चतुर्विध संघ की स्थापना की (साधु, साध्वी, श्रावक और श्राविका) ६ जब श्री श्रमण भगवंतने कुसुमों से आच्छादित एक पद्म सरोवर देखा उस से श्रमण भगवंतने भुवनपति,

शब्दार्थ

स० साधु स० साध्वी सा० श्रावक सा० श्राविका स० श्रमण भ० भगवान् म० महावीर ए० एक म० बडा पद्मसरोवर जा० यावत् प० जगे स० श्रमण भ० भगवान् म० महावीरने च० चार प्रकारके दे० देव प० प्ररूपे भ० भवनवासी वा० वाणव्यंतर जो० ज्योतिषी वै० वैमानिक स० श्रमण भ० भगवान् म० महावीर म० बडा उ० लहरीवाला स० हजारों जा० यावत् प० जगे स० श्रमण भ० भगवान् म० महावीर अ० अनादि अ० अनंत दी० दीर्घकाल चा० चातुरंत सं० संसार ति० तीरे स० श्रमण भ० भगवान् म० महावीर ए० एक म० बडा दि० दिनकर जा० यावत् प० जगे स० श्रमण भ० भगवान् म० महावीर

सूत्र

देवे पन्नवेइ तं० भवणवासी, वाणमंतरे, जोइसिए, वेमाणिए, जण्णं समणे भगवं महावीरे महं उम्मीवीई सहस्सकलियं जाव पडिबुद्धे तण्णं समणे भगवं महावीरे अणाईए अणवयग्गे दीहमद्धे चाउरंत संसार कंतारे तिण्णे, । जण्णं समणे भगवं महावीरे एगंमहं दिणकरं जाव पडिबुद्धे तण्णं समणस्स भवगओ महावीरस्स अणंते अणु-

भावार्थ

वाणव्यंतर, ज्योतिषी और वैमानिक नामक चार प्रकार के देव प्ररूपे. जब श्री श्रमण भगवंत महावीर स्वामीने हजारों तरंगोवाला महान् समुद्रको भुजा से उत्तीर्ण किया हुवा स्वप्न में देखा इस से भगवंतने अनादि अनंत दीर्घ काल का चतुर्गतिरूप संसार का अंत किया ८ जब श्री भगवंतने एक बडा तेजस्वी सूर्य स्वप्न में देखा उस से भगवंत को अनंत उत्कृष्ट केवल ज्ञान दर्शन उत्पन्न हुवा. ९ श्री श्रमण भगवंतने वैडुर्यरत्न

शब्दार्थ

को अ० अनंत अ० अनुत्तर जा० यावत् स० उत्पन्न हुवा स० श्रमण भ० भगवान् म० महावीर ए० एक म० बडा ह० पीला वे० वैरुलिय जा० यावत् प० जगे स० श्रमण भ० भगवानू म० महावीर का स० देव सहित म० मनुष्य अ० असुरलोक में उ० उदार कि० कीर्ति व० वर्ण स० शब्द सि० श्लोक प० व्याप्त हुवा स० श्रमण भ० भगवान् म० महावीरने मं० मेरूपर्वत की मं० मेरुचूलिकापे जा० यावत् प० जगे स० श्रमण भ० भगवान् म० महावीर स० देव सहित म० मनुष्य अ० असुर की प० परिषदा म० मध्ये के० केवली प० प्ररूपा ध० धर्म को आ० कहते हैं प० प्ररूपते हैं जा० यावत् उ० उपदेश देते हैं

सूत्र

त्तरे जाव समुप्पण्णे । जण्णं समणे भगवं महावीरे एगेणं महं हरिवेरुलिए जाव पडिबुद्धे, तण्णं समणस्स भगवओ महावीरस्स सदेव मणुयासुरलोए उराल कित्ति-वन्न सद्दसिलोगा परिगुवंति. इइखलु समणे भगवं महावीरेइति । जण्णं समणे भगवं महावीरे मंदरपव्वए मंदरचूलियाए उवरिं जाव पडिबुद्धे, तण्णं समणे भगवं महावीरे सदेवमणुयासुराए परिसाए मज्झगए केवलिपन्नत्तं धम्मं आघवेइ पन्नवेइ, जाव उवदं-

भावार्थ

समान आंतरडोंसे मानुषोत्तर पर्वत लपेटा हुवा स्वप्न में देखा इस से श्री श्रमण भगवंत महावीरने देवलोक, मनुष्य व असुर लोक में बहुत यश कीर्ति, वर्ण, शब्द वगैरह प्रसरित हुवा देखा. १० श्री श्रमण भगवंत मेरुकी चूलिकापे रहाहुवा सिंहासन पर बैठे हुवे स्वप्न में देखे जिस से मनुष्य, असुर व देवकी परिषदा में केवलिप्ररूपित धर्म की प्ररूपणा की ॥ ८८ ॥ दश प्रकार का सराग सम्यक्त्व दर्शन कहा.

शब्दार्थ ॥ ८८ ॥ द० दश प्रकार का स० सराग स० सम्यक् दर्शन नि० निसर्गरुचि उ० उपदेश रुचि आ० आज्ञारुचि सु० सूत्ररुचि बी० बीजरुचि अ० अभिगमरुचि वि० विस्ताररुचि कि० क्रिया सं० संक्षेप ध० धर्मरुचि द० दशसंज्ञा आ० आहारसंज्ञा जा० यावत् प० परिग्रहसंज्ञा को० क्रोधसंज्ञा जा० यावत् लो० लोभसंज्ञा ओ० ओघसंज्ञा लो० लोकसंज्ञा ने० नारकीको द० दशसंज्ञा ए० ऐसे जा० यावत् वे० वै-

सूत्र सेइ ॥ ८८ ॥ दसविहे सराग संमदंसणे प० तं० निस्सग्गुवएसरुई, आणारुई सुत्तबीयरुइमेव, अभिगम वित्थाररुई, किरिया संखेव धम्मरुई ॥ १ ॥ दस सन्नाओ प० तं० आहारसन्ना जावपरिग्गहसन्ना, कोहसन्ना जाव लोभसन्ना. ओहसन्ना, लोयसन्ना । नेरइयाणं दससन्ना एवंचेव एवंनिरंतरं जाव वेमाणियाणं ॥८९॥ नेरइयाणं दसविहं वेयणं

भावार्थ १ निसर्ग रुचि सो प्रकृतियों का उपशम होकर स्वभावसे ही सम्यक्त्व की प्राप्ति होती है २ उपदेश रुचि सो गुरु आदि के उपदेश से रुचि होवे ३ आज्ञा रुचि. ४ सूत्ररुचे ५ बीज रुचि ६ अभिगम रुचि ७ विस्तार रुचि ८ क्रिया रुचि ९ संक्षेप रुचि और १० धर्म रुचि. दश प्रकारकी संज्ञा कही १ आहार संज्ञा २ भय संज्ञा ३ मैथुन संज्ञा ४ परिग्रह संज्ञा ५ क्रोध संज्ञा ६ मान संज्ञा ७ माया संज्ञा ८ लोभ संज्ञा ९ ओघ संज्ञा और १० लोक संज्ञा. ये दश प्रकार की संज्ञा नरक के जीव यावत् वैमानिक देव तक चौविसही दंडक के जी-

शब्दार्थ

मानिकको ॥ ८९ ॥ ने० नारकी द० दशप्रकारकी वे० वेदना प० अनुभवते वि० विचरते हैं सी० शीत उ० ऊष्ण खु० क्षुधा पि० तृषा कं० खुजली प० परवशपना भ० भय सो० शोक ज० ज्वर वा० व्याधि ॥ ९० ॥ द० दशस्थान छ० छद्मस्थ स० सर्वभावसे न० जाने नहीं न० देखेनहीं ध० धर्मास्तिकाय जा० यावत् वा० वायु अ० यह जि० जिन भ० होगा वा० अथवा न० नहीं भ० होगा अ० यह स० सर्व दुःखका अं० अंत क० करेगा न० नहीं क० करेगा ए० इनको उ० उत्पन्न ना० ज्ञान द० दर्शनवाले

सूत्र

पच्चणुभवमाणा विहरंति तं० सीयं, उसिणं खुहं पिवासं, कंडुं, परब्भं, भयं, सोगं जरं, वाहिं ॥९०॥ दसट्ठाणाइं छउमत्थे सव्वभावेणं न जाणइ न पासइ तं० धम्मात्थिकायं जाव वायं, अयं जिणे भविस्सइ, वा नभविस्सइ; अयं सव्वदुक्खाणमंतं करिस्सइ वान-वाकरिस्सइ एयाणिचेव उप्पन्ननाणदंसणधरे जाणइ जाव अयं सव्व दुक्खाणमंतं करिस्सइ

भावार्थ

यों को होती है ॥ ८९ ॥ नारकी दश प्रकारकी वेदना वेदते हुवे विचरते हैं. १ शीत २ ऊष्ण ३ क्षुधा ४ पिपासा ५ खुजली ६ परवशपना ७ भय ८ शोक ९ ज्वर और १० व्याधि ॥९०॥ दश स्थानक छद्मस्थ जीव सब भाव से नहीं जानसकते हैं और नहीं देख सकते है धर्मास्तिकाय यावत् वायु और यह जीव जिन होगा या नहीं होगा, यह जीव सब दुःखों का अंत करेगा अथवा नहीं करेगा. पूर्वोक्त दश स्थानक

शब्दार्थ

जा० जानते है जा० यावत् अ० यह स० सर्वदुःखका अं० अंत क० करेगा न० नहीं क० करेगा ॥ ९१ ॥ द० दशदशा क० कर्मविपाक उ० उपाशक अं० अंतगड अ० अनुत्तरोववाई आ० आचारांग प० प्रश्नव्याकरण बं० बंध दो० दोगिद्धि दी० दीर्घ सं० संक्षेप ॥ ९२ क० कर्मविपाकके द० दशअध्ययन मि० मृगापुत्र गु० गोत्रास अं० अंडका स० शकट का मा० ब्राह्मण का नं० नंदिषेण का सू० सौकरिक उ० उदंबर स० सहश्रीदाह आ० आमलक कु० कुमार लच्छी ॥ ९३ ॥ उ० उपाशक दशा के द० दश

वा, नकरिस्सइ. ॥ ९१ ॥ दसदसाओ पण्णत्ताओ तं० कम्मविवागदसाओ, उवासगदसाओ, अंतगडदसाओ, अणुत्तरोववाइय दसाओ, आयारदसाओ पण्हावागरण दसाओ, बंधदसाओ, दोगिद्धि दसाओ, दीहदसाओ, संखेवियदसाओ ॥ ९२ ॥ कम्म विवाग दसाणं दस अज्झयणा प० तं० मियापुत्तेय गुत्तासे अंडे सगडेइ यावरे, माहणे नंदिसेणेय, सूरिएय उदुंबरे ॥ १ ॥ सहसुद्दाहे आमलए, कुमारेलेच्छइतिय ॥ ९३ ॥

सूत्र

भावार्थ

केवल ज्ञान दर्शन धरनेवाले जान सकते हैं ॥ ९१ ॥ दश दशा (दश शास्त्र दश अध्ययनवाले) कहे हैं. १ कर्म विपाक २ उपाशक दशांग ३ अंतगड दशा ४ अनुत्तरोववाई ५ आचारांग (दशाश्रुतस्कंध) ६ प्रश्न व्याकरण दशा ७ बंध दशा ८ दोगिद्धि ९ दीर्घ दशा और १० संक्षेप दशा ॥ ९२ ॥ प्रथम कर्म विपाक दशा के दश अध्ययन १ मृगापुत्रका २ गोत्रास का ३ अंड का ४ शकट ५ ब्राह्मण ६ नंदीषेण ७ सौकरिक ८ उदंबर दत्त ९ सहश्रीदाह आमलक और १० कुमारलच्छी ॥ ९३ ॥ उपाशक दशांग के दश अध्ययन १ आनंद

शब्दार्थ अध्ययन आ० आनंद का० कामदेव गा० गाथापति चु० चुल्लनी पिता सु० सुरादेवी चु० चुल्लशतक गा० गाथापति कुं० कुंडकोलिक स० सद्दाल पुत्र म० महाशतक णं० नंदिनी पिता सा० शालिका पुत्र ॥ ९४ ॥ अं० अंतगड दशा के द० दश अध्ययन न० नमीराज म० मातंग सो० सोमिल रा० रामगुप्त सु० सुदर्शन ज० जमाली भ० भगाली किं० किंकर्मपल्लोति फा० फालित मं० मंडित पुत्र ॥ ९५ ॥ अ० अनुत्तरोववाई के

सूत्र उवासगदसाणं दस अज्झयणा प० तं० आणंदे कामदेवेय, गाहावइचुलणीपिया सुरादेवे चुल्लसए, गाहावइकुंडकोलिए ॥ १ ॥ सद्दालपुत्ते महासयए, णंदिणी पिय सालेइयापिया, ॥ ९४ ॥ अंतगडदसाणं दस अज्झयणा प० तं० नमी मयंगे सोमिल्ले, रामगुत्ते सुदंसणे, जमालीय भगालीय, किंकमेपल्लए इय ॥ १ ॥ फालेअ मंडपुत्तेय, एमेतेदस आहिया ॥ ९५ ॥ अणुत्तरोववाइय दसाणं दसअज्झयणा प० तं०

भावार्थ २ कामदेव ३ चुल्लनी पिता गाथापति ४ सुरादेवी ५ चुल्लशतक ६ कुंडकोलिक गाथापति ७ सद्दालपुत्र ८ महाशतक ९ नंदिनी पिता और १० शालिका पुत्र ॥ ९४ ॥ अंतगडदशांग के दश अध्ययन १ नमीराज २ मातंग ३ सोमिल ४ रामगुप्त ५ सुदर्शन ६ जमाली ७ भगाली ८ किंकर्मपल्लोति ९ फालित और १० मंडित पुत्र ॥ ९५ ॥ अनुत्तरोववाई के दश अध्ययन १ इशिदास २ धन्ना ३ सुनक्षत्र ४ कार्तिक ५ संस्थान

शब्दार्थ

द० दश अध्ययन इ० इशिदास ध० धन्ना सु० सुनक्षत्र कि० कार्तिक सं० संस्थान सा० शालिभद्र आ० आनंद ते० तेतली द० दशार्णभद्र अ० अतिमुक्त ॥ ९६ ॥ आ० आचारांग द० दशा के अ० अध्ययन बी० वीश अ० असमाधि स्थानक इ० इकीस स० सबला दोष ति० तेत्तीस अ० आसातना अ० आठ ग० गणिसंपदा द० दश चि० चित्रसमाधि स्थानक इ० इग्यारह उ० श्रावक प्रतिमा बा० बारह भि० भिक्षुप्रतिमा प० पर्युषण कल्प ती० तीस मो० मोहनीय कर्म आ० आजाति ॥ ९७ ॥ प० प्रश्न व्याकरण दशा के द० दश अध्य-

सूत्र

इसिदासेय धण्णेय, सुनक्खत्तेय किित्तयेए, संठाणे सालिभद्देए, आणंदे तेयलीइय ॥ १ ॥ दसन्नभद्दे अइमुत्ते एमेते दस आहिया ॥ ९६ ॥ आयार दसाणं दस अज्झयणा प० तं० वीसं असमाहिट्ठाणा, इक्कवीसंसबला, तित्तीसं आसायणाओ, अट्ठविहा गणिसंपया, ॥ १ ॥ दस चित्त समाहिट्ठाणा, इक्कारस उवासग पडिमाओ, बारस भिक्खुपडिमाओ, पज्जोसवणाकप्पे, तीसंमोहणिज्जट्ठाणा, आजाइट्ठाणं ॥ ९७ ॥ पण्हावागरण

भावार्थ

६ शालिभद्र ७ आनंद ८ तेतली ९ दशार्णभद्र और १० अतिमुक्त ॥ ९६ ॥ आचारांग दशाके दश अध्ययन १ वीस असमाधि स्थानक का २ इकीस सबल दोष का ३ तेत्तीस आसातना का ४ आठ आचार्यकी संपदा का ५ दश चित्र की समाधि का ६ इग्यारह श्रावक की प्रतिमा ७ बारह साधुकी प्रतिमा ८ पर्युषण कल्प ९ तीस मोहनीय कर्म का १० संमूर्च्छिम गर्भज का स्थानक ॥ ९७ ॥ प्रश्न व्याकर दशा के दश

शब्दार्थ

यन उ० उपमा सं० संख्या इ० ऋषिभाषित आ० आचार्य भाषित म० महावीर भाषित सो० क्षोमक प्रश्न को० कोमल प्रश्न अ० अदाग प्रश्न अं० अंगुष्ट प्रश्न बा० बाहुप्रश्न ॥ ९८ ॥ बं० बंध दशा के द० दश अध्ययन बं० बंध मु० मोक्ष दे० देवर्द्धि द० दसारमंडल आ० आचार्य विप्रतिपत्ती उ० उपाध्याय विप्रतिपत्ती भा० भावना वि० विमुक्ति स० शाश्वत क० कर्म ॥ ९९ ॥ दो० दोगिद्धि दशा के द० दश अध्ययन बा०

सूत्र

दसाणं दस अज्झयणा प० तं० उवमा संखा इसिभासियाइं, आयरिय भासियाइं, महावीर भासियाइं, खोमगपसिणाइं, कोमलपसिणाइं अदागपसिणाइं अंगुट्ठपसिणाइं, बाहुपसिणाइं॥ ९८॥ बंधदसाणं दस अज्झयणा प० तं० बंधे मुक्खेय देवड्ढी, दसारे मंडलेइय, आयरिय विप्पडिवत्ती; उवज्झाय विप्पडिवत्ती, भावणा, विमुत्ती, सासयकम्मे ॥९९॥ दोगिद्धि दसाणं दस अज्झयणा प० तं० वाए, विवाए उववाए, सुक्खित्ते, कसिणे;

भावार्थ

अध्ययन १ उपमा २ संख्या ३ ऋषिभाषित ४ आचार्य भाषित ५ महावीर भाषित ६ क्षोमक वस्त्रका प्रश्न ७ कोमल प्रश्न ८ अदाग सो आदेश का प्रश्न ९ अंगुठा का प्रश्न १० भुजाका प्रश्न ॥ ९८ ॥ बंध दशा के दश अध्ययन १ बंध २ मोक्ष ३ देवर्द्धि ४ दसार मंडल ५ आचार्य विप्रतिपत्ती ६ उपाध्याय विप्रतिपत्ती ७ भावना ८ विमुक्ति ९ शाश्वत और १० कर्म का ॥ ९९ ॥ दो गिद्धि दशा के दश अध्ययन

शब्दार्थ

वात वि० विवात उ० उपपात सु० सुक्षेत्र कृ० कृत्स्न बा० बियालीस स्वप्न ती० तीस महास्वप्न बा० बहोत्तर स० सर्व स्वप्न हा० हार रा० रामगुप्त ॥ १०० ॥ दी० दीर्घ दशा के द० दश अध्ययन चं० चंद्र सू० सूर्य सु० शुक्र सि० श्रीदेवी प० प्रभावती दी० द्वीप समुद्र विभक्ति ब० बहु पुत्रिका मं० मेरु थे० स्थविर सं० संभूतविजय प० पद्म उ० उत्स्वास ॥ १०१ ॥ सं० संक्षेपिका द० दशा के द० दश अध्ययन खु० क्षुद्रिका विमान प्रविभक्ति म० महल्लिका विमान प्रविभक्ति अं० अंगचूलिका व० वर्गचूलिका वि०

सूत्र

बायालीसं सुविणा, तीसंमहासुविणा, बावत्तरिसव्व सुमिणा, हारे, रामगुत्ते, एमेए दस आहिया ॥ १०० ॥ दीहदसाणं दस अज्झयणा प० तं० चंदेसूरेय सुक्केय, सिरिदेवी, पहावई, दीवसमुद्दोववत्ती, बहुपुत्तीमंदरेइय, थेरे संभूयविजए, पम्ह उस्सासनिस्ससे, ॥ १०१ ॥ संखेवियदसाणं दसअज्झयणा प० तं० खुद्दिया विमाण पविभत्ती, महल्लियाविमाणपविभत्ती, अंगचूलिया, वग्गचूलिया, विवाहचूलिया, अरुणोववाए, वरुणोववाए,

भावार्थ

१ वात २ विवात ३ उपपात ४ सुक्षेत्र ५ कृत्स्न ६ बियालिस स्वप्न ७ तीस महास्वप्न ८ सब बहोत्तर स्वप्न ९ हार और १० रामगुप्त ॥१००॥ दीर्घ दशा के दश अध्ययन कहे हैं. १ चंद्राध्ययन २ सूर्याध्ययन ३ शुक्राध्ययन ४ श्री देवी ५ प्रभावती ६ द्वीप समुद्र विभक्ति ७ बहु पुत्रिका ८ मेरु ९ स्थूलिभद्र के गुरु स्थविर संभूत विजय और १० स्थविर पद्म उत्स्वास का अध्ययन ॥१०१॥ संक्षेपिका दशा के दश अध्ययन १ क्षुद्रिका विमान प्रविभक्ति २ महल्लिका विमान प्रविभक्ति ३ अंग चूलिका ४ वर्ग चूलिका ५ विवाह चूलिका ६ अ

शब्दार्थ

विवाह चूलिका अ० अरुणोपपात व० वरुणोपपात ग० गरुलोपपात वे० वेलंधरोपपात वे० वैश्रमणोप पात ॥ १०२ ॥ द० दश सा० सागरोपम को० क्रोडाक्रोडि का० काल उ० उत्सर्पिणी द० दश सा० सागरोपम को० क्रोडाक्रोडी का० काल ओ. अवसर्पिणी ॥ १०३ ॥ द० दश प्रकार के ने० नारकी अ० आंतरा रहित उ० उत्पन्न प० परंपरा उ० उत्पन्न अ० आंतरा रहित अ० अवगाहना प० परंपरा अ० अवगाहना अ० आंतरा रहित आ० आहारी प० परंपरा आ० आहारी अ० आंतरा रहित

सूत्र

गरुलोववाए, वेलंधरोववाए, वेसमणोववाए; ॥ १०२ ॥ दस सागरोवम कोडाकोडी ओ कालो उस्सप्पिणीए, दस सागरोवम कोडाकोडीओकालो ओसप्पिणीए ॥ १०३ ॥ दसविहा नेरइया प० तं० अणंतरोववन्ना परंपरोववन्ना, अणंतरोवगाढा, परंपरोवगाढा, अणंतराहारगा, परंपराहारगा, अणंतरपज्जत्ता, परंपरपज्जत्ता,

भावार्थ

रुणोपपात ७ वरुणोपपात ८ गरुलोपपात ९ वेलंधरोपपात और १० वैश्रमणोपपात ॥ १०२ ॥ दश कोडा-कोडी सागरोपमका उत्सर्पिणी काल दश कोडाकोडी सागरोपमका अवसर्पिणी काल ॥ १०३ ॥ दश प्रकार के नारकी कहे हैं १ अनंतर उत्पन्न २ परंपरोत्पन्न ३ अनंतर क्षेत्र में रहनेवाले ४ परंपरा क्षेत्र में रहनेवाले ५ अनंतर आहारी ६ परंपरा आहारी ७ अनंतर पर्याप्ता ८ परंपरा पर्याप्ता ९ चरम और १०

शब्दार्थ

प० पर्याप्ता प० परंपरा पर्याप्ता च० चरिम अ० अचरिम ॥१०४॥ च० चतुर्थ प० पंकप्रभा पृथ्वी में द० दश नरकावास स० शतसहस्र ॥ १०५ ॥ र० रत्नप्रभापृथ्वी के ज० जघन्य ने० नारकी की द० दशवर्ष स० सहस्र ठि० स्थिति ॥ १०६ ॥ च० चौथी पं० पंकप्रभा पु० पृथ्वी के उ० उत्कृष्ट द० दश सा० सागरोपम की ठि० स्थिति ॥ १०७ ॥ पं० पांचवी धू० धूम्रप्रभा पु० पृथ्वी के ज० जघन्य ने० नारकीकी द० दश सा० सागरोपम की ठि० स्थिति ॥ १०८ ॥ अ० असुर कुमारकी ज० जघन्य द० दशवर्ष स० सहस्र की

सूत्र

चरिमा, अचरिमा एवं निरंतरं जाव वेमाणिया ॥ १०४ ॥ चउत्थीएणं पंकप्पभाए पुढवीए दस नरयावास सयसहस्सा प० ॥ १०५ ॥ रयणप्पभाए पुढवीए जहन्नेणं नेरइयाणं दसवाससहस्साइं ठिई पण्णत्ता ॥ १०६ ॥ चउत्थीएणं पंकप्पभाए पुढवीए उक्कोसेणं नेरइयाणं दससागरोवमाइं ठिई प० ॥ १०७ ॥ पंचमीए धूमप्पभाए पुढवीए जहन्नेणं नेरइयाणं दससागरोवमाइं ठिई प० ॥ १०८ ॥ असुर

भावार्थ

अचरम. ऐसे ही देवता तक चौबिस ही दंडक का जानना ॥ १०४ ॥ चौथी पंक प्रभा पृथ्वी [नरक] में दश लाख नरकावास कहे हैं ॥१०५॥ पहली रत्नप्रभा नामक नरक में जघन्य दश हजार वर्ष की नारकी की स्थिति कही ॥ १०६ ॥ चौथी पंक प्रभा पृथ्वी में नारकी की उत्कृष्ट स्थिति दश सागरोपम की कही ॥ १०७ ॥ पांचवी धूम्रप्रभा नामक पृथ्वी में नारकी की जघन्य स्थिति दश सागरोपम की कही ॥१०८॥

शब्दार्थ

ठि० स्थिति ए० ऐसे थ० स्तनित कुमार की ॥ १०९ ॥ बा० बादर वनस्पति कायाकी उ० उत्कृष्ट द० दशवर्ष स० सहस्रकी ठि० स्थिति ॥ ११० ॥ वा० वाणव्यंतर दे० देवता की ज० जघन्य द० दशवर्ष स० सहस्र की ठि० स्थिति ॥ १११ ॥ बं० ब्रह्म देव लोक में उ० उत्कृष्ट दे० देवताकी द० दश सागरोपम की ठि० स्थिति ॥ ११२ ॥ लं० लंतक देव लोक में दे० देवता की ज० जघन्य द० दश सागरोपम की

सूत्र

कुमाराणं जहन्नेणं दसवाससहस्साइं ठिई प० ॥ १०९ ॥ एवं जाव थणियकुमाराणं बायरवणस्सइ काइयाणं उक्कोसेणं दसवाससहस्साइं ठिई प० ॥ ११० ॥ वाण मंतराणं देवाणं जहन्नेणं दसवाससहस्साइंठिई प० ॥ १११ ॥ बंभलोएकप्पे उक्कोसेणं देवाणं दससागरोवमाइं ठिई प० ॥ ११२ ॥ लंतएकप्पे देवाणं जहन्नेणं दससागरोवमाइं ठिई प० ॥ ११३ ॥ दसहिं ठाणेहिं जीवा आगमेसि भद्दत्ताए

भावार्थ

असुरकुमार की जघन्य स्थिति दश हजार वर्षका कही, ऐसे ही स्तनित कुमार तकके देवताओं की जघन्य स्थिति दश हजार वर्ष की कही ॥ १०९ ॥ बादर वनस्पति कायाकी स्थिति उत्कृष्ट दश हजार वर्ष की कही ॥ ११० ॥ वाणव्यंतर देवता की स्थिति जघन्य दश हजार वर्ष की कही ॥ १११ ॥ ब्रह्म देवलोक में देवताओं की स्थिति जघन्य दश सागरोपम की ॥ ११२ ॥ लंतक देवलोक में देवताओं की उत्कृष्ट स्थिति दश सागरोपम की कही ॥ ११३ ॥ जीव दश स्थानक से आगमोक्त धर्म में भद्रिकपनेसे

शब्दार्थ

ठि० स्थिति ॥११३॥ द० दश ठा० कारण से जी० जीव आ० आगम में भ० भद्रिकपनेका क० कर्म प० बांधे अ० नियाणा करे नहीं दि० समकितवन्त जो० योग में उपधानवन्त खं० क्षमावन्त जा० जितेन्द्रिय अ० अमायी अ० पासत्थपणा रहित सु० अच्छीपर्याय से प० प्रवचन में व० वात्सल्यता प० प्रवचन में उ० उद्यमवन्त ॥ ११४ ॥ द० दश प्रकार की आ० आशंसा प्रयोग इ० यहलोक प० परलोक दु०

सूत्र

कम्मं पगरेंति तं० अभिदाणयाए, दिट्ठिसंपन्नयाए, जोगवाहिययाए, खंतिखमणयाए, जीइंदियाए, अमाइल्लयाए, अपासत्थयाए, सुसामन्नयाए पवयणवच्छल्लयाए, पवयणउज्झावणयाए॥११४॥ दसविहे आसंसप्पओगे प० तं० इहलोगासंसप्पओगे, परलोगासंसप्पओगे; दुहओलोगासंसप्पओगे, जीवियासंसप्पओगे, मरणासंसप्पओगे, कामासंसप्प-

भावार्थ

कर्म करते हैं. १ करणी के फलकी प्राप्ति का निदान नहीं करने से २ सम्यक्त्व निर्मल रखने से ३ योग उपधान सो उत्साह से श्रुतोपधान करते ४ क्षमा करने से ५ पंचेन्द्रियको जीतने से ६ माया कपट नहीं करने से ७ पार्श्वस्थ अर्थात् शिथिलता त्यजते ८ साधु का शुद्धाचार पालन करते ९ प्रवचन व जैन शासन की प्रभावना करने से और १० धर्म कथा करने से ॥ ११४ ॥ दश प्रकारका आसंप्रयोग-वांच्छाका प्रयोग १ इहलोकके सुख की वांच्छा करे २ परलोक के सुख की वांच्छा करे ३ इस लोक और परलोक ऐसे दोनों लोक के सुख की वांच्छा करे ४ सुखी बनकर बहुत जीना चाहे ५ दुःखी होने से मरनेकी वांच्छा

शब्दार्थ

उभय लोक जी० जीवित म० मरण का० काम भो० भोग ला० लाभ पू० पूजा स० सत्कार ॥११५॥ द० दश प्रकार का ध०धर्म गा०ग्रामधर्म न० नगरधर्म र० राष्ट्रधर्म पा०पाखंडधर्म कु० कुलधर्म ग०गणधर्म सं०संघधर्म सु० सूत्रधर्म च० चारित्रधर्म अ० आस्तिकायधर्म ॥११६॥ द० दश स्थविर गा० ग्राम न० नगर र०

सूत्र

ओगे भोगासंसप्पओगे लाभासंसप्पओगे, पूयासंसप्पओगे, सक्कारासंसप्पओगे,
॥ ११५ ॥ दसविहे धम्मे प० तं० गामधम्मे, नगरधम्मे, रट्ठधम्मे, पाखंडधम्मे,
कुलधम्मे, गणधम्मे, संघधम्मे, सुयधम्मे, चरित्तधम्मे, अत्थिकायधम्मे, ॥ ११६ ॥

भावार्थ

करे ६ मनोज्ञ शब्दादि रूप कामकी इच्छा करे ७ भोग की इच्छा करे ८ लाभकी इच्छा करे और १० सत्कार सन्मान की इच्छा करे ॥ ११५ ॥ दश प्रकारका धर्म कहा १ ग्राम धर्म सो विषयाभिलाष २ नगर धर्म सो नगरका आचार ३ राष्ट्रधर्म सो देश का आचार ४ [illegible] धर्म सो पाखंडियों का आचार ५ कुल धर्म सो कुल का आचार ६ गण धर्म ७ संघ धर्म ८ श्रु[illegible]चारित्र धर्म और १० अस्तिकाय धर्म ,॥ ११६ ॥ दश प्रकारके स्थविर कहे हैं १ ग्राम [illegible] २ नगर स्थविर सो नगर जनको सन्मार्ग में प्रवर्तावे ३ राष्ट्र में स्थविर ४ प्रशास्ता [illegible] ६ गण स्थविर ७ संघ स्थविर ८ जाति स्थविर ९ सूत्र स्थविर और १० पर्याय [illegible] ॥ दश प्रकारके पुत्र कहे हैं. १ आत्मज सो पिता के शरीर से पुत्र की उत्पत्ति होवे जैसे भरत का आदित्य यश २ स्त्री से पुत्रकी

शब्दार्थ

राष्ट्र प० प्रशस्तार कु० कुल ग० गण सं० संघ जा० जाति सू० सूत्र प० पर्याय ॥ ११७ ॥ द० दश पुत्र अ० आत्मज खि० क्षेत्रज दि० दत्तक वि० विनयित ओ० औरस मो० मौखर सों० शौंडीर सं० संवर्द्धित उ० उपयाचित ध० धर्मन्तेवासी ॥ ११८ ॥ के० केवली को द० दश अनुत्तर ना० ज्ञान दं० दर्शन च०

सूत्र

दसथेरा प० तं० गामथेरा, नगरथेरा, रट्ठथेरा, पसत्थारथेरा, कुलथेरा, गणथेरा, संघथेरा, जाइथेरा, सुयथेरा, परियायथेरा, ॥ ११७ ॥ दसपुत्ता पं० तं० अत्तए खित्तए, दिन्नए, विन्नए, उरसे, मोहरे, सोंडीरे, संबुड्ढे, उववाइए, धम्मंतेवासी

भावार्थ

उत्पत्ति होवे जैसे पांडुके पांडव हुवे. आदित्यादिकसे कुन्ती और माद्री को पांच पांडव हुवे २ दत्तकपुत्र सो पुत्रवगर का मनुष्य पुत्रवान बनने के लिये अन्य पुत्र को दत्तक लेवे ४ विनयित सो जिस को शिक्षा दी होवे सो ५ उपरस अथवा औरस सो पाडोशी आदि किसी का पुत्र होवे और उस का विशेष संबंध रहने से उसपर पुत्र समान प्रीति होवे और उस का पालन पोषण करे ६ मोखर पुत्र सो कोई लडका स्वतः आकर मिष्ट वचनों से कहे कि मैं तुम्हारा लडका हूं उस को लौकिक में (स्वयं उपागत) भी कहते हैं ७ शौंडिर पुत्र सो जीतकर अपना पुत्र बनावे ८ किसी अनाथ के पुत्रका पोषण कर बडाकर के अपना पुत्रबनावे सो संवर्द्धितपुत्र ९ उपयाचितपुत्र सो देव आराधना से पुत्रकी प्राप्ति होवे और १० जिस को प्रवर्ज्या दीक्षा देवे सो धर्मन्तेवासी पुत्र ॥ ११८ ॥ केवली को दश अनुत्तर-प्रधान कहा. १ अनुत्तर

शब्दार्थ

चारित्र त० तप वी० वीर्य खं० क्षमा मु० मुक्ति अ० ऋजुता म० मृदुता ला० लघुता ॥ ११९ ॥ म० समय क्षेत्र में द० दश कुरु पं० पांच दे० देवकुरु पं० पांच उ० उत्तरकुरु त० तहां द० दश म० बडे म० महाद्रुम जं० जंबूसुदर्शन धा० धातकीवृक्ष म० महाधातकी वृक्ष प० पद्मवृक्ष म० महापद्म वृक्ष पं० पांच कू० कूटसामलीवृक्ष त० तहां द० दश देवता म० महर्द्धिक जा० यावत् प० रहते हैं अ० अना-

सूत्र

॥ ११८ ॥ केवलिस्सणं दस अणुत्तरा प० तं० अणुत्तरेनाणे, अणुत्तरेदंसणे, अणुत्तरेचरित्ते, अणुत्तरेतवे, अणुत्तरेवीरिए, अणुत्तराखंती, अणुत्तरामुत्ती, अणुत्तरेअज्जवे, अणुत्तरेमद्दवे, अणुत्तरेलाघवे, ॥ ११९ ॥ समयाखित्तेणं दसकुराओ प० तं० पंचदेवकुराओ, पंचउत्तरकुराओ, । तत्थणं दसमहइमहालया महादुमा प० तं० जंबूसुदंसणे, धायइरुक्खे, महाधायइरुक्खे, पउमरुक्खे, महापउमरुक्खे; पंचकूडसामलीओ, । तत्थणं दसदेवा महिड्ढिया जाव परिवसंति तं० अणाढिए जंबू-

भावार्थ

ज्ञान २ अनुत्तर दर्शन ३ अनुत्तर चारित्र ४ अनुत्तार तप ५ अनुत्तार वीर्य ६ अनुत्तार क्षमा ७ अनुत्तार मुक्ति ८ अनुत्तार ऋजुता ९ अनुत्तार मृदुता और १० अनुत्तार लघुता ॥ ११९ ॥ समय क्षेत्र सो अढाई द्वीप में दश कुरु कहे हैं पांच देव कुरु और पांच उत्तर कुरु कहे हैं. उस में बहुत बडे दश महाद्रुम कहे हैं १ जम्बू सुदर्शन २ धातकी वृक्ष ३ महाधातकी वृक्ष ४ पद्म वृक्ष ५ महापद्म वृक्ष और पांच कूटसामलीवृक्ष

शब्दार्थ

दीय जं० जंबूद्वीप अधिपति सु० सुदर्शन पि० प्रियदर्शन पों० पौंडरीक म० महापौंडरीक पं० पांच ग० गरुड वे० वेणुदेवता ॥ १२० ॥ द० दश कारन से ओ० संपूर्ण दु० दुषम जा० जानना अ० अकाल में व० वर्षे का० काल में न० नहीं व० वर्षे अ० असाधु पू० पूजावे सा० साधु न० नहीं पूजावे गु० गुरु से ज० जन मि० मिथ्या प्रतिपन्न अ० अमनोज्ञ स० शब्द जा० यावत् फा० स्पर्श ॥ १२१ ॥ द० दश कारन से ओ० संपूर्ण सु० सुषम जा० जानना अ० अकाल में न० नही व० वर्षे तं० उसेस वि०

सूत्र

दीवाहिवई, सुदंसणे पियदंसणे, पोंडरीए; महापोंडरीए, पंचगरुला, वेणुदेवा, ॥ १२० ॥ दसहिं ठाणेहिं ओगाढं दुस्समं जाणिज्जा तं० अकाले वरिसइ, काले-नवरिसइ, असाहूपूइज्जंति, साहूनपूइज्जंति, गुरुसु जणो मिच्छंपडिवन्नो, अमणुन्ना सद्दा जाव फासा ॥ १२१ ॥ दसहिं ठाणेहिं ओगाढं सुसमं जाणिज्जा तं० अका-

भावार्थ

उनपर महर्द्धिक यावत् पल्योपम की स्थितिवाले दश देव रहते हैं. १ जम्बूद्वीप का अधिपति अनादीय २ सुदर्शन ३ प्रिय दर्शन ४ पौंडरीक ५ महा पौंडरीक और पांच गरुड वेणुदेवता ॥ १२० ॥ दश कारण से कठिन दुषमकाल जानना १ अकाल में वर्षे २ काल में वर्षे नहीं ३ असाधु की पूजा होवे ४ साधु जावे नहीं ५ गुरु से मिथ्या कपट भाव रखे यावत् अमनोज्ञ शब्द यावत् स्पर्श ॥ १२१ ॥ दश कारण

शब्दार्थ

विपरीत जा० यावत् म० मनोज्ञ फा० स्पर्श ॥ १२२ ॥ सु० सुषम सुषमा स० काल में द० दश प्रकारके रु० वृक्ष उ० उपभोग में आ० आते हैं म० मातंग भि० भृंग तु० तूटितांग दी० दीपांग जो० ज्योति चि० चित्रांग चि० चित्ररस म० मण्यंक गे० गेहाकार अ० अणियाण ॥ १२३ ॥ जं० जंबूद्वीप में भ० भरतक्षेत्र में ती० अतीत उ० उत्सर्पिणी में द० दशकुलकर हो० हुवे स० शतंजल स० शतायु अ० अनंतसेन अ०

सूत्र

लेनवरिसइ, तंचेववविवरीयं जावमणुन्ना फासा ॥ १२२ ॥ सुसमसुसमाएणं समाए दसविहा रुक्खा उवभोगत्ताए हव्वमागच्छंति तं० मत्तंगयाय भिंगा, तुडियंगा दीव जोइचित्तंगा, चित्तरसा माणियंगा; गेहागारा अणियणाय (१) ॥१२३॥ जंबूद्दीवेदीवे भारहेवासे तीताए उस्सप्पिणीए दसकुलगरा होत्था तं० सयंजले सयाऊय, अणं-

भावार्थ

से बहुत सुषम काल जानना १ अकाल में वर्षे नहीं २ काल में वर्षे यावत् मनोज्ञ शब्द यावत् स्पर्श॥१२२॥ सुषम सुषमानामक काल में दश वृक्ष उपभोग में आते हैं. १ मातंग मादक पदार्थ देवे २ भृंग भाजन देवे ३ तूटितांग वाद्यित्र देवे ४ दीपांग दीपक देवे ५ ज्योति ६ चित्रांग माल्य देवे ७ चित्ररस विचित्र प्रकारके रस देवे ८ मण्यंक आभरण देवे ९ गेहागार सो गृह के आकार बनावे और १० अनियाण सो वस्त्र देवे ॥ १२३ ॥ जम्बूद्वीप में भरत क्षेत्र में अतीत काल की उत्सर्पिणी में दश कुलकर हुवे १ शतंजल

शब्दार्थ

अजितसेन क० कर्कसेन भी० भीमसेन म० महा भीमसेन द० दृढरथ द० दशरथ स० सप्तरथ ॥१२४॥ जं० जंबूद्वीप के भा० भरतक्षेत्र में आ० आगामिक उ० उत्सर्पिणी में द० दशकुलकर भ० होंगे सी० सीमंकर सी० सीमंधर खे० क्षेमकर खे० क्षेमंधर वि० विमलवाहन सं० संमुक्ति प० प्रतिश्रुत द० दृढधनु स० शतधनु द० दशधनु ॥ १२५ ॥ जं० जंबूद्वीप के मं० मेरुकी पु० पूर्व में सी० सीता महानदी के० उ० दोनों बाजु द०

सूत्र

तसेणेय अजियसेणेय, कक्कसेणे भीमसेणेय, महाभीमसेणेय सत्तमे, (१) दढरहे दसरहे सत्तरहे ॥ १२४ ॥ जंबूद्दीवेदीवे भारहेवासे आगमिस्साए उसप्पिणीए दस कुलगरा भविस्संति तं० सीमंकरे सीमंधरे, खेमंकरे, खेमंधरे, विमलवाहणे, संमुत्ती, पडिसुए,दढधणू,सयधणू,दसधणू ॥१२५॥ जंबूद्दीवेदीवे मंदरस्स पव्वयस्स पुरच्छिमेणं सीयाए महानईए उभयोकूले दसवक्खार पव्वया प० तं० मालवंते, चित्तकूडे,

भावार्थ

२ शतायु ३ अनंतसेन ४ अजितसेन ५ कर्कसेन ६ भीमसेन ७ महाभीमसेन ८ दृढरथ ९ दशरथ और १० सप्तरथ ॥ १२४ ॥ जम्बूद्वीप में भरतक्षेत्र में आगामिक उत्सर्पिणी में दश कुलकर होवेंगे १ सीमंकर २ सीमंधर ३ खेमंकर ४ खेमंधर ५ विमलवाहन ६ संमुक्ति ७ प्रातिश्रुत ८ दृढधनु ९ शतधनु और १० दशधनु ॥ १२५ ॥ जम्बूद्वीप के मेरु पर्वत की पूर्व में सीतामहानदी के दोनों किनारे पर दश वक्षस्कार

शब्दार्थ

दश व० वक्षस्कार प० पर्वत मा० मालवंत चि० चित्रकूट ब्रं० ब्रह्मकूट जा० यावत् सो० सोमनस ॥ १२६ ॥ जं० जंबूद्वीप के मं० मेरुकी प० पश्चिम में सी० सीतोदा म० महानदी की उ० दोनों बाजु द० दश व० वक्षस्कार पर्वत वि० विद्युत्प्रभ जा० यावत् गं० गंधमादन धा० धातकी खंडद्वीपके पु० पूर्वार्ध में व० वक्षस्कार प० पर्वत भा० कहना जा० यावत् पु० पुष्करवर अर्धद्वीप के प० पश्चिमार्ध में ॥ १२७ ॥ द० दश क० देवलोक इं० इन्द्राधिष्ठित सो० सौधर्म जा० यावत् स० सहस्रार पा० प्राणत अ० अच्युत ए० इन द० दशदेवलोक में द० दशइन्द्र स० शक्र ई० ईशान जा० यावत् अ० अच्युत ए० इन द०

सूत्र

बंभकूडे, जाव सोमणसे ॥ १२६ ॥ जंबूमंदर पच्चत्थिमेणं सीओयाए महानईए उभयोकूले दसवक्खारपव्वया प० तं० विज्जुप्पभे, जाव गंधमायणे, । एवं धायइखंड दीवपुराच्छिमद्धेवि वक्खारा भाणियव्वा जाव पुक्खरवरदीवड्ढ पच्चत्थिमद्धेवि ॥ १२७ ॥ दस कप्पा इंदाहिट्ठिया प० तं० सोहम्मे जाव सहस्सारे पाणए अच्चुए । एएसुणं दसकप्पेसु दस इंदा प० तं० सक्के ईसाणे जाव अच्चुए । एएसिणं दसण्हं इंदाणं दसपरिया

भावार्थ

पर्वत कहे हैं १ मालवंत २ चित्रकूट ३ ब्रह्मकूट यावत् सोमनस ॥ १२६ ॥ जम्बूमंदर से पश्चिमदिशा में सीतोदा महानदी के दोनों किनारे पर दश वक्षस्कार पर्वत कहे हैं विद्युत्प्रभ यावत् गंधमादन ऐसे ही धातकी खंड के पूर्वार्ध व पश्चिमार्ध और पुष्करवरद्वीप के पूर्वार्ध व पश्चिमार्ध में जानना ॥ १२७ ॥ इन्द्र अधिष्ठित दश विमान कहे हैं. सौधर्म यावत् सहस्रार प्राणत अच्युत. इस में दश इन्द्र रहते हैं शक्रेन्द्र

शब्दार्थ

दश इं० इन्द्र के द० दश प० परियाण वि० विमान पा० पालक पु० पुष्पक जा० यावत् वि० विमलवर स० सर्वतोभद्र ॥१२८॥ द० दश दशमिका भि० भिक्षुप्रतिमा रा० रात्रिदिवस स० शत अ० अर्ध छ० छ भि० भिक्षाशत अ० यथासूत्र जा० यावत् आ० आराधित भ० होवे ॥ १२९ ॥ द० दश प्रकार के सं० संसारी जीव प० प्रथमसमय ए० एकेन्द्रिय जा० यावत् अ० अप्रथमसमय पं० पंचेंद्रिय ॥ १३० ॥ द० दश प्रकार के स०

सूत्र

णिया विमाणा प० तं० पालए पुप्फए जाव विमलवरे सव्वओभद्दे ॥ १२८ ॥ दस दसमियाणं भिक्खुपडिमाणं राइंदियसएणं अद्धछट्ठेहियभिक्खासएहिं अहासुत्तं जाव आराहिया भवइ ॥ १२९ ॥ दसविहा संसार समावन्नगा जीवा प० तं० पढम समय एगिंदिया, अपढम समय एगिंदिया एवं जाव अपढम समय पंचेंदिया ॥ १३० ॥ दसविहा सव्वजीवा प० तं० पुढविकाइया जाव वणस्सइकाइया, बेइंदि

भावार्थ

यावत् अच्युतेन्द्र. इन दश इन्द्रों को दश परियान विमान कहे हैं १ पालक २ पुष्पक ३ यावत् विमलवर और सर्वतोभद्र ॥ १२८ ॥ दश दशमिया भिक्षु प्रतिमा कही. इस में एक सो रात्रिदिन लगते हैं और साढे पांच सो भिक्षा होती हैं. उसे आज्ञा पूर्वक पाले यावत् आराधे ॥ १२९ ॥ दश प्रकार के संसारी जीव कहे हैं १ प्रथम समय के एकेन्द्रिय अप्रथम समय के एकेन्द्रिय यावत् अप्रथम समय के पंचेन्द्रिय॥१३०॥

शब्दार्थ

सर्वजीव पु० पृथ्वीकाय जा० यावत् व० वनस्पति काय बे० बेइन्द्रिय जा० यावत् पं० पंचेन्द्रिय अ० अनेन्द्रिय ॥ १३१ ॥ द० दश प्रकार के स० सर्वजीव प० प्रथम समय ने० नारकी अ० अप्रथम समय ने० नारकी जा० यावत् अ० अप्रथम समय सि० सिद्ध ॥ १३२ ॥ वा० वर्ष स० शत आ० आयुष्यवाले पु० पुरुष की द० दश दशा वा० बाल कि० क्रीडा मं० मंद ब० बल प० प्रज्ञा हा० क्षीण प० प्रपंचा

सूत्र

या जाव पंचिंदिया अणिंदिया ॥ १३१ ॥ अहवा दसविहा सव्वजीवा प० तं० पढमसमय नेरइया, अपढम समयनेरइया जाव अपढम समय देवा, पढम समय सिद्धा, अपढम समय सिद्धा, ॥ १३२ ॥ वास सयाउयस्सणं पुरिसस्स दसदसाओ

भावार्थ

सब जीवों के दश भेद पृथ्वी काय [illegible] य, बेइन्द्रिय यावत् पंचेन्द्रिय और अनेन्द्रिय ॥१३१॥ अथवा सब जीवों के दश भेद कहे [illegible], अप्रथम समय के नारकी यावत् अप्रथम समय के देव और प्रथम समय के सिद्ध [illegible] १३२ ॥ सो वर्ष के आयुष्यवाले पुरुषकी दश दशाओं कही हैं. १ प्रथम दश [illegible] वर्ष की क्रीडा दशा ३ बल बुद्धि रहित मात्र भोग की वांच्छा होवे सो [illegible] में बल बताने की अभिमान दशा ५ पांच वे दश वर्ष में प्रज्ञा अर्थात् बुद्धि की [illegible] पांच इन्द्रियों क्षीण होने की दशा ७ प्रपंच दशा ८ प्रागभार सो शरीर को भारभूत बनानेवाली दशा ९ मुम्मुखसो निष्कामी बनाने की दशा और १०

शब्दार्थ

प० प्राग्भार मु० मुम्मुख सा० शायिनी ॥ १३२ ॥ द० दश प्रकार की त० तृणवनस्पतिकाय मू० मूल कं०कंद जा० यावत् पु० पुष्प फ० फल बी० बीज ॥ १३३ ॥ स० सर्व वि० विद्याधर से० श्रेणी द० दश जो० योजन वि० चौडी ॥ १३४ ॥ स० सर्व आ० आभियोगिक देवकी से० श्रेणी द० दश २ जो० योजन वि० चौडी ॥१३५॥ गे० ग्रैवेयक विमान द० दश योजन स० शत उ० ऊंचे उ० ऊंचपने ॥ १३६ ॥

सूत्र

प० तं० (गाथा) बाला किड्डायमंदाय, बलापन्नाय हायणी; पपंचापब्भाराय, मुम्मुही सायणी तहा ॥ १ ॥ १३२ ॥ दसविहा तणवणस्सइ काइया प० तं० मूले, कंदे जाव पुप्फे फले बीए ॥ १३३ ॥ सव्वाओविणं विज्जाहरसेढीओ दसदस जोयणाइं विक्खंभेणं पण्णत्ताओ ॥ १३४ ॥ सव्वाओविणं आभिओगसेढीओ दसदस जोयणाइं विक्खंभेणं पण्णत्ताओ ॥ १३५ ॥ गेविज्ज विमाणाणं दस जोयणसयाइं उड्ढंउच्चत्तेणं प० ॥ १३६ ॥ दसहिं ठाणेहिं सहतेयसा भासं कुज्जा तं०

भावार्थ

शायिनी दशा सो निद्राव्याप्त होने से दुःखी दुर्बल होवे ॥ १३२ ॥ दश प्रकार की तृण वनस्पतिकाय कही मूल, कंद, यावत् पुष्प, फल, और बीज ॥ १३३ ॥ सब विद्याधर की श्रेणी दश योजन की चौडी कही ॥ १३४ ॥ विद्याधर की श्रेणियों से दश योजन ऊंचे जाते आभियोग देवों की श्रेणियों आती हैं. वे सब दश योजन की चौडी कहीं ॥ १३५ ॥ नव ग्रैवेयक विमान दश योजन के ऊंचे कहे हैं ॥ १३६ ॥

शब्दार्थ

द० दश ठा० कारन से ते० तेजोलेश्यसे भा० भस्मकरे के० कोई त० तथारूप स० श्रमण मा० माहणकी अ० असातना करे से० वह अ० असातना उत्पन्न होनेसे प० क्रुद्धहुवा ते० तेजोलेश्या नि० निकाले से०

सूत्र

केइ तहारूवं समणंवा माहणंवा अच्चासाएज्जा सेय अच्चासाइएसमाणे परिकुवियस्स तेयंनिसिरिज्जा, से तं परितावेइ से तं परितावित्ता तामेव सहतेयसा भासं कुज्जा। केइ तहारूवं समणंवा माहणंवा अच्चासाइज्जा से य अच्चासाइए देवे परिकुविए तस्सतेयं निसिरिज्जा से यं परितावेइ, से तं परितावित्ता तामेव सहतेयसा भासंकुज्जा। केइ तहारूवं समणंवा माहणं वा अच्चासाइज्जा सेय अच्चासाइए समाणे परिकुविए ते दुहओ पडिन्ना तस्स तेयं निसि-

भावार्थ

दश प्रकार से तेजुलेश्या अनार्य को भस्मीभूत करे. १ कोई अनार्य तेजुलेश्यावाले तथारूप श्रमण माहण की बहुत असातना करे और इस तरह असातना करने से वह कुपित होकर तेजोलेश्या का तेज नीकाले और उत्सर्ग करनेवाले को दुःख देवे यावत् भस्म करे २ कोई अनार्य तथारूप साधु महात्मा की असातना करे और इस तरह असातना करने से साधु की सेवा करनेवाला देव कुपित बनकर उस अनार्य पर तेजोलेश्या डाले और उसे भस्मकर देवे ३ कोई अनार्य पुरुष तथारूप साधु महात्मा की असातना करे इस से साधु व देवता दोनों कुपित बनकर के उस पर तेजुलश्या डाले और उसे भस्मकर देवे ४ कोई

शब्दार्थ

वह तं० उसको प० परिताप उपजावे प० परिताप उपजाकर ता० उसको स० तेजोलेश्या से० वे भा० भस्म कु० करे दे० देव दु० दोनों प० प्रतिज्ञाकरे त० तद्भं फो० फुनसी स० उत्पन्न होवे तं० वे फो० फुनसी भि० भेदावे भि० भेदायाहुवा दे० देव पु० छोटीफुनसी के० कोई त० तथारूप स० श्रमण को

सूत्र

रिजा से यं परितावेइ से यं परितावित्ता, तामेव सहतेयसा भासं कुज्जा। केइ तहारूवं समणंवा माहणंवा अच्चासाइज्जा, सेय अच्चासाइए परिकुविए तस्स तेयं निसिरिजा तत्थ फोडा समुच्छंति ते फोडा भिज्जंति, ते फोडा भिन्नासमाणा तामेव सहतेयसा भासंकुज्जा। केइ तहारूवं समणंवा माहणंवा अच्चासाइज्जा, सेय अच्चासाइए देवे परिकुविए तस्स तेयं निसिरिजा तत्थ फोडा तहेव जाव तामेव सहतेयसा भासंकुज्जा। केइ तहारूवं

भावार्थ

तना करे जिस से वह कुपित बनकर तेजोलेश्या डाले उस से उस उपसर्ग करनेवाले के शरीर में अग्नि दग्ध-पुरुष तथारूप श्रमण महात्मा की असातना करे इस से वह महात्मा उस पर क्रोधित होवे, और उस पर तेजोलेश्या डाले; जिस से उस के शरीर पर फोडे (फुन्सी) होवे और वे फूटे जब उसे भस्मकर देवे ५ कोई तथारूप श्रमण माहण की असातना करे, जिस महात्मा की सेवा करनेवाला देव कुपित होवे और उस पर तेजोलेश्या डाले जिस से उसे फोडे होवे यावत् तेज साहित भस्मकर देवे ६ कोई तथारूप श्रमण महात्मा की असातना करे जिस से साधु तथा उ... की सेवा करनेवाला देव कुपित होवे, और उस पर तेजो लेश्या डाले जिस से फोडे होवे यावत् तेज सहित भस्मकर देवे ७ कोई तथारूप श्रमण माहण की असा-

शब्दार्थ

अ० असातना करनेको ते० तेज नि० निकाले से० वह त० तहां नो० आक्रमणकरे नहीं नो० पराक्रम करे नहीं अ० ऊंचानीचा क० करे क० करके आ० आ० आदान प० प्रदक्षिणा क० कर के उ० उंचा वे० आकाश में उ० जावे

सूत्र

समणंवा माहणंवा अच्चासाएज्जा, सेय अच्चासाइए समाणे परिकुविए देवे य परिकुविए, ते दुहओ पडिन्ना तस्स तेयं निसिरिज्जा तत्थ फोडा समुच्छंति, सेसं तहेव जाव भासं कुज्जा। केइ तहारूवं समणंवा माहणंवा अच्चासाएज्जा, सेय अच्चासाइए परिकुविए तस्स तेयं निसिरिज्जा तत्थफोडा समुच्छंति,तेफोडा भिजंति तत्थ पुला समुच्छंति, तेपुला भिजंति ते पुला भिन्नासमाणा तामेव सहतेयग्गा, भासं कुज्जा. एए तिन्नि आलावगा भाणियव्वा। केइ तहारूवं समणंवा २ अच्चासाएमाणे तेयंनिसिरिज्जा सेय तत्थ नोकमइ, नोपक्कमइ अंचिअंचिं करेइ करित्ता, आयाहिणं पयाहिणं करेइ करित्ता २ उड्ढं वेहासं उप्पयइ २ सेणं तओ पडिह-

भावार्थ

वत् फोटक होवे और वे जब फूटे तब तेजोलेश्यावाला अनार्य को भी भस्म करे. क्यों की साधु का तेज उस से बलवंत है ८ कोई तथा रूप श्रमण माहण की अ ातना करे इस से उन की सेवा करनेवाला देव कुपित बनकर तेजोलेश्या डाले औ आधि दग्धन उ के शरीर में फोडे होवे यावत् भस्म करे ९ साधु और देव दोनों तेजोलेश्या डाले यावत् भस्म करे और १० कोई अनार्य तथारूप साधु ब्राह्मण की असातना करने को उन पर तेजोलेश्या डाले. वह तेज उस साधु की पास जावे परंतु उन का किंचित् पराभव करसके नहीं. वह तेज ऊंचा जाकर नीचा आवे और साधु को प्रदक्षिणा देकर ऊंचा आकाश में जावे

शब्दार्थ

त० तहांसे प० नीचेआवे प० नीचेआकर ता० उस स० शरिर को अ० नहीं जलाता ते० तेजसे भा० भस्म कु० करे ज० जैसे गो० गौशाला मं० मंखलिपुत्र को त० जलाया ते० तेजसे ॥ १३७ ॥ द० दश अ० आश्चर्य उ० उपसर्ग ग० गर्भहरण इ० स्त्री तीर्थंकर अ० अभावित परिषदा क० कृष्णका अ०

सूत्र

ए पडिणियत्ते २ तामेव सरीरगं अणदहमाणे २, सहतेयसा भासंकुज्जा ॥ जहेव गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स तवे तेए ॥ १३७ ॥ दस अच्छेरगा प० तं० उवसग्ग गब्भहरणं, इत्थीतित्थं अभाविया परिसा; कण्हस्स अवरकंका, उत्तरणं चंदसूराणं ॥१॥

भावार्थ

और वहां जाकर साधु के शरीर में गया हुवा पीछा निवर्ते. फीर साधु के माहात्म्य से पीछा लोटकर उस अनार्य के शरीर में प्रवेश करे और उसे भस्म कर देवे ॥ १३७ ॥ दश प्रकार के अच्छेरे हुवे १ उपसर्ग-केवल ज्ञान उत्पन्न हुवे पीछे तीर्थंकर को उपसर्ग होवे नहीं और श्री महावीर स्वामी पे गौशाला ने तेजोलेश्या डाली. वह श्री भगवंत को प्रदक्षिणा देकर गौशाले के शरीर पर चली गइ. भगवंत को उस की झपट लगने से रक्त विकार रोग उत्पन्न हुवा यह एक आश्चर्य २ श्री तीर्थंकर के गर्भ का साहरण होवे नहीं. परंतु श्री महावीर स्वामी के गर्भ का साहरण हरिणगमेषी देवताने देवानंदा ब्राह्मणी की कुक्षि से करके त्रिशलादेवी की कुक्षि में गर्भको रखा ३ तीर्थंकर स्त्रीवेदपने उत्पन्नहोवे नहीं परंतु श्रीमल्लीनाथ स्वामी स्त्री पने उत्पन्न हुवे ४ तीर्थंकर को केवलज्ञान उत्पन्न हुवे पीछे उनकी देशनामें त्यागप्रत्याख्यान होवे परंतु श्री भगवंत महावीर स्वामी की प्रथम परिषदामें मात्र देव देवियाँ होनेसे किसीने त्याग प्रत्याख्यान

अमरकंका उ० उतरना चं० चंद्र सू० सूर्यका ह० हरिवंश कुल में उत्पत्ती च० चमर उत्पात अ० आठ स० शत सि० सिद्धहुवे अ० असंयतिपूजा द० दश अ० अनंत का० काल में ॥ १३८ ॥ इ० इस र० रत्नप्रभा पु० पृथ्वी में र० रत्नकांड द० दश योजन स० शत बा० जाडपने ए० ऐसे वे० वैरुलिक लो०

हरिवंस कुलुप्पत्ती, चमरुप्पाओय अट्ठसय सिद्धा; अस्संजएसुपूया, दसवि अणंतेण कालेणं (२) ॥ १३८ ॥ इमीसेणं रयणप्पभाए पुढवीए रयणेकंडे, दसजोयण सयाइं बाहल्लेणं प० । इमीसेणं रयणप्पभाए पुढवीए वइरेकंडे दसजोयणसयाइं

किया नहीं ५ वासुदेव वासुदेवसे मीलसके नहीं. परंतु जब कृष्ण धातकी खंडके भरतक्षेत्रमें अमरकंका राज्यधानी में द्रौपदी लेनेको गये और वहां से पीछे लौटते मध्य समुद्र में वहां के वासुदेवने मीलने के लिये शंख वजाया; जब श्री कृष्ण वासुदेवने इसका शंखसे उत्तर दिया ६ कोई देवता मूल रूपसे मनुष्य लोकमें नहीं आते हैं परंतु भगवंत महावीर स्वामी की परिषदामें चंद्र व सूर्य मूलरूपसे आये ७ युगलिये नरक मे जावे नहीं परंतु हरिवंश कुलमें उत्पन्न होनेवाले हरिवर्ष क्षेत्रके युगलिए नरक में गये ८ भवनपति देव प्रथम देवलोक तक नहीं जावे परंतु चमरेन्द्र देव प्रथम देवलोक तक गये ९ उत्कृष्ट अवगाहनावाले १०८ सिद्धहोवे नहीं परंतु श्री ऋषभदेव के समयमें १०८ मोक्षपधारे १० असंयती की पूजा होवे नहीं परंतु श्री सुविधिनाथ मोक्षपधारे पीछे जैनोकी पूजा कम हुइ असंयती की पूजा बढी यह दश आश्चर्य अनंत कालमें होवे ॥ १३८ ॥ इस रत्नप्रभा पृथ्वीमें रत्न

शब्दार्थ

लोहिताक्ष म० मसारगल्ल हं० हंसगर्भ पु०पुलक सो० सौगंधिक जो०ज्योतिरस कं०अंजन अं० अंजनपुलक र० रजत जा० जातरूप अं० अंक फ० स्फटिक रि० रिष्ट ज० जैसे र० रत्नकांड त० तैसे सो० सोलह भा० कहना ॥ १३९ ॥ स० सर्व दी० द्वीपसमुद्र द० दश योजन श० शत उ० ऊंडे ॥ १४० ॥ स० सर्व म०महाद्रह द० दशयोजन उ० ऊंडे ॥१४१॥ स० सर्व स० सलिलकूट द० दश योजन उ० ऊंडे ॥ १४२ ॥ सी० सीता सीतोदा म० महानदी मु० मुखमूल में द० दश योजन उ० ऊंडी ॥ १४३ ॥

सूत्र

बाहल्लेणं प० । एवं वेरुलिए, लोहियक्खे, मसारगल्ले, हंसगब्भे, पुलए, सोगंधिए, जोइरसे,अंजणे,अंजणपुलए, रयए जायरूवे,अंके,फलिहे, रिट्ठे, जहारयणे तहा सोलसविधा भाणियव्वा ॥ १३९ ॥ सव्वेविणं दीवसमुद्दा दसजोयणसयाइं उव्वेहेणं प० । ॥ १४० ॥ सव्वेविणं महद्दहा दसजोयणाइं उव्वेहेणं प० ॥ १४१ ॥ सव्वेविणं सलिलकूडा दसजोयणाइं उव्वेहेणं प० ॥ १४२ ॥ सीया सीओयाणं महान-

भावार्थ

का कांड दश सो योजन का जाडा कहा वज्रकांड दश सो योजन का जाडा कहा. ऐसेही वेरुलिय, लोहिताक्ष, मसारगल्ल, हंसगर्भ, पुलक सौगंधिक, ज्योतिरस अंजन, अंजनपुलक, रजत, जातरूप, अंक, स्फटिक व रिष्ट के दश सो (एक हजार) योजन के काण्ड हैं ॥ १३९ ॥ सब द्वीपके समुद्र दश सो योजन के ऊंडे कहे ॥ १४० ॥ सब महाद्रह दश योजन के ऊंडे कहे ॥ १४१ ॥ सब सलिल कूट दश योजन के ऊंडे कहे ॥१४२॥ सीता सीतोदा दोनों नदीयाँ मुखमें दश योजन ऊंडी कहीं॥ १४३॥

क० कृत्तिकानक्षत्र स० सर्व बा० बाहिर के मं० मांडलों से द० दशवे मं० मांडले में चा० चलता है ॥ १४४ ॥ अ० अनुराधानक्षत्र स० सर्व अ० आभ्यंतरके मं० मांडलेसे द० दशवे मं० मांडलेमें चा० चलता है ॥ १४५ ॥ द० दश नक्षत्र णा० ज्ञान की वि० वृद्धिकरने वाले मि० मृगशर अ० आर्द्रा पू० पुष्य ति० तीन पु० पूर्व मू० मूर्ल अ० अश्लेषा ह० हस्त चि० चित्रा ॥ १४६ ॥ च० चतुष्पद थ० स्थलचर पं० पंचेन्द्रिय ति० तिर्यंचको द० दश जा० जाति कु० कुलकोडीयोनि प० प्रमुख स० सहस्र ॥ १४७ ॥

सूत्र

दीओ मुहमूले दस जोयणाइं उव्वेहेणं पण्णत्ताओ ॥ १४३ ॥ कत्तिया नक्खत्ते सव्वबाहिराओ मंडलाओ दसमे मंडले चारंचरइ ॥ १४४ ॥ अणुराहा नक्खत्ते सव्वब्भंतराओ मंडलाओ दसमे मंडले चारं चरइ ॥ १४५ ॥ दसनक्खत्ता णाणस्स विद्धिकरा प० तं० (गाथा) मिगसिर अद्दा पूसो, तिन्निय पुव्वाइ मूलमस्सेसा; हत्थो चित्ताय तहा, दस विद्धि कराइं नाणस्स ॥ १ ॥ १४६ ॥ चउप्पयथलयर पंचिंदिय तिरिक्ख जोणियाणं दस जाइकुलकोडि जोणी पमुह सयसहस्सा प०

भावार्थ

कृत्तिका नक्षत्र सब मांडलोंसे बाहिर दशवे मांडले में विचरता है ॥ १४४ ॥ अनुराधानक्षत्र सबआभ्यंतर मांडले के दशवे मांडले में विचरता है ॥ १४५ ॥ दश नक्षत्र ज्ञानकी वृद्धि करनेवाले हैं १ मृगशिर २ आर्द्रा ३ पुष्य ४ पूर्वाषाढा ५ पूर्वाभाद्रपद ६ पूर्वा फाल्गुणी ७ मूल ८ अश्लेषा ९ हस्त और १० चित्रा ॥ १४६ ॥ चतुष्पद स्थलचर तिर्यंच पंचेन्द्रिय की दशलक्ष कुलकोडी ॥ १४७ ॥ उरपरिसर्प स्थलचर पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिवाले की दशलक्षकुलकोडी कही

शब्दार्थ

उ० उरपरि स० सर्प थ० स्थलचर पं० पं[illegible]नि० तिर्यंचको द० योनि प० प्रमुख स० सहस्र ॥ १४८ ॥ [illegible] प० प्रस्थान कर्म पने चि० इकठेकिये चि० इकठे [illegible] इकठे करेगा प[illegible] नि० नियर्तित जा० यावत् पं० पंचेन्द्रिय [illegible] ए० ऐसे चि० नि ॥ १४९ ॥ द० दश प० प्रदेशी स्कं० [illegible] ॥ १५० ॥ द० दश

सूत्र

॥ ४७ ॥ उरपरि सप्प थलयर [illegible] वदिय तिरिक्ख जोणि जोणिपमुह सयसहस्सा प० ॥ १४८ ॥ जीवाणं दस ट्ठा पावकम्मत्ताए चिणिंसुवा चिणंतिवा चिणिस्संतिवा तं० पढ व्वत्तिए जाव पंचिंदिय निव्वत्तिए. एवंचिण उवचिण बंध उ ॥ १४९ ॥ दसपदेसिया खंधा अणंता पण्णत्ता ॥ १५ पोग्गला अणंता पण्णत्ता ॥ १५१ ॥ दससमय ट्ठिईया पोग

भावार्थ

॥ १४८ ॥ जीवने दश स्थान निवर्तित पुद्गल पाप कर्म पने संचित किये, क एकेन्द्रिय निवर्तित यावत् पंचेन्द्रिय निवर्तित. ऐसेही चिण, उपचिण, बंध, जानना ॥ १४९ ॥ दश प्रदेशी स्कंध अनंत कहेहैं ॥ १५० ॥ दश प्रदेश ॥ १५१ दश समय की स्थितिवाले पुद्गल अनंत कहे हैं ॥ १५२ ॥ दश गु

पुद्गल अ० अनंत ॥ १५१ ॥ द० दश समय ठि० स्थितिवाले पो० पुद्गल गुण का० काला पुद्गल अ० अनंत ॥ [redacted] ॥ ए० ऐसे व० वर्ण में गं० जा० यावत् द० दशगुण लु० रुक्ष पो० पुद्गल अ० अनंत ॥ १५४ ॥

॥१५२॥ दसगुण कालगापोग्गला अणंता पण्णत्ता ॥१५३॥ फासेहिं जाव दसगुण लुक्खा पोग्गला अणंता पण्णत्ता । सम्मत्तं ॥ ७० ॥ * * *

॥ १५३ ॥ ऐसेही वर्ण, गंध, रस, स्पर्श यावत् दश गुण रुक्ष पुद्गल अनंत हुवा और तृतीय स्थानांग सूत्र भी समाप्त हुवा. *

* इति तृतीयांग

॥ ठाणांग [redacted] त्रम् समा[redacted]

[redacted] द्र

॥ वी० [redacted] ज्येष्ठ वदी १२ वा[redacted]